शिक्षा तथा समाज-कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थ-निर्माण योजना के अन्तर्गत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित।

प्रथम संस्करण : 1

भारत सरकार द्वारा रियायती दर पर
उपलब्ध कराये गये कागज पर मुद्रित।

मूल्य : 40.00 रु०

प्रकाशक :
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
ए–26/2, विद्यालय मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर

मुद्रक :
राजस्थान प्रिंटिंग वर्क्स
किशनपोल बाजार,
जयपुर–302 001

प्राक्कथन

हिन्दी ग्रन्थ अकादमी अपने जीवन काल के 10 वर्ष पूरे कर चुकी है। 15 जुलाई, 1983 को इस संस्था ने ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश किया है। इस अल्पावधि में संस्था ने विभिन्न भाषाओं के लगभग 300 मानक ग्रंथों का हिन्दी में प्रकाशन कर मातृभाषा के माध्यम में विश्वविद्यालय के छात्रों व विषय विशेष के पाठकों के समक्ष भाषा वैविध्यता की कठिनाई दूर करने में अपना अकिंचन योगदान दिया है।

अकादमी के कई प्रकाशन द्वितीय व तृतीय आवृत्तियों में छप चुके हैं। इसके लिये हम सुयोग्य पाठकों व लेखकों के अत्यन्त ऋणी है।

प्रकाशन जगत में मानक ग्रंथों का कम मूल्य पर प्रकाशन एक ऐसा प्रयत्न है जिससे विश्वविद्यालय स्तर एवं विषय विशेष के विशेषज्ञों के ग्रंथ आसानी से हिन्दी में उपलब्ध हो सकें। प्रयत्न यह रहा है कि अकादमी शोध ग्रन्थों का प्रकाशन अधिकाधिक करे। इससे लेखक एवं पाठक दोनों ही लाभान्वित हो सकें तथा प्रामाणिक विषय वस्तु पाठकों को सुलभ होती रहे। लेखक को भी नव सृजन के लिए उत्साह व प्रेरणा मिलती रहे जिससे प्रकाशन के अभाव में महत्वपूर्ण पांडुलिपियां अप्रकाशित ही नहीं रह जायें। वास्तव में हिन्दी ग्रन्थ अकादमी इसे अपना उत्तरदायित्व समझती रही है कि दुर्लभ विषय ग्रन्थों का ही प्रकाशन किया जाय। हमें यह कहते गर्व होता है कि अकादमी द्वारा प्रकाशित कतिपय ग्रन्थ केन्द्र एवं अन्य राज्यों के बोर्ड व संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किये गये हैं और इनके विद्वान् लेखक सम्मानित हुए हैं।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की अनुप्रेरणा व सहयोग हिन्दी ग्रन्थ अकादमी को स्वरूप ग्रहण करने से लेकर योजनाबद्ध प्रकाशन कार्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। राज्य सरकार ने इस अकादमी को आरम्भ से ही पूरा-पूरा सहयोग देकर पल्लवित किया है।

अकादमी अपने भावी कार्यक्रमों में राजस्थान से सम्बन्धित दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशन कार्य को प्रमुखता देने जा रही है जिससे विलुप्त कड़ियाँ जुड़ सकें। यह भी प्रयत्न है कि तकनीकी एवं आधुनिकतम विषय वस्तु के ग्रन्थ योजनाबद्ध प्रकाशित हों जिससे सम्पूर्ण विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त करने में छात्रों को किसी तरह का अभाव अनुभव नहीं हो।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी में अपने प्रकार का प्रथम प्रयास है। दर्शन तथा मनोविज्ञान के छात्रों एवं पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी कामना है।

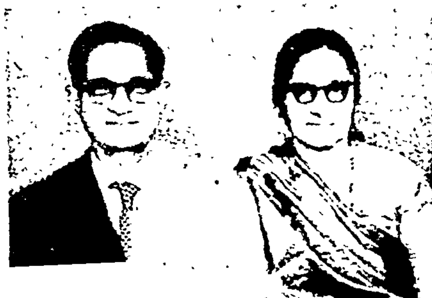
अकादमी इस पुस्तक के लेखक श्री भवानी शंकर उपाध्याय, समीक्षक डॉ० एस० एन० सिन्हा तथा भाषा सम्पादक श्री वेद व्यास के प्रति प्रदत्त सहयोग हेतु आभार व्यक्त करती है।

शिवचरण माथुर
मुख्य मन्त्री, राजस्थान सरकार
एवं
अध्यक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
जयपुर

(डॉ०) पुरुषोत्तम नागर
निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
जयपुर

समर्पण–पत्र

त्वदीयं वस्तु अरविन्द तुभ्यमेव समर्पणयेत



स्वर्गीय लीलू भाभी
वसावडा

एवं भाई श्री अरविंद यू० वसावडा
एम० ए० डी० लिट (बी० एच० यू०)
डिप ऐन साइकोलाजी
एवं
यूंगीय विश्लेषक शिकागो (यू० एस० ए०)

अखन्ड सौभाग्यवती स्वर्गीया लीलू भाभी वसावडा के गहरे निश्चल स्नेह से मेरा अवचेतन और भाई श्री अरविंद भाई के दीर्घकालीन सतत् आत्मीयतापूर्ण मार्ग दर्शन से मेरे चेतन चित की साज संवार हुई है अतः मानवीय चेतन और अचेतन के रहस्यों के सफल उद्घाटक स्विजरलैंड निवासी भारतीय ऋषि तुल्य मनीषी डा० कार्ल गुस्ताव यूंग के आलेखन पर आधारित यह पुस्तक उसी को जिसकी प्रेरणा से मैं अपनी अल्प समझ की अभिव्यक्ति कर सका हूं, सादर समर्पित है।

—भवानी शंकर उपाध्याय
12 पंचवटी उदयपुर (राजस्थान)

स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी
सुखाडिया जी की प्रथम पुण्य तिथि
दिनांक 2 फरवरी

दो शब्द

विज्ञान, विशेषत: भौतिक शास्त्र एवं सृष्टि विज्ञान तथा दर्शन एवं मनोविज्ञान में नवीन दूरगामी विकास से "मानव एवं प्रकृति" के बीच एक नई चर्चा प्रारम्भ हो गई है; जिससे विश्व-दृष्टि में अधिक समग्रता का दिशा बोध हो रहा है तथा इस कारण भौतिक वस्तु एवं चित्त के मध्य एक प्रकार के पारस्परिक लेन-देन का सम्बन्ध स्थापित हो गया है; जिसके परिणाम स्वरूप श्री उपाध्याय की पुस्तक (विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान) का महत्व एवं आकर्षण बढ़ गया है। यह पुस्तक श्री उपाध्याय की दीर्घकालीन सतत् लगन एवं साधना का प्रतिफल है। यह ग्रन्थ भारतीय दार्शनिक-वैज्ञानिक वाङ्मय के लिए एक बहुमूल्य योगदान है, जिसमें व्यापक अभिरुचि ली जायगी।

दौलतसिंह कोठारी
भूतपूर्व अध्यक्ष,
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
एवं
कुलपति
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रस्तावना

मेरे अनन्य मित्र तथा दर्शनशास्त्र के हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के सहपाठी अनुज स्वरूप भाई श्री भवानीशंकर जी उपाध्याय द्वारा प्रणीत "कार्ल गुस्ताव जुंग (युंग) विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" ग्रन्थ को मैंने बड़े चाव से देखा है। भाई श्री भवानीशंकरजी उपाध्याय द्वारा महर्षि युंग पर प्रणीत यह प्रथम हिन्दी भाषा की पुस्तक है। यद्यपि यह महर्षि युंग के विविध लेखों तथा पुस्तकों के विषयों का एक प्रकार से पुनरविलोकन है, किन्तु आधारभूत रूप से यह हिन्दी भाषा के तत्व ज्ञान साहित्य के लिये एक मौलिक अध्ययन ही है। निस्संदेह यह कठिन और दुस्तर अध्ययन है जिसको श्री भवानीशंकर जी उपाध्याय ने एकाग्र साधना द्वारा सम्पादित किया है।

श्री उपाध्याय भवानीशंकरजी ने अपने इस ग्रन्थ में महर्षि युंग को ईमानदारी तथा निष्पक्षतापूर्वक (अपने भारतीय विचार के आग्रह को सुरक्षित रखते हुए) सारगर्भित विस्तार के साथ प्रस्तुत किया है। मानवजीवन और उसके सतत् पौराणिक एवं आधुनातन अनुभवों के विराट को श्री उपाध्याय ने अपने इस ग्रन्थ द्वारा "अणु" स्वरूप ही हमें प्रदान किया है, किन्तु श्री उपाध्यांय के सहृदय अध्ययन की मूलभूत विशेषता यही है कि महर्षि युंग को हम पूरी तरह जान जाते हैं तथा सहज ही युंगीय साहित्य से मानव के गहन चैतन्य के लिये महती प्रेरणा भी प्राप्त करते हैं। मतिमान लेखक के शब्दों में युंग विचारधारा "**युंग द्वारा सम्पादित मानवीय अनुभव ज्ञान का अत्यन्त विस्तृत, असीम एवं गहन विषय रहा है।** जिसकी संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत किया जाना बड़ा ही मुश्किल एवं दुरूह कार्य हैं। मुश्किल और दुरूह होते हुए भी निस्संदेह श्री उपाध्याय भवानीशंकरजी ने महर्षि युंग को हिन्दी पाठकों, विद्वानों और बौद्धिकों के लिये सहज प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ को हम महर्षि युंग की दृष्टि, मति तथा विचार की प्रथम सम्पूर्ण पुस्तक भी मानकर चल सकते हैं।

तत्व–द्रष्टा युंग 50–60 वर्षों तक पृथ्वी पर मानव–अनुभवों के सृजनशील अध्ययन में लगे रहे, अपनी साधना को साकार करने के लिए उन्होंने विश्व की प्रमुख शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सालयों तथा प्रबुद्ध मानव सेवा-संस्थाओं के साथ जुड़े रहे। शत–सहस्त्र रोगियों की चिकित्सा करते हुए महर्षि युंग ने विश्व को "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" की समूची प्रभावशाली प्रणाली भी प्रदान की। श्रीमद् युंग की यह "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" की चिकित्सा पद्धति जहाँ एक ओर व्यक्तियों,

समूहों, प्रजातियों एवं राष्ट्रों के बीच अनावश्यक रूप से उभरते हुए विवादों, तनावों तथा विश्व-व्यापी मानव–भ्रमों को बड़ी सरल, सीधी सादी प्रणाली के उपयोग की सलाह देते हुए मानव-मन में उचाटी ऊहा-पोहों तथा अध्यासों को ठीक मार्ग-दर्शन देने का एक प्रकार से ज्ञान-यज्ञ ही किया है। मानव के त्रासों को कम करने के लिये श्रीमद् युंग ने उल्लेखनीय तथा जनोपयोगी अनुसंधान किया है और यों शुद्ध–बुद्ध मनोवैज्ञानिक निष्पक्ष साहित्य का भी विपुल सृजन किया है। मानव मन के अपने गहरे अध्ययन के द्वारा ऋषिवर्य युंग ने मानव समुदायों के भिन्नत्व में एक चेतनाशील अभिन्नत्व स्थापित करने की सतत् साधना का ही अपने धीमान प्रणयनों में उद्घाटन किया है। सच तो यह है कि मानव–व्यष्ठि तथा समष्ठियों के वंश, जाति, राष्ट्र आदि के वद्ध मूल सांस्कृतिक अभिमानों से सहज ही उत्पन्न रोगों, तनावों–मानसिक द्वन्द्व मात्र का शमन करते हुए मानव सहकार एवं सुहृदय वन्धुत्व का ही समूचा शिलान्यास किया है। मानव-जीवन में परस्पर वन्धुत्व, योग्य सामन्जस एवं जीवन की मंगलमय रचनात्मक प्रवृत्तियों के अभिनिवेश तथा उत्कर्ष के लिये ऋषि युंग ने पृथ्वी पर उद्भदित समूचे तथा समस्त मानव-जीवन का प्रत्यक्षसा किया है।

मानव-मन-चित्त–के अपने इस अविराम और गहन चिन्तन द्वारा महर्षि युंग जगत तथा जीव के अन्तराल और अन्तःकरण में प्रतित्मव सहज हो उद्भवित मंगलमय धर्मिता का प्रत्यक्ष भी कर पाये हैं। पृथ्वी पर वसती सभी प्रजातियों और उनके पुराणों को गहन अनुशीलन कर श्री युंग ने विज्ञान के प्रखर आतप में धर्म प्रणीत मंगलमयता का दर्शन किया है। मानव विकास की संक्रामक समस्या को महर्षि युंग ने सृष्टि के इस सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की अगाध और अवोध गतिविधि को धर्म स्वरूप देखा और मानव विकास का अनिवार्य प्रारंभ "धर्म द्वारा ही" स्वीकार किया है। महर्षि युंग ने अनुभव किया कि "मूल पुरुष" (आर्कीटाईप) अर्थात् अनादि जीवात्मा अपने गहन चेतन में स्थित है तथा शरीरी स्वरूप चैतन्य-स्तर पर अहम् है। निश्चय ही ऋषि युंग जीव और ब्रह्म की अकाट्य सी ग्रन्थि को छू सके हैं। तथा उसको खोलने के लिए मनोविज्ञानी को अचूक इलाज भी वता पाये हैं।

अनादि जीव–चेतन को श्री युंग ने उसके चिताकाश का मन्थन कर समग्र रूप से देखा है और मानव-जीव को गहन चेतन से पूर्ण अमोघ मंगला-कांक्षी चिद् माना है। मानव चित के दर्शन तथा चिन्तन एवं अनुशीलन में ऋषिवर्य युंग ने भारतीय तत्वज्ञान और दर्शन की सिद्ध परिभाषाओं का उपयोग नहीं किया है–युंग ने अपनी भाषा और अपनी सधी हुई सांस्कृतिक दृष्टि-मति द्वारा ही मन के अगाध चेतन का मनो-मन्थन किया है। भारतीय प्रबुद्ध को विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की युंगीय परिभाषायें तनिक चकित करती हैं, किन्तु कुल मिलाकर भारतीय

चिन्तक को महर्षि युंग के तत्व-बोध का सार हृदयंगम् करने में कठिनाई नहीं होती। श्रीमान भवानी शंकर उपाध्याय ने युंगीय परिभाषाओं का सम्यक् निर्वाह करते हुए भी भारतीय तत्व बोध की साधना जन्य की सिद्ध सी परिभाषाओं का बोध करवाने का इष्ट-प्रयास किया है। निस्संदेह श्री उपाध्याय भवानीशंकरजी युंगीय प्रबन्ध में युंग की सूक्ष्म-समझ का प्रामाणिक निर्वाह करते हैं, किन्तु भारतीय दर्शन के चिन्तनशील प्रबुद्ध होने के नाते वह युंग को भारतीय दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में भी योग्यतापूर्वक कह पाये हैं। स्वयं श्री उपाध्याय कहते हैं "मुझको युंगीय एवं भारतीय चिन्तन में कतिपय प्रसंगों बावत अद्भुत सादृश्य और समानता के दर्शन हुए हैं। अतः मेरी समझ में भारतीय विद्वद्त समाज को युंग के विचारों से परिचित किया जाना हो कार्ल गुस्ताव युंग द्वारा भारतीय चिन्तन के प्रति व्यक्त श्रद्धा एवं समझ का योग्य प्रतिफल तथा धन्यवाद प्रकाशन है।" विद्वान् प्रणेता श्री उपाध्याय की कामना है "मेरी यह हिन्दी पुस्तक युंग सम्बन्धी विस्तारपूर्वक परिचयात्मक पुस्तक के रूप में स्वर्गीय कार्ल गुस्ताव युंग के प्रति एक विनम्र श्रद्धांजिल सूचक होगी ताकि युंग के सामन्जसकारी विचारों से हिन्दी भाषा-भाषी विद्वान न केवल परिचय प्राप्त कर सके, अपितु आगे जाकर कोई भारतीय विद्वान भारतीय एवं युंगीय साहित्य की सम्यक समझ से समूचे मानव-व्यक्तित्व के विकास के हेतु योग्य मार्ग प्रशस्त कर सके, जिसके प्रकाश में पूर्व और पश्चिम, अर्वाचीन और प्राचीन, समृद्धि तथा गरीबी, के सहज द्वन्दों के बीच परस्पर समझ, समानता और सामन्जस की पूर्ण इकाइयां स्थापित कर भेद अभेद, द्वन्द अद्वैत तथा विज्ञान आत्मज्ञान में उद्भित कर सके तथा इस प्रकार व्यष्ठि समष्ठि के साथ एक, समान, समरस प्राप्त कर सके।" मैं यह समझता हूँ कि युंगीय दृष्टि, मति और धृति के पात्र शिष्य लेखक श्री भवानीशंकर जी उपाध्याय की उक्त शुभकामना विश्व-जनीन ज्ञान-यज्ञ की अवश्यम्भावी सफलता के लिये शुभेच्छा है। पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियां के अवलोकन तथा आलोचन से तो विभिन्न समुदायों में बद्ध और स्थित मानव-व्यष्ठि को जानने तथा समझने में ही हमें बौद्धिक सहायता प्राप्त होती है, किन्तु मानव-व्यष्ठि तथा समष्ठि के संगत, सामंजस पूर्ण एवं मंगलमय शान्ति के विश्व-व्यापि जीवन-यापन के लिये हमें पूर्व और पश्चिम की समूची मानव-चेतना के अवगाहन द्वारा एक प्रकार के उदात प्रत्यक्ष की आवश्यकता है। बीसवीं शताब्दि के इस अन्तिम चरण में मानव को घेरों में बाँध कर रखने वाली दीवारें टूट रही हैं और मानव शताब्दियों के पूर्वा ग्रहों, सम्मोहों, भ्रमों तथा विभ्रमों को जानकर अब उनसे उबरने के लिये संकल्पबद्ध हो रहा है। इस पृथ्वी पर व्याप्त द्वन्द्वों तथा संघर्षों, भयों और भीतियों के टूक-टूक करने वाले युद्ध से मानव अपनी पीड़ाओं द्वारा अपने ही गहन, शान्त तथा शुद्ध बुद्ध साक्षात्मक के लिये मचलने लगा है। निस्संदेह इस पृथ्वी पर मानव के लिये यह उसके असत्य से सत्य, अन्धकार से प्रकाश और

मृत से अमृत की ओर साहस तथा दृढ़तापूर्वक जीवन यात्रा प्रारम्भ करने का दिव्य और भव्य अवसर उपस्थित हो गया है। यही, मनुष्य के भविष्य की इस काल घड़ी में कार्ल गुस्ताव युंग जैसे महर्षि के ज्ञान सम्बल की आज के कातर मानव को संजीवनीवत् आवश्यकता हैं। यही, श्रीमान् भवानीशंकर जी उपाध्याय जैसे युंग-शिष्यों के युंगीय प्रणयन के महत्व की गरिमा भी स्पष्ट हो जाती है। पृथ्वी पर यावत् जीवन के गहनतम् प्रत्यक्ष से ही वह ज्ञान-ज्योति पृथ्वी के मनीषियों को प्राप्त होगी जो प्रजातियों, जातियों, वंशों, कुलों तथा राष्ट्रीय घेरों को पार कर समूचे तथा समस्त जीवात्मा का अखण्ड एवं दैदीप्यमान दर्शन देगी। सच तो यह लगता है मानव-जीव के लिए पृथ्वी पर प्राणी मात्र के मंगल तथा जगत् कल्याण के लिये आत्मा का परमात्म-साक्षात्कार अनिवार्य होता गया हैं। इस विश्व जनीन परिप्रेक्ष्य में महर्षि युंग के तपःद्रूत ज्ञान का अनाथ और दीन मानव जाति के लिये कितना महत्व है यह अकथनीय सत्य हो जाता है। मनीषी पण्डित भवानीशंकरजी उपाध्याय अपनी इस प्रथम हिन्दी युंग पुस्तक में हमें न केवल समूचा युंगीय ज्ञान ही प्रस्तुत किया है, किन्तु भारतवर्ष के मनीषियों द्वारा पुनः विश्वज्ञान-यज्ञ के लिये हमें प्रेरित भी किया है।

महर्षि युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का सार इस प्रस्तावना में देना मेरे लिये पृष्ट-पोषण मात्र होगा। साथ ही श्री उपाध्याय की इस हिन्दी युंगीय पुस्तक की आलोचना अथवा उसको भारतीय पंचकोषों के दर्शन की दृष्टि में परखना भी इस प्रस्तावना का उद्देश्य नहीं है, और नहीं हो सकता हैं। क्योंकि भारतीय तत्वबोध और दर्शन की व्यासात्मक तथा साधनागम्य पृथ्वी पर यावत् जीवन के चैतन्य की चिन्तन-प्रणाली को लेकर श्रीमद् युंग की विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की धीमान पद्धति का मिलान करना ही गुड़ गोबर कर देना होगा। पश्चिमीय तत्व-ज्ञान की विश्लेषणात्मक ऊहा पोह से पूर्ण किन्तु वैज्ञानिक दृष्टि को जानना और परखना भारतीय तत्वविद् के लिये आवश्यक है। भारतीय तत्व ज्ञान की हमारी विरासत विश्लेषणात्मक वैज्ञानिक बोधसे हीन ज्ञान की महिमामयी परम्परा मात्र हैं और हमें उसके पुनर्प्रत्यक्ष की प्रबुध साधना करना अनिवार्य हो गया है।

निस्संदेह महर्षि युंग अपने पूर्ववर्ती मनोविदों से कहीं आगे हो गये हैं। उन्होंने पृथ्वी पर समस्त मानव जाति के उसके समुदायों, घेरों, टुकड़ों तथा सांस्कृतिक वर्तुलों में देखा है। महर्षि युंग ने मानव के पुराण, इतिहास, साहित्य, शिक्षा, दर्शन, दन्तकथा, किवदन्ती ही नहीं उन्होंने मानव के द्वन्द्वों, तनावों, त्रासों और मानसिक रोगों का अध्ययन अनुशीलन तथा एक प्रकार से साक्षात्कार कर मानव के गहनातिगहन अनादि शास्वत् चैतन्य का अनुभव किया है। स्वयं श्री उपाध्याय लिखते हैं; "स्वर्गवासी कार्ल गुस्ताव युंग निरन्तर 30 वर्षों तक सक्रियतापूर्ण मानवीय अनुभवों का ज्ञान सम्पादित करते रहे और हजारों-लाखों व्यक्तियों के

सम्पर्क में आये। उन्हें, अनेक सामान्य और असामान्य व्यक्तियों के साथ भेंट करने तथा उनसे आमने-सामने बैठ कर परस्पर विचार-विमर्श करने तथा एक सहृदय चिकित्सक के नाते हजारों रोगियों की मानसिक स्थितियां उनके रोग-संकटों, मानसिक तनावों, उनके क्रिया-कलापों, तथा उनकी आन्तरिक समस्याओं से परिचय प्राप्त करने का उल्लेखनीय अवसर मिला। यही नहीं, श्री उपाध्याय हमें सूचित करते हैं कि श्रीमद् युंग ने सैंकड़ों मनोविक्षप्त रोगियों तथा हजारों मनस्तापी व्यक्तियों के दु:खों और रोगों को आपसी वातचीत एवं आपसी समझ द्वारा उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास का कार्य भी सम्पादित किया। महर्षि युंग ने केवल आधुनिक बलशाली सम्पन्न तथा कथित संस्कृत मानव का ही सम्पर्क साधा हो, ऐसी वस्तुस्थिति नहीं है। विश्व मानव समुदायों के आधुनिकों से तो श्री युंग ने सम्पर्क किया ही किन्तु श्री उपाध्याय के कथन में श्री युंग ने मानव की आदिम जातियों सम्पूर्ण पुराण को भी जाना तथा उनसे गहरा अध्ययनशील सम्पर्क स्थापित कर महर्षि ने आदिम मानव की मिथ्याओं, दन्त कथाओं तथा उनके व्याप्त विश्वासों–अन्धविश्वासों का भी पूर्ण परिचय प्राप्त किया। इसके साथ ही श्रीमद् युंग ने विश्व के प्राय: सभी उन्नत और विकसित समाजों और उनके द्वारा सम्पादित तथा अभिव्यक्त सर्वोच्च ज्ञान, विज्ञान, धर्म, दर्शन-एवं लोक-संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त की। इन सम्मुनत मानव समुदायों के काव्य, साहित्य, कला एवं कौशल की उच्चतम स्थितियों का परिचय भी प्राप्त किया और उनके मूल्यांकन के भागीरथ कार्य में अपने आपको खपा दिया। विद्वान लेखक का यह निष्कर्ष अभिनन्दनीय है कि महर्षि युंग द्वारा सम्पादित मानवीय अनुभव ज्ञान का विषय अत्यन्त विस्तृत तथा गहन रहा है, जिसकी संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत किया जाना बड़ा ही मुश्किल एवं दुरूह कार्य है। "किन्तु" श्री उपाध्याय आत्म-विश्वासपूर्वक कहते हैं, "किन्तु जिस प्रकार सम्पूर्ण दुनिया का चित्र एक कागज पर नक्शे के रूप में दर्शाया जा सकता है, उसी तरह युंग के विस्तृत एवं गहनतम् अनुभवों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत किये जाने का यह प्रयास किया गया है।" निस्संदेह विनम्र प्रणेता का यह पुनीत विद्याविनय है। श्री उपाध्याय का यह संक्षिप्त युंग परिचय ज्ञान प्रेरणा का श्रोत ही है और मेरे जैसे भारतीय आग्रहों के लिये भी पश्चिम के तत्वज्ञान की प्यास उत्पन्न कर देता है निस्संदेह श्री उपाध्याय भवानीशंकर जी ने महर्षि युंग के साथ एक मौन साक्षात्कार किया है और उनका भारतीय दार्शनिक सम्पूर्णत: महर्षि युंग के श्री चरणों में विनयावनत प्रणाम् ही कर गया है।

श्रीमान् प्रणेता श्री उपाध्याय "युंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" को मानवता के विकास के लिये मंगलमय प्रारम्भ मानते हैं। विश्व मनीषियों के मत में श्री कार्ल गुस्ताव युंग एक और ज्ञानी, कला-मर्मज्ञ, एवं गम्भीर अध्येता हैं, तो

दूसरी ओर पूर्ण वैज्ञानिक, सफल चिकित्सक तथा ईमानदार अनुसंधानकर्त्ता हैं, जिनके अध्ययन एवं अनुसन्धान कार्य से ज्ञान–विज्ञान, आचरण-व्यवहार, प्राचीन-अर्वाचीन तथा पूर्वीय एवं पश्चिमीय विचारों, प्रवृत्तियों क्रियाओं आदि के सभी द्वन्द्वों के बीच एक प्रकार का अद्‌भुत सामन्जस स्वतः ही उभरता हुआ प्रतीत होता है। महर्षि युंग की इस उदात धीमान् तपस्या से मनीषी लेखक की आशा है, श्री युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के सार्थक तथा सफल ज्ञान के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण मानव समाज में सुख, समानता, एकता तथा आपसी समझ की भावना में कल्याणकारी अभिवृद्धि होना पाया गया है। इसलिये श्री युंग के विचारों और कार्य पद्धति का प्रचार-प्रसार होता है त्यों-त्यों मानव समूहों में व्याप्त कट्‌टरता, संकीर्णता, दुराग्रह, नासमझी, अविश्वास, द्वेष, हिंसा और स्वार्थपरता में भी निस्संदेह कमी होना पाया गया है। तथा यह विश्वास प्रायः सभी जाग्रत बुद्धि-जीवियों में गहराई के साथ घर करता जा रहा है कि श्री युंग द्वारा प्रणीत और प्रतिपादित "विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान" शास्त्र मानव के विकास, सुख तथा मंगल एवं शान्ति के जीवनयापन के लिये कल्याणकारी भूमिका है।

महर्षि युंग का "विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान विश्व श्रुत महर्षि सिगमण्ड फ्रॉयड द्वारा दर्शित मानव-मन के अध्ययन तथा अनुशीलन की दिशा में एक क्रांति-कारी तथा समग्र विकास-विज्ञान हैं।

श्री कार्ल गुस्ताव युंग श्री सिगमण्ड फ्रॉयडके समकालीन सहयोगी तथा मित्र थे। श्रीमद् युंग प्रारम्भ में श्रीमद् फ्रॉयड के प्रमुख सहयोगी के रूप में ख्यात हुए। अतः श्रीमद् युंग ने ऋषिवर्य फ्रॉयड द्वारा किये गये मन-प्रत्यक्ष को स्वीकार किया और श्रीमद् फ्रॉयड के द्वारा प्रतिपादित मानसिक सोपानोंको स्वीकार किया। फ्रॉयड के चेतन एवं अवचेतन संज्ञायुक्त दो सम्भागों की अवधारणा को यथावत् स्वीकार श्री युंग ने सिगमण्ड फ्रॉयड़ को अपना समर्थ पूर्ववर्ती तो स्वीकार किया किन्तु फ्रूडियन अवचेतन सम्भाग की खोज को आगे बढ़ाते हुए फ्रूडियन अवचेतन की सम्पूर्ण धारणा में ही क्रान्तिकारी परिवर्तन करना आरम्भ किया। फ्रूडियन मनोविश्लेपण पद्धति पर श्रीमद् युंग की अवचेतन विपयक क्रान्तिकारी शोध खोज का बड़ा गहरा असर पड़ा और एक सफल समर्थ एवं सर्वग्राही "विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान" शास्त्र का सम्यक् आविर्भाव ही शक्य होता गया है। श्रीमद् फ्रायड ने मन का साक्षात् किया, तो श्रीमद् युंग ने "चित्त" का ही प्रत्यक्ष किया है। निस्संदेह श्रीमद् सिगमण्ड फ्रॉयड के "मन" और मानसिक "ज्ञान से" चित्त तथा चित्तीय ज्ञान तक की दोनों ऋपियों की दृष्टियों का विस्तार समुची मानव व्यष्ठि के अध्ययन तथा चिन्तन की साधना में बड़ी संज्ञक प्रगति है। श्रीमद् युंग की मानव चित्त की गहन धारणा ने क्रमशः पश्चिम के मनोविज्ञान के समस्त दिशाबोध

को ही एक नया और समग्र आयाम प्रदान किया है। तथा पश्चिमीय मनोविज्ञान को योगदर्शन के प्रथम सूत्र "योग: चित्त वृत्ति निरोध" तक पहुँचा दिया है।

श्री युंग ने लेखक मत में "चित्त" को ही सर्वोपरि वास्तविकता तथा सत्य माना हैं चित्त द्वारा ही सुख दु:ख के अनुभव होते हैं। श्री युंग के मतानुसार जगत और उसके भव-संसार की समग्र अनुभूति जीव को चित्त द्वारा ही होती है। श्रीमद् युंग का यह कथन भारतीय वेदान्त के उस कथन के बहुत समीप है जिसके द्वारा यह सूचित किया गया है कि अन्त:करण द्वारा ही जीवन के विषयों, घात-प्रतिघातों तथा इन्द्रियज अनुभवों को ग्रहण किया जाता है। यद्यपि युंगीय चित-विश्लेपण को इस भारतीय अन्त:करण के कथन से पूरा संघठित नहीं कर सकते, तथापि श्री युंग ने अपने "चित" तथा चित्तीय विचार द्वारा हमें जीव के समग्र तथा समस्त अगाध चैतन्य को देखने तथा उसका अनुशीलन करने के लिये सही मार्ग भी प्रदान किया है। श्री सिगमण्ड फ्रॉयड ने मनुष्य के अचेतन को *मानव-कुण्ठाओं की राशि मानकर मानव के इन्द्रियज ज्ञान को उसका प्रतिफल ही* कहा है। किन्तु श्रीमद् युंग ने मानव के चित्त को मानव व्यष्टि तथा समष्ठि के सभी तथा समग्र अनुभवों का अतुलकोष ही माना है तथा व्यष्ठि को समष्ठि के सनातन अनुभवों का सर्व-संभव वीज स्वीकार किया है। मनीषी लेखक श्री भवानी शंकरजी उपाध्याय श्री सिगमण्ड फ्रायड तथा श्री कार्ल गुस्ताव युंग के मनोविज्ञान का आधारभूत अन्तर स्पष्ट करते हैं : युंग ने अपनी पद्धति को स्पष्ट करते हुए फ्रॉयड द्वारा प्रयुक्त शव्द "मन" और "मानसिक" के वजाय नवीनसंज्ञा "साइके" चित तथा "साईकेकिक" (चित्तीय) शव्दों का प्रयोग किया है। क्योंकि युंग की मान्यतानुसार "चेतन" और "मन" समान अर्थवाची शव्द प्रतीत हुए हैं। वस्तुत: अवचेतन-घटनाक्रम का "मन" का सम्भाग कहा जाना उचित नहीं है, क्योंकि अवचेतन सम्भाग प्राय: "मन" और अहम् (ईगो) की पकड़ के परे तथा अनजाना रह जाता है। अत: अवचेतन के साथ मन की कोई संगतियां सम्वन्ध स्थापित किया जाना उचित नहीं है। "अपने इस क्रान्तिकारी सिद्धान्त को श्री युंग ने अपनी ख्यात पुस्तक "अवचेतन का मनोविज्ञान" द्वारा प्रतिपादित किया है, जिससे सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक जगत में एक हलचल ही मच गई और इस पुस्तक के प्रकाशन के साथ फ्रायड एवं युंग के अवचेतन सम्वन्धी विचारों का अन्तर जग-जाहिर एवं सुस्पष्ट हो गया है। "श्री उपाध्याय ने इस विख्यात अन्तर का दृढ़तापूर्वक सूचन करते हुए जो विश्वव्यापी विचार संक्रान्ति आविर्भूत हुई उसका उल्लेख इस भांति किया है "युंग के द्वारा "मन" के वजाय नवीन संज्ञा "चित्त" की घोषणा के उसने फ्रॉयड द्वारा प्रतिपादित अवचेतन के स्वरूप वावत भी अपने मतभेदों की दृढ़तापूर्वक प्रतिपादित किया है। फ्रॉयड की मान्यता अनुसार अवचेतन "मन" का वह सम्भाग है, जहां पर व्यक्ति अपनी शैशवकालीन कामुक वृत्तियों को समाज द्वारा असंगत पाई जाने

के फलस्वरूप प्राय: अन्दर की ओर ढकेल देता है। अत: फ्रॉयड के अनुसार अवचेतन "खण्ड दमित, उपेक्षित तथा समाज द्वारा तिरस्कृत तथा अवांछनीय एवं अशोभनीय वृत्तियों का अव्यवस्थित जमाव हो जाता है, जो अशोच, असुन्दर, तथा अशिव विचारों, भावनाओं एवं वृत्तियों का गोदाम माना गया है। अत: इस सामग्री का कोई सार्थक उपयोग मानवीय विकास की दृष्टि से किया जाना नहीं माना गया है"। किन्तु कार्ल गुस्ताव युंग ने "चित्त" के अवचेतन सम्भाग को मानवीय अनुभवों का उपयोगी रत्न भण्डार माना है जिसमें व्यक्ति केवल अपने भूतकालीन अनुभवों को ही नहीं संग्रहित करता, अपितु वह अपने पूर्वजों, प्रजाति तथा सम्पूर्ण मानव जाति के द्वारा भोगे गये अनुभवों को "बीज" की भांति अव्यक्त रूप से संग्रहित करता है, जो यदा-कदा अवचेतन स्तर से चेतन पर स्वत: उभर कर व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं तथा मानवीय "व्यक्ति" के विकास के कल्याण पथ पर अग्रसर होने की महत्वपूर्ण भूमिका का भी निर्वाह होता है। फलत: युंगीय चित्त का अवचेतन सम्भाग व्यक्ति तथा व्यक्ति के वड़े पुरखाओं, तथा उसकी प्रगति ही नहीं अपितु अव तक विकसित सम्पूर्ण मानव जाति के द्वारा भोगे हुए ज्ञान एवं अनुभवों का प्रकाश युक्त रत्न-भण्डार हैं जिसका स्वत: कल्याणकारी उभार चेतन-स्तर पर होने पर समूचा मानव व्यक्तित्व अधिक समझदार, अधिक सम्पन्न तथा अधिक जनोपयोगी वन पड़ता है जवकि फ्रॉयड के अवचेतन का उमराव भावावेश या मनोवेश के रूप में गन्दे पानी के नाले की तरह व्यक्ति के चेतन–सम्भाग को धुंधला, गन्दा तथा क्षतिग्रह करने वाला वताया गया है। "श्रीमद् युंग के इस अवलोकन का महत्व स्पष्ट करते हुए विद्वान लेखक कहते हैं" "युंग द्वारा प्रतिपादित अवचेतन स्तरीय सम्भाग की अन्तर्वस्तु के उमराव को कल्याणकारी, ज्ञानमयी अनुभव सम्पन्न एवं समाजोपयोगी माना गया है, जिसके प्रादुर्भाव से मानवीय व्यक्तित्व के योग्य विकास में वड़ी मदद मिलती है। अवचेतन की अन्तर्वस्तु के स्वरूप के वावत इस मौलिक मतभेद से फ्रॉयडीयन मनोविश्लेपण एवं युंगीय विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के वीच का मुख्य अन्तर स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि युंग की मान्यता अनुसार चित्त का अवचेतन–सम्भाग जहां सुन्दर, मनोहर एवं उपयोगी कहा गया है, वहां पर फ्रायड द्वारा प्रतिपादित अवचेतन को व्यक्ति तथा समाज द्वारा तिरस्कृत, दमित एवं अनुपयोगी सामग्री का वेतरतीव एवं जमाव वाला गोदाम अथवा मानव समाज द्वारा फैंके गये कूड़े–करकट का एक ढेर माना गया है। "निस्संदेह फ्रॉयड तथा युंग के अवचेतन का यह मौलिक तथा मंगल संक्रान्ति पूर्ण विचार-भेद मानव–व्यक्तित्व के विकास के लिए सम्पूर्ण महत्व का विषय है।" फ्रॉयडियन अवचेतन के विचार ने वीसवीं शताब्दि के समाजशास्त्रियों, साहित्यकारों तथा मानव के घरेलू तथा सामाजिक जीवन पर वड़ा कुत्सित प्रभाव डाला है, जिससे मानव–चेतन की समूची धारणा ही अशुभ हो गयी थी। इस

अन्धकारपूर्ण अज्ञान से निस्संदेह महर्षि युंग ने मानव–चेतना को मुक्त कर सत्य, शिव, सुन्दर के आलोक समुद्र की तरंग ही इंगित किया है। युंग के अव–चेतन की वैज्ञानिक धारणा ने निस्संदेह विश्व के साहित्य सृजन, तत्वबोध समाज-शास्त्रीय ही नहीं प्रत्येक अपराविधा के धीमान क्षेत्रों में प्रकाश की किरणें ही बिछाई हैं। फ्रॉयड की मान्यता मनुष्य को पशु ही स्वीकार करती है, जब युंग की धारणा मनुष्य को सनातन मानव चेतन स्वीकार कर उसको देवत्व के विकास के लिये आशावान करती तथा स्वयं के शिव, सुन्दर अधाध चैतन्य का अमोघ विश्वास भी प्रदान करती है। निस्संदेह महर्षि युंग ने मानव चेतना के अवचेतन सम्भाग की अपनी दिव्य धारणा द्वारा मनुष्य और मानव जाति को उसके असह्य दुर्भाग्य से बचा लिया है और मानव-जीवन के द्वन्द्वों से आत्मविश्वास पूर्वक उभरने का हौंसला ही अर्पित किया है। इस पृथ्वी पर मानव निस्संदेह असत् से सत्य, अन्धकार से प्रकाश और मृत्यु से अमरत्व की ओर विकसित होने के लिये ही जन्म धारण करता है। युंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की सिद्ध पद्धति द्वारा मनुष्य को अपने जीवन का सत्य, शिव, सुन्दर विश्वास ही प्राप्त होता है।

श्री सिगमण्ड फ्रॉयड के मनोविश्लेषण के सिद्धान्तों ने अनायास ही कला, साहित्य एवं मानव की समूची सृजन-प्रवृत्ति पर भारी असर किया है–पुराण काल से चली आती तथा मानव जीवन के उत्तम उपयोग में आने वाली सभी उदात् मान्यताओं, दिव्य धारणाओं तथा मनुष्य के व्यष्ठि तथा समष्ठि के समग्र जीवन क्रम को समझने की सारी प्रक्रिया ही सिगमण्ड फ्रॉयड के नाम–प्रणीत और दमित इन्द्रिय सन्निकर्ष के बोध के कारण कुत्सित होती गई है। कला और साहित्य सृजन की अस्मिता देह-सुख की कातरता और समष्ठि की सुष्ठ मर्यादाओं के प्रति विद्रोह में ही बदल गई। मनुष्य अपने मूलभूत दिव्यत्व और देवत्व के प्रति अपना आत्म-विश्वास ही जैसे खोता चला गया तथा वह एक कामुक तृष्णाओं का पशु ही बनता गया फ्रुडियन मनोविज्ञान ने क्रमशः मनुष्यों को देहस्त कर एक विलक्षण चार्वाक ही बनाना आरंभ किया था। मानव की उदात और श्रेष्ठ सृजनात्मक चेतना ही पाशविक होती गई और मनुष्य सनातन से प्राप्त अपनी दिव्य विरासत को ही ठुकरा गया। यह मानव जाति का सौभाग्य ही माना जायगा कि कॉर्ल गुस्ताव युंग ने अपनी चितीय अवचेतन धारणा द्वारा पुनः मनुष्य को मानवता के पथ पर आरूढ़ ही किया है। मानव-व्यष्ठि अपनी सनातन समष्ठि के सहित और द्वारा सत्य, ज्ञान और आनन्द का ही अमोघ चैतन्य है—इस ओर महर्षि युंग ने सम्पूर्ण मानव का दिव्य प्रत्यक्ष किया तथा मानव जाति के प्रकाशमय दिव्य अनुभवों को उबार लिया है। विद्वान लेखक कहते हैं: "कार्ल गुस्ताव युंग की मान्यता अनुसार विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान एवं साहित्य कला तथा साहित्य का सम्बन्ध विवादास्पद होने के बावजूद भी अत्यन्त गहन एवं घनिष्ठ है। अतः मनोविज्ञान

तथा काव्य-कला एवं साहित्य के बीच तुलना किया जाना योग्य नहीं है किन्तु इसके बीच सम्बन्धों की व्याख्या किया जाना सम्भव है। काव्य, कला और साहित्य की रचनाएें निस्संदेह चित्तिय क्रियायें हैं। अत: इसकी विवेचना मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से किया जाना सम्भव है, किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से मनोविज्ञान एवं काव्य, कला और साहित्य इत्यादि के क्षेत्र सर्वथा एक-दूसरे से पृथक-पृथक हैं। अतएव काव्य कला एवं साहित्य की उपलब्धियों का मूल्यांकन या नाप-तौल विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के आधार पर प्रस्तुत किया जाना न तो योग्य है और न उपयोगी ही है। मनोविज्ञान और काव्य कला, साहित्य इत्यादि की मूल प्रकृति ही भिन्न-भिन्न है। मनोविज्ञान के अपने नियम और उसकी मर्यादायें हैं। मनोविज्ञान एक शुद्ध विज्ञान है, जो कार्य-करण के सम्बन्धों से मर्यादित है। कला, काव्य और साहित्य का क्षेत्र विस्तृत, व्यापक, मुक्त और रसमय है, जिसकी उपलब्धि आनन्द रसानुभूति है। जबकि मनोविज्ञान का विपय सम्यक समझ का मर्यादित क्षेत्र है। अत: काव्य, कला और साहित्य के अन्तर्गत उठने वाले प्रश्नों का उत्तर मनोविज्ञान के माध्यम से दिया जाना निरर्थक प्रयास सिद्ध हो सकता है। "सच तो यह लगता है कि युंग ने बौद्धिक समझ और रसमय सृजन प्रकृति का मूलभूत भेद हमें बता दिया है। कला, काव्य तथा साहित्य की व्याख्या विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के द्वारा प्रस्तुत किया जाना उसी प्रकार योग्य नहीं है जिस प्रकार बुद्धि के आधार पर भावना की प्रकृति का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, अवश्य मनोविज्ञान सें काव्य, कला और साहित्य के क्षेत्र का विषय वस्तुत: अतिक्रमण किये बगैर सम्बन्ध देखा जा सकता है। किन्तु मनोविज्ञान के तराजू पर काव्य, कला और साहित्य की कृति के गुण-दोपों, अच्छाई-बुराई, सार्थकता या अर्थहीनता का नाप तोल नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह सुस्पष्ट है कि प्रत्येक विपय के क्षेत्र की भिन्न-भिन्न मर्यादायें हैं सीमायें हैं—नियमादिक हैं, जिसकी कसौटी पर इनका अलग अलग मूल्यांकन किया जाता है। अत: काव्य, कला तथा साहित्य का शुद्ध मनोविज्ञान से कोई नतीजा या निष्कर्ष निकला जाना योग्य नहीं है। विद्वान लेखक इसको अधिक स्पष्ट कर कहते हैं : "निस्संदेह प्रत्येक कला-कृति के निर्माण एवं काव्य, साहित्य की रचना हेतु सृजक मानव को जटिल चितीय क्रिया-कलापों के बीच गुजरना पड़ता है और प्रत्येक कला और साहित्य की रचना में रचनाकार के चेतन तथा अवचेतन सम्भागों का स्वत: ही उपयोग भी किया जाता है। फिर भी स्वयं किसी रचनाकार के लिये उसकी कृति का क्या हिस्सा चेतन संगत तथा क्या हिस्सा अवचेतन स्तरीय प्रेरणा का परिणाम है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। अत: कला और साहित्य की कृति में कितना योगदान वैयक्तिक है तथा कौनसा अंश सामूहिक अवचेतन स्तरीय है इस बाबत कोई निष्कर्ष या विवेचन प्रस्तुत किया जाना सम्भव ही नहीं हैं, क्योंकि प्रत्येक रचना-

कार के चेतन तथा अवचेतन सम्भाग की मिश्रित अनुभूति की ही अभिव्यक्ति है, जिसको खण्डीय विश्लेपण से कभी भी हृदयंगम नहीं किया जा सकता। सभी कला-कृतियों और साहित्यिक रचनाओं में रचनाकार अपनी वहिर्मुखी एवं अर्न्तमुखी-दोनों अभिवृत्तियों की एवं चिन्तन, भावना, संवेदन तथा अन्त:प्रज्ञा की चारों क्रियाओं का भरपूर उपयोग करता है, जिसके परिणामस्वरूप कृति में विस्तार और गहराई, विचार और भावना, तन्मयता एवं विलक्षणता का आभास अवश्य अनुभव किया जाता है। किन्तु इस रचना एवं कृतियों के सभी कारकों का पता लगना सम्भव नहीं है। इसलिये इनके सम्वन्ध में किसी मनोविज्ञानिक निष्कर्ष या नतीजा निकाले जाने की कोई गुंजाईश ही नहीं है।"

उक्त स्पष्टीकरण से यह सहज ही प्रतीत हो जाता है कि कलाकृति और साहित्यिक रचनाओं को मनोविश्लेषण अथवा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर नहीं, कला और काव्य शास्त्र के अपने ही अनुभव-जन्य सिद्धान्तों से ही परखना चाहिये। कला और साहित्यिक सृजन को मनोविश्लेपण की अभिव्यक्ति प्रक्रिया मात्र मानना या वना देना स्वयं मनोविश्लेपण की ही अवमान्यता करना है। कला और काव्य स्वयं में ही अनुभूत तथा प्रमाणिक शास्त्र हैं और मानव-व्यष्ठि एवं उसकी समस्त समष्ठि के चित्तीय दिव्यता के लिये स्वयं आविर्भूत हैं। निस्संदेह कार्ल गुस्ताव युंग भारतीय काव्यशास्त्र के सनातन लक्ष्य के वहुत पास पहुँच गये हैं। अवचेतन सम्भाग को मानव-व्यष्ठि तथा समष्ठि के त्रिकाल का कल्याण कुंज रत्न भण्डार मानना क्रमश: इस सिद्धान्त की खोज ही करना है। कला और काव्य कृतियों द्वारा मानव अपने चित गहन के अन्धकार को चीरकर स्वयं का उदात्त प्रकाश ही अनुभव करता है तथा अपने मानसिक द्वन्द्वों का सम्यक पाचन कर आदर्शोन्मुख शक्तिशाली चितीय अभिव्यक्ति करता है। सृजन का उद्देश्य टुकड़े से हीनतम-न्यूनतम अंश हो जाना नहीं है—हीनतम से महानतम अनुभव करवाना ही सृजन का एक मात्र लक्ष्य है। पृथ्वी पर मानव चेतना का आविर्भाव परम सुख का अनुभव करते हुए परम् सत्य का आनन्दमय साक्षात्कार करना है। मनुष्य अपने दानव अथवा राक्षस के पैशाचिक अथवा त्रासदायक अनुभवों के लिये नहीं कविता करता, व्यर्थ ही जीवन के वीभत्स के लिये वह नाट्य नहीं करता और नहीं निराश, कातर, कटु और अपने अतृप्त अहम् की निरी अभिव्यक्ति के लिए रचना करता है। मानव सृजन प्राणी मात्र की मंगल सुन्दर तथा दिव्यातिदिव्य चेतना की मार्मिक अभिव्यन्जना के लिये ही सृजन करता आया है। सिगमण्ड फ्रॉयड ने मानव जाति के रसमय सृजन को अस्थान कर मनुष्य के पाशविक व्यक्तियों की अपच अभिव्यक्ति को ही कला तथा काव्य माना है। काम-प्रवृति के वोध पर निर्भर फ्रूडियन मनोविश्लेपण प्रणाली सहज वितृष्णा मानव के लिये आकर्षक रही है तथा अपना उदात्तीकरण करने में असमर्थ तथा क्रुद्ध, असन्तुष्ट और समस्त समष्ठि का

तिरस्कार करने वाला हीन चित्र लेखन मात्र विश्व को सौगात में दिया है। तव महर्षि युंग ने चित्त के अवचेतन (गहनातिगहन) में परमेश्वर के सच्चिदानन्द भास को मान लिया है—निस्संदेह श्रीमद् युंग अपने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के सिद्ध सिद्धान्तों द्वारा मानव में गुह्य देवत्व का भान कर पाये हैं। अतः यह लिखना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि श्री भवानीशंकर जी उपाध्याय ने अपनी पुस्तक के तृतीय खण्ड अध्याय 21 द्वारा भारतीय मनोविज्ञानिकों, वौद्धिकों तथा कलाकारों और साहित्यकारों को एक प्रकार से युंगीय समर्थन देकर पशुत्व से उवार लिया है और अपने देवत्व की ओर सृजन करने के लिये पुनः पुनः आश्वस्त किया है, सच तो यह है श्रीमद् युंग यह अनुभव करते हैं कि मानव-व्यष्ठि समष्ठि के समस्त सौन्दर्य वोध से भरपूर हैं तथा मानव चित्त अपने अणु और विराट में यावत जीवन के चैतन्य अनुभवों का अतल भण्डार है तथा मानव जीवन की अभिव्यंजना जीवन के शील, जीवन यापन की शक्ति तथा आत्म चैतन्य के सरस सौन्दर्य से परिपूर्ण है और इसीलिये व्यष्ठि का अवचेतन सनातन तथा शाश्वत यावत जीवन को परम् चैतन्य की चित्तीय वृतियों का अगाध समुद्र है। मैं युंग के कला तथा साहित्य के विषय के स्पष्टीकरण को विश्व के कलाकारों और सृजन धर्मियों के लिये आत्म-विश्वास का वरदान ही मानता हूं।

महर्षि युंग भारतीय योग और उसके अमोघ दर्शन से काफी प्रभावित रहे हैं। भारतीय योग दर्शन का उन्होंने गम्भीर अध्ययन कर पूर्व तथा पश्चिम के वीच सम्यक् सामन्जस स्थापित करने के लिये योगाभ्यास को प्रमुख साधन भी कहा है। मानव जीवन के आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन के मध्य मंगलमय सम्यक ज्ञान की प्राप्ति अनिवार्य वताते हुए श्रीमद् युंग ने धर्म की आवश्यकता साभार प्रतिपादित की है। अवचेतन चित्तीय परम् विकास के लिये श्री युंग विज्ञान को एक सीमा के वाद घातक ही मानते हैं तथा भौतिक तृष्णाओं से अनिवार्यतः उत्पन्न तनावों और द्वन्द्वों के शमन के लिये धार्मिक प्रक्रिया को वह आवश्यक समझते हैं। अमरीका सहित पश्चिम राष्ट्रों के भीषण स्वार्थ संघर्षों का उल्लेख करते हुए युंग ने मानव की आज की स्थिति को अत्यन्त उग्र तथा विनाशकारी ही वताया है। श्री युंग पश्चिम के मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों की आज की संक्रामक चिन्ता को जानते हैं और उनको भारतीय प्रवुद्ध से दिशावोध प्राप्त करने के लिये भी प्रेरित करते हैं। पातन्जलि योगदर्शन की प्रक्रिया का अध्ययन कर युंग आज के चिन्तक को उससे व्यष्ठि के परम् विकास के लिये धारणा के लिये सिफारिश करते हैं। श्री युंग का साभार कहना है कि आज के त्रस्त, भीत, अर्थात् तथा भौतिक सुखों के महत्वाकांक्षी मानव को यदि विनाश से उवरना है तो उसको भारतीय

योग के लक्ष्य–वोध को स्वीकार करना ही होगा इस दृष्टि से आज के प्रचलित विज्ञान और धर्म के भयावह संघर्ष से उवरना श्री युंग मानव जाति के लिये अनिवार्थ मानते हैं। श्री युंग ने विज्ञान को चित्त के चेतन सम्भाग की साज संवार कहा है तथा धर्म को अवचेतन की मूल क्रिया शक्ति स्वीकार किया है। चित्त की समग्र पूर्ण पहिचान और समझ के लिये वैज्ञानिकों को धर्म के रहस्यों की जानकारी करना मतिमान युंग अनिवार्य मानते हैं। धर्म-रहस्य की जानकारी से रहित वैज्ञानिक मानव के सर्वनाश का ही सरंजाम करता रहेगा और विज्ञान की एकांगी दौड़-धूप में जीवन के अस्तित्व के लिए निरन्तर भय ही उत्पन्न करता रहेगा। श्री युंग मानव व्यष्ठि के चित्त में सत्य, शिव, सुन्दर धर्मिता की शक्ति को ही आधारभूत मानकर मानव के आध्यात्मिक विकास को ही प्रमुख मानते हैं। इसलिये भारतीय योगदर्शन तथा यौगिक पद्धति से मानव सीख सके, इसके लिये मनोवैज्ञानिकों को अपने चिन्तन को ढ़ालने के लिये भी सन्देश दिया है। संक्षेप में, धर्म-प्रवृति द्वारा मानव वैज्ञानिक सुख–सुविधा का आवश्यक संतुलन वना रख सके और स्वयं को परमसुख का आकांक्षी रखते हुए भी वह परम् सत्य की ओर जा सके, इसके लिये श्री युंग ने भारतीय योग के आधारभूत सिद्धान्त को स्वीकार किया है।

महर्षि युंग भारत का स्वप्नमय संसार मानते हैं भारतवर्ष आकर युंग पूर्व पश्चिम की मिश्रित कला और पाश्चात्य पुकार के साथ भारतीय जीवन की सम्पन्नता से वह प्रभावित नहीं हुए। युंग भारत के गांवों में गये। भारत के विस्तृत भूखण्ड, हरी भरी पहाड़ियां, पीले धान के खेत और सादे खपरेल, झौंपड़ियां विपुल वृक्ष, विशेषकर पीपल, वरगद और ताड़ वृक्षों को देख कर महर्षि युंग भारतीय धरती और आकाश की क्षितिज के गुह्यमान इंगितों को समझ गये तथा उन्होंने आत्मा की खोज में पुराण काल से दत्तचित्त दैन्य और दीनता से भरे हुए भारतीय जनपदीय को देखा–युंग को यहां मानव का शान्त, सहज, प्रभू की प्रार्थना में लगा तथा जन्म जन्मान्तरण की जगत यात्रायें करते रहने वाला अनुभव वृद्ध "आदि और अन्त" दोनों ही हैं। भारतीय ग्राम्यवासी को देखकर, उससे हिलमिल कर महर्षि युंग ने भारतीय लोचनों के स्वप्नों का जैसे साक्षात् किया। सहज एवं सरल जीवन-यापन करते हुए शान्त-सन्तोषी एवं तनावों से मुक्त किसान हैं–भारत के गांवों में निरन्तर वदलती हुई भीषण तथा प्रचण्ड दुनियां का जैसे कोई प्रभाव ही नहीं है। "युंग की मान्यता है भारतीय जीवन चिन्तन धारा सनातनकालीन, यथावत अप-

रिवर्तनशील हैं और यहां जो कुछ दिखाई पड़ता है वह अखण्ड एवं अनिवार्य पूर्व जन्म का क्रम मात्र है। यहां जो हैं, वह सदियों पूर्व रहा है और आगे भी इसी तरह बने रहने का विश्वास है। महर्षि युंग भारतीय आर्यों के दर्शनों के आलोक तथा पुराणों के विलक्षण सत्य, न्याय तथा धर्म की सत्य घटनाओं तथा अपूर्व मानव व्यक्तियों से भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। भारत में महर्षि युंग को अपने अघाध, अतल त्रिकाल सम्मत आदि और सनातन व्यष्ठि और समष्ठि के अवचेतन एवं चेतन का पूर्ण आभास ही जैसे हुआ। श्री उपाध्याय कहते हैं कि महर्षि युंग भारत को देश और काल की चिन्ता से मुक्त अपूर्व, अदृष्ट, संचित, प्रारब्ध और तद्गत क्रियमाण कर्मो की काल गतिविधि ही मानने लगे। भारतीय जीवन का क्रम जन्म और मृत्यु तथा तत्पश्चात् पुनः जीवन का क्रम व्यष्ठि के क्रमानुसार निरन्तर बने रहने का विश्वास भारत में सर्वत्र पाया जाता है। इसीलिये युंग समझते हैं कि भारतवासी वैज्ञानिक से कहीं अधिक योगी की क्षमता देश-कालातीत मानते हैं। भारतीय योगी की शक्तियों तथा सिद्धियों के प्रमाणभूत वर्णन और कहानियां सुनकर युंग मानने लगे थे कि भारत भूमि मानव के कर्म की धर्म भूमि हैं और अन्त में वस्तुतः भारत उदात्, मंगलमय द्विव्य सपनों की अपराजित कालजयी दृष्टि है। युंग कहते हैं "यह संभव है कि भारत में वास्तविक दुनियां है और जब आज मनुष्य पाश्चात् जगत का निवासी अभाव कुण्ठा मोह तथा मद-मात्सर्य के पागलखाने में रहता है, जब अन्यत्र मनुष्य जन्मने और मरने, बीमार होने, लालची, गन्दा बालक सा अहमन्यसा रहता है, तब भारतवर्ष में पृथ्वी का अनादि मानव जीव यावत जीवन के शिव-संकल्प तथा सत्य, तथा सुन्दर मंगलमय जीवन स्वप्नों में समाधिस्थ सा रहता है।

महर्षि युंग मानो स्वयं से पूछते हैं, "भारत हमें क्या सिखा सकता है" भगवान बुद्ध के उद्देश्यों से युंग बहुत ही प्रभावित हुए हैं। सघन, सुन्दर, सरस तथा सभी ऋतुओं की विहार भूमि भारतवर्ष का श्री युंग शक्य मुनि गौतम बुद्ध को प्रकाश मानते हैं। बुद्धदेव के मध्यम मार्ग में, युंग के मतानुसार मानव जाति के उद्धार के लिये दार्शनिक सामन्जस है—यह ज्ञान का शान्त, प्रसन्न, अभयपूर्ण तथा काल के बन्धन से मुक्त जीवन चैतन्य का ही अनुभव है, निर्माण जो पृथ्वी पर कातर, त्रस्त, दीन, अनाथ बंधे तथा तृषणातुर मानव को अपने चरम और परम विकास के लिए उपयुक्त, योग्य जीवन पन्थ बता सकता है। युंग बुद्ध धर्म के

भारत में लुप्त हो जाने की घटना से चिन्तित हुए हैं। युंग इस आश्चर्यजनक नियति के कारण की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि अवचेतन-अवधारण के आध्यात्मिक प्रयत्नों के दौरान कोई भी विचारधारा ज्ञान के सर्वोपरि शिखर पर स्थाई रूप से स्थित नहीं रह सकती। यह तथ्य समस्त मानव-जाति के सामान्य अनुभव से स्वयं ही प्रमाणित हैं। युंग यह मानते हैं कि भारतीय मानव को आध्यात्मिक अनुभव जहां पुराण हैं, वहां वह सनातन भी है और परम् विकसित भी है। अतः बौद्ध दर्शन और धर्म को अन्य अल्प विकसित देशों की शरण लेनी पड़ी। युंग का यह तथ्य निरूपण एवं हमें अटपटा लग सकता है, किन्तु भारतीय दर्शन के परम् सार रूप ब्रह्म की गहनातिगहन दिव्याति दिव्य सच्चिदानन्द चिति और चैतन्य की सिद्ध तथा अनुभूत प्रणाली मानव धर्म का आज दिन तक स्थानापन्न नहीं मिल सका है। भारतीय ब्रह्म दर्शन, वेदान्त, जैसे पृथ्वी पर परम् सत्य की खोज का अन्तिम तथा अटल उत्तर है। श्रीमद् युंग अपने भारत के विस्तृत अध्ययन के परिणाम-स्वरूप भारतीय दर्शन का व्यवहारिक स्वरूप "धर्म" न केवल समझ ही पाये किन्तु मानव के चरम और परम् विकास, जगद् कल्याण तथा सृष्टि मंगल के लिए उसकी अनिवार्यतः भी भांप सके। विवेकशील श्री उपाध्याय कहते हैं, "युंग की यह मान्यता है कि भारतीय• धर्म एक विमान अथवा शिखर के सदृश्य है, जिस पर च्युंटी की धीमी चाल से ऊपर पहुँचा जा सकता है और इतिहास के इस धीमे क्रम में ईश्वर को अन्त में जाकर एक दार्शनिक विचार प्रमाणित किया जा सकता है। "इस उदात्त रहस्यमय चाल को तथा गतवुद्ध युंग के मत में जान नहीं पाये हैं और एक ही छलांग में यह घोषणा कर दी कि ओलोकित जागृत मानव की सत्ता ईश्वरीय सत्ता से भी ऊँची और महत्वपूर्ण है। मानव की यह सर्वोपरि सत्ता तथा महत्व मानव के चिद्-गहन में व्याकुल वह जीजिविषा है, जिससे एक ओर वह परम् सुख प्राप्त करने के लिये आदर्शोन्मुख द्वन्द्वशील जीवन जीता है, तथा धर्म पालन द्वारा व्यष्ठि और समष्ठि और जगत का स्व कल्याण के साथ–साथ मंगल भी करता चलता है।

भारतीय वैदान्त दर्शन पर आधारित और अवलम्बित भारतीय वैदिक धर्म की गहन और गूढ़ प्रवृति मूलभूत रूप से मानव व्यष्ठि और समष्ठि में है। यह जगत भी इस कल्याणकारी मंगलमय विज्ञान-घनता से भरपूर है। भारतीय मानव के धार्मिक विकास, धीमी गति से ही सही, पर चर्चा करते हुए श्रीमद् युंग कहते हैं

कि पश्चिम का बाह्य विकास तो विज्ञान की प्रतिमा के कारण हुआ किन्तु उसका अंतरंग-चिद्घन चित्त का विकास न्यूनतम ही हो सका है। श्री युंग कहते हैं पाश्चात्य जन समाज का तन (चेतन-सम्भाग) तो विकसित हुआ है किन्तु उसका अन्दरूनी मन "अवचेतन सम्भाग का तद्नुसार सच्चे अर्थों में योग्य सुधार या विकास नहीं हो सका है।" महर्षि युंग ने जहां तक मानव और मानवता के विकास का सम्बन्ध है, पूर्व तथा पश्चिम के आधारभूत अन्तर को इंगित किया है। श्री युंग ने मानव के समग्र, समूचे, सनातन चिद्गहन के गहन विकास की समस्या उपस्थित की है। यह मानव का दिव्य और शान्त विकास केवल चित की धार्मिक मार्मिक प्रकृति की समूची समन्वयशील प्रवृत्ति से ही संभव तथा शक्य है और यही भारतवर्ष का विश्व के मानव एवं मानव जाति का संदेश है। श्री युंग का अभिप्राय यह है कि भारतवर्ष से दुनियां के अन्य राष्ट्रों का मानव, मानव–जीवन के चरम् और परम् विकास की विद्या, कला आदि सीख सकता है और जीवन को अभयपूर्ण अद्वैत प्राप्त कर सकता है।

निस्संदेह श्रीमान् भवानीशंकर जी उपाध्याय ने अपनी इस महत्वपूर्ण और गरिष्ठ युंग विवेचना में इस पृथ्वी तल पर त्रस्त, भीत और संघर्षरत कटे और बंटे हुए परस्पर झगड़ते तथा शोषण करते हुए मनुष्य के लिये देवता बनने की प्रेरणा को ही बहाया है किन्तु मानव के अन्तःकरण में गुह्य चिन्मय चिद्घन परमात्मा के दर्शन के लिये भी संशय से भरे और यर्थात मानव को आत्मविश्वास भी प्रदान किया है।

मेरी शत-सहस्त्र बधाई !

19 अप्रेल, 1983 — जनार्दनराय नागर

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

अध्याय 1

विषय प्रवेश

आधुनिक मानवीय चिन्तन पर कार्ल मार्क्स, डाक्टर सिगमंड फ्रायड एवं कार्ल गुस्ताव यूंग के विचारों का अत्यधिक व्यापक प्रभाव पड़ा है। सर्वप्रथम कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित "द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद" ने सामाजिक रचना, अर्थ व्यवस्था एवं प्रशासनिक तंत्र में उल्लेखनीय उलट फेर कर दिया है और सम्पूर्ण दुनिया में मार्क्सवाद के समर्थन अथवा विरोध में एक अजीव तनाव की स्थिति वना दी है। मार्क्स के पश्चात् डाक्टर सिगमंड फ्रायड़ द्वारा प्रतिपादित मन के अवचेतन सम्भार की खोज ने समूचे मानवीय व्यक्तित्व का स्वरूप ही वदल दिया है। परम्परा से मानव मन एक अखण्ड एवं समग्र माना जाता था और मन के माध्यम से ही मानव विश्व तथा इसकी सभी वस्तुओं का अर्थ वोध प्राप्त करता था, तथा मन की ही मदद से मानवीय जीवन की सभी क्रियाओं का संचालन होना माना जाता था, किन्तु फ्रायड ने यह प्रतिपादित किया है कि मन के दो सम्भाग हैं, "चेतन" तथा "अवचेतन"। जिसमें से चेतन मन के स्वरूप को तो मानव समझ पाता है किन्तु अवचेतन मन अज्ञेय, अनजाना एवं अन्धकारमय वह संभाग है जो अहम् की प्रत्यक्ष पकड़ से परे है, अत: मानव अपने अवचेतन मन के स्वरूप को नहीं समझ पाता। फ्रायड़ द्वारा प्रतिपादित "अवचेतन" संभाग की अवधारणा से मानवीय व्यक्तित्व का अव समूचा स्वरूप ही वदल गया है। फ्रायड़ के मतानुसार अवचेतन मन का वहुतांश सम्भाग में है और वह चेतन संभाग की अपेक्षा अधिक प्रभावी एवं महत्वपूर्ण है क्योंकि अवचेतन ही चेतन मन का आधार है, तथा अवचेतन स्तर ही चेतन संभाग को प्रभावित एवं संचालित करता है। इस प्रकार मानव को कर्म करने, सोचने, विचारने, भावाभिव्यक्त करने अथवा काल्पनिक उड़ानें भरने का आदि स्रोत या मूल आधार अवचेतन संभाग ही है जिस पर मानव अर्थात् अहम् (मैं) का कोई नियंत्रण ही नहीं रहता। फ्रायड़ द्वारा अवचेतन सम्वन्धी इस महत्वपूर्ण खोज से न केवल मनोविज्ञान का क्षेत्र अपितु समग्र साहित्य, विज्ञान, कला, धर्म एवं दार्शनिक चिन्तन के सभी अंगों पर गहरा एवं दूरगामी प्रभाव पड़ा है।

जर्मनी निवासी फ्रायड के समकालीन कार्ल गुस्ताव यूंग का जन्म 1875 में स्वीटजरलैण्ड में हुआ। सन् 1900 में जुंग ने चिकित्सा शास्त्र में उपाधि प्राप्त करने के बाद यूरोप के एक मानसिक चिकित्सालय में अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किया। यूंग ने फ्रायड द्वारा अवचेतन सम्बन्धी अवधारणा को यथावत् स्वीकार किया, अतः प्रारम्भिक काल में यूंग ने फ्रायड के प्रमुख सहयोगी की तरह ख्याति अर्जित की तथा उन्होंने फ्रायड एवं ब्लेउनर के मनोवैज्ञानिक निवन्धों का सम्पादन किया तथा सन् 1907 में यूंग ने फ्रायड से प्रत्यक्ष भेंट की जो आपसी गहरी मैत्री में बदल गई। अतः फ्रायड एवं यूंग ने मिलकर "इन्टरनेशनल साइको-एनेलेटिक सोसाइटी" की स्थापना की तथा यूंग इस संस्था के अध्यक्ष चुने गये। फ्रायड द्वारा निर्धारित साइको ऐनेलेसिस पद्धति के आधार पर यूंग ने अवचेतन सम्बन्धी खोज मानवीय अनुभव के आधार पर चालू रखी तथा सन् 1912 में मानवीय अनुभवों पर आधारित अपनी खोजों को 'अवचेतन का मनोविज्ञान' (The psychology of the unconscious) शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित किया। यूंग की इस मौलिक रचना के प्रकाशन से समूचे मनोवैज्ञानिक जगत् में एक तहलका सा मच गया और फ्रायड के साथ यूंग के विचारों का सुस्पष्ट मतभेद भी उभर कर सामने आ गया। यद्यपि यूंग ने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित अवचेतन संभाग सम्बन्धी मूलभूत अवधारणा को यथावत् स्वीकार किया था किन्तु अवचेतन सम्बन्धी कतिपय अन्य पक्षों पर यूंग ने फ्रायड के विचारों से अपना सुस्पष्ट मतभेद भी दृढ़ता से प्रगट करने में कोई संकोच नहीं किया। जैसे (1) फ्रायड की यह मान्यता रही है कि काम-सुख (Sex-pleasure) ही मानव की प्राकृतिक एवं सहज मूल वृत्ति है और मानव जन्म से मृत्यु पर्यन्त काम-सुख की प्राप्ति की इच्छा में ही संलग्न रहता है। किन्तु यूंग ने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित "कामेच्छा" (Sex urge) को अतिवाद कहा। यूंग की मान्यतानुसार मनुष्य मात्र अपने सहज व्यक्तित्व विकास में स्वतः लगा रहता है, क्योंकि व्यक्तित्व विकास ही मानव की सहज वृत्ति एवं उसका जीवन धर्म है। (2) फ्रायड की मान्यतानुसार अवचेतन सम्भाग की अन्तर्वस्तु प्रायः व्यक्ति के शैशवावस्था एवं बाल्यकाल में दमित, उपेक्षित एवं विस्तृत इच्छाओं का सग्रह है, जो कि उसने समाज से समर्थित अथवा संगत नहीं होने के कारण इसी जीवन के प्रारम्भ काल में दफना दिया था। और इसको अरसा गुजर जाने से व्यक्ति उन्हें प्रायः तब भूल सा जाता है। किन्तु यूंग ने अवचेतन संभाग को भी दो खण्डों में बाँटा है। (i) अवचेतन की ऊपरी सतह को उसने व्यक्तिगत अवचेतन (Personal unconscious) कहा है जो व्यक्ति के इस देह जीवन की भूतकालीन समाज द्वारा असंगत इच्छाओं का दमित, उपेक्षित एवं विस्तृत स्वरूप है। (ii) यूंग ने अवचेतन के अधिक गहरे और इसके बहुतांश खण्ड को "सामूहिक अवचेतन" (Collective Unconscious) की संज्ञा दी है। "सामूहिक अवचेतन" व्यक्ति के

माता-पिता, दादा-नाना, पुरखाओं, जाति, उनके आदिम समूहों तथा उसके देश-धर्म-संस्कृति आदि के सुदूर भूतकालीन विस्मृत अनुभव बीजों का अव्यवस्थित भण्डार है। और यह सामूहिक अवचेतन ही वस्तुतः व्यक्तित्व का सबसे अधिक प्रभावशील एवं महत्वपूर्ण खण्ड है, जहाँ से उठी लहरों से समूचा व्यक्तिगत अवचेतन तथा सम्पूर्ण चेतन संभाग आप्लावित हो जाता है अर्थात् सामूहिक अवचेतन के रंग से समूचा व्यक्तित्व रंगीन हो जाता है। (3) इसके अलावा फ्रायड ने चेतन और अवचेतन को मन (Mind) के दो भाग माना है किन्तु यूंग ने चेतन-अवचेतन को मन (Mind) के बजाय चित्त (Psyche) के दो संभाग कहा जाना अधिक उचित माना है, क्योंकि जुंग की दृष्टि में "मन तथा चेतन" (Mind & Consciousness) समान अर्थी विशेषण हैं। अतः यूंग ने शब्द मन (Mind) एवं मानसिक (Mentel) के बजाय नये विशेषण शब्द चित्त (Psyche) तथा चित्तीय स्थिति (Phychic Condition) का सोच समझ कर उपयुक्त उपयोग किया है। उपरोक्त चार मुख्य मुख्य भिन्नताओं (differences) के अलावा कार्ल गुस्ताव यूंग ने कतिपय नवीन अवधारणाओं की व्याख्याएं प्रस्तुत की है जिनके फलस्वरूप फ्रायड एवं यूंग की विचार सारणियों का रूप एक दूसरे से एकदम बदल गया है। जैसे (अ) मुखौटा एवं छाया (Persona & Shadow) का निर्माण किया जाना (ब) एनीमा (Anima) नारीमूर्ति एवं एनीमुस (Animus) (पुरुष रूप) की कल्पना तथा (स) साध्य मातृ शक्ति एवं सनातन ज्ञान पुरुष (The Great mother & Old wise man) की दिव्य धारणा तथा (द) चेतन एवं अवचेतन के बीच परस्पर विरोधी स्वभाव के बावजूद एक दूसरे के प्रतिपूरकत्व की इकाई भावना (participating oneness) आदि तथा अन्ततोगत्वा (य) समूचे व्यक्तित्व के मूलाधार के रूप में स्थित आद्य रूप (आर्कीटाइप) का दार्शनिक एकत्व स्थिति की अवधारणा से फ्रायडीयन साइको ऐनेलेसिस में तथा जुंगीयन "ऐनेलेटिक साईकोलोजी" का भेद, और अन्तर निस्संदेह सुस्पष्ट होकर इनके बीच का मतभेद उभर आया है। अतः यूंग की पद्धति फ्रायड की पद्धति की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत तथा अत्यधिक गहरी और जटिल है। इसलिये फ्रायड की पद्धति को मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) कहा गया है तथा यूंग की पद्धति को साइको-ऐनेलेसिस से पृथक् एक अन्य स्वतन्त्र समानान्तर पद्धति के रूप में विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान (Analytical psychology) की नई संज्ञा के रूप में मान्यता प्रदान की जा चुकी है। निस्संदेह यूंग की विचारधारा अधिक विस्तृत, अधिक गहरी, अधिक जटिल तथा अधिक व्यापक है, अतः इसको मनोविज्ञान के क्षेत्र में संश्लिष्ट मनोविज्ञान (Complex Psychology) तथा गहन मनोविज्ञान (Depth psychology) भी कहा गया है।

आधार एवं विपयवस्तु की दृष्टि से भी फ्रायड के मनोविश्लेषण शास्त्र एवं

यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के बीच सुस्पष्ट अन्तर है। फ्रायड की खोज का आधार असामान्य रोगग्रस्त मानव है जिसका वैयक्तिक आचरण, जीवन व्यवहार, उसके क्रियाकलापों एवं उसके सपनों के विश्लेषण के आधार पर फ्रायड ने अपनी "साइको ऐनेलेसिस पद्धति" का निर्धारण किया है। तथा फ्रायड ने अपने अनुसन्धानों के निष्कर्षों से क्षतिग्रस्त मानव के तनाव को कम करने का रास्ता बतलाने का भी प्रयास किया है, किन्तु यूंग के समग्र अध्ययन का आधार सामान्य एवं असामान्य मानव समाज के विविध प्रकार के अनुभवों का पुंज है और यूंग ने अपने समक्ष विचाराधीन समस्याग्रस्त मानव के वर्तमान एवं भूतकालीन चरित्र, स्वभाव एवं आचरण का सूक्ष्म वैज्ञानिक निरीक्षण करने के अलावा उसके प्रजातिगत वृत्तियों, प्रवृत्तियों, जीवन दर्शन, तथा उसके धर्म, संस्कृति तथा उसमें व्याप्त रूढ़ियों, विश्वासों-अविश्वासों एवं उनके द्वारा अभिव्यक्त साहित्य, कलाकृतियों के अध्ययन तथा उनसे सम्बन्धित दंतकथाओं, मिथकों, प्रतीकों आदि का भी भरपूर एवं सम्यक् उपयोग किया है। अतः यूंग का मानवीय अनुभव एवं अध्ययन का क्षेत्र किसी व्यक्ति विशेष, किसी काल, स्थान, समाज अथवा किसी घटना विशेष तक सीमित नहीं होकर विविध क्षेत्रीय, विविध कालीन एवं विविध प्रकार का होने के फलस्वरूप अधिक व्यापक, विस्तृत एवं गहन हो गया है।

86 वर्षीय युंग की क्रियाशील मानव-सेवा का अधिकांश समय ज्यूरीच में व्यतीत हुआ किन्तु इस अवधि में यूंग ने कुछ वक्त उत्तरी-अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका (केन्या) आरीजना तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यू मेक्सिको की भिन्न-भिन्न आदिम जातियों के समूहों के जीवन-आचरण के अध्ययन में लगाया तथा उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप तथा एशिया के भारत आदि की यात्राएँ सम्पन्न की तथा इन सुदूरवर्ती विदेशों के प्राचीन एवं अर्वाचीन जीवन-दर्शन, साहित्य, लोक-संस्कृति आदि का गहरा परिचय प्राप्त करने का प्रयत्न किया और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के प्रचलित धर्म तथा रीति रिवाजों और स्थानीय दंतकथाओं, पुराणों एवं प्रतीकों की यथोचित मदद ली। यूंग न केवल चिकित्साशास्त्र एवं मनोविज्ञान के गहरे जानकार थे, अपितु उन्होंने भिन्न-भिन्न दार्शनिक विचार सरणियों, धार्मिक प्रतीकवादों एवं दंतकथाओं पर आधारित पुराण विद्या (माइथोलोजी) तथा भाषाशास्त्र के सूक्ष्म अध्ययन में गहरी अभिरुचि ली। यूंग ने न केवल फ्रायड एवं एलफ्रेड एडलर की पद्धतियों को हृदयंगम किया अपितु उन्होंने रिचार्ड विलहेम, जो फ्रेंकफोर्ट में चीनी काव्य एवं दर्शन का अप्रतिम विद्वान था, उनके सहयोग से पुराने टाओस्टनिक ग्रन्थ का The secret of the Golden flower शीर्षक पुस्तक का 1930 में प्रकाशन किया तथा जर्मनी के प्रसिद्ध भारतीय विद्याविद् (Indologist) हेनरीक झीमर के सह-सम्पादन में सन् 1944 में एक ग्रन्थ की रचना भी की तथा हंगरी के भाषाशास्त्री (Philologist) एवं पुराण विद्या विशारद (mythologist) कार्ल केरीयी के

निवन्धों का भी अनुवाद किया जो सन् 1950 में अंग्रेजी में The Essays on the science of mythology शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित है। यूंग ने जर्मन भाषा में लगभग 140 पुस्तकों का प्रणयन किया है, जिनमें से लगभग 35 पुस्तकों के तो लगभग सभी यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। यूंग की लगभग 50 पुस्तकों एवं निवन्धों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में हो चुका है जिनमें से बहुतांश सामग्री वोलीनगन सीरीज (Bollingon series) के अन्तर्गत Collected works of C.G. Jung शीर्षक से 20 जिल्दों में ग्रन्थ लन्दन एवं न्यूयार्क से प्रकाशनाधीन है। यूंग में भारतीय दर्शन एवं आध्यात्मशास्त्र की भी उत्तम समझ पायी जाती है जो उनके द्वारा प्रकाशित भारत में छपे लेखों से दर्शित है। यूंग का Yoga and the West शीर्षक निवन्ध सन् 1936 में "प्रवुद्ध भारत" पत्रिका कलकत्ता में प्रकाशित हुई। इसके अलावा सन् 1939 में "What India can teach us ? तथा उसी वर्ष में The dream like world of India न्यूयार्क से प्रकाशित एशिया पत्रिका में छपे हैं। भारतीय विद्वान् डाक्टर आनन्द के कुमार स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ में On the psychology of Eastern meditation शीर्षक निवन्ध (1948) से यूंग द्वारा भारतीय कला एवं विचार सारणी से गहरे परिचय होने का प्रमाण मिलता है। निस्संदेह यूंग ने वहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न अध्येता एवं निष्पक्ष विशुद्ध वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्ता के दोहरे व्यक्तित्व का वड़ी गहराई से एवं पूर्ण ईमानदारी के साथ निर्वाह किया है, और उन्होंने पूर्व और पश्चिम के राष्ट्रों के वीच तथा प्राचीन एवं अर्वाचीन मानवीय जीवन-व्यवहार एवं चिन्तन में समानता तथा परस्पर प्रतिपूरकता की खोज करते हुए मानव के संघर्षो एवं तनावों में विखरी हुई मानवता में क्षमता, समानता एवं आपसी समझ के द्वारा सामंजस्य स्थापित करने की आजीवन साधना की है, अत: यूंग स्वीट्जरलैण्ड निवासी ऋषितुल्य व्यक्ति प्रतीत होते हैं। अपने दीर्घ एवं क्रियाशील चिकित्सा एवं मनोवैज्ञानिक खोज पद्धति से उन्होंने हजारों रोगियों को मानसिक तनावों से मुक्त किया है तथा उन्होंने विखरी एवं संघर्षरत मानव जाति को व्यवस्थित करने तथा एकजुट रखे जाने की दिशा में उल्लेखनीय मंगलमय सेवाकार्य किया है सन् 1948 में यूंग ने ज्युरीच में "C,G Jung Institute की स्थापना की जिसके माध्यम से उन्होंने सैकड़ों देशी एवं विदेशी ज्ञानातुर विद्वानों को अपनी सीधी देखरेख में यूंगीय पद्धति के प्रशिक्षिण दिये जाने की उत्तम व्यवस्था की जिसके फलस्वरुप इस संस्थान में प्रशिक्षित सैकड़ों मनोविज्ञान के शास्त्री एवं अन्य संवंधित विषयों के विद्वान् संपूर्ण दुनिया में यूंगीय पद्धति से मानसोपचार करने एवं अपनी-अपनी समस्याओं के तनावों से मुक्त होने का स्वत: सेवा कार्य कर रहे हैं। मेरे अन्तरंग मित्र डाक्टर अरविन्द वसावड़ा ने भी वीस महीने ज्युरीच स्थित इस इन्स्टीट्यूट में ठहर कर डाक्टर यूंग तथा उनके प्रमुख सहयोगी डाक्टर मायर्स के मार्गदर्शन में भारतीय तंत्र सम्बन्धी "त्रिपुरा रहस्य (ज्ञानखण्ड)" पुस्तक के संदर्भ

में "व्यक्तिकरण-प्रक्रिया The process of individuation विषय पर भारतीय एवं यूंगीय पद्धतियों के तुलनात्मक अध्ययन ग्रंथ का प्रणयन किया जो सन् 1965 में चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी द्वारा प्रकाशित किया गया है तथा डाक्टर बसावड़ा द्वारा प्रणीत इस शोध प्रवन्ध ग्रन्थ का हिन्दी में भावानुवाद मेरे द्वारा लेखक मित्र के आज्ञाधीन किया गया है। इसका प्रकाशन भी सन् 1981 में इसी चौखंभा संस्कृत सीरीज वाराणसी से हो चुका है। डाक्टर बसावड़ा की उक्त पुस्तक के भावानुवाद के दौरान में मुझे भारतीय एवं यूंगीयन पद्धतियों में पर्याप्त समानता की जानकारी हुई और मुझे यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को गहराई से समझने एवं हृदयंगम करने की प्रेरणा मिली। अत: मैंने उपलब्ध यूंगीय साहित्य का अध्ययन कार्य प्रारम्भ किया, तथा यूंग से संबंधित एक मौलिक परिचयात्मक पुस्तक हिन्दी भाषा में लिखने की आवश्यकता का अनुभव किया। फलत: कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा प्रतिपादित "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" शीर्षक से यह पुस्तक प्रस्तुत है। प्रस्तुत पुस्तक का कलेवर लगभग 350–400 पृष्ठ का है तथा समूची पुस्तक का विभाजन तीन खण्डों एवं 26 अध्यायों में किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक यूंग द्वारा प्रकाशित साहित्य पर आधारित है, किन्तु इसको यूंग के सम्पूर्ण साहित्य का न तो सार संक्षेप ही माना जाने योग्य है, और न यह रचना यूंग सम्बन्धीकिसी पुस्तक का भाषानुवाद ही है। यूंग ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति जर्मन भाषा में की है, जो प्राय: जटिल, दुरूह एवं अनेक अर्थों वाली है। अत: यूंग साहित्य का अंग्रेजी अनुवाद भी समझने में कठिनाइयों का अनुभव होना नितांत स्वाभाविक है, क्योंकि यूंग के लेखों की विषयवस्तु भी पर्याप्त गहन, संश्लिष्ट एवं जटिल है। प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी भाषा में यूंग के विचारों का परिचय प्रस्तुत करने का एक प्रारम्भिक प्रयत्न मात्र है। यूंग सम्बन्धी साहित्य का हिन्दी में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं में आश्चर्यजनक रूप से सर्वथा अभाव है। इस दुर्भाग्यपूर्ण कमी की पूर्ति हेतु यह मेरा विनम्र प्रयास मात्र है। भारत मित्र एवं भारतीय ऋषितुल्य कार्ल गुस्ताव यूंग की विचारधारा की जानकारी देना भारतीय विद्वत्वर्ग के लिये (मेरी विनम्र दृष्टि में) एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य है। यूंग ने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय चिन्तन के श्रेष्ठत्व एवं उपादेयता का पाश्चात्य जगत् में बड़े सम्मान के साथ प्रसार-प्रचार किया है और भारतीय योग एवं कुण्डली चक्र की ओर बड़ी श्रद्धा के साथ पाश्चात्य वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित करने के कर्तव्य का निर्वाह किया है, अत: यूंग एवं भारत के चिन्तन को आपसी समझ की अभिवृद्धि एवं इनके बीच विचारों के आदान-प्रदान हेतु कार्ल गुस्ताव यूंग की विचारधारा, उसके सामान्य सिद्धान्त तथा उसके द्वारा अपनाये गये अनुसंधानों के सुफल से हिन्दी भाषा-भाषी पाठक को परिचित कराया जाना मेरी विनम्र दृष्टि में जरुरी एवं राष्ट्र उपयोगी है।

विश्व स्तरीय मनीषि डाक्टर कार्ल गुस्ताव यूंग के दीर्घकालीन अध्ययन

एवं अनुसन्धान कार्य सम्बन्धी लेखन को भली भांति समझना और उसकी प्रामाणिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत किया जाना मेरे सरीखे अल्पज्ञ के लिये असम्भव ही है, क्योंकि यूंग का विपुल साहित्य जर्मन भाषा में है, जिसका मुझे भाषा ज्ञान ही नहीं है और यूंग सम्बन्धी जो लेखन अंग्रेजी में उपलब्ध है उसे सम्पूर्ण पढ़ा जाना एवं योग्य प्रकार से समझा जाना भी मेरे लिए कठिन है। अतः मैंने यूंग के अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित कुछ ग्रन्थों एवं निबन्धों को पढ़कर अपनी अल्प समझ के प्रकाश में उनका सारांश प्रस्तुत किये जाने का एक विनम्र प्रयत्न मात्र किया है, जो न तो यूंग सम्बन्धी किसी पुस्तक का अनुवाद है और न यह मेरी पुस्तक यूंग के समग्र विचारों का परिचयात्मक विवरण है। सम्भव है कि यदाकदा मेरे द्वारा श्री कार्ल गुस्ताव यूंग के विचारों की ठीक से यथावत् अभिव्यक्त किये जाने में कुछ भूलें एवं त्रुटियां भी रह गई हों अथवा यूंग के साहित्य के अन्य अध्येता को यूंग के बावत मेरे इस लेखन से मतभेद एवं गलत होने की शिकायत हो। अतः मै अपनी अल्प अधूरी एवं एकाकी अभिव्यक्ति के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ। अतएव यह पुस्तक यूंग के वृहद लेखन में से कुछ अल्पांश को मेरी समझ के मुताबिक विवेचन प्रस्तुतीकरण माना जाने योग्य होगा, जो अन्य विद्वानों की नजर में बेमेल, अपूर्ण एवं गलत माना जा सकता है। अतः इस पुस्तक को यूंग सरीखे बहुश्रुत लेखक एवं विद्वान् अनुसन्धानकर्ता के दीर्घकालीन सतत लेखन का कोई प्रामाणिक भाष्य मानने के बजाय इसको मेरी अल्प और अधूरी समझ का इजहार (अभिव्यक्ति) मात्र माना जाना अधिक उपयुक्त है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग के बावत राष्ट्र भाषा हिन्दी में मेरे मित्र डाक्टर अरविंद बसावड़ा द्वारा "सी. जी. यूंग विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" शीर्षक एक संक्षिप्त परिचय (पृष्ठ संख्या 52) सन् 1963 में चौखम्भा सीरीज वाराणसी से प्रकाशित हुआ है और सन् 1965 में उसी संस्थान से डाक्टर अरविंद बसावड़ा द्वारा सी. जी. यूंग इंस्टीयूट ज्यूरीच में बीस महीने रहकर "त्रिपुरा रहस्य (ज्ञान खण्ड) एवं व्यक्तिकरण सम्बन्धी भारतीय एवं यूंगीय पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक अंग्रेजी पुस्तक का भावानुवाद भी मेरे द्वारा किये जाने के दौरान में मुझे यूंग के साहित्य को हृदयंगम करने की प्रेरणा मिली, फलतः यह पुस्तक यूंग सम्बन्धी साहित्य का मेरे द्वारा किये गये अध्ययन का परिणाम मात्र है। स्वीट्जरलैण्ड निवासी चिकित्सक एवं मनोविज्ञानी यूंग ने भारतीय योग, ध्यान, दर्शन, साहित्य और चिन्तन बावत जो मुक्तकंठ से श्रद्धा प्रशंसा व्यक्त की है उसका विवेचन इस पुस्तक के एक अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।* इसके अतिरिक्त मुझे यूंगीय एवं भारतीय चिन्तन में कतिपय प्रसंगों बावत अद्भुत सादृश्यता

* प्रस्तुत पुस्तक का अन्तिम 24 वां अध्याय

और समानता के दर्शन हुये हैं, अतः मेरी समझ में भारतीय विद्वत्समाज को यूंग के विचारों से परिचित किया जाना ही कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा भारतीय चिन्तन के प्रति व्यक्त श्रद्धा एवं समझ का योग्य प्रतिफल एवं धन्यवाद प्रकाशन है। क्योंकि मेरी जानकारी के अनुसार मेरे मित्र डाक्टर अरविंद वसावड़ा के अलावा किसी भी अन्य भारतीय लेखक के द्वारा भारत की किसी भी भाषा में यूंग सम्बन्धी कोई पुस्तक का प्रकाशन होना नहीं पाया जाता है और किसी भी भारतीय विद्वान् ने अंग्रेजी में भी यूंग के सम्बन्ध में कोई किताब अब तक प्रकाशित नहीं की है। इस दृष्टि से मेरी यह हिन्दी पुस्तक यूंग सम्बन्धी विस्तारपूर्वक परिचयात्मक पुस्तक के रूप में स्वर्गीय कार्ल गुस्ताव यूंग के प्रति एक विनम्र श्रद्धांजली सूचक होगी, ताकि यूंग के सामंजस कारी विचारों से हिन्दी भाषा-भाषी विद्वान् न केवल परिचय प्राप्त कर सके अपितु आगे जाकर कई भारतीय विद्वान भारतीय एवं यूंगीय साहित्य की सम्यक् समझ से समूचे मानवीय व्यक्तित्व के विकास हेतु योग्य मार्ग प्रशस्त कर सके, जिसके प्रकाश में पूर्व और पश्चिम, अर्वाचीन और प्राचीन, समृद्धि और गरीबी, ज्ञान और विद्वान आदि द्वन्द्वों के बीच पारस्परिक समझ, समानता और सामंजस्वपूर्ण इकाई की स्थापना से भेद अभेद में, द्वन्द्व अद्वैत में, विज्ञान आत्मज्ञान में ही नहीं अपितु व्यक्ति समष्टि के साथ एक समाज, समरस और सामञ्जस्यपूर्ण हो सके।

अध्याय 2

कार्ल गुस्ताव यूंग की जीवन-कहानी

(Life Story of C. G. Jung)

कार्ल गुस्ताव यूंग के "विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान" का मूलाधार मानवीय अनुभव है। अतः इस सन्दर्भ में यूंग के जीवन के अनुभवों की एक संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत किया जाना उपयोगी है। कार्ल गुस्ताव यूंग का जन्म दिनांक 26 जुलाई, 1875 में यूरोप का रमणीय प्रकृति-स्थली स्वीट्जरलैण्ड के थुरगाऊ जिले के छोटे से गांव कैस विल के एक आदर्श पादरी परिवार में हुआ। यूंग के पिता धर्मगुरु तथा उसके दादा प्रख्यात चिकित्सक थे। यूंग के मातृ और पितृ पक्ष के पुरखे शिक्षा तथा धर्म के क्षेत्रों से सम्बन्धित थे तथा उसका देश स्वीट्जरलैण्ड निस्सन्देह अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य, दिव्य एवं शान्त वातावरण, उदारतापूर्ण आपसी सामंजस्यपूर्ण जीवन व्यवहार एवं सरल और परिश्रमी स्वभाव के कारण समूचे यूरोप का पर्यटक एवं आरोग्य केन्द्र बना हुआ था। इसलिये यूंग के परिवार एवं स्वदेश जा मंगलमय असर यूंग के जीवन और उसके सतत अनुसन्धान कार्य पर परिलक्षित किया जा सकता है। यूंग की प्रारम्भिक शिक्षा उसके जन्म स्थान पर हुई और सन् 1900 में उसने बेसल नगर से चिकित्सा शास्त्र में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से ही यूंग को अनहोनी एवं रहस्यमयी घटनाओं के प्रति गहरी अभिरुचि थी, जिन्हें यूंग वैज्ञानिक प्रकार से समझने के लिये प्रयत्नशील थे, फलतः उन्होंने मेडिकल डिग्री प्राप्त करने हेतु सर्वथा विचित्र विषय—"रोगी के शरीर में पूर्वजों का आवागमन" शीर्षक थीसिस पर शीघ्र कार्य प्रारम्भ किया और इस विषय पर उन्हें चिकित्सा-शास्त्र में उपाधि प्रदान की गई। इसके पश्चात् वह ज्युरीच विश्वविद्यालय के अन्तर्गत ज्युरीच के मानसिक चिकित्सालय में सहायक प्राध्यापक एवं मनोविश्लेपक के पद पर नियुक्त किये गये। तब से सन् 1961 में मृत्यु पर्यन्त यूंग के कार्य का क्षेत्र ज्युरीच रहा, अतः यूंग के विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान को ज्युरीच स्कूल भी कहा जाता है।

सन् 1902 में यूंग ने पेरिस जाकर तत्कालीन प्रसिद्ध चिकित्सा मनोवैज्ञानिक (medical psychologist) डाक्टर पीयरे जैनेट के साथ एक सैमेस्टर तक अनुसंधान कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया और इसके बाद ज्युरीच के ख्याति प्राप्त मनोविज्ञानी डाक्टर ई. ब्लूअनर के मार्गदर्शन में अनुसंधान कार्य प्रारम्भ

किया। इसी दौरान में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने खंडित मानसिकता (Schizophremic) से पीड़ित रोगियों पर "शब्द साहचर्य परीक्षण" (Word Association test) का प्रयोग करते हुये यह खोज की कि इस रोग की ग्रन्थियां (Complexes) योग्य उत्तेजक शब्दों (Words) अथवा वाक्यों के द्वारा रोगी के रोग को अवचेतन स्तर से चेतन स्तर पर लाकर उनका परीक्षण निदान करते हुए उसको रोगमुक्त किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में (Word Association tests) शीर्षक उनके प्रबंध ग्रन्थ के प्रकाशन से श्री यूंग को अभूतपूर्व ख्याति मिली और उन्हें सर्वत्र यूरोप में भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा इस सम्बन्ध में भाषण देने तथा तत्कालीन विद्वानों के साथ विचार-विमर्श किये जाने के लिये आमंत्रित किया जाने लगा। इसी दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका के मैसीटूट राज्य की क्लार्क युनिवर्सिटी द्वारा उन्हें डाक्टरेट की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।

सन् 1905 ईस्वी में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग को ज्युरीच विश्वविद्यालय में उच्च चिकित्सक के पद का दायित्व सौंपा गया, जिसको उन्होंने सन् 1909 में छोड़ दिया क्योंकि यूंग ने यह अनुभव किया कि उच्च चिकित्सक के पद पर बने रहने से उनके अनुसंधान कार्य में बाधा पड़ती थी।

कार्ल गुस्ताव यूंग की जीवन कहानी को प्रस्तुत करने के सन्दर्भ में यह उल्लेख किया जाना जरूरी है कि बचपन से मृत्यु तक यूंग के जीवन विकास एवं सहज निर्माण में स्वप्नों (Dreams) की बड़ी ही प्रभावशाली भूमिका रही है। यूंग की आत्म कथा Memories, Dreams, Reflections शीर्षक पुस्तक यूंग की स्मृतियों, स्वप्नों तथा विचारों का रहस्यमय भण्डार है, जिनके आधार पर प्रायः यूंग का अनुसंधान कार्य सहज प्रकार से निष्पादित हो सका है। अर्थात् यूंग ने अपने द्वारा अनुभूत सपनों एवं दिवा स्वप्नों की योग्य समझ से ही अवचेतन स्तरीय अर्न्तवस्तु की व्याख्या प्रस्तुत की है। यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि जब उनकी आयु केवल लगभग 4 वर्ष की थी, उन्होंने यह सपना देखा कि वह एक मैदान में खड़े हैं, जहां उन्हें एक चौकोर काले पत्थरों का खड्डा दीख पड़ता है, जिसकी ओर वह डरते हुए बढ़ते हैं तो वह करीब 30 फीट लम्बे एक चौकोर कमरे में पहुँचते हैं, जहां पर एक अद्भुत सिंहासन है और इस सिंहासन पर करीब 12–15 फीट लम्बा और करीब 2 फीट चौड़ा एक खम्भा खड़ा है, जिसका सबसे ऊपरी हिस्सा गोलाकार सा है और यह खम्भा पत्थर का नहीं होकर चमड़ी एवं मांस का है जिसका ऊपरी सिरा एक आँखनुमा है। यूंग इस सपने से कई वर्षों तक बड़े प्रभावित रहे और वर्षों के बाद अपनी आयु के करीब अस्सी या इक्यासी वर्ष में उन्होंने बाल्यावस्था के देखे गये इस मांसल एवं चमड़े के थम्बे को शिश्न (Phallus)

देखना समझा।* जिसको यूंग ने अवचेतन स्तरीय स्थित अनजाना अज्ञेय शक्ति-स्रोत माना है जब कि यूंग को उनकी माता की व्याख्यानुसार इसको राक्षस (That is the Man-Eater) के रूप में व्याखित कर इससे भयभीत कराये जाने की स्मृति है। यद्यपि यूंग को अपने पादरी पिता के द्वारा भगवान ईसा (Lord Jesus) से परिचित कराये जाने का प्रयत्न किया गया था किन्तु यूंग ने कभी भी भगवान ईसा के अस्तित्व का कोई अनुभव नहीं किया।

सन् 1903 में कार्ल गुस्ताव यूंग का विवाह एमा राउचेनवाल से हुआ जो उनकी योग्यतम जीवन सहचरी सिद्ध हुई। यूंग का एमा के साथ जीवन पर्यन्त गहरा आत्मीयतापूर्ण सहकारी व्यवहार रहा और इस विवाह से उनके एक पुत्र एवं चार पुत्रियों का जन्म हुआ। यूंग दम्पति के नाती, पोतों की संख्या यूंग के देहावसान के समय 19 की रही। सन् 1961 में 86 वर्ष का सुखद एवं यशस्वी जीवन-यापन कर ज्युरीच में ही यूंग का स्वर्गवास हुआ। यूंग के पुत्र, पुत्रियों, नाती पोतों सभी का जीवन सामान्य एवं सफल रहा है।

कार्ल गुस्ताव जुंग ने जिन दिनों में ज्युरीच में अवचेतन सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ किया, उन दिनों में वियना के डाक्टर सिगमंड फ्रायड की मनोविज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ी ख्याति फैल चुकी थी और जर्मन भाषा होने के नाते यूंग फ्रायड की विचारधारा एवं फ्रायड द्वारा स्थापित मनोविश्लेषण (Psycho-analysis) पद्धति से पूर्णतया परिचत हो चुके थे। सन् 1907 में यूंग की फ्रायड के साथ भेंट हुई और शीघ्र ही वे दोनों गहरे मित्र बन गये और यूंग ने फ्रायड के कतिपय ग्रन्थों का सम्पादन किया तथा फ्रायड के साथ इन्टरनेशनल साइको ऐनेलेटिकल सोसाइटी की सन् 1911 में स्थापना की जिसके अध्यक्ष पद पर कार्ल गुस्ताव यूंग का चुनाव किया गया। इस दौरान यूंग ने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मन के चेतन एवं अवचेतन सम्भागों की अवधारणा को यथावत् स्वीकार करते हुए मनोविश्लेषण सम्बन्धी अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया तथा उन्होंने तत्कालीन सभी प्रमुख मनोवैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों का योग्य सहयोग प्राप्त किया और समूचे यूरोप एवं अमेरीका में फ्रायड के योग्यतम सहकारी के रूप में उन्होंने उल्लेखनीय ख्याति अर्जित की किन्तु जब 1912 में यूंग ने अपने अवचेतन सम्बन्धी शोधकार्य को "The psychology of the Unconcious" शीर्षक पुस्तक को प्रकाशित किया तो सम्पूर्ण मनोविज्ञान एवं चिकित्सा क्षेत्र में एक अजीब सा तहलका मच गया और फ्रायड एवं यूंग के विचारों का मौलिक मतभेद जग जाहिर हो गया। यूंग ने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनो-

---

* Memories, Dreams, Reflections of C. G. Jung Vintage Book Edition, 1965 at page. 12–13

विश्लेपण (Psycho-analysis) पद्धति के समानान्तर अपनी नयी पद्धति स्थापित की जिसको विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology) की नयी संज्ञा से जाना जाता है तथा इसको फ्रायड के वियना स्कूल के समानान्तर ज्युरीच स्कूल भी कहा जाता है। यूंग द्वारा प्रतिपादित विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान पद्धति (Analytical Psychology) तथा ज्युरीच स्कूल को गहन संश्लिष्ट मनोविज्ञान (Complex psychology) भी कहा जाता है। सन् 1913 से मृत्यु पर्यन्त याने सन् 1961 तक यूंग द्वारा प्रतिपादित विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान पद्धति के अन्तर्गत यूंग द्वारा मानव-अनुभव पर आधारित खोज कार्य का व्यापक प्रभाव आज सम्पूर्ण विश्व में दृष्टि-गोचर हो रहा है और शनैः शनैः सम्पूर्ण चिकित्सा मनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्ल गुस्ताव यूंग की उल्लेखनीय सेवाओं के प्रति सम्मान प्रगट किया जा रहा है।

सन् 1920 ईस्वी में यूंग ने साइकोलोजिकल टाइप्स (Psychological Types) शीर्षक ग्रन्थ का प्रकाशन किया जिसमें उन्होंने मानवीय अभिवृत्ति एवं स्वभाव के आधार पर मानव समाज को आठ वर्गों (Types) में विभाजित किया है। इसके बाद यूंग ने अपने निजी अध्ययन एवं अन्य मानवीय अनुभवों पर आधारित अपने अनुसंधान कार्य का विवरण क्रमशः अनेक निबन्धों एवं ग्रन्थों में निरन्तर प्रकाशित करने का क्रम आजीवन जारी रखा। मुख्यतः यूंग की रचनायें सर्वप्रथम जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई जिनकी संख्या लगभग 140 है उनमें से यूंग की लगभग 50 रचनायें अंग्रेजी भाषा में अनुवादित एवं मौलिक रूप में प्रकाशित की जा चुकी हैं। यूंग के लेखों एवं ग्रन्थों का अनुवाद फ्रेंच, स्पेनिश, इतालवी, डच, स्वीडिश, हंगेरियन, रसियन आदि विश्व की सभी समृद्ध भाषाओं में हो चुका है, किन्तु भारतीय भाषाओं में यूंग का कोई भी ग्रन्थ अथवा यूंग सम्बन्धी किसी प्रामाणिक पुस्तक का प्रकाशन नहीं होना निस्सन्देह बड़ी अखरने वाली सच्चाई है। अतः भारतीय प्रबुद्ध समाज यूंग की उसकी विचार सरणी एवं मौलिक खोजों से बहुत कम परिचित हैं। सामान्यतः भारतीय समाज में यूंग को डाक्टर सिगमंड फ्रायड के एक सहयोगी की तरह जाना जाता रहा है, किन्तु धीरे-धीरे यूंग साहित्य के अंग्रेजी में प्रकाशन के फलस्वरूप यूंग को फ्रायड की अपेक्षा अधिक भारतीय रुचि एवं चिन्तन के सन्निकट स्वीकार किया जा रहा है।

यूंग का अनुसंधान एवं लेखन कार्य लगभग पचास वर्ष (सन् 1911 से मृत्यु तिथि 1961) तक निरन्तर रहा है। इंगलेंड में राऊटलेज एण्ड केगन पाल लिमिटेड प्रकाशन गृह से यूंग की मुख्य-मुख्य रचनाओं का प्रकाशन सन् 1957 से प्रारम्भ किया गया है और इसी तरह यूंग की मृत्यु के पश्चात् संयुक्त राज्य अमेरिका में बोलीनगन सीरीज के अन्तर्गत यूंग की सभी प्रमुख रचनाओं का प्रकाशन (Collected Works of C. G. Jung) शीर्षक ग्रन्थ बीस जिल्दों में पेन्थोन बुक्स

(Panthon Books) द्वारा प्रकाशित किया गया है, जिसके कारण अंग्रेजी भाषा के माध्यम से यूंग के मौलिक, गहन एवं दूरगामी विचारों की जानकारी से आज सम्पूर्ण विश्व का प्रबुद्ध समाज बड़ी गहराई से प्रभावित हो रहा है।

मानवीय जीवन अनुभव ही यूंग के अनुसंधान कार्य का मूलाधार है। मानवीय अनुभवों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करने की दृष्टि से यूंग ने विश्वस्तरीय भिन्न-भिन्न जातियों में परिलक्षित अनुभव बीजों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने की दृष्टि से विश्व में विस्तृत फैली हुई विभिन्न जातियों के बीच कुछ दिनों तक रहने का निश्चय किया। अतः सन् 1921 में यूंग ने सर्वप्रथम उत्तरी अफ्रीका का विस्तृत दौरा किया और संयुक्त राज्य अमेरिका के आरीझोना भू-भाग में बसने वाले पुब्लों इंडियन्स तथा न्यू मेक्सीको राज्य के आदिम निवासियों के बीच सन् 1924–25 में काफी समय तक ठहर कर इन जातियों के जीवन व्यवहार, धर्म, रहन-सहन तथा इनके विश्वासों, अन्ध विश्वासों, मान्यताओं एवं आचरण आदि का गम्भीर अध्ययन किया। इसी तरह यूंग ने केन्या (ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका) की आदिम जातियों के अध्ययन हेतु सन् 1926 में वहां का विस्तृत दौरा किया।

स्वीट्जरलैण्ड तथा यूरोप से दूर अफ्रीका एवं अमेरीका में बसी आदिम जातीय बस्तियों के बीच वर्षों रह कर यूंग ने वहाँ के निवासियों के रहन-सहन, स्वभाव-आचरण, रीति-रिवाजों, रुढ़ि-परम्पराओं, धार्मिक क्रियाओं, जीवन-पद्धतियों, मिथकों एवं प्रचलित दंत कथाओं आदि का बड़ी गहराई के साथ वैज्ञानिक अध्ययन किया और उन्हें यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अर्वाचीन यूरोप की विकसित सम्पन्न समाज में तथा प्राचीन आदिम जातियों में प्रचलित कतिपय धार्मिक विश्वासों-अंधविश्वासों एवं तत्सम्बन्धी धार्मिक कृत्यों एवं क्रियाओं (Rituals) एवं मिथक दंतकथाओं में विलक्षण प्रकार से एक समानता दृष्टिगोचर होती है। इस खोज के कारण यूंग भिन्न-भिन्न देशों एवं भिन्न-भिन्न कालीन प्रजातियों के धार्मिक इतिहास एवं पौराणिक परम्पराओं के गंभीर अध्ययन में संलग्न हो गये। यूंग द्वारा इस तुलनात्मक अध्ययन से यह जानकारी भी उपलब्ध हुई कि प्राचीन एवं अर्वाचीन अथवा आदिम कालीन तथा आधुनिक समुन्नत विकसित सभी प्रकार के मानव समूहों में प्रायः एक सा या समान प्रतीकों (Symbols) का आश्रय सभी जातियों द्वारा उनके द्वारा विवेचित सभी दार्शनिक एवं धार्मिक विवेचनों में प्राचीनकाल से अब तब निरन्तर लिया जाता रहा है। अनुसंधान के इस क्रम में यूंग ने फ्रेंकफर्ट निवासी चीनी साहित्य एवं दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान श्री रिचर्ड विलहम (Rechard Wilhelm) से भेंट की तथा उनके सहयोग से प्राचीन चीनी परम्परागत टाओस्टिक दर्शन का सूक्ष्म अध्ययन किया और उनके सहयोग से (The Secret of the Golden Flower) शीर्षक शोध ग्रंथ का प्रकाशन किया।

आदिमकालीन एवं अर्वाचीन तथा पूर्व एवं पाश्चात्य, भिन्न-भिन्न कालीन संस्कृतियों की धार्मिक विधियों (Rituals), मिथकों एवं पुराण कथाओं में पाये

जाने वाले प्रतीकों (Symbols) को इस एकरूपता तथा समानता के दर्शन से यूंग ने यह अवधारणा स्थापित की कि सभी तथाकथित भिन्न-भिन्न प्रजातियों के पूर्व पुरुष (पुरखा) एक थे, अतः इन सभी संस्कृतियों का मूलाधार मानवीय सामूहिक अवचेतन (Human Collective unconscious) है। व्यक्ति की तरह सामूहिक प्रजाति के चित्त के भी दो (चेतन तथा अवचेतन) संभाग हैं। प्रजाति का चेतन संभाग निस्सन्देह निरन्तर परिवर्तनशील है, अतः चेतन स्तरीय परिवर्तनशील स्वभाव के फलस्वरूप प्रत्येक प्रजाति (Race) के रूप, रंग, शारीरिक बनावट एवं बौद्धिक योग्यता में फर्क एवं अन्तर दृष्टिगोचर हो सकता है किन्तु व्यक्ति की तरह प्रत्येक प्रजाति की धार्मिक मान्यता, विश्वास-अंधविश्वास, पूजा पद्धति एवं मिथक तथा पुराणकथा का उद्गम स्थल, जो सामूहिक अवचेतन सम्भाग है वह शाश्वत, सनातन एवं एक-सा ही है। अत: सभी जातियों एवं प्रजातियों के दार्शनिक एवं प्रजातियों के दार्शनिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों की अभिव्यक्ति हेतु एक से ही प्रतीकों का उपयोग किया जाना पाया जाता है।

यूंग ने अपने उपरोक्त अनुभवों के आधार पर यह प्रतिपादित किया है कि मानव मात्र के गहनतम अवचेतन स्तर पर जो अन्तर्वस्तु (Contents) है वह शाश्वत एवं परम शक्ति सम्पन्न एक तत्व है जो अनादि, सनातन, अपरिवर्तनशील एवं एक हैं। और यही गहनतम अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु ही विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति एवं प्रजाति के चेतन स्तर पर एक प्रतीक (Symbol) के रूप में अभिव्यक्त होकर समूचे व्यक्ति एवं सम्पूर्ण प्रजाति को स्वत: निरन्तर प्रभावित करती रहती है क्योंकि सभी धार्मिक अवस्थाओं एवं धार्मिक क्रियाकलापों का उद्गमस्थल एक सामूहिक गहनतम अवचेतन (Collective unconscious) है, जो एक समान तथा समानधर्मी है। अत: सभी व्यक्तियों में इस अवचेतन स्तरीय एक ही अन्तर्वस्तु की अभिव्यक्तियां प्रतीक के रूप में मानवीय अनुभवों द्वारा मुखरित होती रहती हैं। यूंग ने सामूहिक अवचेतन के मूल में स्थित अन्तर्वस्तु को आध्य प्ररूप (आर्कीटाइप) की संज्ञा से विवेचित किया है। आगे जाकर इस मूल प्ररूप (आर्कीटाइप) के प्रतिष्ठान (basis) को कार्ल गुस्ताव यूंग 'स्व:" अर्थात् आत्मा (self) कहा है, जो यूंग की मान्यतानुसार मनोवैज्ञानिक संज्ञा आर्कीटाइप का दार्शनिक पारिभाषिक रूप है। इसके बाद सन् 1937 ईस्वी में कलकत्ता विश्वविद्यालय की रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर यूंग को भारत आने का अवसर मिला तथा यहाँ उनको भारत में उसी वर्ष हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस द्वारा "डी लिट्" की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी प्रकार मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें मानद "डी. एस. सी." उपाधियां प्रदान की गईं। इन्हीं दिनों में यूंग ने भारतीय दर्शन एवं धर्म सम्बन्धी गंभीर शोध-पत्र प्रस्तुत किया और भारतीय संस्कृति को अपने अनुभवों के प्रकाश में मौलिक निबंधों द्वारा व्याखित किया। कलकत्ता से

प्रकाशित "प्रबन्ध भारत" पत्रिका में सन् 1936 में छपे जुंग के Yoga and the West शीर्षक लेख तथा न्यूयार्क अमेरिका से प्रकाशित सन् 1939 में एशिया पत्रिका में प्रकाशित दो मौलिक निबन्धों (The dream like world of India) तथा (What India can teach us ?) द्वारा उनके भारतीय दर्शन एवं धर्म विषयक गंभीर चिन्तन का पता लगता है। इसी प्रकार प्रसिद्ध भारतीय विद्वान् स्वर्गीय डाक्टर आनन्द कुमार स्वामी के अभिनन्दन ग्रन्थ (1948) में यूंग के (On the psychology of Eastern meditation) शीर्षक निबन्ध से भारतीय योग दर्शन सम्बन्धी उनके गंभीर एवं उच्च स्तरीय समझ का परिचय प्राप्त होता है।

सन् 1938 में यूंग को आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा डी. एस. सी. उपाधि से अलंकृत किया गया तथा उन्हें रायल सोसाइटी आफ मेडीसन का फेलो चुना गया।

यूंग के वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों के विवरण के प्रकाशन से उन्हें सन् 1930 से ही विश्वस्तरीय प्रसिद्धि प्राप्त हुई और उन्हें समय-समय पर दुनियाँ की सभी उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थाओं द्वारा भाषण देने के लिये आमंत्रित किया जाने लगा। उन्हें सन् 1933 में इंटरनेशनल जनरल मेडिकल सोसाइटी फार साइकोथेरीपी का अध्यक्ष चुना गया। सन् 1935 में उन्हें स्विस फेडरले पोलोटेकनिक का प्रोफेसर नियुक्त किया जिसको उन्हें सन् 1942 में विषम-स्वास्थ्य के कारण छोड़ना पड़ा। सन् 1944 में उनकी जन्मभूमि बेसील विश्वविद्यालय में उनके लिये स्थापित मेडिकल साइकोलोजी चेयर की स्थापना की गई तथा उन्हें इस चेयर पर प्राध्यापक चुना गया, जिसे कि यूंग को अपने अनुसंधान कार्य में अत्यधिक व्यस्तता के कारण छोड़ना पड़ा। सन् 1932 में ज्युरीच सिटी द्वारा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए उन्हें पुरस्कृत किया गया तथा सन् 1945 में जिनेवा विश्वविद्यालय द्वारा उनकी सत्तरवीं जन्म गांठ के अवसर पर उन्हें सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

प्रसिद्ध जर्मन भारतविद् (German Indologist) हैनरिक जीमर (Henrich Zimmer) के साथ यूंग ने उल्लेखनीय अनुसंधान कार्य सम्पादित किया जिसे उन्होंने जीमर की 1943 में मृत्यु के एक वर्ष बाद प्रकाशित किया। इसी प्रकार यूंग ने तत्कालीन हंगेरियन भाषा शास्त्री (Philologist) एवं पुराणज्ञ, (Mythologist), कार्ल केरेनयी (Karl Karenyi) के साथ दो मौलिक ग्रन्थों को सन् 1942 में प्रकाशित कराया। जो पेन्थोन प्रकाशन द्वारा (The Essays on the science of mythology) शीर्षक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है। यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ कार्ल गुस्ताव यूंग एवं कार्ल केरेनयी के संयुक्त परिश्रम का प्रतिफल है।

निस्सन्देह यूंग के अध्ययन, अनुसंधान एवं लेखन का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं गहन रहा है। उन्होंने अवचेतन स्तरीय अनुसंधान कार्य के अलावा, मनोविज्ञान

धर्म, साहित्य, संस्कृति, धार्मिक, क्रियाकलापों (Rituals) तथा पुराणविद्या (Mythology), भाषा विज्ञान (Philology) तथा भारतीय विद्या (Indology) संबंधी विविध विषयों पर बहुत अधिक लिखा है, और उनके विविध निबन्ध संसार की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। मूलतः यूंग की सभी रचनायें सर्वप्रथम जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई हैं और इनके ग्रन्थों एवं लेखों का प्रामाणिक अनुवाद यूरोप की सभी प्रमुख भाषाओं में हो चुका है। यूंग जर्मन एवं स्विस भाषा के अलावा अंग्रेजी भाषा के भी उत्तम ज्ञाता थे। अतः उन्होंने लंदन एवं अमेरीका के विश्वविद्यालय स्तरीय विद्वानों के सम्मुख अंग्रेजी भाषा में जो भाषण दिये हैं, उनका प्रकाशन भी सीधे अंग्रेजी पुस्तकों के रूप में हुआ है। सन् 1935 में यूंग ने लंदन स्थित मेडिकल साइकोलोजी इन्स्टीट्यूट टेवी स्टाक क्लीनिक (Tavistock clinic) द्वारा जो पाँच भाषण (सितम्बर 30 से अक्टूबर 4, 1935) लंदन के लगभग 200 चिकित्सकों एवं मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख आंग्ल-भाषा में दिये, उनका संशोधित विवरण (Analytical Psychology : Its Theory and Practice तथा TAVISTOCK Lectures) शीर्षक पुस्तक के रूप में लंदन के प्रसिद्ध प्रकाशन गृह राऊटेज एण्ड केगनपाल लि० (Routedge and Kegal Paul Ltd.) द्वारा सुप्रसिद्ध फिजिशियन डाक्टर एडवर्ड आर्मस्टांग बैजेट की प्रस्तावना के साथ सन् 1968 में प्रकाशित हो चुके हैं। यूंग ने इन पांच भाषणों के द्वारा उनके द्वारा प्रतिपादित "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" के सिद्धान्तों एवं क्रियान्विति के बाबत गंभीर जानकारी प्रस्तुत की है। इसके अलावा आंग्ल विद्वान् डाक्टर जोलन्डे जेकोबी (Dr. Jolandi Jacobi) एवं मिसेज फ्रेडा फोर्डहम (Miss Freida Fordam) तथा डाक्टर गेरहार्ड एडलर (Dr. Gerahard Adler), एम. ईश्थर हार्डिंग (M. Easther Harding) तथा एरीच नेऊमन (Enrich Neumann) ने जुंगीय साहित्य का विवेचन प्रस्तुत करते हुए यूंग के चिन्तन को आंग्ल भाषा-भाषियों के लिए सुलभ एवं बोधगम्य करने का उल्लेखनीय प्रयत्न किया है। यूंग ने भारतीय दर्शन, धर्म एवं चिन्तन के बाबत गंभीर अध्ययन प्रस्तुत करते हुए अपने विचारों को भारतीय चिन्तन के प्रकाश में बड़ी ईमानदारी एवं निष्पक्षता के साथ विवेचित करने का विनम्र प्रयास किया है किन्तु सिवाय डाक्टर अरविन्द बसावड़ा के किसी भी भारतीय विद्वान् द्वारा यूंग के चिन्तन की कोई व्याख्या नहीं किया जाना नहीं पाया जाता। डाक्टर अरविंद बसावड़ा द्वारा यूंग के व्यक्तिकरण प्रक्रम का भारतीय चिन्तन के साथ तुलनात्मक अध्ययन चौखम्बा संस्कृत सिरीज के अन्तर्गत त्रिपुरा रहस्य (ज्ञानखण्ड) शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका हिन्दी रूपान्तर भी मेरे द्वारा चौखम्बा संस्कृत सिरीज वाराणसी द्वारा सन् 1981 में प्रकाशित हो चुका है। इसके अलावा भारतीय ऋषितुल्य कार्ल गुस्ताव यूंग के ग्रन्थों का भारतीय भाषाओं में कोई प्रकाशन नहीं होना एक आश्चर्यजनक दुःखद सच्चाई

है, अतः इस दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन राष्ट्रीय स्तर पर इस खेदजनक अभाव की पूर्ति का एक विनम्र प्रारम्भ माने जाने योग्य है।

यूंग लगभग 50 वर्षों तक अनेक प्रमुख शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सालयों एवं प्रबुद्ध सेवा संस्थाओं से निरन्तर सम्बन्धित रहे और उन्होंने उनके पास आने वाले हजारों रोगियों की चिकित्सा करते हुए, समूचे विश्व में विश्लेषणात्मक मनोवैज्ञानिक की सामंजसपूर्ण प्रवृत्तियों की योग्य जानकारी देते हुए विश्वस्तरीय फैले हुए संभ्रमों एवं तनावों को बड़ी सरल एवं सीधी सादी प्रणाली के उपयोग की सलाह प्रस्तुत करते हुए व्यक्तियों, समूहों, प्रजातियों एवं राष्ट्रों के बीच अनावश्यक रूप में उभरते हुए विवादों एवं तनावों को कम करने की दृष्टि से जो उल्लेखनीय एवं जनोपयोगी अनुसंधान किया है तथा इस संबंध में विशुद्ध वैज्ञानिक प्रकार से जिस निष्पक्ष साहित्य का प्रणयन किया है वह निश्चित रूप से मानव समूहों के बीच परस्पर भाई-चारा, उत्तम समझ एवं इनके बीच योग्य सामंजस स्थापना करने का एक शुभ मंगलमय श्री गणेश है। अतः विश्वस्तरीय, समता, समझ एवं परस्पर सहयोग भावना की आम वृद्धि की दृष्टि से ऋषितुल्य जुंग के विचारों का प्रसार वंदनीय है।

अपने उत्तरकालीन जीवन में जुंग की रुचि धार्मिक मनोविज्ञान (Religious Psychology) एवं किमियागिरी विज्ञान (Alchemy) में बढ़ गई थी, अतः इन क्षेत्रों में जुंग द्वारा प्रस्तुत लेखन का बड़ा महत्व है। यूंग की मान्यता है कि स्वतः मानवीय विकास की परिणति धार्मिक प्रवृत्तियों के प्रारम्भ में है, जिसके अन्तर्गत अवचेतन के गहनतम धरातल से सहज अद्भुत धार्मिक भावना सम्पूर्ण मानवीय जीवन के हित एवं कल्याणमय सहज विकास को प्रभावित करने में सक्षम है ताकि गहनतम अवचेतन में स्थित मूल प्ररूप (आर्कीटाइप) एवं "स्व" (The self) चेतन स्तर पर विस्तृत अहम् (Ego) के साथ घुलमिल कर एकरूप हो सके। इसको भारतीय शब्दावली में परम-आत्मा या ब्रह्म का जीवात्मा के साथ सम्मिलित अथवा स्वयं साक्षात्कार की उपलब्धि किया जाना कहा जा सकता है।

यूंग के जीवन के विकास की कहानी को उसके द्वारा रचित साहित्य एवं उसके द्वारा प्राप्त सम्मान-युक्त उपाधियों के माध्यम से मूल्यांकन किया जाना पर्याप्त नहीं है। निःसन्देह यूंग ने अपने देश तथा विदेश एवं सुदूर स्थित भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में स्वयं जाकर वहां के मानव समाज के जीवन अनुभवों से अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाया है। किन्तु यूंग ने एक मौलिक विचार परम्परा स्थापित करने के बावजूद भी किसी नये सम्प्रदाय को खड़ा करने की प्रवृत्ति से सदैव बचने की निरन्तर कोशिश की है। अतः यूंग ने चेले या अपने अनुयायी जुटाने तथा किसी नवीन सिद्धान्त की घोषणा को बढ़ा चढ़ा कर रखे जाने में सदैव संकोच प्रकट किया है। यूंग ने तो अपनी समझ के अनुसार मानवीय अनुभवों की वैज्ञानिक व्याख्या को बड़ी निष्पक्षता एवं ईमानदारी के साथ यथायोग्य प्रकार से अभिव्यक्त किये जाने की

प्रतिभा को बड़ी विनम्रता के साथ प्रस्तुत किया है, किन्तु इसके साथ उनको ही अन्तिम सत्य कहे जाने का भी कोई आग्रह नहीं किया है। अतः यूंग के सम्पूर्ण लेखन में रूढ़िवाद एवं कट्टरता की कोई गुंजाइश ही नहीं है। यूंग ने तो केवल मानवीय अनुभवों की अपनी समझ के अनुसार वैज्ञानिक प्रकार से व्याख्या करते हुए तत्सम्बन्धी तथ्यों को ही जनता के समक्ष केवल उजागर किया है, किन्तु इन तथ्यों पर किसी रूढ़ि अथवा सिद्धान्त को स्थापित किये जाने का कोई आग्रह नहीं किया है। निःसन्देह यूंग ने कतिपय अवधारणाओं का सहज रूप में विवेचन प्रस्तुत किया है किन्तु उन्होंने किसी भी प्रस्तावित अवधारणा को अन्तिम सत्य सिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं किया है। अतः यूंगीय अनुसंधान कार्य में निष्पक्षता, उदारता एवं मानवीय अनुभव सभ्यता के सहज दर्शन होते हैं। यूंग ने सदैव मानवीय अनुभव जन्य ज्ञान के प्रति ही अपनी गहरी निष्ठा प्रगट की है, और यूंग की मान्यता है कि मानवीय अनुभव की व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी स्वतंत्र बुद्धि एवं क्षमता के प्रकाश में करनी चाहिए। अतः यदि किसी मानवीय अनुभव की व्याखया एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति के मुकाबले में अलग प्रकार से प्रस्तुत की जाय तो भी उसमें कोई बुराई नहीं है। इस प्रकार यूंग ने मानवीय अनुभववाद को किसी रूढ़िवाद अथवा संप्रदायवाद के संकीर्ण घेरे से सर्वथा मुक्त रक्खा है।

अन्त में सन् 1948 में जुंग ने ज्युरीच में 'C. G. Jung Institute' की स्थापना की और इसी संस्थान को केन्द्र बनाकर अपना अनुसंधान कार्य, लेखन एवं प्रकाशन कार्य जीवन पर्यन्त चालू रखा। इस संस्थान में देश विदेश के अनेक ज्ञान पिपासु विद्वान् यहां ठहर कर यूंगीय प्रणाली का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए अपने-अपने अनुभवों का विवेचन यूंगीय पद्धति के प्रकाश में करते हैं तथा यूंग द्वारा मानवीय अनुभव सम्बन्धी व्याख्याओं का तुलनात्मक अध्ययन स्वयं के अनुभवों के साथ करने का प्रयत्न करते हैं। देश-पड़ौस तथा सुदूर देशों से आने वाले विद्वानों को यहां ठहराये जाने तथा यूंग तथा उसके सहयोगियों के मार्गदर्शन में इन प्रशिक्षणार्थियों को उनकी वैयक्तिक रुचि के अनुसार अनुसंधान कार्य सम्पादित किये जाने की इस संस्थान में उत्तम व्यवस्था है। इस संस्थान के अन्तर्गत विश्व भर में फैले हुए मानव समूह के भिन्न-भिन्न, धर्म, दर्शन एवं संस्कृतियों के विद्वान् यूंग की सीधी देखरेख में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। तथा इन आगन्तुक विद्वानों के अपने विचारों को यूंग द्वारा प्रतिपादित विचारों के साथ तुलना करते हुए इनके बीच पायी जाने वाली समानता अथवा विभिन्नता को पूरी ईमानदारी के साथ दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्त किये जाने का योग्य प्रोत्साहन दिया जाना ही C. G. Jung Institute ज्युरीच की बहुमूल्य मौलिक विशेषता है। यूंग तथा इस संस्थान के विद्वानों के द्वारा भिन्न-भिन्न जातियों, नस्लों एवं राष्ट्रों के बीच चिन्तन क्षेत्र में खोजी गई विशेषताओं एवं समान गुणधर्मिता की स्थिति की अभिव्यक्ति से विभिन्न जातियों एवं राष्ट्रों के बीच

परस्पर सौहार्द्र भावना, बन्धुत्व एवं सहकारिता को जो बढ़ावा मिला है तथा परस्पर विरोधी जातियों, धर्म मतावलम्बियों एवं मान्यताओं के बीच जिन संघर्षों एवं तनावों के बीच कमी आयी है, वह निःसन्देह विश्व के लिए सामञ्जसकारी-मंगलमयी प्रवृत्ति का सहज विकास है, जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में परस्पर समानता, भाईचारा, सहयोग एव सामञ्जस भावना को निःसन्देह अद्भुत मंगलकारी श्री गणेश एवं बढ़ावा मिला है। इसी तरह के यूंगीय प्रशिक्षण के केन्द्र लंदन एवं अमेरीका के सेन फान्सिको में भी स्थापित किये गये हैं। और इन सभी जुंगीय संस्थाओं में अनेक विद्वान् यूंगीय कार्य पद्धति से परिचय प्राप्त कर तथा इसमें प्रशिक्षण प्राप्त कर रोग-ग्रस्त मानव की सहज प्रवृत्तियों के ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का उदात्तीकरण (Sublimation) करते हुए उनके बीच पाये जाने वाले संघर्षों एवं तनावों को उत्तम समझ का विकास करते हुए एवं इनके बीच कम किये जाने का परस्पर सामंजस्य स्थापित करने का रास्ता निकालने का मार्गदर्शन करते हैं। यूंग के जीवनकाल के दौरान पूर्व और पश्चिम के भिन्न-भिन्न रुचियों एवं स्वभावों के व्यक्तियों ने ऋषितुल्य यूंग के साथ बैठकर परस्पर केवल बातचीत एवं स्वप्न विश्लेपण के माध्यम से ही अपने रोगों, तनावों, संघर्षो एवं भ्रान्तियों से मुक्ति प्राप्त की है और एक दूसरे के बीच व्याप्त परस्पर खींचातानी, संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धाओं को योग्य प्रकार से समझते हुए विश्व भर में आपसी समझ, सामंज्जस सहिष्णुता एवं परस्पर भाइचारे की सहकार भावना का योग्यतम विकास किया है। बीसवीं सदी से दो-दो विश्व युद्धों से प्रताड़ित एवं समस्त मानवता के बीच इस प्रकार सौहार्द्र एवं सहकार की भावना का यह कल्याणमय मार्गदर्शन किया जाना नि.सन्देह यूंग की महान् ऐतिहासिक महत्वपूर्ण भूमिका है और यही श्री यूंग का योग्य परिचय है।

अध्याय 3

भाग 1 खण्ड 1

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की रूपरेखा

(Outline of the Analytical Psychology)

ज्यूरीच के मानसिक चिकित्सालय के सहायक प्राध्यापक एवं मनोविश्लेषण के पद से लेकर यूंग द्वारा प्रतिस्थापित "सी. जी. यूंग इन्स्टीटयूट" ज्यूरीच के संस्थापक संचालक के पद पर रहते हुए सन् 1961 में स्वर्गवासी ; कार्ल गुस्ताव यूंग निरन्तर लगभग 60 वर्षों तक सक्रियतापूर्ण मानवीय अनुभवों का ज्ञान सम्पादित करते रहे, और यूंग हजारों लाखों व्यक्तियों के सम्पर्क में आये । उन्हें अनेक सामान्य एवं असामान्य व्यक्तियों के साथ भेंट करने, तथा उनसे आमने-सामने बैठकर परस्पर विचार-विमर्श करने तथा एक सहृदय चिकित्सक के नाते हजारों रोगियों का मानसिक स्थितियों, उनके रोग-संकटों, मानसिक तनावों, उनके क्रिया-कलापों एवं उनकी आन्तरिक समस्याओं से परिचय प्राप्त करने का उल्लेखनीय अवसर मिला । इसके अलावा यूंग सैंकड़ों मनोविक्षिप्त रोगियों तथा हजारों मनस्तापी व्यक्तियों के दु:खों और रोगों को आपसी बातचीत एवं आपसी समझ के द्वारा उनके शरीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास का कार्य सम्पादित किया । इतना ही नहीं यूंग को आदिम जातियों में पायी जाने वाली भिन्न-भिन्न मिथकों, दन्तकथाओं तथा उनमें व्याप्त विश्वासों–अंध विश्वासों के अध्ययन से लेकर प्राय: विश्व के सभी उन्नत से उन्नत विकसित जातियों द्वारा सम्पादित एवं उनके द्वारा अभिव्यक्त सर्वोच्च ज्ञान, विज्ञान, धर्म दर्शन एवं लोक संस्कृतियों की जानकारी तथा उनके काव्य, साहित्य, कला एवं कौशल की उच्चतम स्थितियों के परिचय प्राप्त करना तथा उनके मूल्यांकन किये जाने के महान् भागीरथ कार्य में व्यस्त रहने का भी अवसर प्राप्त हुआ । इस प्रकार यूंग द्वारा सम्पादित मानवीय अनुभव ज्ञान का विषय अत्यन्त विस्तृत, असीम एवं गहन रहा है, जिसकी संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत किया जाना बड़ा ही मुश्किल एवं कठिन कार्य है । किन्तु जिस प्रकार सम्पूर्ण दुनियां का चित्र एक कागज पर नक्शे के रूप में दर्शाया जा सकता है, उसी तरह इस अध्याय में यूंग के विस्तृत एवं गहनतम अनुभवों की

संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत किये जाने का प्रयास किया गया है। निःसन्देह कार्ल गुस्ताव यूंग एक बहुश्रुत वैज्ञानिक, सहृदय चिकित्सक, गहन अध्येता एवं एक ईमानदार अनुसंधानकर्त्ता की तरह लगभग पचासों वर्षों तक सक्रिय मानव सेवा कार्यों में रत रहे हैं तथा उन्होंने मानव के अवचेतन को समझने तथा उसकी योग्य व्याख्या प्रस्तुत करने का महत एवं उपयोगी कार्य सतत सम्पादित किया है तथा तत्सम्बन्धी बहुल साहित्य रचा है, जिसका सम्पूर्ण आलेखन इस अध्याय में प्रस्तुत किया जाना यद्यपि असंभव सा है फिर भी इस अध्याय में यूंग के दीर्घकालीन अध्ययन अनुसंधान कार्य का तथा उनके द्वारा प्रतिपादित कतिपय सिद्धान्तों एवं प्रमुख अवधारणाओं का एक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

यूंग द्वारा प्रतिपादित "विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान" का मूलाधार यूंग द्वारा सम्पादित मानवीय अनुभवों का गंभीर विवेचन है। यूंग के "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" को मानसोपचार पद्धति की एक किस्म कहा जाना उचित नहीं है, यद्यपि यूंग ने अपने मानवीय अनुभवों की व्याख्या करने में मानसोपचार पद्धति की आवश्यक सामग्रियों का यथायोग्य उपयोग अवश्य किया है, किन्तु यूंग के विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान को स्वयं यूंग के द्वारा तथा उनके सम्पर्क में आने वाले असंख्य व्यक्तियों के अनुभवों का निचोड़ कहा जाना अधिक योग्य है। यूंग ने सैकड़ों एवं हजारों व्यक्तियों के कार्यकलापों, विचारों एवं अनुभवों को अपने निजी अनुभव की तराजु पर वैज्ञानिक प्रकार से परीक्षण करते हुए उन्हें व्याख्यायित किया है तथा इनमें समान रूप से पाये जाने वाले माननीय अनुभवों से कुछ सहज निष्कर्ष निकालते हुए कतिपय प्रस्तावों एवं अवधारणाओं को निर्धारित करने का ईमानदारी के साथ प्रयत्न किया है। यूंग ने इन मानवीय अनुभवों के सामान्य नतीजों को सुझाव (Suggestions) मात्र कहा है। यूंग के अपने गंभीर अनुसंधान का आधार उनका विस्तृत एवं गहनतम मानवीय अनुभवों की एक श्रृंखला है, किन्तु यूंग ने कोई नवीन दर्शन, कोई नया सम्प्रदाय अथवा कोई नया बौद्धिक, नैतिक अथवा आध्यात्मिक मार्ग स्थापित करने का कभी कोई प्रयत्न ही नहीं किया है और यूंग ने न ही कभी यह दावा किया है कि मानवीय अनुभवों पर आधारित उनके द्वारा निकाले गये निष्कर्ष ही अन्तिम सत्य हैं तथा इन नतीजों को सभी पर समान रूप से लागू किया जा सकता है। अतः यूंग के विस्तृत आलेखन को मनोविज्ञान, अथवा मनोविकृति वाद का किसी मर्यादित सीमा में न तो बांधा जा सकता है और न इसको कोई रूढ़ि अथवा सिद्धान्तवाद कहा जा सकता है। क्योंकि यूंग का अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य आदिम मानवीय संस्कारों से लेकर आधुनिक कालीन उन्नत एव विकसित मानव समाज के श्रेष्ठतम चिन्तन, मनन एवं क्रियाकलापों एवं उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियों तक विस्तृत तथा व्यापक है। इस प्रकार यूंगीय विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान किसी एक जाति, किसी एक देश अथवा किसी एक काल के जीवन व्यवहारों, रूढ़ियों, परम्पराओं, साम्प्रदायों अथवा धर्म से बाधित नहीं है, अपितु

यूंगीय लेखन सभी जातियों, सभी देशों तथा सभी कालों में विकसित मानव जाति के अनुभवों का वह वृहद असीम भण्डार है जिसको मानव के सनातन कालीन मानवीय अनुभवों की एक बहुमूल्य धरोहर कहा जाना चाहिये। जिसके प्रकाश में सम्पूर्ण मानव जाति विकास के अगले चरण की ओर सहज प्रकाश से अग्रसर हो सकी है। यूंग ने मानवीय अनुभवों की रोशनी में समूची मानव जाति के मूल स्वभाव और स्वरूप को भी योग्य प्रकार से समझने तथा इस सम्यक् समझ के द्वारा विश्व के भिन्न-भिन्न मानव समूहों के बीच परस्पर सौहार्द्र मित्रता, समानता, एवं सामंजस्य स्थापित करने का मंगलमय सुफला निकला है। जो निसंदिग्ध विशेष महत्वपूर्ण है। यूंग के द्वारा पूर्वतः वैज्ञानिक प्रकार से सम्पादित मानवीय अनुभवों से निकाले गये निष्कर्षों एवं नतीजों से विश्वस्तरीय मनुष्य जाति का योग्य विकास होने तथा इस माध्यम से मानव समूहों के बीच परस्पर एकता, समानता एवं सादृश्यता स्थापित करने में उल्लेखनीय मदद मिली है, अतः यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को मानवीयता के विकास के लिये मंगलमय प्रारम्भ माना जाना सर्वथा योग्य है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग को एक ओर ज्ञानी, कलामर्मज्ञ एवं गंभीर अध्येता माना गया है, तो दूसरी ओर उन्हें पूर्ण वैज्ञानिक, सफल चिकित्सक एवं ईमानदार अनुसंधानकर्त्ता के रूप में याद किया जाता है। यूंग के अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य से ज्ञान-विज्ञान, आचरण-व्यवहार, प्राचीन-अर्वाचीन तथा पूर्वी एवं पाश्चात्य विचारों, प्रवृत्तियों, क्रियाओं आदि सभी द्वन्द्वों के बीच एक प्रकार का अद्भुत सामंज्जस भाव स्वतः उभरता हुआ प्रतीत होता है जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण मानव समाज में सुख, समानता, एकता तथा आपसी समझ की भावना में कल्याणकारी अभिवृद्धि होना पाया गया है, इसलिये जैसे-जैसे यूंग के विचारों एवं कार्य पद्धति का प्रचार-प्रसार होता है, त्यों-त्यों मानव समूहों में व्याप्त कट्टरता, संकीर्णता, दुराग्रह, नासमझी, अविश्वास, द्वेष, हिंसा और स्वार्थपरता में निःसंदेह कमी होना प्रतीत होता है। तथा यह विश्वास प्रायः सभी जाग्रत बुद्धि-जीवियों में गहराई के साथ घर करता जा रहा है। यही यूंग द्वारा प्रतिपादित 'विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" की सर्वोच्च कल्याणकारी भूमिका है।

निःसंदेह स्वीट्जरलैंड निवासी कार्ल यूंग जर्मनी के महान् चिकित्सक एवं प्रसिद्ध मनोविज्ञान वेत्ता डाक्टर सिगमंड फ्रायड के समकालीन एवं निकटतम सहयोगी रहे हैं, और उन्होंने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मन के चेतन एवं अवचेतन संज्ञायुक्त दो सम्भागों की अवधारणा को यथावत् स्वीकार किया है, तथा कार्ल गुस्ताव यूंग की प्रारम्भिक ख्याति डाक्टर सिगमंड फ्रायड के प्रमुख सहायोगी के रूप में फैली है किन्तु यूंग ने डाक्टर फ्रायड द्वारा प्रतिपादित अवचेतन सम्भाग सम्बन्धी खोज कार्य को आगे बढ़ाते हुये फ्रायड द्वारा प्रतिपादित अवचेतन के स्वरूप में बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन करते हुए बाद में जाकर फ्रायड की मनोविश्लेषण पद्धति (Psycho-analysis) के समानान्तर स्वयं द्वारा प्रतिपादित "विश्लेषणात्मक

मनोविज्ञान (Analytical Psychology) पद्धति की स्थापना की जिसको ज्युरीच स्कूल कहा जाता है।

यूंग ने अपनी पद्धति को स्पष्ट करते हुये फ्रायड़ द्वारा प्रयुक्त शब्द "मन" और "मानसिक" (Mind तथा mental) के वजाय नवीन संज्ञा Psyche (चित्त) तथा psychic (चित्तीय) का उपयोग किया है क्योंकि यूंग की मान्यतानुसार शब्द चेतन (Conscious) तथा मन (mind) समान अर्थों में पद प्रतीत हुए हैं। वस्तुतः अवचेतन घटनाक्रम को मन का सम्भाग कहा जाना उचित भी नहीं है क्योंकि अवचेतन सम्भाग प्रायः मन तथा अहम् (Ego) की पकड़ से परे तथा "अनजाना" रह जाता है। अतः "अवचेतन" के साथ "मन" की कोई संगति या संबंध स्थापित किया जाना उचित नहीं है। सन् 1911 में यूंग ने अवचेतन सम्भाग सम्बन्धी अपने अनुसन्धान कार्य के नतीजों को 'The psychology of the unconscious" शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित किया, जिसके परिणामस्वरूप मनोवैज्ञानिक जगत् में एक हलचल सी मच गयी और इस पुस्तक के प्रकाशन के साथ फ्रायड एवं यूंग के अवचेतन सम्बन्धी विचारों का अन्तर जग-जाहिर और सुस्पष्ट हो गया। यूंग के द्वारा शब्द "मन" (mind) के वजाय नवीन संज्ञा चित्त (Psyche) की घोषणा के अलावा उसने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित अवचेतन के स्वरूप के बावत भी अपने मतभेदों को दृढ़तापूर्वक प्रतिपादित किया है। फ्रायड की मान्यतानुसार "अवचेतन" मन का वह संभाग है जहां पर व्यक्ति अपने शैशवकालीन की कामुक वृत्तियों को समाज द्वारा असंगत पायी जाने के फलस्वरूप प्रायः अन्दर की ओर ढ़केल देता है, अतः फ्रायड के अनुसार अवचेतन खण्ड में दमित, उपेक्षित तथा समाज द्वारा तिरस्कृत तथा अवांछनीय एवं अशोभनीय वृत्तियों का अव्यवस्थित जमाव हो जाता है जो अशोच, असुन्दर, तथा अशिव विचारों, भावनाओं एवं वृत्तियों का गोदाम माना गया है, अतः इस सामग्री का कोई सार्थक उपयोग मानवीय विकास की दृष्टि से किया जाना नहीं माना गया है। किन्तु कार्ल गुस्ताव यूंग ने चित्त के अवचेतन सम्भाग को मानवीय अनुभवों का उपयोगी रत्न भंडार माना है जिसमें व्यक्ति केवल अपने वैयक्तिक भूतकालीन अनुभवों को ही नहीं संग्रहित करता अपितु वह अपने पूर्वजों, प्रजाति (Racial) तथा सम्पूर्ण मानव जाति के द्वारा भोगे हुए अनुभवों को वीज की तरह अव्यक्त रूप से संगृहित रखता है जो यदाकदा अवचेतन स्तर से चेतन पर स्वतः उभर कर व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं तथा इनसे मानवीय व्यक्ति के विकास के कल्याणमय पथ पर अग्रसर होने की महत्वपूर्ण भूमिका का भी निर्वाह होता है। फलतः यूंगीय चित्त का अवचेतन सम्भाग व्यक्ति तथा व्यक्ति के वड़े पुरखाओं तथा उसकी प्रजाति ही नहीं अपितु अव तक विकसित सम्पूर्ण मानव जाति के द्वारा भोगे हुए ज्ञान एवं अनुभवों का वह प्रकाशयुक्त रत्न भण्डार है जिसका स्वतः कल्याणकारी उभार चेतन स्तर पर होने पर समूचा मानव

व्यक्तित्व अधिक समझदार, अधिक सम्पन्न तथा अधिक जनोपयोगी बन सकता है। जबकि फ्रायड के अवचेतन का उभराव भावावेश या मनोवेश के रूप में गन्दे पानी के नाले की तरह व्यक्ति के चेतन सम्भाग को धुंधला, गन्दा तथा क्षतिग्रस्त करने वाला बतलाया गया है। यूंग द्वारा प्रतिपादित अवचेतन स्तरीय सम्भाग की अन्तर्वस्तु के उभराव को कल्याणकारी, ज्ञानमयी, अनुभव सम्पन्न एवं समाजोपयोगी माना गया है जिसके प्रादुर्भाव से मानवीय व्यक्तित्व के योग्य, विकास में बड़ी मदद मिलती है। अवचेतन की अन्तर्वस्तु के स्वरूप के बावत इस मौलिक मतभेद से फ्रायड़ीयन मनोविश्लेषण एवं यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के बीच का मुख्य अन्तर स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि यूंग की मान्यतानुसार चित्त का अवचेतन सम्भाग जहां सुन्दर, मनोहर एवं उपयोगी कहा गया है वहां पर फ्रायड द्वारा प्रतिपादित अवचेतन को व्यक्ति तथा समाज द्वारा तिरस्कृत, दमित एवं अनुपयोगी सामग्री का बेतरतीब एवं जमाव वाला–एक गोदाम अथवा मानव समाज द्वारा फेंके गये कूड़े करकट का एक ढेर माना गया है।

यूंग ने अपने जीवन का बहुतांश समय मुख्यतः "अवचेतन चित्त" की योग्य समझ एवं उसके स्वरूप के निर्धारण में लगाया है तथा उसने इस अवचेतन सम्भाग को आगे जाकर दो भागों में पुनः विभाजित किया है जिसके अन्तर्गत अवचेतन चित्त के ऊपरी सम्भाग के "व्यक्तिगत अवचेतन" (Personal Unconscious) तथा अवचेतन के गहनतम निचले उप-भाग को सामूहिक अवचेतन (Collective Unconscious) कहा गया है। व्यक्तिगत अवचेतन स्तर में व्यक्ति द्वारा भोगे हुए अनुभवों की भूली बिसरी स्मृतियां इच्छाओं, वृत्तियों एवं प्रवृत्तियों के अस्पष्ट ठप्पों (impressions) का संग्रह माना गया है तथा सामूहिक अवचेतन के अन्तर्गत व्यक्ति के पिता, पितामह, पुरखा, प्रजाति तथा आदिम मानव जाति के सभी अनुभवों के संस्कारों का बीज रूप में संग्रह किया जाना पाया जाता है। इसके अलावा यूंग की यह भी मान्यता रही है कि अवचेतन ही चेतन का आधार अथवा कोख (Matrix) है, अर्थात् अवचेतन से ही चित्त के चेतन सम्भाग का प्रादुर्भाव होता है। अतः हम चेतन को "पितृ चेतन" तथा अवचेतन को "मातृ चेतन" की सर्वथा नवीन संज्ञा से विवेचित कर सकते हैं।*

---

* दिनांक 22 अक्टूबर, 75 को महिलामण्डल, उदयपुर द्वारा आयोजित मीरा प्रतिष्ठान समारोह पर हिन्दी की श्रेष्ठतम कवियत्री श्रीमती महादेवी जी वर्मा से लेखक की आपसी बातचीत के दौरान सन् 1975 में विश्व में महिला वर्ष मनाये जाने के संदर्भ में शब्द "अवचेतन" को "मातृ चेतन" तथा "चेतन" को "पितृ चेतन" की नवीन संज्ञा से प्रचारित-प्रसारित करने का सुझाव प्रस्तुत किया था। तदनुसार चेतन को "पितृ चेतन" तथा अवचेतन सम्भाग को "मातृ चेतन" कहा जाना उपयुक्त प्रतीत होता है।

यूंग की अवधारणा के अन्तर्गत चित्त का चेतन सम्भाग एवं अवचेतन सम्भाग परस्पर एक दूसरे का गुणधर्म से विरोधी होने पर भी परस्पर एक दूसरे का पूरक सम्भाग है। और चेतन सम्भाग, अवचेतन पर आधारित होकर, उसका ही परिणाम मात्र है। यूंग ने चित्त की सत्ता को ही सर्वोपरि वास्तविकता (fact) एवं सत्य (Real) माना है। निश्चयपूर्वक चित्त (psyche) किसी भी भौतिक वस्तु (physical matter) या आंगिक (Organic) स्थिति की अपेक्षा अधिक वास्तविक (factual) तथा महत्वपूर्ण है, क्योंकि चित्त से ही भौतिक अथवा आंगिक (physical or Organic) सुःख अथवा दुःख का अनुभव होता है। अतः भौतिक पीड़ा अथवा वस्तु की अनुभूति को इस दृष्टि से केवल मात्र "चित्तीय घटना क्रम ही कहा जाने योग्य है। मानव, दुनियाँ तथा उसकी सभी वस्तुओं एवं स्थितियों की जानकारी अपनी इन्द्रियों के माध्यम से करता है किन्तु इनका अर्थ बोध केवल चित्त के द्वारा ही किया जाता है। इस प्रकार चित्तीय अवस्था का रूपान्तरण (Transformation) ही मानवीय अनुभव है। मानव इस प्रकार अपने चित्त की प्रतीती से ही सत्य एवं झूंठ का विवेकसंगत विश्लेषण तथा निर्णय अपने पूर्व अनुभव के प्रकाश में कर पाता है। यदि चित्त की मदद के बिना केवल कृत्रिम साधनों के माध्यम से किसी वस्तु का अर्थ निकालने की कोशिश को जायेगी तो उसका कोई भी अर्थ नहीं निकल सकेगा। जैसे रंग (Colour) को केवल मात्र प्रकाश तरंग की अमुक लम्बाई (Wave length) तथा स्वर (Tone) वायुकंपन की फलां आवृत्ति (frequency) कहा जायगा तो इस जानकारी से रंग और स्वर का कोई मानवोपयोगी अर्थ बोध नहीं हो सकेगा। चित्त ही मानव की सभी कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों की अपेक्षा मानवी व्यक्तित्व के सबसे अधिक सन्निकट है, और इसलिये चित्तीय स्थिति को शारीरिक, वाचिक, कायिक एवं भौतिक तथा मानसिक सचाई की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाने योग्य है। क्योंकि चित्त ही मानवीय अनुभव का माध्यम एवं मूलाधार है।

मानवीय जीवन में चित्तीय सत्ता का सर्वोपरि महत्व है, क्योंकि सभी शारीरिक अथवा आंगिक (Organic) रोग या दुःख की जानकारी व्यक्ति को केवल चित्त के माध्यम से ही होती है। यदि चित्तीय स्थिति में कहीं कुछ गड़बड़ी, क्षति अथवा रोग है तो समूचा मानवीय व्यक्तित्व, उन्माद, पक्षाघात पागलपन आदि का शिकार हो जाता है क्योंकि उसके शारीरिक परीक्षण से इन बीमारियों का न कोई लक्षण ढूंढा जा सकेगा और न इनका कोई निदान अथवा उपचार ढूंढा जा सकेगा।

मानव मात्र के प्रत्येक कार्यकलाप का प्रारम्भ चित्तीय स्तर से होता है, अर्थात् मानव जो कुछ करता है वह जो कुछ सोचता अथवा कल्पना करता है अथवा मानव जो कुछ सपना देखता है, इन सबका उद्‌गम स्थान मानवीय चित्त ही है।

मानव की सभी इच्छाओं, आकांक्षाओं, आशाओं एवं आशंकाओं का भाव प्रवाह चित्तीय स्तर से ही होना पाया जाता है चाहे मानव इनकी प्रामाणिकता को स्वीकार करे अथवा न करे। अतः यूंग ने चित्तीय धरातल को ही मानवीय अनुभव का वास्तविक प्रतिष्ठान तथा मूलाधार माना है।

यूंग ने मानवीय अनुभवों के आधार पर मानव में दो प्रकार की व्यक्तित्व प्रारूपों से संबंधित अभिवृत्तियों(attitudes)पाये जाने का पता लगाया है, जिसको यूंग ने "वहिर्मुखी" और "अन्तर्मुखी" अभिवृत्तियां कहा है। व्यक्ति मात्र में एक ही समय या तो वह बाहर की ओर अग्रसर होता है याने उसमें वहिर्मुखी अभिवृत्ति पायी जाती है अथवा वह अन्दर की ओर प्रवृत होता है, अर्थात् उसमें अन्तर्मुखी अभिवृत्ति परिलक्षित की जा सकती है। इसी प्रकार यूंग ने मानव मात्र में चार प्रकार की स्वभावजन्य प्रधान क्रियाओं (main functions) के होने की खोज की है जिनको यूंग ने चिन्तन, भावना संवेदन एवं अन्तः प्रज्ञा प्रधान क्रियाएं कहा है अर्थात् प्रत्येक मानव या तो प्रधानतः चिन्तनशील स्वभाव (Thinking Type स्वभाव) का होता है, अथवा वह मुख्यतः भावनाशील (Feeling Type) स्वभाव का पाया जाता है। यूंग की मान्यतानुसार यदि कोई व्यक्ति अपने सहज स्वभाव (nature) के अनुसार चिन्तन को अपने जीवन में अधिक महत्व देता है तो निःसन्देह उसका भावना पक्ष (feeling side) कमजोर पाया जायेगा। इसी तरह यदि कोई व्यक्ति स्वभावतः सवेदन (Sensation) को अपने जीवन व्यवहार में अधिक महत्व देता है तो उसमें "अन्तः प्रज्ञा" (Intuition) पक्ष निसन्देह अल्प विकसित पाया जायेगा, इसी प्रकार यूंग ने मानव समुदाय को व्यक्तिशः सहज अभिवृत्ति तथा प्राकृतिक स्वभाव (nature) की दृष्टि से मुख्य चार क्रियाएं (four main functions) के आधार पर सम्पूर्ण मानव समाज का दो अभिवृत्तियों गुणित चार स्वभावजन्य मुख्य क्रियाओं(Main functions)की दृष्टि से अर्थात् आठ किस्मों में विभाजित किया है। यूंग के द्वारा सन् 1912 में प्रकाशित "मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण" (Psychological Types) शीर्षक पुस्तक में इन आठ किस्मों का विस्तार के साथ विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने चित्त को स्वतः संचालित सहज गत्यात्मक (dynamic) प्रवाह माना है। जिस प्रकार हृदय की स्वतः धड़कनें मानवीय जीवन की पहचान है, जिसके द्वारा रक्त संचार हृदय की तरफ तथा हृदय से वाह्य इन्द्रियों की ओर स्वतः प्रवाहित होता है अथवा विद्युत् संचार एक धन ध्रुव से दूसरे ऋण ध्रुव के वीच स्वतः प्रवाहित होना ही विजली की स्थिति के होने का द्योतक है, उसी तरह चित्तीय स्तर पर जीवन शक्ति (Libido) का स्वतः प्रवाह चित्त के चेतन एवं अवचेतन ध्रुवों के वीच निरन्तर स्वतः प्रवाहित होते रहना ही मानवीय जीवन एवं अनुभव की प्रामाणिकता है। फ्रायड एवं यूंग ने चेतन एवं अवचेतन के

बीच स्वतः होने वाले इस जीवन शक्ति प्रवाह को लीविडों (Libido) संज्ञा से परिभाषित किया है ।*

यूंग की मान्यतानुसार जब लीविड़ों अर्थात् जीवनेच्छा शक्ति का यह प्रवाह व्यक्ति से बाहर की ओर याने विश्व की ओर प्रवाहित होता है तो इसको "बहिर्मुखी अभिवृत्ति" कहा गया है, इस स्थिति में चेतन सम्भाग से बाहरी दुनियाँ के साथ योग्य सामंज्जस एवं समक्ष स्थापित करने के बहाव की रिक्त स्थान पूर्ति हेतु अवचेतन की अन्तर्वस्तु चेतन पर स्वतः उभरने लगती है। तथा इसके विपरीत जब व्यक्ति के अवचेतन की आन्तरिक मांग से चित्तीय प्रवाह अर्थात् लीविड़ों अथवा जीवनेच्छा का बहाव चेतन से अन्दर की ओर होता है तो उस प्रतिगामी भाव प्रवाह को अन्तर्मुखी अभिवृत्ति कहा जाता है। यूंग ने बहिर्मुखी अभिवृत्ति से प्रभावित व्यक्ति को (Extrovert) बहिर्मुखी तथा अन्दर की ओर अभिवृत्त होने वाले व्यक्ति को (Introvert) कहा है। यूंग ने स्वयं तथा अपने निकटस्थ मित्रों एवं रोगियों की जीवन चर्चाओं का अनुभव करते हुए यह निष्कर्ष निकाले जाने का संकेत दिया है कि बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी जीवन शक्ति के स्वतः प्रवाह से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की सुरक्षा और उसका सहज विकास संभव है। अतः चेतन तथा अवचेतन के बीच बारी-बारी से स्वतः संचालित जीवन प्रवाह में यदि कोई रुकावट या गड़बड़ी आती है तो निःसंदेह वह व्यक्तित्व क्षतिग्रस्त, रोगी अथवा विश्रृंखलित हो जाता है। अतः कार्ल गुस्ताव जुंग ने उनके सम्पर्क में आने वाले सभी सामान्य अथवा असामान्य व्यक्तियों के चेतन एवं अवचेतन के बीच योग्य तालमेल एवं सामंज्जस बनाये रखने का आग्रह विनम्र सुझावों के रूप में प्रस्तुत करने तथा इन प्रस्तावों को उनके रोगियों द्वारा अपनाये जाने का सुझाव दिया है। फलस्वरूप उसके अनेक रोगियों के आन्तरिक तनावों में कमी महसूस करते हुए उन्हें सहजता के साथ जीने तथा स्वतः स्वाभाविक रूप से अपने एकाकी जीवन को योग्य विकास की ओर बढ़ने को मदद मिली है और उन्हें बड़ी राहत मिली है। यूंग ने अपने आश्रित रोगियों के रोग का निदान परस्पर बराबरी के स्तर पर खुली तथा निष्कपट बातचीत के जरिये से तथा आपसी विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम से ही अपने रोगियों की समझ का विकास एवं विस्तार करते हुए उसके द्वारा अपनायी जाने वाली भ्रान्तियों से छुटकारा पाने का जो रास्ता सुझाया है वह निःसन्देह बहुत प्रभावशाली एवं कल्याणकारी प्रमाणित हुआ है।

---

* लिविडों (Libido) लैटिन भाषा का शब्द है। फ्रायड़ ने लिबिडों को कामवेला (Sex urge) माना है, किन्तु यूंग ने लैटिन भाषा में प्रयुक्त लीविडों को जीवन के सन्दर्भ में अर्थ स्वीकार करते हुए इसको 'जीवन-इच्छा' या 'जीवन-ऐषणा' माना है।

यूंगीय मानसोपचार की दृष्टि से यूंग ने चिकित्सक और रोगी को बराबरी के स्तर पर आपने सामने बैठकर खुली बातचीत एवं एक दूसरे की मानसिक स्थितियों को समझने के लिये परस्पर विचार विमर्श किये जाने का आग्रह किया है, ताकि चिकित्सक रोगी को उसकी आन्तरिक स्थितियों को समझते हुए उसके द्वारा अपनायी गई गलत भ्रान्तियों का योग्य निराकरण चिकित्सक के मार्गदर्शन की मदद से कर सके। इस प्रकार यूंगीय चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत रोगी को उसकी स्थितियों की जानकारी स्वयं खोजने तथा इनमें स्वयं द्वारा योग्य संशोधन स्वीकार किये जाने का प्रोत्साहन चिकित्सक द्वारा दिया जाता है। परस्पर खुली बातचीत एवं परस्पर सहयोग की भावना से ईमानदारी के साथ आपसी विचार-विमर्श किये जाने की इस यूंगीय चिकित्सा प्रणाली का उपयोग धीरे-धीरे सभी मनोचिकित्सकों द्वारा अपनाया जा रहा है और आज समूचे यूरोप एवं अमेरीका में अनेक मनोचिकित्सक यूंग द्वारा प्रस्तावित इस सरलतम चिकित्सा प्रणाली का सफलतापूर्वक प्रयोग कर रहे हैं। चिकित्सक एवं रोगी के बीच परस्पर मित्रतापूर्ण वातावरण में विचारों के आदान-प्रदान की इस पद्धति का उपयोग मानसोपचार के अलावा जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी किया जाना सभावित है। समान स्तर पर एक दूसरे की समस्याओं को आत्मीयतापूर्ण वातावरण में समझने के प्रयत्नों से निःसन्देह संघर्षरत परस्पर दो व्यक्तियों, दो मानव समूहों, अथवा दो राष्ट्रों के बीच संघर्षग्रसित तनावों में कमी किये जाने की असीम संभावनायें हैं ताकि आपसी विचार-विमर्श के द्वारा एक व्यक्ति, समाज या राष्ट्र दूसरे व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र की स्थिति को योग्य प्रकार से समझ सके तथा इनके बीच स्थित विशेष तनावों को आपसी समझ एवं सूझ से कम कर सके और उभय पक्षों की आपसी समझ का विकास करते हुए इनके बीच परस्पर मित्रता, सहकार तथा योग्य विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। इस प्रकार यूंग द्वारा प्रस्तावित मनोचिकित्सा पद्धति को जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी लागू किये जाने का जो संकेत यूंग ने दिया है, व मानव कल्याण की दृष्टि से निःसन्देह अभूतपूर्व है। अतः इस विशिष्ट देन के लिये यूंग विशेष प्रकार से अभिनन्दन योग्य है।

जिस प्रकार समुद्र में ज्वार-भाटे का सतत स्वाभाविक क्रम है उसी तरह वित्तीय स्तर पर जीवन ऊर्जा शक्ति (लिबिडो) का स्वतः प्रवाह अवचेतन से चेतन की ओर तथा चेतन से अवचेतन की ओर निरन्तर स्वतः बना रहता है। किसी भी बाहरी भाग से जब चेतन बाहर की ओर आमुख होता है तो उसकी कमी की पूर्ति के लिये अवचेतन की अन्तर्वस्तु चेतन पर स्वतः उभरने लगती है तथा जिस प्रकार किनारे पर टकरा कर समुद्र की लहर स्वतः लौट जाती है उसी प्रकार चेतन द्वारा बहिर्स्थित की जानकारी के बाद अवचेतन के रिक्त स्थान को भरने हेतु जीवन ऊर्जा प्रवाह वापस अवचेतन की ओर लौट पड़ता है। इस प्रकार स्वतः प्रवाहित लीबिडो ने ज्वार भाटे के सहज मंथन क्रम में चित्त की अन्तर्वस्तु की अदला बदली

से चेतन तथा अवचेतन के बीच होती है अतः परस्पर जुड़े हुए इन सम्भागों में योग्य तालमेल बना रहता है। ज्वार की स्थिति में अवचेतन की अन्तर्वस्तु का चेतन पर छा जाना तथा भाटे की स्थिति में चेतन की अन्तर्वस्तु का अवचेतन में विलय हो जाने के इस उपक्रम में ही समूचे व्यक्तित्व का सहज विकास होना, निसन्देह एक प्राकृतिक नियम है। यूंग ने चेतन और अवचेतन को चित्त के दो सम्भाग होना माना है। किन्तु इसको एक दूसरे से सर्वथा पृथक् नहीं मानकर इन दोनों को एक दूसरे का पूरक या प्रतिपूरक माना है। चेतन एवं अवचेतन निःसन्देह चित्त के ये दो ध्रुव हैं जो जीवन ऊर्जा के स्वतः प्रवाह के कारण एक दूसरे से एकदम जुड़े हुए हैं तथा चेतन एवं अवचेतन के बीच स्वतः प्रवाहित जीवन ऊर्जा शक्ति (लिबिडो) के फलस्वरूप चेतन एवं अवचेतन के बीच अन्तर्वस्तु की परस्पर अदला बदली स्वतः होते रहने के परिणामस्वरूप चेतन अथवा अवचेतन का द्वैत भी चित्त की इकाई में स्वीकार किये जाने योग्य है।

यूंग की अवधारणा है कि मानव जीवन का उद्देश्य अपनी सहज अभिवृत्तियों एवं स्वभावजन्य क्रियाओं द्वारा स्वतः व्यक्तित्व का विकास है। परिस्थितिजन्य मानव अपनी वहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी अभिवृत्तियों के अनुसार तथा स्वभावजन्य चार प्रकार की मुख्य क्रियाओं (चिन्तन-भावना, एवं संवेदन-अंतःप्रज्ञा) के द्वारा अपने अनुभवों से समृद्ध होकर अपने स्वतः विकास में स्वतः निरन्तर लगा रहता है, फलतः व्यक्ति अनुभव ज्ञान सम्पन्न होकर स्वतः अपने सही स्वरूप को धीरे-धीरे पहिचानने लगता है। अतः यूंग की मान्यता के अन्तर्गत चेतन-अवचेतन, वहिर्मुखी-अन्तर्मुखी अभिवृत्तियों तथा चिन्तन-भावना एवं संवेदन-अन्तःप्रज्ञा की चतुर्दशीया क्रियाएं यद्यपि परस्पर विरोधी धर्मी प्रतीत होती हैं, फिर भी मूलतः इनके बीच एकरसता, समानता एवं इकाई मौजूद पाई जाती है, जो मानव की अपूर्णता से पूर्णता की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर अथवा असत्य से सत्य की ओर स्वतः निरन्तर अग्रसर होने के जीवनोद्देश में निरन्तर मदद करती है। जबकि फ्रायड की धारणा है कि मानव अपनी सहज वृत्ति के परिणामस्वरूप जन्म से मृत्यु तक काम जन्य सुख (Sex-pleasure) के सम्पादन में ही संलग्न रहता है, और एलफ्रेड एडलर के वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual Psychology) के अनुसार मानव मात्र प्रारम्भ से अन्त तक शक्ति बटोरने की क्रिया में संलग्न पाया गया है। यूंग ने फ्रायड के मनोविश्लेषण (Psycho-analysis) सिद्धान्त तथा एडलर के वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual Psychology) को प्रतिवाद मानवीय अनुभवों के आधार पर दृढ़तापूर्वक व्यक्त किया है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने मानवीय सहज वृत्तियों की योग्य व्याख्या प्रस्तुत करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि स्वयं का सहज स्वतः विकास करना ही मानव की मूल प्रकृति या स्वभाव (nature) है। जबकि फ्रायड की मान्यतानुसार

मानव की सहजवृत्ति कामसुख की निरन्तर तलाश है। यूंग ने फ्रायड की इस अवधारणा का खण्डन करते हुए फ्रायड के साथ अपनी असहमति जाहिर की है। निःसन्देह मानव जन्म से मृत्यु तक न तो कामजन्य प्रवृत्तियों में लगा रह सकता है। और मानवीय अनुभव के अध्ययन से यह भी प्रमाणित है कि एडलर के मतानुसार मानव का उद्देश्य विभिन्न शक्ति संग्रह के कार्य में आजीवन लगे रहने का कोई अर्थ ही नहीं है। अतः आज सर्वत्र फ्रायडीयन "साइको-ऐनेलेसिस" तथा एडलर द्वारा प्रस्तावित "वैयक्तिक मनोविज्ञान" पद्धतियों की तुलना में कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा मानवीय अनुभवों की योग्य समझ पर आधारित "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" (Analytical Psychology) पद्धति के सिद्धान्तों को प्रायः सभी प्रबुद्ध चिन्तकों एवं मनोचिकित्सकों द्वारा अपनाया जा रहा है। निःसन्देह व्यक्ति मात्र अपने विकास एवं अभ्युदय की अपने स्वतः स्वभाव से कामना करता है और जीवन भर जीवन में घटित सभी होने वाले अनुभवों को योग्य प्रकार से समझते हुए अपने आत्म कल्याण एवं व्यक्तित्व विकास के कार्यों में जन्म से मृत्यु तक अपनी सहज वृत्तियों एवं क्रियाओं के माध्यम से स्वभावतः स्वतः लगा रहता है क्योंकि स्वतः विकास की ओर बढ़ते रहना ही मुख्य मानवीय स्वभाव या वृत्ति (Main human tendency) है। जो अनुभवों के प्रकाश से स्वयं तथा स्वतः प्रमाणित है। इसके अलावा चित्त के चेतन-अवचेतन सम्भागों, अभिवृत्तियों के वहिर्मुखी-अन्तर्मुखी आमुखों की स्वतः प्रवाह, तथा चतुर्दशीय स्वभावजन्य क्रियाओं को विरोधधर्मी मानते हुए भी इनको एक दूसरे की पूरक मानी जाने की सामंजस्यकारी व्याख्या को प्रस्तुतीकरण से आज के संघर्षरत विश्व के तनावों में यूंग द्वारा आपसी समझ की अभिवृद्धि हेतु प्रस्तावित सुझाव का दूरगामी प्रभाव सम्पूर्ण मानवीय कल्याण वृत्ति पर पड़ा है। फिर भी यूंग ने अपने इन प्रस्तावों को एकमात्र सत्य की तरह स्वीकार किये जाने का कोई आग्रह नहीं किया है। इस प्रकार यूंग की विचारधारा अतिवाद, रूढ़िवाद, संकीर्णता एवं कट्टरता से स्वतः मुक्त है, क्योंकि यूंग ने कभी भी यह दावा नहीं किया कि उनके द्वारा निकाले गये निष्कर्ष ही सभी व्यक्तियों पर समान रूप से लागू किये जाने योग्य हैं। अतः यूंग का उदारतावदी यह सहिष्णुतापूर्ण समन्वयवादी दृष्टिकोण ही मानवीय अनुभवों की व्याख्या की दृष्टि से निःसन्देह एक कल्याणकारी कदम है।

यूंग ने दृढ़तापूर्वक यह प्रतिपादित किया है कि जीवनेच्छा (Life Urge) एक-प्राकृतिक शक्ति (Natural Energy) है जिसके कारण ही व्यक्ति के जीवन की स्थिति तथा गति बनी रह सकती है। जीवनेच्छा शक्ति का उपयोग सहज वृत्तियों एवं क्रियाओं में स्वतः होता रहता है, किन्तु उपरोक्त उपयोगों के अलावा जो जीवनेच्छा शक्ति बची रह जाती है उसका उपयोग सृजनात्मक (Creative art) कला तथा सांस्कृतिक कार्यों (Cultural functions) में किया जा सकता है।

सामान्यतः सहज वृत्ति अन्य क्रियाओं के अलावा सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं में प्रयुक्त जीवनेच्छा शक्ति का परिवर्तन मानवीय इच्छा (Human will) के नियंत्रण में नहीं होकर अवचेतन स्तरीय अन्तःप्रज्ञा (Intuition) से प्रेरित क्रिया के रूप से अभिव्यक्त होता है, जो यदाकदा स्वप्नों के माध्यम से प्रगट होता है। कभी-कभी जीवनेच्छा शक्ति की व्यक्तिगत सहज वृत्तियों का रूपान्तरण समष्टिगत सांस्कृतिक रचनाओं में होना पाया जाता है। इस प्रसंग में यूंग ने वाट्शडिस (Watschendis) नामी आदिम जाति में प्रचलित वसन्तोत्सव का बड़ा रोचक विवरण प्रस्तुत किया है, जो निम्नानुसार है :—

इस आदिम जाति का कबीला प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से वसन्तोत्सव मनाता है। इस उत्सव में इस कबीलों का समूचा पुरुष वर्ग धरती में एक खड्डा खोदता है जो स्त्री योनि का प्रतीक है तथा इस खड्डे के चारों ओर कुछ झाड़ियां लगायी जाती हैं, मानो स्त्री योनि का बालों से श्रृंगार किया गया है। इस खड्डे के चारों ओर कबीले का पुरुष वर्ग एक हाथ में भाला लेकर बड़ी मस्ती के साथ नाचता है। यहां हाथ में पकड़ा हुआ भाला पुरुष लिंग का प्रतीक है और चारों तरफ नाचते हुए पुरुष वर्ग भाले को खोदे हुये खड्डे में घुसेड़ते हुये चिल्लाता है—"पुल्ली नीरा पुल्ली नीरा वाटका" अर्थात् देखो धरती गर्भवती हो रही है। इस नृत्य समारोह में कबीले का केवल पुरुष वर्ग ही हिस्सा लेता है तथा इस कबीले के महिला वर्ग को इस नृत्योत्सव के दौरान दृष्टि से परे दूर रखा जाता है। यह उत्सव वसन्त ऋतु में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है, जिसका विशेष महत्व है। नृत्य करने वाला पुरुष वर्ग बड़ी मस्ती और तन्मयता से इस नृत्य समारोह में भाग लेता है और उनकी यह मान्यता रही है कि वे एक धार्मिक कृत्य सम्पादित कर रहे हैं, अर्थात् स्त्री रूपी धरती से जीवनोपयोगी अन्न की फसलें पैदा कर रहे हैं। सामान्यतः एक पुरुष और एक नारी के बीच कामक्रीडा की सहज वृत्ति है जिसमें जीवनेच्छा शक्ति का आमतौर से उपयोग होता है। इस वैयक्तिक कृत्य से काम सुख और आनन्द तथा सन्तान की उपलब्धि होती है। जीवनेच्छा शक्ति (Libido) के इस वैयक्तिक उपयोग का समष्टि के हित के लिये इस नृत्य महोत्सव के माध्यम से उपयोग किया जाना सहज वृत्तियों का मंगलीकरण (Sublimation) किया जाना कहा जा सकता है अर्थात् इस कबीले के लोग अपने वैयक्तिक सुखों के रसास्वादन से बचते हुए अपनी जीवनेच्छा शक्ति (Libido) का उपयोग अपनी समूची जाति के कल्याणार्थ एवं रक्षणार्थ कर रहे हैं जो उनकी नजर में निश्चयपूर्वक एक धार्मिक कृत्य है। इस कबीले के लोगों का विश्वास है कि यदि धरती में पैदावार नहीं होगी तो उनका समूचा कबीला क्या खाकर कैसे जी सकेगा? अतः स्त्री-पुरुष को अपने बीच सहजवृत्ति के अनुसार मैथुन क्रिया से बचते हुए सम्पूर्ण पुरुष वर्ग को सम्मिलित रूप से धरती में उपज

पैदा करने के लिये इस समारोह द्वारा प्रवृत्त होना अधिक लोक कल्याणकारी, महत्वपूर्ण एवं धार्मिक कृत्य है। यूंग ने अपने अध्ययन से यह खोज की है कि आदिम जातियों में तथाकथित उन्नत एवं विकसित जातियों की अपेक्षा मानव समूह एवं समष्टि के प्रति अधिक आदर एवं महत्व दिया जाना पाया जाता है। आज का उन्नत व्यक्ति प्रायः अपने ही व्यक्तिगत सुख और भोग में रत देखा गया है जब कि आदिम जातियों में अपने वैयक्तिक सुख और भोग की अपेक्षा समष्टि के जीवन एवं विकास की ओर अधिक ध्यान दिया जाना पाया जाता है जो उपरोक्त आदिम जाति में प्रचलित वसन्त नृत्योत्सव के उदाहरण से प्रमाणित है। इस उदाहरण से स्त्री-पुरुष के बीच की कामक्रीडा का उदात्तीकरण आदिम जातियों में प्रयुक्त सामूहिक कल्याणकारी धरती जोतने (Tilling of the Earth) की धार्मिक क्रियाओं से पाया जाता है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने चित्त के चेतन सम्भाग को समुद्र में उभरते हुए एक टापू (Island) के मानिंद होने का उदाहरण प्रस्तुत किया है। समुद्र से उभरा हुआ टापू सचमुच उसका अहम् (Ego) है जो इच्छा करता है, जानता है और इस अहम् (Ego) से उजागर समुद्र से उभरा हुआ यह सम्भाग को ही चेतन माना गया है जो अहम् द्वारा चाहा जाना (Willing and Eknowing) तथा नियन्त्रित माना गया है। यह चेतन सम्भाग समुद्र में डूबे हुए अवचेतन सम्भाग के ऊपर स्थित है तथा इसको अवचेतन से ही उपजा हुआ एवं प्रभावित होना माना गया है। चित्त का यह अवचेतन सम्भाग अहम् की पकड़ से परे है, अतः अवचेतन को अहम् के द्वारा न तो जाना जा सकता है और न इसको चाहा जा सकता है। अहम् (Ego) के द्वारा चित्त का केवल ऊपरी हिस्सा चेतन सम्भाग ही उजागर तथा नियन्त्रित है, किन्तु चित्त को गहनतम धरातल में स्थित बहुतांश अवचेतन सम्भाग अहम् की दृष्टि से परे एक अनजाना, अज्ञेय एवं अंधकारपूर्ण वह प्रदेश है, जिसका कोई अता पता लगाना अहम् की क्षमता से परे है तथा उससे अनियंत्रित है। यूंग ने चेतन सम्भाग का चार दिशाओं को चार प्रमुख क्रियाओं (Main functions) के अन्तर्गत विभाजित किया है। चेतन सम्भाग का उत्तरी क्षेत्र चिन्तन (Thinking) है तो उसका दक्षिणी क्षेत्र भावना (Feeling) है। इसी तरह चेतन का पूर्वीय क्षेत्र संवेदन (Sensation) है तथा इसके पश्चिमी क्षेत्र को अंतः प्रज्ञा (Intuition) माना गया है। यूंग की मान्यता है कि व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार कोई भी दो या तीन क्रियाओं के उपयोग से ही अपना जीवन यापन का योग्य निर्वाह कर पाता है। अतः मानवीय व्यक्तित्व का विकास उपरोक्त चतुर्दशीय क्रियाओं की योग्य समझ में ही है।

इस भूखण्ड का जो बहुतांश सम्भाग पानी में डूबा हुआ है वह चित्त का अवचेतन स्तरीय सम्भाग है। यूंग ने इस वृहदाकार अवचेतन सम्भाग को पुनः दो

हिस्सों में बांटा है. इसके ऊपरी सतह भाग को "व्यक्तिगत अवचेतन" (Personal unconscious) कहा गया है जिसमें उक्त व्यक्ति के भूतकालीन अनुभव का विस्मृत संग्रह दवा पड़ा रहता है तथा इस व्यक्तिगत अवचेतन से भी गहन एवं निचली स्तर को यूंग ने "सामूहिक अवचेतन" (Collective unconscious) खण्ड का होना कहा है जिससे व्यक्ति के भूतपूर्व पुरखाओं, प्रजातियों एवं आदिमकालीन मानव जीवन के अनुभवों का अव्यक्त बीज रूप से संग्रह किया जाना कहा गया है। यूंग की मान्यतानुसार समय और परिस्थितियों की मांग के अनुसार चेतन एवं अवचेतन का अन्तर्वस्तु का प्रवाह स्वतः आगे-पीछे निरन्तर बना रहता है अर्थात् चेतन सम्भाग यदाकदा अवचेतन में विलय अथवा दफनाया जाता है अथवा चेतन की मांग पर अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु को चेतन सम्भाग पर स्वतः उभार होता है और इस प्रकार स्वतः चेतन एवं अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की अदला-बदली होती रहती है जिससे मानवीय व्यक्तित्व का सहज विकास होना पाया जाता है। यूंग की अवधारणा के अनुसार सामूहिक अवचेतन के मूलाधार में आद्य रूप "आर्कीटाइप" की स्थिति है जो प्रायः प्रतीक के रूप में पायी जाती है जिसको 'स्व' अथवा (Self) कहा गया है। जो प्रायः प्रतीक के रूप में सामूहिक अवचेतन के गहनतम स्तर पर अथवा उसके मूलाधार पर सृष्टि रचना के काल से आज तक विद्यमान होना माना गया है। सम्पूर्ण अवचेतन सम्भाग मानवीय अहम् (Egoi) की पकड़ एवं नियंत्रण से परे है—अतः इस अवचेतन सम्भाग की अन्तर्वस्तु की जानकारी अहम् द्वारा नहीं की जा सकती, और अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु मानवीय इच्छा और कल्पना से सर्वथा परे अज्ञान एवं अनजानी है और इस अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु को मानवीय स्वेच्छा से चेतन स्तर पर नहीं लाया जा सकता। यूंग की मान्यतानुसार अवचेतन ही चेतन का उद्‌गम स्थल तथा प्रभावी क्षेत्र है और मानव जीवन का निर्माण एव विकास अवचेतन के इस प्रभाव से ही होना माना गया है। अवचेतन स्तरीय सम्भाग का प्रत्यक्ष अनुभव किया जाना प्रायः असंभव है और मानव अवचेतन की इस अन्तर्वस्तु का केवल आभास ही कर पाता है जो कि स्वतः उभर कर चेतन स्तर पर फैल चुकी है। अतः मानवीय अनुभव की दृष्टि से अवचेतन स्तरीय सम्भाग लगभग अनजाना, अंधकार पूर्ण और अज्ञेय माना गया है। जहां पर आदिमकालीन मानवीय समाज के अव्यक्त अनुभव बीज तथा प्रतीक के रूप में सनातनकाल से आज तक संगृहीत माने गये हैं जिनका यदाकदा स्वतः विस्फोट अथवा सहज प्रादुर्भाव विशेष स्थितियों में यकायक चेतन स्तर पर हो जाना पाया जाता है जिसकी सम्यक् जानकारी एवं यथार्थ पहिचान से व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। इसी को भारतीय चिन्तन में स्व-साक्षात्कार अथवा आत्म साक्षात्कार कहा गया है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने "शब्द साहचर्य" (Word Association Tests) के प्रयोग से यह जानकारी प्राप्त की कि कुछ विशेष परिस्थितियों में किसी घटित

घटना के परिणामस्वरूप चित्तीय ऊर्जा के सहज प्रवाह में यदाकदा अवरोध हो जाना पाया जाता है, जिसको मनोग्रन्थि अथवा भावग्रन्थि (Complex) कहा जाता है। इस अवरोधक भाव ग्रन्थि से व्यक्ति का सहज विकास क्रम प्रायः गड़बड़ा जाता है और व्यक्ति प्रायः रोगग्रस्त हो जाता है, जिसकी परिणति उसकी विक्षिप्तता में देखी जा सकती है। अतः यूंग ने रोगी की भावग्रन्थि को ठीक समझने तथा रोगी की तत्कालीन समस्याओं का योग्य समाधान खोजे जाने का आग्रह किया है ताकि मनोग्रन्थ्य ग्रस्त रोगी अपनी गलत फहमियों को समझते हुये अपना उपचार कर सके तथा वह एक सामान्य व्यक्ति की तरह स्वतः अपने व्यक्तित्व से सहज विकास के पथ पर आगे बढ़ सके।

भावग्रन्थि के भी दो प्रकार माने गये हैं—

प्रथम चित्तवृत्तीय जन्य (Dispositional) तथा द्वितीय पर्यावरणजन्य (Environment)। इस मनोग्रन्थि के समाधान के लिये व्यक्ति को अपनी वृत्ति अथवा पर्यावरण योग्य सोच समझकर उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन कराया जाना अपेक्षित माना गया है। भावग्रन्थि की स्थिति प्रायः अवचेतन स्तर पर मानी गई है जिनको चेतन स्तरीय उभार के बाद ही इनसे छुटकारा पाया जा सकता है। प्रायः भाव ग्रन्थियों की स्थिति व्यक्तिगत अवचेतन खण्ड में पायी जाती है, जिनको प्रयत्न करके चेतन स्तर पर लाकर उनसे छुटकारा पाने का रास्ता निकाला जा सकता है किन्तु यदि भाव-ग्रन्थियों की मौजूदगी सामूहिक अवचेतन के गहनतम तल तक पहुंच चुकी है तो उनका योग्य समाधान कराया जाना कठिन एवं असंभव हो जायेगा। क्योंकि व्यक्ति अवचेतन का अन्तर्वस्तु तो विशेष परिस्थितियों में (स्वप्न आदि के माध्यम से) चेतन स्तर पर उभर कर उसके विश्लेषण द्वारा उसको ठीक से समझा जा सकता है किन्तु सामूहिक अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु तो सिवाय व्यक्तिगत के सम्पूर्ण विकास अर्थात् स्व-साक्षात्कार की सर्वोच्च भूमिका तक पहुंचे बिना इनसे छुटकारा पाना अथवा इसका योग्य समाधान ढूंढ़ा जाना प्रायः असंभव हो जाता है। यूंग ने व्यक्तिगत अवचेतन तथा सामूहिक अवचेतन के बीच के भेद को समझाने तथा इसको सुस्पष्ट करने का भी प्रयत्न किया है। यूंग की धारणा के अनुसार सहज वृत्तियों के आवेग तथा शैशवकालीन अनुभवों की विस्मृत स्मृतियों का संग्रह जो व्यक्तिगत अवचेतन की सामग्री है जिनका यदाकदा चेतन स्तर पर विस्फोट अथवा उभराव भी सहज रूप में हो जाना पाया जाता है किन्तु वंशानुगत (Inheritance) तथा प्रजातिगत (Racial) विस्मृत अनुभवों का संग्रह जब सामूहिक अवचेतन में पहुंच जाता है तब इनका प्रायः प्रतीकों के रूप में रूपान्तरण (Transformation) हो जाता है जिनका परिष्कार या समाधान किया जाना सामान्य मानवीय क्षमता से परे हो जाता है तथा जिनको पहिचान केवल प्रजातिगत (Racial) विशेषता के रूप में परिलक्षित की जाती है। यूंग ने सामूहिक

अवचेतन स्तरीय मानवीय अनुभव के इन ठप्पों (Impression) को संस्कार कहा है। अतः केवल व्यक्ति ही नहीं अपितु विशेष प्रजाति (Race) भी अवचेतन स्तरीय इन संस्कारों से सतत प्रभावित होती पायी जाती है। भारतीय चिन्तन के अनुसार ये संस्कार ही मानव द्वारा प्राप्त वह आदिम-कालीन सांस्कृति की धरोहर है जिसके द्वारा सम्पूर्ण मानवीय व्यक्तित्व सदियों से आज तक मुख्य रूप से प्रभावित होता हुआ पाया गया है। भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत उपरोक्त अवचेतन स्तरीय संस्कार ही मानव के पुनर्जन्म के प्रमाण माने गये हैं। सामूहिक अवचेतन के गहनतम धरातल पर पाये जाने वाले इन संस्कारों की मौजूदगी के परिणाम से ही मृतात्मा का नये शरीर में पुनर्जन्म होना भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत बतलाया गया है। संस्कारों की मौजूदगी के फलस्वरूप ही मानव धर्म-अधर्म का भेद समझ पाता है तथा पुराने संस्कारों की मदद से ही मानव द्वारा कुछ नया सोचने, कुछ नये कार्यक्रमों का निर्धारण किये जाने के लिये सक्षम संभव माना गया है। इसी प्रसंग के अन्त में जाकर यूंग ने यह प्रतिपादित किया है कि संस्कारों की शक्ति के आधार पर ही मानव अपना-पराया, मेरा-तेरा, शाश्वत तथा क्षणिक आदि सभी भेदों को योग्य प्रकार से समझने के बाद ही अपनी मौलिक इकाई की अनुभूति कर पाता है। यूंग ने संस्कारों एवं प्रतीकों के विस्तृत विवेचन से यह प्रमाणित किया है कि भिन्न-भिन्न जातियों के संस्कारों एवं प्रतीकों के रूप में आश्चर्यजनक सादृश्यता, एकरूपता एवं समानता पायी जाती है जो यह सिद्ध करता है कि सम्पूर्ण मानव समूहों के मूल में एक अदृश्य अलौकिक इकाई है। अतः सभी मानवीय प्रकृति (Human nature) अथवा मानवीय सहज वृत्तियों में अद्भुत सादृश्यता एवं एकरूपता (Uniformity) दृष्टिगोचर की जाती हैं।

यूंग ने अवचेतन की महत्वपूर्ण भूमिका का विवेचन करते हुए व्यक्ति द्वारा समाज के साथ समायोजन की दृष्टि से चेतन स्तर पर मुखौटे (Persons) का ओढ़ा जाना तथा इसकी क्षतिपूर्ति के बीच तालमेल बिठाये जाने के उद्देश्य से व्यक्तिगत अवचेतन स्तर पर प्रतिक्रिया रूप से उसकी छाया (Shadow) का स्वतः निर्मित होना तथा व्यक्ति के चेतन एवं व्यक्तिगत अवचेतन के बीच एक पुरुष के अवचेतन में लिये एक नारी मूर्ति (एनीमा) तथा एक महिला के अवचेतन में लिये पुरुष रूप "एनीमस" की झांकी की बनावट होना पाया गया है, तथा व्यक्तिगत अवचेतन एवं सामूहिक अवचेतन के बीच गहनतम स्तर पर "आद्य मातृ शक्ति" एवं सनातन ज्ञान पुरुष की स्थिति की अवधारणा तथा सामूहिक अवचेतन के मूलाधार में स्थित प्रतीक के रूप में मूल पुरुष (आर्कीटाइप) की मौजूदगी की अवधारणा माना जाना विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की विशिष्ट विशेषता की मौलिक अभिव्यक्ति है जिनको गहराई से समझते हुए तथा इनकी योग्य प्रकार से समझ से ही व्यक्ति अपने वैयक्तिक जीवन को समग्रतापूर्ण एवं पूर्ण विकास के ध्येय बिन्दु तक पहुंचा सकता है। इस दृष्टि से यूंग ने "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" के अन्तर्गत मानव को अपने व्यक्तित्व को पूर्ण

विकास करते हुए व्यक्ति एवं समष्टि के साथ अन्तोगत्वा एकाकार हो जाने की संभावना में अपनी गहरी आस्था या विश्वास प्रगट किया गया है।

सामूहिक अवचेतन की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करते हुए यूंग ने यह परिकल्पना की है कि सामूहिक अवचेतन के प्रतिष्ठान अथवा मूल आद्य रूप (आर्कीटाइप) की जो स्थिति है उसे "देवत्व" या "आत्म तत्व" माना जा सकता है। यूंग ने इसको स्व (Self) की संज्ञा से सम्बोधित किया है जिसकी हां एकमात्र सर्वोच्च सत्ता या स्थिति मानी गई है अर्थात् सभी मानव समूहों के मूल (basis) में एक "स्व" (Self) अर्थात् आत्मा की स्थिति है जो यद्यपि ऊपरी तौर से प्रतीत होती है फिर भी मूलतः यह आधारभूत एक मात्र इकाई है, "स्व" (Self) आत्मा देवत्व, या परमतत्व परमेश्वर आदि किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है और यह एकत्व अथवा आत्म तत्व ही अंतिम एवं एक मात्र सच्चाई, अथवा परम सत्ता एवं सत्य है, जिसे भारतीय वेदान्त की शब्दावली में "ब्रह्म" तथा भक्ति परम्परा में इस परम तत्व को (परमात्मा) या "ईश्वर', "विभु", "विष्णु", "श्री राम", "श्री कृष्ण" अथवा "श्री शिव" के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार सामंञ्जस एवं उदार दृष्टिकोण के धनी यूंग ने मनोविज्ञान के मर्यादित क्षेत्र को दर्शन और धर्म के विराट् क्षेत्रों के साथ एकरूप समरस तथा संयुक्त कर दिया है। अतः चिकित्सक और मनोविज्ञान वेत्ता श्री कार्ल गुस्ताव यूंग को उनके अनुसंधान कार्यों को समष्टिगत स्वरूप एवं विस्तार दिये जाने के फलस्वरूप दर्शन एवं धर्म को मनोविज्ञान के साथ संयुक्त करने वाले एक उदार चिंतक की तरह याद किया जायेगा। अतः निःसंदेह कार्ल गुस्ताव यूंग भारतीय ऋषितुल्य माने जाने योग्य है क्योंकि भारतीय ऋषि ने धर्म, दर्शन और मनोविज्ञान को आत्मज्ञान का ही अंग या विषय माना है।

निःसंदेह आध्यरूप (आर्कीटाइप) अवचेतन स्तरीय है अतः इसको अनजाना, अज्ञेय कहा जाना योग्य है किन्तु यदाकदा इसकी स्थिति का आभास चित्त के चेतन द्वारा स्वतः हो जाता है। यूंग ने शाश्वतकालीन प्रतिभा (Primordial Image) भी कहा है। यह आध्य रूप (आर्कीटाइप) ही आगे जाकर चेतन तथा अवचेतन में रूपान्तरित हो जाता है। इस आध्य रूप या मूल प्ररूप का निर्माण लाखों करोड़ों वर्षों से होना कल्पित किया गया है। इससे ही कालान्तर में जाकर मानव मस्तिष्क तथा मानवीय चेतना की रचना होने का संकेत यूंग ने दिया है। मूल प्ररूप (आर्कीटाइप) को मानव रूप में विकसित होना प्रागैतिहासिक जलचर, स्थलचर के विभिन्न रूपों से होने की कल्पना भी भारतीय चिन्तन में की गई है। भारतीय चिन्तन में मत्स्य, कच्छप, वराह, वामन, नृसिंह आदि अवतारों के क्रम में भी कृष्णावतार एवं काल्कि अवतार के रूप में व्यक्तित्व विकास की कल्पना की गई है। प्रत्येक बाद का अवतार अपने पूर्वकालीन अवतार को अनुभवों की दृष्टि से अधिक समृद्ध होकर अधिक विकसित होना माना गया है, अतः मानव रूप अपने पूर्वकालीन

प्ररूपों के अनुभव संस्कारों से युक्त माना गया है। आज के मानव के पास भी उसके पूर्व पुरातन एवं पुरखों के अनुभवों, संस्कारों की अक्षय सम्पदा या धरोहर मौजूद है। आज का मानव उसके पुरखों द्वारा असंख्य बार देखे गये सूर्योदय एवं सूर्यास्त के अनुभव-संस्कारों से इनकी योग्य समझ प्राप्त कर सका है, तथा इस तरह मानव सदियों से मानव जन्म एव मानव मृत्यु के संस्कारों की धरोहर को यथावद् स्वीकार करते हुए जन्मता है—मरता है अथवा नाना प्रकार के जीवन के अनुभवों के संग्रह से अपने व्यक्तित्व को समृद्ध एवं विकसित करता रहा है। अत: बार-बार घटित अनुभवों की सतत पुनरावृत्तियों से मानव चित्त का प्रभावित होना सहज एवं स्वाभाविक है। प्राचीन काल से भाषा, वाणी और लिपि के अविष्कारों के पूर्व भी मानव अपने विचारों एवं भावनाओं का अपने साथियों के साथ आदान-प्रदान करता रहा है और मानवीय सफलता-विफलता, आशा-आशंका, सुख-दु:ख आदि के अनुभवों की स्वत: सतत् पुनरावृत्तियां करता रहा है, जिनका आभास आज भी संस्कारों के रूप में मानव चित्त में निरन्तर पाया जाता है। जिसकी यदाकदा अभिव्यक्ति मूल प्ररूप अर्थात् आर्कीटाइप के रूप में स्वत: हो जाती है। यूंग की मान्यता है कि हजारों वर्ष पूर्व निर्मित इन मूल प्ररूपों (Archetype) का अनुभव भावना मंडित इन प्रतिभाओं एवं प्रतीकों के रूप में आज भी मानवीय चित्त में मौजूद है जिनकी अभिव्यक्ति यदाकदा सपनों (Dreams) के माध्यम से की जाती है। जिनकी योग्य व्याख्या किये जाने पर मूल प्ररूप (Archetypes) की स्थिति का परिचय प्राप्त हो सकता है। यूंग की यह भी मान्यता है कि स्वप्नदर्शन चित्त की सहज एवं स्वत: उपज है जिसका व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव रहता है चाहे वह इन स्वप्नों का अर्थ समझे अथवा नहीं भी समझ सके। स्वप्नों का अर्थ समझने में प्राय: व्यक्ति को कठिनाई का अनुभव होता है क्योंकि स्वप्नों की भाषा प्राय: बड़ी दुरूह अटपटी तथा प्रतीकात्मक (Symbolic) पायी जाती है।

व्यक्ति द्वारा स्वप्न में पुराण-दंतकथाओं में वर्णित दृश्यावलियों को देखे जाने का अर्थ सामूहिक अवचेतन की स्थिति का परिणाम है। व्यक्ति विशेष को यदि इस प्रकार के दृश्यों को देखने का कोई अनुभव ही नहीं है तो निश्चयपूर्वक इन दृश्यों के दर्शन का कारण सामूहिक अवचेतन में ही ढूंढा जाना योग्य है। इस प्रसंग में यह भी तर्क उठाया जा सकता है कि व्यक्ति द्वारा पौराणिक दृश्यावली का दर्शन किया जाना उक्त व्यक्ति के मस्तिष्क की विकृति भी हो सकती है। यूंग ने सन् 1906 में मानसिक चिकित्सालय के एक रोगी के द्वारा स्वप्न में पुराण वर्णित दृश्यावली को देखे जाने वाले एक उदाहरण को प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया है कि यह मनोविक्षिप्त रोगी जो सामान्यतया शान्त व्यवहार करता था किन्तु जब उसने स्वप्न में एक पौराणिक दृश्यावली का अवलोकन किया तो वह बड़ी बेचैनी एवं उत्तेजना का अनुभव करने लगा। इस पर कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपने पुराण विज्ञान (Mythology) के अध्ययन के आधार पर इन रोगों के द्वारा

देखे जाने वाले प्रतीकों का अर्थ उसको समझाया तो वह रोगी पागलपन से एकदम मुक्त होकर सामान्य जीवन व्यतीत करने लग गया।

यूंग ने अपने अनुसंधान कार्य के दौरान पुराण विद्या, दंतकथाओं एवं मिथकों (Myths) के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया है क्योंकि यूंग की यह मान्यता है कि इन दंतकथाओं एवं मिथकों के माध्यम से ही मानवीय प्रकृति एवं स्वभाव (Human Nature) की योग्य जानकारी उपलब्ध हो सकती है क्योंकि यह पुराण संगत दृश्यावली का देखा जाना भी सामूहिक अवचेतन की अभिव्यक्ति है। जब व्यक्ति स्वप्न में दर्शित दृश्यावली का वर्णन अपने किसी मनोविश्लेषक के सम्मुख प्रस्तुत करता है तब उक्त अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का उभार उसके चेतन स्तर पर अपने आप स्वत: हो जाता है और यदि इसका युक्तिसंगत स्पष्टीकरण किया जाय तो वह उसके अवचेतन स्तरीय स्थिति रोग से निश्चयपूर्वक छुटकारा पा सकता है। अत: यूंगीय मनोचिकित्सा के अन्तर्गत विश्लेषक को व्यक्ति द्वारा देखे गये दृश्यों का अर्थ स्वयं रोगी द्वारा निकाले जाने के लिये प्रोत्साहन दिया जाता है ताकि व्यक्ति अपने अवचेतन स्तरीय रोग को अपनी ही चेतन स्तरीय समझ से खुलासा कर उसे समझने तथा इसका हल निकालने में सफल हो सके।

अतः यूंगीय मनोचिकित्सा के अन्तर्गत विश्लेषक को रोगी द्वारा देखे गये सामान्य स्वप्न दृश्यों का अर्थ उसके ही द्वारा निकाले जाने का प्रोत्साहन दिया जाता है ताकि रोगी अपने ही अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का खुलासा अपने ही चेतन स्तरीय समझ के आधार पर प्रस्तुत किये जाने का प्रयत्न कर सके। और रोगी द्वारा ही उसे अपने अन्तर को टटोलने तथा उसके कारण को स्वयं के चेतन स्तर पर ढूंढे जाने तथा इसकी समझ से इसका हल निकालने में सफलता प्राप्त हो सके। रोगी द्वारा आत्म निरीक्षण कराये जाने के दौरान यूंगीय चिकित्सक को यथा आवश्यकतानुसार रोगी का निस्सन्देह मार्गदर्शन करना चाहिये। किन्तु स्वयं चिकित्सक द्वारा रोगी के स्वप्न का खुलासा उस पर थोपे जाने के बजाय स्वयं रोगी से ही उसका खुलासा निकाले जाने में मदद करना चाहिये।

किन्तु किसी रोगी द्वारा पुराण संगत दृश्यावली के स्वप्न का अर्थ समझना अत्यन्त कठिन है क्योंकि ऐसी दृश्यावलियों से सामूहिक अवचेतन की अभिव्यक्ति होती है। व्यक्ति अपने वैयक्तिक जीवन सम्बन्धी स्वप्न के दृश्य का तो स्वत: खुलासा चिकित्सक के मार्गदर्शन से प्रस्तुत कर सकता है। किन्तु सामूहिक अवचेतन से अद्भुत दृश्यावली का खुलासा उसके द्वारा प्रस्तुत किया जाना असंभव सा है, क्योंकि सामूहिक अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की अभिव्यक्ति प्राय: प्रतीकों के रूप में ही पायी जाती है और प्रतीकों की व्याख्या किसी सामान्य व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किया जाना अत्यन्त कठिन है, अत: पुराण एवं मिथकों की दृश्यावली का खुलासा पेश किये जाने

के लिये मनोविश्लेषक के लिये उस प्रजाति के मिथकों के अध्ययन किया जाना भी जरूरी माना गया है।

यूंग की यह मान्यता है कि आदिम मानव द्वारा प्राकृतिक घटनाओं (Natural events) बावत स्वप्न दृश्यावलियां (जैसे सूर्योदय, सूर्यास्त, वसंत आगमन आदि) का खुलासा (Explanation) प्रस्तुत करने का प्रयत्न जो पुराणों एवं मिथकों में पाया जाता है, जिसका संबंध उक्त प्रजाति (race) के तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं से सदैव पाया जाता रहा है। जैसे सूर्योदय की दृश्यावली का मिथकों में यह वर्णन है कि भगवान सूर्य का प्रति प्रातःकाल समुद्र से जन्म होता है तथा जो रथारूढ होकर पूर्व से पश्चिम की ओर दोपहर तक बढते हैं तथा मध्यान्ह में सूर्य ऊंचे आकाश से पश्चिम के समुद्र में डूबते हैं और संध्या की महान् दैत्या (Mother dragon) के मुंह में निगाले जाते हैं तथा रात्रि के दौरान में भगवान सूर्य का दैत्या के मुँह में रात्रि सर्प (The serpent of the night) के साथ घनघोर युद्ध होता है तथा भगवान सूर्य रात्रि सर्प का संहार करते हुये दूसरे दिन प्रातःकाल महान दैत्या के मुंह से बाहर निकल कर दूसरे दिन पुनः जन्म लेते हैं। इस प्रकार मिथकों में भगवान सूर्य का प्रतिदिन पुनः जन्म लिये जाने का विशद वर्णन उक्त प्रजाति की धार्मिक मान्यताओं के रंग में प्रस्तुत किया गया है। यूंग की मान्यता है कि उपरोक्त प्रकार से पुराण एवं मिथकों में वर्णित विषय-वस्तु वस्तुतः अवचेतन स्तरीय अन्स्तर्वस्तु का पुनः चेतन स्तर पर उभराव होने की अभिव्यक्ति है, जिसका मिथकों में तत्कालीन प्रजाति की धर्म सम्बन्धी मान्यताओं के रंग में उनकी अभिव्यक्ति किया जाना पाया जाता है। अतः इस प्रकार की असामान्य स्वप्न दृश्यावलियों का अर्थ अथवा खुलासा केवल पुराण विद्या विशारद एवं निष्णात चिकित्सक के द्वारा ही प्रस्तुत किया जाना संभव है। इस प्रकार के विरले एवं असामान्य स्वप्न दृष्टावली का खुलासा यदि चिकित्सक द्वारा रोगी को सुस्पष्टतया समझाया जायेगा, तो निःसन्देह रोगी के तनावों में कमी हो सकेगी, ऐसी यूंग की धारणा है।

यूंग की यह भी मान्यता है कि आदिम मानव समूह (Primitive population) के लिये उनके निजी जीवन एवं उनके पर्यावरणीय जीवन (Personal & Envilronmental) के बीच अन्तर को समझ पाना भी कठिन है, क्योंकि आदिम मानव के व्यक्तिगत जीवन तथा पर्यावरण जनित जीवन में कोई उल्लेखनीय अन्तर ही नहीं है क्योंकि आदिम मानव जाति का संपूर्ण जीवन पर्यावरण क्रम पर ही आश्रित है। अतः आदिमकालीन मानव समूह में व्याप्त मिथकों की व्याख्या विवेचन से सामूहिक अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का अर्थ जब स्वप्नकर्ता व्यक्ति को समझाया जायेगा, तो इस अर्थबोध से उसके मानसिक तनावों में निश्चयपूर्वक राहत मिल सकेगी। क्योंकि अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का नासमझी एवं गलत समझ से ही चित्त के चेतन एवं अवचेतन के बीच संघर्ष एवं तनाव की सृष्टि होना देखा गया है। अतः

जब अवचेतन चेतन स्तर पर उजागर और विवेचित किया जाता है तो निःसंदेह चेतन तथा अवचेतन की खींचातानी तथा तनाव से रोगी को राहत एवं मुक्ति मिलने की निश्चित संभावना हो जाती है।

यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि मिथक एवं दंतकथाओं (Myths) सामूहिक अवचेतन (Collective unconscious) की सीधी अभिव्यक्तियाँ (Direct expressions) मात्र है इसलिये सभी कालों एवं सभी देश की मिथकों एवं दन्तकथाओं में प्राय: समानता पायी जाती है। जब कभी मानव मिथक एवं दन्तकथाओं की रचना की क्षमता खो देता है तब उसका धर्म, काव्य, लोक-कथा (Folk lori) तथा परिकथाओं की सृजन शक्ति से वह प्राय: असमर्थ हो जाता है। क्योंकि मिथक कथा अवचेतन स्तरीय सृजनात्मक अन्तर्वस्तु ही धर्म, साहित्य, कला, काव्य आदि की प्रेरक स्थली है। मानवीय चेतन केवल मात्र स्पष्टीकरण तथा खुलासे की सामग्री तो जुटा सकता है किन्तु सर्जनात्मक सृजन शक्ति केवल मात्र अवचेतन का ही गुण धर्म है अर्थात् अवचेतन में ही सृजन क्षमता है। इसलिये धर्म, काव्य, कला, एवं लोक संस्कृति का उद्भव चेतन स्तरीय न होकर केवल मात्र अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का ही प्रतिफल है। इस दृष्टि से यूंग की मान्यता है कि अवचेतन ही चेतन का आधार अथवा सृजनात्मक मातृ शक्ति है, इसलिये यूंग ने चेतन की अपेक्षा अवचेतन को ही अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावकारी माना है।

यूंग ने बड़ी दृढ़तापूर्वक प्रतिपादित किया है कि सभी धर्मों की केन्द्रीय आकृति (Central figure) स्वभावत: आर्कीटाइपल पायी जाती है। जिस प्रकार दंतकथाओं का सृजन अवचेतन द्वारा होता है तथा इसके बाद इनकी व्याख्या या श्रृंगार चेतन स्तर होता है, उसी प्रकार सभी धर्मों की मूल विषयवस्तु का सृजन अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु से होता है और चेतन द्वारा केवल इसका योग्य संस्कार संशोधन मात्र होता है। क्योंकि अवचेतन (मातृ चेतन) ही सृजन शक्ति है और चेतन (पितृ चेतन) केवल मात्र मूल सृजन बीजों की साज संवार मात्र है। अत: पुराण और दंतकथाओं को 'कपोल कल्पना" कर इनकी उपेक्षा किया जाना अथवा मजाक उड़ाया जाना उचित नहीं है। आदिम जातियों में व्याप्त दंतकथाओं का तो और भी विशेष महत्व है क्योंकि इनमें मूल प्रारूप (आर्कीटाइपल) स्वरूप अधिक सुस्पष्ट और निखालिस रूप से पाया जाता है जिसकी आंशिक अनुभूति केवल स्वप्नों के माध्यम से ही हो पाती है। इन स्वप्नों की असीम शक्ति और दूरगामी प्रभावों का योग्य मूल्यांकन किया जाना निःसंदेह बड़ा कठिन कार्य है क्योंकि मर्यादित चेतन के द्वारा असीम अवचेतन की क्षमता का सही मूल्यांकन अथवा विवेचन प्रस्तुत किया जाना निःसंदेह कठिन कार्य है। अवचेतन स्तरीय इस महान् शक्ति की अभिव्यक्ति सृजनात्मक एवं विध्वंसात्मक दोनों प्रकार से पायी जा सकती है। अत: अवचेतन के द्वारा सृजनात्मक कला के उच्च शिखरों पर देवताओं तथा सामूहिक विनाश के ध्वंस खण्डहरों पर दैत्यों की धारणायें स्थापित की गई हैं। यूंग ने बड़ी दृढ़ता से घोषणा की है कि अवचेतन

को केवल मानवीय कूड़े कचरे का ढेर कहा जाना एकदम वाहियात एवं गलत बात है क्योंकि अवचेतन ही मानव जाति के लिये सृजनात्मक सृष्टि एवं विध्वंसात्मक संहार की आधारभूत प्रतिष्ठान या जनक है। इस प्रकार कार्ल गुस्ताव यूंग ने फ्रायड की पूर्व स्थापित मान्यता का दृढतापूर्वक खण्डन किया है क्योंकि फ्रायड ने अवचेतन संभाग की समाज द्वारा तिरस्कृत भावनाओं एवं प्रवृत्तियों दफनायें जाने एक अशिव मुर्दाघर अथवा अवांछनीय विचारों, भावनाओं एवं वृत्तियों के अनुपयोगी कूड़ा कर्कट का गोदाम मान लिया था। फ्रायड की उपरोक्त धारणा के विपरीत यूंग ने सामूहिक अवचेतन को मानव जीवन के लिये उपयोगी सृजनात्मक रत्नों का भंडार माना है।

सामूहिक अवचेतन की परिभाषा किया जाना असंभव है क्योंकि हमें उसकी सीमाओं एवं उसके सही स्वरूप (True nature) की कोई जानकारी ही नहीं है। हम केवल सामूहिक अवचेतन की अभिव्यक्तियों का आभास अथवा अवलाकन (Observation) कर सकते हैं तथा इनकी विवेचना कर सकते हैं और इसको समझने की कोशिश कर सकते हैं। यूंग के कार्यो के अधिकांश भाग अवचेतन सम्बन्धी खोज है। आर्कीटाइप के संबंध में यूंग ने कहा है कि हमारे विचार आर्कीटाइप को पकड़ ही नहीं सकते क्योंकि आर्कीटाइप की उपज हमारे विचारों से नहीं हुई है, फिर भी आर्कीटाइप को हम अन्य भिन्न-भिन्न आकृतियों (figures) से जुदा कर सकते हैं। आर्कीटाइप की अभिव्यक्ति स्वप्नों एवं फन्तासी (Fantasies) के माध्यम से घटित होती है, जिनका मनुष्य जीवन पर गहरा एवं महत्वपूर्ण प्रभाव होना पाया जाता है एवं जिनका संबंध विश्व भर में पायी जाने वाली सभी मिथकों एवं दंतकथाओं में समान पाया जाता है। कार्ल गुस्ताव यूंग ने पूरी सावधानी के साथ अनुसंधान करते हुए कतिपय मुख्य आर्कीटाइप की व्याख्यायें प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है कि जिनका मानवीय चिंतन और व्यवहारों पर गहरा असर पड़ा है, तथा जिनको यूंग ने मुखौटा (Persona), छाया (Shadow), नारीमूर्ति (Anima), पुरुष मूर्ति (Animus), सनातान ज्ञान पुरुष (The old wise man) आद्य भूमि माता (The Great mother) तथा स्व (The self) इत्यादि संज्ञाओं से व्याख्याचित किये जाने का प्रयत्न किया है।

इसी प्रसंग में यूंग ने यह भी स्मरण कराया है कि जब हम सामूहिक अवचेतन के आर्कीटाइप की चर्चा करते हैं तो हमारे मन अथवा चित्त के भिन्न-भिन्न संभागों के बीच किसी अटूट दीवार द्वारा विभाजित माना जाना योग्य नहीं है। क्योंकि सामूहिक अवचेतन का व्यक्तिगत पहलू भी हो सकता है। इसी तरह नारीमूर्ति प्रतिमा (anima image) सनातन-कालीन पुरुष द्वारा नारी का अनुभव भी हो सकता है अथवा यह अनुभव एक विशेष व्यक्ति द्वारा इस जीवन में घटित एक विशिष्ट नारी अथवा कुछ विशेष महिलाओं के बीच घटित हो सकता है। यद्यपि आर्कीटाइपों का संबध व्यक्तिगत की अपेक्षा सामूहिकता से अधिक पाया जा सकता है। किन्तु परसोना एवं शैडो का व्यक्तिगत संबंध अवचेतन से ही मुख्यतः पाया जाता है।

द्वितीय खण्ड

अध्याय **4**

सैद्धान्तिक विवेचन चित्त और उसकी प्रकृति

(The Psyche and its Nature)

कार्ल गुस्ताव यूंग में विश्लेषणात्मक मनोवैज्ञानिक (Analy tical Psychology) के अन्तर्गत सभी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियायें (All psychological processes) की व्याख्या प्रस्तुत करने की दृष्टि से पूर्व प्रचलित शब्द मन (Mind) तथा आत्मा (Soul) के वजाय नई संज्ञा (Psyche) चित्त का उपयोग किया है। चित्त (Psyche) को चेतन (Conscious) तथा अचेतन (Unconscious) इन दोनों संभागों को इकाई (Unit) की तरह स्वीकार किया गया है, जो पूर्व प्रचलित शब्द मन और आत्मा की अपेक्षा अधिक उपयुक्त है। क्योंकि शब्द मन (Mind) तथा चेतना (Conscious) समान अर्थी शब्द है, अतः शब्द के मन के अन्तर्गत अवचेतन को व्याखित किया जाना प्रायः विरोधाभास प्रतीत होता है, इस प्रकार शब्द चित्त जिसके अन्तर्गत चेतन तथा अवचेतन इन दोनों तम्भागों को एकीकृत किया है, पूर्व प्रचलित शब्द मन (Mind) की अपेक्षा अधिक व्यापक है। इसी तरह शब्द आत्मा (Soul) एक दार्शनिक शब्द है, जो प्रायः मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का व्याख्या की दृष्टि से दुरुह एवं अस्पष्ट है, तथा शब्द आत्मा (Soul) का अर्थ कतिपय मर्यादित संश्लिष्ट क्रियाओं (Limited complex of functions) तक सीमित है–इसलिये इसका उपयोग सभी चेतन तथा अवचेतन स्तरीय प्रक्रियाओं के लिए किया जाना यूंग ने अनुपयुक्त माना है। इसके अलावा यूंग ने शब्द आत्मा (Soul) का प्रयोग आन्तरिक व्यक्तित्व (Inner personality) के अर्थ में किया है, तथा शब्द आत्मा (Soul) को आत्मपरक दृष्टा अर्थात् विषयी (Subject) के रूप में माना गया है जो चिकित्सा मनोविज्ञानी यूंग द्वारा वस्तुपरक (Objective) अनुसंधान की दृष्टि से अनुपयुक्त है। यूंग द्वारा प्रयुक्त आत्मा का अर्थ आन्तरिक व्यक्तित्व (Inner personality) वह अवचेतन स्तरीय स्थिति है, जिसको वस्तुपरक (Objective) वस्तु की तरह परीक्षण किया जाना कठिन है, अतः यूंग द्वारा सभी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की व्याख्या हेतु पूर्व प्रचलित शब्द मन (Mind) अथवा

आत्मा (Soul) की अपेक्षा चित को अधिक व्यापक, सुस्पष्ट तथा वस्तुपरक (Objective) स्वीकार किया जाना निःसन्देह उपयुक्त है।

यूंग ने चित (Psyche) की सचाई (Reality) को किसी भी भौतिक वस्तु (Physical thing) की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण एवं वास्तविक (Red) माना है। किसी भी भौतिक वस्तु (Thing) अथवा आंगिक अनुभव (Organic Experience) की मानव मात्र को जो अनुभूति या जानकारी उपलब्ध होती है, उसका मुख्य माध्यम मानवीय चित (Human Psyche) ही है; इस प्रकार यूंग की मान्यतानुसार चित का सर्वोपरि तथा एक मात्र वास्तविक स्थिति है, जो भौतिक की अपेक्षा मानवीय अनुभव की दृष्टि से व्यक्ति से अधिक सन्निकट एवं अधिक सचाई पूर्ण तथा यथार्थ (Real) है।

चित (Psyche) चेतन तथा अवचेतन दोनों संभागों की इकाई (Unit) होने की दृष्टि से सम्पूर्ण मानवीय अनुभवों (Human Expenrience) का मूलाधार (Basis) है, तथा मानव मात्र इस चेतन एवं अवचेतन स्तरीय दोनों सम्भागों की इकाई चित के माध्यम से ही सम्पूर्ण जगत की सभी वस्तुओं (Things) एवं विचारों (Concepts) की योग्य जानकारी प्राप्त कर पाता है, क्योंकि सभी मानवीय अनुभवों का स्वरुप वस्तुतः केवल मात्रचितिय स्थितियों ही है, इस प्रकार यूंग ने चित की स्वतन्त्र एवं सर्वोपरि सता को स्वीकार किये जाने का आग्रह किया है, क्योंकि यूंग की मान्यतानुसार चित की स्वतः एवं स्वतंत्र स्थिति है। जैसा कि यूंग की कतिपय वैज्ञानिक खोजों से यह पता लगा है कि चित का संचालन भी कुछ चितीय नियमों के अन्तर्गत होता है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग निश्चय पूर्वक विशुद्ध चिकित्सा मनोवैज्ञानिक है, अतः उन्होंने वस्तुपरक (Objective) परीक्षण के लिये आत्मपरक आत्मा तथा सतही तथा क्षण-क्षण में बदलते हुये माने जाने वाले मन (Mind) के बजाय चित (Psyche) को अपने वैज्ञानिक परीक्षणों का नतीजा निकालने के लिये अधिक उपयुक्त माना है। भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत मन को सतही–छिछला, क्षण-क्षण में बदलने वाला, अस्थिर, उपरी तथा कभी बढ़ा हुआ तो कभी घटा हुआ सनक ग्रस्त गैर जिम्मेवार तथा कम महत्व की अनर्गल क्रिया कलापों का सृजक माना गया है। मन को चंचल, शरारती, बन्दर के समान उलूल जलूल कुदा फांदी करने वाला कहा गया है जिससे स्थायित्व, गहराई, दृढ़ता टिकाऊपन की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः यूंग ने अपने अनुसंधान कार्य के लिये मन के बजाय चित (Psyche) का ही चुनाव किया है, क्योंकि चित स्तरीय अनुभूति निःसन्देह अधिक स्थायी, सुस्पष्ट टीकाऊ तथा अधिक दीर्घ जीवी पायी जाती है।

फ्रायड तक नोविज्ञान को मन (Mind) का विज्ञान माना जाता रहा है। फ्रायड ने चेतन और अवचेतन को मन के दो सम्भाग होना कहा है, किन्तु कार्ल

गुस्ताव जुन ने ही सर्व प्रथम चेतन और अवचेतन को चित (Psyche) के दो सम्भाग मानने की घोषणा की। भारतीय वाङ्मय में चित एक प्राचीन, प्रचलित एवं महत्ता प्राप्त पद है। पातंजली के योग-सूत्र के प्रथम चरण में योग की परिभाषा चित वृत्ति विरोध के रूप में की गई है, निःसन्देह चित वृति को मन की तरंग की अपेक्षा अधिक गहरी, अधिक चिरस्थायी अधिक प्रामाणिक एवं अधिक महत्वपूर्ण माना गया है, अतः जुंग द्वारा पद (Term) मन (Mind) के वजाय चित (Psyche) का चुनाव किया जाना निःसन्देह अधिक उपयुक्त है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह प्रतिपादित किया है कि हमारे सम्पूर्ण ज्ञान, विज्ञान और अनुभव का आधार मानवीय चित है और मानवीय चितीय स्थिति से सम्पूर्ण प्रकृति (Nature) तथा समग्र संस्कृति (Culture) का विवेचन प्रस्तुत किया जा सकता है। श्री यूंग के पूर्ववर्ती चिकित्सा मनोवैज्ञानिकों का कार्य क्षेत्र मनोविज्ञान तथा चिकित्सा शास्त्र के अध्ययन तथा तत् सम्बन्धी वैज्ञानिक खोजों तक ही मर्यादित था किन्तु कार्ल गुस्ताव यूंग के विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत यूंग मनोविज्ञान के मर्यादित क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहकर सम्पूर्ण मानवीय विकास की क्षमता सम्पादन कराने की असीम दृष्टि से, ज्ञान-विज्ञान को सभी क्षेत्रों की आवश्यक जानकारियों को उपयोग एवं सार्थक मानते हैं–ताकि हजारों वर्षों से संग्रहीत ज्ञान-विज्ञान की विभूति के आधार पर मानव अपना पूर्ण विकास कर सके, तथा अपने अपूर्ण, खण्डित, एकांकी व्यक्तित्व को पूर्ण, समग्र और सर्वव्यापी बना सके। इस दृष्टि से श्री कार्ल गुस्ताव यूंग का विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान मानव जाति का जीवन दर्शन है, और उसका अनुसन्धान कार्य, उच्चतम जीवन यापन का साधन-पथ वन गया है।

यूंग की जीवन साधना प्रारम्भ एक मनोचिकित्सक के रूप में आरम्भ हुआ और जीवन पर्यन्त यूंग चिकित्सा मनोविज्ञान (Medical phychology) से संबंधित रहे और उन्होंने दीर्घकाल तक अवचेतन के रहस्यों की खोज में अपने जीवन का अधिकांश समय विताया। आजीवन मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में लगे रहते हुए उन्होंने आदिम जातियों के रहन सहन, उनके विश्वास-अविश्वासों तथा उनमें प्रचलित सनातनकालिन धार्मिक क्रिया कलापों से लेकर उनकी देतकथाओं का गंभीर अध्ययन करते हुये समग्र मानव जाति में पाये जाने वाले कतिपय व्यवहारों एवं समान विचारों का पता लगाया, और उन्होंने सम्पूर्ण मानवीय क्रिया कलापों का योग्य मूल्यांकन करते हुये उनको अपने अनुभवों के प्रकाश में जो व्याख्या प्रस्तुत की है, जिससे समग्र मानवीय जीवन के विकास का एक समन्वयकारी तथा आपसी समझ का राजमार्ग प्रशत हो गया है। इस प्रकार चिकित्सा मनोवैज्ञानिक यूंग अपने गहन अध्ययन एवं वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यो से मानवीय जीवन विकास के एक मार्ग

दर्शक बन गये हैं। यूंग ने मानवीय अनुभवों की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार करते हुए मानवीय प्रकृति (Nature) सम्बन्धी कुछ निष्कर्षों की खोज की है किन्तु उनको सभी व्यक्तियों पर एकसा लागू किये जाने का कोई आग्रह नहीं किया है। इस प्रकार यूंग ने किसी रूढ़िवाद, या सिद्धान्तवाद को थोपने का कभी कोई प्रयत्न नहीं किया, इस प्रकार यूंग का चिन्तन सदैव स्वतन्त्र, विस्तृत एवं विकासोन्मुखी पाया जाता है, जिसको किसी क्षेत्र, काल या विषय के अन्तर्गत मर्यादित किया जाना उपयुक्त नहीं है।

यूंग द्वारा प्रयुक्त शब्द साई के (Psyche) का ग्रीक साहित्य में जीवन तत्व के अर्थ में प्राचीन काल से उपयोग होना पाया गया है निसन्देह (Phyche) चित्त निरन्तर गतिशील एवं स्वनियन्त्रित प्रवाह है। कार्ल गुस्ताव यूंग ने लैटिन शब्द (Lebido) लीबिडो को प्राचीन मान्यता के अर्थ रूप में ही स्वीकार किया है। फ्रायड ने लीबिडों को मुख्यतः काम संवेग (Sexurge) के रूप में माना है किन्तु यूंग ने इसको चित्तीय प्रवाह को सामान्यतः इच्छा (Desire) आकांक्षा तथा अन्तःप्रेरणा (Urge) के अर्थ में स्वीकार किया है। इसको जीवन ऊर्जा (Life Energy) या जीवन शक्ति (Life power) भी कहा जा सकता है। जिस प्रकार हृदय से और हृदय की ओर स्वतः रक्त संचार होते रहना ही शरीरधारी के जीवन की निशानी है, तथा विद्युत् प्रवाह धन विन्दु से ऋण विन्दु तथा ऋण विन्दु से धन विन्दु के बीच स्वतः प्रवाहित होता है, उसी प्रकार चित्त के चेतन तथा अवचेतन के बीच चित्तीय शक्ति अथवा जीवन ऊर्जा का स्वतः प्रवाह होता रहता है। यूंग की मान्यता है कि यद्यपि चेतन और अवचेतन परस्पर विरोधी हैं, तथा चेतन और अवचेतन चित्त के दो सम्भाग मात्र है किन्तु परस्पर विरोधधर्मी होने पर भी ये दोनों सम्भाग एक दूसरे के प्रति पूरक है, जिनके बीच स्वतः चित्तीय अर्न्तवस्तु का प्रवाह निरन्तर मौजूद रहता है, इस प्रकार चेतन की अर्न्तवस्तु (Contents) अवचेतन में लय तथा अवचेतन की अर्न्तवस्तु का चेतन स्तर उभार स्वतः होता रहता है जिससे इन दोनों सम्भागों की इकाई निरन्तर बनी रहती है, इसी चित्त के माध्यम से मानव अपने अनुभव ज्ञान से स्वतः विकास करता है।

यूंग की मान्यतानुसार जीवन ऊर्जा (लीबिडो) को स्वतः सहज प्रवाह निरन्तर चेतन और अवचेतन के बीच पाये जाने तथा इनकी अर्न्तवस्तु की परस्पर सहज रूप से अदला बदली होने से ही मानवीय जीवन की इकाई बनी रहती है, और मान स्वतः होने वाले अनुभवों के प्रकाश में स्वयं विकास करते हुए निरन्तर समक्ष, और समृद्धि की ओर अग्रसर होता है। चेतन और अवचेतन के विरोधी ध्रुवों के बीच जब-जब अधिक तनाव अनुभव होता है तब-तब जीवन ऊर्जा का प्रवाह तेजी से, तथा इनके बीच सामान्य भेद होने पर जीवन ऊर्जा का धीमें से प्रवाह होता है

किन्तु जीवन के सभी क्षणों में जीवन ऊर्जा का निरन्तर प्रवाह वना रहना ही मानव जीवन का मुख्य लक्षण है।

मानवीय जीवन में जीवन ऊर्जा का यह स्वतः प्रवाह कभी वाहर की ओर तथा कभी अन्दर की ओर होना पाया जाता है जब व्यक्ति अपने से वाहर अपने चारों तरफ स्थित विश्व तथा इनकी समस्याओं का सामना करता है तव उसकी चेतना का रुख अथवा अभिवृत्ति वहिमुखी होती है, तव वहिमुखी चेतना के रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु उक्त व्यक्ति की अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तुओं का उभार चेतन स्तर पर उजागर होता है। वहिमुखी अभिवृत्ति की इस स्थिति में चेतन की मदद से व्यक्ति अपने इर्द गिर्द वाहरी दुनियां को एक ओर समझता है तथा इसी दोरान में वह स्वयं के अवचेतन में स्थिति अन्तर्वस्तु के कुछ खण्डों को भी अपने चेतन स्तरीय उभार से इनका अर्थ वोध प्राप्त करता है इसी तरह यदाकदा मानव अपनी आन्तरिक मांग से जीवन ऊर्जा का प्रवाह अन्दर की ओर याने अन्तर्मुखी होता है तो अवचेतन के गहनतम स्तर पर सरकने वाली अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु के रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु चेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का महत्वहीन एवं उपेक्षित अंश चेतन से अवचेतन अन्तर्वस्तु में लय हो जाता है और फिर परिवर्तित स्थिति की मांग के अनुसार व्यक्ति जव पुनः वहिमुखी रुख अपनाता है तव चेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु के दफनाये गये हिस्से के साथ गहनतम अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु को नये ढंग से चित्त के चेतनस्तर पर उभरने तथा उजागर होने का अवसर मिलता है, और इस प्रकार मानव को अपने चेतन स्तर को अधिक विस्तार के साथ समझने का अवसर मिलता है। यूंग ने अवचेतन संवंधी अपने अनुसंधान कार्य से मानव मात्र में वाहर की ओर तथा अन्दर की ओर आमुख वहिमुखी एवं अन्तर्मुखी अभिशक्तियों की सुस्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है। जिस प्रकार चित्त के सम्भाग चेतन और अवचेतन परस्पर लक्षणों से विरोध धर्मी होने पर भी एक दूसरे के पूरक के रूप में चित्त की इकाई की रचना करते हैं, इसी प्रकार वहिमुखी तथा अन्तर्मुखी अभिवृत्तियां परस्पर विरोधी दिशाओं में आमुख रहने पर भी इनके वीच प्रतिपूरक स्थिति वनी रहती है।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत चेतन अवचेतन, वहिमुखी अन्तर्मुखी अभिवृत्तियां आदि द्वन्द ऊपरी सतह पर परस्पर विरोध धर्मी होते हुए भी इनको एक दूसरे का प्रति पूरक माना गया है और इस प्रकार सभी द्वन्द्वों की तह में आन्तरिक इकाई की स्थिति संवंधी यूंगीय अवधारणा से मानवीय जीवन के सभी क्षेत्रों में समन्वय प्रवृत्ति को कल्याणकारी वढ़ावा दिया जाना निःसंदेह विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की एक विशिष्टता है। सभी विरोध धर्मी द्वन्द्वों के वीच यूंगों के द्वारा प्रतिपादित जीवन ऊर्जा के स्वतः निरन्तर प्रवाह के फलस्वरूप मल अथवा तह में इनकी आन्तरिक इकाई के कारण यूंग ने मानवीय अनुभव को ही सत्य एवं यथार्थ

माना है। यूंग मूलतः मनोविज्ञानिक है, अतः उन्होंने सत्य तथा तथ्य (Fact) के विवेचन के लिए दार्शनिक एवं भौतिक शास्त्रीय शब्दावलियों का सहारा नहीं लेते हुए मानवीय अनुभव को ही मरम सत्य तथा यथार्थ कहा है और क्योंकि चित्त के माध्यम से ही यह अनुभव सम्पादित करता है, अतः उन्होंने चित्त को सत्यानुभव का एकमात्र माध्यम मानकर चित्त (Psyche) को मन (Mind) तथा आत्मा (Soul) की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। इस प्रकार समग्र यूंगीय साहित्य में मानवीय चित्त तथा मानवीय अनुभव को योग्य व्याख्या प्रस्तुत किये जाने का सुस्पष्ट परिचय प्राप्त होता है।

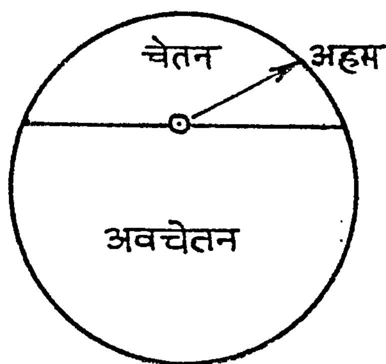
———

अध्याय **5**

चित्त की संरचना
(Structure of the Psyche)

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की विषय-वस्तु चित्त है। मुख्यत: चित को मनोवैज्ञानिक इकाई के रूप में स्वीकार किया गया है, किन्तु यूंगीय विचारधारा की व्यापक व्याख्या के फलस्वरूप इस मनोवैज्ञानिक इकाई के अन्तर्गत यत्र-तत्र दार्शनिक तत्व की झलक भी उपलब्ध हो जाती है। यद्यपि यूंग ने मानवीय अनुभवों की वैज्ञानिक अध्ययन शीलता के निर्वाह की दृष्टि से अपनी विवेचना के लिए यथा संभव मनोवैज्ञानिक शब्दावली का ही उपयोग किया है, फिर भी विषय की गंभीरता के फलस्वरूप यदाकदा मनोवैज्ञानिकता की सीमाओं का अतिक्रमण हो जाना तथा कहीं-कहीं पर यूंगीय व्याख्या के अन्तर्गत दार्शनिकता की तात्विक आलोचना का समावेश हो जाना भी पाया जाता है।

यूंग ने चित्त को सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक इकाई माना है, इस इकाई के दो सम्भाग चेतन तथा अवचेतन हैं, जिसमें चेतन सम्भाग अवचेतन की अपेक्षा परिणाम की दृष्टि से अल्प और प्रभाव की दृष्टि से अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण माना गया है। चित्त की सुस्पष्ट व्याख्या के लिए आरेख संख्या 1 से मदद ली जा सकती है :—



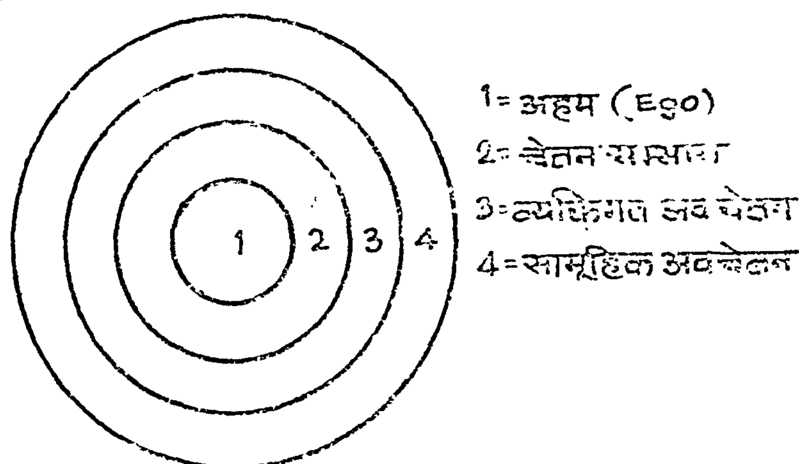
आरेख संख्या 1 : चित्त की इकाई

आरेख संख्या 1 के अन्तर्गत गोलाई के द्वारा चित की इकाई को सुस्पष्ट

किया गया है। इस गोलाई का ऊपरी अल्पांश चेतन है और निचला विस्तृत सम्भाग अवचेतन है। चेतन खण्ड का केन्द्र विन्दु अहम (Ego) है, अर्थात् अहम के द्वारा ही चेतन उजागर है, और अवचेतन सम्भाग अहम द्वारा सुस्पष्ट नहीं है, किन्तु अहम और चेतन और अवचेतन के दोनों सम्भागों का विभाजन करता है, और अहम के माध्यम से जीवन ऊर्जा का प्रवाह चेतन से अवचेतन की ओर तथा अवचेतन से चेतन की ओर स्वत: होता है। अहम चेतन को सुस्पष्ट प्रकार से देखता है किन्तु अवचेलन सम्भाग को अहम सुस्पष्ट प्रकार से देख नहीं पाता, फिर भी यदाकदा अवचेतन की स्थिति का अहम अनुभव अवश्य करता है। अहम भी अपने आप में एक पूर्ण इकाई है अत: उसको आरेख चित्र संख्या 1 के अन्तर्गत छोटी विन्दु इकाई के रूप में व्यक्त किया गया है।

अत: चित्त (साइके) एक पूर्ण मनोवैज्ञानिक इकाई है, जिसके दो सम्भाग हैं। प्रथम सम्भाग को चेतन तथा द्वितीय सम्भाग को अवचेतन कहा गया है। चित्त के उक्त दोनों सम्भाग चेतन तथा अवचेतन यद्यपि गुणधर्म की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न एवं विरोधी हैं तथापि ये दोनों सम्भाग चित्त के ही खण्ड हैं जो परस्पर जुड़े हुए हैं, अत: दोनों ये सम्भाग एक दूसरे के परक हैं। इस प्रकार चेतन तथा अवचेतन परस्पर पूरक हैं और इन परस्पर के समायोजन एवं सामञ्जस के द्वारा ही चित्त की इकाई व्यवस्था वनी रह सकती है, और इस इकाई के निर्वाह के लिए जीवन का प्रवाह इन दोनों गोलार्ध सम्भाग के बीच निरन्तर स्वत: वना रहता है। चेतन तथा अवचेतन के इन दोनों सम्भागों का मुकावला करने से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि चेतन का सम्भाग चित्त की सम्पूर्ण इकाई का एक छोटा सा खण्ड है। चेतन और अवचेतन सम्भागों के परिणाम को स्पष्ट करने की दृष्टि से समुद्र में तैरते हुए एक हिमपर्वत का उदाहरण दिया गया है। समुद्र में तैरता हुआ हिम-पर्वत चित्त (साइके) है, उसका जो सम्भाग पानी के ऊपर उठा हुआ है, वह सम्भाग चेतन है, और जो भाग पानी में लहरों के नीचे दवा पड़ा है, वह सम्भाग अवचेतन है। सूर्य का प्रकाश केवल जल से ऊपर उठे हुए सम्भाग पर पड़ता है, अर्थात् अहम द्वारा चेतन सम्भाग ही सुस्पष्ट देखा या समझा जा सकता है, और सूर्य की किरणें हिमपर्वत के निम्न-स्तरीय सम्भागों तक नहीं पहुंच पाती यद्यपि सूर्य किरणें पानी में डूवे हुए कुछ भाग तक पहुँच पाती हैं, अत: यद्यपि अवचेतन प्राय: अहम के द्वारा नहीं देखे जाने वाला अनजाना सम्भाग है फिर भी अवचेतन का कुछ हिस्सा अहम द्वारा यदाकदा उजागर हो जाता है। हिमपर्वत का आलोकित खण्ड जिस प्रकार अंधकारमय खण्ड पर आधारित है उसी प्रकार चित्त का चेतन सम्भाग भी अवचेतन पर आश्रित माना जाता है। किन्तु सम्पूर्ण हिमपर्वत की वनावट जल से ही मानी जा सकती है, और इसी तरह सम्पूर्ण चित्त जीवन प्रवाह से ओतप्रोत है। समूचे चित्त में जीवन की धारा सनातन तथा निरन्तर रूप से स्वत: विद्यमान है। जीवन

धारा के इस प्रवाह के कारण चित्त के उपरोक्त दोनों सम्भागों के बीच का तापक्रम सन्तुलित बना रहता है, और चित्त की इकाई बनी रहती है।

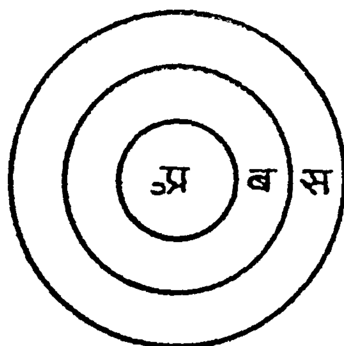


आरेख संख्या 2 : अहम तथा चित्त के सम्भाग

आरेख संख्या 2 के अन्तर्गत अंक 1 के द्वारा अहम की इकाई को स्पष्ट किया गया है। अंक 2 के द्वारा चेतन के क्षेत्र को दिखलाया गया है और अंक 3 और 4 के द्वारा अवचेतन के दो खण्ड (व्यक्तिगत अवचेतन तथा सामूहिक अवचेतन) के क्षेत्रों को सुस्पष्ट किया गया है। यहां पर अहम चेतन का केन्द्र बिन्दु है अर्थात् अहम चेतन का विषयी (Subject) है, अथवा चेतन को अहम का विषय (Object) कहा जा सकता है। यूंग ने चेतन की परिभाषा करते हुए इसको क्रिया माना है, जिसकी चितीय अन्तः वस्तु की जानकारी अहम से होना माना गया है।

अहम के सम्बन्ध के आधार पर जिस सम्भाग का सम्पर्क अहम के साथ नहीं हो पाता उसको यूंग ने अवचेतन कहा है। चेतन के गोलाकार के बाहर का गोलाकार इस प्रकार अवचेतन का क्षेत्र है। अवचेतन के इस गोलाकार क्षेत्र को दो गोलाकारों के रूप से विभाजन किया है। अवचेतन के प्रथम गोलाकार को व्यक्तिगत अवचेतन का क्षेत्र कहा गया है, व्यक्तिगत अवचेतन के क्षेत्र की कुछ घटनाओं का आवागमन यदाकदा चेतन के क्षेत्र में होता रहता है, अर्थात् जो अन्तर्वस्तु (Contents) चेतन के स्तर पर अरुचिकर, अग्राह्य तथा अशोभनीय प्रतीत होती है, वह अहम के द्वारा भुला दी जाती है अथवा दबा दी जाती है, और इस प्रकार विस्मृत अथवा दमित अन्तःवस्तु चेतन से व्यक्तिगत अवचेतन मण्डल में डाल दी जाती है जो कि यदाकदा सहचारी उद्दीपन की अवस्था में अवचेतन के भण्डार से बाहर निकलकर चेतन के क्षेत्र पर प्रगट होने लगती है। चेतन तथा अवचेतन के परस्पर आवागमन के इस क्षेत्र को यूंग ने व्यक्तिगत अवचेतन कहा है। व्यक्तिगत अवचेतन से परे सामूहिक अवचेतन का वह विशाल गहन क्षेत्र है जो

प्राय: अहम से अधिक दूरवर्ती होने व उसके बावत जानकारी होना सम्भावित नहीं है, अत: सामूहिक अवचेतन प्राय: अहम द्वारा अनजाना और रहस्यमय बना रहता है।



आरेख संख्या 3 : अवचेतन के विभिन्न स्तर

अ = सामूहिक अवचेतन का वह खण्ड जो कभी भी अहम द्वारा उजागर नहीं हो पाता।

ब = सामूहिक अवचेतन का वह खण्ड जो यदाकदा अहम द्वारा जाना जाता है।

स = व्यक्तिगत अवचेतन का खण्ड जो प्राय: स्वप्न के माध्यम से अहम द्वारा उजागर होता रहता है।

आरेख संख्या 3 के अन्तर्गत सामूहिक अवचेतन का जो भाग अहम द्वारा कभी भी उजागर नहीं हो सकता, उसको "अ" गोलागार द्वारा बतलाया गया है। अर्थात् "अ" क्षेत्र की कोई भी अन्त:वस्तु अहम (Ego) द्वारा ग्रहण नहीं की जा सकती। अत: "अ", सम्भाग सामूहिक अवचेतन का वह हिस्सा है जो कभी भी चेतन स्तर तक नहीं पहुंच पाता। सामूहिक अवचेतन का यह सबसे गहनतम या निम्नतम धरातल है, जो अत्यन्त रहस्यमय और अनजाना है। इस धरातल की अन्त:वस्तु का मानव मस्तिष्क द्वारा विवेचन किया जाना कठिन है। अत: यह गुरु रहस्य क्षेत्र है। इस निम्नतम और अन्ततम गोलाकार के चारों ओर आवर्त "ब" है, जिसके रहस्य का मूल्यांकन करने का यूंग ने प्रयत्न किया है, इस आवर्त "ब" के चारों ओर गोलाकार "स" के द्वारा व्यक्तिगत अवचेतन के क्षेत्र को स्पष्ट किया गया है। यूंग ने गोलाकार "स" के क्षेत्र की अन्त:वस्तु का आवागमन चेतन के क्षेत्र तक होना संभव माना है किन्तु क्षेत्र "ब" की अन्त:वस्तु का आवागमन चेतन स्तर पर होना कठिन तथा क्षेत्र "अ" को अन्तर्वस्तु का चेतन स्तर पर उभरना असंभव माना गया है।

यूंग ने यह भी स्पष्ट करने का यत्न किया है कि व्यक्तिगत अवचेतन के क्षेत्र "स" में अहम (Ego) अर्थात् व्यक्ति द्वारा अनुभव की गई अन्तर्वस्तु उपेक्षित अथवा दमित होकर पड़ी रहती है, क्योंकि चेतन का सीमित तथा संक्षिप्त क्षेत्र केवल स्थान और काल द्वारा मर्यादित अल्पतम अन्तःवस्तु को ही चेतन के क्षेत्र में रख पाता है, और जब कोई अनुभव रुचिहीन पुराना असंगत अथवा आकर्षणहीन होने लगता है तो अहम इस अनुभव को चेतन के स्तर से हटा कर व्यक्तिगत अवचेतन के भण्डार में धकेल देता है, और भोगा हुआ यह अनुभव काल और स्थान की मर्यादा से मुक्त होकर व्यक्तिगत अवचेतन में पड़ा रहता है। अतः अवचेतन को यूंग ने स्थानातीत और कालातीत माना है। जबकि चेतन की स्थिति स्थान और काल पर आश्रित मानी गई है। अतः काल तथा स्थान के तकाजे पर जो भाव, अनुभव संवेग, क्रिया, अथवा अनुभव पुराना अथवा प्रभावहीन प्रतीत होता है वह स्वतः अहम के द्वारा उपेक्षित तिरस्कृत अथवा दमित होकर चेतन के क्षेत्र से निकाल दिया जाता है और उक्त अनुभव अथवा उसकी अन्तःवस्तु अहम द्वारा आलोकित चेतन के क्षेत्र से हटकर व्यक्तिगत अवचेतन के संग्रहालय (भंडार) में अव्यवस्थित प्रकार से डाल दी जाती है और व्यक्तिगत अवचेतन के क्षेत्र में उक्त भाव, अनुभाव, विचार, स्मृतियाँ तथा अनुभव स्थान तथा काल की मर्यादा से स्वतंत्र होकर व्यक्तिगत अवचेतन के स्तर पर जमें पड़े रहते हैं। व्यक्तिगत अवचेतन के स्तर पर पड़े हुए उक्त अनुभव पुंज प्रायः बिखरे रहते हैं और प्रभावहीन रहते हैं किन्तु जब इस प्रकार के विस्मृत अथवा दबाए गये अनुभव कालान्तर में जाकर समान अनुभव के आधार पर परस्पर जुड़ने लगते हैं तो इनका प्रभाव अहम पर शनैः-शनैः होने लगता है और कभी-कभी सहसा उक्त दबाये गये संवेग अहम की असावधानी की स्थिति में चेतन पर उभर आते हैं--और चेतन को अनियंत्रित कर देते हैं। इसी प्रकार सामूहिक अवचेतन के स्तर पर मानव के सामान्य अनुभवों के जो पुंज रहते हैं, जो परिवार, वंश, जाति आदि की धरोहर के रूप में चेतन पर अपना असर डालते हैं। फ्रायड ने अवचेतन को केवल व्यक्तिगत अवचेतन स्तर तक ही स्वीकार किया था किन्तु यूंग ने मानवीय अनुभवों के अध्ययन के आधार पर सामूहिक अवचेतन के क्षेत्र की उपस्थिति की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए अवचेतन की गहराई को अधिक बढ़ा दिया है, और सामूहिक अवचेतन के प्रभाव को अधिक महत्व दिया है। सामूहिक अवचेतन के इस अक्षय भंडार का निःसन्देह चित्त पर बड़ा गहरा असर होना यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की घोषणा की है। अतः यूंग की मान्यता है कि मानव की जो अभिवृत्ति तथा क्रियाचेतन द्वारा संचलित है, उस पर भी सामूहिक अवचेतन के विभिन्न स्तरों के दूरगामी प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है। अतः सामान्य मानव की अभिवृत्ति क्रिया, प्रक्रिया, व्यवहार, आचरण में भी यूंग द्वारा उल्लेखित सामूहिक अवचेतन का प्रभाव घोषित किया गया है।

अवचेतन के अनुभव भण्डार को हम भारतीय शब्दावली में "संस्कार पुंज" कह सकते हैं। व्यक्तिगत अवचेतन के स्तर पर मानव के इस जन्म के संस्कार पड़े रहते हैं, किन्तु सामूहिक अवचेतन में मानव के पूर्वजन्मों के भिन्न-भिन्न संस्कारों का समावेश माना जा सकता है। यूंग ने शब्द "संस्कार" अथवा इसके अनुरूप किसी अन्य का उपयोग नहीं किया है, किन्तु सामूहिक अवचेतन की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए उसने (1) व्यक्ति, (2) परिवार, (3) जाति, (4) राष्ट्र, (5) नस्ल, (6) आदिम मानव पूर्वज, तथा (7) आदिम पशु पूर्वजों की गणना की है, और अवचेतन के अन्तरतम स्तर में, (8) केन्द्रीय शक्ति की स्थिति की ओर इशारा किया है, और उसने दृढतापूर्वक यह स्पष्ट किया है कि अवचेतन के इस विभिन्न स्तरों का प्रभाव चेतन पर घटित होता रहता है। और इस प्रभाव अनुभूति का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना भी संभव है। क्योंकि अवचेतन स्थित इन संस्कारों का प्रभाव चेतन स्तरीय अभिवृत्तियों एवं क्रियाओं में परिलक्षित किया जा सकता है।

चेतन और अवचेतन के योग को चित्त कहा गया हैं, चित्त को यथार्थ माना गया है और चित्त के दोनों परस्पर पूरक सम्भाग चेतन तथा अवचेतन की यथार्थता भी अनुभवगम्य है। "अहम" की यथार्थता भी स्वयं प्रमाणित है क्योंकि अहम के माध्यम से चेतन तथा अवचेतन क्षेत्र में जीवन प्रवाह का अनुभव किया जाता है। चेतन की अन्तःवस्तु अहम के द्वारा अवचेतन स्तर पर धकेली जाती है और अहम के दरवाजे से ही अवचेतन का यदाकदा बाहर निकलकर चेतन पर छाया जाना भी अनुभव किया जा सकता है। अतः हम चित्त के साथ ही साथ चेतन तथा अवचेतन को तथा चेतन तथा अवचेतन को जोड़ने वाले अहम को यथार्थ कहेंगे। किन्तु जब हम चेतन तथा अवचेतन के महत्व का मुकाबला करते हैं तो अवचेतन की श्रेष्ठता भलीभांति अनुभव की जा सकती है, और अवचेतन पर चेतन का आश्रित होना भी माना जाता है। मानव-जीवन का अधिकांश भाग अवचेतन की स्थिति में ही व्यतीत होता देखा गया है। निद्रा, स्वप्न, दिवास्वप्न कल्पना तथा प्राकृतिक स्वाभाविक क्रियाओं का संचालन अवचेतन में ही होना पाया जाता है जिनको हम प्राकृतिक क्रियायें तथा प्रवृत्तियाँ कहते हैं, उनका भी संचालन अवचेतन द्वारा ही होता है। निःसन्देह मानव चेतन अवस्था में भोजन करता है और भोजन की तलाश भी करता है, किन्तु भोजन के लिए जो भूख की प्रेरणा अथवा प्रवृत्ति है, वह अवचेतन स्तर से ही उभर कर चेतन पर आती है। भोजन के पाचन, शरीर द्वारा भोजन की ऊर्जा को ग्रहण किया जाना, नाड़ी स्पंदन, रक्त संचार, तथा शरीर के अवयवों की बनावट तथा उनको नष्ट होना आदि जीवन निर्वाह की जो आन्तरिक प्राकृत क्रियायें हैं, उनका संचालन न तो अहम की साक्षी में चेतन द्वारा होता है और न इन जीवन क्रियाओं की सुस्पष्ट जानकारी चेतन स्तर पर उजागर ही हो पाती है, अतः जीवन की प्रायः सभी महत्वपूर्ण घटनाओं के निर्माण में अवचेतन की सर्वोपरि भूमिका को स्वीकार

किया जाना उचित है। चेतन का आधार भी अवचेतन ही माना जाना चाहिए। गर्भावस्था में शिशु अवचेतन स्थिति में विकसित होता है। जन्म के पश्चात् भी शिशु-जीवन की अधिकांश क्रियायें, प्रक्रियायें, अवचेतन द्वारा संचालित होती हैं और मानव शिशु शनैः-शनैः अवचेतन के स्तर से निकल कर अपने नन्हें अहम का विकास करते हुए चेतन के स्तर तक पहुँचता है। अतः अवचेतन से चेतन की ओर बढ़ना मानव का स्वतः सहज विकास है, किन्तु मानव-विकास के दौरान में भी अवचेतन की सर्वोपरि महत्ता तथा उसके द्वारा होने वाले महत्वपूर्ण प्रभाव को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। अवचेतन का अक्षय भंडार कभी नष्ट नहीं होता और निरन्तर वह अपना प्रभाव अहम तथा चेतन स्तर पर डालता रहता है, क्योंकि प्रतिक्षण तथा निरन्तर रूप से जीवन का प्रवाह चेतन तथा अवचेतन के दो परस्पर विरोधी ध्रुव केन्द्रों के बीच बना रहता है, और जीवन के इस निरन्तर प्रवाह के फलस्वरूप अवचेतन का चेतन में तथा चेतन का अवचेतन के रूप में रूपान्तरण होता रहता है। और यह रूपान्तर अथवा परिवर्तन तथा जीवन-प्रवाह का आवागमन भी प्रायः अहम शून्य अवचेतन प्रकार से होता है।

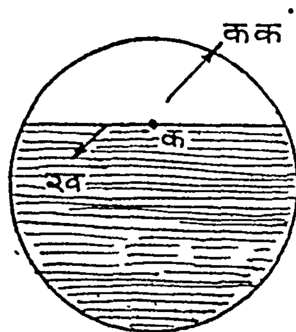
अवचेतन की अन्तर्वस्तु (Contents) प्रायः अव्यक्त तथा भेद रहित (Undifferentiated) पायी जाती है, और इसको अहम के द्वारा सुस्पष्ट रूप से न तो समझा जा सकता है, और न इसको ग्रहण किया जा सकता है, अतः गहन अवचेतन की अन्तर्वस्तु का खण्ड विवेचन अथवा विश्लेषण किया जाना संभव नहीं है, किन्तु जब इस अन्तःवस्तु का विस्फोट चेतन के धरातल पर हो जाता है तब हम मानव आचरण में काम, क्रोध, मद, मोह आदि के विकारों के माध्यम से अवचेतन में स्थित इस अन्तःवस्तु के परिचय प्राप्त करते हैं। प्रेम वात्सल्य, श्रद्धा, द्वेष, घृणा, जीवन का मोह तथा मृत्यु का भय आदि उत्तम अथवा अधम कही जाने वाली सभी भावनाओं का उद्गम स्थल भी अवचेतन स्तर है, और जब उक्त भावनायें अवचेतन से बाहर निकल कर चेतन पर छा जाती है, तभी हमें इन भावनाओं का अनुभव अहम के माध्यम से होता है। स्थान तथा काल से परे यह भावनायें अवचेतन के अंधकारपूर्ण संग्रहालय में अस्त-व्यस्त रूप में पड़ी रहती है, तब इनका स्वरूप अव्यक्त, अनाम तथा अनजाना अज्ञेय प्रवाह मात्र रहता है, किन्तु जब कभी अवचेतन में पड़ी-पड़ी उक्त भावनायें एक जूठ होकर प्रबल हो जाती हैं अथवा चेतन का संकेत पाकर ऊपर उठ आती है, तब अहम के द्वारा इसका साक्षात्कार किया जाता है और अहम द्वारा चेतन स्तर पर किये गये अनुभव के आधार पर इनका वर्गीकरण तथा नामांकरण किया जाता है और अवचेतन की अव्यक्त अन्तःवस्तु चेतन की व्यक्त वस्तु बनकर परिवर्तित हो जाती है जिसको हम प्रेम, स्नेह, मोह, घृणा, उपेक्षा, रुचि, अरुचि आदि का ठप्पा लगाकर अपने अहम की आवश्यकता के अनुसार उनका परिष्कार, परिमार्जन तथा परिवर्तन करते हैं, और अहम के द्वारा जीवन के निर्वाह की दृष्टि से इनका समायोजन अथवा नियंत्रण किया जाता है।

अवचेतन तथा चेतन दोनों चित्त के परस्पर विरोधी गुण-धर्मी सं हैं। अवचेतन तथा चेतन दोनों के बीच निरन्तर जीवन प्रवाह बना रहता है, ि फलस्वरूप चेतन और अवचेतन के बीच परस्पर सन्तुलन बना रहता है। अव की बुनियादी क्षमता (Basic Capability) विरोधी गुणधर्मी चेतन की पूरक निर्वाह में है। चित्त की चेतन तथा अवचेतन स्तरीय विरोधी गुणधर्मी अन्त तक दूसरे में निरन्तर प्रवाहित पायी जाती है, और इसके फलस्वरूप चेत अवचेतन में तथा अवचेतन का चेतन में निरन्तर रूप परिवर्तन होता रहता है। परस्पर आवागमन के फलस्वरूप चेतन और अवचेतन का संतुलन बना रह और चित्त की इकाई की सुरक्षा सम्भव हो पाती है। अतः जब चेतन स्तर किसी अन्तःवस्तु का आधिक्य अथवा प्रबलता की स्थिति हो जाती है तो ठीक र विरोधी गुणधर्म की अन्तर्वस्तु का आधिक्य अवचेतन स्तर पर सहज हो जाता जिसके द्वारा चेतन के आधिक्य का सन्तुलन अवचेतन की सहज प्रचुरता से स हो जाता है और इस प्रकार चित्त की इकाई की रक्षा हो जाती है। तथा अथवा अवचेतन की अन्तर्वस्तु के आधिक्य के फलस्वरूप व्यक्ति विश्रृंखलित और हो जाने से बच पाता है। चेतन और अवचेतन परस्पर केवल स्थिति की दृ एक दूसरे के पूरक ही नहीं है अपितु क्रिया (Function) तथा निष्पादन (I formance) की दृष्टि से भी परस्पर विरोध गुणधर्मी होने से एक दूसरे के और इस प्रतिपूर्ति (Compensatory) क्षमता के फलस्वरूप ही चित्त और स मानव व्यक्तित्व की इकाई का निर्वाह हो पाता है। वाह्य घटना की टक चेतन से होती है, और इस टकराहट से कुछ विशिष्ट भाव लहरियाँ चेतन आन्दोलित करने लगती हैं, किन्तु पूरक की प्रतिपूर्ति क्षमता के फलस्वरूप उसी में अवचेतन में इन विशिष्ट भावलहरियों के विपरीत गुणधर्मी लहरियाँ स्वतः ज हो जाती हैं जो चेतन पर प्रभाव डालने वाली भावनाओं का सन्तुलन व अव स्तर पर करती हैं, और इस सन्तुलन के फलस्वरूप समायोजन की प्रक्रिया से ि का प्रवाह स्वतः बना रहता है, और चित्त इस आकस्मिक टकराहट से सुरक्षित पाता है। जीवन का यह सहज प्रवाह चेतन तथा अवचेतन के बीच साम्याव उपस्थित कर देता है, घटित घटना से व्यक्ति केवल मात्र अनुभव ग्रहण कर संतु एवं समृद्ध हो उठता है। और इस घटना के टकराहट से चकनाचूर नहीं हो पा और अहम इस टकराहट के अनुभव को ग्रहण कर इस खींचातानी की विखराह बच जाता है। किन्तु यदि चेतन तथा अवचेतन के बीच परस्पर प्रतिपूर्ति प्रवाह में यदि गडबड़ी हो जाती है तो चेतन की टकराहट से चित्त विश्रृंख हो सकता है और व्यक्ति पागलपन अथवा मृत्यु का ग्रास भी बन सकता है। चेतन तथा अवचेतन की प्रतिपूर्ति क्षमता के फलस्वरूप ही सामान्य मानव-जीवन निर्वाह संभव है।

चित्त की संरचना स्पष्ट करते हुए, यूंग ने चित्त के चेतन सम्भाग को

अभिवृत्तियां तथा चेतन की चार प्रमुख क्रियाओं की विस्तृत व्याख्या "साइकोलोजिकल टाइप्स" शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित की है। यूंग की मान्यता है कि चेतन की बनावट के फलस्वरूप मानव में दो अभिवृत्तियां पाई जाती हैं, जिनको उसने वहिर्मुखी अभिवृत्ति तथा अन्त:मुखी अभिवृत्ति कहा है। कुछ व्यक्ति चेतन की बनावट के फलस्वरूप वाह्य जगत् की ओर सहज अभिवृत्त होते हैं, तो कुछ चेतन की प्रकृति के अनुरूप स्वयं के अन्दर की ओर अभिवृत होते हैं जिन्हें अन्तर्मुखी कहा जाता है। यूंग ने वहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी अभिवृत्तियों के अलावा मानव-चेतन की चार क्रियाओं पर भी प्रकाश डाला है, उसकी मान्यता है कि मानव-चेतन प्राय: चार प्रकार की क्रियाओं से प्रभावित होता है, जिसको उसने (1) संवेदन (Sensation), चिन्तन (Thinking), भावना (Feeling) तथा अंत:प्रज्ञा (Intuition) कहा है। उपरोक्त दोनों अभिवृत्तियों तथा उक्त चारों क्रियाओं (Functions) की विशद व्याख्या आगामी अध्याय में प्रस्तुत किया जाना उपयुक्त है, अत: यहां पर केवल इसका उल्लेख भर किया जाना पर्याप्त है।

आरेख संख्या 4 के अन्तर्गत चेतन की दोनों अभिवृत्तियों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। चेतन चित्त का प्रकाशमय संभाग है जिसका केन्द्र विन्दु अहम (Ego) है जो आरेख चित्र में एक छोटी गोलाई के रूप में व्यक्त किया गया है और चेतन का सम्भाग प्रकाशवर्ती तथा अवचेतन का सम्भाग अंधकारपूर्ण प्रकट किया गया है।



क = अहम (Ego) जो चेतन का केन्द्र है।

क क = अहम की वाहर की ओर अग्रसर होने की वहिर्मुखी अभिवृत्ति (Extrovert)।

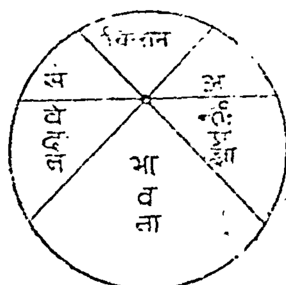
ख = अहम द्वारा अन्दर की ओर पीछे हटने की अन्तर्मुखी अभिवृत्ति (Introvert)।

आरेख संख्या 4 चेतन की अभिवृत्तियां (Attitudes)

आरेख संख्या 4 के अन्तर्गत तीर "क" तथा "कक" बहिर्मुखी अभिवृत्ति का

द्योतक है, छोटा गोलार्ध अहम (Ego) है जो "क" के अन्तर्गत चेतन की ओर तथा कक के अन्तर्गत वाह्य जगत् की ओर अभिमुख होता दिखलाया गया है, जिसको वहिर्मुखी-अभिवृत्ति (Extrovert Attitude) कहा गया है। आरेख के अन्तर्गत तीर, ख के द्वारा अहम की गति अवचेतन की ओर दिखलायी गई है जिसको अन्तः-मुखी अभिवृत्ति (Introvert Attitude) कहा गया है।

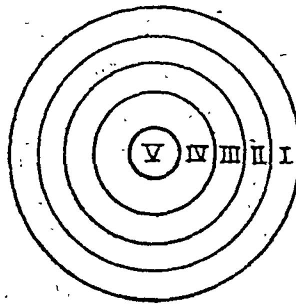
अतः अभिवृत्ति के आधार पर मानव-समाज का विभाजन दो श्रेणियों में किया जा सकता है, और उन्हें वाह्यमुखी अथवा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की संज्ञा से समझा जा सकता है।



आरेख संख्या 5 चित्त तथा उसकी चार क्रियायें

आरेख संख्या 5 के अन्तर्गत वृहद गोलाकार के द्वारा चित्त की इकाई तथा छोटे गोलाकार के द्वारा अहम की इकाई व्यक्त की गई है। वृहद गोलाकार के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति में पाई जाने वाली चार प्रमुख क्रियाओं का परिचय प्रस्तुत किया गया है जिसे क्रमशः संवेदन, चिन्तन, अन्तःप्रज्ञा तथा भावना कहा गया है। आरेख संख्या 5 के अन्तर्गत, प्रकाशमय चेतन तथा अज्ञेय क्षेत्र अवचेतन के सम्भागों को भी स्पष्ट किया गया है। चित्त की संरचना शीर्षक इस अध्याय के अन्तर्गत चेतन की उपरोक्त दोनों अभिवृत्तियों तथा उक्त चारों क्रियाओं का उल्लेख मात्र किया जाना पर्याप्त है, क्योंकि अभिवृत्तियों का उल्लेख मात्र किया जाना पर्याप्त है, क्योंकि अभिवृत्तियों और क्रियाओं की व्याख्या आगामी अध्याय के अन्तर्गत विस्तार से प्रस्तुत की जायगी।

चेतन स्तर की तलस्पर्शी व्याख्या के पश्चात् पुनः यहां पर अवचेतन के स्तर की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत किया जाना उचित होगा। निम्न आरेख संख्या 6 के अन्तर्गत अवचेतन क्षेत्र के विभिन्न स्तरों की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है :—



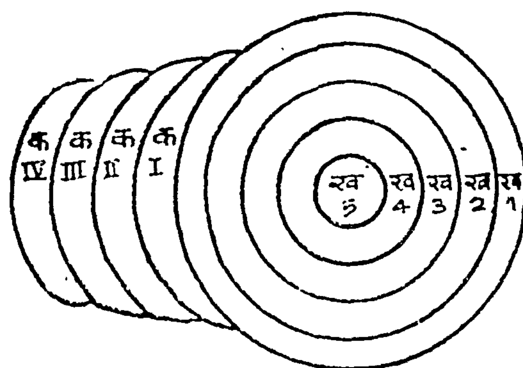
आरेख संख्या 6 : अवचेतन का क्षेत्र एवं इसके विभिन्न स्तरों का परिचय

उपरोक्त अवचेतन का गोलाकार I स्मृतियों का स्थल है तथा गोलाकार II विकृत एवं दमित अन्तर्वस्तु का भण्डार है। चेतन स्तर पर जो घटनायें अथवा अनुभव प्रभावहीन अथवा रुचिहीन हो जाते हैं, वह अवचेतन के सर्वोपरि स्तर पर स्मृतियों के रूप में पड़े रहते हैं और चेतन की मांग पर पुनः चेतन स्तर पर उभर आने में सक्षम हो जाते हैं। पुरानी स्मृतियाँ अवचेतन में पड़ी रहती हैं, और चेतन का संकेत पाकर प्रायः अवचेतन में स्थित स्मृतियाँ चेतन स्तर पर उजागर हो जाने का मानव अनुभव स्वयं सिद्ध है। द्वितीय स्तर पर अहम द्वारा अनपेक्षित तथा दबाई गई भावनाओं का पुंज पड़ा रहता है, जो यद्यपि चेतन का संकेत पाकर पुनः चेतन पर मुखरित नहीं हो पाता, किन्तु फिर भी उक्त तिरस्कृत तथा दमित अन्तर्वस्तु का प्रभाव चेतन स्तर पर पड़ना अनुभव गम्य अवश्य है। यह प्रथम और द्वितीय स्तर को यूंग ने व्यक्तिगत अवचेतन कहा है। तृतीय, चतुर्थ और पंचम स्तर के योग को सामूहिक अवचेतन (Collective Unconscious) कहा गया है। सामूहिक अवचेतन की स्थिति व्यक्तिगत अवचेतन की अपेक्षा अधिक आन्तरिक एवं गहरी है, उसके तृतीय स्तर पर संवेगों का भण्डार है, जो यदाकदा अहम की असावधानी के फलस्वरूप अथवा चेतन की मांग के अनुरूप ऊपर उभरता हुआ प्रतीत होता है। प्रायः व्यक्ति अपने चेतन स्तर यह अनुभव करता है कि वह परेशान है, व्याधित अथवा उल्लसित है, जबकि चेतन स्तर उसको उसकी व्यथा अथवा उल्लास का कोई कारण दृष्टिगोचर नहीं हो पाता। यह भाव अव्यवस्था अवचेतन के तृतीय स्तरीय संवेगों का चेतन स्तर पर उभर आने का सहज परिणाम है, उपरोक्त प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्तर से अवचेतन की अन्तर्वस्तु यदाकदा अथवा विशेष परिस्थितियों में चेतन स्तर तक उभर उठती है, और इस आवागमन की क्रिया से अहम तथा व्यक्ति का प्रभावित होना अनुभव किया जा सकता है। चेतन और अवचेतन को अन्तःवस्तु को ही हमने जीवन शक्ति अथवा लीविडो माना है,

और जीवन का यह प्रवाह चेतन तथा अवचेतन में बराबर बना रहता है और आवागमन की इस क्रिया प्रक्रिया को ही हमने 'जीवन ऊर्जा' कहा है। चेतन अथवा अवचेतन का कोई भी खण्ड स्थिर अथवा शून्य नहीं रह पाता, क्योंकि जीवन का प्रवाह चेतन अथवा अवचेतन की मांग तथा आवश्यकता की रिक्तता को निरन्तर भरता रहता है अतः प्रतिक्षण चेतन-अवचेतन की ओर तथा अवचेतन चेतन की ओर प्रवाहित होता रहता है, और प्रवाह के फलस्वरूप ही चेतन तथा अवचेतन के बीच समरसता, सन्तुलन अथवा साम्यावस्था बनी रहती है और इसके दूरगामी परिणामस्वरूप चित्त की इकाई का निर्वाह हो पाता है। क्योंकि चेतन तथा अवचेतन का निरन्तर जीवन प्रवाह प्रतिपूर्ति क्षमता के कारण स्वतः संचालित है। अतः जिस प्रकार चेतन की अन्तर्वस्तु, अरुचित, उपेक्षा, दमन, अथवा दबाव के फलस्वरूप अवचेतन के प्रथम, द्वितीय, अथवा तृतीय भण्डार की सामग्री बन जाती है, उसी प्रकार उसी क्षण चेतन स्तर की इस स्थिरता को भरने के लिए अवचेतन के प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय स्तर से तदनुकूल अन्तर्वस्तु चेतन स्तर की कमी की प्रतिपूर्ति की दृष्टि से सहज और स्वतः उक्त उपेक्षित, दमित तथा धकेली गई अन्तःवस्तु चेतन स्तर पर स्नान ग्रहण कर लेती है। अहम चेतन स्तरीय वस्तु को ही भली-भांति पहचानता है, और जिस अन्तःवस्तु को अवचेतन की ओर प्रवाहित कर देता है, उसको भूल जाता है, अथवा दबा देता है, और यह विस्मृत तथा दमित अन्तर्वस्तु अवचेतन में जाकर अज्ञात, अस्तव्यस्त तथा अविच्छिन्न बन जाती है और कुछ समय के पश्चात् संवेग के रूप में परिवर्तित होकर अवचेतन की प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय स्तर में पड़ी रहती है, किन्तु वह चेतन स्तर की रिक्तता की मांग पूर्ति के फलस्वरूप जब चेतन स्तर पर उभरने लगती है, तब अहम इसको पुनः समझने और पहिचानने लगता है और इसकी स्थति से सुख अथवा दुःख का अनुभव करने लगता है।

आरेख संख्या 6 के अन्तर्गत वाह्य चार स्तरीय I, II, III व IV स्तरीय सामूहिक अवचेतन की वह गहन सतहें हैं, जहां से यदाकदा कभी-कभी अन्तर्वस्तु का उभार उसके प्रकृत रूप के अंश में चेतन स्तर तक पहुंच पाता है, किन्तु पंचम स्तर तो अवचेतन का वह गहनतम सम्भाग है जिसकी अन्तःवस्तु का दर्शन उसके उसी रूप में कदापि चेतन स्तर पर नहीं हो सकता, किन्तु इस गहनतम स्तर की अन्तर्वस्तु का प्रतीकात्मक दर्शन या अनुभव यदाकदा चेतन स्तर पर किया जा सकता है। चेतन और अवचेतन दोनों सम्भाग चित्त के माने गये हैं, और इन दोनों के बीच सतत जीवन शक्ति का प्रवाह भी स्वीकार किया जा चुका है। अतः चेतन तथा अवचेतन की अन्तर्वस्तु का रूपांतर भी इन दो विरोधी ध्रुवों के बीच होना माना जाना चाहिए। यूंग द्वारा प्रस्तुत अवचेतन के पांच स्तरों तथा चेतन की

चार क्रियाओं के सम्मेलन से जो मानचित्र बनाया जा सकता है, उसको आरेख संख्या 7 में व्यक्त किया गया है।



आरेख संख्या 7 : चित्त की संरचना

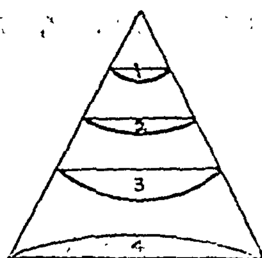
क = चेतन सम्भाग का क्षेत्र।

ख = अवचेतन सम्भाग का क्षेत्र।

इस आरेख 7 के अन्तर्गत गोलाकार "क" के द्वारा चेतन तथा गोलाकार "ख" के द्वारा अवचेतन के सम्भाग स्पष्ट किये गये हैं, गोलाकार "क" तथा गोलाकार "ख" का मिलन गोलाकार अहम (Ego) है। गोलाकार "क" I के द्वारा संवेदन, गोलाकार क II द्वारा "भावना", गोलाकार क III के द्वारा अन्तःप्रज्ञा तथा गोलाकार कIV के द्वारा चिन्तन के क्रिया क्षेत्रों को सुस्पष्ट किया गया है। और गोलाकार ख1 के द्वारा विस्मृत अन्तर्वस्तु क्षेत्र, ख2 द्वारा दमित अन्तर्वस्तु क्षेत्र, ख3 द्वारा संवेग क्षेत्र, ख4 द्वारा गहन सामूहिक अवचेतन स्तरीय जो यदाकदा उभरने वाले क्षेत्र तथा ख5 के द्वारा सामूहिक अवचेतन स्तरीय क्षेत्र जो कभी भी चेतना स्तर पर परिचित रूप से नहीं उभरता है, ऐसे गहनतम रहस्य क्षेत्र सुस्पष्ट किया गया है।

इस आरेख संख्या 7 को अधिक स्पष्टता के साथ हृदयंगम करने की दृष्टि से आरेख संख्या 8 तथा आरेख संख्या 9 की मदद ली जा सकती है। आरेख संख्या 8 तथा 9 द्वारा सम्पूर्ण चित्त की संरचना को मानचित्र द्वारा सुस्पष्ट किया गया है।

इस आरेख चित्त 8 के अन्तर्गत संख्या 1 अहम है, संख्या 2 चेतन सम्भाग है, जो संवेदन, भावना, अन्तःप्रज्ञा, तथा चिन्तन आदि चार क्रियाओं से प्रभावित है। अंक 3 के द्वारा व्यक्तिगत अवचेतन क्षेत्र, जिसमें स्मृतियाँ, तथा दमित वृतियाँ



1. अहम-चेतना का केन्द्र
2. चेतन सम्भाग
3. व्यक्तिगत अवचेतन सम्भाग
4. सामूहिक अवचेतन सम्भाग

आरेख संख्या 8 : चित्त के प्रमुख सम्भागों का मानचित्र

तथा संवेग आदि सम्मिलित हैं), को सुस्पष्ट किया गया है और संख्या 4 के द्वारा सामूहिक अवचेतन के गहनतम अज्ञेय क्षेत्र को बतलाया गया है।

	एक राष्ट्र	राष्ट्र-समूह
1 व्यक्ति	1	1
2 परिवार	2	2
3 जाति	3	3
4 राष्ट्र	4	4
5 मानव समूह	5	5
6. मानव पूर्वज	6	6
7 पशु पूर्वज	7	7
8. आद्य-मूलाधार शक्ति	8	8

आरेख संख्या 9 : सामूहिक अवचेतन सम्भाग के स्तरों का दिग्दर्शन निम्नानुसार है

आरेख संख्या 9 के अन्तर्गत सामूहिक अवचेतन के स्तरों को क्रमशः 1 व्यक्ति, 2 परिवार, 3 जाति, 4 राष्ट्र, 5 मानव समूह 6 आदिम मानव पूर्वज समूह, 7 आदिम पशु पूर्वज समूह तथा 8 अन्तिम स्तरीय केन्द्रीय आद्य प्रकृति शक्ति के द्वारा स्पष्ट करने का यूंग ने प्रयत्न किया है, अर्थात् यूंग ने सामूहिक अवचेतन

भी निम्नतम स्तर को आदि प्रकृति अथवा केन्द्रीय जीवन शक्ति कहा है, जिसको हम "श्राद्य शक्ति स्तर" कह सकते हैं और इस अन्तिम स्तर के आधार को यूंग ने आद्य मातृ शक्ति एवं सनातन ज्ञान-पुरुष (The Great mother and old wise man) भी की संज्ञा से सम्बोधित किया है, जिसको हम भारतीय कल्पना के अनुसार शक्ति एवं "शिव" स्थिति कहा जा सकता है।

यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का प्रायोजन चित्त की संरचना की सम्यक् समझ है। यूंग की मान्यता है कि चित्त की संरचना को भली-भांति समझते हुए चेतन के प्रकाश को अवचेतन में विलय कर देना तथा अवचेतन के मूलाधार में स्थित शक्ति एवं शिव को चेतन पर प्रस्थापित कर देना ही जीवन-प्रवाह का सहज क्रम एवं मंगलमय लक्ष्य है। ज्ञान और कल्याण को एक दूसरे में आत्मसात् कर देना ही अहम का परम पुरुषार्थ है। यूंग ने निःसन्देह किसी दार्शनिक अथवा आध्यात्मिक मत, सम्प्रदाय अथवा विचारधारा को स्थापित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया है किन्तु उसने चित्त की प्रकृति तथा संरचना को सुस्पष्ट करते हुए यह संकेत अवश्य दिया है, कि चित्त के चेतन सम्भाग में स्थित यथार्थ स्वतः अवचेतन में सहज रूप से लय होता रहता है और यथार्थ अनुभव क्रमशः विस्मृति, दमित भावना, संवेग तथा व्यक्तिगत, पारिवारिक, जातिगत, राष्ट्रगत मानव-समूह गत, आदिम-मानव केन्द्रीय शक्ति तथा आधारभूत आद्य-शक्ति शिवतत्व में विलय हो जाता है, और अन्तरतम में स्थित शिव तत्व भी मूलाधार प्रकृति आदिम पशु पूर्वज, आदिम मानव-पूर्वज, मानव-जाति समूह, राष्ट्रीय समूह, परिवार समूह तथा व्यक्तिगत अवचेतन के विभिन्न धरातलों में उभरता हुआ अन्त में चेतन के स्तर पर आलोकित हो जाना चाहिए अर्थात् चेतन का ज्ञान शिव तत्व तक पहुँचता है और अवचेतन का शिव-तत्व चेतन के आलोकमय ज्ञान पर उजागर होना ही मानव अहम एवं जीवन का अन्तिम लक्ष्य या परम पुरुपार्थ है, और जीवन-प्रवाह की इस सहज स्वतः प्रवाह से ज्ञान और शिव का आन्तरिक एक रस बना जाना ही अहम की आत्म-साधना है। इस ज्ञान (सत्य) एवं शक्ति (शिवः कल्याण) का एकाकार हो जाना ही अहम का परम पुरुपार्थ आत्म-दर्शन अथवा अद्वैत की प्राप्ति है। अतः अहम द्वारा चेतन (यथार्थ) और अवचेतन (शक्तिः कल्याणत्र के सामञ्जस की सहज प्रवृत्ति अथवा क्रिया को ही मानव की आत्म-साधना का आदर्श लक्ष्य माना गया है।

यूंग का यह विनम्र संकेत समूचे मानव-समाज को देवमय बनाने के लिए एक दीव्य साधनापथ के निर्माण का सूचक है। ज्ञान और विज्ञान के अनुसन्धान में लगी हुई भावी मानव पीढ़ी के लिए यह एक चुनौती है कि क्या मानव-समाज यूंगीय अनुभववाद के इस तलस्पर्शी सत्य को समझते हुए चेतन में स्थित ज्ञान को अवचेतन की गहराई में स्थित शिव के साथ एकाकार तथा तादात्म करने की क्षमता

रखता है ? यदि मानव इस कल्याणप्रद साधना को भली-भांति हृदयंगम कर सकेगा, तो निःसन्देह चेतन और मूलाधार शिव के सम्मिलन से मानव देवेतर स्थिति को उपलब्ध कर सकेगा, और आगामी सत्य का आलोकमयी एवं कल्याणमय स्थिति की उपलब्धि से समूचे मानव चित्त का उच्चतरीय विकास संभव हो सकेगा। इस प्रकार यूंग द्वारा प्रस्तुत चित्त की संरचना की व्याख्या के माध्यम से आगामी समृद्धि पूर्ण मानव-विकास का सहज एवं दिव्य दिशाबोध हो जाता है। और इसीलिए यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की व्याख्या के साथ ही साथ यूंग द्वारा निर्दिष्ट संकेत को भी मानव-विकास की दृष्टि से भली-भांति हृदयंगम किया जाना वांछनीय एवं कल्याणकारी है।

अध्याय **6**

चेतन की अभिवृत्तियाँ एवं क्रियायें

(The Attitudes and Functions of the Unconscious)

चेतन मन के मनोविज्ञान की व्याख्या प्रस्तुत करते हुये यूंग ने मानव-समाज को अभिवृत्ति की दृष्टि से दो श्रेणियों में बांटने का प्रयत्न किया है। मानव-समाज को वर्ग भेद की दृष्टि से विभाजित करने का यह प्रयत्न अत्यन्त प्राचीन है। लगभग 2000 वर्ष पूर्व ग्रीक-भौतिक शास्त्री गलेन ने मानव जाति को (1) क्रिया प्रधान आशावादी, (2) कफ प्रधान मन्द बुद्धि (3) पित्त प्रधान क्रोधी, तथा (4) उदासीन आदि चार श्रेणियों में बांटने का प्रयत्न किया था, और तब से मानव समूह को अभिवृत्ति की दृष्टि से विभाजन करने का प्रयत्न इतिहास से प्रकट है। यूंग ने अभिवृत्ति की दृष्टि से मानव, समाज को दो श्रेणियों में बांटने का प्रयत्न किया है और उसकी मान्यता है कि अभिवृत्ति की दृष्टि से मानव का चेतन बहिर्मुखी (Extrovert) है अथवा अन्तर्मुखी (Inttovert) है। यूंग का यह श्रेणी विभाजन प्रायः स्वीकार किया जा चुका है, यद्यपि इसकी व्याख्या को भली-भांति हृदयंगम नहीं किया जा सकता है। अतः हमारे लिए परिस्थिति के निर्माण की क्रिया के दौरान में उसके प्रति अहम् द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रिया को अभिवृत्ति की तरह समझते हुये मानव की बाह्यमुखी तथा अन्तःमुखी अभिवृत्ति की व्याख्या को प्रस्तुत करना जरूरी है।*

यूंग का अध्ययन है कि एक वर्ग या श्रेणी का मानव समूह जब कभी कोई स्थिति उसके सन्मुख उपस्थित होती है तो वह उसके प्रति नकारात्मक दृष्टि से प्रति-

---

* मानव समाज को वर्गों में विभाजित किये जाने की प्रेरणा श्री कार्ल गुस्ताव यूंग को प्रसिद्ध आंग्ल विद्वान एफ. जार्डन कृत Character as seen in body and Parentage शीर्षक सन् 1896 में प्रकाशित पुस्तक से प्राप्त हुई। यूंग के सहयोगी डॉक्टर कार्स्टेन्स लॉग ने इस पुस्तक की ओर यूंग का ध्यान आकर्षित किया। फलतः यूंग ने सन् 1912 में अपनी पुस्तक Psychological Types का प्रकाशन किया।

क्रिया व्यक्त करता है, और वह उस स्थिति का आगे वढ़ कर सामना नहीं करना चाहता, अपितु वह अपने आप पीछे की ओर हट जाता है। इस प्रकार की अभिवृत्ति वाले मान-समूह को यूंग ने अन्त:मुखी (Introvert) कहा है, जब कि एक अन्य मानव समूह वर्ग किसी भी स्थिति के प्रसंग पर वह उसके प्रति स्वीकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है और वह उक्त वाह्य जगत् को वस्तु अथवा स्थिति को समझने तथा ग्रहण करने के लिए आगे वढ़ जाता है, और वह अन्दर की ओर से होने वाली हिचकिचाहट को छोड़ देता है। यूंग ने मानव समाज के इस वर्ग अथवा श्रेणी को वहिर्मुखी (Extrovert) कहा है। अर्थात् अन्त:मुखी व्यक्ति वाह्य वस्तु को अस्वीकार करता है, जब कि वाह्यमुखी व्यक्तित्व वाहरी स्थिति, वस्तु को आगे वढ़ कर स्वीकार करने की अभिवृत्ति व्यक्त करता है।

यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि वाह्यमुखी अभिवृत्ति के दौरान में चित्त में स्थित जीवन-प्रवाह वाहर की ओर आमुख हो जाता है, फलत: वाह्यमुखी व्यक्ति वाह्य जगत् में स्थित वस्तु, घटना अथवा परिस्थिति के साथ जुड़ने, समझने तथा तादात्म्य स्थापित करने का प्रयत्न करता है, और वह वाह्य वस्तु, घटना तथा स्थिति को स्वीकार करते हुए उसका समायोजन अपने व्यक्तित्व के साथ सरलता से कर लेना चाहता है। यूंग ने इस श्रेणी के मानव-समाज को वहिर्मुखी वर्ग का व्यक्तित्व कहा है। अत: इस प्रकार की वहिर्मुखी अभिवृत्ति के फलस्वरूप इस श्रेणी का मानव-समूह वाहरी दुनिया की भौतिकता के प्रति आकर्षित होता रहता है और वह वाहरी पर्यावरण से सहज प्रभावित होता पाया जाता है। इस दृष्टि से वहिर्मुखी व्यक्तित्व अधिक सामाजिक प्राणी होता है और वह अनजानी परिस्थितियों का भी साहस और विश्वास के साथ मुकावला करने में प्रवृत्त होता है। वहिर्मुखी व्यक्ति वाहरी दुनियां के साथ रहना चाहता है, वह उसको अधिक रुचि के साथ समझना चाहता है और वाह्य स्थितियों के साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहता है। यदि वहिर्मुखी व्यक्ति दुनिया की किसी परिस्थिति अथवा वस्तु को समझ नहीं पाता तो वह वहस मुहावसा करके तथा लड़ झगड़ कर भी वाहरी स्थितियों को अपने साथ सामञ्जस करना चाहता है।

उपरोक्त अभिवृत्ति के ठीक प्रतिकूल स्थिति को अन्त:मुखी व्यक्तित्व पर लागू किया जा सकता है। अन्त:मुखी अभिवृत्ति के फलस्वरूप मानव किसी भी वाह्य स्थिति, घटना एवं परिस्थिति की उपस्थिति से प्राय: संकोच का अनुभव करता है, और वह उक्त स्थिति एवं वस्तु के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है। अन्त:मुखी व्यक्ति में जीवन प्रवाह का रुख वाहर की तरफ नहीं होकर अन्दर की ओर होता है, फलत: वह वाह्य वस्तु के प्रति संकोच और हिचकिचाहट की प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए बाध्य होता है, और वह वाह्य वस्तु अथवा स्थिति के प्रति उपेक्षा प्रगट करते हुये अपनी आन्तरिक मांग की पूर्ति के हेतु अन्दर की तरफ लौट पड़ने के लिये प्रवृत्त हो

जाता है। इस प्रकार का व्यक्ति प्रायः असामाजिक प्राणी बना रहता है क्योंकि वह समाज से तथा बाह्य परिस्थितियों के साथ विश्वासजनक सम्बन्ध नहीं बना पाता। वह क्रियाशील होने के बजाय प्रायः चिन्तनशील हो जाता है।

प्रायः एक श्रेणी का व्यक्ति दूसरी श्रेणी के व्यक्तित्व के प्रति उपेक्षा का भाव व्यक्त करता है। क्योंकि बहिर्मुखी व्यक्ति अन्तर्मुखी व्यक्ति को अहंकारी एकांकी तथा उलझा हुआ मान लेता है और अन्तर्मुखी व्यक्ति की सम्मति में बहिर्मुखी व्यक्ति प्रायः खुशामदी, ढोंगी तथा छिछला ठहरता है। विरोधी अभिवृत्ति के कारण एक श्रेणी का व्यक्ति दूसरी श्रेणी के व्यक्ति के दोषों की ही गणना करता रहता है, और विरोधी श्रेणी के व्यक्ति के बल और गुण की ओर प्रायः आँख मीच लेता है, और इस प्रवृत्ति के कारण प्रायः एक दूसरे को समझने में बड़ी बड़ी भ्रान्तियां उठ खड़ी होती हैं और इसके आधार पर परस्पर विरोधी मत और सम्प्रदायों तथा विचारधाराओं की टकराहट हो जाती है। क्योंकि दोनों विभिन्न अभिवृत्ति वाले समूह मानव जीवन का अलग अलग प्रकार से मूल्यांकन करने लगते हैं और तदनुसार जीवन की भिन्न-भिन्न प्रकार से व्याख्यायें प्रस्तुत करते हैं।

पश्चिमी देशों में बहिर्मुखी अभिवृत्ति को अधिक महत्व दिया गया है, जब कि भारत सरीखे पूर्वीय राष्ट्रों में अन्तःमुखी अभिवृत्ति को श्रेष्ठ समझा गया है। पश्चिम में बहिर्मुखी व्यक्तित्व को साहसी तथा उत्तम समायोजित समझा जाता है और अन्तःमुखी व्यक्तित्व को स्वार्थी, निरुत्साही, पराजित तथा उदासीन माना है। जबकि पूर्वीय देशों में बहिर्मुखी व्यक्ति को दिखावटी, आदर्शहीन तथा व्यवसायी समझा जाता है। अभिवृत्ति के इस दृष्टि भेद के फलस्वरूप पश्चिमी राष्ट्र भौतिकता तथा व्यवसाय की दृष्टि से प्रायः अधिक विकसित एवं उन्नत पाये जाते हैं, तथा पश्चिमी देशों के लोगों की आर्थिक स्थिति तथा भौतिक समृद्धि, तथा विज्ञान संगत तकनीकी विकास अधिक पाया जाता है और क्योंकि पूर्वीय राष्ट्रों में आदर्शवाद, तथा आध्यात्मिकता पर अधिक बल दिया जाता है, फलतः पूर्वीय राष्ट्र पश्चिमी राष्ट्रों की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से असंगठित तथा विज्ञान और तकनीकी दृष्टि से अल्प समृद्ध रह गये हैं। फलतः पश्चिमी राष्ट्रों में अधिक हलचल तेजी तथा तनाव दृष्टिगोचर होता है जबकि पूर्वीय राष्ट्रों में पश्चिम की अपेक्षा अधिक शान्ति, मन्दी तथा ढीलापन नजर आता है।

यूंग ने अपनी पुस्तक "साइकोलोजिकल टाइप्स" के अन्तर्गत बहिर्मुखी तथा अन्तःमुखी अभिवृत्तियों की ऐतिहासिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए इन अभिवृत्तियों का दर्शन, तथा धर्म के विकास पर होने वाले प्रभाव को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है, तथा उसने काव्य, सौंदर्यशास्त्र तथा मनोविज्ञान पर इन अभिवृत्तियों द्वारा होने वाले असर की भी व्याख्या प्रस्तुत की है। यूंग ने अभिवृत्तियों की दृष्टि से फ्रायड के मनोविश्लेषणशास्त्र को बहिर्मुखता से प्रभावित माना है, क्योंकि फ्रायड

ने वाह्य[1] जगत् में स्थित मानव व्यवहार के अध्ययन पर ही सर्वोपरि महत्व दिया है, जबकि एडलर तथा स्वयं यूंग के विश्लेषण के अन्तर्गत व्यक्ति के आन्तरिक जीवन की वृत्तियों पर विशेष प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है, और स्वअनुभूति पर महत्व दिये जाने के फलस्वरूप एडलर तथा यूंग की व्याख्याओं में अन्तःमुखी अभिवृत्ति के सहज दर्शन होते हैं। यूंग के अध्ययन की विषयवस्तु विशेषतः सामूहिक अवचेतन है, अतः यूंग की विशेष रुचि "अन्तर विश्व" की ओर है, फलतः यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को अन्तर्मुखी अभिवृत्ति का अध्ययन कहा जा सकता है।

अतः चेतन का, स्वभावजन्य अभिवृत्ति की दृष्टि से यूंग ने मानव समाज को वहिर्मुखी अथवा अन्तःमुखी वर्गों समाज में विभक्त किया है। वहिर्मुखी अभिवृत्ति के अन्तर्गत वाह्य वस्तु, घटना परिस्थिति अथवा वाह्य भाव को अधिक महत्व दिया जाता है, अतः अहम् जीवन के प्रवाह के द्वारा वाह्य जगत् की ओर आकर्षित होता है। अतः इसको वस्तुप्रधानतावादी, यथार्थवादी, भौतिकवादी अथवा वाह्य जगतवादी अभिवृत्ति भी कहा जा सकता है। राज्य नेता, समाज सुधारक, सामाजिक कार्यकर्ता, योद्धा, विद्यार्थी, व्यवसायी, राज्य अधिकारी, श्रमिक, किसान, उत्पादक, आदि वर्ग प्रायः वहिर्मुखी प्रधान पाया जाता है, जबकि अन्तःमुखी अभिवृत्ति के फलस्वरूप अहम् द्वारा जीवन प्रवाह की दिशा अन्दर की ओर पाई जाती है, और इस प्रवृत्ति को आत्मवादी, आध्यात्मवादी अथवा विषयीवादी कहा जाता है और प्रायः चिन्तक, दार्शनिक, कवि, चित्रकार, साधक आदि वर्ग में अन्तर्मुखी अभिवृत्ति की प्रधानता पायी जाती है।

कुछ व्यक्तियों में दोनों प्रकार की अभिवृत्तियों का सन्तुलन भी देखा गया है, किन्तु ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम पायी जाती है, प्रायः व्यक्ति अन्तर्मुखी प्रधान अथवा वहिर्मुखी प्रधान ही पाये जाते हैं, किन्तु अन्तर्मुखी प्रधान में वहिर्मुखता का सर्वथा अभाव होना अथवा वहिर्मुखी व्यक्तित्व में कभी भी अन्तर्मुखता का उदय नहीं होना माना जाना भी एक भ्रान्ति है। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति में दोनों अभिवृत्तियों का सम्मिश्रण पाया जाता है और काल तथा स्थान के अनुसार प्रत्येक चेतन मन की अन्तर्मुखता अथवा वहिर्मुखता में कमी-वेशी भी होती रहती है, किन्तु अभिवृत्ति की स्वभावजन्य अधिकता के फलस्वरूप ही अन्तर्मुखी अथवा वहिर्मुखी अभिवृत्ति का वर्गीकरण किया जाता है। मानव चित्त निरन्तर स्वतः संचालित जीवन प्रवाह से परिपूर्ण है, अतः अभिवृत्तियों की परस्पर अदला-वदली किया जाना भी संभव है।

उदाहरण के लिए एक व्यक्ति है जो प्रायः स्वभाव से शान्त और उदासीन वृत्ति का है, इसको हम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व कहेंगे, किन्तु यह अन्तर्मुखी व्यक्ति भी किसी विशेष परिस्थिति के अन्तर्गत यदा कदा उत्तेजित तथा उत्साहपूर्ण नजर आता

है और वह भी उक्त वाह्य वस्तु के प्रति तीव्र आकर्षण व्यक्त करने लगता है, यद्यपि वह उक्त वाह्य वस्तु अथवा पर्यावरण से वहिर्मुखी व्यक्ति के समान सहज भाव से समायोजित नहीं पाया जाता, फिर भी तत्कालीन समय और स्थिति में उसके व्यवहार को वहिर्मुखी ही कहा जाता है।

अभिवृत्तियों का यह भेद प्रायः जीवन के प्रारम्भकाल से ही स्पष्ट होने लगता है, अतः इस दृष्टि से अभिवृत्ति को सहज माना जा सकता है। एक ही परिवार में कुछ वालक वहिर्मुख प्रधान पाये जाते हैं तो कुछ वालक अन्तर्मुखी भी देखे गए हैं, किन्तु अन्तर्मुखी वालक प्रायः मन्द समझे जाते हैं क्योंकि उनको वाह्य जगत् और स्थितियों को समझने का कम अवसर मिलता है जो उनके दुर्भाग्य का सूचक माना जाता है। अन्तर्मुखी वालक प्रायः शर्मीला, हिचकिचहट भरा पाया जाता है और वह नयी वस्तु अथवा नवीन परिस्थिति को समझने अथवा सामना करने में संकोच अथवा भय व्यक्त करता है और प्रायः एकाकी, एवं उदासीन रह जाता है जबकि वहिर्मुखी प्रधान वालक तेजस्वी तथा समायोजित एवं समझदार माना जाता है और उसमें आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता के गुणों का अधिक विकास पाया जाता है।

प्रायः वहिर्मुखी प्रधान व्यक्ति सुखवादी एवं उत्साहपूर्ण पाया जाता है और अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल वह अपना मित्रवर्ग अथवा समाज को ढूँढ़ निकालने में सफल हो जाता है तथा जीवन और समाज के साथ वह उत्तम सामञ्जस वना लेता है। इस श्रेणी का व्यक्ति मित्रता स्थापित करने में बड़ा तेज रहता है, किन्तु इस श्रेणी का व्यक्ति मित्रता के निर्वाह में कमजोर भी पाया जाता है। बहिर्मुखी प्रधान व्यक्ति समाज में अपना अच्छा स्थान वनाने की दृष्टि से पटु पाया गया है किन्तु उसकी अधिक सामाजिकता की प्रवृत्ति में उसका दोष भी छिपा पड़ा है, प्रायः बहिर्मुखी व्यक्ति केवल ऊपरी सतह तक ही अच्छा प्रभाव डालने में सक्षम होता है, वह स्वयं अकेलेपन से घबराता है, वह आत्मचिन्तन के प्रति अरुचि प्रगट करता है और आत्म आलोचना से भड़कता है, वह आत्म निरीक्षण से हमेशा कतराता है और अपनी गलतियों को सुधारने के लिए कभी भी सचेष्ट नहीं हो पाता, वह प्रायः दुनियाँ की तड़क-भड़क के मोह में पड़ा रहता है, और वह दुनिया की चकाचौंध में न केवल अपने आप को ही भूल जाता है किन्तु वह अपने परिवार और समाज की भी उपेक्षा कर वैठता है। वह प्रायः समाज में सम्मत सिद्धान्तों और नैतिकता के आदर्शों को वगैर परीक्षण के स्वीकार कर लेता है।

अन्तर्मुखी प्रधान व्यक्ति समाज से कतराता है और वह प्रायः एकाकी वना रहना चाहता है, फलतः वह सामाजिकता का सुयोग्य विकास नहीं कर पाता है, अतः वह कभी-कभी समाज में या तो अधिक वाचालता का प्रदर्शन कर वैठता है तो कभी-कभी सामाजिक परिस्थितियों में अनुपयुक्त चुप्पी धारण कर लेता है। इस

प्रकार का व्यक्ति प्रायः जीवन के प्रति निराशावादी अथवा आलोचक बन जाता है, अन्य व्यक्तियों की निगाह में उसको प्रायः स्वार्थी और अहंकारी समझा जाता है। अन्तर्मुखी प्रधान व्यक्तियों में भी कभी-कभी उदारता, सौजन्यता और सहायता वृत्ति का उत्तम विकास भी देखा जाता है, किन्तु उनमें वहिर्मुखी व्यक्तित्व की अपेक्षा कम सामाजिकता पायी जाती है। विशिष्टता तथा आन्तरिक गुणों के विकास की दृष्टि से अन्तर्मुखी, वहिर्मुखी की अपेक्षा अधिक समृद्ध पाया जाता है, क्योंकि बहिर्मुखी व्यक्तित्व तो अपने गुणों के प्रदर्शन में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेता है।

एकान्त अथवा एकांकी स्थिति में अन्तर्मुखी व्यक्ति अपने श्रेष्ठत्व का परिचय देता है, वह अपने अकेलेपन में अथवा उसके मर्यादित समाज में ही प्रसन्न रहता है, वह अपने कार्य तथा विचारों को एक मर्यादित क्षेत्र तक ही सीमित रखना चाहता है और वह बाहरी शोरगुल से सदैव बच कर रहना पसन्द करता है। उसे यश का लोभ भी प्राय: मर्यादित रहता है। वह अपने विचारों और दृष्टिकोणों के प्रति दृढ़ता रखता है और सर्वसम्मत सार्वजनिकता के प्रति उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करता है। सार्वजनिकता के अभाव के उपरान्त भी कभी-कभी अन्तर्मुखी व्यक्ति ईमानदार तथा महत्वपूर्ण मित्र जुटाने में सफल देखा गया है।

यह भी स्पष्ट है कि प्राय: विभिन्न अभिवृत्ति प्रधान स्वभाव के फलस्वरूप एक अभिवृत्ति प्रधानता का व्यक्ति दूसरे की अभिवृत्ति प्रधानता के प्रति रोष एवं भ्रान्ति प्रगट करता है, क्योंकि भिन्न-भिन्न अभिवृत्ति प्रधानता के व्यक्तियों के द्वारा जीवन के अलग-अलग उद्देश्यों को महत्व दिया जाता है।

वहिर्मुखी व्यक्तित्व वाह्य जगत् को तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व आन्तरिक स्थिति को ही अधिक महत्वपूर्ण समझता है, फलतः इन दोनों भिन्न-भिन्न अभिवृत्ति वाले व्यक्तियों के बीच विचारों की टकराहट होना स्वाभाविक है, फलत: वहिर्मुखी व्यक्ति अन्तर्मुखी व्यक्ति को अहंकारी अथवा मंदबुद्धि कहकर तिरस्कार करता है तो अन्तर्मुखी व्यक्ति वहिर्मुखी को छिछला और बेइमान कहता है। इन पारस्परिक भ्रांति के फलस्वरूप इनके विवाहित जीवन में भी कभी-कभी बड़ी कटुता तथा विक्षेप उत्पन्न हो जाता है। किन्तु बहुधा वहिर्मुखी पुरुष द्वारा अन्तर्मुखी प्रधान महिला से विवाह के लिए आकर्षित होना पाया जाता है, और वहिर्मुखी महिला अन्तर्मुखी पति की तलाश कर लेती है। क्योंकि यद्यपि चेतन की दृष्टि सेउनकी अभिवृत्तियों में अन्तर है, फिर भी उनके अवचेतन का उन पर यह निरन्तर प्रभाव पड़ता है कि चेतन स्तरीय अभिवृत्तियों के अन्तर के चुनाव से उनकी आपसी कमी की क्षतिपूर्ति हो सके। पति और पत्नी मिलकर ही परिवार की इकाई बनाते हैं, अतः संयुक्त विवाह जीवन का चुनाव करते समय पति-पत्नी परस्पर-विरोधी अभिवृत्ति प्रधान जीवन साथी का चुनाव अवचेतन के प्रभाव से करते रहते हैं। प्रत्येक पति तथा प्रत्येक पत्नी अवचेतन के प्रभाव के फलस्वरूप यह पसन्द करते हैं कि उसका

पति अथवा उसकी पत्नी उसकी अविकसित प्रवृत्ति अथवा उसकी कमी के लिए परस्पर पूरक सिद्ध हो। एक शान्त उदासीन तथा व्यवहारिकता से शून्य अन्तर्मुखी पति यह चाहता है कि उसकी पत्नी सामाजिकता के निर्वाह के लिए सक्षम हो तथा वह उसकी अपेक्षा अधिक सामाजिकता से परिपूर्ण हो, अतः वह एक वहिर्मुखी पत्नी के पाश में बंध जाना पसन्द करता है, ताकि पति-पत्नी के सामाजिक बन्धन के फल-स्वरूप उसके चेतन तथा अवचेतन की इकाई को भी शक्ति मिले, और वह अपनी व्यावहारकुशल पत्नी की मदद से समाज में सरलतापूर्वक जीवन सामञ्जस स्थापित कर सके और वह अपनी पत्नी पर समाजकीय उत्तरदायित्व सौंप कर अपनी विशेषता एवं आन्तरिक प्रवृत्तियों के विकास में सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग कर सके। इस प्रकार का समझौता प्रायः वैवाहिक स्तर पर सामान्यतः सफल भी पाया जाता है, क्योंकि दोनों पति पत्नी एक दूसरे की अभिवृत्तियों को समझते हुए एक दूसरे की कमियों की क्षतिपूर्ति के लिए जागरूक रहने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार की स्थिति आदर्श विवाहित जीवन की सूचक है, जो गहरे आन्तरिक प्रेम पर आधारित पायी जाती है। किन्तु यदि पति पत्नी के बीच प्रेम का अभाव हो जाता है तो यह आपसी समझ भी कमजोर हो जाती है और ऐसी स्थिति में अभिवृत्तियों के अन्तर के फलस्वरूप होने वाली टकराहट गहरी और भयानक हो जाती है और पति पत्नी का विवाहित जीवन क्लेशपूर्ण, असामाञ्जसकारी तथा भयावह बन जाता है और पति पत्नी का पारस्परिक सम्बन्ध विशृंखलित तथा क्लेश ग्रस्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में पति पत्नी परस्पर एक दूसरे के कठोर आलोचक बन जाते हैं और एक दूसरे के कार्यकलापों तथा जीवन के दृष्टिकोणों के प्रति आक्रोश प्रकट करते हैं, तथा उनके मित्र, समाज वर्ग के प्रति भी आवश्यक समझदारी तथा सहानुभूति का निर्वाह नहीं कर पाते, और इसके फलस्वरूप पति पत्नी की सामाजिक इकाई भी विवाह विच्छेद के द्वारा यदाकदा टूट जाती है।

यूंग ने स्वभावजन्य मानव की क्रिया शीलता और निष्क्रियता को लक्षित करते हुए यह अनुभव किया कि मानव समूह में दो विशिष्ट प्रकार के वर्ग पाये जाते हैं, मानव-समाज का एक वर्ग विशेष जो किसी घटना, स्थिति अथवा वाह्य वस्तु की उपस्थिति से सर्वप्रथम विचार करने की ओर प्रेरित होता है, और वह सोच विचार के पश्चात् ही उक्त वस्तु अथवा स्थिति को ग्रहण करता है, अथवा उसके साथ समझ के द्वारा सामञ्जस स्थापित करता है, जबकि दूसरा मानव समाज वर्ग सर्वप्रथम प्रस्तुत स्थिति, घटना अथवा वस्तु की ओर स्वभावतः क्रियाशील हो जाता है, और बगैर सोचे समझे उसको स्वीकार कर लेता है, अर्थात् इस श्रेणी का व्यक्ति उक्त वाह्य वस्तु अथवा स्थिति की ओर सहज ही कूद पड़ता है, अतः उसकी क्रिया, विचार-हीन होती है। फलतः पहिली श्रेणी का व्यक्ति विषयी प्रकार (Subjective type) का है, जबकि द्वितीय श्रेणी को तीव्र क्रियाशील व्यक्तित्व वस्तु-प्रकार

(Objective type) का व्यक्तित्व है। पहिले प्रकार का व्यक्ति सोचने समझने के वाद वाह्य वस्तु अथवा स्थिति के संबंध स्थापित करता है, जबकि दूसरे प्रकार के व्यक्ति सर्वप्रथम सम्पर्क स्थापित करने के बाद ही सोच विचार करना प्रारम्भ करता है। यूंग ने मानव समाज द्वारा अभिव्यक्त उक्त दो प्रकार की प्रतिक्रियाओं का गम्भीर अध्ययन एवं अनुभव करते हुए इन अभिवृत्तियों को अन्तर्मुखी तथा वहिर्मुखी वृत्तियों का नामकरण किया है। यूंग ने उसके तत्कालीन मनोविश्लेषक फ्रायड़ तथा एडलर की कार्य पद्धतियों का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए इन दोनों विद्वानों के परस्पर विरोधी पहलुओं को समझने का भी प्रयत्न किया है। यूंग ने यह अनुभव किया है कि फ्रायड़ द्वारा मनस्ताप की समझ एक विशेष प्रकार से की जाती है. जब कि एडलर द्वारा मनस्तापी की व्याख्या एक अन्य प्रकार से की जाती है। यूंग ने इन दोनों विद्वानों के उपागमों की सरलता और युक्तिसंगतता का अनुभव करते हुए इस भेद को हल करने की कोशिश की, इन दोनों विद्वानों के उपागम में भेद क्या है तो उसको पता चला कि फ्रायड का रास्ता वस्तु प्रधान अभिवृत्ति से प्रेरित है, और एडलर की पद्धति विषयी-प्रधान अभिवृत्ति से प्रभावित है। इन दोनों पद्धतियों के भेद को स्पष्ट करने की दृष्टि से इन विभिन्न प्रणालियों को क्रमशः वहिर्मुखी अभिवृत्ति तथा अन्तःमुखी अभिवृत्ति कहा गया, और इस अध्ययन अनुभव के आधार पर उपरोक्त दो प्रकारों के अन्तर्गत यूंग ने मानव-समाज का विभाजन प्रस्तुत किया है। इस प्रकार यूंग ने सम्पूर्ण चित्तीय प्रक्रियाओं (All psychic process) को स्वभाव जन्य प्रतिक्रिया (Habitual reaction) की दृष्टि से सुस्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। मानव के अन्तःनिहित इस स्वभाव को यूंग ने केन्द्रीय स्विच वोर्ड माना है जहां से एक ओर वाह्य व्यवहार तथा दूसरी ओर से विशिष्ट अनुभव स्वतः नियन्त्रित होता है। अर्थात् अन्तर्मुखी अथवा वहिर्मुखी व्यक्तित्व नमूने की अभिवृत्तियां हैं, जिसका अर्थ यह है कि इसके मूल में एक अभिनति (Bias) है जो सम्पूर्ण चित्तीय प्रक्रियाओं को संचालित करते हुए स्वभावजन्य प्रतिक्रियात्मक व्यवहार को स्थापित करती है, जिससे न केवल उसकी व्यवहारित विशेषता प्रगट होती है अपितु उसकी विषयी-प्रकृति का अनुभव भी व्यक्त होता है। और चेतन की इस दोहरी प्रतिक्रिया के साथ ही साथ अवचेतन की क्षतिपूर्तिजन्य क्रिया भी परिलक्षित होती है। यूंग ने प्रायः दस वर्ष के अनुभव के आधार पर उपरोक्त दोनों प्रकार की अभिवृत्तियों का विवेचन प्रस्तुत किया है।*

निःसन्देह अन्तःमुखी व्यक्ति की प्रतिक्रिया उसके विषयी कारकों द्वारा प्रभावित होती है, अतः वह वाह्य जगत् के साथ उत्तम समायोजन के लिये प्रायः

---

* C. G. Jung : Modern man in search of a soul, 1945 Edition at page 99-100.

असफल पाया जाता है, जब कि वहिर्मुखी व्यक्ति की विशेषता वाह्य वस्तु के साथ स्वीकारात्मक सम्बन्ध स्थापना में निहित है, अतः वहिर्मुखी व्यक्ति का वाह्य वस्तु के उत्तम समायोजन सहजपूर्ण हो जाता है, किन्तु वहिर्मुखी व्यक्ति को भी वाह्य वस्तु के सम्बन्ध में सोचना, समझना पड़ता है और उसको भी वस्तु के प्रति क्रियाशील होना पड़ता है, किन्तु उसका यह सोचना, समझना और क्रियाशील होना एक भिन्न प्रकार का है, जबकि यही सोचना, समझना और क्रियाशील होना एक अन्तर्मुखी के लिए अलग प्रकार का है। अन्तर्मुखी व्यक्ति का सोचना, समझना और क्रियाशील होने का प्रारंभ विन्दु विषयी वह स्वयं है, और वस्तु का महत्व दूसरे दर्जे का है, जबकि वहिर्मुखी व्यक्ति का सोचना समझना और क्रियाशील होना वस्तु के संघात मात्र से प्रारम्भ हो जाता है, क्योंकि उसके लिए वस्तु का महत्व ही सर्वोपरि है और उसके लिए सोचना, समझना तथा व्यवहार करना वाद की घटना है, अतः घटनाक्रम की दृष्टि से वहिर्मुखी वस्तु के प्रति सहज स्वीकारात्मक तथा विषयी के प्रति सर्वप्रथम उपेक्षा वृत्ति को व्यक्त करता है, जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाह्य वस्तु के प्रति सर्वप्रथम निषेधात्मक तथा विषयी के प्रति सहज सर्वप्रथम स्पंदन का अनुभव करता है, और इस चित्तीय प्रक्रिया को हम जीवन प्रवाह का वाहर की ओर वह निकलना अथवा अन्दर को प्रवाहित हो जाने के अर्थ में अनुभव करते हैं। यूंग ने यह भी स्पष्ट किया है कि जीवन शक्ति यह सहज स्वतः प्रवाह ही मनोवैज्ञानिक ऊर्जा है, और जिसका संचालन जन्म से लेकर मृत्यु तक अर्थात् सम्पूर्ण जीवन के दौरान में सर्वोपरि महत्व का है। क्रियायें तो जीवन के स्वतः प्रवाह का परिणाम हैं अतः इनका महत्व अभिवृत्तियों के वाद ही माना जा सकता है। अतः हमें मानवीय क्रियाओं के विवेचन को मानवीय अभिवृत्तियों की अपेक्षा कम महत्व देना चाहिए। इस दृष्टि से यूंग ने मानव स्वभाव में पाई जाने वाली वहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी अभिवृत्ति के सुस्पष्ट विवेचन पर भी अधिक जोर दिया है, और आगे जाकर उसको यह वतलाया है कि मानवीय क्रियाओं के प्रकार भेद से भी मानव चित्त का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाना उपयोगी सिद्ध हो सकता है।* इसी अध्याय के अन्तर्गत यथास्थान हम मानव-चित्त सम्बन्धी चतुर्मुखी क्रियाओं (संवेदन विचार, भावना तथा अन्तः प्रज्ञा) की व्याख्या प्रस्तुत करेंगे। यहां पर तो यह उल्लेख मात्र इस दृष्टि से किया गया है कि यूंग ने यह माना है कि यद्यपि मानव-समाज मुख्यतः दो श्रेणियों अथवा वर्गों में अभिवृत्ति की दृष्टि से विभाजित किया गया है, फिर भी सभी अन्तर्मुखी समुदाय का यद्यपि अभिवृत्ति की दृष्टि से सामान्यतः एक वाह्य वस्तु के प्रति निषेधात्मक रुख प्रायः एक सा नहीं होता, किन्तु इनके निषेधात्मक प्रतिक्रिया में भी अन्तर्मुखी व्यक्तियों के वीच परस्पर अन्तर देखा जा सकता है और एक ही वर्ग विशेष व्यक्तियों के समाज में जो यह अन्तर देखा जाता है, उसका कारण उस समाज

* Ibid page 101.

के व्यक्तियों में पायी जाने वाली क्रियात्मक ही भिन्नताओं का परिणाम है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति उसकी क्रियात्मक इकाई के गठन के अनुरूप भी भिन्न-भिन्न प्रकार से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। जैसे सिंह में अपने शिकार पर सर्वप्रथम अपने अगले पंजे से प्रहार करता है, तो घड़ियाल उसके शिकार को अपनी पूंछ से आक्रांत करता है, अतः व्यक्तिगत रूप से जिस व्यक्ति में जो क्रिया (Function) बलवती और सक्षम होती है, वह उसके अनुरूप ही प्रतिक्रियात्मक वर्तन करता है। मानव द्वारा अपनी इस विशिष्टता का उपयोग जीवन निर्वाह के लिए किया जाना, यूंग की एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी खोज है, और इस खोज की विस्तृत व्याख्या मानव चित्त सम्बन्धी क्रियाओं के सन्दर्भ में यथास्थान पर प्रस्तुत की जायगी।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का आधार चित्त की इकाई है, और इस इकाई का निर्वाह चित्त के दोनों सम्भाग चेतन तथा अवचेतन की परस्पर क्षतिपूर्ति क्षमता के सन्तुलन से होना स्वीकार किया गया है, अतः अन्तर्मुखी तथा वहिर्मुखी अभिवृत्तियों का परस्पर निर्वाह इन दोनों के बीच प्रतिपूर्ति क्षमता सम्बन्ध में निहित है। यदि चेतन स्तर पर व्यक्ति की अभिवृत्ति वहिर्मुखी है तो प्रतिपूर्ति सिद्धान्त के अनुसार उसी व्यक्ति का अवचेतन अन्तर्मुखी पाया जायगा, और इसी कारण अन्तर्मुखी चेतन का सम्भाग वहिर्मुखी अवचेतन ही होगा। तथा वहिर्मुखी का अवचेतन अन्तर्मुखी पाया जायगा। इसलिए जब कभी वहिर्मुखी व्यक्तित्व में भी अवचेतन का उभार आता है तो उस समय में वह बाह्य जगत् के प्रति सम्यक् सामंजस्य स्थापित करने में असफल नजर आता है और वहिर्मुखी प्रधान व्यक्ति को भी अहंवादी तथा कटु आलोचक मान लिया जाता है इसका परिणाम प्रायः दुःख अथवा निरर्थक संघर्ष के रूप में देखा जाता है। इसी तरह जब कभी अर्न्तमुखी व्यक्ति के अवचेतन का विस्फोट हो जाता है तो वह व्यक्ति प्रायः असफल एवं निम्नकोटि का वहिर्मुखी नजर आता है।

अतः चेतन स्तरीय स्वभाव के फलस्वरूप निर्मित अन्तर्मुखी अथवा वहिर्मुखी प्रधान चित्तवृत्ति मानव जीवन विकास का प्रथम चरण है, किन्तु जीवन की सम्पूर्णता के अनुभव के लिए मानवीय क्रियाओं का सम्यक् ज्ञान भी अपेक्षित है, और इसलिए अनुभव को भलीभांति समझने के लिए अभिवृत्ति-परिचय के साथ ही साथ उसकी क्रियात्मक प्रणाली को भी समझ लेना जरूरी है क्योंकि क्रियात्मक समन्वय प्रणाली को समझे बिना केवल अभिवृत्ति प्रेरित टकराहट में मानव चित्त उलझा रह सकता है, अतः अभिवृत्ति जन्य परस्पर टकराहट को टालने की दृष्टि से तथा उसके फलस्वरूप होने वाली भ्रांति दृष्टि के निराकरण के उद्देश्य से मानवीय क्रियाशीलता की चतुर्मुखी प्रवृत्तियों को समझ लेना आवश्यक है। यूंग ने अभिवृत्ति वर्गीकरण (Attitude classification) के अध्ययन के साथ ही साथ मानव में पायी जाने वाली स्वभावजन्य चार प्रक्रियाओं का भी पता लगाया है। उसने यह अनुभव किया

कि चाहे व्यक्ति अन्तःमुखी हो या वहिर्मुखी अभिवृत्ति वाला हो यह सदैव क्रियाशीलता की दृष्टि से चार प्रवृत्तियों में से किसी एक प्रवृत्ति का अधिक उपयोग करता है, और उसके द्वारा प्रयुक्त प्रवृत्ति के चुनाव पर ही प्रायः उसकी अभिवृत्तियों की सफलता विफलता आधारित पायी जाती है।

यूंग ने चित्त की चार प्रवृत्ति कार्यों की व्याख्या की है, इन चार प्रक्रियाओं को उसने (1) संवेदन (Sensation) (2) चिन्तन (Thinking) (3) भावना (Feeling) (4) अतः प्रज्ञा (Intuition) कहा है। यूंग ने उपरोक्त चारों कार्य अथवा प्रवृत्तियों की व्याख्या करते हुए संवेदन को "इन्द्रियजन्य प्रत्यक्ष" कहा है, चिन्तन को अर्थ तथा समझ प्रदान करने वाली प्रक्रिया माना है; तथा भावना को मूल्यांकन करने वाली प्रवृत्ति माना है तथा अन्तःप्रज्ञा को इन्द्रियातीत सहज अनुभूति माना है, अर्थात् अन्तःप्रज्ञा को अवचेतन प्रत्यक्ष कहा गया है।

प्रक्रिया की दृष्टि से मानव-समूह का उपरोक्त चार वर्गों में विभाजन किया जाना एक असाधारण अनुसंधान है। यूंग ने यह विभाजन किसी पूर्वाग्रह के आधार पर अथवा अपनी मन की तरंग के आधार पर नहीं किया है अपितु यूंग ने यह अनुभव किया कि कुछ लोग स्वभावतः चिन्तन पर अधिक बल देते हैं और प्रायः चिन्तन प्रधान व्यक्ति क्रिया सम्पादन के दौरान में अथवा निर्णय लेने की नाजुक घड़ी में भी सोचने विचारने को ही अधिक महत्व देते हैं, ऐसे व्यक्ति प्रायः सभी ओर से सोच समझ लेना पसन्द करते हैं, चाहे चिन्तनीय वस्तु वाह्य जगत में स्थित हो अथवा यह चिन्तन स्वयं की क्षमता मापन के सम्बन्ध में हो, अर्थात् उक्त चिन्तन प्रधान व्यक्ति अभिवृत्ति की दृष्टि से चाहे वहिर्मुखी हो अथवा अन्तर्मुखी हो। ऐसा व्यक्ति अपने स्वभाव से ही सर्वप्रथम चिन्तन क्रिया में प्रवृत्त होता है और इस श्रेणी का व्यक्ति अपने प्रत्येक कार्य अथवा निर्णय के अर्थबोध पर ही विशेष महत्व देते पाये जाते हैं। यूंग ने इस प्रकार के कार्य वालों को चिन्तन प्रधान वर्ग माना है। यूंग ने चिन्तन कार्य के अलावा एक अन्य वर्ग को मुख्यतः भावना ग्रस्त होना अनुभव किया, इस वर्ग का व्यक्ति प्रायः भावना से ही क्रियान्वित अथवा संचालित होते पाये जाते हैं। भावना प्रधान व्यक्ति चिन्तन को कम महत्व देता है और प्रायः अपनी भावना के प्रवाह में स्वतः वह निकलता है। उनके लिए सोचना समझना या तो कायरता है अथवा वृथा समय नष्ट करना है, ऐसा व्यक्ति अपने गहनतम अहम में प्रतिष्ठापित किसी उद्देश्य, आदर्श अथवा महत्वाकांक्षा के पीछे अथवा अपनी धुन से प्रेरित होकर कर्म क्षेत्र में प्रवृत्त होता देखा गया है, और ऐसा व्यक्ति अपने कार्यों का मूल्यांकन स्वयं निर्मित आदर्शों के आधार पर ही करता है। यूंग ने चिन्तन तथा भावना को परस्पर विरोधी प्रक्रिया माना है। यूंग की मान्यता है कि जो व्यक्ति चिन्तन प्रधान होता है वह भावना की दृष्टि से अल्प विकसित पाया जाता है और भावना प्रधान व्यक्ति में सोचने विचारने की क्षमता का अल्पतम विकास पाया जाता है। इस प्रकार कार्य

एवं क्रियाशीलता की दृष्टि से चिन्तन प्रधान व्यक्ति एवं भावना प्रधान व्यक्ति में परस्पर विरोध नजर आता है, किन्तु उपरोक्त दोनों प्रकार के व्यक्तियों में तर्क बुद्धि का भाव पाया जाता है अर्थात् चिन्तक तथा भावुक दोनों में साधारणतः तर्क बुद्धि (Rationality) पायी जाती है। क्योंकि चिन्तन तथा भावना दोनों क्रियाओं का संबंध मूल्यांकन से पाया जाता है, जबकि चिन्तन के अन्तर्गत मूल्यांकन का स्वरूप सत्य-असत्य के रूप में पाया जाता है तो भावना के अन्तर्गत मूल्यांकन रुचि-अरुचि एवं अभिरुचि के स्वरूप में किया जाता है। उपरोक्त दोनों क्रियाओं के दौरान में व्यक्ति मूल्यांकन की दृष्टि से अपनी तर्कबुद्धि का उपयोग करता है, अतः यूंग ने चिन्तन और भावना को तर्क बुद्धि संगत मनोवैज्ञानिक कार्य माना है, यद्यपि चिन्तन के कार्य के दौरान में व्यक्ति वस्तु पर स्थिति के बावत सोच समझकर विचार की मदद से उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है और इस कार्य में वह अपनी संज्ञानवृत्ति का उपयोग करते हुए उसकी यथार्थता अथवा असत्यता का निर्णय करता है, किन्तु भावना के कार्य के दौरान में व्यक्ति अपनी पसन्दगी अथवा नापसंदगी के आधार पर ही बाह्य वस्तु को गृहण अथवा अस्वीकार करने की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

उपरोक्त दो भिन्न भिन्न प्रकार के तर्क बुद्धि संगत कार्यों के अलावा यूंग ने यह भी अनुभव किया कि मानव समाज एक विशिष्ट वर्ग स्वभाव से ही केवल मात्र संवेदन से प्रभावित हो जाता है और ऐसा मानव समूह जो कुछ उसके सम्मुख प्रत्यक्ष होता है, उसको वह बगैर तर्क वितर्क के अनायास ही स्वीकार अथवा अस्वीकार कर लेता है। संवेदन की क्रिया के दौरान में चित्त इन्द्रियों के माध्यम से जो कुछ प्रत्यक्ष करता है उसके मूल्यांकन को परेशानी में पड़े बिना वह उन्हें स्वीकार अथवा अस्वीकार कर लेता है। यूंग ने इसको संवेदन प्रधान प्रक्रिया कहा है। इसी प्रकार कुछ अन्य किस्म का समूह अन्तःप्रज्ञा के माध्यम से प्रायः अवचेतन स्तरीय सत्य को ग्रहण अथवा ठुकरा देता है, अंतःप्रज्ञा को यूंग ने अवचेतन का प्रत्यक्ष भी कहा है, क्योंकि अन्तःप्रज्ञा के अन्तर्गत वस्तु का सम्पर्क इन्द्रियों के माध्यम से नहीं होता, फिर भी अपने आप वस्तु का अर्थबोध मानव चित्त सहज प्रकार से कर लेता है। सवेदन तथा अंतःप्रज्ञा की क्रिया को यूंग ने तर्क बुद्धि से स्वतंत्र माना है, क्योंकि संवेदन अथवा अन्तःप्रज्ञान की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति में कोई चुनाव अथवा मूल्यांकन करने का अवसर ही नहीं पाया जाता अतः संवेदन तथा अन्त.प्रज्ञा की प्रक्रियाएं वुद्धि तर्क विहीन है और इस प्रकार इन दोनों प्रक्रियाओं की बुद्धि तर्क संगत चिन्तन तथा भावना से भिन्न एवं विरोधी मानी जानी चाहिये। संवेदन तथा अन्तःप्रज्ञा की क्रिया के अन्तर्गत केवल घटना तथा घटित सत्य को स्वीकार किया जाता है, और जो कुछ स्वीकार किया जाता है, वह वस्तुतः प्राकृतिक तथ्य (Natural fact) मात्र होता है जो प्रायः तर्क बुद्धि से असंगत अथवा असम्बन्धित

पाया जाता है, अतः प्रज्ञा की क्रियाओं (Functions) को तर्क-बुद्धि से असंगत क्रिया (Non-rational Function) कहा गया है। कार्य (Functions) की दृष्टि से यूंग ने चिन्तन, भावना, संवेदना तथा अन्तःप्रज्ञा इन चारों वर्गों में मानव समाज का वर्गीकरण करने का प्रयत्न किया है और उसने यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक अभिवृत्ति प्रधान व्यक्ति उपरोक्त चार प्रकार के कार्यों में से किसी एक कार्य को स्वभावतः अधिक महत्व देता है, अतः अभिवृत्ति तथा कार्यभेद की सम्मिलित दृष्टि से मानव समाज आठ श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। यदाकदा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के कटु आलोचकों द्वारा यूंग से यह पूछा गया है कि वह कार्य को केवल चार श्रेणियों (अर्थात् चिन्तन, भावना, संवेदन तथा अन्तःप्रज्ञा) में ही विभाजन क्यों करते हैं ? यदि कार्य की तीन श्रेणियाँ अथवा पांच श्रेणियां बनाई जायें तो क्या बुराई है ? कार्य की दृष्टि से ये चार विभाजन ही कैसे तर्क संगत हैं ? यूंग ने इस प्रश्न का बड़ी दृढ़ता से जवाब देते हुए व्याख्या प्रस्तुत की है कि केवल चार प्रकार के कार्य ही यथार्थतापूर्वक अनुभव किये जाते हैं। यूंग का कथन है कि यह अनुभवगम्य तथ्य (Fact) है कि इन चार प्रकार के कार्य वर्ग के अन्तर्गत सभी कार्यों की गणना की जा सकती है, और इसलिए उसने कार्य को केवल चार (न तीन और न पाँच) श्रेणियों में ही विभाजित किया है। संवेदन कार्य के अन्तर्गत वस्तु स्वयं की स्थापना होती है, चिन्तन कार्य के अन्तर्गत उसका अर्थ-बोध होता है, भावना कार्य के द्वारा उसकी पसंदगी-नापसंदगी की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाता है और अन्तःप्रज्ञा के माध्यम से उसकी निहित स्थिति का संकेत मिलता है, अतः हम उपरोक्त चार प्रकार के कार्यों के द्वारा हमारे सम्पूर्ण अनुभवों की स्थिति-स्थापना तथा व्याख्या कर सकते हैं जैसे कि अक्षांश और देशान्तर के अंकों के ज्ञान से पृथ्वी मण्डल पर स्थित किसी स्थान विशेष को निर्धारित किया जा सकता है। उपरोक्त चार कार्य कम्पास के चार बिन्दुओं के समान हैं। यद्यपि उपरोक्त चार कार्यों को यदृच्छ (Arbitary) प्रकार से मान लिया गया है किन्तु इस मान्यता की उपादेयता अनुभव के आधार पर स्वीकार की जा चुकी है। यूंग ने अभिवृत्ति तथा कार्य भेद की दृष्टि से प्रस्तुत वर्गीकरण सिद्धान्त (Type Theory) का बड़ी दृढ़ता से समर्थन किया है, क्योंकि इस सिद्धान्त को उसने आलोचनात्मक मनोविज्ञान का पूर्वारम्भ माना है।

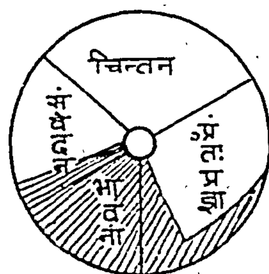
यूंग ने केवल मात्र चार कार्यों पर जोर दिया है और यह संकेत दिया है कि उपरोक्त चार कार्यों का सिद्धान्त उसके अनुभव पर आधारित तथ्य (Facts) है।* उसने इन चारों कार्यों का एक दूसरे के कार्य क्षेत्र में भेद भी स्पष्ट करते हुए यह भी प्रतिपादित किया है कि उक्त चारों कार्य पृथक् पृथक् हैं, और किसी भी एक कार्य को किसी दूसरे कार्य में अदला-बदला नहीं जा सकता। चार के अंक से भी

* Ibid page 107, & Psychological Types at page 547

प्राचीन कालीन इकाई की अभिव्यक्ति होती है, जैसे दिशायें चार हैं, क्रास की चार भुजायें हैं, तथा कम्पास के चार विन्दु होते हैं, उपरोक्त चार कार्यों में से जो कार्य चेतन के प्रकाश में आ पाता है उसी कार्य में व्यक्ति विशिष्टता उपलब्ध कर सकता है। इन चारों कार्यों को एक साथ चेतन स्तर पर उठाया जाना असंभव है। प्रायः एक समय में एक कार्य ही चेतन निष्पादित हो पाता है और अभ्यास तथा स्वभाव से व्यक्ति का यह सर्वोत्तम कार्य माना जा सकता है। इस प्रकार एक कार्य के साथ कभी कभी एक और यदाकदा दो अन्य कार्यों को भी सहयोगी कार्य की तरह व्यक्ति सम्पादित करने के लिए समर्थ होता है, किन्तु सामान्यतः व्यक्ति एक कार्य में विशिष्टता तथा एक अन्य सहयोगी कार्य में यह आंशिक सफलता प्राप्त कर पाता है। अतः संवेदन, चिन्तन, अन्तःप्रज्ञा तथा भावना से चतुर्मुखी कार्यों में से एक कार्य का चुनाव व्यक्ति अपनी प्रकृति तथा स्वभाव के अनुरूप कर लेता है। और स्वभाव तथा अभ्यास के फलस्वरूप उक्त कार्य के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता तथा अन्य सहयोगी क्षेत्र में आंशिक सफलता अर्जित करता है। किसी भी व्यक्ति के लिए एक ही समय में इन चारों कार्यों को लेकर चलना संभव नहीं है, क्योंकि चिन्तन और भावना तथा संवेदन और अन्तःप्रज्ञा परस्पर विरोधी गुणधर्मी कार्य हैं, अतः चिन्तन के विकास के साथ ही साथ सहज परिणामस्वरूप भावना का ह्रास भी मान लिया जाना चाहिए, इसी प्रकार संवेदन के विकास के अन्तःप्रज्ञा के पिछड़ापन को मान लिया जाना चाहिये, क्योंकि उभय यमक कार्यों में से एक का उत्कर्ष अन्य का सहज अपकर्ष है, अतः व्यक्ति यदि चिन्तन के क्षेत्र में विकास कर पाता है तो वह चिन्तन कार्य में विशिष्टता प्राप्त करेगा किन्तु वह भावना के क्षेत्र के कार्य में विकास नहीं कर सकेगा, किन्तु गौण रूप से वह संवेदन अथवा अन्तःप्रज्ञा में से किसी एक कार्य को सहयोगी रूप से साथ लेकर चल सकता है—क्योंकि संवेदन तथा अन्तःप्रज्ञा को गुणधर्म की दृष्टि से परस्पर विरोधी कार्य माना गया है। अतः एक समय एक व्यक्ति एक प्रमुख अथवा विशेष कार्य के साथ एक गौण अथवा सहयोग कार्य सम्पादन करने में सक्षम है, यूंग ने अनुभव के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि प्रायः व्यक्ति अपनी विशिष्ट कार्य क्षमता के माध्यम से ही सत्य अथवा यथार्थ के साथ स्वयं का तथा वाह्य जगत् का तादात्म्य स्थापित करता है, अथवा वह यथार्थ के साथ स्वयं एवं जगत् का समायोजन करने में सफल होता है और इस विशिष्ट कार्य सफलता के माध्यम से ही वह अपनी स्वभावजन्य अभिवृत्ति को दिशा संकेत दे सकता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिये एक सर्वोत्तम विशिष्ट कार्य तथा एक सहयोगी गौण कार्य का निर्धारण किया जाना सम्भव है।

गत अध्याय में चित्त की संरचना स्पष्ट करने के प्रसंग में आरेख संख्या 5 के द्वारा इन चारों कार्यों का क्षेत्र स्पष्ट किया गया है, यद्यपि चित्र में इनका कार्य विभाजन चार समान सम्भागों द्वारा बतलाया गया है किन्तु व्यक्ति के इन चार कार्यों का क्षेत्र बराबर मान लिया जाना भ्रान्तिपूर्ण है। निःसन्देह मानव चित्त

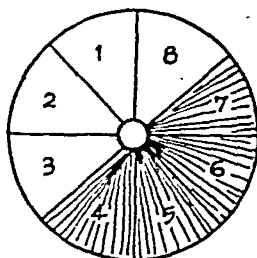
उपरोक्त केवल चार कार्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि चित्त की समूची इकाई के 360 अंशों का समान विभाजन किया जा सकता है और प्रत्येक कार्य को 90 अंशों में बाँटा जा सकता है। व्यक्ति विशेष में विशिष्ट कार्य के विकास के अनुसार इन अंशों का बढ़ना-घटना उचित एवं स्वाभाविक है। इस भ्रान्ति के निवारण हेतु आरेख संख्या 10 को प्रस्तुत किया जाना उपयुक्त प्रतीत होता है। इस आरेख चित्र में चित्त की इकाई में स्थित पूर्णांक4 विभाजन के द्वारा यूंग द्वारा स्थापित चार कार्यों का दिग्दर्शन कराया गया है। आरेख चित्र में अवचेतन को रंग मण्डित तथा चेतन स्तर रंगहीन बतलाया गया है। आरेख संख्या 10 के अन्तर्गत "चिन्तन का विशिष्ट कार्य क्षेत्र तथा संवेदन के गौण सहयोगी कार्य क्षेत्र को भी स्पष्ट किया गया है।



आरेख सं० 10 : व्यक्ति का विशिष्ट तथा सहयोगी कार्य क्षेत्र

उपर्युक्त आरेख में चिन्तन व्यक्ति का विशिष्ट कार्यक्षेत्र (Superior Function) है, तथा संवेदन उसका सहयोगी (Assessary Function) कार्य क्षेत्र है, तथा चिन्तन के विपक्ष में भावना कार्य क्षेत्र को विशृंखलित, संक्षिप्तम अंधकारपूर्ण तथा अविकसित बतलाया गया है।

अतः चित्त में स्थित चार कार्यो में एक विशिष्ट कार्य तथा एक गौण कार्य का योग किसी भी व्यक्ति में पाया जाना संभव है। यद्यपि इस प्रकार का वर्गीकरण प्रायः सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है क्योंकि वास्तविकता की दृष्टि से प्रायः विशिष्ट तथा गौण कार्य क्षेत्र परस्पर एक दूसरे से मिश्रित पाये जाते हैं। यथार्थ जीवन के अनुभव के दौरान में प्रायः विशिष्ट कार्य क्षेत्र नहीं पाया जाता और विशिष्ट कार्य के साथ अन्य कार्यो का सम्मिलन प्रायः पाया जाता है, जबकि विशिष्ट कार्य के अंशों का आधिक्य मात्र होता है और अन्य कार्यों का असमान अंश साथ-साथ पाया जाता है। निम्न आरेख संख्या 11 के अन्तर्गत शुद्ध चिन्तन प्रधान व्यक्तित्व के कार्य सम्भागों को सुस्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है जिसमें गोलाकार चित्तीय इकाई को आठ खण्डों में विभक्त करके विशुद्ध कार्य क्षेत्र तथा मिश्रित कार्य क्षेत्रों का दिग्दर्शन प्रस्तुत किया गया है।



आरेख सं० 11 : विशुद्ध कार्य क्षेत्र तथा मिश्रित कार्य क्षेत्र

प्रस्तुत आरेख संख्या 11 में अंक 1 विशुद्ध चिन्तन क्षेत्र है, अंक 2 संवेदन तथा चिन्तन का मिश्रित कार्य क्षेत्र है। अंक 3 विशुद्ध संवेदन कार्य क्षेत्र है, तथा अंक 4 संवेदन-भावना का मिश्रित कार्य क्षेत्र है। अंक 5 विशुद्ध भावना क्षेत्र है, जबकि अंक 6 अन्तःप्रज्ञा तथा भावना का मिश्रित क्षेत्र है, अंक 7 अन्तःप्रज्ञा का विशुद्ध कार्य क्षेत्र है, जबकि अंक 8 अन्तःप्रज्ञा तथा चिन्तन का मिश्रित कार्य क्षेत्र है। आरेख संख्या में रंग युक्त अंक 4, 5, 6 और 7 अवचेतन सम्भाग हैं और रंगहीन अंक 3, 2, 1 व 8 चेतन सम्भाग हैं, जिनका मध्य विन्दु विशुद्ध चिन्तन क्षेत्र अंक 1 के द्वारा वतलाया गया है। प्रसिद्ध दार्शनिक ह्यूम विशुद्ध चिन्तन कार्य क्षेत्र के प्रतीक उदाहरण हैं, और अन्तःप्रज्ञा तथा चिन्तन के मिश्रित कार्य क्षेत्र के प्रतिनिधि उदाहरण विलीयम जेम्स से दिया जाता है। इस आरेख संख्या 11 के अवलोकन से चिन्तन कार्य की विशिष्टता तथा संवेदन कार्य की सहायक गौणता भी स्पष्ट हो जाती है। क्योंकि चिन्तन का सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र तथा संवेदन का अधिकांश कार्य क्षेत्र चेतन द्वारा प्रकाशित है, अतः इस प्रकार का व्यक्ति चिन्तन प्रधान यथार्थवादी होता है।

किन्तु मानव कार्य क्षेत्र का उपरोक्त विभाजन करते समय भी हमको यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की आधारभूत सन्तुलन प्रक्रिया को विस्मृत नहीं कर देना चाहिये। जिस प्रकार चित्त का चेतन संभाग अवचेतन संभाग से अलग है तथा विरोधी गुणधर्मी है, फिर भी चेतन और अवचेतन का परस्पर संवंध है और दोनों एक दूसरे के पूरक सम्भाग है और दोनों के योग से ही चित्त की इकाई वनती है और इस चित्त की इकाई के निर्वाह के लिए चेतन एवं अवचेतन के वीच परस्पर प्रतिपूर्ति क्षमता सम्पन्न सन्तुलन वना रहता है, क्योंकि चेतन और अवचेतन के दोनों सम्भागों में सन्तुलन वनाये रखने वाली जीवन शक्ति निरन्तर स्वतः प्रवाहित होती रहती हैं, उसी तरह चिन्तन एवं भावना के कार्य क्षेत्र परस्पर विरोधी दिशाओं में स्थित हैं तथा गुण धर्म की दृष्टि से भी पृथक् एवं विरोधी हैं, किन्तु चिन्तन की प्रतिपूर्ति केवल भावना से तथा भावना की पूर्ति चिन्तन से होना अनुभवजन्य तथ्य (Fact) है। अतः चिन्तन तथा भावना को परस्पर विरोधी गुणधर्मी स्वीकार करते

हुये भी इनको एक दूसरे का पूरक माना जाना उचित है। और इन विरोधी कार्य क्षेत्रों को इस प्रतिपूरक क्षमता एवं उचित सन्तुलन के फलस्वरूप ही चित्त की इकाई का निर्वाह जीवन काल पर्यन्त बना रहता है। समय और गति के साथ चिन्तन का ज्ञान प्रकाश भावना की अंधकारपूर्ण गहराइयों में जब्त होता रहता है, और समय का साथ लेकर भावना का अस्पष्ट संवेग संचार भी चिन्तन के आलोकमय कार्य-क्षेत्र तक निरन्तर प्रवाहित होता रहता है। इसी तरह संवेदन कार्य क्षेत्र की अन्तर्वस्तु अन्तःप्रज्ञा कार्य क्षेत्र में निरन्तर आती जाती रहती है, और इस प्रकार अनुभवों की सम्यक् समझ के साथ मानव-जीवन निरन्तर विकास तथा प्रगति करता रहता है और चेतन का क्षेत्र शनैः शनैः समय के साथ बढ़ता रहता है। चित्त की प्रकृति एवं संरचना की व्याख्या के दौरान में विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में निहित चित्तीय प्रतिपूर्ति एवं विरोधी गुण धर्मों के बीच स्थित सन्तुलन क्षमता के नियम पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है, अतः चतुर्मुखी कार्य क्षेत्रों की व्याख्या के प्रसंग पर यह स्मरण दिलाया जाना पर्याप्त है कि चित्तीय संरचना में सन्निहित प्रतिपूर्ति नियम का निर्वाह भी कार्य क्षेत्र सन्तुलन के प्रश्न पर किया जाना युक्तिसंगत तथा तथ्यपूर्ण है।

अध्याय 7

मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण
(Psychological Types)

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने दो सहज अभिवृत्तियां (Attitudes) अन्तर्मुखी तथा वहिर्मुखी अभिवृत्ति एवं स्वभाव-अभ्यास जन्य चार प्रक्रियाओं (Functions) दो अभिवृत्तियां × चार प्रकार की प्रमुख प्रक्रियाएं (संवेदन, चिन्तन, अन्त:प्रज्ञा एवं भावना) की दृष्टि से सम्पूर्ण मानव समाज का विभाजन आठ वर्गों के अन्तर्गत किया है। यूंग द्वारा मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण (Psychological Types) शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन सन् 1912 में किया गया है। मानव-समाज का आठ वर्गों में विभाजन किया जाना निम्नानुसार है, यथा—

(1) अन्तर्मुखी चिन्तन प्रधान व्यक्तित्व वर्ग
(2) वहिर्मुखी ,, ,, ,,
(3) अन्तर्मुखी भावना प्रधान व्यक्तित्व वर्ग
(4) वहिर्मुखी ,, ,, ,,
(5) अन्तर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्तित्व वर्ग
(6) वहिर्मुखी ,, ,, ,,
(7) अन्तर्मुखी अन्त:प्रज्ञा प्रधान व्यक्तित्व वर्ग
(8) वहिर्मुखी ,, ,, ,,

मुख्यत: कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा मानव समाज को अभिवृत्ति (Attitude) तथा कार्य (Functions) की दृष्टि से उपरोक्त आठ प्रमुख वर्गों में बांटा जा सकता है, किन्तु यह वर्गीकरण औपचारिक मात्र है—क्योंकि कुछ व्यक्तियों की किसी भी वर्ग में निश्चित रूप से गणना नहीं की जा सकती। तथा कुछ व्यक्तियों में समय और परिस्थितियों के अनुसार उनकी प्रधान क्रियाओं (Main functions) में भी रद्दो बदल अथवा परिवर्तन हो जाना भी पाया जाता है। अत: यूंग द्वारा उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ (Psychological Types) में जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, वह सामान्यत: औपचारिक एवं व्यावहारिक अध्ययन पर आश्रित है—जिसमें यदाकदा आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी लक्षित किया जा सकता है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा प्रस्तावित साइकोलोजीकल टाइप्स (मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण) का सार निम्नानुसार है :—

(1) अन्तर्मुखी चिन्तन प्रधान व्यक्ति का रुझान (bias) प्रायः स्वयं (विषयी) की ओर पाया जाता है और वह किसी वाह्य वस्तु का चिन्तन नहीं करते हुए प्रायः स्वयं के चिन्तन की ओर प्रवृत्त देखा जाता है। वह मूलतः सिद्धान्तवादी पाया जाता है तथा वह प्रायः एकाकी तथ्य स्वयं के अलावा अन्य विचारों के प्रति उपेक्षा प्रदर्शित करता है। अन्तःप्रज्ञा के अभाव की स्थिति में वह समय सूचकता का निर्वाह नहीं कर पाता तथा भावना के अल्प विकास के फलस्वरूप वह प्रायः शुष्क व्यवहार करता है तथा कभी-कभी संवेदन की कमी के कारण वह अमानवीय व्यवहार भी कर बैठता है। अन्तर्मुखी अभिवृत्ति के फलस्वरूप वह समाज तथा अपने मित्रों से भी अलग-अलग हो पड़ता है और वह वाह्य यथार्थ को स्वीकार करने से घबराता है, अतएव सुरक्षात्मक बचाव की आड़ लेकर कट्टरता वाद का सहारा लेते हुए तथा बौद्धिकता के माध्यम से आत्मश्लाघा के प्रतिपादन में लगा रहता है। वह बाहरी यथार्थता का सामना करते हुए झिझकता है तथा वह विरोधी आलोचना से भी भय खाता है। फलतः वह मानवीय स्तर पर अपने साथियों के साथ भी मिलने जुलने में संकोच प्रकट करता है। एक वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक की स्थिति से वह अपना सिद्धान्त स्वयं अपने मन से निकाल लेना चाहता है और वह इस सिद्धान्त के प्रतिपादन के हेतु बाहरी उदाहरणों की तलाश में लगा रहता है।

प्रसिद्ध दार्शनिक शोपर हावर इस वर्ग का एक उत्तम उदाहरण माना गया है। अन्तर्मुखी चिन्तन वर्ग के अन्तर्गत (Absent minded) खोया हुआ दार्शनिक को भी गिनाया जा सकता है। शोपन हावर के बाबत एक मनोरंजक कथा प्रचलित है। यह कहा जाता है कि वह एक बार अपने विचारों में खोया हुआ एक पुष्प उद्यान में खड़ा था तब वहाँ पर एक माली ने आकर उससे पूछा कि वह वहाँ पर क्या कर रहा है और वह कौन है ? इस पर विस्मृत मना शोपन हावर ने उत्तर दिया कि मैं इसका ही तो जवाब नहीं खोज पा रहा हूँ।

अन्तर्मुखी चिन्तक अपने ही आन्तरिक सत्य में उलझा रहता है और बाह्य यथार्थ को हृदयंगम नहीं कर पाता। वह प्रकृत छायाओं (Primedial Images) को ही अधिक महत्व दे बैठता है और इन प्राकृतिक छायाओं को विचारों का स्वरूप देने में प्रवृत्त हो जाता है, वह यह ख्याल बांध बैठता है कि उसके विचारों से ही सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो जायगा। दुनिया की निगाह में अन्तर्मुखी विचारक को भला नहीं समझा जाता। वह अपनी अन्दरूनी सफाई की उधेड़बुन में लगा रहता है, अतः वह जगत् के साथ अपने सम्बन्धों के बाबत भी सोच समझ नहीं पाता। उसको यह भी ध्यान नहीं रहता कि अन्य व्यक्ति उसके बाबत क्या धारणा रखते हैं अथवा उसके प्रति कैसी भावना रखते हैं। वह अत्यन्त शर्मीला, भीरू तथा शान्त रहता है और प्रायः एकाकी रहता है अथवा यदाकदा अपनी मित्र

मंडली में अप्रासंगिक तानेबाजी कर बैठता है। इस प्रकार के व्यक्ति का सबसे बड़ा दोष उसकी भावनाशीलता का अल्प-विकास है, चिन्तन और भावना के बीच परस्पर विरोध है, अतः चिन्तन प्रधान व्यक्ति में स्वतः भावना का विकास नहीं हो पाता, अतः इस प्रकार का व्यक्ति सुख अथवा दुःख तथा अच्छाई अथवा बुराई के बीच का योग्य मूल्यांकन करने में प्रायः असमर्थ पाया जाता है।

(2) बहिर्मुखी चिन्तन प्रधान व्यक्ति यथार्थवादी होता है अथवा वह यथार्थवादी बनने का दम भरता है। वह तत्वों का आदर करता है और तत्वहीन विचार अथवा वस्तु के प्रति उपेक्षा व्यक्त करता है। वह कभी-कभी अधीर तथा उग्र हो जाता है। जो व्यक्ति उसका साथ नहीं देते अथवा उसके विचारों के प्रति समर्थन व्यक्त नहीं करते उनको वह भीरू अथवा मूर्ख मान बैठता है। ऐसा व्यक्ति सदैव एक सूत्र अथवा सिद्धान्त की तलाश में लगा रहता है और जब कभी उसको कोई सूत्र अथवा विचार प्राप्त हो जाता है तो वह इसका बड़ा ढोल पीटता है। इस प्रकार के व्यक्ति आजकल के राजनैतिक नेतागण हैं और इस वर्ग के व्यक्ति प्रायः प्रत्येक देश, प्रान्त अथवा जाति में साधारणतः पाये जाते हैं। जब कभी कोई सूत्र अथवा विचार इस प्रकार के व्यक्ति के हाथ पड़ जाता है तो वह बड़े उत्साह के साथ उसका प्रचार प्रसार करने लग जाता है और इसके प्रति बड़ा आग्रह एवं महत्व प्रकट करता है। शराब बन्दी, राष्ट्रीयकरण, जनकल्याण समाजवादी आदि प्रेरक नारा बाजियों का प्रचार करना बहिर्मुखी चिन्तक का प्रमुख कर्त्तव्य है। वह अपने आप को तर्कसंगत विचारक की तरह समाज में प्रतिष्ठित करना चाहता है और वह भावुकता से अपने आपको अछूता रखना चाहता है, यद्यपि अवचेतन के प्रभाव के फलस्वरूप उसको अत्यन्त भावुक होते भी देखा जा सकता है, वह कभी-कभी अन्धविश्वासी भी पाया जाता है तथा वह किसी भी प्रकार की आलोचना के प्रति संवेदनशील पाया जाता है। इस श्रेणी का वैज्ञानिक सर्वप्रथम अनुभवगम्य तत्वों का संग्रह करता है और बाद में इन तत्वों पर आधारित किसी सिद्धान्त का निरूपण करता है। इस दृष्टि से वह अन्तर्मुखी चिन्तक का उलटा है। इस प्रकार का श्रेष्ठ उदाहरण चार्ल्स डारवीन है।

इस श्रेणी के व्यक्ति की अच्छाई उसका तथ्यात्मक स्वभाव है। ऐसा व्यक्ति वाह्य वस्तु पर ध्यान देता है और उसके उचित उपयोग के लिए भी प्रयत्नशील रहता है। किन्तु अति तथ्यात्मकता के फलस्वरूप उसमें एक बुराई का भी जन्म हो जाता है। इस प्रकार का व्यक्ति बहुधा तथ्यों के साथ अपने आपको बांध बैठता है अतः वह तथ्यों के पैर न तो देख पाता है और न वह किसी मूल विचार का प्रतिपादन करने हेतु अपने आपको इन तथ्यों से स्वतंत्र कर पाता है, अतः वह कभी-कभी तथ्यों के बियाबान जंगल में भटक जाता है और संगृहीत तथ्यों के प्रति सरलीकरण के प्रयास में अथवा विश्रृंखलित तथ्यों के आधार पर सिद्धान्त की उधेड़बुन में प्रायः असफल रह जाता है।

जब कभी किसी व्यक्ति का जीवन मुख्यतः चिन्तन के द्वारा ही संचालित होता है तब उसके सभी कार्य बुद्धि संगत अभिप्रेरणा के परिणामों को भी देखा जा सकता है जिनके आधार पर उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जा सकता है। किन्तु शुद्ध चिन्तनशील व्यक्ति में प्रायः अन्तःप्रज्ञात्मक स्वभाव का असर पाया जाता है, जिसकी अन्य प्रकार के अन्तर्गत व्याख्या की जा सकती है। किन्तु वहिर्मुखी चिन्तन प्रधान व्यक्ति में संवेदन सहवर्ती कार्य की तरह साथ-साथ पाया जाता है, और इस श्रेणी का व्यक्ति अपना निर्णय वस्तु को विचार करके निकाल लेता है। वह अपना फैसला विषय प्रधान आंकड़ों पर स्थिर करता है और इन वाह्य आंकड़ों को वह तथ्यों की संज्ञा देता है। वह तर्क तथा क्रम को पसन्द करता है और अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए नये सूत्रों और सिद्धान्तों की रचना करता है। वह अपने जीवन को सिद्धान्तों के आधार पर ढालने का प्रयत्न करता है और वह यह चाहता है कि अन्य व्यक्ति भी अपने जीवन में इन सिद्धान्तों का निर्वाह करें। यथासंभव वह अपने जीवन के कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने परिवार, मित्रों एवं सहयोगियों को भी सम्मिलित कर लेता है, और वह आग्रहपूर्वक यह अनुभव करने लगता है कि उसका सिद्धान्त ही अन्तिम सत्य है। अतः उक्त सिद्धान्तों के पालन को वह अपनी नैतिकता मान बैठता है। वह अपने आप को तर्क और बुद्धिसंगत मान बैठता है किन्तु यथार्थ में यदि कोई तत्व अथवा अनुभव उसके सूत्र अथवा सिद्धान्त के साथ मेल नहीं खाता है तो वह उस तत्व अथवा अनुभव को दवा देता है अथवा उसको टाल जाता है। वह तर्क बुद्धिहीनता के प्रति वड़ी अनिच्छा और भय प्रकट करता है, तथा वह भाव, भावना और संवेग के प्रति कठोरता व्यक्त करता है और मानवीय कमजोरियों के प्रति भी अपनी समझ का उपयोग नहीं करता। फलतः वह कभी-कभी अपने मित्रों एवं समाज के प्रति निर्मम और क्रूर वन जाता है और अपने परिवार में भी अत्याचारी वन जाता है। वह अपने सिद्धान्तों के पक्ष में मित्रता एवं परिवार भावना का वलिदान कर देता है। इस प्रकार का व्यक्ति प्रायः वैवाहिक जीवन में असफल रह जाता है क्योंकि यदाकदा ऐसे व्यक्ति में दवाई गई भावनाओं का यकायक विस्फोट देखा जाता है। ऐसी स्थिति में वह अनियंत्रित एवं दुराग्रही हो जाता है तथा महिलावर्ग की दृष्टि से कठोर एवं उपेक्षणीय समझा जा सकता है। वहुधा इस श्रेणी का व्यक्ति कर्त्तव्यशील होता है और उसके जीवन में उदात्त भावनाओं जैसे प्रेम, सहिष्णुता तथा उदारता आदि का दर्शन होता है, किन्तु इन उदात्त भावनाओं को प्रायः वह व्यावहारिक स्वरूप देने में असफल पाया जाता है, क्योंकि उसने सिद्धान्तवाद को जीवन में अधिक महत्व दे रखा है और उपरोक्त उदात्त मानवीय भावनाओं का यदाकदा सिद्धान्तवाद से कोई मेल नहीं भी पाया जाता।

(3) अन्तर्मुखी भावना प्रधान व्यक्तित्व पुरुषों की अपेक्षा प्रायः महिलाओं में अधिक पाया जाता है। इस श्रेणी के व्यक्ति भावनाजन्य मूल्यांकन में लगे रहते हैं। इनमें तीव्र रुचि अथवा अरुचि का भाव देखा जा सकता है और इस प्रकार के व्यक्ति गहराई से प्रेम करते हैं अथवा उसी तीव्रता के साथ अपनी घृणा भावना का

भी अनुभव करते हैं। अन्तर्मुखी अभिवृत्ति के फलस्वरूप इस श्रेणी के व्यक्ति इस भावना की अभिव्यक्ति क्रिया में सफल नहीं हो पाते और इसलिए अपने अन्दर ही अन्दर प्रेम भावना के मीठे रस का अनुभव करते हैं, अथवा घृणा की आग में भीतर ही भीतर सुलगते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति वाह्यः वस्तु के प्रभाव से भयाक्रान्त रहते हैं और इसलिए उनकी पकड़ प्रायः अव्यवस्थित तथा निरर्थक पायी जाती है। इस प्रकार के व्यक्तियों को वहुधा गलत समझा जाता है । ऐसे व्यक्ति नितान्त एकाकी जीवन निर्वाह करने में रस लेते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों को समाज में स्वार्थी तथा जिद्दी समझा जाता है, जब कि यथार्थतः ऐसे व्यक्ति न तो स्वार्थी और न जिद्दी एवं कठोर ही होते हैं।

अन्तर्मुखी भावना प्रधान व्यक्ति समाज के साथ योग्य समायोजन स्थापित करने में प्रायः असफल पाया जाता है, इस प्रकार के व्यक्ति यद्यपि अपनी अन्दरूनी वनावट की दृष्टि से खरे अथवा निष्कपट होते हैं, फिर भी जब कभी उनको संसार में अपनी भूमिका को अदा करने के लिए उतारा जाता है तो उनका व्यक्तित्व प्रायः विखरा सा नजर आता है। इस श्रेणी के व्यक्ति अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों से संचालित होते हैं, अतः ऐसे व्यक्तियों में वहिर्मुखी व्यक्तित्व की अपेक्षा कम मित्रता-पूर्ण व्यवहार देखा जाता है, यद्यपि इनमें मित्रता की गहराई और प्रेम की ऊष्णता वहिर्मुखी भावना प्रधान व्यक्तित्व से कहीं अधिक होती है, किन्तु अन्तर्मुखी भावना प्रधान व्यक्ति इन भावनाओं को समुचित प्रकार से अभिव्यक्त नहीं कर पाता। इस श्रेणी का व्यक्ति किसी भी प्रकार के दिखावे अथवा प्रदर्शन में विश्वास नहीं करता और वह प्रायः निष्क्रियतापूर्वक प्रस्तुत भावनाओं का शान्ति से अनुभव करता है। अन्तर्मुखी भावनाओं की अभिव्यक्ति कविता, संगीत तथा धार्मिक साधना में होती देखी गई है, इस प्रकार का व्यक्ति यदाकदा आत्म बलिदान का भी अलौकिक परिचय दे बैठता है। इस प्रकार के व्यक्तियों का मित्र मंडल अत्यन्त छोटा होता है किन्तु वह अपने इस छोटे दायरे में विश्वासी एवं ईमानदार साथी ढूंढ़ने में सफल रहता है।

(4) वहिर्मुखी भावना प्रधान व्यक्तित्व भी प्रायः पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक पाया जाता है। इस श्रेणी के व्यक्ति विषयनिष्ठ, समय सूचक तथा सामाजिक पाये जाते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति मौजी स्वभाव के होते हैं तथा अपने इर्द-गिर्द की परिस्थितियों और व्यक्तियों के प्रति मुक्त प्रशंसा के भाव व्यक्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने भाव-प्रवण जीवन के दौरान में इतने अधिक विषयनिष्ठ पाये जाते हैं कि उनको उक्त विषय से अलग सोचा भी नहीं जा सकता, अर्थात् भाव-प्रवणता की स्थिति में वे अपने आप को विषय-वस्तु के साथ तादात्म्य कर बैठते हैं और उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व विषय के साथ आत्मसात् होता प्रतीत होता है। वहिर्मुखी भावना प्रधान व्यक्ति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में वहुत पटु

होता है, और वह प्राय: अपनी समूची भावनाओं का योग्य प्रदर्शन कर पाता है और अपने स्वयं के भण्डार में भावना को अवशेष रखने का कोई इरादा भी नहीं रखता।

इस प्रकार के व्यक्ति का चिन्तन केवल अवचेतन स्तर पर होता रहता है, और इसके फलस्वरूप वह चिन्तनीय वस्तु के प्रति तर्कसंगत निर्णय तक पहुँचने में सक्षम पाया जाता है और यदाकदा अवचेतन द्वारा चिन्तित अन्तर्वस्तु चेतन स्तर पर उभरती हुई दृष्टिगोचर होती है, अतः इसके परिणामस्वरूप उसकी सहज अभिव्यक्ति क्रिया में हलचल पैदा हो जाना भी देखा जा सकता है। इस श्रेणी के व्यक्तियों में सुझावों अथवा संकेतों के प्रति अत्यधिक आग्रहतापूर्वक स्वीकृति सूचक प्रतिक्रियाएँ पाई जाती हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व के चेतन स्तर पर भावना का बाहुल्य पाया जाता है। किन्तु इनका अवचेतन स्तर चिन्तन से परिपूर्ण रहता है। तथा अवचेतन का चिन्तन यदाकदा चेतन स्तर पर उभर जाता है।

बहिर्मुखी भावना प्रधान व्यक्ति बाह्य जगत् के साथ उत्तम सामंजस्य स्थापित कर पाता है और वह समय सूचकता का उपयुक्त निर्वाह करते हुये सम्पूर्ण परिस्थितियों का अपनी भावनाओं की तुला पर मूल्यांकन करता है। वह अपने समाज तथा समय के साथ सामंजस्य स्थापित करने में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करता। बहिर्मुखी भावना प्रधान महिला प्रायः योग्यतम पति के निर्वाचन में अत्यधिक सफल पायी जाती है। वह वस्तुत: एक उपयुक्त प्रकार के व्यक्ति के प्रेम में पढ़ जाती है और यह प्राय: मान लिया जाता है कि उसका चुनाव श्रेष्ठ एवं सुनियोजित है। इस श्रेणी की महिला अपने व्यक्तिगत संबंधों के निर्वाह में प्राय: दक्ष एवं योग्य पायी जाती है, वह संकटपूर्ण स्थितियों के बीच रास्ता निकालने में बड़ी पटु पाई जाती है और संकटपूर्ण तनावों को मिटाने में सफल रहती है। सामान्यत: इस प्रकार की महिला उत्तम प्रकार से सामाजिकता का निर्वाह कर पाती है और उसका पारिवारिक जीवन सुखद एवं आनन्दमय गुजरता है। वह उत्तम प्रकार की मेजबान सिद्ध होती है और वह सभी छोटे-बड़े समूह के बीच सुव्यवस्थित पायी जाती है। भावना प्रधान बहिर्मुखी व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की संकट की घड़ी में यथार्थ मदद करने के लिए चिन्तातुर देखा जाता है और इसलिए इस वर्ग के व्यक्ति सामाजिक सेवा कार्य में विशेषत: प्रवृत्त होते हैं। इनमें सौहार्द्र, सहयोग एवं स्नेह भावना का उत्तम विकास देखा जाता है किन्तु यदाकदा इनमें बाह्य आडम्बर तथा ऊपरी दिखावे की भावना भी नजर आ जाती है। जब तक इस श्रेणी के व्यक्तियों की भावनायें उनके निजी स्तर तक मर्यादित रहती हैं, तब तक तो इनमें सचाई रहती है किन्तु जब इन भावनाओं को अधिक विस्तृत क्षेत्र पर लागू किये जाने का आग्रह किया जाता है तो इनकी अभिव्यक्ति में बनावटीपन भी नजर आ जाता है और उसकी भाव अभिव्यक्ति को केवल प्रदर्शन समझा जाता है।

चेतन स्तरीय वहिर्मुखी भावना प्रधान व्यक्ति का चित्तीय सन्तुलन उसके अवचेतन स्तरीय अन्तर्मुखी चिन्तन प्रवृत्ति के द्वारा किया जाता है और अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु के बाहुल्य के क्षणों में यह अन्तर्मुखी चिन्तन प्रवाह बाह्यमुखी भावना पर आच्छादित हो जाता है, फलतः इस वर्ग के व्यक्ति में अधिक समयोजनता के आकस्मिक दर्शन होते हैं।

(5) अन्तर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्तित्व में जीवन के उत्तम गुणों के प्रति आदर एवं प्रशंसा का भाव पाया जाता है। वह सुखों को उपेक्षा भाव से ग्रहण करता है और कदाचित् इनको स्वीकार करने का दिखावा करता है। कोई भी अन्य व्यक्ति यह भाप तक नहीं पाता कि इस श्रेणी के व्यक्ति द्वारा इस प्रकार उदासीनतापूर्वक ग्रहण करने के अन्तराल में कोई बेचैनी विद्यमान है। अन्तर्मुखी संवेदनशील व्यक्ति में भय पाये जाने वाली इस बेचैनी का कारण उसका स्वयं-प्रक्षेपण, मौलिक भय तथा दृष्टिगत वस्तु का कल्पित रूप है। अन्तर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्ति यह समझ नहीं पाता कि जो कुछ वह देख रहा है वह सचमुच बाह्य वस्तु है अथवा वह उसके स्वयं का प्रक्षेपण है, तथा वस्तु जिस रूप में उसको इन्द्रियों के माध्यम से दृष्टिगोचर होती है, वह वस्तु का यथार्थ स्वरूप है अथवा वह उसका भावजनित प्रभाव है। इस मूल सन्देह के भय के कारण ऐसा व्यक्ति अन्दर से देखने के बावजूद भी प्राय: बेचैन नजर आता है क्योंकि इस श्रेणी का व्यक्ति व्यक्तिगत तथा बाह्य विषयगत वस्तु के बीच सम्यक् भेद को स्पष्टतया हृदयंगम नहीं कर पाता है।

संवेदन कार्य के दौरान में वस्तु ज्ञान इन्द्रियों के माध्यम से ग्रहण किया जाता है, अतः संवेदन वस्तु पर आश्रित है और वस्तु ही इन्द्रियों के माध्यम से ग्रहण की जाती है और इसका परिणाम ही संवेदन है। इस प्रकार संवेदन कार्य एक ओर तो वस्तु पर आधारित है तो दूसरी ओर संवेदन द्वारा वस्तु को ग्रहण भी किया जाता है। पहली स्थिति में जहाँ पर वस्तु को महत्व दिया जाता है वहाँ पर संवेदन को वहिर्मुखी कहा जायगा, किन्तु जब संवेदन को प्रमुखता दी जायगी तो इसको संवेदन की अन्तर्मुखी अभिवृत्ति माना जायगा। अत: संवेदनशीलता का अर्थ क्रिया मात्र है, संवेदन प्रधान व्यक्ति प्रस्तुत वस्तु अथवा घटना को प्रायः ग्रहण करता रहता है, और वह मूल्यांकन के द्वारा इनकी स्वीकृति अस्वीकृति अथवा अच्छाई-बुराई की उधेड़बुन में नहीं पड़ता। वह वस्तु, घटना अथवा विचार के दर्शन को अर्थात् प्रत्येक अनुभव को न तो कल्पना के माध्यम से संवारता, निखारता है और न उसको भावना के माध्यम से उत्तम अथवा अधम के मूल्यांकन की चर्चा में पड़ता है और न इसको सुख-दुःख की भावनाजन्य तराजू पर तोलता है। संवेदन कार्य के अन्तर्गत प्रत्येक अनुभव को उसकी यथार्थता के साथ स्वीकार किया जाता है, अतः यूंग ने संवेदन कार्य को तर्क बुद्धि से परे माना है। अतः संवेदन प्रधान व्यक्ति प्रायः सतही एवं सरल पाया जाता है, और वह ऊपरी तौर पर प्रसन्नचित्त

और विनोदपूर्ण देखा जाता है। किन्तु उसके द्वारा केवल इन्द्रियों को अत्यधिक महत्व देने के फलस्वरूप उसके इन्द्रिय लोलुप हो जाने का खतरा बना रहता है।

अन्तर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्ति अपनी अन्तर्मुखी अभिवृत्ति के फलस्वरूप उत्तम अभिव्यक्ति की दृष्टि से असफल पाया जाता है। इस प्रकार के व्यक्ति प्रायः अपने आपको ठीक ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाते, फलतः इनको उचित प्रकार से समझा भी नहीं जा सकता। ऐसे व्यक्ति सामूहिक अवचेतन के संस्कारों से भी आक्रान्त पाये जाते हैं और वे इन संस्कारों को सुनियोजित एवं संवार निखार नहीं पाते। फलतः कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों में विशृंखलित दृष्टि दोष का प्रादुर्भाव पाया जाता है।

(6) बहिर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्तित्व एक अलग ही किस्म है। इस प्रकार के व्यक्ति का जीवन पूर्णतः विषयनिष्ठ पर्यावरण (Objective Environment) पर आधारित पाया जाता है। इस प्रकार के व्यक्ति को आसानी से बिखेरा जा सकता है। उसका व्यक्तिगत स्रोत प्रायः रीता पाया जाता है और उसके लिए निरन्तर बाह्य दबाव एवं प्रेरणा की आवश्यकता महसूस की जा सकती है। वह अमूर्त की स्थिति मात्र से घबराता है, अतः अमूर्त सम्बन्धी किसी भी विचारधारा से अथवा अभौतिक प्रयत्न से कतराता है, उसके लिए भौतिकता का महत्व ही सर्वोपरि है। विचार तथा भावना को वह अपेक्षाकृत कम महत्व देता है और अन्तःप्रज्ञा को तो वह कल्पना कह कर तिरस्कार की दृष्टि से देखता है। वह ठोस यथार्थ के आग्रह में केवल प्रत्यक्ष वस्तु को सर्वोपरि महत्व प्रदान करता है। प्रत्यक्ष पूरक मूल्यों को वह बहुधा ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेता है; अथवा यदाकदा उनमें सुधार-संस्कार कर लेता है। वह इन्द्रिय जन्य ज्ञान की आलोचना करता है। वह दूसरे दर्जे के संगीत को तथा मध्यम श्रेणी की महिला को उपयोगिता की दृष्टि से पसन्द करता है, किन्तु वह धीमी गति से अपने उद्देश्यपूर्ति के लिए बढ़ना पसन्द नहीं करता। इस श्रेणी का व्यक्ति भला तथा सज्जन भी हो सकता है किन्तु वह अन्तःप्रज्ञा के सर्वथा अभाव के कारण यदाकदा क्रूरता तथा निर्दयता के काम पर भी उतारू होते हुये देखा गया है। अवचेतन के स्तर पर इस प्रकार के व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं पाया जाता और इसलिए उसमें सदैव यह भय बना रहता है कि अन्य व्यक्ति उसको पराजित करने के लिए कार्यरत है। वह अपनी तथाकथित चतुरता का प्रायः घमंड करने लगता है जबकि यथार्थ में वह मूर्ख ही रह जाता है यह अपनी बचकानी सन्देह वृत्ति के फलस्वरूप सुरक्षात्मक प्रतिपूर्ति का प्रयत्न प्रायः मूर्खतापूर्ण ढंग से संपादित करता है।

बहिर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्ति प्रत्येक घटित अनुभव को स्वीकार करते हुए चलता है, वह अनुभव के इर्द-गिर्द संलग्न चिन्तन तथा भावनाओं को नहीं देख पाता और इसलिए उसके लिए सिवाय अनुभव के किसी अन्य वृत्ति का कोई महत्व नहीं

है, वह कल्पना, चिन्तन तथा भावना से अछूता रहता है और वह प्रकृति के रहस्योद्घाटन के प्रति कोई रुचि लेने का भी प्रयत्न नहीं करता। उसकी दृष्टि में एक कुदाली केवल मात्र कुदाली ही है। वह कुदाली को खोदने का हथियार तक स्वीकार करने की आवश्यकता अनुभव नहीं करता। वह केवल संवेदन की शक्ति तथा उसके सुख को स्वीकार करने तक अपने को मर्यादित रखता है। प्रायः संवेदन प्रधान व्यक्ति विनोदपूर्ण सुखी तथा आनन्दी पाया जाता है और वहिर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्ति उक्त सुख को इन्द्रियजन्य वस्तुओं में ढूंढ़ता है, और प्रायः निरन्तर विषय वासना में तथा विषय के नवीनतम स्रोतों की खोज में लगा रहता है। उसकी यह मान्यता रहती है कि सुख विषय में है, किन्तु जब कभी सुखपूर्ण विषय उससे दूर सरक जाता है अथवा विषय वस्तु का सुख स्रोत कम हो जाता है तो इस श्रेणी का व्यक्ति बड़ा परेशान तथा दुखी हो जाता है और अन्य कार्य क्षेत्रों के अल्प विकास के फलस्वरूप वह कभी-कभी बिखरने लगता है। इस श्रेणी का व्यक्ति प्रायः छिछला, अस्थिर तथा अविश्वसनीय समझा जाता है, और वह आत्म-नियन्त्रित नहीं होकर बाह्य स्थितियों का अनुवर्ती पाया जाता है।

संवेदन कार्य (Sensation) के विपरीत कार्य को अन्तःप्रज्ञा (Intuition) कहा गया है, अंतःप्रज्ञा को भी संवेदन की तरह तर्क बुद्धिविहीन कार्य (Function) माना गया है। यूंग की मान्यता है कि अन्तःप्रज्ञा सत्य का प्रत्यक्षण है जिसको हमारा चेतन नहीं देख पाता। अतः अन्तःप्रज्ञा को अवचेतन स्तरीय प्रत्यक्ष कह सकते हैं।* एक अन्य दृष्टि से अन्तःप्रज्ञा को प्रत्यक्ष से अधिक भी माना जा सकता है क्योंकि अन्तःप्रज्ञा में सक्रिय सृजनात्मक प्रक्रिया पायी जाती है जिसके द्वारा परिस्थिति का परिवर्तन अन्तःप्रज्ञा की समझ के अनुरूप पाया जा सकता है, अतः अन्तःप्रज्ञा में अतिरिक्त प्रेरक शक्ति भी मानी जा सकती है, जो कि चिन्तन संवेदन अथवा भावना में नहीं मानी जाती। जब कभी अत्यन्त कठिन परिस्थिति उत्पन्न होती है और निर्णय निकालने की अन्तिम अनिवार्यता अनुभव होती है तो उस नाजुक क्षण में अन्तःप्रज्ञा का यकायक उद्भव होता है और नितान्त उलझनपूर्ण समस्या का हल अन्तःप्रज्ञा के प्रकाश में यकायक स्वतः चमक उठता है। वैज्ञानिक, चिकित्सक, अनुसंधानकर्त्ता तथा कतिपय विशिष्ट राज्य निर्माता व्यवसायी, सामरिक नेता तथा न्यायाधीश समय-समय पर इस विशिष्ट प्रकार के कार्य का उपयोग लेकर प्रस्तुत समस्याओं का योग्यतम समाधान निकाल लेते हैं। जब कभी विचित्र स्थितियों में स्थिर एवं सर्वसम्मत मूल्यांकनों एवं सिद्धान्तों से रास्ता नहीं निकल पाता, तो उस क्षण में अन्तःप्रज्ञा के द्वारा समस्याओं का सहज हल निकल आता है।

---

* Psychological Types Collected works vol VI page 508.

(7) अन्तर्मुखी अन्तःप्रज्ञा प्रधान व्यक्तित्व स्थिति की दृष्टि से बहिर्मुखी संवेदन प्रधान व्यक्ति से ठीक विपरीत है। इस श्रेणी का व्यक्ति वाह्य तथ्यों से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखता। उसका संसार केवल मात्र उसका निजी जगत् है और वह अपने स्वयं निर्मित दुनियां के उधेड़वुन में लगा रहता है और प्रायः अपना जीवन लिखित लाइनों के बीच के अध्ययन में ही गुजार देता है। वह वाह्य जगत् पर अपने अवचेतन को थोप देता है। इस श्रेणी का व्यक्ति प्रायः सौजन्य और प्रतिष्ठापूर्ण आचरण का परिचय प्रस्तुत करता है। किन्तु बहुधा इनकी निष्ठा एवं मैत्री अस्थिर तथा अस्थाई पायी जाती है और उसको विश्वासघाती भी समझा जाता है। उनकी असन्तुलनता भी प्रायः क्षणिक होती है, वह सरलतापूर्वक परिस्थितियों के साथ बदल जाता है अथवा वह स्थिर परिस्थिति का बदला हुआ मान कर बदल जाने में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करता। जबकि अन्य प्रकार के व्यक्ति को बदलने की क्रिया में कठिनता का अनुभव होता है। मसीहा वर्ग निःसन्देह अन्तर्मुखी अन्तःप्रज्ञा प्रधान व्यक्तित्व होता है किन्तु पुजारी वर्ग में अन्तःप्रज्ञा का अभाव पाया जाता है, अतः मसीहा और पुजारी परस्पर एक दूसरे को कभी भी आपस में समझ नहीं पाते। अन्तर्मुखी अन्तःप्रज्ञा प्रधान व्यक्ति न तो अन्य प्रकार के व्यक्तित्व को सही प्रकार से समझ पाता है और इस प्रकार के व्यक्तित्व को प्रायः अन्य प्रकार के व्यक्ति भी समझने में प्रायः भूल करते पाये जाते हैं।

अन्तर्मुखी अन्तःप्रज्ञा प्रधान व्यक्ति को विचित्र प्राणी कहना उचित है, उसका जीवन रहस्यमय और व्यवहार अटपटा सा होता है। उत्तम दृष्टि से उसको स्वप्न द्रष्टा, कलाकार माना जा सकता है और उसके कृतित्व में सर्वत्र मौलिकता के दर्शन होते हैं किन्तु अपने अन्तर्मुखी स्वभाव के फलस्वरूप वह उसको ठीक ढंग से व्यक्त करने में असफल रहता है, फलतः उसकी रचनाओं में मौलिकता के साथ ही साथ अस्पष्टता और दुरुहता के भी दर्शन होते हैं। वह प्रायः अपनी अन्तःप्रज्ञा पर आश्रित रहता है और इसलिए उसमें संवेदनात्मक मूर्त स्वरूप का अभाव पाया जाता है, वह प्रायः वाह्य वस्तु का कोई आधार ग्रहण करने का विचार तक नहीं करता और वह केवल एकांकी मानसिक सपनों की उधेड़वुन में लगा रहता है। इस वर्ग के व्यक्ति का सम्बन्ध अवचेतन स्तर पर सामूहिक अवचेतन से माना जाता है। फलतः वह प्राकृत प्रतीकों का उपयोग अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के दौरान करता रहता है। विलियम ब्लैक की रचनाओं को इस वर्ग की देन के उदाहरण के रूप में रखा जा सकता है। इस श्रेणी के व्यक्तियों की अभिव्यक्ति रहस्यवादी कविताओं में, तथा मौलिक धार्मिक सिद्धान्तों के निरूपण में पायी जाती है। आज की दुनियावाजी नजर में अन्तर्मुखी अन्तःप्रज्ञा प्रधान व्यक्ति को प्रायः विचित्र अजीब सनकी, धुनी अथवा संत्रस्त व विक्षिप्त समझा जाता है। इस श्रेणी के व्यक्ति का जीवन व्यवहार असामान्य पाया जाता है। वह रात-दिन अपने स्वयं निर्मित सपनों की उधेड़वुन में

ही लगा रहता है और इनकी अजीव-अजीव व्याख्यायें प्रस्तुत करता रहता है, जिनका समर्थन चिन्तन तथा भावना की सर्वसम्मत धारणाओं के अनुरूप ठीक ढंग से नहीं हो पाता, तथा इस प्रकार के व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत कृतियों का उचित मूल्यांकन तत्कालीन समाज के द्वारा प्राय: नहीं हो पाता। इन रचनाओं और कृतियों को दोष-पूर्ण अथवा महत्वपूर्ण मान बैठना भी उचित नहीं है। किन्तु कभी-कभी इस श्रेणी के व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत विचार संक्रामक ढंग से समाज में तीव्र गति से फैल जाते हैं और कभी-कभी वृहद मानव समाज इन क्रांतिकारी रचनाओं को आतुरतापूर्वक स्वीकार कर लेता है और इनके फलस्वरूप समाज में विस्मयजनक उथल-पुथल और धूम मच जाती है, और नये धर्म नये विचारों का जन्म हो पड़ता है और पुरातन तथा स्थापित समाज व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हो जाता है जिसको सही मायने में इन्कलाब कहा जा सकता है। सामान्य नियम के अन्तर्गत अन्त:प्रज्ञा की अन्तर्वस्तु प्रत्यक्ष तक पहुंच कर रुक जाती है, अत: अन्त प्रज्ञा से प्रारम्भ होने से प्रत्यक्ष तक पहुंचने तक की अन्त:वस्तु का उपयोग यदि एक सृजनशील कलाकार करता है तो उसकी रचना में शिव और अशिव, सत्य और असत्य तथा सुन्दर और असुन्दर का विचित्र एवं अद्भुत सामंजस अथवा मिश्रण नजर आता है, अत: इस श्रेणी के व्यक्ति को अलौकिक संज्ञा से खण्डित किया जाना उचित है।

(8) वहिर्मुखी अन्त:प्रज्ञा प्रधान व्यक्तित्व भी उसके अन्तर्मुखी यमक की भांति अस्थिर और परिवर्तनशील होता है किन्तु इस प्रकार के व्यक्तित्व की अस्थिरता अधिक सुस्पष्ट होती है। वह सदैव परिवर्तन की तलाश में लगा रहता है और वह स्थिरता तथा जड़ता के प्रति असन्तोष व्यक्त करता है और सदैव अच्छे तथा बुरे परिवर्तन का उत्साहपूर्वक स्वागत करता है। वह अपने आप को भाग्यवादी वतलाने का प्रयत्न करता है किन्तु वह रात दिन दो विकल्पों के बीच चुनाव करने का जुआ खेलता रहता है। वह लाभ की ओर आकर्षित होने लगता है। किन्तु उसमें चिन्तन का पर्याप्त अभाव होने के फलस्वरूप वह यह नहीं जान पाता कि उक्त लाभ जुआ खेलने से सुलभ नहीं है। उसमें नि:सन्देह आन्तरिक शक्ति है किन्तु वह उसका उचित उपयोग वाह्य जगत् में करने में प्राय: असफल रहता है। वह प्राय: तुनुक मिजाजी तथा अधीर स्वभाव का होता है, अत: वह विवाह के सम्यक् चुनाव में प्राय: गलती कर बैठता है। वह सम्पूर्ण परिस्थिति का अध्ययन नहीं कर पाता और सम्पूर्ण के केवल अंग विशेष के प्रति अन्ध आकर्षण अनुभव करते हुये उस ओर दौड़ पड़ता है, फलत: वह अपनी उपलब्धि पर पहले तो खुश होता है किन्तु वाद में जाकर वह पछताने भी लगता है। मूलत: वह अवसरवादी होता है और वह अवसर को पकड़ने के लिए वचकानी जिद कर बैठता है। यह आग्रहशीलता ही उसका एकमात्र बचाव रह जाता है। जवकि वह आकर्षण की मंजिल पर दौड़कर सम्पूर्ण स्थितियों के गुण-दोषों का विवेचन करता है। फिर भी संकटकालीन स्थितियों में वहिर्मुखी अन्त:प्रज्ञा

प्रधान व्यक्ति का उत्तर उपयोग किया जा सकता है। फायर ब्रिगेड तथा सेना के काम में इस श्रेणी के व्यक्तियों का लाभकारी उपयोग किया जा सकता है।

बहिर्मुखी अन्तःप्रज्ञा प्रधान व्यक्ति प्रायः उसकी अन्तःप्रज्ञा वृत्ति पर निर्भर रहता है, क्योंकि अन्य कार्य उसके लिए केवल विकल्प के रूप में रहते हैं। वह सुस्थापित, परिचित तथा सुरक्षित पद्धतियों के प्रति अरुचि प्रगट करता है। वह रिवाज तथा मान्यताओं का आदर नहीं करता और वह सदैव नये मान दण्डों की तलाश में लगा रहता है। अपनी इस खोज के दौरान में अन्य व्यक्तियों के विचारों और भावनाओं के प्रति निर्ममता प्रगट करता है और नवीनता की धुन में सब कुछ भविष्य के नाम पर दाव लगा देता है। उसके लिए धर्म, समाज और कानून की कोई मर्यादा नहीं है, वह तो निर्मम खोज कर्त्ता है, किन्तु वह अन्तःप्रज्ञा सम्मत मर्यादा में प्रायः बना रहता है। वह प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना चाहता है, अवसर को जाने देना उसके लिए कायरता एवं कमजोरी है।

इस प्रकार के व्यक्ति का एकमात्र दुर्भाग्य यह है कि वह प्रयत्न करता है किन्तु फल प्राप्त नहीं कर पाता। वह अपनी जिन्दगी विकल्पों की उधेड़बुन में गुजार देता है, जबकि अन्य प्रकार के व्यक्ति अपनी मेहनत का फल भोग कर पाते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति के लिए कार्यारम्भ कर बैठना सरल है किन्तु उसका कार्यान्त तक पहुंचना कठिन है, ज्यों ही कार्य से फल की उपलब्धि का समय आता है, वह इस कार्य को छोड़कर किसी नये काम की तलाश में चल पड़ता है, फलतः वह फल सम्पन्न नहीं हो पाता।

इस प्रकार के व्यक्ति के व्यक्तिगत संबंध प्रायः कमजोर पाये जाते हैं। वह अपने मित्रों का साथ छोड़ बैठता है और उसका एक महिला से जुड़ा रहना कठिन है। उसका घर कुछ समय के बाद उसके लिए जेलखाना बन जाता है।

मानव स्वभाव सभी दृष्टियों से एकदम सरल और सुस्पष्ट नहीं है और मानव का कोई भी कार्य विशुद्ध नहीं है अतः उसके कार्य प्रमुखता के आधार पर उसको चिन्तन, भावना, संवेदना अथवा अन्तःप्रज्ञा श्रेणी में रखा गया है, जबकि एक प्रमुख कार्य क्षमता के साथ ही साथ एक व्यक्ति एक अन्य कार्य में गौणक्षमता का विकास कर लेता है, अतः मानव-समाज का उपरोक्त वर्गीकरण नितान्त औपचारिक एवं अन्दाजिया है, फिर भी यूंग द्वारा प्रस्तुत आठ प्रकार के मनोवैज्ञानिक विवेचन द्वारा व्यक्ति तथा व्यक्ति के संबंधों की समझ में बड़ी मदद मिलती है और इस जानकारी का उपयोग घर में, शिक्षालय में तथा चिकित्सालय में योग्य प्रकार से किया जा सकता है। इस अध्ययन से यह भी जानकारी उपलब्ध होती है कि मनस्तापी व्यक्तियों में प्रायः एक ही कार्य का अत्यधिक विकास पाया जाता है और इसलिए उनके द्वारा अन्य तीनों कार्यों के प्रति सर्वथा उपेक्षा की जाती है।

जैसे अन्तःप्रज्ञा प्रधान मनस्तापी संवेदना के प्रति इतनी अधिक उपेक्षा व्यक्त करता है कि जिसके फलस्वरूप उसको उसके शरीर का ही भान नहीं रहता और इसलिए वह शारीरिक दृष्टि से भी रोगी हो जाता है। इसी तरह चिन्तन प्रधान मनस्तापी में भावनाओं के प्रति सर्वथा उपेक्षा देखी जाती है जिसके फलस्वरूप वह अपने व्यक्तिगत एवं पारिवारिक भावना प्रधान सम्बन्धों के निर्वाह की दृष्टि से असफल पाया जाता है और उसके व्यक्तित्व की इकाई छिन्न-भिन्न हो जाती है। बहुधा व्यक्ति एक क्रिया का उपयोग करता है। अर्थात् वह एक क्रिया को प्रधानता देता है तथा इसके साथ एक अन्य क्रिया का सहयोगी क्रिया की तरह उपयोग करता है। ऐसे व्यक्ति को सामान्य कहा जाता है। किन्तु कुछ व्यक्ति एक के बजाय दो क्रियाओं का उपयोग समान क्षमता के साथ कर लेते हैं जबकि कुछ विरले विशिष्ट व्यक्ति तीन-तीन क्रियाओं का उपयोग करने में भी सफल पाये गये हैं। जिनको विशिष्ट व्यक्ति कहा जाता है। यूंग की मान्यता है कि व्यक्ति द्वारा चारों क्रियाओं का उपयोग किया जाना उसके विकास की पूर्णता का द्योतक है। और मानव-जीवन में इस सर्वोच्च क्षमता को उपलब्ध करना ही पुरुषार्थ है और यह यूंगीय साधना पथ की सर्वोच्च स्थिति है, यूंग ने चारों क्रियाओं को समान रूप से संयुक्त किये जाने की प्रक्रिया को व्यक्तिकरण प्रक्रिया (Individuation Process) कहा है। यूंग ने सामूहिक अवचेतन के मूलाधार में स्थित आदि प्ररूप (आर्की टाइप) की व्याख्या करते हुए संकेत दिया है कि करोड़ों वर्षों से मानव स्वतः विकास करते हुए अपने आलोकमय चेतन सम्भाग तथा उसके मूलाधार में स्थित अश्रेय अवचेतन स्तरीय सनातन आदि प्ररूप (आर्कीटाइपल) शक्ति एवं कल्याण अर्थात् शक्ति-शिवतत्व से एक रस होकर चेतन तथा अवचेतन के भेदत्व को सामञ्जसपूर्ण अभेदत्व-एकत्व के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है जिसको आत्मत्व, व्यापक प्रभुत्व अथवा मुक्ति या पूर्णत्व कहा जा सकता है।

इस गहनतम सत्य का विवेचन अन्यत्र एक स्वतंत्र अध्याय में यथास्थान प्रस्तुत किया जायगा, किन्तु धर्म तथा व्यक्तिकरण प्रक्रिया की व्याख्या के पूर्व व्यक्तिगत तथा सामूहिक अवचेतन को भली-भांति समझ लिया जाना अनिवार्य है, अतः चित्त की प्रकृति तथा उसकी संरचना एवं चित्तीय अभिवृत्तियों तथा क्रियाओं पर आश्रित मनोवैज्ञानिक प्रकारों की विवेचना के पश्चात् अवचेतन के गहन क्षेत्रों का अध्ययन आगामी अध्याय में प्रस्तुत किया जायगा, और अवचेतन के सुस्पष्ट विवेचन के पश्चात् ही इस कल्याणकारी धार्मिक प्रक्रिया सम्पन्न व्यक्तिकरण प्रक्रिया को सुस्पष्ट किया जायगा।

अध्याय 8

'मुखौटा' और 'छाया'
(The Persona and Shadow)

मुखौटा और छाया

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग की मान्यतानुसार एक ओर मानव-जीवन के दौरान में "अहम्" चेतन की अभिवृत्तियों तथा उसकी स्वभावजन्य क्रियाओं का निरन्तर विकास करता है, और दूसरी ओर अहम् उसके इर्द-गिर्द समाज के साथ भी सामञ्जस बनाये रखने का भी बराबर प्रयत्न करता रहता है, अतः मानव-जीवन निर्वाह की दृष्टि से अहम् चेतना (Ego-Consciousness) के विकास के साथ ही साथ अहम् (Ego) को समाज अथवा बाह्य जगत् के साथ तालमेल बनाये रखने के लिये बाध्य होना पड़ता है। मानव की चाहे अन्तःमुखी अभिवृत्ति हो या चाहे बहिर्मुखी अभिवृत्ति हो, अथवा प्रक्रिया (functions) की दृष्टि से चाहे वह चिन्तन, भावना, संवेदना अथवा अंतःप्रज्ञा प्रधान व्यक्तित्व हो, फिर भी इन दोनों प्रकार की अभिवृत्तियों वाले तथा उपरोक्त चार प्रकार की क्रिया प्रधानता रखने वाले व्यक्ति को अपने चेतन-जीवन में सदैव बाह्य जगत् और अन्य समाज से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखना जरूरी हो जाता है। बाह्य जगत्, अथवा मानव-समाज के साथ सम्पर्क बनाये रखना अहम् चेतनशील व्यक्ति के लिए एक अनिवार्य स्थिति है, और जब सम्पर्क की स्थिति अनिवार्य है तो स्थिति के साथ सामञ्जस बनाये रखना भी इसकी सहज कर्त्तव्य बोधता है।

इस कर्त्तव्य बोधता के निर्वाह के लिए प्रत्येक मानव को अपने सहज चेतन व्यक्तित्व तथा अज्ञेय मानव-समूह के बीच एक मिला-जुला स्वरूप निर्माण करना पड़ता है, ताकि इस स्वयं निर्मित स्वरूप के माध्यम से वह अपने अहम् चेतन व्यक्तित्व का समाज के साथ तालमेल स्थापित कर सके और अपने इस स्वयं निर्मित स्वरूप के जरिये वह समाज में बैठकर समाज को समझ सके, तथा समाज में अपने तथाकथित स्वरूप को उजागर करते हुए समाज का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सके और वह समाज का एक अंग बन सके। व्यक्ति और समाज के बीच स्वभावजन्य विकास के चरण में इस प्रकार के आवरण निर्माण की उपयोगिता

स्वीकार की जा चुकी है। हम सभ्यता एवं संस्कृति के आग्रह के फलस्वरूप भी प्रायः कुछ बनाव शृंगार के पश्चात् ही समाज के साथ तादात्म्य एवं सम्पर्क स्थापित कर पाते हैं। हर आदमी अन्दर से नंगा है, किन्तु वह अपने एकाकीपन के जीवन को छोड़कर जब समाज के बीच बैठना चाहता है, तब वह समाज तथा सभ्यता की मांग के अनुरूप ऊपरी वस्त्रालंकार धारण करता रहता है, अहम् चेतन द्वारा इस ऊपरी वाह्य वेशभूषा और साज शृंगार के साथ पेश करने की प्रवृत्ति को यूंग ने मुखौटा (Persona) कहा है। प्राचीन रंगमंच पर प्रायः पात्र मुखौटा धारण कर उपस्थित होते थे और समाज के सम्मुख किसी विशिष्ट प्रकार के व्यक्तित्व का स्वरूप अपने अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करते थे।

सामाजिक जीवन निर्वाह के लिए व्यक्ति को भी प्रायः मुखौटा धारण कर अभिनय करना पड़ता है, व्यक्ति को अपनी योग्यता, शिक्षा, व्यवसाय अथवा कार्य क्षेत्र के अनुरूप निरन्तर एक सामञ्जसकारी आवरण (मुखौटा) धारण करना पड़ता है और प्रायः वाह्य जगत् अथवा वृहद-मानव समाज उसको उसके इस वाह्य नाम रूप मुखौटे के माध्यम से ही जानता पहचानता है, और इसके अनुसार ही प्रायः समाज उसकी स्थिति की प्रतिष्ठा करता है। अतः मुखौटा धारण करना भी एक सामाजिक अनिवार्यता अथवा विवशता है, अन्यथा समाज व्यक्ति को स्वीकार करने अथवा पहिचानने से भी इन्कार कर सकता है, और समाज की अस्वीकृति व्यक्ति के आस्तित्व को गंभीर चोट भी दे सकती है, जिसके फलस्वरूप उसका समूचा व्यक्तित्व चेतन के स्तर पर अस्तव्यस्त अथवा विशृंखलित हो सकता है, अथवा उसकी स्थिति की उपेक्षा के गहरे अंधकारकूप में धकेल दिया जा सकता है। वाह्य जगत् अथवा समाज की वृद्धि का अब तक इतना विकास नहीं हुआ है कि वह लाखों करोड़ों व्यक्तियों में से प्रत्येक का अलग-अलग हिसाब-किताब रख सके तथा प्रत्येक व्यक्तित्व की अलग-अलग विशिष्टता का सही मूल्यांकन कर सके तथा अपनी जरूरत के अनुसार उनको अपने सामूहिक चेतन में व्यवस्थित कर सके। अतः समाज प्रायः व्यक्ति को उसकी अलग इकाई अथवा विशिष्टता से भली-भांति परिचित नहीं हो पाता, अपितु वह व्यक्ति को उसके व्यवसाय, धन्धे अथवा पद के माध्यम से ही जानता पहिचानता है, और तदनुसार उसके साथ आचार-व्यवहार करता है। समाज व्यक्ति को विद्यार्थी, अध्यापक, कर्मचारी, मजदूर, सैनिक, कवि, विचारक, न्यायाधीश, कार्यकर्त्ता, नेता आदि विभिन्न प्रकारों के माध्यम से पहचानता है, और समाज अपनी-अपनी रुचि आवश्यकता और अनुभूति के अनुसार एक एकाकी अहम् चेतना मंडित व्यक्ति से बराबर सम्पर्क अथवा सामञ्जस बनाये रखता है।

वाह्य समाज इन मुखौटे धारियों से यह भी सहज अपेक्षा करता है कि प्रत्येक मुखौटा धारी उसके मुखौटे के अनुरूप ही समाज में निर्धारित भूमिका का निर्वाह करें। समाज एक मोची और एक कवि के बीच भेद करता है, जबकि मूलतः मोची और कवि दोनों अंतिम धरातल पर मानव (आदमी) ही हैं, फिर

भी समाज अपने जूते की मरम्मत के लिए एक मोची के पास जाता है, और अपने काव्य विनोद के लिए वह एक कवि का आह्वाहन करता है, और समाज मोची से जूता दुरस्ती तथा कवि से काव्य-पाठ की मांग प्रस्तुत करता है, किन्तु दुर्भाग्य से यदि मोची समाज को कविता सुनाने लग जायेगा तो जूते खा जायगा, और यदि कवि महोदय जूते गांठने बैठने लगेंगे तो वह समाज उनको उपहास का पात्र बनाकर पागल बना देगा। अतः मुखौटाधारी को अपनी स्थिति का निर्वाह करने के लिए अपने मुखौटेपन को निबाहने की अपेक्षा भी समाज के द्वारा उस पर थोपी गई है। इस प्रकार प्रारंभ से ही अहम् चेतना मंडित व्यक्ति को समाज के बीच तालमेल तथा प्रतिष्ठा निर्वाह के लिए अपने आप अपना मुखौटा ओढ़ कर प्रस्तुत होना पड़ता है, और कुछ समय बीत जाने पर उसको उस भूमिका के अनुरूप ही जीवन व्यवहार को चलाये रखने के लिए भी बाह्य जगत् अथवा समाज के द्वारा बाध्य किया जाता है और इस प्रकार स्वयं द्वारा अपनाया गया आडम्बरी दिखावा भी आगे जाकर कभी-कभी उसके लिए जी का जंजाल बन जाता है, अतः मुखौटा धारण करने के लिए भी विवेक का सहारा लिया जाना बहुत जरूरी है, ताकि व्यक्ति और समाज का सामञ्जस बना रहे, और इस प्रकार समाज के बीच उसका सम्पूर्ण जीवन निर्वाह निभ जाय, अथवा जिस समाज को रिझाने हेतु व्यक्ति ने मुखौटा पहना है और यदि वह व्यक्ति उस मुखौटे के अनुरूप आचरण करने में असमर्थ है या संकोच करेगा, तो समाज उसको बेनकाब कर उसे अपमानित कर देगा। अतः व्यक्ति जिस प्रकार का मुखौटा अपनावे, उसको उसी मुखौटे को बनाये रखना चाहिये। व्यक्ति अपने लिये क्या मुखौटा स्वीकार करे इसका विवेक वह अपनी आन्तरिक इकाई के स्वभाव के अनुरूप ही निर्धारित करें। अतः व्यक्ति को अपनी योग्यता, क्षमता, स्वभाव, अभिवृत्ति, क्रिया और आन्तरिक प्रकृति को पहिचानते हुए ही अपने ऊपरी मानवी मुखौटे को स्वीकार करना चाहिये, अन्यथा उसके मुखौटा स्वीकृतिकरण का प्रयोजन ही नष्ट हो जायगा, और वह समाज से व्यवस्थित एवं प्रतिष्ठित होने के बजाय वह समाज से तिरस्कृत, दण्डित और उपेक्षित करार दिया जाकर नष्ट कर दिया जायगा और इस प्रकार उसकी आन्तरिक प्रकृति के सम्यक् परिचय के लिए अहम् चेतनाधारी व्यक्ति को उसके समूचे चित्त (Psyche) का योग्य अनुमान लगा लेना चाहिये। यूंग के मतानुसार चित्त (Psyche) को अहम् चेतनाधारी व्यक्ति के चेतन तथा अवचेतन का सम्पूर्ण एकीकृत पुंज माना गया है। इस चित्त के चेतन स्वरूप की तो अहम् को पूर्ण जानकारी भी है, किन्तु उसके अवचेतन सम्मान की तो उसकी कोई सुस्पष्ट सूचना भी नहीं मिल पाती, अतः उसकी इस स्थिति का उसे अनुमान मात्र करना पड़ता है। अतः यदि वह अवचेतन का अनुमान करते हुए तथा उसके चेतन का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए यदि मुखौटे का निर्माण करता है तो प्रायः सामान्य स्थितियों में वह अपने अपनाये गये मुखौटे की भूमिका का काफी अंशों तक निवाह कर सकेगा, और वह क्रमानुसार विकासोन्मुख जीवन

से परिपुष्ट होता चलेगा, किन्तु यदि उसने अपने चेतन व्यक्तित्व की प्रकृति के विरुद्ध कोई काल्पनिक अथवा आधारहीन आवरण (पद, कार्य, भूमिका) को भ्रम अथवा अज्ञानवश स्वीकार कर लिया है तो वह आगे जाकर अपना जीवन-निर्वाह करने में सफल नहीं हो सकेगा, और ऐसी स्थिति में उसको या तो विकास से उल्टी दिशा में जाना पड़ेगा, अथवा उसको अपने पद कर्त्तव्य तथा कार्य को इंगित करने वाले इस आवरण (मुखौटे) में ही आवश्यक परिवर्तन करना पड़ेगा।

अपने मुखौटे के जीवन निर्वाह के लिए भी अहम् चेतन को समय-समय पर अपनी कुछ वृत्तियों को दबाना अथवा पीछे धकेलना पड़ता है। मुखौटाधारी की भूमिका के विपरीत यदि कुछ प्रवृत्तियां उसके अहम् चेतन में प्रकाशित होती हैं, तो उसको उन प्रवृत्तियों का कभी-कभी शमन अथवा दमन करना पड़ता है, क्योंकि यदि मुखौटे के जीवन के विपरीत वृत्तियों को वह चेतन मन में स्थान देता है तो उसके चेतन मन में स्वीकार किये गये जीवन-व्यवहार और उससे विपरीत वृत्तियों का संघर्ष चेतना के स्तर पर होने लगता है और ऐसी स्थिति में उसका चेतन मन दुविधाग्रस्त होकर दिशाहीन हो सकता है, और जीवन-निर्वाह की भूमिका खंडित हो सकती है, अतः अहम् चेतन को स्वयं द्वारा अपनाये गये मुखौटे के विपरीत उठने वाली प्रवृत्तियों को अपने चेतन मन से दूर धकेल देना पड़ता है, जिसको दमन कहा जाता है, और इस प्रकार दबाई जाने वाली अथवा उपेक्षित, तिरस्कृत की जाने वाली वृत्तियों को चेतन मन से बाहर धकेल दिया जाता है, जो इस प्रकार खदेड़ी जाने पर अवचेतन चित्त में घुस पड़ती हैं तथा उसका एक हिस्सा बन जाता है और अवचेतन चित्त के व्यक्तिगत अवचेतन के स्तर पर इस प्रकार की जो तिरस्कृत प्रवृत्तियां निरन्तर जमा हो जाती हैं, यूंग के मतानुसार इनको छाया संग्रह (Shadow formation) कहा गया है। अर्थात् चेतनचित्त के मुखौटों का ठीक विपरीत स्वरूप व्यक्तिगत अवचेतन की 'छाया' है। मुखौटे की स्थिति तो अहम् चेतन और वाह्य जगत् के बीच बाहर की ओर है, जबकि छाया (Shadow) की स्थिति अहम् चेतन (Ego Conscious) के भीतरी और व्यक्तिगत अवचेतन के बीच स्थित है। मुखौटा चेतन चित्त वाह्य आवरण है किन्तु छाया अवचेतन व्यक्तिगत अवचेतन चित्त का ही एक ऊपरी धरातल सम्भाग है। यूंग की मान्यता है ? कि मुखौटा और छाया में केवल स्थिति की ही विपरीतता नहीं है, अपितु उनके गुण और स्वरूप में भी परस्पर एकदम विपरीतता है। अर्थात् यदि मुखौटे का गुण स्वरूप और स्वभाव सुन्दर, साहस और प्रेम है तो इससे ठीक विपरीत इसकी छाया का गुण, स्वरूप और स्वभाव असुन्दर, कायरता और घृणा ही पाया जायगा। इस प्रकार मुखौटा प्रकाश है तो छाया विशुद्ध अंधकार है, तथा छाया का गुणधर्म मुखौटा के सर्वथा विपरीत ही पाया जायगा।

यूंग छाया को व्यक्तित्व का दूसरा पहलू कहते हैं, छाया में व्यक्ति की

तिरस्कृत उपेक्षित तथा अलाभकारी प्रवृत्तियों का जमाव होता है, अहम् चेतन मंटित व्यक्ति जैसा चाहता है, वैसा ही वह मुखौटा वना लेता है, परन्तु उस वक्त वह यह नहीं जानता कि इससे उसकी छाया का भी सहज रूप से स्वतः निर्माण हो रहा है। इस प्रकार छाया के अन्तर्गत 'अहम् चेतना से धकेली हुई दुर्गम्य और पाशविक वृत्तियां छाया की भण्डार वन जाती हैं। अतः अहम् चेतना की सभी खरावियां', दवाई गई कृतियां, अशोभनीय घटनायें तथा अरुचिकर प्रवृत्तियां ही छाया के रूप में व्यक्तिगत अवचेतन में स्वतः निर्मित हो जाती हैं। अतः इन अप्रिय छायाओं से हमारा व्यक्तिगत अवचेतन भरा पड़ा है, जो सभ्यता के साथ तालमेल नहीं कर पाता और इसलिए उन्हें हमारे चेतन मन के क्षेत्र से वापस अवचेतन स्तर पर धकेल दिया गया है अर्थात् जो भाव, वृत्ति, अथवा कार्य हमारे मुखौटे से असंगत वाह्य जगत् अथवा सभ्यताजन्य समाज से अस्वीकृत कर दी जाती है, उनका अवचेतन के अंधकारपूर्ण स्तर पर छाया के रूप में स्वतः जमाव तथा निर्माण हो जाता है। इस दृष्टि से यूंग ने यह संकेत दिया है कि यदि संस्कृति और सभ्यता को यथा-संभव व्यापक तथा उदार वनाया जायगा तो छाया के निर्माण का अनुपात कम हो सकेगा। छाया हमारे व्यक्तिगत अवचेतन का रूप है। हमारी जिन इच्छाओं और भावनाओं की पूर्ति मुखौटे के अनुरूप सभ्यतापूर्ण समाज में स्वीकृत नही की जा सकती, उनको हमें अवचतन चित्त में धकेल देना पड़ता है, और इस रूप में मुखौटों सगत सभ्य समाज द्वारा उपेक्षित तिरस्कृत इच्छाओं और भावनाओं का रूपान्तर छाया के रूप में हमारे व्यक्तिगत अवचेतन स्तर पर स्वतः इकट्ठा हो जाता है, जिसका सम्यक् अध्ययन किया जाना यद्यपि सभव नहीं है। किन्तु इन छायाओं की यथार्थ स्थिति से इन्कार किया जाना भी उचित नहीं है। हमारे वाल्यकाल से ही हमें कुछ ऐसी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का स्वभावगत अनुभव होता है जिनको हम प्राकृतिक वृत्ति तो कह सकते हैं, किन्तु क्योंकि इसका समर्थन सभ्य समाज द्वारा नहीं किया जा पाता, अतः नैसर्गिक वृत्तियों को भी प्रायः हमें चेतन के स्तर पर दवाना पड़ता है, और इस प्रकार इसका रूपान्तर अवचेतन स्तर पर छाया के रूप में हो जाता है। इस दृष्टि से यूंग छाया को केवल व्यक्तिगत अवचेतन के स्तर तक ही सीमित नहीं मानते अपितु उनका कहना है कि व्यक्तिगत अवचेतन स्तर की भी छायाएं सामूहिक अवचेतन का गहन गहराइयों तक भी यदाकदा पहुँच जाती हैं।

छाया को जनसाधारण की भाषा में बुराई के पर्याप्त के रूप में समझा जा सकता है, इससे अस्पष्टता, अंधकार अथवा दानवी शैतानी का भावार्थ निकाला जाता है, किन्तु यूंग ने इसको केवल अवचेतन का एक पहलू माना हैं। यदि मुखौटा है तो निश्चयपूर्वक उसकी छाया भी है, उसी तरह यदि चेतन का प्रकाश है तो इसके साथ अवचेतन की छाया का अंधकार भी निर्विवाद है। जिस प्रकार चित्त (Psyche) मे चेतन और अवचेतन का समिश्रण है, उसी प्रकार मानव मे चेतन

व्यक्तित्व के मुखौटे के साथ ही साथ अवचेतन छाया अर्थात् दोनों स्थितियों का सम्मेलन भी है, कोई भी मानवीय व्यक्तित्व बगैर छाया के नहीं हो सकता। अतः मानव मात्र में छाया अनिवार्य स्थिति मानली गई है। छायाविहिन आदमी का होना असंभव है, अथवा आदमी की पूर्णता उसके मुखौटे व छाया के साथ योग्य समझ में ही है।

यूंग केवल कोरे मनोविज्ञान शास्त्री ही नहीं थे, अपितु वे एक योग्य चिकित्सक भी थे। जब कभी उनके पास कोई त्रस्त रोगी पहुंचता था, तो वे सदैव उसको उसकी छाया स्थिति से अवगत कराते थे और वह उसको समझाने की कोशिश करते थे कि छाया को दबाया जाना उपयोगी नहीं है, क्योंकि दबाये जाने मात्र से कोई बुराई मिट नहीं जाती, अपितु यदि मानसिक स्वास्थ्य तथा सन्तुलन बनाया रखना अभीष्ट है तो हमको अपनी बुराइयों को भी सही ढंग से समझने का प्रयत्न करना चाहिये। अर्थात् यूंग का आग्रह है कि आदमी ऐसा ढंग अपनाना सीखे कि वह अपनी बुराइयों को भी समझ सके। बुराई को स्वीकार कर लेना तथा छाया के साथ रह कर जीना कोई सरल काम नहीं है, अपितु इस प्रकार के जीवन को अपनाने के लिए नैतिक साहस तथा बड़े धैर्य की आवश्यकता है। अतः यूंग का यह कहना है कि अहम् चेतन मंडित व्यक्ति को अपने चेतन स्तर की बुराई को तो समझ लेना ही चाहिये तथा इस बुराई का बड़े धैर्य और निष्कपटता के साथ विश्लेषण करते रहना चाहिए, और इसको केवल सभ्यता तथा समाज के भय मात्र से अनदेखा, कर इसकी उपेक्षा कर उसको दबा देना उचित नहीं है। क्योंकि चेतन स्तर पर अनुभवगम्य खराबी का परिष्कार तो चेतन स्तर पर सम्यक् विचार मंथन के पश्चात सभव है, किन्तु यदि इस बुराई का परिष्कार, उपचार अथवा संशोधन यदि उस समय चेतन मन के स्तर पर किये जाने बावत लापरवाही अथवा संकोच अथवा उपेक्षा बरती जायगी तो वह बुराई अवचेतन में जाकर छाया के रूप में उसे बराबर परेशान करता रहेगा और अवचेतन स्तर भंडार में दफना देने के बावजूद भी वह नष्ट नहीं होगी अपितु अवचेतन में पड़ी पड़ी वह आपके प्रबल एवं तीव्रतर हो सकती है और जब चेतन का स्तर कमजोर हो जाता है, अथवा जब चेतन स्तर पर अवचेतन में स्थित छाया को उभर आने का कोई संकेत मिलता है, तो ऐसी स्थिति में वर्षों पूर्व दफनाई जाने वाली बुराइयों यकायक चेतन मन पर छा जाती है, तथा समूचे मानव व्यक्तित्व को असन्तुलित रख विध्वंस कर देती है। अवरुद्ध छाया अवचेतन में पड़े पड़े अपने आप प्रभावहीन नहीं हो जाती और न अवचेतन में जाकर नष्ट हो जाती है अपितु यदि बुराई को अवचेतन में दबाया जाता है तो धीरे-धीरे तिरस्कृत और दबाई जाने वाली वृत्तियां अवचेतन में जाकर एक जूठ हो जाती है, तथा चेतन स्तर पर अपना विषय प्रभाव डालने लगती है, जिसके फलस्वरूप धीरे धीरे चेतन स्तर अस्वस्थ और आतंकित होने लगता है, और कभी कभी

तो आन्तरिक अवचेतन की बुराइयां यकायक चेतन स्तर पर इस बुरी तरह से हावी हो जाती हैं कि इसका समूचा अहम् चेतन, तथा बड़ी कुशलता से मंडित मुखौटा तथा तत्सम्बन्धी समूचा मानव समाज त्रसित, खण्डित और विनष्ट हो जाता है। कभी कभी व्यक्तिगत अवचेतन के साथ ही साथ समष्टिगत सामूहिक अवचेतन में दबी हुई प्रवृत्तियाँ भी विद्रोहात्मक रूप में चेतन स्तर के रंगमंच पर सर्वथा नैसर्गिक रूप में निकल पड़ती हैं, और ऐसी असामान्य परिस्थितियों में तो छायाएं साक्षात् राक्षसी तांडव नृत्य करने लगती हैं। अतः भविष्य में मानव संहार के लिए होने वाली दानवी लीला को टालने की दृष्टि से अवचेतन स्तर पर छायाओं के एकत्रीकरण की प्रक्रिया को रोका जाना बहुत जरूरी है और इस दृष्टि से बुराइयों को चेतन मन के स्तर पर ही समझ कर उनसे निपट लिया जाना ही श्रेयस्कर मार्ग है। यदि ईमानदारी के साथ बुराई का सामना किया जाता है तो बुराई के दोष में भी कमी की जा सकती है अथवा इनका उसके चेतन स्तर पर ही इसका उचित रूपान्तर किया जा सकता है और व्यक्ति द्वारा मानव समाज में अर्जित करने की दृष्टि से अपनाये गये मुखौटे को ढोंग अथवा असत्य से बचाया भी जा सकता है। छाया अथवा बुराई के साथ साक्षात्कार करने के लिए हमें ईमानदारी, धैर्य, और बुद्धि की आवश्यकता है, और यह सहज गुणधर्म चेतन मन के स्तर से ही उपलब्ध किया जा सकता है।

यूंग की यह भी मान्यता है कि चेतन चित्त के स्तर पर जब जब व्यक्ति अहम् चेतन के द्वारा वाह्य समाज के साथ सामञ्जस स्थापित करने हेतु जिस प्रकार के मुखौटे का निर्माण करता है तब ठीक इसके विपरीत छाया की स्वतः सहज बनावट व्यक्तिगत अवचेतन चित्त पर संगृहीत हो जाती है, यदि अहम् चेतन "साहस" का मुखौटा ओढ लेता है तो उसी समय उसको "भय" की प्रवृत्ति को अवचेतन में धकेल देनी पड़ती है, और तदनुरूप भय की छाया अवचेतन में इकट्ठी हो जाती है। अतः यदि मुखौटा निर्माण अहम् चेतना के विवेक के अधीन है तो उसकी ठीक उल्टी छाया की सहज स्थिति अवचेतन पर अनिवार्य रूप से स्वतः बन जाती है, इसलिए मुखौटा निर्माण के समय व्यक्ति को पूर्ण जागरूक और विचारशील अहम् चेतना को अपने स्वतः स्वाभाविक स्वरूप का ध्यान रखते हुये ही उपयुक्त आचरण (मुखौटा) स्वीकार करना चाहिए। एक व्यक्ति के स्वभाव में यदि भोग वासना का बाहुल्य है और उसको अपनी भोग प्रवृत्ति का अनुभव अहम् चेतना के स्तर पर होता रहता है, तो ऐसी स्थित में उसको योगी अथवा तपस्वी का मुखौटा हर्गिज नहीं अपनाना चाहिये, क्योंकि योगी और तपस्वी की भूमिका के निर्वाह के लिए उसको बार बार उसकी सहज भोग प्रवृत्तियों का दमन करते हुये उनका छाया के रूप में रूपान्तर करना पड़ेगा, और भोग-वासना प्रवृत्तियों के बाहुल्य अनुभव के फलस्वरूप उसका मुखौटा निरन्तर कमजोर, बनावटी बनता जायगा, किन्तु सशक्त

और प्रबल वेगवान अतृप्त भोग की छायायें स्वतः सशक्त बनती जायेंगी, जो बाहुल्य तथा प्रबलता के स्वरूप न केवल मुखौटे को ही बेनकाब कर देंगी, अपितु उसके समूचे व्यक्तित्व को भी विशृंखलित कर देंगी। इसलिये समूचे चित्त (Psyche) के योग्य सम्यक् अध्ययन के अनुरूप ही व्यक्ति को अपना कार्यक्षेत्र, व्यवसाय; कैरीयर अथवा कार्य प्रवृत्ति का स्थान अथवा पद स्वीकार करना चाहिये अर्थात् अपने चित्त के स्वाभाविक और सहज अनुभव के आधार पर ही उसको अपने मुखौटे का चुनाव करना चाहिये और इसके लिए उसको सर्वप्रथम कम से कम चेतन स्तरीय अनुभवों का योग्य ध्यान रखना चाहिये तथा चेतना स्तरीय अनुभवों की जानकारी के आधार पर ही उसको अपने अवचेतन स्थिति का सहज अनुमान लगाना चाहिये। अतः चेतन स्तरीय अनुभव के ज्ञान के प्रकाश में तथा अवचेतन स्तरीय स्थिति के तर्क संगत सम्यक् अन्दाज के आधार पर ही अहम् चेतन को अपने मुखौटे का चुनाव करना चाहिये, अन्यथा गलत पसंदगी या गैर समझ के आधार पर ग्रहण किया गया मुखौटा या आवरण चिरस्थाई नहीं रह सकेगा, तथा उसके चेतन को अवचेतन की विरोधी और विपरीत प्रवृत्तियों से ग्रसित होना पड़ेगा, और इस मानसिक रूपता के फलस्वरूप उसका न केवल मुखौटा ही फट जायगा, अपितु उसका सम्पूर्ण जीवन प्रवाह संघर्ष में उलझ कर नष्ट हो जायगा, तथा उसका समग्र व्यक्तित्व छिन्न-भिन्न हो जायगा। चित्त के सम्यक् परिचय के लिए अहम् चेतन का अनुभव तो ठोस आधार व्यक्ति को सहज उपलब्ध हो सकता है, किन्तु व्यक्ति को प्रायः उसकी अवचेतन स्तरीय शक्ति भंडार का ज्ञान मुखरित और सुस्पष्ट नहीं हो पाता, और इसलिए उसके अन्दाज लगाने का कोई उपयुक्त आधार स्थिर नहीं हो पाता। यूंग का विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान इस दिशा में पायी जाने वाली कमी को पूरा करने का प्रयत्न करता है। यूंग ने चित्त (Psyche) को प्रकृति तथा संरचना पर विशद रूप से वैज्ञानिक प्रकाश डालते हुये चित्त की चेतन स्तरीय तथा अवचेतन स्तरीय भूमिकाओं का सुस्पष्ट विवेचन किया है और अवचेतन स्तरीय व्यक्तिगत अवचेतन तथा सामूहिक अवचेतन के भेद पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। व्यक्तिगत अवचेतन के स्तर पर छाया तथा अन्य इस जीवन की विस्मृत तथा तिरस्कृत भाव-अनुभावों के धरातल के नीचे पारिवारिक, जातीय, राष्ट्रीय, नृवंशीय, पुरातत्व-मानव पुरखों तथा पुरातन अमानवीय पुरखों की परम्पराओं के सामूहिक अनुभव वैभव की स्थितियों पर भी यूंग ने रोशनी डाली है, और सम्पूर्ण चित्त को एक इकाई घोषित करते हुए भिन्न स्तरीय अवचेतन में स्थित प्रकृति (आद्य मातृ शक्ति) और पुरुष सनातन ज्ञान की स्थिति तथा उसके प्रभाव की ओर भी संकेत दिया है। तथा अवचेतन का चेतन पर होने वाले प्रभाव का वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से यूंग ने अपने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अध्ययन के द्वारा न केवल मनोविज्ञान की नवीनतम विचार पद्धति का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से जोड़ा है अपितु यूंग ने अनुभवजन्य वैज्ञानिक विवेचन के

द्वारा विज्ञान और ज्ञान के बीच भी एक सामञ्जसपूर्ण सेतु बंध का निर्माण किया है। विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के द्वारा एक ओर मनोविज्ञान तथा दर्शनशास्त्र के बीच पाये जाने वाले भेद और अन्तर कम हुआ है और दूसरी ओर विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की कार्यान्विति के माध्यम से विज्ञान और ज्ञान का पृथकत्व भी शनैः शनैः मिटता जा रहा है। अनुभव की आधारशिला पर ज्ञापन और विज्ञान की समुचित व्याख्या करने का यह प्रयत्न यूंग की एक उल्लेखनीय देन है जिसको धीरे धीरे आज दुनियां की प्रतिभायें स्वीकार करने लगी हैं।

निःसन्देह विज्ञान का क्षेत्र बाह्य जगत् है और वैज्ञानिक अनुसंधान के अन्तर्गत बाह्य वस्तु की गहराई के साथ सूक्ष्मतम छानबीन की जाती है किन्तु यूंग के अध्ययन का क्षेत्र मानवीय अनुभवों पर आश्रित चित्त तथा चित्तीय स्थिति का वैज्ञानिक अनुसंधान है और यूंग ने चित्त के वैज्ञानिक अनुसंधान के विवेचन में चित्त के चेतन संभाग की अपेक्षा अवचेतन सम्भाग की ओर विशेषतः अनन्त गहराई में स्थित सामूहिक अवचेतन के अंतःभाग को अधिक महत्व दिया है, अतः इस दृष्टि से यूंगीय विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान को अन्तर्मुखी अध्ययन कहा गया है जिसका सामान्यतः बहिर्मुखी प्रधान पाश्चात्य देशों में भी समुचित प्रसार प्रचार नहीं हो पाया है और इसलिए यूंगीय विचार-अनुसंधान का कार्य क्षेत्र अब तक प्रायः सीमित नजर आ रहा है, किन्तु शनैः शनैः यूंगीय विचारधारा का विस्तार समूचे विश्व में स्वतः हो रहा है और यूंगीय विचारों का प्रभाव मनोविज्ञान, दर्शन, साहित्य समाजशास्त्र, काव्य, पुरातत्व, इतिहास तथा पुराण विद्या (माइथोलोजी) पर पड़ रहा है। यूंगीय अनुसंधान कार्य से समूची मानवता को सही दिशा में स्वतः विकसित होने का एक कल्याणकारी मार्ग निकल आया है—और व्यक्ति समष्टि जाति, राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व में आपसी समझ और योग्य सामञ्जसकारी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है जिसके फलस्वरूप दुनियां में विरोध, अविश्वास और संघर्ष के बजाय परस्पर सहयोग विश्वास और मित्रतापूर्ण सह अस्तित्व का स्वर प्रबल और मुखरित हुआ है। ताकि समूची मानव जाति अपनी अपनी परम्परा, प्रकृति, स्वभाव और क्षमता के अनुसार अपनी भौतिक, सामाजिक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करते हुये पूर्णत्व, समग्रता एवं एकत्व के लक्ष्य की ओर स्वतः बढ़ सके और व्यक्ति अपनी एकाकी अहम् स्थिति को सामूहिक अवचेतन के प्रतिष्ठान आधारभूत सनातन, सर्वव्यापक, अनादि कल्याणकारी विश्व के साथ साथ एकरूप और समरस बन सके, जो कि भारतीय दर्शन वेदान्त द्वारा प्रतिपादित मानव जाति का अंतिम लक्ष्य है, जिसको अद्वैत आत्म साक्षात्कार, आत्म दर्शन, प्रभुव्यापी अथवा मुक्ति कहा गया है।

आगामी अध्याय में व्यक्तिगत अवचेतन स्तर से परे अधिक गहन स्थिति—"सामूहिक अवचेतन" पर विस्तार के साथ गंभीरतम विवेचन प्रस्तुत किया जाने का प्रयत्न किया जायगा।

अध्याय 9

अवचेतन और उसका महत्व

पिछले अध्यायों में चित्त और उसकी प्रकृति तथा चित्त की संरचना पर विवेचन प्रस्तुत किया जा चुका है तथा आगे जाकर चित्त के चेतन सम्भाग में लक्षित अभिवृत्तियाँ (Attitudes) तथा मुख्य क्रियाओं (Main Functions) की विस्तार के साथ व्याख्या प्रस्तुत करने के बाद "मुखौटा और छाया" शीर्षक अध्याय में चेतन स्तर पर व्यक्ति द्वारा अपनाये जाने वाले मुखौटे के परिणामस्वरूप उसी व्यक्ति के व्यक्तिगत अवचेतन पर स्वतः निर्मित "छाया" के आंशिक व्यक्तित्व (Part Personality) के प्रभाव का विवेचन प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि अवचेतन स्तरीय छाया के साथ हमारे अन्तर्द्वन्द्व से ही हमें व्यक्तित्व-विकास की प्रेरणा प्राप्त होती है। अतः यह स्वतः निर्मित "छाया" या परछाई भी हमारे ही व्यक्तित्व का एक हिस्सा है। हम और हमारी छाया मिलकर ही जो कुछ योग है वही हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व है और "छाया" को हम अपने व्यक्तित्व से अलग नहीं कर सकते, क्योंकि छाया ही हमारे मुखौटा मण्डित व्यक्तित्व का आधार है। जिस प्रकार आधार के बिना कोई व्यक्तित्व टिका नहीं रह सकता। जितनी ऊंची इमारत अथवा व्यक्तित्व है, उतनी ही गहरी नींव में छाया की स्थिति है। अतः व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को ठीक से समझने के लिये उसकी "छाया" की योग्य जानकारी कर लिया जाना निःसन्देह बहुत जरूरी है। मानवीय जीवन की पूर्वावस्था की बहुत सी कमियां "छाया की समस्यायें पायी जाती हैं। ज्यों-ज्यों हम इन समस्याओं का समाधान करने लगते हैं त्यों-त्यों हमारी जड़ें गहराई तक पहुंचने लगती हैं और हमारे समूचे व्यक्तित्व में स्थिरता, सुस्पष्टता तथा दृढ़ता आने लगती है। व्यावहारिक जीवन में छाया के दूरगामी प्रभाव के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। छाया में हमारे दवाये गये संस्कारों की स्थिति है और इस प्रकार हमारे द्वारा दमित संस्कारों का स्वतः निर्मित "छाया" के कारण ही हम उनके अनुरूप लोगों से मैत्री अथवा शत्रुता का वर्ताव करने हेतु प्रेरित होते हैं। इसलिये तथाकथित कई महापुरुषों के इर्द-गिर्द हमेशा कुछ उनके "मुंह लगे लोग" पाये जाते हैं जिन्हें इन विशिष्ट अधिकारियों का

छाया पुरुष कहा जाता है। महापुरुष के द्वारा दवाये गये संस्कारों की अभिव्यक्ति उनके इन छाया पुरुषों के माध्यम से होने के अनेक उदाहरण समाज में परिलक्षित किये जाते हैं।

व्यक्ति द्वारा समाज के समायोजन एवं सामंजस हेतु अपनाये गये चेतन स्तरीय मुखौटे के परिणामस्वरूप उस व्यक्ति के व्यक्तिगत अवचेतन स्तर पर "छाया" का स्वतः निर्माण होता है जो अवचेतन का सबसे ऊपरी धरातल है। इसके वाद से ही अगाध गहन अवचेतन क्षेत्र का प्रारम्भ होता है। कार्ल गुस्ताव जुंग ने सर्वप्रथम छाया और मुखौटे (Persona and Shadow) की वीच समस्याओं के हल के लिये बड़ा आग्रह प्रगट किया है ताकि व्यक्ति अपनी छाया से अभिमुख होने पर ही वह अपनी आन्तरिक समस्याओं का समाधान खोजने का श्री गणेश कर सके। जैसे-जैसे व्यक्ति मुखौटे और छाया के अन्तर्द्वन्द्वों को समझते हुए इनके योग्य समाधान की खोज में प्रवृत्त होता है वैसे-वैसे उसके सन्मुख उपस्थित समस्याओं का पहलू ही वदलने लगता है और वह अपने वाह्य व्यवहार और अपनी आन्तरिक मांग के वीच एक योग्य समायोजन स्थापित करने में सफल होता हुआ पाया जाता है।

इस प्रसंग में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह सतत स्मरण कराया है कि चेतन और अवचेतन चित्त के परस्पर जुड़े हुए दो परस्पर पूरक संभाग (Parts) हैं जिनके योग से चित्त की जो इकाई है, वही एकमात्र मानसिक सच्चाई (Reality) है निःसंदेह चेतन और अवचेतन परस्पर विरोधी धर्मों का परस्पर पूरक सम्भाग है किन्तु इनके वीच कोई स्थायी (Water tight) दीवार या अभेद्य रूकावट नहीं है अपितु इनके वीच केवल जोड़ ही नहीं, अपितु जीवन ऊर्जा के सतत स्वतः प्रवाह के फलस्वरूप चेतन और अवचेतन की अन्तर्वस्तु की आपस में अदला-वदली भी होती रहती है और इसलिये चेतन और अवचेतन संभागों को न केवल परस्पर पूरक (Complimentary) माना गया है अपितु इन दोनों संभागों को एक दूसरे का क्षति अथवा कमी पूरक (Compensatory) भी माना गया है, अतः व्यक्तित्व के सहज स्वतः विकास में यदि चेतन स्तरीय कोई कमी है तो वह अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु से तथा यदि स्वतः व्यक्तित्व विकास में अवचेतन स्तरीय कोई कमी, संघर्ष या अवरोध है तो वह चेतन स्तरीय समझ ज्ञान द्वारा उसका समायोजित होना यूंग द्वारा माना गया है। निःसन्देह चेतन स्तरीय कमी अथवा कमजोरी का तो पता लगाया जाना सरल तथा अहम् की क्षमता के अन्तर्गत है, अतः चेतन स्तरीय कमी का परिमार्जन वाह्य स्थिति-परिस्थिति आदि की योग्य जानकारी से किया जा सकता है किन्तु व्यक्ति की क्षमता से परे अवचेतन की कमी को उपयुक्त प्रकार से खोजना, समझना तथा इसके वाद उसका योग्य सुधार किया जाना निःसन्देह कठिन एवं गम्भीर कार्य है। किन्तु यूंग ने इसको भी असम्भव नहीं माना है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने मनोचिकित्सा विधि के अन्तर्गत गहन अवचेतन स्तरीय कमियों, ग्रन्थियों और वाधाओं का स्वप्न विश्लेषण (Dream Analysis) तथा सक्रिय

कल्पना विधि (Active Imagination Method) के माध्यम से उनको चेतन स्तर पर उभारते हुए इनकी योग्य परख करने, समझने और उपचार करने का सुझाव प्रस्तुत किया है जिसका विवेचन आगे जाकर यथास्थान पर प्रस्तुत किया जायेगा। अतः श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने चेतन और अवचेतन के बीच परस्पर प्रतिपूरक और क्षतिपूरक अवधारणा की स्थापना से दोनों संभागों की कमियों के निराकरण अथवा परिमार्जन किये जाने का रास्ता अपने दीर्घकालीन पचास वर्षीय अनुभव तथा अनुसन्धान कार्य के आधार पर निर्धारित किया है।

अवचेतन मन (Unconscious Mind) की स्थापना निःसंदेह डाक्टर सिगमंड फ्रायड की एक उल्लेखनीय मौलिक देन या खोज है जिससे श्री कार्ल गुस्ताव यूंग अपनी युवावस्था में बड़े प्रभावित हुए और सन् 1912 तक वह डाक्टर फ्रायड के प्रमुख अनुवर्ती माने जाते रहे। डाक्टर फ्रायड के "अवचेतन मन" के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने अवचेतन सम्बन्धी गम्भीर अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किया और सन् 1912 में उन्होंने The Psychology of the Unconscious पुस्तक का प्रकाशन किया। यूंग द्वारा जर्मन भाषा में प्रकाशित उक्त पुस्तक का प्रामाणिक अंग्रेजी अनुवाद कारनेल युनिवर्सिटी के मेडीकल स्कूल के प्राध्यापक Dr. Beatrice M. Hinkle द्वारा केगन पाल लंदन से प्रकाशित हुआ है–जो अब वोलिनगन सीरीज के अन्तर्गत Symbols of Transformation शीर्षक से खण्ड 5 में उपलब्ध है। इस पुस्तक में कार्ल गुस्ताव यूंग ने चित्त के अवचेतन संभाग के सम्बन्ध में डाक्टर फ्रायड के विचारों से अपना मौलिक मतभेद कतिपय प्रमाणों के आधार पर प्रतिपादित करते हुए यह सिद्ध किया है कि अवचेतन में केवल इसी जन्म के संस्कारों के अवशेष पाये जाने बाबत डाक्टर फ्रायड की धारणा गलत है तथा फ्रायड द्वारा प्रतिपादित "कामेषणा" को ही एकमात्र मानवीय सहज वृत्ति मान लिया जाना भी गलत है जिसे यूंग ने एक "अतिवाद" कहा है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने अनेक विज्ञान संगत उदाहरणों से यह प्रमाणित किया है कि अवचेतन संभाग में न केवल व्यक्तिगत, अपितु व्यक्ति के निकटस्थ तथा दूर के प्राचीन पूर्वजों आदिम मानव समूह एवं आदिम पशु समूह आदि के सभी संस्कार बीज रूप से मौजूद रहते हैं–जो केवल दमित, उपेक्षित तथा अशिव ही नहीं हैं, अपितु अवचेतन स्तर पर अनेक कल्याणकारी अनुभवजन्य संस्कारों का खजाना होना माना गया है जिनका मानव के स्वतः व्यक्तित्व विकास में बड़ा उत्तम उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा यूंग ने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मानव की मुख्य ऐषणा "कामेषणा' के बजाय "जीवनैषणा' को ही मानवीय व्यक्तित्व विकास के लिये सर्वोपरि महत्वपूर्ण सहज-वृत्ति माना है और इस प्रकार यूंग द्वारा प्रकाशित The Psychology of the Unconscious पुस्तक से सम्पूर्ण मानवता को एक नया दिव्य सन्देश मिला है जिसके प्रकाश में मानव को अपने जीवन का प्रयोजन तथा अर्थ समझते हुए स्वयं

को विकसित करने तथा स्वयं को विश्व के साथ एक उपयोगी सम्बन्ध स्थापित करने का कल्याणकारी अवसर प्राप्त होना माना गया है ।*

अवचेतन ही चित्त का बहुतांश संभाग है जिसका व्यक्तित्व के निर्माण में सर्वोपरि महत्व है । चेतन संभाग चित्त का एक अल्पांश मात्र है जो केवल सत ही (Face Level) धरातलीय हिस्सा है । अवचेतन ही चेतन का प्रतिष्ठान, मूलाधार और सृजक है । चेतन सम्भाग मानवीय चित्त की ऊपरी एक परत या स्तर है जिसको देखा, समझा तथा व्याख्यायित किया जा सकता है किन्तु अवचेतन की अनेक गहरी परतें हैं तथा गहराई की इन सभी परतों को चेतन से जाना कठिन एवं असंभव है । व्यक्ति को अहम् समूचे अवचेतन को न तो समझ सकता है और न इसका मूल्यांकन कर सकता है, अतः अहम् द्वारा समूचे अवचेतन की व्याख्या किया जाना असंभव है । चेतन मन से केवल मात्र अवचेतन की कुछ ऊपरी परतों का अनुमान लगाया जा सकता है जो यदाकदा अवचेतन से चेतन पर उभर आती हैं । अवचेतन संभाग के इस ऊपरी खण्ड को "व्यक्तिगत अवचेतन" कहा गया है—व्यक्ति द्वारा समाज के साथ योग्य समायोजन हेतु अंगीकार किये गये मुखौटे के कारण स्वतः निर्मित "छाया" व्यक्तिगत अवचेतन में स्थित एक हिस्सा है । इस व्यक्तिगत अवचेतन के

---

* That humanity is seeking a new message, a new light upon the meaning of life and something tangible as it were, with which it can work towards a larger understanding of itself and its relation to the universe, is a fact I think none will gainsay.... .. ....In the work he has plunged boldly into the treacherous sea of mythology and folk lore, the production of the ancient mind and that of the common people .... applied to the modern mind, in order to reveal the common desire and longing which unless all humanity andt hus bridge the gaps presumed to exist between ancient and widely reparter peoples and those of our modern times.... ....He proceeds to hold a loft a new Ideal, a new goal of attainment and which can be intellectually satisfying, as well as emotionally appealing to the goal of MORAL AUTONOMY —From 'The psychology of the unconscious. Translator B.M. Hinkle.

Note : Kegan paul London, 4th impresion in 1944 at page–1.

नीचे व्यक्ति के प्रारम्भिक जीवन की विस्मृत यादें उसके बाप-दादों के अनुभवों के प्रभाव तथा उसके आदिम मानव तथा उसके आदिम पशु पुरखों के अनुभव-संस्कार, उसकी जाति, राष्ट्र तथा समग्र मानवीय जीवन के अनुभव बीजों का भण्डार है जिनकी अभिव्यक्ति प्राय: धार्मिक क्रियाकलापों कला-कौशल सृजनात्मक कृतियों, मिथकों, दंतकथाओं, पुराणों आदि में यत्र तत्र अक्षेय विरासत की तरह बिखरी पायी जाती है उनके अध्ययन मनन से निःसंदेह प्राचीन कालीन मानवीय अनुभवों की यदाकदा एक सूक्ष्म झलक व्यक्ति को अपने चेतन स्तर पर मिल पाती है, जिनकी प्रत्यक्ष प्रकार से तो नहीं अपितु अनुमान के आधार पर इनके बावत इनका अल्पांश अर्थ वह मानव जान पाता है। अत: प्राय: मानवीय चित्त का अवचेतन निःसंदेह गहन, अगाध, अनजान, अज्ञेय रह जाता है, किन्तु इसका प्रभाव और महत्व बहुत ही व्यापक एवं सर्वोपरि पाया गया है। कार्ल गुस्ताव यूंग ने व्यक्तिगत अवचेतन से गहन स्तर पर सामूहिक अवचेतन क्षेत्र की स्थिति का होना बतलाया है जिसका बहुतांश हिस्सा कभी भी चेतन स्तर पर उभर कर आने की कोई सम्भावना ही नहीं है। यूंग ने सामूहिक अवचेतन की गहनतम परत का आधार मूल प्रारूप (आर्कीटाइप) की स्थिति के होने का संकेत दिया है। यूंग की मान्यतानुसार सामूहिक अवचेतन के मूलाधार में स्थित मूलरूप या आदि प्रारूप (आर्कीटाइप) के रूप में आध्य मातृ शक्ति (The Great Mother) तथा उसके भी बीच सनातन ज्ञान पुरुष (The Ancient wise Man) के अस्तित्व की प्राकल्पना की है जिसका विवेचन अगले अध्याय में यथास्थान पर विस्तार के साथ प्रस्तुत किया जायेगा।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह सलाह दी है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की अभिवृत्ति एवं मुख्या क्रियावृत्ति (Main Function) के अनुरूप ही अपना मुखौटा अंगीकार करना चाहिये ताकि उसकी सहजवृत्ति और स्वभाव का उसके द्वारा स्वीकृत मुखौटे के व्यवहार से योग्य तालमेल बना रह सके और उसके स्वभाव एवं व्यवसाय के बीच अनावश्यक खींचातानी तथा संघर्षों की स्थितियों से बचा जा सके। अन्यथा उसके व्यक्तित्व की शक्ति उसके स्वभावजन्य वृत्तियों तथा उसकी व्यावसायिक क्रियाओं की आपसी खींचातानी में व्यर्थ खर्च हो जायेगा और उसके व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जायेगा। इसके अलावा व्यक्ति द्वारा अपनाये गये मुखौटे की पालना के दौरान में उसके व्यक्तिगत अवचेतन स्तर पर स्वत: निर्मित छाया की प्रबल शक्ति से भी उसे सावधानी बरतनी चाहिये। अन्यथा अवचेतन स्तरीय निर्मित छाया के प्रबलतम विस्फोट की स्थिति में न केवल व्यक्ति द्वारा अंगीकृत मुखौटा ही बेनकाब हो जायेगा, अपितु उसका संपूर्ण व्यक्तित्व भी रोगग्रस्त अथवा क्षतिग्रस्त हो जायेगा। जैसे यदि कोई बहिर्मुखी व्यक्तित्व जो स्वभाव से रसिक और रूप सौन्दर्य प्रेमी इन्द्रिय सुख भोग का आकांक्षी है तो उसे किसी रंग शाला संगीतनाटक मंडली का डायरेक्टर अथवा कार्यकर्त्ता का तो मुखौटा स्वीकार

किये जाने में कोई खतरा नहीं है किन्तु इस अभिवृत्ति और रुचि का व्यक्ति यदि किसी मठ मन्दिर अथवा एकाकी साधना शिविर के संचालक का मुखौटा स्वीकार कर महन्त, पुजारी अथवा तपस्वी साधक का उत्तरदायित्व वहन करने का प्रयत्न करेगा तो निःसंदेह उसका बहिर्मुखी व्यक्तित्व उस मठ मन्दिर और एकान्त साधना स्थल के बन्द वातावरण में वह बड़ी बेचैनी का अनुभव करने लगेगा और वहां उसका दम घुटने लगेगा और उसके लिये मठ मन्दिर और साधना आश्रम में सम्मिलित होने वाले रमणियों के सानिध्य से उसका अछूते बना रहना अत्यन्त कठिन हो जायेगा और उस एक जवान रसिक स्वभाव के महंत के लिये केवल मात्र गेरुवा चद्दर ओढ़ने के मुखौटे को स्वीकार करने से उसका निर्वाह किया जाना कठिन और असंभव हो जायेगा। क्योंकि उसके द्वारा अपने सहज स्वभाव के खिलाफ अंगीकृत मुखौटे से जो परिस्थितिजन्य दमन के परिणामस्वरूप उसकी जिस प्रबलतम छाया का स्वतः निर्माण होना पाया जायेगा उसका अन्दाज लगाते हुए उसके लिये मठ मन्दिर अथवा साधना-श्रम के महंत या धर्म गुरु द्वारा अपनाया गया यह मुखौटा अधिक दिनों तक उसके लिये टिकाये रखना असम्भव सिद्ध होगा। अतः इस प्रकार जबरदस्ती एवं मूर्खतापूर्ण अंगीकृत मुखौटा देर सवेरे निश्चित रूप से बेनकाब हो जाएगा और वह तथाकथित धर्म गुरु महाराज का समूचा व्यक्तित्व छिन्न भिन्न होकर उसको अपने ही बनाये गये भक्त समाज में उपहास, लांछना का पात्र बनना पड़ेगा। इसलिये मुखौटा स्वीकार करने वाले व्यक्ति को स्वयं की रुचि, अभिरुचि, आन्तरिक मांग, अपनी स्वभाव का योग्य अंदाज तथा अनुभवजन्य अनुमान के अनुरूप ही अपना मुखौटा स्वीकार करना चाहिये—क्योंकि उसका मुखौटा केवल मात्र उसका बाह्य श्रृंगार मात्र है। यदि कोई व्यक्ति अपनी असलीयत, स्वभाव अथवा अपने व्यक्तित्व के विपरीत बिना सोचे समझे कोई भिन्न मुखौटा ओढ़ने की गलती करता है तो निःसंदेह उसका योग्य निर्वाह अधिक दिनों तक वह निःसंदेह नहीं कर पायेगा और मुखौटा टूटने के साथ ही साथ उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व भी टूट फूट जायेगा और वह रोगग्रस्त पागल अथवा समाजद्रोही करार दिया जाकर अपमान, भर्त्सना और निंदा का पात्र बन जायेगा।

इसी अध्याय के प्रारम्भ में यह भी विवेचित किया जा चुका है कि अंगीकृत मुखौटे की प्रतिक्रिया स्वरूप छाया का स्वतः निर्मित होना व्यक्तिगत अवचेतन का सहज परिणाम है तथा यहीं से अवचेतन स्तरीय स्थिति का श्रीगणेश होता है। "छाया" अवचेतन के प्रथम स्तरीय रंगमंच का पहला पर्दा है तथा इसके बाद व्यक्तिगत अवचेतन तथा सामूहिक अवचेतन के क्रमशः दूसरा तथा तीसरा पर्दा है। इस दूसरे पर्दे की विषयवस्तु पुरुष के अवचेतन में पायी जानी वाली नारीमूर्ति (एनीमा) तथा सामान्य नारी के अवचेतन में स्थित पुरुष मूरत (एनीमुस) की स्थिति है जिसका विस्तृत विवेचन अगले अध्याय में "एनीमा-एनीमुस" शीर्षक अध्याय में प्रस्तुत किया

जायेगा और इसके बाद के अध्याय में कथानक आदि पुरुष (आर्कीटाइप) "आद्य मातृशक्ति और पुरातन ज्ञान पुरुष" का विस्तार के साथ विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा अतः (क) छाया (ख) एनीमा-एनीमुस तथा (ग) आर्कीटाइपल मूलाधार प्रारूप "आद्यमातृ शक्ति एवं सनातन ज्ञान पुरुष। इन सभी तीनों स्थितियों का विवेचन चित्त के अवचेतन सम्भाग की विषय वस्तु है जिनका प्रभाव और महत्व चेतन स्तरीय अभिवृत्ति क्रियाओं एवं वर्गीकरण की अपेक्षा निःसंदेह अधिक प्रभावकारी एवं महत्वपूर्ण है, जैसा कि श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपने अध्ययन अनुभव एवं अनुसंधान के आधार पर विवेचित किया है।

———

अध्याय 10

एनीमा एवं एनीमुस
(Anima and Animus)

अवचेतन के गहनतम स्तरीय सामूहिक अवचेतन (Collective Unconscious) के विस्तृत विवेचन के पूर्व व्यक्तिगत अवचेतन तथा सामूहिक अवचेतन के मध्य में स्थित अवचेतन स्तरीय नर के चित्त में नारी मूर्ति तथा नारी के चित्त में पुरुष स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत किया जाना जरूरी एवं उपयोगी है। सामान्यत: शब्द "मानव" अथवा व्यक्ति से नर और नारी दोनों का बोध होता है। नर और नारी दोनों के साथ ऊपरी मुखौटा और आन्तरिक छाया का समान रूप से संबंध पाया जाता है। अर्थात् नर के द्वारा चेतना स्तर पर स्वीकृत मुखौटे से उसके व्यक्तिगत अवचेतन पर उसकी नारी प्रतीक 'छाया' का, तथा नारी के मुखौटा अंगीकार करने के परिणामस्वरूप उसके व्यक्तिगत अवचेतन पर पुरुष-रूप छाया का स्वत: निर्माण होना माना जाता है। जिस प्रकार चेतन स्तर पर नर-नारी एक दूसरे के पूरक हैं, उसी तरह नर के अवचेतन में एक नारी तथा नारी के अवचेतन में एक नर की स्थिति पायी जाती है जिसको यूंग ने क्रमश: "एनीमा तथा एनीमुस" संज्ञा से व्याख्यायित किया है। अर्थात् एक पुरुष के अवचेतन स्तरीय अन्तर्जगत् में एक नारी मूर्ति तथा एक महिला के अन्तर्जगत् में एक नर स्वरूप की अभिव्यक्ति पायी जाती है। निःसंदेह यूंग की मान्यतानुसार पुरुष चिन्तनशील, व्यावहारिक एवं विवेकप्रधान होता है जबकि महिला स्नेहमयी, त्यागमयी एवं भावनामयी पायी जाती है, अत: एक आदमी तथा एक औरत के सोचने, समझने और व्यवहार करने में कुछ अंतर होना स्वाभाविक है और पुरुष तथा महिला के द्वारा बुद्धि के उपयोग किये जाने में भी फर्क पाया जाता है। इसी तरह पुरुष का कार्य क्षेत्र महिला की अपेक्षा अधिक विस्तृत है और पुरुष के जीवन का अधिकांश भाग घर के बाहर, जबकि महिला का जीवन प्राय: घर के अंदर अपने बाल बच्चों के लालन-पालन तथा अपने परिवार की योग्य देखभाल में व्यतीत होता है। यद्यपि पुरुष और स्त्री का मानस एक दूसरे से भिन्न है किन्तु इसके बावजूद भी वे एक दूसरे के पूरक हैं। सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन तथा मानव जीवन का निर्वाह पुरुष और नारी के आपसी सहयोग

और मिलन से ही संभव है। सभी धर्मों में देव के साथ देवी की आराधना एवं पूजा का विधान है—चीनी दर्शन में "यिन" और "यांग" का सिद्धान्त तथा सांख्य दर्शन में "पुरुष" और "प्रकृति" का वर्णन यही प्रतिपादित करता है। सम्पूर्ण सृष्टि का प्रजनन, पालन और स्थिति का निर्वाह पुरुष और नारी के परस्पर मिलन और आपसी सहयोग पर ही निर्भर एवं आधारित है। जीव विज्ञान की दृष्टि से पुरुष और महिला का संमिश्रण से ही जीवन सिद्ध है। प्रत्येक पुरुष के साथ एक नारी जुड़ी हुई है। भारतीय चिन्तन से अर्द्ध नारीश्वर का विवेचन है। मानव शास्त्र की दृष्टि से भी इसी तथ्य का समर्थन होता है कि पुरुष के अवचेतन में एक नारी तथा महिला के अवचेतन में एक नर का अस्तित्व पाया जाता है। सामान्यतः एक पुरुष में बहुतांश में पौरुष अर्थात् पुरुषोचित गुण पाये जाते हैं किन्तु इसके साथ ही साथ उसमें कुछ अंश में नारी गुणों का समूचा भी सर्वथा अभाव नहीं पाया जाता। उसी तरह एक महिला में नारीजन्य गुणों के बाहुल्य के अलावा कुछ कम मात्रा में ही सही, कतिपय पुरुषोचित गुणों का विद्यमान रहना पाया जाता है। अर्थात् अल्प मात्रा में पुरुष में स्त्री-भाव और महिला में पुरुष-भाव पाये जाते हैं, जो प्रायः उसके अवचेतन में अव्यक्त रूप से मौजूद रहते हैं। मानव जीवन और व्यक्तित्व विकास के लिये हमें अपने इन अवचेतन स्तरों से इन अव्यक्त गुणों को चेतन स्तर पर जाग्रत कर उसका भी योग्य उपयोग चेतन स्तर पर किया जाना जरूरी है। भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत "शिव" को "शक्ति" से और शक्ति को शिव के सन्मुख करते हुये इनके बीच की इकाई को स्थापित किया जाना ही "परम पुरुषार्थ" कहा गया है।

पुरुष बाह्य जगत् का खोजी तथा नियन्ता है जबकि स्त्रीभाव को हमारे अन्तरर्जगत् की प्रहरी एवं पथ-प्रदर्शिका माना गया है। इस दृष्टि से स्त्री हमारी अवचेतना की निधि की रक्षक और जीवन की मूल प्रेरणा मानी जाती रही है। इसलिये भारतीय चिन्तन में स्त्री को "अर्द्धांगिनी" कहा गया है तथा पुरुष और नारी के योग्य समयोजन से ही सम्पूर्ण सृष्टि का विधिवत् निष्पादन होना माना गया है।

पुरुष के अवचेतन में बसी स्त्री मूर्ति या शक्ति को डाक्टर यूंग ने "एनीमा" कहा है—जो उस व्यक्ति के अवचेतन में स्थित सामूहिक संस्कारों की एक पुंज है, जो कुछ अंशों में इसकी व्यक्तिगत अवचेतन की निधि कही जा सकती है। एनीमा व्यक्ति के अवचेतन स्तर पर बसी एक महत्वपूर्ण मूलरूप अथवा मूल प्रारूप (आर्कीटाइप) है। कार्ल गुस्ताव यूंग ने एनीमा के अस्तित्व के तीन स्रोत माने हैं :—

प्रथम स्रोत तो जीव विज्ञान की दृष्टि से पुरुष द्वारा सनातन काल में अब तक चली आ रही परम्परागत "स्त्री-भाव" का सामूहिक अनुभव है। दूसरा स्रोत व्यक्ति विशेष के द्वारा इस जीवन में अपनी माता, बहिन, पत्नी, बेटी, मित्र आदि अन्य स्त्रियों के सम्पर्क से होने वाले अनुभवों से प्राप्त नारी तत्व का अनुभव है।

तथा एनीमा का तृतीय स्रोत एक पुरुष में निहित नारी गुणों की स्थिति का अनुभव-जन्य संस्कार है।

यूंग की मान्यता है कि परम्परा से प्राप्त सामूहिक नारी की तस्वीर व्यक्ति के अवचेतन में मौजूद पायी जाती है जिसके आधार पर वह नारी के स्वभाव (The nature of women) को समझ पाता है। * किन्तु आर्कीटाइपल नारी की इस प्रतिभा (Image) से सामान्य नारी का परिचय उपलब्ध हो सकता है तथा इसका मिलान वह बाह्य दृष्टि से सैंकड़ों औरतों से कर सकता है, अतः आर्कीटाइपल नारी की प्रतिभा के अनुभव से किसी नारी विशेष के सही चरित्र को नहीं जाना जा सकता। प्रायः व्यक्ति विशेष के इस जीवन में संपर्क में आने वाली नारियों में उसका घनिष्टतम संबंध उसकी माता से ही रहता है और उसके व्यक्तित्व निर्माण में उसकी माता की प्रमुख तथा प्रभावशाली भूमिका पायी जाती है, अतः एक पुरुष के जीवन में उसकी माता की प्रतिभा एवं उसके स्वभाव का विशेष महत्व पाया जाता है, अतः माता के गुणों से साम्य रखने वाली महिला के प्रति वह अपनी क्षमतानुसार घनिष्टता को रंग भरने की ओर सहज में प्रवृत्त होता है जो कि उसके अवचेतन में बसी नारी मूर्ति है जिसको यूंग ने "एनीमा" कहा है। इस श्रेणी की महिला के साथ उसके जीवनकाल में जब उसका सम्पर्क होता है तब वह प्रायः उस पर अपनी एकान्तिक भावनाओं का प्रक्षेपण (Projection) कर बैठता है और वह उसके प्रेम में पड़ जाता है। फिर भी प्रत्येक बालक के चित्त में उसकी माता की सही तस्वीर प्रायः एक सी नहीं रह पाती, अतः ऐसी परिस्थितियों में यदि व्यक्ति उसके प्रेम में पड़ने की गलत फहमी का भी शिकार हो जाता है तो इसके फलस्वरूप उसके साथ विवाह होने के कभी कभी खतरनाक नतीजे भी निकल सकते हैं। प्रत्येक माता तथा प्रेमिका में व्यक्ति अपनी शाश्वत कालीन नारी मूर्ति के साम्य को ढूंढने का प्रयत्न करता है, जो कि वस्तुतः उस व्यक्ति (पुरुष) के अवचेतन में गहराई से बसी वही एक नारी मूर्ति है। सामूहिक अवचेतन मे बसी आर्कीटाइपल नारी मूर्ति का प्रत्येक पुरुष के जीवन में निस्सन्देह बड़ा महत्व है। तथापि भिन्न-भिन्न युगों में इस नारी मूर्ति में कुछ परिवर्तन भी लक्षित किया जाता है परन्तु प्रायः इसका स्वरूप करीब-करीब यथावत् बना रहता है और एनीमा की मूर्ति पर बीस बरसों का कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया जाता है, अतः पुरुष के अवचेतन में बसी नारी-मूर्ति उसको सदैव चिरन्तन युवती प्रतीत होती है। उसमें पुरुष दिव्य गुणों तथा अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव करते हुये वह उसके प्रति गहराई से आकर्षित

---

* Integration of the Personality—Archetytes of the Collective Unconscious (Collected works of C.G. jung Vol. 9, Page 80

हो जाता है।* एक प्रेमी को अपनी प्रेयसी के दो पहलू नजर आते हैं, एक दृष्टि से तो वह अपनी प्रेयसी में पवित्रता (Purity), अच्छाई (Goodness) तथा देवोपम आकृति (Goddess like Figure) के दर्शन करता है तथा नजर में वह उसको जादूगरनी, बहकाने वाली मोहनी (Seductiess) मान बैठता है। नारी का यह अद्भुत रूप साहित्य तथा मिथक-कथाओं में प्राय: वर्णित किया गया है।

पुरुष के अवचेतन में बसी नारीमूर्ति (एनीमा) का उस पर अद्भुत प्रभाव होता प्राय: देखा गया है। जब सामूहिक अवचेतन में बसी इस नारीमूर्ति का साम्य पुरुष किसी भी महिला में पाता है तो वह उस पर अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को न्यौछावर कर देने के लिये उतावला एवं बेचैन सा हो उठता है तथा उसको अपने ही व्यक्तित्व का प्रमुख अंग समझने लगता है। वह उक्त नारीमूर्ति (एनीमा) में ही सभी आध्यात्मिक मूल्यों (Spiritual Values) का आरोपण करता है और वह उसे देवीगुण सम्पन्न महान् मान बैठता है। वह उसके लिये एक हलचल मचाने वाली जीवनेच्छा (Chantic life urge) बन जाती है तथा वह उसको अपनी आत्मा की रानी (My Lady Soul) कहने लगता है और वह उसके जीवन की आशा तथा प्रेरणा की केन्द्र बन जाती है जिसकी अभिव्यक्ति वह अपनी कला और साहित्य में करने के लिये प्रेरित होता है और वह उसके बाबत निरन्तर चिन्तन तथा दिवास्वप्न देखने के लिये मजबूर सा हो जाता है।

नारी मूर्ति (एनीमा) की इस प्रभावकारी शक्ति का अनुभव प्रत्येक प्रेमी को करने का अवसर मिलता है और प्रथम मिलन के प्यार का क्या वेग है वह प्रेमी ही केवल एक जान पाता है। प्रेमिका के प्यार ने मनुष्य को क्या नहीं करने के लिये समर्थ बना दिया है ? अत: प्रेम की अवस्था में अभिभूत होकर व्यक्ति अपने निजी व्यक्तित्व को प्राय: भूल सा बैठता है जिससे उसके व्यक्तित्व का सहज विकास यदाकदा रुक सा जाता है और वह अपनी स्वलक्षणता को भी कभी कभी खो बैठता है। इसलिये यूंग ने प्रेम में डूबने के बजाय प्रेममय व्यवहार को समझने एवं उसका समयोजन किये जाने का तथा इस प्रकार प्रेमी को अपनी स्वतंत्रता और स्व-लक्षणता को बनाये रखने का परामर्श दिया है ताकि वह प्रेम के अमृत का रसास्वादन करते हुये भी अपने व्यक्तित्व का स्वत: विकास कर सके।

नारी के अवचेतन में स्थित पुरुष तत्व (Animus) नर में बसी नारी मूर्ति (Anima) का प्रतिरूप (Counter part) है। एनीमा की तरह एनीमुस के भी तीन स्रोत (Sources) माने गये हैं (1) पुरुष की सामूहिक प्रतिभा (Collective Image) जो परम्परा से एक महिला को विरासत में प्राप्त हुई है (2) नारी

---

* Two Essays on Analytical Psychology p. 205 and Collected works of C. G. Jung Volume 7 para 301.

द्वारा उसके जीवन में सम्पर्क में आने वाले पुरुषत्व का निजी अनुभव तथा (3) नारी में अवचेतन में स्थित पुरुष तत्व के अव्यक्त संस्कार।

द्वितीय महायुद्ध के दौरान में नारी में छिपी हुई अव्यक्त पुरुषत्व की अभिव्यक्ति प्रायः मुखरित हो सकी है—जहाँ पर पुरुष के लिये सुरक्षित रखे गये मोर्चों का दायित्व भी महिला को उन असामान्य परिस्थितियों में सम्हालना पड़ा था जिसको महिला वर्ग ने बड़ी उत्तम प्रकार से सम्पादित किया। अतः आजकल घरेलू कर्त्तव्यों के अलावा अनेक महिलायें शिक्षा, रोगियों की देखभाल तथा सामाजिक सेवा कार्यों में बड़े उत्साह के साथ पुरुष के हाथ बटाते हुए दिखाई पड़ती है। निःसन्देह सामान्य सिद्धान्त महिला वर्ग व्यक्तिगत रिश्तों (Pesonal relations) के योग्य निर्वाह की दृष्टि से अधिक सफल एवं उपयोगी सिद्ध हुई हैं जबकि पुरुष वर्ग वस्तुपरक तथ्यों (Objective facts) के सम्पादन में अधिक सफल पाया गया है। अतः पुरुष वर्ग व्यवसाय, व्यापार, उद्योग, टेक्नोलोजी, विज्ञान तथा राजनैतिक प्रशासन में अधिक कामयाब सिद्ध हुआ है, जहाँ पर पुरुषोचित गुणों के उपयोग की अधिक आवश्यकता रहती है जो प्रायः चेतन स्तरीय पुरुष के क्रियाकलाप हैं।

प्रायः चेतन स्तर पर महिला का चिन्तन (Thinking) तथा पुरुष में भावना के क्षेत्र का अल्प-विकास पाया जाता है। एक पुरुष में चेतन स्तर पर एनीमा से उसकी भाव दशाओं (Moods) का तथा एक नारी के एनीमुस से उक्त महिला द्वारा प्रतिपादित उसके मतों (Opinions) की घोषणाओं का परिचय उपलब्ध होता है जो प्रायः अवचेतन स्तरीय अभिग्रहों (Assumptions) पर आधारित होते हैं तथा जिनकी तह में न तो कोई चेतन स्तरीय वास्तविकता (Factuality) नजर आती है और न कोई इसका कोई ठोस विचार (Thought out concept) ही पाया जाता है।

जिस प्रकार एक बालक को जीवन के लिये उसकी मातृ नारीमूर्ति (एनीमा) उसकी कार्य-शक्ति की प्रथम वाहक (First carrier) एवं प्रेरक है उसी प्रकार एक लड़की के लिये उसके जीवन की कार्य-शक्ति का उसका बाप का याने पुरुष तत्व (एनीमुस) ही एक मुख्य आदर्श है। अतः एक बालक पर उसकी माता का तथा एक लड़की पर उसके पिता का बड़ा प्रभावशाली असर रहना पाया गया है। अतः एक बालक तथा एक लड़की अपने जीवन के दौरान में क्रमशः उसकी माता एवं पिता के विचारों को ही सर्वोपरि महत्व देते हुए पाये गये हैं। अतः एक लड़की आजीवन अपने बाप के गुणों एवं आदर्शों का बखान करती है तथा अपने बाप के रास्ते पर चलने के लिये स्वतः सहज रूप प्रवृत्त होती हुई पायी जाती है।

सामान्य जीवन विकास के क्रम में जब किसी महिला द्वारा उसके एनीमुस (पुरुषरूप) का प्रक्षेप (Projection) किसी अन्य पुरुष पर हो जाता है तो वह मान बैठती है कि वह पुरुष वैसा ही है जैसा कि उसने उसको समझा था और उसके

लिये उक्त पुरुष की असलीयत से परिचित किया जाना प्रायः असंभव सा हो जाता है। जिसके परिणामस्वरूप आगे जाकर उनके आपसी संबंधों में प्रायः गड़बड़ियां होने की आशंकायें हो जाती हैं। इस प्रकार की दम्पति के रिश्ते तब तक ही कायम रह सकते हैं जबकि पुरुष महिला द्वारा की गई धारणाओं के अनुरूप वर्तन करता रहे क्योंकि एक नारी सामान्यतः उसके अवचेतन में बसे उसके पुरुष रूप को ही दृढ़तापूर्वक अपना आराध्य देवता मान बैठती है जिसमें वह किसी प्रकार आगे जाकर परिवर्तन किये जाने के लिये रजामन्द नहीं होती। अतः यदाकदा किसी अविवाहित कन्या के अवचेतन में स्थित पुरुष में जब विवाह के बाद कोई परिवर्तन देखती है तो वह बड़ी दुखी हो जाती है, क्योंकि तब उसे विवाह पूर्व दिखने वाला देवता इस अल्प परिवर्तन से विवाह के बाद साक्षात् राक्षस नजर आने लगता है।

यूंग ने एनीमा (नारीमूर्ति) तथा एनीमुस (पुरुषरूप) के बीच एक उल्लेखनीय फर्क को भी उजागर किया है। पुरुष केवल एक नारीमूर्ति को अपने अवचेतन में बसा लेता है जबकि महिला अपने अवचेतन में पुरुषों के समूह (A group of man) को ऊंची जगह देने के लिये प्रवृत्त देखी गई है।* इस संदर्भ में यूंग का उद्धरण है : —

The animus is rather like am assembly of fathers or dignatories of some kind who lay down in contestable 'rational' ex-cathedra judgments.

प्रायः नारी सुनी-सुनाई या मानी बातों को तुरन्त ग्रहण कर लेने की उतावली कर बैठती है और वह इस प्रकार माने गये मतों और वादों का सभी स्थानों पर अंधाधुन्ध प्रचार करने लग जाती है। यह भी प्रायः देखा गया है कि अगर स्त्री ने किसी पुरुष के बारे में कोई गलत धारणा अथवा मत बांध लिया है तो उसके लिये उसे दूर किया जाना अत्यन्त कठिन हो जाता है। सामान्यतः नारी में बुद्धि तत्व का पुरुष की अपेक्षा अल्प विकास पाया गया है। इसलिये एक नारी तर्क का प्रायः दुरुपयोग करती पायी जाती है। डाक्टर यूंग की मान्यता है कि एनीमुस से प्रभावित नारी अपना मत प्रकाशन इसलिये करती है क्योंकि उसने यह मान रखा है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने मत की अभिव्यक्ति करने का एक मौलिक अधिकार है। प्रायः महिला अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों के मतों को उनके Mouth piece की तरह प्रस्तुत करती रहती है। यूंग ने इस संबंध में एक धनी और शिक्षित अमेरीकन महिला का उदाहरण दिया है, जबकि उसने यूंग के सामने

---

* इस आशय का श्रेष्ठ उदाहरण H.G. Wells कृत उपन्यास Critina Alberta के पिता के चरित्र में पाया जाता है।

विद्वानों की एक गोष्ठी में बड़े जोर-शोर से एक घन्टे तक अनेक नये विचारों को अभिव्यक्त करते हुये एक भाषण देते हुये उसने अनेक विद्वानों के मत प्रस्तुत किये। यूंग ने उसको बड़ी शान्ति से सुनते हुए जब यह पूछा कि श्रीमती जी आपकी कथा तो सुनली किन्तु इस बाबत आपका क्या मत है तो वह महिला एकदम अवाक् रहकर चुप हो गई और उसने स्वयं के खोखलेपन को प्रकट कर दिया।

यूंग ने एनीमा और एनीमुस को चेतन तथा अवचेतन के बीच की खिड़की (Window) होना माना है क्योंकि एनीमा और एनीमुस के माध्यम से ही, चेतन तथा अवचेतन के बीच की अन्तर्वस्तुओं का आदान-प्रदान होता हुआ माना गया है।

मुखौटा और छाया की अपेक्षा एनीमा-एनीमुस के प्रभाव (Influence) अधिक तीव्र होता है तथा इसको समझना अधिक कठिन हो जाता है। एनीमा-एनीमुस के बीच की भाषा बड़ी जटिल और दुरुह है। अतः सामान्यतः जो कुछ कहा जाता है उसका योग्य प्रकार से समझना तथा उसका सही अर्थ निकाला जाना निःसंदेह कठिन हो जाता है।

यूंग ने यह भी सुस्पष्ट किया है कि व्यक्ति द्वारा एनीमा और एनीमुस के प्रभाव से मुक्त हो सकना बड़ा कठिन है, फिर भी मानवीय व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से इनको प्रभाव से उसको आजादी प्राप्त करना बहुत जरूरी है। यूंग ने स्वप्न विश्लेषण, (Dream-analyses) तथा सक्रिय कल्पना विधि (Active Imagination) को एनीमा-एनीमुस के प्रभाव से मुक्त होने का बड़ा उत्तर साधन माना है। इन विधियों के अन्तर्गत व्यक्ति अपने अवचेतन को चेतन स्तर पर लाकर इनकी अन्तर्वस्तु (Contents) की योग्य छानबीन एवं परख करते हुए तथा इन्हें समझते हुए इनका संशोधन एवं सुधार किया जा सकता है। किन्तु इन विधियों का इस्तेमाल किये जाने में भी यदाकदा कठिन और नुकसान देय नतीजे निकलने की भी गभीर आशंकायें हैं जिनका विवेचन एवं खुलासा "स्वप्नविश्लेषण" तथा सक्रिय कल्पना विधि शीर्षक आगामी अध्याय में यथा-स्थान पर प्रस्तुत किया जायेगा।

निःसंदेह एक महिला सामान्य परिस्थितियों के अन्तर्गत तन से नाजुक मन से भावुक जीवन से सामान्यतः सन्तुष्ट बुद्धि से विनम्र और व्यवहार से सेवाभावी होते हुए वह समूचे परिवार की एक केन्द्र बन जाता है जिसका अधिकांश समय घर की चार दीवारों में व्यतीत होता है। अतः पुरुष प्रधान मानव-समाज की निगाह में उसका स्थान गौण माना गया है। अतःऔर इसलिये उसके गुणों का प्रायः समाज एवं परिवार में कभी-कभी नकारा जाना भी पाया जाता है किन्तु प्रत्येक नारी में पुरुष तत्वों की निरन्तर मौजूदगी है जिसके फलस्वरूप युद्ध, रोग तथा बीमारी आदि की असामान्य गंभीर परिस्थितियों में जब उसमें निहित पुरुष तत्व उभारा जाता है तो

वह नाजुक बदन तथा वात्सल्य और करुणा की मूर्ति, प्रेममयी रमणी भी यकायक प्रचंड खूंखार तथा रणचण्डी वन कर स्वयं की अपने वच्चों की तथा अपने परिवार की रक्षा के लिये उठ खड़ी होती है। भारतीय चिन्तन में अम्बा, काली और महिषासुर मर्दनी दुर्गा की इस महिमा का वड़ा वखान है जिन्होंने मानवीय अस्तित्व की रक्षा हेतु असीम धैर्य और साहस के साथ भीषणतम दुष्टों का दमन और संहार करते हुये अपनी निहित शक्ति का परिचय प्रस्तुत किया है। असामान्य आपत्ति काल में अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये दुर्वल कमजोर तथा दवी हुई अवली भी साक्षात् चण्डी वन जाना प्रत्येक नारी में निहित पुरुषतत्वों की स्थिति तथा उभार का ही सहज परिणाम है।

अध्याय 11

आद्य मातृशक्ति एवं सनातन ज्ञान पुरुष

(The Great-Mother and The Old Wiseman)

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपने एवं मानवीय अनुभवों के आधार पर अपने बुजुर्ग मनोविज्ञान वेत्ता डाक्टर सिगमण्ड फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मन के अवचेतन सम्भाग की स्थिति का सत्यापन-समर्थन करते हुये अपना सम्पूर्ण जीवन अपने रोगियों की चित्त चिकित्सा करते हुये गहन स्तरीय अवचेतन संबंधी अनुसन्धान कार्य में व्यतीत किया। यूंग ने यद्यपि फ्रायड द्वारा स्थापित अवचेतन की स्थिति को यथावत् स्वीकार किया किन्तु उन्होंने अपनी सम्पूर्ण शक्ति एवं प्रतिभा से अवचेतन की गहरी छानबीन एवं उसकी प्रकृति, प्रभाव और स्वरूप की मौलिक खोज वैज्ञानिक प्रकार से करते हुये फ्रायड द्वारा स्थापित कार्य को आगे बढ़ाया और उन्होंने अवचेतन के गहनतम रहस्यों की खोज करते हुये उसके स्वरूप, स्वभाव एवं प्रभाव का विज्ञान संगत विवेचन प्रस्तुत किया और फ्रायड की धारणा को अधिक गहराई में जाकर व्याख्यायित किया—जो मानवीय अनुभवों के प्रकाश में मानवीय व्यक्तित्व की आन्तरिक खुदाई कार्य के समान है। अतः यूंग के विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान को "गहन मनोविज्ञान" (Depth Psychology) कहा गया है।

फ्रायड ने मन के अवचेतन संभाग को चेतन का आधार मानते हुये इसको चेतन की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली माना है। कार्ल गुस्ताव यूंग ने भी फ्रायड की इस अवधारणा का समर्थन-सत्यापन करते हुये फ्रायड के अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाते हुये अवचेतन की अन्तर्वस्तु की निरन्तर खोज करते हुये फ्रायड द्वारा अवचेतन को व्यक्ति विशेष मात्र के भूतकालीन विस्मृत, उपेक्षित एवं दमित भाव-पुंज का एक बेतरतीब अनुपयोगी गोदाम मानने के बजाय यूंग ने अवचेतन को स्वयं व्यक्ति के भूतकालिक अनुभव पुंज के साथ ही साथ इसको, उसके पिता, दादा, बड़दादा एव पुरखों का ही नहीं अपितु उसके आदिम मानव एवं आदिम पशु पुरखों के अनुभवों का उपयोगी संग्रहालय या धरोहर मानकर अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु को व्यक्तित्व विकास का बहुमूल्य उपयोगी सामग्री होना माना है। इस प्रकार फ्रायड के मतानुसार अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु को निरर्थक कूड़ा कर्कट मानने के

बजाय यूंग ने अवचेतन की अन्तर्वस्तु को मानवीय व्यक्तित्व विकास के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण 'रत्न-भंडार' या 'खजाना' मानने का आग्रह किया है। अतः अवचेतन सम्बन्धी यूंग द्वारा इस प्रकार नवीन स्वरूप की स्थापना किया जाना यूंगीय अनुसन्धान की उल्लेखनीय देन है। अवचेतन अन्तर्वस्तु को सनातन मानवीय, अनुभवों की धरोहर मानना, निःसन्देह यूंग की कल्यणकारी खोज है और उसने इन मौलिक अनुसन्धानों की व्याख्या से व्यक्ति के अलावा समष्टि के अवचेतन तथा उससे भी गहनतम स्तर पर सामूहिक अवचेतन की अवधारणा के स्थापन सम्बन्धी खोज के सम्पूर्ण मानवीय अनुभवों की वैज्ञानिक प्रकार से प्रमाणित करने की बड़ी ईमानदारी के साथ प्रयत्न किया है और इस अवधारणा को स्थापित करने में यूंग ने प्राचीनतम धर्म, दर्शन, साहित्य, लोक संस्कृति, पुरातत्व इतिहास एवं मिथकों (Mythology) आदि सम्पूर्ण मानवीय ज्ञान की प्राचीन धरोहर की भी मदद ली है। अत: यूंग द्वारा प्रतिपादित "सामूहिक अवचेतन" की व्याख्या यद्यपि यूंग की एक मौलिक खोज अवश्य है किन्तु उसने इसका समर्थन एवं सत्यापन सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज तक के संचित समग्र ज्ञान-विज्ञान के अक्षय भण्डार एवं धरोहर से किया है। इस प्रकार कार्ल गुस्ताव यूंग का सतत दीर्घकालीन अनुसन्धान कार्य अवचेतन की गहनतम परतों की खुदाई करते हुए उसकी एक के बाद दूसरी, तीसरी आदि अधिक गहराइयों की स्थिति का परिचय प्रस्तुतीकरण है। एवं यूंग ने इसके गुणधर्म और प्रकार प्रभावों की व्याख्या प्रस्तुत किये जाने का प्रयत्न किया है। अत: अवचेतन की इस प्रकार गहनतम अन्तर्वस्तु को चेतन के प्रकाश में देखना, समझना तथा इस गहनतम अन्तर्वस्तु के ज्ञान का मानवीय व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से उचित उपयोग किया जाना यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का महत् प्रयोजन है।

निःसंदेह चित्त का अवचेतन सम्भाग किसी भी व्यक्ति की सामान्य समझ याने उसके अहम् द्वारा चेतन की क्षमता से परे होने से कठिन और दुरुह है, अतः व्यक्ति के अहम् इसका योग्य मूल्यांकन करने अथवा इसका नियंत्रण अथवा उपयोग करने की दृष्टि से असमर्थ हैं, फिर भी यूंग ने अपने अनुसंधान कार्य में स्वप्न विश्लेपण एवं सक्रिय कल्पना विधि (Dream Analysis and Active Imagination Method) के माध्यम से अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु को चेतन स्तर पर उभार कर उन्हें मुखरित एवं व्याख्यायित किये जाने का मौखिक मार्ग प्रशस्त किया जिससे अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की एक क्षणिक झलक चेतन द्वारा भी कुछ मात्रा में अभिव्यक्त की जा सकती है और अवचेतन की अन्तर्वस्तु को चेतन द्वारा इस प्रकार आंशिक एवं सूक्ष्म समझ से अनुभवकर्ता द्वारा अपने व्यक्तित्व का योग्य विकास करने का अभूतपूर्व कल्याणकारी अवसर प्राप्त किया जा सकता है। अत: यूंग की मान्यता है कि अवचेतन का रहस्य यद्यपि चेतन की समझ के लिये निःसन्देह कठिन

एवं दुरुह है, फिर भी उसके स्वरूप का आभास चेतन स्तर पर किया जाना संभव है और इस अल्पकालीन आभास की योग्य समझ से व्यक्ति अपना मानसिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में विकास करते हुए वह अपने व्यक्तित्व को, समग्रता को जानने और प्राप्त करने के पथ पर अग्रसर होने का लाभ अर्जित कर सकता है। अर्थात् व्यक्ति अपने सीमित एवं अल्प चेतन सम्भाग के माध्यम से अपने बहुतांश अवचेतन के गहनतम रहस्यों का उद्घाटन करते हुए अपने चेतन का स्वतः विकास एवं विस्तार करते हुए अंततोगत्वा वह अपने अपूर्ण एवं खण्डीय व्यक्तित्व को समग्र एवं पूर्ण बना सकता है और इस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति का अहम् आगे जाकर सम्पूर्ण तथा समग्र व्यक्तित्व बन सकता है। जिसको कार्ल गुस्ताव यूंग ने स्वयं (Self) या आत्मा की संज्ञा से मंडित किया है और इस क्रमिक विकास की आखरी मंजिल को समग्रता एवं पूर्ण व्यक्तित्व कहते हुए इसको दार्शनिक शब्दावली में आत्म बोध, समग्रता-उपलब्धि आत्मानुभूति तथा आत्म साक्षात्कार कहा जा सकता है। व्यक्ति के द्वारा अपने मर्यादित एवं सीमित अहम् के विकास एवं विस्तार का अन्तिम परिणाम उसके व्यक्तित्व की समग्रता का अनुभव किया जाता है और इस पूर्ण विकास से व्यक्ति का समूचा स्वरूप ही रूपान्तरित हो जाता है और इस समग्रता के सम्पादन से मानवीय व्यक्ति सम्पूर्ण समष्टि के साथ अन्ततोगत्वा एक रूप हो जाता है और इस प्रकार व्यक्तित्व के विकास की अंतिम मंजिल में एक मनुष्य सम्पूर्ण समष्टि अथवा एक व्यक्ति सम्पूर्ण सृष्टि आत्मा, विभु, ब्रह्म का विराट् स्वरूप ग्रहण कर सकता है. जिसको एक इन्सान का भगवान प्रभु, सर्वव्यापक ब्रह्म बन जाना माना जा सकता है।

यूंग की मान्यतानुसार व्यक्तित्व का पूर्ण विकास व्यक्ति के बहिर्मुखी और अन्तर्मुखी दोनों अभिवृत्तियों के पूर्ण सम्मिलन का परिणाम है। व्यक्ति अपनी बहिर्मुखी अभिवृत्ति के माध्यम से अपने से बाहरी दुनिया को जानकर उसके साथ अपने व्यक्तित्व का समायोजन स्थापित कर पाता है तथा इसके साथ ही साथ जब वह अपनी अन्तर्मुखी अभिवृत्ति के द्वारा अपने ही अवचेतन के आन्तरिक सभी गहनतम स्तरों की खुदाई करते हुए उनकी अन्तर्वस्तु को अपनी चेतन स्तरीय समझ के आलोक में जांच तथा मूल्यांकन करता है तब उसे अपने सही एवं पूर्ण-स्वरूप की वास्तविकता की योग्य जानकारी होती है जिसको भारतीय शब्दावली में अभिज्ञान "आत्मदर्शन" अथवा "आत्म साक्षात्कार" कहा जाता है। व्यक्ति अपनी बहिर्मुखी खोज से बाहरी दुनियां को टटोल कर उसकी सही जानकारी सम्पादित करता है— जो उसके बाह्य विस्तार की यात्रा है किन्तु अन्तर्मुखी अभिवृत्ति का रुख स्वयं के चित्त की आन्तरिक खोज के दौरान व्यक्ति को अपने ही चित्त, अन्तर अथवा आत्मा का चेतन के द्वारा योग्य समझ की मदद से आन्तरिक खुदाई करते हुए उसके व्यक्तित्व की गहन गहराई की गहनतम परतों में पड़ी हुई अन्तर्वस्तु की तलाश किया जाना है जिससे उपलब्ध अन्तर्वस्तु की जब वह पहिचान अपने चेतन स्तर पर करता है तो

इस गहरी खान को खोद कर उसमें पाये जाने वाली अन्तर्वस्तु का चेतन के प्रकाश में समुचित पहिचान किया जाना आत्म साक्षात्कार ही कहा जायेगा और इस प्रकार स्वयं की आन्तरिक परतों की खुदाई करते हुए जो खोज अथवा गहराई से लायी गई अन्तर्वस्तु का मूल्यांकन या पहिचान की जाती है वह खान की मिट्टी से सुवर्ण निकाले जाने के समान संस्कार या संशोधन किया जाना ही माना जायगा। सचमुच सुवर्ण अथवा बहुमूल्य रत्नों की प्राप्ति गहनतम स्तर से पूरी तरह सोचते समझते हुए सतत खनन-मनन कार्य से ही संभव है, अतः मानवीय व्यक्तित्व के मूल प्राण तत्व अथवा उसके मूल तत्व की खोज गहन से गहनतम अन्वेषण अथवा अवचेतन की सतत एवं जागरूक अनुसन्धान कार्य तथा उसकी वैज्ञानिक व्याख्या से ही संभावित है।

प्रत्येक जागरूक समझदार व्यक्ति यह स्वीकार करता है कि मोती को समुद्र के गहनतम स्तर से ही पाया जा सकता है और मोतियों के भण्डार का पता लगाने के लिए खोजी को गहरे समुद्र में पूरी गहराई तक डूबना पड़ता है। अतः जो व्यक्ति गहरे समुद्र में डूबने से डरेगा वह हर्गिज समुद्र की तह में पड़ी हुई उस देव-दुर्लभ अन्तर्वस्तु (याने मोती) की न तो पहिचान कर पायेगा और न वह अपने अंतर भण्डार का कोई सुयोग्य लाभ ही उठा सकेगा। इसलिए दुर्लभ मोती की खोज के लिये जिस प्रकार व्यक्ति को समुद्र की गहराई में डूबकी लगाना जरूरी है, उसी प्रकार दुर्लभ सत्य की उपलब्धि के लिये एक योग्य अनुसंधानकर्ता को अवचेतन की गहरी खोज करते हुए उसके मूलाधार या आधार पर पहुंचना आवश्यक है और इस प्रकार श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपने दीर्घकालीन सक्रिय जीवन में अवचेतन की सतत खोज करते हुए उसके आधारभूत अन्तर्वस्तु को आत्मा (Soul) की संज्ञा से परिभाषित किया है।

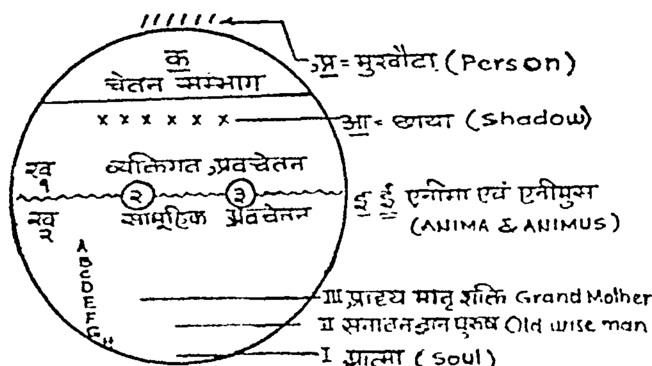
इस प्रकार कार्ल गुस्ताव यूंग ने मानवीय अनुभवों पर आधारित अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य से आत्मा (Soul) को ही मानव जीवन का मूलाधार होने का संकेत दिया है। डाक्टर कार्ल गुस्ताव यूंग ने स्वयं को विशुद्ध वैज्ञानिक की भूमिका पर ही सतत बनाये रखने का आग्रह प्रगट किया है। श्री यूंग ने आत्मा (Soul) विषयक विवेचन को भविष्य के वैज्ञानिक के अनुसंधान का विषय मानते हुए आत्मा (Soul) विषयक विवेचन प्रस्तुतीकरण के गंभीर दायित्व से बचे रहने का प्रयत्न किया है, क्योंकि अनुसंधान कार्य के प्रारम्भ में कार्ल गुस्ताव यूंग ने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को मनोविज्ञान के क्षेत्र तक ही मर्यादित एव सीमित रखे जाने का निश्चय प्रगट किया था। अतः यूंग ने आत्मा सम्बन्धी विवेचन-व्याख्या से अपने आपको बचाये रहने की मर्यादा का उन्होंने निर्वाह किया है और उनकी दृष्टि में आत्मा विषयक विवेचन के दर्शन अथवा धर्म के क्षेत्र का विषय मानकर इसका विवेचन भविष्य के चिंतक के लिए छोड़ रखा है। क्योंकि यूंग द्वारा आत्मा विषयक

चर्चा को विज्ञान की कसौटी पर कसे जाने में उन्हें मनोविज्ञान की निर्धारित मर्यादा के अतिक्रमण किये जाने की आशंका भी है। अतः इन्होंने लगभग अपने पिछले पचास वर्षों का जीवन केवल अवचेतन के अनुसंधान कार्य में लगाते हुए स्वयं को मनोविज्ञान की निर्धारित मर्यादा रेखा से परे जाकर कुछ सिद्धान्त स्थापित करने या इनके प्रतिपादन में कोई मत प्रगट करने में सदैव संकोच व्यक्त किया है ताकि यूंग द्वारा अंगीकृत चिकित्सा-मनोविज्ञान के उनके मुखौटे का यथावत् निर्वाह हो सके और यूंग विशुद्ध मनोवैज्ञानिक के अलावा किसी अन्य मुखौटे (दार्शनिक या धर्मवेता आदि) को अंगीकार करने के लिये निरन्तर इन्कार करते रहे हैं। बाद में जाकर श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपने मित्रों एवं शुभचिन्तक सहयोगियों के आग्रह से अपने निकटतम सहयोगी अनीला जेफी (Aniela Jaffe) के माध्यम से अपने 83 वें वर्ष में अपनी आत्मकथा के रूप में खुद की स्मृतियों, स्वप्नों एवं विचारों का एक विवरण तैयार किये जाने के लिये राजी हुए और इस विवरण का "Memories, Dreams Reflections" शीर्षक पुस्तक में प्रकाशन किया गया है। किन्तु इस लेखन को यूंग ने अपने समग्र लेखन (Collected works of C.G. Jung) शीर्षक सीरिज में सम्मिलित नहीं किये जाने की सावधानी बरती है, क्योंकि यूंग प्रणीत यह "स्मृतियां" स्वप्न एवं विचार "शीर्षक पुस्तक यूंग की वैयक्तिक आत्म कहानी है जिसका कोई भी वैज्ञानिक आधार नहीं है। अतः यूंग ने अपनी इस नवीनतम कृति को अपने द्वारा विज्ञान संगत लेखन साहित्य से पृथक् रखा है, ताकि यूंग के द्वारा उनके मनोविज्ञानी व्यक्तित्व की मर्यादा का निर्वाह किया जाना प्रमाणित हो सके। यूंग ने अपनी इस आत्म कहानी में स्वयं के लेखन और अनुसंधान कार्य को केवल नियति प्रेरित मानते हुए अपनी विनम्रता को अभिव्यक्त किया है।

यूंग का लेखन एवं अनुसंधान कार्य परस्पर इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि इनके बीच किसी प्रकार का भेद किया जाना या उन्हें अलग किया जाना कठिन है, फिर भी यूंग के अध्ययन के लेखन एवं अनुसंधान कार्यों से मानवीय चित्त की विस्तृत एवं सार्थक जो एक तस्वीर उभरी है उसे विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान Analytical Psychology अथवा गहन मनोविज्ञान (Depth Psychology) ज्यूरीच स्कूल (Zurich school) कहा गया है और इसमें प्रतिपादित एवं प्रस्तावित विवेचन के आधार को यूंग ने आत्मा (Soul) की संज्ञा से परिभाषित किया है। इस प्रकार कार्ल गुस्ताव यूंग के "विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान" के अन्तर्गत चित्त (Psyche) की सम्पूर्ण रूप रेखा या उसकी संरचना का चित्र निम्नानुसार आरेख (Diagram) संख्या 12 से सुस्पष्ट किया जा सकता है—

आरेख (Dagram) संख्या 12 का मानचित्र निम्नानुसार है—

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग के "विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान" के अन्तर्गत मानवीय चित्त की भिन्न-भिन्न स्तरों-सतहों के उपरोक्त रेखाचित्र में निम्नानुसार दर्शित किया गया है—



आरेख सं. 12 समग्र चित्त का मानचित्र

...... अ = मुखौटा है जो व्यक्ति द्वारा समाज के साथ समायोजन हेतु अपनाया गया

xxxxआ = छाया है जो मुखौटा अंगीकरण से व्यक्तिगत अवचेतन में स्वतः निर्मित हो जाती है ।

क = चित्त का चेतन सम्भाग है जो अहम् द्वारा जाना एवं नियन्त्रित होता है ।

ख = चित्त का अवचेतन सम्भाग है—

जिसमें { $ख_1$ व्यक्तिगत अवचेतन उपखण्ड है तथा $ख_2$ सामूहिक अवचेतन उपखण्ड है } अवचेतन { मानवीय चित्त जो चेतन+अवचेतन की इकाई है

इ ई = अवचेतन स्थित एनीमा एवं एनीमुस (Anima & Animus) की स्थिति है

तथा A to H की सामूहिक अवचेतन उपखण्ड की आठ परतें हैं जिनमें

का अर्थ वैयक्तिक (Individual Collective Unconscious)
का अर्थ उसका परिवार (Families ,, ,,
का अर्थ उसकी जाति (Tribe or Race ,, ,,
का अर्थ उसके राष्ट्र (Nation ,, ,,
का अर्थ उसकी जाति के
राष्ट्र समूह का (Group of people ,, ,,
का अर्थ उसके आदिम मानव पुरखों का (Primitive Human Ancestors)
का अर्थ उसके पशु पुरखों का (Primitive animal ancestors)
का अर्थ केन्द्रीय शक्ति आर्कीटाइपल तथा (Central for a) तथा
इसके नीचे आद्य प्ररुप प्रतिमा (Pre-mordial) आर्कीटाइपल आद्य

मातृशक्ति
(The Great mother III)
तथा इसके नीचे आव्य प्ररूप प्रतिभा (Pre mordial) आर्कीटाइपल के
सनातन ज्ञान पुरुष
(The old wise man II)
तथा सबसे नीचे मूलाधार प्रतिष्ठान की तरह (आत्मा) (Soul I) की
स्थिति का अस्तित्व है ।

पिछले अध्यायों में चेतन-अवचेतन, मुखौटा-छाया, एनीमा-एनीमुस का विवेचन किया जा चुका है, अत: अब इस अध्याय में सामूहिक अवचेतन स्तरीय आध्य मातृ शक्ति एवं सनातन ज्ञान पुरुष का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

यूंग ने सामूहिक अवचेतन की ऊपरी सतह को "व्यक्तिगत अवचेतन" (Personal unconscious) कहा है जहां पर व्यक्ति द्वारा भोगे हुए अनुभवों का संग्रह रहता है । किन्तु व्यक्तिगत अवचेतन की अधिक गहराई में सामूहिक अवचेतन की परतें हैं जिसके अन्तर्गत केवल व्यक्ति द्वारा भोगे अनुभवों का ही नहीं अपितु सनातनकालीन समग्र मानव समाज द्वारा भोगे हुए अनुभवों का असीम भंडार स्थित है और यह सामूहिक अवचेतन अधिक पुरातन तथा अधिक विस्तृत है, अतः निःसन्देह सामूहिक अवचेतन व्यक्तिगत अवचेतन की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशील है तथा सामूहिक अवचेतन की अन्तर्वस्तु को मूल प्रारूप (Archetype) कहा गया है ।*

शब्द "आर्कीटाइप" का प्रयोग प्राचीनकालीन फिलो (Philo) द्वारा मानव में भगवान की प्रतिमा (God Image) के रूप में किया गया था तथा इरेनेयस (Irenaeus) ने भी इसका समर्थन किया है कि इस सृष्टि की रचना विधाता ने अपने ही स्वरूप की प्रतिकृति (आर्कीटाइप) के रूप में की है । अर्थात् परमात्मा ने विश्व की रचना नहीं की है अपितु यह दुनिया उसके मूल प्ररूप (Archetype) की प्रतिलिपि मात्र है । कारपस हरमीटीकम (Corpus Harmeticum) भगवान को प्ररूप-प्रकाश (Archetypal light) कहा गया है तथा कहीं-कहीं पर इसको अभौतिक आर्कीटाइप (Non-material Archetype) तथा प्रारूप पत्थर (Archetypal stone) भी कहा गया है ।** उपरोक्त आधारों पर सामूहिक अवचेतन की अन्तर्वस्तु को यूंग ने विश्व की प्रतिमा (Universal Image) तथा मूल प्रारूप

---

* The Archetypes and the collective unconscious (collected works of C.G. Jung Vol IX at page 3

** Ibid page 4

(Pre mordial Type) आदि की संज्ञाओं से समझाने का प्रयास किया है।* यूंग ने आदिम कालीन जातियों का सम्बन्ध विशेष प्रकार के संशोधित प्रारूपों (Archetypes) से होना बतलाया है, तथा अनेक दंत कथाओं, मिथकों (Myths) तथा परकियाओं (Fairy tales) में आर्कीटाइप का उल्लेख होना पाया गया है। अतः मूल रूप ((Archetype) को निःसन्देह गहन अवचेतन की अन्तर्वस्तु (Contents) ही माना है जिसको केवल बदले हुए स्वरूप को ही व्यक्ति द्वारा अपने चेतन स्तर पर समझा जाना माना गया है।**

यूंग ने यह भी स्पष्ट किया है कि आदि प्रारूप (Pre mordial Image) अथवा प्रारूप (Archetype) का अर्थ किसी स्थान अथवा समय में स्थित किसी प्रतिमा (Image) से नहीं है अपितु यह तो मानव चित्त के गहनतम अवचेतन में स्वतः कार्यरत वह आन्तरिक क्रियाशक्ति (चित्त शक्ति) है, जिसकी अभिव्यक्ति प्रायः दंतकथाओं एवं विशिष्ट कलाकृतियों में पायी जाती है।*** सम्पूर्ण मानव इतिहास में आर्कीटाइप का बहुमुखी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसी तरह सभी प्राचीन जातियों के धार्मिक कृत्यों (Rituals), दंतकथाओं (Myths) तथा पूर्वकालीन जातियों के प्रतीकों (Symbols) में भी आर्कीटाइप का बड़ा गहरा प्रभाव पाया जाता है तथा आधुनिक सामान्य व्यक्ति तथा रोगग्रस्त व्यक्ति अपने सपनों तथा हवाई कल्पनाओं में इसकी अनुभूति करता है जिसके समुचित विश्लेषण से आर्कीटाइप के व्यापक प्रभाव की जानकारी उपलब्ध की जाती है।****

यूंग की मान्यतानुसार एनीमा (नारी मूर्ति) तथा एनीमुस (पुरुष मूरत) का वैयक्तिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाना संभव है। एनीमा तथा एनीमुस निःसन्देह प्रभावकारी प्रारूप (आर्कीटाइप) है किन्तु इनसे भी अधिक प्रभावशाली जो दो मूल प्रारूप हैं जिनको यूंग ने आद्य मातृशक्ति (The Great mother) तथा पुरातन ज्ञान पुरुष (The old wise man) के नाम से पुकारा है। जिन्हें भारतीय वाङ्मय में प्रकृति एवं पुरुष की संज्ञा दी गई है)। इन दोनों मूल प्रारूपों (Pri-mordial Archetypes) का प्रभाव सम्पूर्ण मानव

---

* Ibid page 5

** Ibid page 5 The Archetype is essentially as unconscious conrent that is altered by becoming conscious and by being perceived and it takes the colour from the individual unconscious in which it happens to appear.

*** Enrich Neuman : The Great mother page 3

**** Ibid the same page

समाज पर गहराई के साथ प्रायः परिलक्षित किया जा सकता है। उपरोक्त दोनों मूल प्रारूपों में से आद्य मातृशक्ति (The Great mother) का सविशेष महत्व है।*

महान् मातृशक्ति (The great mother) की अवधारणा (Concept) का सम्बन्ध तुलनात्मक धर्म (Comparative religion) से है, जिसकी व्याख्या नाना प्रकार के देवी चरित्रों में प्रस्तुत की गई है।** पुरानों में देवी की स्थिति की परिकल्पना स्वर्ग निवासी के रूप में की गई है और स्वर्ग को मनोवैज्ञानिक अन्तरिक्ष से परे होना बतलाया गया है।*** किन्तु मनोवैज्ञानिक यूंग इस परिकल्पना का समर्थन नहीं कर पाते क्योंकि वह विशुद्ध विज्ञान संगत अनुभव पर आश्रित ज्ञान को सत्य की तरह स्वीकार कर पाते हैं। अतः उपरोक्त आध्यात्म सम्बन्धी अवधारणा का प्रतिपादन करने में यूंग स्वयं को असमर्थ पाते हैं। फिर भी उसका कथन है कि संसार की प्रायः सभी जातियों में तथा सभी कालों में देवी देवताओं की स्थिति की महत्ता को सम्पूर्ण मानव समाज ने स्वीकार किया है।**** देवी-देवताओं से सम्बन्धित अवधारणा का उद्गम अवचेतन स्तर से होना माना गया है, अतः इसको सृजनात्मक कल्पना या धार्मिक भावना का दर्जा तो निःसन्देह दिया जा सकता है। इसी प्रकार प्रारूप तथा मूल प्रारूप (आर्कीटाइप) सम्बन्धी अवधारणा का महत्व भी सनातन काल से सर्वत्र किया जाता रहा है।*****

मातृ-प्रारूप (Mother Archetype) का सनातन एवं चिरन्तन महत्व है। जन्म से पूर्व भ्रूण माता के गर्भ से जीवन एवं विकास प्राप्त करता है और जन्मते ही उसे सर्वप्रथम माता से ही भरण-पोषण तथा जीवन की ऊष्मा-ऊर्जा की सहज उपलब्धि होती है। व्यक्तिगत जीवन में भी माता का मानवीय जीवन में सर्वोपरि स्थान एवं जन्म के पूर्व काल से शैशव पार कर युवावस्था प्राप्ति तक व्यक्ति मुख्यतः अपनी माता पर ही आश्रित रहता है, अतः माता विमाता, नानी-दादा (Grand mother), सास (Mother in law) तथा दाई, धात्री (धाय मां) आया तथा शिशुपालक नर्स को समाज में बड़े आदर की दृष्टि से सर्वत्र देखा गया है इसी को आलंकारिक (Figurative) अर्थ में देवी (Goddess) की संज्ञा से सर्वोपरि आदर, श्रद्धा और महत्व दिया जाता है। देवी को भगवती जगत् जननी ही नहीं अपितु उसको देवताओं

---

* (The 'Archetypes and the collective unconscious (Collected works of C.G. Jung Vol IX page 81, para 156

** Ibid, page 75 para 148

*** Ibid, page 75 para 149

**** Ibid page 75-76 at para 149

***** Ibid page 78 at para 153

को भी माता कहा गया है। प्रभु क्राइस्ट की माता कुमारी मेरी-मरीयम इसाई मतावलम्बियों के लिये सर्वोच्च श्रद्धा की पात्र है। मातृ शक्ति के प्रति विश्व के सभी धर्मों में गहरी श्रद्धा के साथ भय का भाव भी पाया जाता है। कतिपय प्रसंगों पर जिनके प्रति मानव अपनी श्रद्धा एवं भय व्यक्त करता है, उनको मातृ-रूप में समाज स्वीकार करता है अतः मातृभूमि, पृथ्वी, स्वर्ग, जंगल, समुद्र आदि मातृवाचक संज्ञायें हैं।* इसी प्रकार चट्टान, गुफा, पेड़, नदी, झरना, खेत तथा गहरे कुए को भी मातृवाचक संज्ञा से सम्बन्धित माना गया है। क्योंकि उपरोक्त सभी वस्तुओं से मानव को जीवन संरक्षण एवं जीवन पोषण प्राप्त होता है। कमल, पुष्प, गुलाब का फूल, चूल्हा तथा रिक्त बर्तन को आकृति के कारण मातृवाचक संज्ञा माना गया है तथा गाय तथा अन्य मानव उपयोगी पशुओं के साथ भी माता का विशेषण साथ में जोड़ा गया है।**

मातृशक्ति प्ररूप (Mother Archetype) के मुख्यतः दो स्वरूप हैं—(1) कल्याणकारी शान्ति स्वरूप तथा (2) विध्वंसकारी संहारक स्वरूप। यूंग ने मातृशक्ति के इन दोनों स्वरूपों की विशद व्याख्या अपने ग्रन्थ (Symbols of Transformation) में की है।*** मातृशक्ति के उपरोक्त दोनों स्वरूपों का उदाहरण हमें कुमारी मेरी के चरित्र से भी उपलब्ध होता है जो न केवल प्रभु ईशु की ममतामयी जननी मानी गई है अपितु उसको मध्यकालीन रूप को (Allegories) के अन्तर्गत एक लड़ाकू तथा क्रूर एवं संहारकर्मी शक्ति बतलाया गया है। जिसका प्रतीक "क्रास" माना गया है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत भगवती "कालीन के स्वरूप में भी उनके कल्याणकारी एवं संहारक शक्ति का दिग्दर्शन कराया गया है।**** सांख्य दर्शन, में मातृशक्ति को प्रकृति (Prakriti) कहा गया है जो सत्व, राजस तथा तामस गुणों से युक्त है। भारतीय सांख्य की प्रकृति को त्रिगुणात्मक सत्व (Goodness) राजस, (Passion) तथा तामस (Darkness) गुणधर्मिता से युक्त मातृशक्ति का सृजनात्मक एवं विनाशकारी दोनों स्वरूपों में अभिव्यक्ति होना माना गया है।*****

यूंग ने मानवीय इतिहास (Human History) का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि सृष्टि से प्रारम्भिक काल में सर्वत्र अंधकार पूर्ण अचेतन की स्थिति थी और जैसे-जैसे समय गुजरता गया है वैसे-वैसे

---

* Ibid page 81 at para 156

** Ibid page 81 at para 156

*** Ibid page 82 at para 158

**** Ibid page 82 at para 158

***** Ibid page 82 at para 158

अवचेतन का अंधकार चेतन के प्रकाश में वदलता गया समाज शास्त्रियों के अनुसार भी प्रारम्भिक काल में मातृ, सत्ता परम्परा (Matriarchial order) का बोल-बाला रहा जो धीरे-धीरे समय गुजरने पर दुनिया में चेतन के प्रकाश के प्रसार के साथ मातृ संस्था का विकास या परिवर्तन पितृवर्ती समाज में हो जाना माना गया है।* इस प्रकार सृष्टि के आदिकाल में आद्य मातृशक्ति का प्राधान्य रहा है जैसा कि पत्थर युगीय कलाकृतियों में महान् माता (The Great mother) के स्वरूप के दर्शन होते हैं। प्राचीन गुफा भित्ति चित्रों एवं प्राचीनतम मूर्तियों में मातृ शक्ति (The Great mother) के शान्त अथवा रौद्र रूप का दर्शन होना निश्चय-पूर्वक एक महत्वपूर्ण सूचना है कि लगभग 12 हजार से 20 हजार वर्ष पूर्व भी विश्व के अनेक भागों को तत्कालीन मानव समाज में मातृ प्रतिमाओं को बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त थी।**

प्राचीन आदिम समाज में प्रत्येक प्रमुख कर्म धार्मिक क्रिया माना जाता था। इस दृष्टि से शिकार, गुफा, या गृह निर्माण, कृषि तथा खाना बनाना, कपड़ा बुनना, रसोई तैयार करना आदि सभी मानव जीवन उपयोगी मुख्य कार्य धार्मिक कृत्य माने जाते थे। अत: महिला द्वारा सम्पादित गृहकार्य, रसोई बनाना, शिशु प्रसव व उनका लालन पालन आदि कार्य सम्पादन करने वाली नारी को गृहलक्ष्मी, गृह-देवी व शिशुपालक देवी कहा जाने लगा, तथा गृह-देवी तथा लालन-पालन कर्त्री माता को "देवी" की उच्चतम प्रतिष्ठा प्रदान की जाने लगी। पाषाण कालीन सभ्यता में ठोर-ठोर पर नारी प्रतिमाओं का बाहुल्य पाया जाता है और जन साधारण मानव समाज में निर्मित नारी प्रतिमाओं को देवी की संज्ञा से विभूषित कर इसके सानिध्य में जीवनोपयोगी धार्मिक कृत्य सदियों से आज तक बराबर सम्पादित किये जा रहे हैं। इस विचारधारा के फलस्वरूप नारी के प्रति पोषण एवं, सुरक्षा प्रदानकर्त्री तथा पुरुष की अर्द्धांगिनी के रूप में सदैव आदर व्यक्त किया जाता रहा है। जन्म देना, पालन करना तथा संहार करना, नारी के यह तीन प्रमुख कार्य है। भारतीय धार्मिक विकास के अन्तर्गत उपरोक्त त्रिमूर्ति देवताओं की अर्द्धांगिनी के रूप में सरस्वती, लक्ष्मी, तथा पार्वती को त्रिदेवी की तरह प्रतिष्ठित किया गया है तथा सरस्वती को विद्या, लक्ष्मी को धन एवं समृद्धि तथा पार्वती को कल्याण एवं संहार की अधिष्ठात्री देवी माना गया है। यूंग ने भी आध्य मातृ शक्ति के तीन रूप माने हैं जिन्हें यूंगीय साहित्य में The Great mother, the Good mother तथा The terrible mother की संज्ञा से इनकी विवेचना प्रस्तुत की गयी है। भारतीय पुराण साहित्य में भी जगत् जननी दुर्गा महादेवी के तीन रूप (1) महालक्ष्मी (2) महासरस्वती

---

* Enrich Neuman : The Great mother page 90-92

** Ibid page 94

तथा (3) महाकाली का विस्तार के साथ "दुर्गा सप्तशती" में विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

स्वतः विकास ही मानव का सहज क्रम है। समय के साथ मानव समाज का निरन्तर स्वतः विकास होता रहा है। इस सहज क्रमों के अन्तर्गत इस दुनियाँ के प्रारम्भ में सर्वत्र अवचेतन का जब निष्प्राण अंधियारा व्याप्त था तो शनैः शनैः जीवन की ऊर्जा प्राप्त कर चेतना स्तरीय प्रकाश में बदलने तथा विकसित होने लगी, अतः बाद के सांस्कृतिक विकास के क्रम में मानव चेतना सम्पन्न होने लगी तथा धीरे-धीरे चेतना सम्पदा की रक्षा हेतु धार्मिक कृत्यों में उसकी अभिव्यक्ति की जाती रही। फलतः मिश्र से जावा तक जाग्रत चेतना के प्रतीक स्वरूप मन्दिरों की निर्माण हुआ जहां पर मातृशक्ति की औपचारिक सेवा पूजा की प्रवृत्तियां आज भी चालू पायी जाती हैं।

सनातन ज्ञान पुरुष (The old wiseman) को प्रयोजन की दृष्टि से आध्य प्ररुप (Archetype) माना गया है। इसकी अभिव्यक्ति राजा, तानाशाह, नेता, धर्माचार्य आदि विविध रूपों में पायी जाती है। सनातन ज्ञान पुरुष के माध्यम से मानव-समाज के स्वार्थों और उद्देश्यों की प्रायः पूर्ति होती है, अतः इनको भी बड़ा महत्व दिया गया है तथा प्रायः इनके व्यक्तित्व में अलौकिक गुणों का होना जन-साधारण द्वारा मान लिया गया है। यूंग ने इस बावत यह संकेत दिया है कि सामान्य जन-समाज सनातन ज्ञान पुरुष में असामान्य प्रतिभा एवं जादुई प्रभाव मान लिये जाने के फलस्वरूप यदाकदा वह मानवता के लिये गंभीर खतरे का कारण हो सकता है क्योंकि सामान्य जन-समूह सनातन ज्ञान पुरुष द्वारा निर्देशित मार्ग पर प्रायः आंख मूंद कर चल पड़ता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति अपने एनीमा को किसी अन्य नारी पर जब प्रक्षेपित (Project) कर देता है तब वह उक्त महिला के प्रति दीवाना सा बन जाता है, उसी प्रकार साधारण मानव समाज द्वारा सनातन ज्ञान पुरुष में आलौकिक शक्ति को आरोपित किये जाने से सामान्य मानव अपनी वैयक्तिक सूझबूझ तथा विवेक शक्ति का बाहुल्य खो बैठता है तथा उक्त सनातन ज्ञान पुरुष का निपट पिछलग्गू बन कर अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता को ही भूल जाता है। सनातन ज्ञान पुरुष मूल प्रारूप (आर्कीटाइप) का उद्भव सामूहिक अवचेतन स्तर से होता है अतः इसका प्रभाव बड़ा अनियंत्रित तथा वेगवान् होता है। सनातन ज्ञान पुरुष की घोषणा को व्यक्ति या समूह अपने अवचेतन चित्त की आवाज मान लेता है जिसका विरोध इक्का-दुक्का सामान्य व्यक्ति नहीं कर पाता। सामान्य मानव-समाज प्रायः नेता अथवा तानाशाह से बड़ा प्रभावित रहता है तथा सदैव इसके इर्द-गिर्द चिपका रहना चाहता है। प्रायः मानव-समाज नेता तथा तानाशाह की बातों में आ जाता है तथा इसके बावत भला बुरा सोचने समझने के बावजूद भी वह इनके जादू भरे प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाता। सामान्य समाज यह

मान वैठता है कि नेता की आवाज ही उनके अन्दर की मांग है, अतः जनता द्वारा नेता के प्रति अंध-भक्ति का भेड़िया धसान का एक सिलसिला चल पड़ता है जिसके कारण कभी-कभी सम्पूर्ण मानव-समाज के लिये एक गंभीर खतरा या अकल्याणकारी नतीजा निकल सकता है। सनातन ज्ञान पुरुष (नेता) की आवाज पर व्यक्ति विवेक-शून्य होकर उसके पीछे चल पड़ना निःसन्देह एक पागलपन है। अतः एक व्यक्ति द्वारा नेता के आदेश को अपने अवचेतन की आवाज नहीं मानकर नेता के कथन को बड़े धैर्य एवं सावधानी के साथ सुनना तथा परीक्षण करना चाहिये तथा स्वयं के विवेक के तराजू पर ही उसके गुण-दोषों का विवेचन करना चाहिये। तभी व्यक्ति का सही अर्थों में योग्य विकास हो सकेगा।

इसी प्रकार आध्य मातृशक्ति (The Great mother) को मूल प्रारूप (Archetype) के प्रभाव को भी आँख, कान तथा दिमाग को बंद रखकर अपनाया जाना व्यक्तित्व विकास की दृष्टि में बड़ा घातक सिद्ध हो सकता है। निःसंदेह आध्य मातृशक्ति प्रेम, पोषण, रक्षण तथा समझ की दिव्य विभूति है किन्तु सृजनात्मक पालक आध्य मातृशक्ति के कल्याणमय स्वरूप के साथ ही साथ उसका विध्वंसात्मक रूप भी जुड़ा हुआ है, अतः उसका भी आँख मूंद कर अनुसरण किया जाना योग्य नहीं है। आध्य मातृशक्ति का प्रभाव उसके इर्द-गिर्द जमा उसके बच्चों (Children) पर निःसंदेह पड़ता है' इसलिये वे बच्चे स्वयं को नितान्त असहाय मानकर पर्याप्त मात्रा में उस पर आश्रित होने लगते हैं। किन्तु इस प्रकार की भावना की "अति" हो जाना व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से विनाशकारी है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को सप्रयास जागरूक रहकर अपनी मर्यादा को समझना चाहिये।

आर्कीटाइपल मंडित व्यक्तित्व को यूंग ने गुब्बारेनुमा फूला हुआ व्यक्तित्व माना है क्योंकि आर्कीटाइप सामूहिक अवचेतन की अन्तर्वस्तु है, जिसका निर्वाह एक सामान्य मानवीय व्यक्तित्व के साथ हो जाना उसके अहम् की सहज स्वाभाविक क्षमता से परे दुस्साहस ही है। सामान्य व्यक्तित्व में जब इस प्रकार सामूहिक अवचेतन स्तरीय सामग्री जुड़ जाती है तब वह व्यक्ति प्रायः गर्वीला एवं शेखीखोर बन जाता है तथा वह जिस सामूहिक अवचेतन की अन्तर्वस्तु का प्रदर्शन करता है वह उसकी निजी असली पूंजी नहीं होकर सामूहिक अवचेतन की अनियंत्रित उधार पूंजी होती है जिसका समुचित उपयोग कर पाना सामान्य व्यक्ति के लिये उसकी क्षमता से परे एक कठिन कार्य है। यूंग ने इस अवधारणा की व्याख्या प्रस्तुत करने हेतु H.G. Wells कृत Cristina में Alberta के पिता के चरित्र को उदाहरण की तरह प्रस्तुत किया है।

किसी भी व्यक्ति को भगवान अथवा देवगुण सम्पन्न मान लेना अथवा किसी भी नेता में देवत्व के गुणों का आरोपण कर उसे अतिमानव (Superman)

घोषित किया जाना निःसंदेह उचित तथा कल्याणकारी नहीं है क्योंकि मानव के लिये देवता अथवा अतिमानव होना वास्तविकता नहीं है, अपितु हमारे द्वारा किसी भी नेता पर देवत्व थोप दिये जाने पर उक्त नेता का अहम् फूलकर कुप्पा बन जायेगा और उसका समूचा व्यक्तित्व ही रोगग्रस्त हो जायेगा। इस प्रकार फूले हुए अहम् से व्यक्ति कुछ समय के लिये तो निःसंदेह अपने अपरीक्षित साहस का दिग्दर्शन कर सकता है तथा अति बुद्धिमानी की बातें बघार सकता है तथा असीम दया एवं क्षमाशीलता का नाटक खेल सकता है किन्तु वह अन्ततोगत्वा लम्बे अर्से तक इन तथा-कथित दिव्य गुणों का अपने जीवन में निर्वाह नहीं कर सकेगा और अन्त में जाकर उस पर थोपी गई महानता का ढोंग खुल जायेगा तथा उसकी असलीयत जब स्वतः प्रगट हो जायेगी तब उसकी जय-जयकार लगाने वाला वही समाज यह कह पड़ेगा कि नेता जी का उक्त बडप्पन केवल मात्र एक छलना मय दिखावा, बनावटी आवरण मात्र था तथा उन पर थोपे गये दिव्य गुणों को वह अपने जीवन में नहीं पचा पाये हैं। अतः उनके मायावी मुखौटे के नीचे उनकी भद्दी असलीयत जो कुछ समय के लिये छिपी हुई थी, वह वक्त गुजरने के बाद अब स्वतः नंगी हो जाएगी।

सचमुच कोई भी मानव मानवोत्तर भगवान या देवता नहीं है। बेचारा मानव तो यह भी नहीं जान पाता कि वह किस अदृश्य शक्ति द्वारा संचालित किया जा रहा है तथा उसकी शक्ति एवं क्षमता का स्रोत कहाँ है? अतः घटित सभी परिस्थितियों को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करना ही व्यक्तित्व विकास के लिये बहुत जरूरी है। इसलिये स्वयं को सर्वशक्तिसम्पन्न मान लेने का दम तथा अहम् छोड़कर मानव को अपने चेतन स्तरीय अनुभव से जो जानकारी तथा ज्ञान मिला है उसके प्रकाश में ही यदि व्यक्ति अपने अवचेतन स्तरीय शक्ति एवं क्षमता का योग्य मूल्यांकन करते हुए विनम्रतापूर्वक जीवन-यापन करेगा तो उसके सीमित अहम् के स्थान पर उसके व्यक्तित्व का एक नया केन्द्र निर्मित हो जायेगा जिसके द्वारा वह चेतन तथा अवचेतन स्तरीय सभी क्रियाकलापों की सुयोग्य जानकारी प्राप्त कर सकेगा। यूंग ने इस प्रकार व्यक्तित्व के नवनिर्मित केन्द्र को आत्मा (Soul) कहा है।

यूंग की मान्यतानुसार अहम् (Ego) को चेतना का केन्द्र बिन्दु (Focal point) माना गया है अर्थात् अहम् के माध्यम से चेतन उजागर तथा जाना जाता है। इस अहम् द्वारा प्राप्त चेतन ज्ञान श्री कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा प्रस्तावित आत्मा (Soul) को मानवीय व्यक्तित्व के नवीन केन्द्र की अवधारणा से चेतन-अवचेतन, मुखौटा-छाया, एनीमा-एनीमुस तथा मूल प्रारूप-आध्य मातृशक्ति तथा सनातन ज्ञान पुरुष का द्वैत, आत्मा याने (The Self) "अद्वैत" बन जाता है जो निःसंदेह विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के चिन्तन के प्रारंभिक बिन्दु अहम् (Ego) से अधिक

व्यापक, शक्तिशाली एवं विस्तृत इकाई है जिसमें उपरोक्त सभी द्वैतों का योग्य प्रकार से समावेश किया जा सकता है। कार्ल गुस्ताव यूंग का अनुसंधान कार्य का प्रारंभ Ego is the focal point of the Unconsciousness याने अहम् के माध्यम से चेतना के उजागर होने की धारणा से हुआ, और इसलिये यूंग को चेतन की योग्य समझ के विस्तार के साथ मानवीय जीवन के अवचेतनीय स्तर की खोज में वर्षों तक लगे रहना पड़ा और मनोविज्ञान के इर्द-गिर्द सम्बन्धित सभी अन्य विषयों का अध्ययन मनन करते हुए उसने अपने अनुभवों को गहरायी के साथ समझने तथा अतिरिक्त आयामों से उपलब्ध जानकारी के प्रकाश में उन्हें समझने एवं व्याख्यायित किये जाने का अवसर मिला। जिसके परिणामस्वरूप यूंग के चित्त की चेतन सम्भाग की योग्य जानकारी और समझ के साथ चित्त के अवचेतन स्तरीय विपुल एवं अज्ञेय ज्ञान भण्डार के कुछ विन्दुओं को चेतन स्तर पर परीक्षण करने का सहज मौका मिला। जैसे कि एक योग्य गोताखोर गहन समुद्र की लहरों से ऊपर जाकर इन अमूल्य मोतियों के मूल्यांकन से समृद्धि सम्पादित कर पाता है, इसी तरह यूंग द्वारा अवचेतन स्तरीय अनुसन्धान कार्य का सुफल आत्मा (Soul) का नवीन मौलिक खोज की अवधारणा की स्थापना से है जो यूंगीय चिन्तन के प्रारम्भिक विन्दु (Starting point) अहम् (Ego) की अपेक्षा अधिक सशक्त, व्यापक एवं मानवीय सहज विकास की दृष्टि से अधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। "स्व" यानि आत्मा (The self) की इस नवीन खोज की तराजू पर निःसंदेह चेतन सम्भाग के साथ ही साथ अवचेतन के व्यक्तिगत भाग तथा कुछ अंशों में सामूहिक अवचेतन के अज्ञेय रत्न भण्डार की भी कुछ उल्लेखनीय खोज के योग्य मूल्यांकन से निःसंदेह मानवीय व्यक्तित्व का विकास संभव हो गया है। अतः जीवन के वे पहलू जो अव तक अहम् की क्षमता से परे होना माना जाता था उनके कारणों का विवेचन अव आत्मा (Soul) के संदर्भ में किया जोना संभव हो गया है। जिनका परीक्षण एवं मूल्यांकन से "स्व" (The self) की नवीन खोज अव मानवीय एवं जीवन का प्रयोजन सुस्पष्ट हो गया है। यूंग द्वारा प्रत्युक्त पद The self का उपयोग भारतीय परम्परागत सत्य, आत्मा, पुरुष, ब्रह्म के सामान्य अर्थ में नहीं है—क्योंकि भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत आत्मा को अगर नित्य और एकमात्र सत्य इकाई माना गया है। भारतीय आत्मा दार्शनिक शब्द है, जबकि यूंग का Selt मनोविज्ञानी इकाई मात्र है। यूंग ने मानवीय व्यक्तित्व के सहज स्वतः विकास में विश्वास प्रगट किया है। मानवीय जीवन का प्रत्येक क्षण का उपयोग स्वयं अर्थात् (The self) द्वारा अनुभव-संग्रह में व्यतीत होना माना गया है, इसलिये ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता है त्यों-त्यों मानवीय अनुभव का स्वतः विकास एवं विस्तार होता रहना माना गया है और अनुभव सम्पन्नता को ही मानवीय समझ और उसके व्यक्तित्व का स्वतः सहज स्वभाव होना माना गया है। प्राचीन

भारत में ऋषि प्रार्थना-"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्या मां अमृतं गमयति" इसी स्वतः सहज मानवीय मानस के विकास के निश्चय की सनातन घोषणा है। डारवीन द्वारा प्रतिपादित विकासवाद जो आधुनिक विज्ञान की मुख्य धारणा है उसमें भी मानव को विकासवाद का परिणाम माना गया है। अतः आधुनिक विज्ञान तथा यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की मूल अवधारणा में समानता है जिसमें मानव मात्र के स्वतः विकसित होने के प्रखर आशावाद की स्थापना है। तथा इसको प्राचीन भारतीय ऋषि की प्रार्थना की प्रतिध्वनि का लक्ष्य माना जाना योग्य है। और सचमुच मानवीय मानस सतत स्वतः विकासशील है, जिसका स्पष्ट प्रभाव श्री कार्ल गुस्ताव यूंग के जीवन और दर्शन पर सुस्पष्टता के साथ परिलक्षित किया जा सकता है। कार्ल गुस्ताव यूंग के चिन्तन का प्रारम्भिक बिन्दु "अहम्" ही यूंग के दीर्घकालीन अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य से आज का "स्व" (The self) बन जाना निश्चित रूप से यूंग के विकसित चिन्तन का एक सहज सुफल या सही परिणाम है।

भारतीय चिन्तन का मूलाधार "आत्मा" है, आत्मा विवेचन ही भारतीय चिन्तन का प्रारम्भिक बिन्दु (Starting point) एवं अन्तिम लक्ष्य (Final goal) है, जिसके माध्यम से सब कुछ जाना, समझा या पाया जा सकता है, चाहे वह जड़ हो या चेतन, चेतन हो या अवचेतन, व्यक्तिगत हो अथवा समष्टिगत, इहलौकिक हो या पारलौकिक। इसलिये भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत आत्मा को ही सनातन, नित्य, चिरन्तन, सर्व-व्यापक, अजर, अमर तथा सभी स्थितियों के संदर्भ में चिन्तनीय अर्थात् चिन्तन योग्य माना गया है तथा आत्म चिन्तन से ही समूचे मानवीय जीवन तथा विश्व की सभी घटनाओं, वृत्तियों की जानकारी प्राप्त किया जाना संभव माना गया है। यूंग द्वारा प्रस्तावित (The self) के इस नवीन केन्द्र को यद्यपि भारतीय चिन्तन केन्द्र आत्मा (Soul) के समान तथा समकक्ष "सर्वव्यापक" नहीं माना जा सकता तथापि यूंग के इस (Self) को भारतीय तत्व "आत्मा" की ऊंचाई तक पहुँचने की एक दर्मियानी मंजिल अवश्य माना जा सकता है। और मानवीय चिन्तन के स्वतः सहज विकास विश्वास के अनुसार यूंगीय स्व (The self) समय आने पर भारतीय आत्मा में रूपान्तरित हो सकेगा—ऐसा विश्वास है। यूंग द्वारा इस (The self) की अवधारणा को निश्चयपूर्वक यूंग द्वारा पूर्वीय चिन्तन के सम्पर्क समझ का ही सहज परिणाम माना जाना चाहिये जो चीनी "ताओवाद" द्वारा प्रतिपादित (Immoral spirit body) (अविनाशी आत्मा शरीर) की धारणा के अनुरूप एवं समकक्ष प्रतीत होता है। जिस प्रकार भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत "आत्मा" में सब कुछ अच्छे-बुरे का (Everything highest & Lowest) का

समावेश हो जाना माना गया है, उसी तरह चीनी ताओवादी विचार के अन्तर्गत भी प्रकाश की शक्ति (Yang) तथा अंधकार की ताकत (Yen) के बीच आपसी खेल (Inter play) से चीनी योग (Spirit body) में विवेचित किया गया है। जिसका विवरण यूंग तथा (Wilhelm) विलेहल्मा द्वारा संयुक्त सम्पादित ग्रन्थ (The secret of the golden flower) में किया गया है।*

---

* Psychology and Alchemy. Collected Works of C. G. Jung Vol. 12, para 9.

अध्याय 12

रहस्यमय--साझेदारी

(Participation Mystique)

कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि आत्मा (Self) को "विश्व चेतना" (Universal Consciousness) कहा जाना उचित नहीं है क्योंकि "विश्व-चेतना" वस्तुत: सामूहिक अवचेतन का ही दूसरा नाम है जो अज्ञेय, अव्यक्त एवं व्यक्ति की समझ से परे है। पद आत्मा (Self) में एक ओर उसकी बहुमुखी अभिज्ञता (All sided awareness) का भान होता है तथा दूसरी ओर उसमें सम्पूर्ण जीवन का वोध होता है। शब्द जीवन का अर्थ केवल मानवीय जीवन ही नहीं अपितु विश्व के सभी पशु, पक्षी, वनस्पति के सहित जड़ पदार्थ को भी जीवन-युक्त माना गया है, अत: आत्मा को यदि "जीवन का समाज धर्मी या अर्थी माना जाय तो आत्मा की व्यापकता विश्व की सभी वस्तुओं में मानी जा सकती है और इस प्रकार सर्वत्र आत्मा एवं जीवन की रहस्यमयी साझेदारी के सिद्धान्त का प्रतिपादन हो सकता है।

यूंग ने जिस प्रकार चित्त के चेतन एवं अवचेतन के सम्भागों की इकाई कहा है, उसे परस्पर विरोध धर्मी होने पर भी एक दूसरे के प्रति पूरक या क्षतिपूरक माने जाकर इनके बीच चेतन एवं अवचेतन की अन्तर्वस्तुओं की समय एवं आवश्यकतानुसार स्वत: अदला-बदली होना माना गया है, उसी तरह मानवीय व्यक्तित्व विकास के प्रारम्भिक चरण में अहम् द्वारा चेतन मात्र का उजागर होना तथा मानवीय व्यक्तित्व विकास के अन्तिम चरण में अहम् के साथ आत्मा (Self) के नये केन्द्र की स्थापना होने पर आत्मा द्वारा चेतन के साथ सम्पूर्ण अवचेतन को आत्मा केन्द्र द्वारा समझे जाने की यूंगीय अवधारणा से अहम् एवं आत्मा के बीच स्वत: निर्मित रहस्यमयी साझेदारी प्रमाणित हो जाती है जिसको कार्ल गुस्ताव यूंग ने अहम् एवं आत्मा के बीच स्थापित इस सम्बन्ध को रहस्यमय साझेदारी (Participation mystique) कहा है। इस साझेदारी के परिणामस्वरूप आत्मा के उजाले में चेतन के साथ सम्पूर्ण अवचेतन भी विकसित पूर्ण व्यक्तित्व द्वारा योग्य प्रकार से जाना, पहिचाना एवं

नियन्त्रित किया जाना माना गया है ।*

यूंग ने सूर्योदय एवं सूर्यास्त की सर्वकालीन एवं सर्वत्र देशीय प्राकृतिक घटना के प्रतीकोपाख्यान (Myths) को रहस्यमय साझेदारी के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। सूर्योदय एवं सूर्यास्त की घटना क्रम को सनातन काल से सर्वत्र आदिम जातियों द्वारा देखा गया है और प्रायः सभी आदिम जातियों की दस कथाओं में इस घटना को समान रूप से व्याख्यायित किया गया है। अर्थात् प्रातःकाल में सूर्य का समुद्र से जन्म होना, रथारूढ होकर उसका दोपहर तक उच्च अन्तरिक्ष की यात्रा किया जाना तथा प्रति संध्या को महान् दैत्या के विराट् मुख में सूर्य को निगला जाना तथा दैत्या के विराट् मुंह में सूर्य एवं अंधकार के सूर्य के बीच तुमुल युद्ध होना तथा रात्रि के सूर्य को हराकर तथा उसका वध कर पुनः दूसरे दिन प्रातःकाल में सूर्य द्वारा नया जन्म लेने का जो धर्म रंजित विवरण प्रायः सभी आदिम जाति के पुराणों (Myths) में पाया जाना प्रमाणित करता है कि उक्त मिथक (Myths) सामूहिक अवचेतन की सृजनात्मक शक्ति की अभिव्यक्ति मात्र है। अर्थात् किसी बाहरी विश्वव्यापी घटना की यह आन्तरिक व्याख्या तत्कालीन मानव समाज की धार्मिक भावनाओं के रंग में व्याख्यायित किया जाना है। इस प्रकार चेतन-अवचेतन, अहम्-आत्मा तथा विषय (Object) विषयी (Subject) के बीच पाये जाने मनोवैज्ञानिक सम्बन्धों का रहस्यमय साझेदारी का परिणाम या नतीजा (Result) माना जाना यूंग ने प्रतिपादित किया है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपने वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों से यह भी प्रतिपादित किया है कि सामान्य व्यक्ति अपने अहम् के माध्यम से केवल अपने चेतन सम्भाग को ही समझने में क्षम्य था, जो प्रायः स्वतः विकसित होते हुए अपने अहम् के क्षेत्र का स्वतः विस्तार करते हुए वह जब विकास के पूर्णत्व के लक्ष्य की ओर पहुंच जाता है तब उसके अहम् (Ego) की साझेदारी स्वतः निर्मित आत्मा के नये केन्द्र से होने लगती है और इस प्रकार उच्चस्तरीय पूर्ण विकास की स्थिति में उसके लिये सम्पूर्ण अवचेतन का अर्थ समझा जाना भी संभव हो जाता है, और तब

---

* पद रहस्यमय-साझेदारी (Participation mystique) का सर्वप्रथम उपयोग लेवी ब्रूहल (Levy Bruhl) द्वारा किया गया है। जिसका अर्थ यह है कि जो बाह्य निर्मित है उसी के अनुसार अन्दर से भी स्वतः निर्मित होता है और आन्तरिक निर्माण के अनुसार उसकी तदनुसार स्वतः बाह्य अभिव्यक्ति होती है। लेवी ब्रूहल की मान्यता है कि विषयी तथा विषय (Subject-object) के इस पारस्परिक मनोवैज्ञानिक सम्बन्धों का भेद (Differentiation) किया जाना कठिन है। क्योंकि प्रायः विषयी और विषय के बीच एक रहस्यमयी साझेदारी पायी जाती है।

विकसित एवं समग्र व्यक्तित्व के लिये सम्पूर्ण चित्त (चेतन + अवचेतन) को वह आत्मा के दिव्य प्रकाश में यथावत् योग्य प्रकार से समझ पाता है।

भारतीय चिन्तन वाङ्मय में चेतन और अवचेतन संभागों की अन्तर्वस्तु के इस लय-विलय अथवा अदला-बदली को "चित्त विलास" कहा गया है और इन दोनों सम्भागों के बीच यूंग की मान्यतानुसार लीबिडो या जीवन शक्ति के सतत स्वतः प्रवाह से इनकी साझेदारी की इकाई का बना रहना प्रतिपादित किया गया है। यूंग द्वारा व्याख्यायित लीबिडो (जीवनशक्ति या जीवन इच्छा) को ही भारतीय चिन्तन में "चित्त-शक्ति" कहा गया है।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा कतिपय रोगियों की चित्त चिकित्सा के दौरान यह लक्षित (Observe) किया गया है कि जब रोगी को उसके अहम् के माध्यम से उसके अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का चेतन स्तर पर उभराव होने का अनुभव होता है तो वह प्रायः इस स्वतः भावावेश के उभराव से प्रायः व्यथा परेशानी और कठिनाई का अनुभव करने लगता था, किन्तु जब व्यक्तित्व विकास के अन्तिम चरण में उक्त समग्र एवं पूर्णत्व प्राप्त व्यक्ति नव उद्भूत आत्मा के माध्यम से अपने सम्पूर्ण चित्त (याने चेतन तथा अवचेतन) को समझने, अनुभव करने तथा इसका योग्य मूल्यांकन किये जाने के लिये समर्थ हो गया तो उसका सम्पूर्ण व्यवहार शान्त, तटस्थ, धैर्य युक्त एवं समन्वयवादी हो जाना पाया जाता है। यूंग ने यह भी स्पष्ट किया है कि सामान्यतया स्वतः व्यक्तित्व विकास के दौरान में प्रायः अहम् का आत्मा (Self) में सहज रूपान्तरण नहीं हो पाता, और आत्म दृष्टि सम्पन्न वही उच्च-स्तरीय विकसित व्यक्ति हो सकता है, जिसका अहम् समझ एवं ज्ञान के आलोक से निर्जीव या शून्यवत् हो चुका है। ऐसे विरले पूर्ण एवं समग्र व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति को भारतीय चिन्तन में "ज्ञानी" सर्वज्ञ या "मुक्त" कहा गया है और ऐसे समग्रता सम्पन्न व्यक्ति के लिये सभी सुख-दुख, अच्छाई-बुराई का भेद ही मिट जाता है और वह पूर्ण तटस्थ, गुणातीत, दोषमुक्त एवं वह सभी भली बुरी स्थितियों में निर्विकार एवं समन्वयवादी पाया जाता है।

यूंग ने आत्मा (Self) को मूल प्ररूप (आर्कीटाइप) माना है जिसकी झलक या सहज अभिव्यक्ति स्वप्नों (Dreams) एवं दृश्यों (Visions) में भिन्न-भिन्न प्रतिमाओं (Images) एवं प्रतीकों (Symbols) के माध्यम से यदाकदा हो सकती है। यूंग ने यह भी याद दिलाया है कि स्वप्नों की भाषा प्रायः प्रतीकात्मक होती है, अतः इन स्वप्नों से अवचेतन को स्पष्टतया समझ पाना बड़ा कठिन है। स्वप्न में उदाहरणार्थ सूर्य को सिंह, राजा अथवा सुवर्ण को ढेर की तरह देखा जाता है जब कि वस्तुतः सूर्य न तो सिंह है न राजा है और न वह सोने का ढेर है—अतः जब तक स्वप्नदृष्टि प्रतीकों की भाषा में पारंगत नहीं हो तब तक उसके लिये अवचेतन स्तरीय उभराव के स्वप्न का सही अर्थ निकालने में निःसंदेह कठिनाई का अनुभव

होगा ।* इसी तरह सपने में दिखाई पड़ने वाले बालक को पुराणों में आत्मा (Self) के प्रतीक के रूप में वर्णित किया गया है जो कभी वह देव-बालक तो कभी वह जादुई बालक की तरह व्याख्यायित किया गया है। अतः प्रतीकों का सही अर्थ समझने के लिये पुराणशास्त्र (Mythology) का गम्भीर अध्ययन किया जाना यूंग ने बहुत जरूरी माना है। यूंग की मान्यता है कि अनेक लोककथाओं (Folk tales) एवं मिथकों (Myths) में बालक का उल्लेख मिलता है। यूंग की मान्यतानुसार इसाई धर्म पुस्तकों में बाल-क्राइस्ट का जो उल्लेख है, वह आत्मा की अभिव्यक्ति का ही प्रतीक है जो प्रतिरूपात्मक याने आर्कीटाइपल है।** इसाई धर्म पुस्तकों में शिशु क्राइस्ट का बड़ा महत्व है। इसी तरह बौद्ध ग्रन्थों में "बाल-वुद्ध एवं भारतीय वैष्णव संप्रदाय में "बाल-कृष्ण को सम्पूर्णत्व एवं आत्मा का प्रतीक मानते हुए इनके प्रति अमित श्रद्धा व्यक्त की गई है। कभी-कभी स्वप्न में आत्मा की अभिव्यक्ति एक अण्डे के रूप में पायी जाती है जो उसके पूर्णत्व का द्योतक है, तथा यदाकदा आत्मा को रत्न, खजाना, वृत्त, चतुष्कोण के रूप में भी सपने में अभिव्यक्त किया जाना पाया गया है।

भारतीय तंत्र शास्त्र में "आत्मा" को मण्डल के रूप में चित्रित किया गया है। मण्डल संस्कृत भाषा का शब्द है जो सकेन्द्र युक्त एक वृत्त, त्रिकोण अथवा चतुष्कोण है। इसको धार्मिक क्रियाओं का प्रतीक एवं साधना तथा मानसिक एकाग्रता का एक उपयोगी साधन माना गया है—जो दैवत्व का प्रतीक या परिचायक है और इस सकेन्द्र युक्त वृत्त त्रिकोण या चतुष्कोणी इस व्यवस्थित आकृति (याने मण्डल) को क्रमश पूर्णत्व, समग्रता और सम्पूर्णत्व की अभिव्यक्ति मानी गयी है। विश्व भर के प्रायः सभी राष्ट्रों के प्राचीन धर्मों में सूर्य के प्रति प्रगाढ श्रद्धा की अभिव्यक्ति किया जाना पाया गया है और केन्द्रयुक्त वर्तुल मण्डल को सूर्य के रथ के पहिये का प्रतीक कहा गया है। भारतीय चिन्तन के श्रीयंत्र चक्र में वृत्तों, त्रिकोणों एवं चतुष्कोणों की सुस्पष्ट आकृतियां हैं, तथा इन मण्डलों की सेवा पूजा किये जाने का विशद विधान एवं वर्णन है। बौद्ध लामाओं के धार्मिक क्रिया कर्म-कांडों में भी मण्डलों के प्रति गहरी श्रद्धा व्यक्त की गई है, तथा इसका मनन (Contemplation) तथा एकाग्रता साधन (Concentration) के लिये अत्यन्त उपयोगी उपकरण की तरह स्वीकार किया गया है। ईसाई, बौद्ध और हिन्दू धर्मों में आराध्य देवता के चारों तरफ प्रकाश-युक्त वृत्ताकार मण्डल की अभिव्यक्ति किया जाना उनके देवत्व के आलोक का द्योतक है। प्रायः सभी धर्मों में प्रकाशयुक्त मण्डल सहित आराध्य देवता की तस्वीर की विधिवत् पूजा न किये जाने का विधान एवं प्रचलन है।

---

* Introduction to the science of mythology by Kerengle and Jung p. 104. Collected Works. Vol 9.

** Psychology and Alchemy, para 22.

जिसको नियमित रूप से निष्पादन किये जाने पर साधक को असीम शक्ति एवं परम शान्ति की प्राप्ति का अनुभव होना माना गया है। यूंग ने अनेक रोगियों द्वारा मण्डलाकार यंत्रों एवं प्रतिमाओं का दर्शन, मनन एवं ध्यान किये जाने मात्र से उनके तनावों एवं रोगों में कमी होने का उल्लेख प्रस्तुत किया है।

कार्ल गुस्ताव यूंग को अनेक मनस्तापी रोगियों के स्वप्न विश्लेपण के दौरान आकस्मिक रूप से उनके द्वारा मण्डल प्रतीकों के दर्शन मात्र से उनके स्वास्थ्य पर होने वाले गहरे कल्याणकारी प्रभावों की जानकारी प्रस्तुत की। यद्यपि रोगी इन प्रतीकों के अर्थ को भी समझ पाने में असमर्थ था। यूंग की यह मान्यता है कि केवल मण्डलों को देखते रहने मात्र से रोगी के तनावों में कमी एवं उसके व्यक्तित्व का विकास परिलक्षित किया जा सकता है। अत: भारतीय चिन्तन में श्री यंत्र आदि मण्डल युक्त चित्रों के पूजन को मानसिक शान्ति एवं शारीरिक सुख प्राप्ति का उल्लेखनीय साधन माना जाता है। अनेक आदिम जातियों में एक वृत्ताकार मण्डल के चारों तरफ रोगी के साथ नृतक समूह द्वारा भाव-लय के साथ नृत्य किये जाने मात्र से रोगी के रोग मुक्त किये जाने का विश्वास है जिसमें नर्तक समूह एक वर्तुलाकार परिधि पर भाव विह्वल होकर सतत नाचते हैं, तथा बाद में उस परिधि से केन्द्र की ओर, केन्द्र से परिधि की ओर नृत्य करते हुए अन्दर-बाहर नृत्य की मुद्रा में आते जाते हैं, तथा इस नृत्य से रोगी के उपचार के साथ समूचा समूह अपने शरीर की थकान, मन की उदासी एवं चित्त की बैचेनी से राहत पाने का अनुभव करते हैं। एक वृत्ताकार घेरे में नाचना तथा परिधि से केन्द्र की ओर बढ़ने और पीछे हटने के नृत्य को यूंग ने सक्रिय कल्पना विधि (Active Imagination method) का एक अभ्यास क्रम निर्धारित किया है, जिसका यूंग ने मनोचिकित्सा के लिये यदाकदा उपयोग किया है। इस टेक्नीक के अन्तर्गत चेतन की पृष्ठभूमि (Back ground of the consciousness) पर रोगी द्वारा एकाग्रता (Concentration) के अभ्यास से उसके अवचेतन की अन्तर्वस्तु को उसके चेतन पर उभारने का एक तरीका माना गया है तथा अवचेतन की इस प्रकार उभरी हुई अन्तर्वस्तु की चेतन के द्वारा योग्य समझ से रोगी के तनावों एवं रोगों का दूर किया जाना माना गया है। इस प्रसंग में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने एक महिला रोगी के स्वप्न का विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत किया है—

मैं एक ऊंचे पहाड़ पर चढ़ गई हूं तथा वहाँ एक ऐसे स्थान पर पहुंची हूं जहां मेरे सामने, पीछे, दायें और बांयें याने चारों दिशाओं में सात-सात पत्थर सीढ़ियों की तरह सपाट पड़े दिखाई पड़ते हैं। मैं 7/7 पत्थरों के चौकोर घेरे के बीचों बीच इनके केन्द्र में खड़ी हुई हूं। मैंने अपने पास स्थित चार पत्थरों को उठाने की जब कोशिश की तो मुझे यह महसूस हुआ कि यह चार पत्थर चार खम्भों को खोद कर जमीन पर उन्हें इस प्रकार जमाया है कि मैं इनके बीच खड़ी रह सकूं।

यकायक ये पत्थर एक दूसरे पर ढुलकते हुए दिखाई पड़े और इन चार खम्भों पर एक तम्बू सा तन गया और तव मैं जमीन पर गिर पड़ी और मैं कहने लगी कि इन चारों पत्थरों को मुझ पर गिर जाना चाहिये, क्योंकि मैं वेहद थक चुकी हूं। इसके वाद मैंने स्वप्न में यह देखा कि देव मन्दिर के उन चार खम्भों को वृत्त वनाते हुए एक तीव्र अग्नि शिखा प्रज्वलित हो रही है और मैं जमीन पर से उठ खड़ी होकर उन खम्भों को उखाड़ कर दूर वाहर फेंक रही हूं तथा जहाँ-जहां मैंने उन चार खम्भों को फेंका है, वहां देव मन्दिर के इन खम्भों के जगह पर चार हरे वृक्ष खड़े हो गये हैं और इन नवसृजित वृक्षों की कोमल पत्तियां प्रदीप्त दीप शिखा में जलती हुई नजर आती हैं। इस पर मैं कहती हूं कि अब यह दृश्य समाप्त होना चाहिये तथा वृक्षों के पत्तों को नहीं जलना चाहिये। जव मैंने उस अग्नि शिखा में प्रवेश किया तो चारों पेड़ गायव हो गये और प्रज्वलित लाल अग्नि शिखा को मिलकर एक नीली लपट वन गई, और मुझे पृथ्वी पर से ऊपर उठा लिया गया।

उपर्युक्त स्वप्न दृश्यावली का सम्यक् अर्थ प्रस्तुत किया जाना वड़ा कठिन है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वप्न-दृष्टि के चारों तरफ संकटों की एक भीड़ उपस्थित है और वह किसी केन्द्र में पहुंच कर चारों तरफ मौजूद संकटों से राहत लेना चाहती है। वह संकटावस्था को स्वीकार करते हुए जव केन्द्र में पहुंच जाती है तभी उसकी समस्याओं का स्वतः हल निकल पाता है। इस स्वप्न में वर्णित चतुष्कोणी चौकोर भूमि एवं वृत्ताकार प्रज्वलित अग्नि शिखा पर ध्यान दिया जाना अपेक्षित है जो चार दिशाओं एवं सम्पूर्णता की प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियां हैं, अतः इन आकृतियों (Figures) का सविशेष महत्व है।

यूंग ने यह भी उल्लेख किया है कि उसका एक मानसिक रोगी स्वप्न में कई महीनों तक एक घड़ी की आकृति (गोलाकार वृत्त) को देखते रहने मात्र से वगैर औषधि-उपचार अपने मानसिक तनावों एवं मनस्थायी रोग से मुक्त हो गया।*

कभी-कभी किसी रोगी को एक चतुष्कोणी वगीचों के मध्य में गोलाकार फर्वाश अथवा पुष्प पट्टी या वृत्ताकार लगी हुई दूव देखे जाने पर भी रोगी को अपने मानसिक तनावों में कमी होने का यूंग ने पता लगाया है, यद्यपि स्वप्नद्रष्टा इन प्रतीकों के महत्व एवं प्रभावों की कोई जानकारी नहीं रखता था। यूंग ने अपने अनुभवों के आधार पर प्रत्यक्ष या स्वप्न में मण्डलाकार प्रतिभावों के देखे जाने मात्र से इनका प्रभाव देखने वालों पर होने की मौलिक खोज की है।

यूंग की यह मान्यता है कि मण्डलाकार प्रति पाना को प्रेक्षण (Projection) यदि किसी वाह्य प्रतीक पर नहीं किया जायगा तो द्रष्टा के अहम् का अति विस्तार होकर उसके क्षतिग्रस्त हो जाने की आशंका हो सकती है। प्रकाशयुक्त मण्डल किसी

* Psychology and religion, page 80. Collected Works Vol. 11

बाह्य प्रतीक के चारों तरफ देखें या कल्पित किये जाने पर ही द्रष्टा के अवचेतन की अन्तर्वस्तु का जमाव प्रकाशयुक्त मण्डल में हो सकेगा, किन्तु यदि किसी बाह्य प्रतीक का अभाव है तो आन्तरिक अन्तर्वस्तु का प्रवाह द्रष्टा के अहम् पर होने से उसका अहम् बृहदाकार हो जायेगा, और इस प्रकार द्रष्टा का अहम् यदि अधिक फूल जायेगा तो निःसंदेह इसके परिणामस्वरूप उसका समूचा व्यक्तित्व क्षतिग्रस्त हो जायगा। अतः प्रकाशयुक्त मण्डल को किसी देव प्रतिमा, मूर्ति या धार्मिक प्रतीक के चारों ओर स्थापित किये जाने का सुफल निकलने का विश्वास किया गया है, इसलिये प्राचीन मन्दिरों एवं मूर्तियों का मण्डलाकार युक्त बतलाया गया है। किन्तु आधुनिक विचारों में धीरे-धीरे मन्दिरों, मस्जिदों, एवं गिर्जाघरों एवं देव प्रतिमाओं के प्रति जन-आस्थाओं में कमी होना पाया जा रहा है और आजकल भगवान, देव प्रतिमा अथवा धार्मिक प्रतीकों के बजाय किसी अधिक विकसित मानव को धीरे-धीरे विशेष महत्व दिया जाने लगा है और अब मानव के पूर्णत्व एवं समग्रता (The wholeness of man) को भगवान देवता या मूर्ति से भी अधिक महत्व दिये जाने की विचार आंधी चल पड़ी है; अतः समाज द्वारा किसी देव प्रतिमा के बजाय किसी लोकनेता की स्टेचू या तस्वीर को प्रकाशयुक्त मण्डल के साथ दिखाये जाने का एक चलन या रिवाज चल पड़ा है ताकि सामान्य मानव समूह किसी काल्पनिक देवता या मूर्ति के बजाय तत्कालीन अपने किसी पसंदगी के नेता के जीवन और विचारों का अनुसरण करते हुए अपने रोजमर्रा के जीवन का निर्वाह करते हुए अपने वैयक्तिक व्यक्तित्व का योग्य विकास कर सके।

"विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान" के अन्तर्गत यूंग द्वारा प्रतिपादित "रहस्यमयी साझेदारी" (Participation mystique) का बड़ा विशिष्ट स्थान है। कार्ल गुस्ताव यूंग की समग्र अनुभव अध्ययन एवं अनुभव रहस्यमय-साझेदारी के संदर्भ में ही समझा अथवा विवेचित किया जाना योग्य है। यूंग ने अपने विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान की स्थापना हेतु कतिपय द्वन्द्वात्मक प्रत्ययों (Two sided concepts) की व्याख्यायें प्रस्तुत की हैं। यूंग ने मानवीय समाज के सामान्य एवं असामान्य वर्ग (Normal & Abnornal) व्यक्तियों के सोचने, करने अथवा अभिव्यक्ति किये जाने के आधार को चित्त (Psyche) कहा है जो पुनः दो प्रत्यय (Concepts) जैसे चेतन तथा अवचेतन (Conscious & unconscious) का योग है तथा यूंग के संपूर्ण लेखन एवं अनुसंधान में इस चेतन एवं अवचेतन के क्षेत्र, क्षमता, प्रभावशीलता एवं इनकी मानव जीवन में उपयोगिता के संदर्भ में ही विवेचन प्रस्तुत किया गया है, तथा यूंग ने अपने जीवन का बहुतांश भाग अवचेतन के रहस्यों का उद्घाटन करने तथा उन्हें समझने तथा दुनिया को अवचेतन को समझाने में ही व्यतीत किया है, अतः अवचेतन में भी कतिपय द्वैत प्रत्यय (Two types of concepts) का खुलासा मात्र प्रस्तुत किया है जैसे व्यक्तिगत अवचेतन एवं सामूहिक अवचेतन, एनीमा एवं

नीमुस तथा मूल प्रारूप महान् मातृशक्ति एवं सनातन ज्ञान पुरुष आदि-आदि। इन भी द्वन्द्वयुक्त प्रत्ययों (concepts) की योग्य समझ एवं व्याख्या प्रस्तुतीकरण हेतु स रहस्यमयी साझेदारी की प्रक्रिया को समझना यूंग ने संकेत से जरूरी बतलाया । अतः चेतन-अवचेतन, व्यक्तिगत सामूहिक अवचेतन, एनीमा-एनीमुस, आध्य ातृशक्ति सनातन ज्ञान पुरुष इन सभी द्वन्द्वों को केवल मात्र एक दूसरे के सन्दर्भ से ी समझा या विवेचित या विश्लेषित किया जा सकता है–यह कार्ल गुस्ताव यूंग का ाग्रह है। व्यक्ति के स्वतः विकास की परिणित पर अहम् के साथ ही साथ आत्मा Self) के नव केन्द्र द्वारा सम्पूर्ण चित्त को समझने एवं व्याख्यायित करने के लिये ो यूंग ने अहम् आत्मा के द्वैत को भी एक दूसरे की मदद एवं समझ के उजाले में ी किसी निर्णय पर पहुंचने के लिये माना है। क्योंकि कार्ल गुस्ताव यूंग की एक ात्र यही अवधारणा है कि द्वैत भाव निश्चित रूप से विरोध धर्मी होने पर भी कृति से एक दूसरे के प्रतिपूरक मात्र है, अतः द्वैत के दोनों पक्षों की समझ एक ूसरे की साझेदारी (Participation) से ही संभावित है। अतः मेरी समझ में कार्ल स्ताव यूंग के सम्पूर्ण विपुल अनुभव, अध्ययन एवं अनुसंधान का आरम्भ रहस्यमय-ाझेदारी का विचार (Concept) है तथा उनके आजीवन अनुभव, बहुमुखी ध्ययन एवं दीर्घकालीन अर्थयुक्त अनुसंधान का अन्तिम परिणाम समानता, समझ, वं समन्वय की स्थापना किया जाना है।

अतः कार्ल गुस्ताव यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को भारतीय शुद्धाद्वैत संदर्भ में विवेचित किया जाना योग्य है।

———

अध्याय 13

चित्तीय प्रक्रिया के नियम

(The laws of psychic process)

यूंग की मान्यतानुसार सम्पूर्ण चित्तीय प्रक्रिया (Total psychic process) एक निरन्तर स्वतः गतिशील प्रवाह (Continous movement) है। चित्त में ऊर्जा शक्ति के इस सतत प्रवाह से ही चित्त की सभी क्रियाएँ कार्यान्वित होती हैं। यूंग ने इस चित्तीय ऊर्जा-शक्ति को (Libido) लिबिडो कहा है। सम्पूर्ण चित्तीय क्षेत्र में यह प्रवाह निरन्तर स्वतः बना रहता है जिसका बड़ा मनोवैज्ञानिक महत्व है। इस प्रवाहयुक्त ऊर्जा शक्ति से ही चित्त की अभिव्यक्ति होती है जो प्रायः विश्लेपित नहीं की जा सकी, किन्तु जब चित्तीय प्रवाह में जो तीव्रता है उसका प्रभाव (Effect) चित्त के चेतन सम्भाग के द्वारा अनुभव किया जा सकता है। जिस प्रकार भौतिक शास्त्र (Physics) में धन और ऋण ध्रुवों (Positive & negative) के बीच विद्युत् का सहज स्वतः प्रवाह पाया जाता है। उसी तरह मनोविज्ञान के क्षेत्र में चित्त के चेतन एवं अवचेतन सम्भागों के बीच इस स्वतः चित्तीय ऊर्जा शक्ति के प्रवाह के कारण इन दोनों सम्भागों के बीच योग्य सम्बन्ध का निर्वाह बना रहता है और इसका समर्थन सत्यापन मानवीय अनुभव के आधार पर किया जा सकता है।

जिस प्रकार भौतिक शास्त्र में ऊर्जा (Energy) की स्थिति का होना मान लिया गया है, उसी प्रकार विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत चित्तीय ऊर्जा-शक्ति के प्रवाह के अस्तित्व को भाव वाचक संज्ञा की तरह मान लिया गया है, इस चित्तीय ऊर्जा-शक्ति का भौतिक विज्ञान की ऊर्जा (Energy) की तरह कोई मूर्त अथवा वस्तुपरक (Objective) रूप नहीं है, अतः चित्तीय ऊर्जा-शक्ति का होना केवल मात्र एक विचार मान लिया गया है और इस चित्तीय ऊर्जा-शक्ति की कार्यान्विति प्रायः प्रेरणा (Drive), इच्छा (Desire), संकल्प (Will) इत्यादि के रूपों में प्रकट होना मानवीय अनुभव गम्य है। मानव मात्र की सभी प्रेरणाओं इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं संकल्पों का आधार यही स्वतः निरन्तर प्रवाहयुक्त चित्तीय ऊर्जा-शक्ति ही है। अतः इस ऊर्जा-शक्ति (Libido) से ही सम्पूर्ण मानवीय जीवन संचालित एवं मर्यादित होना पाया गया है इसलिये इस चित्तीय ऊर्जा-शक्ति (Libido) को जीवन-शक्ति (Life force, या Life Energy), जीवन इच्छा (Life-wish)

या जीवण प्रेरणा (Life-urge) कहा जाना योग्य है। प्राणि विज्ञान (Biology) के अन्तर्गत भी शरीर के प्रत्येक अवयव की कोशिकाओं में भी परिवर्तनशीलता का कारण सैल ऊर्जा (Cell Energy) को मान लिया गया है, तथा इसका सत्यापन भी प्रयोगशालाओं में किया गया है, किन्तु विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मान्य इस चित्तीय ऊर्जा-शक्ति (Libido या Life Energy) को अब तक केवल मानवीय अनुभवों के ही आधार पर व्याख्यायित किया जा सकता है।

यूंग की यह भी मान्यता है कि चित्तीय ऊर्जा का कोई निश्चित स्थान अथवा इसका कोई मूर्त, स्थायी अथवा स्थिर अस्तित्व नहीं है, क्योंकि उसके स्वरूप की अभिव्यक्ति स्वतः प्रवाहित परिवर्तनशील एवं निरन्तर गत्यात्मक (Dynamic) हलचल से होती है। जिस प्रकार प्रत्येक भौतिक अंग (Physical organ) में अनेक (Cells) कोशिकाओं का स्वतः सतत परिवर्तन के फलस्वरूप पुरानी कोशिकाओं (Cells) का क्षय तथा उसके स्थान पर नवीन कोशिका (Cells) का स्वतः उद्भव होता है, उसी तरह चित्त के क्षेत्र में चेतन एवं अवचेतन के इन परस्पर विरोधी ध्रुवों के बीच इस स्वतः चित्तीय ऊर्जा-शक्ति के सतत प्रवाह के फलस्वरूप चेतन एवं अवचेतन की अन्तर्वस्तुओं का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में कमी, बढ़ोतरी तथा परस्पर अदला-बदली की क्रियाएँ स्वतः संचालित होती पायी जाती हैं जिसके बीच सन्तुलन का बना रहना ही स्वास्थ्य (Health) है तथा इनमें असन्तुलन हो जाना ही रोग (Disease) की पहिचान है। अर्थात् यूंग की मान्यता में चेतन तथा अवचेतन के ध्रुवों के बीच सतत प्रवाहित चित्तीय ऊर्जा के सहज प्रवाह का बना रहना मानव के चित्त का सन्तुलन या स्वास्थ्य का लक्षण माना गया है। तथा इन दो परस्पर विरोधी ध्रुवों के बीच सहज प्रवाह में गड़बड़ी होना ही असन्तुलन एवं रोग का लक्षण माना गया है।

कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह प्रतिपादित किया है चित्तीय ऊर्जा-शक्ति (लीबिडो) का निरन्तर प्रवाह बना रहना मानवीय चित्त के स्वास्थ्य का ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवीय जीवन के अस्तित्व की पहिचान है। जिस प्रकार रक्त संचार से हृदय की धड़कनों से ही मानव के जीवन की पहिचान है, क्योंकि इन धड़कनों का बंद हो जाना ही उसके मृत्यु की सूचना है, उसी प्रकार चित्त के दोनों सम्भागों के बीच प्रवाह बना रहना उसके चित्त की क्रिया-शीलता एवं इकाई बने रहने की पहिचान है। यूंग ने चेतन और अवचेतन को चित्त के परस्पर दो विरोधधर्मी ध्रुव माना है। किन्तु इनको प्रतिपूरक या क्षतिपूरक सम्भाग माना है और इसलिये इन दोनों ध्रुवों या सम्भागों के बीच दोनों सम्भागों की अन्तर्वस्तु की अदला-बदली को ही मानवीय व्यक्तितत्व के स्वतः सहज विकास का कारण या लक्षण माना है। अतः जीवन-ऊर्जा (लिबिडो) के प्रवाह की रुकावट को व्यक्तितत्व के सहज विकास का अवरोधक माना गया है। यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि चित्तीय ऊर्जा-शक्ति

(लिबिडो) के स्वतः प्रवाह से चेतन एवं अवचेतन के परस्पर विरोध-धर्मी ध्रुवों के बीच जो अनिवार्यतः प्रतिपूरक रूप को निर्वाह किया जा रहा है, वही मानवीय प्रकृति (Human nature) का नियम है अतः एवं मानव-जीवन के निर्वाह हेतु चेतन में अवचेतन की अन्तर्वस्तु तथा अवचेतन में चेतन की अन्तर्वस्तु का इस जीवन-ऊर्जा के प्रवाह से आना-जाना अथवा अन्तर्वस्तुओं की परस्पर अदला-बदली बना रहना ही जीवन का लक्षण है। जिस प्रकार प्रत्येक दैनिक जीवन में प्रातःकाल एवं संध्याकाल का एक दूसरे के बाद निरन्तर सहज क्रम बना रहता है उसी तरह चित्त के चैतन्य के लिये चेतन एवं अवचेतन की अन्तर्वस्तुओं का एक दूसरे में आना-जाना अथवा इनकी परस्पर अदला-बदली होना ही चित्तीय ऊर्जा-शक्ति (लीबिडो) का अनुभवगम्य नियम है। मानव जीवन में इस नियम के अन्तर्गत ही सनातन काल से आज तक निरन्तर स्वतः आवर्तन क्रम का निर्वाह होना भी मानवीय अनुभव से सत्यापित है। यूंग ने इस नियम को सभी चित्तीय प्रक्रियाओं पर लागू होने का पता लगाया है और इसी नियम के प्रकाश में ही यूंग ने सभी मानवीय अभिवृत्तियां (Attitudes) सभी मानवीय क्रियाएँ (Functions) तथा चेतन एवं अवचेतन के बीच स्थित सभी संबंधों को व्याख्यायित किये जाने का प्रयत्न किया है।

जिस प्रकार भौतिक-विज्ञान (Physics) के अन्तर्गत वस्तु (Matter) को अक्षय एवं अविनाशी (Indestructable) माना गया है, उसी प्रकार चित्तीय ऊर्जा-शक्ति का भी नाश अथवा क्षय नहीं होना तथा उसके परिणाम मे किसी भी प्रकार की घटत-बढ़त नहीं होना पाया गया है, अतः सभी चित्तीय क्रियाओं में ऊर्जा-शक्ति की मात्रा या परिणाम की दृष्टि से किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। परिवर्तन होता है तो केवल उसके गुण (Quality) में जबकि परिमाण (Quantity) में कोई हानि वृद्धि नहीं होती। विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत चित्तीय ऊर्जा-शक्ति का प्रवाह चेतन से अवचेतन एवं अवचेतन से चेतन सम्भाग में स्वतः होते रहने के फलस्वरूप इसके गुण में तो अन्तर देखा जा सकता है किन्तु इनकी मात्रा (Quantity) यथावत् ही बनी रहती है। इस प्रकार यहाँ पर भी भौतिक-विज्ञान के अन्तर्गत वस्तु (Matter) की समान मात्रा के बने रहने तथा केवल मात्र उसके गुणों में ही परिवर्तन होने बावत नियम को लागू किया जाना यहाँ भी योग्य माना गया है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने (Modern man in search of a soul) शीर्षक निबन्ध में बड़े विस्तार के साथ यह स्पष्ट किया है। भौतिक वस्तु की तरह चित्तीय ऊर्जा (लिबिडो) के परिणाम" मात्रा में (Quantity) की दृष्टि से कोई नाश अथवा घटत-बढ़त नहीं होती है किन्तु केवल मात्र उसके गुण-रूप (Quality) में ही परिवर्तन होना पाया जाता है। विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत चित्तीय ऊर्जा-शक्ति का यह सतत स्वतः प्रवाह चित्त के समूचे क्षेत्र याने चेतन तथा अवचेतन के दोनों सम्भागों में मौजूद होना माना गया है—और इस ऊर्जा-शक्ति प्रवाह के अविनाशत्व का अर्थ यही है कि यह ऊर्जा जब चेतन सम्भाग में अवचेतन

से प्रवाहित होती है तो उसकी मात्रा या परिणाम तो यथावत् बना रहता है किन्तु उसकी किस्म या गुणों (Quality) में रूपान्तरण हो जाता है। इस प्रवाह में स्वतः आने जाने से उसके "मात्रा परिणाम" पर तो कोई असर या फर्क नहीं पड़ता किन्तु उसके स्वरूप, गुण एवं प्रभाव याने किस्म पर इस परिवर्तन का असर और प्रभाव अवश्य बदलता हुआ देखा जा सकता है। हमारे चित्त का चेतन सम्भाग अवचेतन सम्भाग के मुकाबले में बहुत ही अल्पांश है—अतः चित्तीय ऊर्जा-शक्ति के सतत स्वतः प्रवाह से चेतन का केवल अल्पांश ही अवचेतन में विलय हो पाता है जिसका मूल्यांकन किया जाना कठिन है। किन्तु जब अवचेतन का चेतन पर स्वतः वृहद मात्रा में उभराव होने की हालत में बहुतांश अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की व्याप्ति चेतन सम्भाग पर हो जाती है तो इसको सही परिपेक्ष में समझ लेना भी चेतन के लिये प्रायः बड़ा कठिन हो जाता है और चेतन तथा अवचेतन की अन्तर्वस्तुओं के परस्पर इस प्रकार बहाव द्वारा आवागमन एवं तदनुसार ऊर्जा-शक्ति के रूप परिवर्तन के संपरिवर्तन (Conservation) के नियम के अनुसार चेतन का अवचेतन में लय हो जाने तथा अवचेतन की अन्तर्वस्तु का चेतन स्तर को आप्लावित होने के परिणाम-स्वरूप यदाकदा चेतन सम्भाग के क्षतिग्रस्त हो जाने की भी आशंका उपस्थित हो जाती है तथा कभी-कभी समूचा मानवीय व्यक्तित्व रोगग्रस्त हो जाना भी पाया जाता है।

मानवीय अभिवृत्ति (Attitude) की दृष्टि से चेतन सम्भाग जब बहिर्मुखी रुख अपनाता है तो व्यक्तित्व का बाहरी दुनियां के साथ घनिष्ठ सम्पर्क होने से उसके अहम् के विस्तार के साथ वह दुनियां के साथ समयोजन करना चित्तीय शक्ति के माध्यम से सीख पाता है और उसके व्यक्तित्व का सफल विकास हो पाता है जिसको यूंग ने प्रगतिवादी प्रवाह (Progressive movement) कहा है जो व्यक्तित्व की बाहरी मांग की प्रतिपूर्ति करता है। इसी तरह जब अन्दर की मांग की पूर्ति के लिए जब व्यक्तितत्व अन्दर की ओर अन्तर्मुखी अभिवृत्ति अपनाने के लिए बाध्य होता है तो उसे प्रतिगामी बहाव (Regressive movement) या 'पीछे हटना' कहा गया है और प्रतिगामी बहाव के कारण व्यक्तित्व को गहराई में जाने का अवसर प्राप्त हो जाता है ताकि वह अपने व्यक्तित्व की आन्तरिक मांगों को समझ कर तथा इनका योग्य समयोजन एवं सामन्जस स्थापित करते हुए अपना आत्म-विकास कर सके। कार्ल गुस्ताव यूंग की यह मान्यता रही है कि मानवीय व्यक्तित्व के विकास के लिये दोनों अभिवृत्तियों का मांग के अनुसार अनुपालन किया जाना जरूरी है। बहिर्मुखी अभिवृत्ति से व्यक्तित्व का विकास एवं विस्तार तथा अन्तर्मुखी अभिवृत्ति से व्यक्तित्व की गहराई को समझ में अभिवृद्धि होने की सम्भावना है और इसलिये अपूर्ण एवं अल्प व्यक्तित्व के पूर्ण एवं समग्र विकास के लिये बारी-बारी से इन दोनों (बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी) अभिवृत्तियों की कार्यान्विति का अवसर दिया जाना यूंग ने बहुत जरूरी माना है। और इसी

प्रकार व्यक्ति अपनी सहज स्वतः वृत्ति का उपयोग करने पर ही वह पूर्ण समग्र एवं समन्वित होकर समष्टि के उच्चतम ध्येय तक पहुँच सकता है। इस प्रकार व्यक्ति का समष्टि तथा मानव का आत्मवत् बन जाना ही मानवीय जीवन साधना का एक मात्र लक्ष्य या प्रयोजन होने का संकेत कार्ल गुस्ताव यूंग ने बार-बार बड़े आग्रह के साथ प्रगट किया है ताकि व्यक्ति अपने चेतन के प्रकाश में स्वयं के अवचेतन की अंधेरी में पड़ी हुई अन्तर्वस्तु को समझ एवं योग्य पहिचान कर सके और इस प्रकार अंधकार में पड़ी हुई अन्तर्वस्तु का उपयोग स्वयं के व्यक्तित्व के विकास के लिये करते हुये अपने व्यक्तित्व को अपूर्ण से पूर्ण एवं एकांकीपन से समग्रता के पथ पर स्वतः अग्रसर हो सके और इस प्रकार मानवीय जीवन के आलोकमय, मंगलकारी लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए वह अपने व्यक्तित्व को समष्टि के साथ एक रूप, एक रस एवं एकत्व में बदल सके। इस प्रकार चित्तीय ऊर्जा-शक्ति के प्रवाह को आगे तथा पीछे हटाने के स्वतः प्रवाह से निःसंदेह मानवीय व्यक्ति का पूर्ण सहज विकास होना यूंग ने संभव माना है।

इसी प्रसंग में यूंग ने यह भी स्मरण कराया है कि सनातन काल से मानव के सामूहिक अवचेतन में संगृहीत यह रत्न भण्डार याने मानवीय अनुभवों की धरोहर जो बीज रूप में मौजूद है, उसको समझकर तथा इनके सम्यक् उपयोग इनसे साहित्य, कला और संस्कृति का विकास होता है तथा इन आयामों में पायी जाने वाली उपलब्धि की मदद से न केवल व्यक्ति ही पूर्णत्व एवं समग्रता की दिशा में बढ़ सकेगा, अपितु इस ज्ञान-विज्ञान की शाश्वत सनातन कालीन धरोहर की योग्य समझ एवं उपयोग से समूची मानवीय प्रतिभा एवं संस्कृति का कल्याणमय स्वरूप समय की आवश्यकतानुसार अवश्य निखार सकेगा और इससे सम्पूर्ण मानव-जाति के श्री, एवं ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि होने की सहज संभावना हो सकेगी और इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में परस्पर समझ सौहार्द्र एवं सामञ्जस के दिव्यतम आलोक का विस्तार होगा जिसका लाभ एवं कल्याण की भागीदारी का प्रभाव समूची मानव जाति पर निःसन्देह पड़ेगा।

अध्याय **14**

मानव जीवन की अवस्थायें

(The Stages of Life)

जन्म से मृत्यु तक मानव को मुख्यत: चार अवस्थाओं में गुजरना पड़ता है। मानवीय जीवन की अवधि लगभग 80 से 100 वर्ष मानी गई है और सम्पूर्ण मानव जीवन को चार अवस्थाओं में विभाजन किया जाना योग्य है। मानव शरीर को (1) बाल्यावस्था, (2) युवावस्था, (3) प्रौढ़ावस्था एवं (4) वृद्धावस्था में निसंदिग्ध रूप से गुजरना पड़ता है और प्रत्येक अवस्था में भिन्न स्थितियों तथा तदनुकूल भिन्न-भिन्न समस्याओं का मानव मात्र को साक्षात्कार करना पड़ता है। उपरोक्त चार अवस्थाओं के क्रमिक विकास संबंधी समस्याओं का विवरण प्रस्तुत किया जाना बड़ा कठिन कार्य है, क्योंकि भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में मानवीय चित्तीय स्थितियों का निरन्तर एवं स्वत: विकास होता रहता है जो व्यक्ति, स्थान तथा काल सापेक्ष है, अत: जन्म मृत्यु पर्यन्त सभी प्रकार की स्थितियों एवं तदनुसार भिन्न-भिन्न समस्याओं के उद्भव, विकास और समाधान का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जाना यद्यपि बड़ा कठिन है फिर भी यूंग ने इस बावत मानवीय चित्त के विकास को समझाने हेतु कतिपय अवधारणाओं का उल्लेख किया है।

यूंग की मान्यतानुसार आज की विकसित सभ्यता के फलस्वरूप मानव भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। आज मानव ने कुछ बातें प्राय: समझ कर अथवा अनजाने ही मान ली हैं और कतिपय तथ्यों के प्रति उसने या तो अपना सन्देह प्रकट किया है अथवा उन्हें समझे या बिना समझे ही स्वीकार अथवा अस्वीकार कर दिया है। फलत: आज के मानव को मान्यताओं, सन्देहों एवं स्वीकृत/अस्वीकृत भावनाओं के बियावान में प्राय: उलझना पड़ता है। जबकि प्राचीन काल की आदिम मानव (Primitive man) केवल अपनी सहज वृत्तियों के आधार पर अपने प्राकृतिक जीवन का बगैर समस्या या तनाव के सुखपूर्वक सहज जीवन यापन करने का अभ्यासी था। ज्यों-ज्यों मानवीय सभ्यता का विकास होता है त्यों-त्यों मानवीय समस्याओं एवं तनावों में बढ़ोतरी नजर आती है। मानवीय सभ्यता के

विकास का अर्थ मानवीय चेतन (Human Consciousness) का विस्तार है। इस चेतन के विस्तार के परिणामस्वरूप अनेक ऐसी समस्याओं का स्वत: उद्भव हो जाता है जिनका निराकरण सृजनवृत्तियों (Instincts) से हो सकना संभव नहीं है अपितु उसके समाधान के लिये मानव को अनेक विकल्पों में किसी एक का चुनाव करने के लिये वाध्य होना पड़ता है। प्राचीन आदिम मानव का चेतन स्तर पर्याप्त मात्रा में मर्यादित था और उसके सभी कार्य अवचेतन स्तरीय मांग के परिणामस्वरूप उठते थे, जिनको सहज वृत्तियों के द्वारा प्राय: निपटाया जाता था क्योंकि प्राचीन कालीन मानव विराट् प्रवृत्ति से आज के मानव की अपेक्षा कहीं अधिक निकटता से साथ जुड़ा हुआ था। अत: उसके सभी कार्य सहज वृत्ति के माध्यम से ही योग्य प्रकार से स्वत: निष्पादित एवं कार्यान्वित हो जाते थे और उसको समस्या का मुकावला करने तथा इनके तनावों का अनुभव करने का कोई प्रश्न अथवा प्रसंग ही उपस्थित नहीं होता था।

किन्तु आज समय के साथ सभ्यता के विकास अर्थात् मानव चित्तीय चेतन के विस्तार के परिणामस्वरूप किसी एक समस्या के समाधात हेतु अनेक विकल्प नजर आते हैं और मान को प्रस्तुत अनेक विकल्पों में किसी एक विकल्प का योग्य चुनाव के लिये गंभीर मानसिक तनावों के वीच गुजरना पड़ता है। प्रस्तुत अनेक विकल्पों में से योग्यतम चुनाव तभी सफल हो सकता है जवकि मानव ने अपने प्रारंभिक जीवन काल याने वाल्यावस्था का उपयोग योग्य शिक्षण, दीक्षण के द्वारा अपनी विवेक बुद्धि का योग्य विकास करने में लगाया हो। योग्य शिक्षण दीक्षण का समय ही व्यक्ति की वाल्यावस्था है—जिसको यूंग ने अवचेतन प्रधान "प्राकृतिक सुवर्ण-काल" कहा है। जीवन की इस प्रारंभिक अवस्था में वालक अथवा वालिका को उलझनों के विकल्पों के चुनावों की वहुत कम जरुरतें रहती हैं, क्योंकि अवस्था की इस मंजिल में वालक अथवा वालिका को प्राय: सन्देहों की पग-डंडियों में भटकने तथा तत्सम्बन्धी विकल्पों के चुनाव में तनावों का अनुभव करने के प्रसंगों का प्राय: अभाव रहता है। वाल्यकाल का प्रथम चरण याने शैशवकाल नि:सन्देह तनाव मुक्त, समस्या हीन/स्वर्णिम प्राकृतिक प्रधान अवधि है, जिसमें शिशु आदिम कालीन मानव (Primitive man) की तरह सहज वृत्तियों के माध्यम से प्रत्येक स्थिति का अपने स्वभाव के अनुसार अपनी निश्चित प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, किन्तु शैशवावस्था के दौरान में ही धीरे-धीरे स्वतः प्रकार से व्यक्ति की अहम् चेतना (Ego Consciousness) का भी विकास होने लगता है। अत: आगे जाकर व्यक्ति की किशोरावस्था (Adolescnce) में एक ओर एक किशोर एवं किशोरी को अपने से पूरे बाह्य जगत् में मानव समाज की जुदा-जुदा विचार सरणियों के साथ तथा दूसरी ओर अपने स्वयं के अन्तर में अपनी ही अवचेतन स्तर से स्वत: प्रस्फुटित होती हुई स्वयं की आन्तरिक मांगों के वीच टकराव होने का भी अनुभव करने लगता है, तथा एक किशोर किशोरी को वाह्य परिस्थितियों एवं सामञ्जस स्थापित करने के लिये

प्रयत्न करना पड़ता है। अतः इस दौरान में कभी-कभी तीव्र एवं कठिन तनावों के बीच गुजरना पड़ता है। इस काल में केवल वही किशोर अथवा युवा उपस्थित भिन्न-भिन्न विकल्पों में एक योग्यतम विकल्प का चुनाव कर पायेगा जिसका सम्पूर्ण बाल्यकाल योग्य वातावरण में योग्य माता-पिता या शिक्षक के माध्यम से उच्चस्तरीय शिक्षण दीक्षण में सम्पन्न हुआ हो। अतः बाल्यकाल में योग्यतम वातावरण एवं योग्य शिक्षण दीक्षण का निःसंदेह बड़ा महत्व है ताकि व्यक्ति योग्यतम शिक्षण-दीक्षण से अपनी समझ को विस्तृत एवं गहराई के साथ योग्य समृद्धशाली एवं उपयोगी बना सके ताकि उसकी सहज वृत्तियों का मानव-समाज द्वारा स्थापित मान्यताओं के साथ तालमेल अथवा सहयोजन बन सके।

शैशवावस्था निःसंदेह अवचेतन प्रधान जीवन काल है; किन्तु इसी काल में व्यक्ति के अहम् का उद्भव एवं विकास होने लगता है और बाल्यकाल के उत्तरकाल तक व्यक्ति अपने स्वयं को अर्थात् अपने अहम् को अपने से बाह्य मानव-समाज के साथ समायोजित किये जाने की आवश्यकता का भी अनुभव करने लगता है। मानव-जीवन का प्रारंभिक काल याने बाल्यावस्था एवं युवावस्था को यूंग की मान्यतानुसार बहिर्मुखी अभिवृत्ति (Extrovert attitude) काल कहा गया है क्योंकि जीवन के इस प्रारंभिक काल में मानव की चित्तीय अन्तर्वस्तु का स्वतः प्रवाह बाहर की ओर याने वृहत् मानव-समाज की ओर पाया जाता है, और बहिर्मुखी प्रवाह की प्रधानता के कारण व्यक्ति अपनी समष्टि एवं बाह्य जगत् से योग्य संबंध स्थापित करते हुए उसको अधिक भली प्रकार से समझने तथा तदनुसार व्यवहार करने की योग्यता सम्पादित कर पाता है। यूंग ने जीवन की प्रथम बाल्यावस्था को भी तीन चरणों में बांटने का प्रयत्न किया है। (1) शैशवावस्था—के सर्व प्रथम चरण में शिशु बाह्य जगत् को अस्पष्ट रूप से जानने (Know) का अनुभव करने लगता है। जिसको यूंग ने चेतन की अराजकता अथवा अव्यवस्थित अवस्था (An anarchic or chaotic phase) कहा है। शैशवावस्था की सहज विकास से व्यक्ति के जब किशोरावस्था में पहुँचता है जहाँ उसकी अहम् चेतना का अधिक विकास होने से वह ज्ञात वस्तु (Known Object) के पुनः पहचानने (Recognise) करने की क्षमता प्राप्त करता है। इस स्तर पर अहम् के ग्रन्थि विकास (Ego complex development) को यूंग ने एकतंत्री अहम् चेतन अवस्था (Monaichic या monistic phase) कहा है, इसके बाद की अहम् की अधिक विकसित अवस्था को यूंग ने बाल्यावस्था का तृतीय चरण द्वैतावस्था स्तर (Dualistic phase) कहा है, जहाँ व्यक्ति अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व (Ego personality) के साथ ही साथ बाह्य जगत् के समष्टि रूप के भिन्नत्व को भी स्वीकार करते हुए इनके बीच योग्य तालमेल का संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करता है। बाल्यावस्था के तृतीय चरण में व्यक्ति अपने अन्दर से उभरती हुई सहज काम वृत्ति की झलक का भी अनुभव करने लगता है और यह अनुभव बाल्यावस्था के तृतीय चरण से लेकर प्रायः जीवन की तृतीय

अवस्था (प्रौढ़ावस्था) के अन्त तक प्रायः निरन्तर बनी रहती है। काम प्रेरित प्रधान द्वितीय अवस्था की यह अवधि यूंग की मान्यतानुसार पोगण्डावस्था (Adolescnce) से लेकर प्रौढ़त्व के अन्त तक याने 18 वर्ष से 50 वर्ष तक ही मानी गई है। मानव-जीवन की यह प्रथम अवस्था अर्थात् बाल्यावस्था व्यक्ति के योग्य जीवन निर्वाह के लिए तैयारी का समय (Preparation period) है। जिसके दौरान में व्यक्ति स्वयं के द्वारा बाह्य जगत् की वस्तुओं एवं उनके संबंधों का योग्य ज्ञान अर्जित करते हुए स्वयं का बाह्यजगत् के साथ योग्य सामञ्जस स्थापित करने की क्षमता हासिल करता है। यूंग की "बाल्यावस्था भारतीय विचार परम्परा के अनुसार 'ब्रह्मचर्याश्रम' अवस्था है, जिसके दौरान में व्यक्ति को अपने माता-पिता मानव-समाज से स्वयं के जीवन निर्वाह की कला सीखने तथा विद्यालय एवं गुरुकुल से योग्य गुरु के माध्यम से समष्टिगत पूर्वगृहीत ज्ञान विज्ञान, आध्यात्म, धर्म आचरण आदि नानाविधि विद्याओं की जानकारी एवं अस्त्र-शस्त्र कला कौशल, नीति तथा तात्कालीन भूगोल, इतिहास, गणित आदि का सम्यक् ज्ञान सम्पादन करता है। मानव-जीवन विकास के क्रम में व्यक्ति के जीवन की इस बाल्यावस्था का सर्वोच्च महत्व है क्योंकि इस काल के दौरान में ही व्यक्तित्व निर्माण की नींव बनती है जिसकी मजबूती अथवा कमजोरी पर ही आगामी मानवीय व्यक्तित्व प्रायः निर्भर रहता है। भारतीय विचार परम्परा के अनुसार मानव-जीवन का चार आश्रमों, चार पुरुषार्थों (अर्थात् आदर्शों) एवं चार मानव-विकास शत्रुओं का विवेचन क्रमशः चार आश्रम (ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा सन्यासाश्रम), चार मानवीय आदर्श या पुरुषार्थ सम्पादन (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, तथा चार मानव-विकास के शत्रुओं से (काम, क्रोध, लोभ और मोह), बचाव या सावधान रहने का आग्रह पाया जाता है। भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत ब्रह्मचर्याश्रम में धर्म ज्ञान सम्पादन करने की तथा काम (Sex) शत्रु से बचाव करने का आग्रह किया गया है। यूंग ने भी बाल्यावस्था को ज्ञानार्जन हेतु श्रेष्ठतम समय तथा इस दौरान में व्यक्ति को कामजनित उद्वेगों से बचने हेतु सावधान रहने का संकेत किया है। बाल्यावस्था को प्रवृत्ति मार्ग द्वारा मानवीय व्यक्तित्व विकास का सबसे महत्वपूर्ण समय कहा गया है। इस प्रकार यूंगीय पद्धति में भारतीय जीवन प्रणाली का समर्थन पाया जाना निःसंदेह एक महत्वपूर्ण समानता है।

बाल्यावस्था की सहज परिणित यौवनावस्था में होती है। बाल्यावस्था के दौरान अर्जित ज्ञान, विज्ञान, कला, कौशल का भरपूर उपयोग यौवनावस्था में व्यक्ति द्वारा सहज रूप से किया जाता है। यूंग ने यौवनावस्था को बाल्यावस्था की तरह बहिर्मुखी एवं बाह्य प्रवृत्ति के उपयोग में लगे रहने का सुझाव दिया है। यौवनावस्था में व्यक्ति को विवाह करने, अपने जीविका का निर्वाह करने तथा अपने वंश तथा अपने व्यक्तित्व का विस्तार एवं विकास किये जाने का आग्रह किया है। भारतीय विचार परम्परा के अन्तर्गत यह काल "अर्थ" उपलब्धि का तथा "क्रोध"

से बचाव रखने का समय माना गया है ताकि वह स्वयं अपना तथा अपनी पत्नी एवं परिवार का जीवन निर्वाह में तथा अपने व्यक्तित्व को समाज के बीच योग्य प्रकार से प्रतिष्ठित करने हेतु सफल हो सके। यह अर्थ उपार्जनकाल है। निःसंदेह अर्थ उपार्जन का आज की सभ्यता में बड़ा महत्व है, अतः मानव-जीवन की इस द्वितीय अवस्था में अर्वाचीन यूंगीय विचारधारा तथा प्राचीन भारतीय जीवन व्यापन कला के बीच कर्त्तव्यों, आदर्शों एवं बुराइयों से बचने हेतु प्रस्तुत सावधानियों के बीच पायी जाने वाली इन समानताओं की ओर समग्र विश्वस्तरीय चिन्तकों का ध्यान आकर्षित किया जाने योग्य है। धर्म दर्शन प्राधान्य भारत एवं विज्ञान व्यवहार संगत पाश्चात्य राष्ट्रों की विचार सरणियों के बीच सामञ्जस स्थापित किये जाने की यह समानता निःसंदेह विशेष महत्वपूर्ण है जिसकी सम्यक् समझ से पूर्व एवं पाश्चात्य जीवन पद्धतियों के बीच भिन्नत्व एवं परस्पर विरोधी तनावों में भी योग्य कमी लायी जा सकती है।

यूंग ने मानव-जीवन की चार अवस्थाओं का विवेचन प्रतिदिन सूर्य की दिवस यात्रा के रूपक से सुस्पष्ट करने का उल्लेख किया है। जिस प्रकार प्रातःकाल में अवचेतन स्तरीय रात्रि समुद्र से सूर्योदय होता है जो पूर्व से निकल कर मध्याह्न काल तक सीधे आकाश में चढ़ कर प्रकाश और जीवन ऊष्मा को दूर-दूर तक फैलाता है, उसी प्रकार व्यक्ति की बाल्यावस्था एवं युवावस्था की बहिर्मुखी अभिवृत्ति को स्वीकार करते हुए व्यक्ति द्वारा अपनी जीवन-परिधि का दूर-दूर तक विकास विस्तार किया जाना वांछनीय है। अतः मानवीय व्यक्ति के विकास की दृष्टि से जीवन के प्रारम्भिक काल याने बाल्यावस्था एवं युवावस्था में व्यक्ति द्वारा समाज मुखी-बहिरंग प्रधान जीवन-यापन किया जाने योग्य है जिसमें बाल्यावस्था जीवन-व्यापन हेतु तैयारी का समय है तथा यौवानावस्था काम प्रधान भोग सुख एवं समृद्धि के उपभोग का समय है जहाँ पर व्यक्ति को क्रोध शत्रु से बचते हुए जीवन का भरपूर सुख भोगते हुए सन्तोष की साँस लेना सीखना ही मानवीय व्यक्तित्व विकास की उपयुक्त साधना है। जिस प्रकार बाल्यावस्था व्यक्तित्व विकास तैयारी का समय है, उसी प्रकार युवावस्था स्वतः विकासोन्मुखी मानवता के सुख समृद्धि एवं योग्य कार्यान्विति का सर्वोपरि महत्व का वक्त है, जिसकी योग्य कार्यान्विति से न केवल व्यक्ति का अपितु समग्र समष्टि एवं राष्ट्र का विश्वस्तरीय पैमाने पर शान्ति, समझ एवं सुख का विस्तार, विकास एवं कल्याण होने की संभावना है।* किन्तु यूंग ने इस प्रसंग में यह सावधानी बरती है कि मानव-जीवन क्रम वस्तुतः उदित एवं अस्त होने वाले सूर्य के तादृश्य नहीं है, क्योंकि आज की सभ्य दुनियाँ में मानवीय जीवन सरल एवं सीधे क्रम में विकसित होने के बजाय प्रायः जटिल एवं चक्करदार

---

* Modern Man in rsearch of a soul; The stages of life at p. 122 to 130. (Kegan Paul, London 1944, Edition).

(Spiral) क्रम में विकसित होता हुआ दृष्टिगोचर होता है क्योंकि सभ्यता के विकास के साथ निःसंदेह मानवीय चेतना का एक ओर बहुमुखी विकास अवश्य हो गया है किन्तु दूसरी ओर मानवीय अन्तर समझ का विकास वाह्य बहुमुखी विस्तार की अपेक्षा दुर्भाग्य से अल्प मात्रा में ही हो सका है, फलतः आज का मानव नाना प्रकार की आन्तरिक समस्याओं में उलझ सा गया है, और प्रायः मानव-जीवन की सभी समस्याओं का कोई स्थायी रामबाण समाधान नहीं खोजा जाने से विश्वस्तरीय भिन्न-भिन्न मानवीय समूहों के बीच आपसी योग्य समझ के अभाव में आज की सभ्यता में परस्पर ईर्ष्या, सन्देह और अविश्वास का तनाव भी बढ़ता नजर आता है। ज्ञान-विज्ञान के सभी बाहरी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक विकास एवं समृद्धि हो जाने के बावजूद भी मानव की आन्तरिक विकास की कमी के कारण आज समग्र मानव-जाति सामूहिक विनाश एवं संहार की भयावह कगार पर खड़ा हुआ भी नजर आता है।

अतः यूंग ने सूर्य की दिवसयात्रा के रूपक को आगे जाकर सुस्पष्ट करते हुए बाल्यावस्था एवं युवावस्था के सम्पूर्ण विकास के बाद व्यक्ति को अपने वाह्य विकास विस्तार को समेटते हुए अन्तर्मुखी अभिव्यक्ति (Introvert attitude) को अपनाये जाने का यूंग ने विनम्र सुझाव प्रस्तुत किया है। भारतीय विचार परम्परा के अन्तर्गत मानव-जीवन का इस तृतीय अवस्था याने प्रौढ़ावस्था को भारतीय शब्दावली में वानप्रस्थाश्रम कहा गया है, जिसमें व्यक्ति को अपने पुत्र-परिवार के साथ रहते हुए बाहरी दुनियां की निरर्थक झंझटों से स्वयं को मुक्त अर्थात् आजाद करते हुए व्यक्ति को इस स्तर पर लोभ, दुर्गुण से बचने की सलाह दी गई है। प्रौढ़ावस्था में पहुंचने पर स्वाभाविक प्रकार से मानव इन्द्रियों का बाहर की ओर दौड़े जाने के प्रवाह में मन्दी का सहज अनुभव होता है, और इसलिये जीवन के इस उत्तरार्ध काल में व्यक्ति को बहिर्मुखी प्रवृत्ति को समेटने, संवारने तथा आन्तरिक दिशा की ओर बढ़ने के लिये सहज निवृत्ति मार्ग का अवलम्बन स्वीकार किया जाना न केवल स्वाभाविकता है, अपितु जीवन के इस ढलाव के काल में व्यक्ति को स्वयं के अवचेतना से दोस्ती करते हुए अवचेतन स्तरीय सामग्री की खोज में संलग्न हो जाना, निःसंदेह यूंग ने वांछनीय एवं श्रेयस्कर माना है। जीवन के ढलाव के इस संकटकाल में यदि व्यक्ति अपने अन्तर को सम्यक् प्रकार से समझने की ओर जागरूक नहीं हुआ तो निःसंदेह उसके चेतन एवं अवचेतन का तालमेल अथवा सन्तुलन बिगड़ जाने का एक गंभीर खतरा उत्पन्न हो जाएगा, तथा एक भला, स्वस्थ, सफल एवं सन्तुलित व्यक्ति भी यकायक सनकी, रोगी, समाज-विरोधी और उपद्रवी बन जायगा। दोपहर के बाद जिस प्रकार पूर्व में उदित सूर्य का ढलाव पश्चिम की ओर हो जाना स्वतः एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, उसी प्रकार प्रवृत्ति प्रधान बहिर्मुखी मानव को अपनी उत्तरावस्था में निवृत्ति प्रधान अन्तर्मुखी जीवन को अपनाया जाना निःसंदेह नितान्त स्वाभाविक, वांछनीय एवं श्रेयस्कर माना गया है।

जिस प्रकार बाल्यावस्था में काम से बचते हुए ज्ञानार्जन युवावस्था में क्रोध से बचते हुए अर्थ संग्रह एवं काम सुख का भोग किया जाना मानवीय आदर्श है उसी तरह प्रौढ़ावस्था में परिवार एवं मानवीय सुख समृद्धि हेतु लोभ से ऊपर उठ कर सार्वजनिक हित चिन्तन द्वारा स्वयं को समाज में प्रतिष्ठित करते हुए अपनी यशस्वी स्थिति को बनाये रखने के लिये अपनी ही अवचेतन की योग्य समझ परख में लग जाना जरूरी माना गया है, ताकि व्यक्ति अपने जीवन के अन्तिम चरण में अपने सही स्वरूप के साथ योग्य प्रकार से साक्षात्कार कर सके तथा वह अपने व्यक्तित्व को समष्टि के साथ योग्य प्रकार से न केवल समायोजित कर सके अपितु अपने व्यक्तित्व को समष्टि में लय कर सके। यूंग ने अवचेतन में पायी जाने वाली भिन्न-भिन्न परतों की भी जांच की है और उसने मानवीय अनुभवजनित वैज्ञानिक खोजों से अवचेतन स्तरीय भिन्न-भिन्न धरातलों पर परिलक्षित प्रतीकों जैसे आध्य मातृ-शक्ति एवं सनातन ज्ञान पुरुष की सहज अनुभूति तथा जिसके मूल आधार में स्थित मूल प्रारूप आर्कीटाइप की स्थिति को आत्मा (The self) माना है, और आगे जाकर उसने आत्मा एवं विश्वात्मा या परमात्मा को एक एवं अद्वैत माना है और यह घोषणा ही भारतीय वेदान्त का सार है। यूंग ने अपनी तथा मानवीय अनुभवों पर आधारित इन वैज्ञानिक खोजों का प्रारंभ चित्त (Psyche) की अवधारणा से किया है जो यूंगीय अवधारणाओं के गहन एवं गहराई के विवेचन से आत्मा की स्थिति में बदलता हुआ प्रतीत होता है, और यूंग द्वारा व्यक्ति मात्र के आन्तरिक अवचेतन के मूलाधार में स्थित जिस आत्म-स्थिति के अस्तित्व का संकेत दिया गया है वह निःसंदेह वेदान्त द्वारा प्रतिपादित आत्मा तथा उसका परमात्मा के साथ सम्मिलन एवं एक रूप होने के दिव्य सन्देश का समर्थन है।

यूंग ने "जीवन की अवस्थायें" शीर्षक निबन्ध में यह भी स्पष्ट किया है कि जीवन की कतिपय गहनतम समस्याओं से समाधान का कोई निश्चित समय निर्धारित किया जाना बड़ा कठिन है। क्योंकि जीवन का अर्थ ही समस्याओं के समाधान का प्रयत्न मात्र है। अतः जीवन की सार्थकता समस्या के समाधान की खोज का ही कार्यक्रम है। मानवीय जीवन एवं चित्तीय चेतन के विस्तार के साथ स्वतः समस्याओं का उद्भव होना भी स्वाभाविक है जिनका सही समाधान व्यक्ति के अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की सम्यक् जानकारी से ही संभव है। अतः जीवन की अन्तिम अवस्था (वृद्धावस्था) में व्यक्ति को अपनी सभी समस्याओं को अवचेतन में विलय कर देने का ईमानदारी के साथ प्रयत्न किया जाना चाहिए, जिसको भारतीय चिन्तन परम्परा के अन्तर्गत शरणागति स्थिति स्वीकार करना या मोक्ष साधना तथा 'सन्यास अवस्था' कहा गया है। व्यक्तिगत जीवन के सभी क्लेशों समस्याओं से वही मुक्त हो सकता है, जिसने अपने स्वयं के समूचे अवचेतन को समझते हुए उसने अपने दीर्घ-कालीन जीवन में जो कुछ पाया है वह सब उसी को पुनः समर्पित-विसर्जित कर दे। अतः युवावस्था की समग्र सफलतायें, उपलब्धियों

को वृद्धावस्था में विसर्जन एवं समर्पित किया जाना ही व्यक्ति द्वारा समस्याओं का योग्य समाधान माना जाना उचित है। इसी को भारतीय दर्शन की शब्दावली के अन्तर्गत परम पुरुषार्थ "मोक्ष" या मुक्ति कहा गया है। समस्याओं, तनावों एवं द्वन्द्वों को इस प्रकार सम्यक् प्रकार से समझना ही निःसंदेह सभी चित्तीय उपद्रवों से बचना है जिसको मुक्ति अर्थात् मोक्ष साधना कहा जाना योग्य है। यहां पर मुक्ति का अर्थ समग्र चित्तीय क्लेशों से स्वतंत्र अर्थात् मुक्त होना माना गया है और इसलिए भारतीय दर्शन के अन्तर्गत आत्मज्ञान को ही परम पुरुषार्थ या मोक्ष साधना कहा गया है। अतः भारतीय पद्धति के अन्तर्गत मोक्ष साधना यूंगीय शब्दावली में जीवन संबंधी सभी समस्याओं एवं तनावों की सम्यक् समझ है, जिसके परिणाम-स्वरूप चेतन एवं अवचेतन का अन्तर या भेद स्वतः कम होते हुए अन्त में मिट जाना कहा गया है और चेतन एवं अवचेतन का अन्तर भेद का नाश ही चित्त की इकाई का दिव्यतम अनुभव है और इस इकाई की दिव्य अनुभूति को ही वेदान्त में "अद्वैत" "आत्म ज्ञान दर्शन" अथवा 'आत्म साक्षात्कार' कहा गया है। अतः इसी तरह व्यक्ति को आगत सभी समस्याओं का खुलेपन से स्वीकार करते हुए उन्हें सहज प्रकार से समझने की कोशिश करना ही वस्तुतः 'व्यावहारिक 'मुक्ति साधना' है।

———

अध्याय **15**

धर्म और समग्रता की ओर व्यक्ति की स्वत: प्रगति

(The natural progress of the Human Personality towards religion and the wholeness)

सामूहिक अवचेतन स्तरीय प्ररूप (आर्कीटाइप) के गम्भीर अध्ययन के आधार पर कार्ल गुस्ताव यूंग ने कतिपय रोचक एवं महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं। इनमें से विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि स्वभावत: प्रत्येक मानव की अभिरुचि धर्म में है, जिसकी यथायोग्य कार्यान्विति से ही उसके व्यक्तित्व का योग्य विकास सहज रूप से होता है। चेतन स्तर पर उजागर होने वाली धर्म सम्बन्धी सहज भावना को व्यवहार में उतारने पर ही व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य बना रहता है तथा उसके व्यक्तित्व का पूरा विकास हो सकता है। जिस प्रकार सहज वृत्तियों (Instincts) की योग्य कार्यान्विति से मानव के स्वास्थ्य की अभिवृद्धि होती है, उसी प्रकार मानव के चेतन स्तर पर जाग्रत धार्मिक प्रवृत्ति को जीवन में व्यवहार किए जाने पर मानव, विकास के मार्ग पर सहज रूप से अग्रसर होता है। अत: जीवन के स्वत: विकास के लिए व्यक्ति का धर्म के प्रति उच्चस्तरीय रुझान या अभिवृत्ति की कार्यान्विति किया जाना जरूरी है, अन्यथा व्यक्ति का सहज विकास क्रम अवरुद्ध होकर, मानव रोगग्रस्त हो सकता है। यूंग की यह मान्यता नास्तिक-वादियों के इस तर्क का खण्डन है कि धर्म केवल ढकोसला, दिखावा अथवा भ्रम (Illusion) है अथवा धर्म वचकानी भावुकता है तथा धर्म पालना सच्चाई (Reality) से भागना है। इतिहास के अध्ययन से यह सुस्पष्ट है कि समय के गुजरने के साथ ही साथ मानवता का विकास भी हुआ है और इस मानवता के विकास में नि:सन्देह धर्म का बड़ा उल्लेखनीय योगदान रहा है। साहित्य, कला तथा ज्ञान के क्षेत्र की जो उल्लेखनीय प्रगति दृष्टिगोचर होती है उस स्थिति के निर्माण में भी धर्म का बड़ा हाथ पाया जाता है। इसके अलावा समय-समय पर रोगी, अशक्त, निर्धन एवं कमजोर वर्ग की सुरक्षा, साज-सम्भाल तथा उसके पोषण में भी नि:सन्देह धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है वरना मानवीय चरित्र में पाई जाने वाली हिंसा, स्वार्थ संकीर्णता, आपसी ईर्ष्या, द्वेष आदि दुर्गुणों के फलस्वरूप मानव समाज आपसी मारकाट तथा छीना झपटी में ही अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है।

पुराने जमाने की अपेक्षा आज का मानव अधिक समझदार, चिन्तनशील, उदार तथा सहिष्णु पाया जाता है। सभ्यता तथा संस्कृति के विकास के कारण निःसन्देह व्यक्ति की समझ का न केवल क्षेत्र बढ़ा है अपितु उसकी समझ में उल्लेखनीय गहराई भी पाई जाती है, इसलिए वह आपसी मतभेदों को न केवल वहन करने में अधिक सक्षम हुआ है अपितु उसने आपसी मतभेदों, झगड़ों और विरोधों के बीच आपसी सामंजस्य स्थापित करने की अपनी सूझ-बूझ को भी बढ़ा लिया है। इस शताब्दी में दुनियां को दो विश्वयुद्धों की भीषण विभीषिकाओं में से गुजरना पड़ा है। यूंग की मान्यतानुसार युद्ध समग्र मानव समाज की सामूहिक अवचेतना की गहराइयों की अभिव्यक्ति (Menifestation) है, जिसका मुकाबला मानव चेतन स्तरीय गहरी समझ एवं विस्तृत सूझ-बूझ से ही कर सकता है।

सामूहिक अवचेतन स्तरीय प्ररूप (आर्कीटाइप) के अध्ययन से हमें पता लगता है कि मानव स्वभाव में धार्मिक क्रियाओं के प्रति (Towards religious functions) रुचि पाई जाती है, जिसका उसके जीवन पर गहरा असर पड़ता है जैसे कि काम एवं हिंसा (Sex and Aggreman) की सहज प्रवृत्तियों (Instincts) का आदमी पर गहरा प्रभाव है। आदिम मानव ने धार्मिक प्रभाव को प्रतीकों (Symbols) के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। प्राचीन आदिम मानव का धर्म शिकार, खेती, मछली पकड़ना आदि था, क्योंकि इन क्रियाओं के द्वारा ही उनके जीवन का निर्वाह होता था। अतः प्राचीन काल में शिकार, कृषि, पशुपालन, मछली पकड़ना आदि को धार्मिक कार्य माना जाता था तथा उस समय धार्मिक कर्मकाण्ड वाद का बड़ा बोलबाला था, जबकि आज के जमाने में राजनैतिक मतवाद (Political Creed) ने धर्म का स्थान ले लिया है, जिसके माध्यम से मानव अपनी जीवन ऊर्जा शक्ति का उपयोग कर रहा है, किन्तु केवल राजनीति तथा कर्मकाण्ड वाद को जीवन नहीं कहा जा सकता है, प्रसिद्ध वैज्ञानिक विलियम जेम्स ने कहा है कि एक वैज्ञानिक के लिए तो किसी मतवाद का कोई महत्व नहीं है। किन्तु जुलीयन हक्सले का अभिमत है कि हमें विकास पर आधारित धर्म की बड़ी जरूरत है।*

यूंग का विश्वास है कि "विकासोन्मुख मानवता" से एक नये धर्म (A new Religion) की स्थापना संभव है जो आज के प्रचलित धर्म का स्थान ग्रहण करने के बजाय उसका सहायक अंग बन सकता है। अतः अब हमें यह देखना चाहिए कि विकासवाद का यह बीज किस प्रकार सहज धर्म के रूप से बढ़ पाता है। इस हेतु हमें अपने बौद्धिक ढांचे को इस प्रकार बदलना पड़ेगा कि इसके अन्तर्गत विचारों से मानव को योग्य प्रेरणा प्राप्त हो सके तथा इनके द्वारा मानव अपनी कठिनाइयों एवं

* Quoted from a series of Radio Talks Entitled "The Process of Evolution" produced in the Listener dated 22nd November, 1951.

समस्याओं का योग्य समाधान ढूंढ सके तथा मानव अपने विचारों को जीवन के लक्ष्यों पर आधारित करते हुए इनसे समर्थन प्राप्त कर सके और निराशाजन्य स्थितियों से स्वयं को बचा सके।

'विकासोन्मुखी मानवता को नवीन धर्म की संज्ञा दी जा सकती है किन्तु ऐसे धर्म का प्रयोजन आदर्श होने पर भी इससे मानवीय जीवन के गहनतम मार्ग की पूर्ति नहीं हो सकती है क्योंकि धर्म के द्वारा ही मानव वाह्य एवं अन्तर के जीवन के बीच योग्य सम्बन्ध एवं सामन्जस स्थापित कर सकता है। धर्म का यह अनिवार्य लक्षण होना चाहिए कि उसके द्वारा अवचेतन स्तरीय प्ररुप (आर्कीटाइप) की चेतन स्तर पर योग्य व्याख्या प्रस्तुत की जा सके, किन्तु वर्तमानकालीन धर्म द्वारा इस महत्व् कार्य में पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती और धर्म के परिणामस्वरूप यदाकदा परस्पर संघर्ष व विवाद खड़े हो जाते हैं जिनके भयंकर परिणाम निकलते देखे गए हैं। जब कभी धर्म के द्वारा इन विरोधाभावों को टालने की कोशिश की जाती है तब धर्म की पकड़ तो ढीली पड़ जाती है और आपसी मतभेद बढ़ते हुए नजर आते हैं।

यूंग ने धर्म को परिभाषित करते हुए उसको मन की एक ऐसी अभिवृत्ति (Attiludes) कहा है जिसके द्वारा कतिपय विशिष्ट गत्यात्मक उपकरणों (Dynamic factors) का सावधानीपूर्वक विचार (Consideration) किया जा सके तथा इनके प्रेक्षण से सभी शक्तियों (Powers) आत्माओं (Spirits), शैतानों (Demons). देवताओं (Gods), नियमों (Laws), विचारों (Ideas) इत्यादि का मानव जीवन के लिए योग्य उपयोग किया जा सके। अतः धर्म को महान् (Great), सुन्दर, उपयोगी तथा प्रयोजनीय Meaningful) माना जाकर उसके प्रति मानव समाज श्रद्धा तथा अपनी आन्तरिक निष्ठा व्यक्त करता है।

उपरोक्त परिभाषा में प्रयुक्त शब्द 'गत्यात्मक' (Dynamic) का सविशेष महत्व है, जिसको धार्मिक कृत्य (Religious functions) कहा जाता है, किन्तु यदि धार्मिक कृत्यों की आगे जाकर विशद् व्याख्या की जाए तो इसको केवल धार्मिक आन्दोलनों जिहाद (Crusades) तथा धार्मिक दंगा फिसादों के रूप में ही स्वीकार करना पड़ेगा जो कि भूतकाल में किए गए भीषण संहार के कारण निरर्थक (Futile) तथा भयावह (Dangerous) माने गए हैं तथा जिसकी यादगार में कतिपय मकबरों तथा पूजास्थलों का निर्माण किया गया है। वर्तमान में धार्मिक क्रिया की ऊर्जा शक्ति का उपयोग यदा-कदा किसी मत अथवा किसी विशिष्ट राजनैतिक विचारधारा की स्थापना किए जाने के रूप में विचार स्वीकार किया जाता है। जैसे साम्यवाद (Communism) फासिस्टवाद(Fascism), नाजीवाद (Nazism) आदि। जिसके भयावह एवं प्रलयकारी प्रभाव से बहुसंख्यक मानव समाज त्रस्त हो चुका है। पूर्वीय राष्ट्रों में भी यदा-कदा बिना सोचे समझे कुछ पूर्वाग्रहों को आँख मूंद कर स्वीकार किया गया हैं जिसके परिणामस्वरूप इन देशों में नाना प्रकार के

पंथ तथा सम्प्रदायों (Cults) का बोलबाला बढ़ गया है और मानवता अंधविश्वासों तथा संकीर्ण कट्टरता की शिकार बन गई है।

प्रतिस्थापित धर्म (Organised Religion) की प्रारम्भ से ही यह चेष्टा रही है कि उसके द्वारा गहनतम मानवीय मांग (Deep human needs) की प्रतिपूर्ति की जा सके और इस प्रयत्न में प्रतिस्थापित धर्म को कुछ आंशिक सफलता भी मिली है, किन्तु धर्म का मूल प्रयोजन व्यक्ति के बाह्य तथा अन्तर के बीच मंगलकारी सन्तुलन तथा सामञ्जस्यकारी सम्बन्ध स्थापित करना है और अब तक इस महान् उद्देश्य की पूर्ति किसी धर्म के द्वारा नहीं की जा सकी है। प्रचलित धर्मों के अन्तर्गत अवचेतन स्तरीय प्राणवान प्रक्रिया (Living process) की अभिव्यक्ति यदा-कदा पश्चाताप (Repentness), आत्म-हनन (Self-torture) तथा दोष स्वीकृति (Comfession या Redemption) के रूपों में होना पाया जाता है।* किन्तु आज सर्वत्र धर्म के नाम पर मताग्रह (Dogmas) पंथीय कट्टरता (Creeded Assations) तथा विवेकहीन धार्मिक कर्मकाण्डवाद (Ritualism) का बोलबाला देखा जा रहा है और उक्त मताग्रहों, पंथों तथा अतर्कसंगत धार्मिक क्रियाओं में योग्य संशोधन, परिवर्तन तथा संस्करण किए जाने की जरूरतों को अविवेक पूर्वक अस्वीकारा जा रहा है और इस अस्वीकृति का समर्थन शास्त्रों, बाईबल, कुरान तथा धार्मिक मसीहों (Prophets) के वाक्यों के उद्धरणों में प्रस्तुत किए जाते हैं।

दिव्य अनुभव (The original Experience) का अर्थ बाइबल तथा मसीहों के जीवन चरित्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है। इस सम्बन्ध में संत साल को उदाहरण के रूप में उल्लेख किया जाना योग्य है। संत को स्वर्ग से दिव्य दृष्टि का अनुभव हुआ था जिसके फलस्वरूप वह तीन दिन तक अन्धा हो गया और उसका खाना पीना छूट गया। इस दिव्य अनुभव के बाद तो संत का जीवन ही परिवर्तित हो गया। यूंग ने इसी प्रसंग में एक स्विस रहस्यवादी तपस्वी ब्रदर नीकोलस (Brother Nicholes Vonder Flue) का जीवन भी उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है जिसको दिव्य दृष्टि प्राप्त करने के बाद उसकी समूची आकृति (Face) का स्वरूप ही बदल गया और लोग उसकी परिवर्तित आकृति को देखकर भयभीत हो गए। इस धर्माचार्य ने दिव्य दृष्टि प्राप्त करने के बाद अपनी अनुभूति को उसके निवास स्थल (Celler) की एक दीवार पर चित्रित किया है जो एक मण्डल के आकार में है। यह मण्डल छः खण्डों में विभाजित है तथा इसके केन्द्र में भगवान की मूर्ति स्थापित है। यूंग का कहना है कि इस मण्डल की आकृति के माध्यम से स्विस तपस्वी द्वारा प्राप्त दिव्य अनुभव को चित्रों के द्वारा अभिव्यक्त किए जाने की चेष्टा की गई है।

---

* Jung : Psychology and Religion (Collected Works of C.G. Jung, Vol. 11 at page 5.

भगवत्-प्रतिमा (God-Image) अथवा आत्मा के प्ररूप (Achetype of the self) का दर्शन अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली अनुभव है। दिव्य दर्शन से अनुभवकर्त्ता का समूचा व्यक्तित्व प्रभावित हो जाता है और इसके परिणामस्वरूप यदाकदा व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन भी गड़बड़ा जाता है। यदि उसके पास गहन आस्था का कोई ठोस आधार अथवा लंगर (Anchor) नहीं है तो उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही भटक जाएगा तथा वह किसी अनियन्त्रित प्रवाह में बह निकलेगा। इसलिए ब्रदर निकोलस द्वारा निर्मित मण्डल की तरह अनुभवकर्त्ता को अपने अभीष्ट देवता में गहरी आस्था रखते हुए अपना जीवन निर्वाह करना चाहिए ताकि आस्था के लंगर की मदद से वह अपने व्यक्तित्व की इकाई को सुरक्षित रख सके। दिव्य दर्शन का प्रभाव अनुभवकर्त्ता की चेतन स्तरीय क्षमता पर आश्रित है। यदि दैवत्व का अनुभव करने वाला व्यक्ति विकसित, जागरुक तथा उदात्तवृत्तियों का धनी है तो वह अपने दिव्य अनुभव को भी अपने महान् व्यक्तित्व में पचा लेगा और उच्च स्तरीय धार्मिक जीवन का निर्वाह करते हुए उक्त दिव्य अनुभव के साथ अपना तादात्म्य स्थापित कर लेने में सफल हो जाएगा, किन्तु यदि दैवत्व का स्पर्श एक अविकसित अपूर्ण एवं भ्रान्तिग्रस्त एवं कमजोर व्यक्तित्व से होगा तो वह इस महत्व अनुभव से असन्तुलित, रोगग्रस्त तथा पागल हो जाएगा। दिव्य अनुभव सम्पन्न व्यक्ति को ज्ञानी, संत, भक्त या मुक्त कह कर सभी विकसित धर्मग्रन्थों में उनके प्रति श्रद्धा तथा आदर व्यक्त किया गया है किन्तु दिव्य अनुभव के प्रभाव को यदि कोई व्यक्ति अपने में नहीं पचा पाता है तो ऐसे व्यक्ति को दुनिया ने 'पागल' घोषित करने में भी देर नहीं की है। यूंग ने प्रसंगानुसार इस प्रकार के कतिपय रोग ग्रस्त पागलों की क्रियाकलापों का भी वर्णन प्रस्तुत किया है।

देवत्व सम्पन्न व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक कारकों की समानता यदाकदा रोगग्रस्त पागल की क्रियाकलापों में भी पाई जाती है तथा रहस्यवादी तपस्वी का व्यवहार भी प्रायः असामान्य नजर आता है। इसलिए प्रतिभा सम्पन्न अलौकिक व्यक्ति (Genious) को पागल के समान माना जाता है। यूंग अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न देवत्व के अनुभवों का अवमूल्यांकन (Bellittleing) नहीं करते बल्कि उन्होंने व्यक्ति विशेष की क्रियाकलापों का अध्ययन-विश्लेषण करते हुए उनकी क्षमता को समझने का प्रयत्न किया है तथा उनकी धारणा में भगवत्-प्रतिभा की सम्पन्नता चेतन मन की साधना का एवं उच्चस्तरीय विकास का ही सहज परिणाम माना है।*

पाश्चात्य देशों में प्रचलित ईसाई शिक्षण (Christian Education) के अनुसार दुनिया भर में घटित सभी अच्छाइयों को प्रभु ईसा की कृपा तथा सभी

---

* Psychology and Alchemy (Collected Works of C.G. Jung, Vol., 12 at para 14.

खराबियों को शैतान के गले मढ़ने की प्रवृत्ति से मानव में निहित क्षमता की जड़ ही कट जाना माना गया है। इस प्रकार की विचारधारा से मानव की चेतनस्तरीय प्रयत्न-साधना को दूसरे दर्जे का महत्व दिया गया है तथा धर्म के नाम पर उसके वाह्य आचरण तथा कर्मकाण्ड विधि विधान को जरूरत से अधिक महत्व दिया गया है। यूंग का इस सम्बन्ध में यह आग्रह रहा है कि व्यक्ति द्वारा भगवत्-प्रतिभा का अनुभव उसकी आन्तरिक मांग का सहज परिणाम है, और धर्म के द्वारा व्यक्ति के वाह्य चेतनस्तरीय जीवन तथा आन्तरिक अवचेतनस्तरीय स्थितियों के बीच तालमेल तथा योग्य परस्पर सम्बन्ध स्थापित किया जाना ही व्यक्ति के समग्रता तथा समन्वित विकास की एक अनिवार्य शर्त है, अन्यथा जन-साधारण व्यक्ति का, बाहरी विकास होने पर भी अन्दर से वह कमजोर, रोगग्रस्त तथा असंस्कृत एवं जंगली ही बना रह जाएगा, चाहे उसको भगवत्-प्रतिभा का अनुभव ही क्यों न हो गया हो।

उपर्युक्त अवधारणा को केवल एकाकी व्यक्ति पर ही लागू नहीं किया जा सकता अपितु व्यक्तियों के समूह तथा समग्र मानव समाज पर लागू किया जाना योग्य है। अतः जो व्यक्ति अथवा मानव समूह केवल अपना वाह्य विकास ही कर पाया है और उसका आन्तरिक सम्भाग अब तक पूर्ववत् अविकसित व्यवस्था से उभर नहीं पाया है, उसमें इसाई संस्कृति की दृष्टि से केवल दिवालियापन ही दृष्टिगोचर होगा क्योंकि तथाकथित मानव सभ्यता व संस्कृति विकास के अतिशयोक्तिपूर्ण दावे के बावजूद भी बहुसंख्यक मानव समाज अब तक अपने अन्धविश्वासों (Superstitution) से मुक्त नहीं हो पाया है। अवचेतन स्तरीय संभाग से प्रस्फुटित साहित्य एवं कला पर भी उक्त पूर्तिपूजक अन्ध विश्वास का प्रभाव यूंग द्वारा परिलक्षित किया गया है। इस प्रसंग में यूंग ने एक पादरी के निम्नांकित स्वप्न का वर्णन प्रस्तुत किया है।* यथा—

"स्वप्न के अन्तर्गत मैं रात को अपने चर्च में आया। चर्च की समूची दीवार टूटती नजर आई। चर्च की वेदी के ध्वंसावशेष पर अंगूर की बेल उगती नजर आई, जिस पर अंगूर के गुच्छे लगे हुए थे। अंगूर की बेलों के केन्द्र में चमकता हुआ एक चांद नजर आया।

उपरोक्त स्वप्न प्रतीकात्मक (Symbolic) है, जिसमें पादरी की कल्पना की खुल कर अभिव्यक्ति हुई है। स्वप्न में व्यक्त 'चर्च' उसकी आस्था (Faith) का प्रतीक है जो धीरे-धीरे ढहता नजर आया है तथा इन अंगूर की वल्लरियों के केन्द्र में दिखने वाला चांद इसाई धर्म द्वारा प्रतिपादित प्रभु मसीह का प्रतीक है। इसी

* The Integration of Personality at page 150 and Dream symbols of the process of Individual psychology and Alchemy para 179.

तरह एक अन्य व्यक्ति ने स्वप्न में देखा कि वह चारों तरफ दीवारों से घिरे हुए खुले हुए स्थान पर खड़ा है, तथा खुली हुई जमीन के केन्द्र से धुंआ निकल रहा है और स्वप्न द्रष्टा अपने घुटनों पर झुका हुआ उक्त प्रज्वलित अग्नि के सम्मुख खड़े-खड़े गुनगुनाते लगता है कि प्रभु में धुंआ (Smoke) है। प्रभु ही धुआ है। यह स्वप्न द्रष्टा के अन्तर से अनुभव किए गए विरोधाभास का प्रतीक है। यूंग ने कई मर्तबा अपने रोगियों के स्वप्नों की सही प्रकार की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए अपने पात्रों को रोगमुक्त करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

यूंग ने अनेक मनस्तापी (Neurosis) रोगग्रस्त व्यक्तियों का इलाज उन्हें उनकी आस्था के गिर्जाघरों में भेज कर किया है, बशर्ते कि रोगी वहां पर किसी के कहने पर जाने के बजाय स्वतः अपने अन्तःकरण की प्रेरणा से रोग-मुक्ति की इच्छा से वहां जाए। किन्तु केवल सविशेष व्यक्ति को ही यह अभिज्ञता (Awareness) हो पाती है कि उसकी रोग-मुक्ति का इलाज चर्च जाने से हो सकता है। चर्च जाने वाले सभी व्यक्ति तो रोग-मुक्त नहीं हो पाते किन्तु गहरी आस्था का धनी सविशेष रोगी ही उसके गहनतम अवचेतन स्तरीय आस्था की दृढ़ता से शनैः शनैः स्वास्थ्य लाभ कर पाता है। आज के जमाने में तो चर्च जाना एक सामाजिक रिवाज बन गया है–तथा वहां पर निष्पादित धार्मिक क्रियाएं केवल औपचारिकतापूर्ण दिखावा भर रह गई हैं, जिनका कोई कल्याणकारी प्रभाव नहीं हो पाता, और इस प्रकार चर्च की प्रक्रियाओं में भाग लेना केवल एक औपचारिकता मात्र रह गई है, जहां पर न तो व्यक्ति के गहरे अवचेतन स्तर से कोई स्वतः मांग ही उठ पाती है और न इसकी प्रतिपूर्ति में मनस्तापी रोग की गहनतम आस्था के प्रादुर्भाव से उसका कोई इलाज ही हो पाता है।

यूंग के दीर्घकालीन जीवन का अधिकांश समय उसके सन्निकट जाने वाले रोगियों की चिकित्सा में व्यतीत हुआ किन्तु यूंग एक सामान्य चिकित्सक मात्र नहीं थे, जिसका कार्य रोगी के लक्षणों का परीक्षण करते हुए उसके रोग का निदान करना हो, तथा रोग निवारक औषध तथा रसायन प्रयोग द्वारा रोग का उपचार किए जाने तक पर्यादित है। यूंग एक विलक्षण चिकित्सक थे। उनके अध्ययन का केन्द्र बिन्दु 'रोग' नहीं था, अपितु रोगी अथवा उसका व्यक्तित्व था। वह व्यक्ति को देख–परख कर वैज्ञानिक उपकरणों की मदद से उसके व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू का सूक्ष्म अध्ययन करते थे, और रोग के कारणों का पता लगा कर उसके व्यक्तित्व में पाई जाने वाली कमजोरियों तथा खामियों की क्षतिपूर्ति करते हुए उसके व्यक्तित्व को समन्वित तथा पूर्णत्व प्राप्त करने की दृष्टि से उसमें क्षमता बढ़ाने का भी प्रयत्न करते थे। व्यक्ति को समन्वित (Integrated) पूर्ण (Whole) तथा समग्र (Total) बनाने की प्रक्रिया या प्रक्रम को 'व्यक्तित्वकरण प्रणाली' (The process of individuation) को नई संज्ञा से स्पष्ट करने की यूंग ने प्रयत्न किया है। इस नई प्रक्रिया की खोज

एवं निर्धारित करने का आधार यूंग का दीर्घकालीन मानवीय एवं चिकित्सा–अनुभव है। इस प्रकार की चिकित्सा के दौरान यूंग ने यह पता लगाया कि प्रायः रोगों का प्रधान कारण व्यक्ति के 'चेतन मन' तथा उसके 'अवचेतन चित्त' के बीच योग्य ताल मेल अथवा सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध अथवा समन्वय स्थापित होने का अभाव है, अतः यूंग ने विचाराधीन व्यक्ति के चेतन मन की गहरी जानकारी के प्रकाश में उसके अवचेतन चित्त की गलतियों को समझने का प्रयत्न करते हुए, इन दोनों स्थितियों के बीच योग्य सन्तुलन एवं सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है, जिसको विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का सार्थक तथा अर्थपूर्ण नाम दिया गया है। यूंग ने रोगियों के अलावा परिपक्व समझ के विकसित व्यक्तियों तथा आदिम मानव-समूह में युगों से चले आ रहे क्रियाकलापों का भी गम्भीर अध्ययन करते हुए मानव की समझना तथा पूर्णतः समन्वित व्यक्तित्व के 'मानक' स्थापित करने के आधार पर विचाराधीन व्यक्ति के गुण-दोषों का परीक्षण करते हुए, उसके व्यक्तित्व में पाये जाने वाले दोषों को हटाने तथा उसके व्यक्तित्व में पाए जाने वाले गुणों के अभावों की प्रतिपूर्ति किए जाने बावत प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं ताकि व्यक्ति दोष मुक्त तथा गुण सम्पन्न होने की क्षमता को प्राप्त कर, पूर्ण समग्र तथा समन्वित उच्चस्तरीय मानव बन सके। यूंग का आदर्श 'पूर्ण मानव' (The whole man) की स्थापना किया जाना है। अतः इस दृष्टि से यूंग के दीर्घकालीन अध्ययन एवं उसकी साधना से संसार में पूर्ण मानवता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ है। इसी प्रसंग में यूंग ने यह भी संकेत दिया है कि पूर्ण, समग्र एवं समन्वित व्यक्ति ही भगवत्–प्रतिभा (God-Image) अथवा आत्मा के प्ररूप (The Archetype of the self) का अनुभव कर सकता है। किन्तु इस भगवत्-प्रतिभा की स्थिति व्यक्तित्व से अन्यत्र कहीं बाहर नहीं है, अपितु भगवत-प्रतिमा उसके व्यक्तित्व का ही केन्द्र बिन्दु है। यूंग की उक्त अवधारणा तथा भारतीय चिन्तन परम्परा के अन्तर्गत 'आत्मानुभूति-सिद्धांत' की यह समानता निश्चयपूर्वक आश्चर्यजनक है।

यूंग ने यह भी कहा है कि आत्मानुभूति की स्थिति तक पहुंचना सामान्य व्यक्ति के लिए अत्यन्त कठिन है और इस स्थिति तक विकास किया जाना बड़ा दुरूह और कष्टसाध्य है। भगवत्-प्रतिभा अथवा आत्मा के आर्कीटाइप का अनुभव करने के लिए व्यक्ति को कष्टों के समुन्दर को तैर कर एक बहुत लम्बा रास्ता पार करना पड़ता है और जन सामान्य इस कठिनतम कसौटी पर कसे जाने में हिचकता है–डरता है तथा इससे प्रायः बचा रहना चाहता है। अतः बहुत कम विरले व्यक्ति ही इस महान् साधना पथ पर आगे बढ़ने की हिम्मत जुटा पाते हैं तथा आत्म दर्शन के सर्वोच्च लक्ष्य तक पहुंच पाते हैं। मानवीय विकास के इस सर्वोच्च लक्ष्य पर नहीं पहुंच पाने से आज का आदमी एक अजीब उलझन (Dilemma) में फंस गया है और वह यह मानने लगा है कि आज के (वर्तमान) माहौल में देवता (God) प्राप्ति की

कोई स्थिति ही नहीं है, अतः प्रभु के प्रति समर्पित होना तथा देवत्व के साथ सामंजस्य स्थापित किए जाने का कोई प्रश्न ही नहीं है। अपितु आज के जमाने में व्यक्ति का सर्वोच्च लक्ष्य भगवत्-दर्शन या प्रभु प्राप्ति के बजाय समग्र तथा समन्वित मानवता (The wholeness of man) की स्थापना तथा इसका विकास किया जाना ही योग्य है।*

व्यक्तित्वकरण प्रक्रिया (The Individuation process) का स्वतः विकास प्रत्येक मानव के जीवन में क्रमशः धीरे-धीरे सहज प्रकार से होता ही रहता है, जिसकी सुस्पष्ट जानकारी व्यक्ति को अपने जीवन के उत्तरकाल के दौरान हो सकती है। यद्यपि सर्वप्रथम यूंग को अपने अधीन रोगियों में होने वाले इस विकास का पता लगा तथा बाद में उसने इस प्रक्रिया (Process) का सत्यापन अन्य आयु प्राप्त अधेड़ समुदाय में पाए जाने वाले जीवन विकास के अध्ययन से किया।

समग्र एवं पूर्ण मानव बनने का यही अर्थ है कि व्यक्ति में उपेक्षित क्रियाओं का योग्य समायोजन किया जाए तथा व्यक्ति में गौण रूप से पायी जाने वाली क्षमताओं का भरपूर उपयोग करते हुए उनको प्रमुख क्रियाओं की योग्य सहयोगी क्रियाओं की तरह इनका उपयोग तथा इसका सम्मिलन किया जाए। समग्र व्यक्तित्व का यह अर्थ नहीं है कि चेतन स्तरीय चिन्तन के विकास के लिए अवचेतन स्तरीय भावनाओं को कुचल कर भावपक्ष को नेस्तनाबूद कर दिया जाए। अथवा अवचेतन स्तरीय भावावेश को उभार कर चेतन स्तरीय चिन्तन को सर्वथा नष्ट अथवा प्रभाव-हीन कर दिया जाए। समग्र तथा समन्वित व्यक्तित्व के अन्तर्गत विचारपक्ष तथा भाव पक्ष संवेदना तथा अन्तर्दृष्टि एवं चेतन तथा अवचेतन इन सभी को परस्पर पूरक मानकर इनकी योग्य प्रतिष्ठा एवं सफल कार्यान्विति किया जाता है।

यदि चेतना अथवा अवचेतना के किसी भी सम्भाग की उपेक्षा करके, उसको दबाया जाएगा तो व्यक्तित्व निःसन्देह अपूर्ण तथा एक खण्डीय रह जाएगा क्योंकि मानव जीवन की इकाई के लिए इन दोनों संभागों का सन्तुलित रूप से शक्तिशाली बना रहना जरूरी है। चेतन तथा अवचेतन दोनों ही जीवन के बहुत उपयोगी पहलू हैं, अतः इन दोनों का समान महत्व है। चेतन स्तर से विचार पक्ष को योग्य पोषण मिलता है और भावपक्ष का उद्गम स्थल अवचेतन स्तर है। चिन्तन अथवा विचार दोनों पक्षों के विकास तथा इनके बीच योग्य सन्तुलन से ही व्यक्तित्व एकजुट समन्वित एवं पूर्ण बना रह सकता है तथा योग्य चिन्तन के माध्यम से ही अवचेतन स्तरीय अनियंत्रित तूफानों को भी नियंत्रित किया जा सकता है। इस प्रकार मानवीय जीवन में चेतन तथा अवचेतन का आपसी संघर्ष दीखने पर इन दोनों के बीच

---

* Psychology and Religion, page 99, Collected Works of C.G. Jung, Vol; 11.

परस्पर सहयोग बनाए रखने की आवश्यकता के दर्शन होते हैं, अतः परस्पर विरोधाभासी संदर्भों के बीच योग्य समझ के साथ तालमेल तथा सन्तुलन स्थापित किया जाना ही मानवीय क्षमता की वह कसौटी है जिस पर रहस्यमय सामंजस्य एव समन्वय में ही समग्र मानव जीवन का निर्माण एवं पूर्ण विकास होना संभव है। जिस प्रकार ऐरन पर स्थापित लोहा हथौड़े की चोटें खाकर एक पूर्ण आकार अथवा उपयोगी इकाई बनता है, उसी तरह चेतन तथा अवचेतन स्तरीय संघर्षों के अनुभवों से ही मानव जीवन की इकाई का निर्माण होता है तथा इससे ही व्यक्तित्व की पूर्णता, समन्वयता तथा समग्रता की उपलब्धि होती है।*

पूर्ण मानव (the whole man) निःसन्देह एक व्यक्ति है किन्तु उसके व्यक्तित्व का अर्थ व्यष्टित्व (Individuation) नहीं है जो अहम् केन्द्रित (Ego Centred) रहता है तथा जो अपने अहम् की रक्षा के लिए अन्य व्यक्तियों की विशिष्टताओं एवं गुणों का तिरस्कार करते हुए अपने व्यक्तिवाद को ही सर्वोपरि महत्व देता रहता है। समग्र एवं समन्वित व्यक्तित्व किसी भी अन्य व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करता, अपितु उसके द्वारा अवचेतन की स्वीकृति के परिणामस्वरूप वह अपने अद्वितीय व्यक्तित्व (Unique Personality) की अभिज्ञता (awareness) के बावजूद भी विश्व के सभी जड़ और चेतन पदार्थों के साथ अपनत्व अथवा भाईचारे का तादात्म्य अभिव्यक्ति मानता है। सर्वत्र जो कुछ है, उसको सहज भाव से स्वीकार करते हुए, उसे अपने जैसा मानना ही समग्र एवं पूर्ण व्यक्तित्व का प्रमुख लक्षण है। पूर्ण मानव के लिए न तो कोई पराया है और न ही उसका किसी के प्रति भी कोई विरोधी भाव ही रहता है। वह तो सर्वत्र सभी पदार्थों की स्थिति को अपने समान ही महत्व देता है। अपनत्व की यह ऊंचाई की सर्वव्यापक समष्टित्व है।

यूंग की मान्यतानुसार बाल्यावस्था तथा यौवनावस्था व्यक्तित्वकरण (Individuation) की दृष्टि से उपयुक्त समय नहीं है। इस लक्ष्य की प्रगति के लिए जीवन के उत्तरकाल को ही अधिक उपयुक्त तथा योग्य माना गया है। परिपक्व व्यक्ति में (matured person), अधेड़ावस्था, गंभीर बीमारी अथवा किसी असाधारण अनुभव (unusual experience) के फलस्वरूप जब उसकी बहिर्मुखी प्रवृत्तियं मन्द तथा निष्क्रिय हो जाती हैं, तब उसको अपने पूर्ववत् जीवनक्रम को स्वेच्छा से परिवर्तित करने के लिए बाध्य होना पड़ता है और बाहर की ओर आमुख होने के बजाय स्वयं को अन्दर की ओर मोड़ने का जागरूक होकर प्रयत्न स्वतः करता है ताकि वह चेतन स्तरीय अपने अनुभव के प्रकाश से अपने अन्दर में स्थित अवचेतन

* The Integration of the Personality at page 27. The Meaning of Individuation (Collected Works of C. G. Junge, Vol. 9).

के अक्षय भंडार को धीरे-धीरे समझ कर अपने व्यक्तित्व का योग्य विकास कर सके तथा व्यक्ति अपने द्वारा पसंद किए गए उत्तरदायित्व एवं कर्तव्यों का योग्य निर्वाह करते हुए अपने उत्तरकालीन जीवन में सुखी रह सके। इसलिए व्यक्ति अपनी उत्तरावस्था में अपनी अन्तर्मुखी अभिवृत्ति को अपना लेता है क्योंकि प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था में आकर युवावस्था में भोगे गए पदार्थों से उसको पूर्ववत् सन्तुष्टि एवं पुनरावृत्तियों से उसे पहले जैसा रस अथवा आकर्षण नहीं मिल पाता। अतः वह वृद्धावस्था में यौवनावस्था के सुखों में नीरसता तथा खालीपन (Emptiness) का का अनुभव करता है तथा उसके द्वारा अब तक भोगे गए जीवन का रस उसको अर्थ हीन सा प्रतीत होता है। यूंग ने अपनी पुस्तक (The Integration of Personality) में इस बाबत विशद व्याख्या प्रस्तुत की है।

यूंग की मान्यतानुसार आयु के पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध अनुभवों के इस अन्तर को भलीभांति समझा जाना बहुत महत्वपूर्ण है। आयु की दृष्टि से मानव जीवन के प्रारंभिक चरण यानि पूर्वार्द्ध में बाल्यावस्था तथा यौवनावस्था की गणना की जाती है। मानव जीवन के इस प्रथम चरण का प्रयोजन व्यक्ति द्वारा अपने को बाहर स्थित दुनियां को भलीभांति समझने तथा इसके द्वारा अपना बाह्य दुनियां के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। इसको मानव जीवन का प्रातःकाल कहा गया है, इस काल में चेतना का सूर्य निरन्तर आकाश में चढ़ता तथा आगे बढ़ता है किन्तु दोपहर बाद जिस प्रकार सूर्य नीचे ढलता है उसी प्रकार प्रौढ़ावस्था में जीवन की बहिर्मुखी प्रवृत्तियां मंद तथा उतरती प्रतीत होती हैं तथा संध्याकाल में जिस प्रकार सूर्यास्त हो जाता है उसी प्रकार व्यक्ति की आयु पूर्ण होने पर वह मृत्यु की गोद में विलीन हो जाता है। जिस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर, तीसरा पहर तथा संध्याकाल में अन्तर है, उसी प्रकार बाल्यावस्था, यौवनावस्था, अधेड़ावस्था तथा वृद्धावस्था में भी फर्क है और प्रत्येक अवस्था में समय की मांग के अनुसार व्यक्ति के लिए अलग-अलग कर्तव्यों का निर्धारण किया जाना योग्य है। जो कार्य दायित्व बचपन के लिए निर्धारित है उसकी कार्यान्विति वृद्धावस्था में न तो की जा सकती है और न बचपन का कार्य वृद्धावस्था में किया जाना समाज द्वारा भी समर्थित हो सकता है। अतः जो कार्य प्रातःकाल में निपटाया जाना श्रेयस्कर माना गया है उसका निष्पादन संध्याकाल में किया जाना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। मानव जीवन का पूर्वार्द्ध काल बाह्य सृष्टि, समाज की योग्य समझ हेतु निर्धारित है, इस प्रारंभिक काल में युवावर्ग अपने इर्द-गिर्द की दुनियां को समझ कर समाज में अपने व्यक्तित्व को प्रतिस्थापित करता है। इस काल के दौरान में वह पढ़ता लिखता है, ज्ञान-विज्ञान की जानकारी प्राप्त करता है, सन्तान उत्पन्न करता है तथा जीवन के लिए उसको स्वयं तथा उसके परिवार के भरण-पोषण तथा उसके संवर्द्धन हेतु तरह-तरह की क्रियाकलापों में व्यस्त रहना पड़ता है जिनके माध्यम से वह अपने इर्द-गिर्द

समाज, राष्ट्र और विश्व को योग्य प्रकार से समझते हुए अपने तन-मन, बुद्धि अंतःकरण तथा आत्मा का विकास करता है ताकि वह स्वयं तथा मानव समाज मे सुख, समृद्धि एवं कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ सके।

यूंग ने जिस प्रकार व्यक्ति के पूर्वार्द्ध तथा उत्तरकालीन अभिवृत्तियों (Attitudes) के अन्तर को स्पष्ट किया है उसी प्रकार उसने पुरुष तथा नारी के बीच पाई जाने वाली स्वभावजन्य क्रिया क्षमताओं (Functional Capabilities) के अन्तर को स्पष्ट किया है। यूंग को यह भी शिकायत है कि नर-नारी के रुझान के अन्तर को नहीं समझते हुए इनके बीच योग्य प्रकार से कार्य विभाजन नहीं किए जाने के फलस्वरूप आज के समाज में अनेक असंगतियाँ, कमजोरियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं तथा यौवनकाल की समाप्ति के बाद विशेषतः महिलाएँ मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हो जाती नजर आती हैं क्योंकि प्रायः महिलाओं द्वारा उनकी प्रकृति के प्रतिकूल बिना सोचे समझे जब पुरुषोचित कार्यों का दायित्व ओढ़ लिया जाता है तो उसकी थकान से प्रायः उनका मानसिक सन्तुलन गड़बड़ा जाता है।

जीवन के उत्तरार्द्ध काल की प्रमुख समस्या जीवन के अर्थ अथवा प्रयोजन की खोज है। युवावस्था में बाहरी हलचलों के फलस्वरूप इस पक्ष पर तब कोई विशेष ध्यान ही नहीं दिया जा सकता था, किन्तु जीवन के मध्याह्नकाल के बाद में बहिर्मुखी अभिवृत्ति की अपेक्षा अन्तर्मुखी अभिवृत्ति को ओर अधिक महत्व दिया जाना योग्य है और तब से प्रमुख रूप से अन्तर्मुखी अभिवृत्ति के उद्भव से प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान अन्दर की ओर आकर्षित होने लगता है। समग्र मानव जीवन के उद्देश्य की खोज के लिए सर्वप्रथम चेतन मन के साथ व्यक्ति के अवचेतन स्तर की अन्तर्वस्तु की जानकारी भी प्राप्त किया जाना जरूरी हो जाता है, अतः जीवन के प्रयोजन के ज्ञान के लिए अवचेतन स्तरीय क्षमताओं का पता लगाये जाने का प्रयत्न प्रारम्भ किया जाना जरूरी हो जाता है। अवचेतन की खोज का मार्ग निःसन्देह बड़ा दुरूह, कठिन तथा फिसलन भरा (Tortious & Slippery) है, जिसकी योग्य व्याख्या प्रस्तुत किया जाना अत्यन्त कठिन है। अवचेतन की खोज का कोई सरल सीधा रास्ता नहीं है अपितु यह मार्ग बड़ा चक्करदार (Spiral) है, और इस रास्ते पर अग्रसर होने के पूर्व व्यक्ति के लिए अपनी छाया (Shadow) को समझा जाना जरूरी है, अन्यथा व्यक्ति की योग्य समझ के लिए उसकी छाया के द्वारा रुकावटें अथवा गड़बड़ियां खड़ी किए जाने की गंभीर आशंकाएँ उपस्थित हो सकती हैं और व्यक्ति अपने सही स्वरूप को जानने में असफल रह सकता है। इस यात्रा के दौरान में व्यक्ति को अपने सामूहिक अवचेतन-स्तरीय आर्कीटाइपों का भी यदाकदा सामना करना पड़ता है। अतः जीवन के गहनतम धरातल में पड़े हुए प्रयोजन रूपी मोती की तलाश के लिए व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत अवचेतन-स्तरीय स्थिति छाया तथा सामूहिक अवचेतन स्तरीय आर्कीटाइपों के स्वरूप की यथावत् जानकारी प्राप्त किया

जाना एक अनिवार्य शर्त है तभी वह जीवन के आधारभूत रत्नों के खजाने को (जिसको यूंग के सुनहरे पुष्प (The Golden Flower) की नई संज्ञा से समझाने का प्रयत्न किया है) ठीक ठीक पता लग सकेगा। इसी सुनहरे पुष्प को 'पूर्णत्व का प्रारूप' (The Archetype of wholeness), अथवा 'आत्मा' कहा गया है। पूर्णत्व तथा आत्मा की उपलब्धि के दौरान अनेक अड़चनें तथा रुकावटें सहजता से प्रायः खड़ी हो जाती हैं, अतः इनकी उपलब्धि बाबत कोई निश्चित समय अथवा विधि की घोषणा किया जाना संभव नहीं है।

अवचेतन (Unconscious) प्रायः अज्ञेय बना रहता है किन्तु अवचेतन का कुछ अंश अनुभव से जाना जा सकता है। विचित्र धुंधले, उलझे हुए अर्थहीन विचारों (Meaningless Ideas), स्वैर कल्पनाओं (Fantasees), स्वप्नों (Dreams) तथा झाँकियों (Visions) के माध्यम से यदाकदा अवचेतन कुछ-कुछ उजागर सा हो जाता है। किन्तु जब अचानक बाढ़ की तरह अवचेतन का विस्फोट हो जाता है, मानों एक बांध व्यक्ति पर फूट पड़ा हो, तब अनुभवकर्ता प्रायः भौंचक्का होकर कभी-कभी अपना मानसिक सन्तुलन भी खो बैठता है। अतः इस प्रकार विस्फोटक तथा असामान्य परिस्थितियों में अनुभवकर्ता व्यक्ति के पास ऐसे विश्लेषक (Analysts) का उपस्थित रहना जरूरी है, जिसे इस प्रकार की स्थितियों की पहले से जानकारी अथवा अनुभव प्राप्त हो, ताकि विश्लेषक आक्रान्त व्यक्ति को यह समझा सके कि उक्त विस्फोटक परिस्थिति केवल क्षणिक मात्र है तथा इसका कोई स्थाई असर नहीं रह पाएगा। विश्लेषक अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर घटित परिस्थिति की योग्य समीक्षा एवं विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए ही प्रभावग्रस्त व्यक्ति को उसके द्वारा अनुभूत तथ्यों एवं उसके कारणों की विशुद्ध व्याख्या प्रस्तुत करते हुए उसको पुनः सन्तुलित एवं शान्त रख सकता है। इस प्रकार के प्रसंगों के अवसर पर एक योग्य विश्लेषक भयाक्रान्त अनुभवकर्ता को यह विश्वास दिला सकता है कि उपरोक्त प्रकार की घटनाओं का अनेक व्यक्तियों ने पूर्व में भी सामना किया है और इन अनुभवों का कोई विशेष महत्व ही नहीं है। अतः उसको भी इनके प्रभावों की योग्य समझ से अपने व्यक्तित्व के विकास का योग्य लाभ उठाना चाहिए। अनायास घटित घटनाओं के अनुभवों की योग्य समझ से निसन्देह व्यक्तित्व का उल्लेखनीय विकास होता है।

यूंग ने यह भी स्पष्ट किया है कि गहन अवचेतन स्तर से स्वतः उभरती हुई स्वैर कल्पना का भी बहुत महत्व है जिनकी प्रायः अनदेखी कर उपेक्षा की जाती है। किन्तु यदि व्यक्ति किसी योग्य मनोविश्लेपक की मदद से इन स्वैर कल्पनाओं को गहराई से पूरी समझ के साथ छान-बीन करेगा तो वह इनका सम्बन्ध धार्मिक, इतिहास, पुराण विद्या (Mythology) लोक कथाएँ (Folk lores) तथा आदिम जाति मनोविज्ञान (Primitive Psychology) से स्थापित कर सकेगा। यूंग ने

यह भी स्पष्ट किया है कि स्वैर कल्पना, तथा स्वप्न के प्रतीक (Dream Symbols) के बीच आश्चर्यजनक रूप से समानता है क्योंकि इन दोनों की अन्तर्वस्तु मूल (आर्कीटाइपल) है। विश्लेषक द्वारा योग्य व्याख्या से व्यक्ति के चेतन स्तर पर शान्ति, सुस्पष्टता तथा समझ का कल्याणकारी प्रभाव रह सकता है। यूंग ने इस प्रसंग में पुराण विद्या के ज्ञान का उपयोग करते हुए व्यक्ति के स्वप्न प्रतीकवाद (Dream-Symbolism) तथा मध्यकालीन कीमियागिरी (Alchemy) के बीच गहरा सम्बन्ध स्थापित किया है। क्योंकि इन दोनों में उसने आश्चर्यजनक समानता की विशद खोज की है। भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत मानवीय व्यक्तित्व का धर्म और समग्रता की ओर इस सहज प्रगति से उत्तम संस्कारों का उदय एवं क्लेशों की मुक्ति कहा गया है। इस प्रकार यूंगीय समग्रतापूर्ण जीवन व्यवहार भारतीय दिव्य जीवन का समान अर्थी कल्याणप्रद एवं प्रयोजनीय आदर्श जीवन माना जाना योग्य है।

तृतीय खण्ड

अध्याय **16**

स्वप्न विश्लेषण
(Dream Analysis)

चित्त-चिकित्सा के लिये स्वप्न विश्लेषण का उपयोग किया जाना उपयुक्त है, अथवा अनुपयुक्त है, इस प्रश्न पर मनोविज्ञान-वेत्ताओं में गम्भीर मतभेद है। अनेक मनोश्चिकित्सक स्वप्न विश्लेषण के उपयोग को चिकित्सा के लिए जरूरी मानते हैं, और वे स्वप्नों के द्वारा व्यक्त चित्तीय क्रियाओं को बड़ा महत्व देते हैं, किन्तु इसके विपरीत अनेक मनोविज्ञानी स्वप्नों को चित्त की तुच्छ कारगुजारी मानकर स्वप्न विश्लेपण को किसी प्रकार का महत्व देना योग्य नहीं समझते।

स्वप्न विश्लेपण की उपादेयता का प्रश्न मनस्ताप के कारणों की खोज के साथ जुड़ा हुआ है। जो लोग मनस्तापी स्थिति के लिये अवचेतन को कारण समझते हैं, उनके लिये मनस्तापी की चिकित्सा के लिये स्वप्न विश्लेषण का उपयोग किया जाना सार्थक एवं जरूरी है क्योंकि स्वप्न अवचेतन चित्त की उप-उपज (By product) है किन्तु जो वर्ग मनस्तापी स्थिति के लिये अवचेतन चित्त को कारण नहीं मानते उनके लिए स्वप्न विश्लेपण का कुछ भी महत्व नहीं है। अतः मनोविज्ञानियों का यह वर्ग स्वप्न विश्लेषण को कोई महत्व देना पसन्द नहीं करता। यूंग की मान्यता के अनुसार मनस्ताप का कारण अवचेतन है, अतः इसकी चिकित्सा के लिये स्वप्न विश्लेपण का उपयोग किया जाना विज्ञान संगत है।* स्वप्न विश्लेपण न केवल चिकित्सा की दृष्टि से ही उपादेय है अपितु स्वप्न विश्लेपण के माध्यम से चित्त स्तरीय कारणों के अनुसंधान कार्य में भी उल्लेखनीय मदद मिलती है। प्रत्येक घटित घटना के पीछे निःसन्देह कोई कारण मौजूद रहता है और घटना के कारणों की जानकारी के लिये स्वप्न विश्लेपण पद्धति एक उपयोगी साधन है। फ्रायड के मतानुसार भी चिकित्सा की सफलता के लिये रोग के कारणों की खोज किया जाना जरूरी माना गया है तथा अधिकांश कारणों का उद्गम स्थल व्यक्ति का अवचेतन

---

* Modern man in search of a soul, page 2. Kegan paul, London Edition, 1944.

स्तर है, अतः इन कारणों का पता लगाना तथा इन कारणों से रोगी को अवगत किया जाना चिकित्सा के लिए बहुत जरूरी है ताकि रोगी अपने रोग के कारणों को समझ कर अपने मानसिक तनावों से पर्याप्त अंशों में राहत या छुटकारा पा सके। यूंग ने फ्रायड की उपरोक्त धारणा का समर्थन करते हुए रोग के कारणों का पता व्यक्तिगत अवचेतन तथा उससे भी अधिक गहरे सामूहिक अवचेतन से लगाया जाना अनिवार्य माना है। यूंग ने अपने अनुभवों से यह पता लगाया कि यदाकदा मनस्तापी (Neurotic) के अवचेतन स्तरीय कारणों का उद्घाटन स्वप्नों के माध्यम से स्वतः हो जाता है। इस सम्बन्ध में निम्न उदाहरण का विवेचन प्रस्तुत किया जाना उपयोगी है—

यूंग के पास परामर्श हेतु एक रोगी जो उच्च अधिकारी था, उपस्थित हुआ। वह चिन्ता एवं असुरक्षा की भावना से परेशान था तथा उसको चक्कर आने, सिर भारी होने तथा सांस लेने में कठिनाई का अनुभव होता था। रोग के सभी लक्षण ऊंचे पर्वत पर पायी जाने वाली बीमारी (Mountain-sickness) के पाये गये। वह रोगी एक साधारण किसान परिवार में जन्मा था और वह अपनी योग्यता तथा कड़ी मेहनत से शनैः शनैः इस उच्च पद पर पहुंचा था। वह सामान्य क्रम में धीरे-धीरे कदम-कदम से ऊपर उठता गया और अन्त में जाकर वह समाज के प्रतिष्ठित इस उच्च पद पर पहुंचा था, जहां से उसको अपने सामाजिक स्तर को ऊंचा उठाने का अवसर मिला था। वह और भी ऊंचे पद पर पहुंचने का आकांक्षी था किन्तु यकायक वह मनस्ताप (Neurosis) से ग्रस्त हो गया। इस रोगी ने यूंग के समक्ष अपने निम्न दो सपनों का वर्णन प्रस्तुत किया है यथा (1) प्रथम सपने के अनुसार "मैं अपने गांव में हूं, जहां पर मेरा जन्म हुआ था। वहां मुझे अपने स्कूल के कुछ पुराने साथी रास्ते में मिलते हैं, मैं उनको नहीं पहिचानने का बहाना करके उनसे बच निकलता हूं। तब मेरे उन साथियों में से एक लड़का मुझको लक्ष्य करते हुए कहता है कि "यह तो अब अपने गांव आता ही नहीं है।" इस सपने के अर्थ को समझने के लिये किसी विश्लेषण की जरूरत नहीं है। इस सपने से स्वप्न दृष्टि के सामान्य प्रारम्भिक जीवन की जानकारी मिलती है जिसको रोगी भूल गया है। अथवा जिसको वह अब भूल जाना चाहता है कि उसके जीवन के प्रारम्भिक काल की स्थिति अत्यन्त साधारण थी।

इसी रोगी का दूसरा सपना निम्नानुसार है—"मैं बड़ी जल्दी में हूं क्योंकि मुझे यात्रा करना है। मैं अपना सामान इकट्ठा करना चाहता हूं किन्तु कुछ सामान नहीं मिलता। समय तेजी से सरक रहा है और ट्रेन अब करीब रवाना होने वाली है। अन्त में मैं अपना सभी सामान इकट्ठा कर लेता हूं और मैं यात्रा के लिए सड़क पर दौड़ पड़ता हूं तब मुझे यह पता लगता है कि मैं अपना वह ब्रीफकेस ही भूल गया हूं जिसमें कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। अतः मैं वापस दौड़ पड़ता हूं और अन्त

में जाकर खोया हुआ ब्रीफकेस भी पा लेता हूं और तब मैं स्टेशन की ओर दौड़ पड़ता हूं किन्तु वहां मैं पिछड़ सा गया हूं और जब मैं स्टेशन के प्लेटफार्म पर पहुंचता हूं तब गाड़ी सीटी बजाकर यार्ड से बाहर निकल जाती है। ट्रेन एक एस (S) आकृति की रेल्वे पटरी पर चल रही है–ट्रेन बड़ी लम्बी है–तभी मुझे यह खयाल आता है कि यदि ड्राइवर सावधानी नहीं रखेगा तथा वह सीधी पटरी पर ट्रेन धीमी नहीं करेगा तो ट्रेन के पिछले डिब्बे एस आकृति की पटरी से नीचे उतर जायेंगे। सचमुच ड्राइवर ने गाड़ी धीमी नहीं की है और मैं चिल्लाना चाहता हूं तब ट्रेन के पिछले डिब्बे कांपने लगते हैं और सचमुच गाड़ी पटरी पर से गिर जाती है अतः, इस प्रकार एक भयानक दुर्घटना घटित हो जाती है और मैं डर कर सपने से जाग जाता हूं। यहां पर स्वप्न द्वारा दीखी स्थिति को समझने में कोई विशेष कठिनाई नहीं है। रोगी स्वयं बड़ी जल्दी बाजी में है, और ट्रेन का ड्राइवर भी असावधान तथा जल्दी में है, फलतः स्वप्न में ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है, और इधर वस्तुतः स्वप्न द्रष्टा रोगी धीरे-धीरे के बजाय जल्दबाजी करता है तो वह अन्त में मनस्ताप ग्रस्त हो जाता है। रोगी के लिए उचित तो यह था कि वह अपनी क्रमिक तरक्की से सन्तुष्ट रहता तथा अधिक उच्च पद प्राप्ति के लिये वह किसी प्रकार की जल्दबाजी नहीं करता, किन्तु उच्च पद प्राप्ति के बाद यकायक अधिक उच्च पद प्राप्ति के लिए उसकी उतावली तथा दौड़धूप के कारण वह मनस्ताप का रोगी बन गया है। क्योंकि जिस पद पर वह पहुंच चुका है उससे अधिक ऊंचे पद के लिये आकांक्षा किया जाना उसकी सामाजिक दृष्टि से योग्य नहीं था, इसलिए वह जो अनावश्यक उतावलापन स्वप्न में देखता है वह स्वप्नद्रष्टा के अवचेतन का सन्देश है या चेतावनी मात्र थी। यूंग के द्वारा उपरोक्त प्रकार से स्पष्टीकरण किये जाने से रोगी को शुरू में संतोष नहीं हो सका क्योंकि अब वह अपनी अधिक महत्वाकांक्षी एवं उतावले स्वभाव के कारण पहिले की तरह शनैः-शनैः अपनी तरक्की होने का धैर्य रखे बिना यकायक तत्काल उच्चतम पर पहुंचने की आकांक्षा की जल्दीबाजी के कारण होने वाली विफलता से अन्ततोगत्वा वह मनस्ताप रोग का शिकार हो गया है। इस प्रकार इस रोगी द्वारा ट्रेन दुर्घटना का दृश्य स्वप्न में देखा जाना वस्तुतः उसके ही अवचेतन की चेतावनी है अर्थात् रोगी द्वारा देखा गया सपना ही उसके अवचेतन की अभिव्यक्ति एवं चेतावनी है। डाक्टर यूंग ने रोगी को जब उपरोक्त खुलासा समझाने की कोशिश की तो रोगी अपने अति महत्वाकांक्षी एवं उतावले स्वभाव के कारण पहिले तो इसको स्वीकार नहीं कर सका और वह गम्भीर रूप से बीमार होकर शय्याग्रस्त हो गया। यूंग ने जब दुबारा रोगी को उसी के स्वप्न का विश्लेषण देते हुए उसे बार-बार उसकी वास्तविक सामाजिक स्थिति का भान कराया तो उसे स्वप्न और यथार्थ की स्थितियों की समानता का अनुभव हुआ और जब इस सावचेती से धैर्य रखने के परामर्श को स्वीकार कर लिया तो वह रोग मुक्त हो गया। यह

स्वप्न दर्शन मनस्तापी स्थिति के रोगी के लिये एक चेतावनी (Warning) थी। रोगी अधिकारी एक छोटे से गांव के एक सामान्य किसान का बेटा था जो अपनी योग्यता तथा मेहनत के बल पर धीरे-धीरे एक ऊंचे पद पर पहुंच सका था, फलतः उक्त अधिकारी मनस्ताप ग्रस्त हो गया। रोगी का दूसरा सपना बतलाता है कि जब अचेतन स्तर चेतन के नियन्त्रण से परे हो जाता है तो व्यक्ति के लिये मनस्ताप की शरण लेने के सिवाय कोई अन्य रास्ता ही नहीं रहता। इन स्वप्नों के विश्लेषण से न केवल रोग के कारणों का ही उद्घाटन होता है, अपितु व्यक्ति की तत्कालीन स्थितियों की भी समुचित जानकारी उपलब्ध होती है। अतः विश्लेषक को स्वप्न की व्याख्या के द्वारा रोगी को यह केवल मात्र समझा दिया जाना चाहिए कि जिन कारणों के फलस्वरूप वह रोगग्रस्त है, यदि उन कारणों का सुधार किया जायेगा तो निःसन्देह उसको उक्त रोग से राहत भी मिल सकती है। अधिकारी रोगी के रोग का मुख्य कारण अति उतावली एवं जल्दबाजी से तरक्की उपलब्ध करने की उसकी तीव्र आकांक्षा है यदि वह जल्दबाजी को छोड़कर धैर्य को अपना ले अथवा उच्चतम महत्वाकांक्षा के बजाय प्राप्त पद से सन्तोष करना सीख ले तो निःसन्देह वह अपने मनस्ताप रोग से छुटकारा प्राप्त कर सकता है।

यूंग द्वारा उद्धरित उपरोक्त दो खण्डों में दीखा पहला स्वप्न प्रारम्भिक स्वप्न (Initial dream) कहा गया है, जिसके द्वारा मनस्ताप की ग्रस्तता के कारणों पर प्रकाश पड़ता है तथा इसी क्रम में दीखने वाले द्वितीय परिणामी स्वप्न में प्रारम्भिक स्वप्न की परिणति मनस्तापी परिणाम में होना बतलाया गया है। उपरोक्त प्रारम्भिक एवं परिणामी स्वप्नों के अलावा कभी-कभी क्रम से तीन स्वप्नों की सीरीज से भी स्वप्न द्रष्टा को अपनी अवचेतन स्तरीय हलचलों का परिचय मिलता है। यूंग ने तीन खण्डों में देखे गये एक अन्य व्यक्ति के स्वप्न का वर्णन निम्नानुसार प्रस्तुत किया है। इस तीन खण्डीय स्वप्न से मनस्ताप के कारणों पर तो प्रकाश नहीं पड़ता किन्तु इन स्वप्नों के माध्यम से रोगी का विश्लेषक के प्रति अपनाये जाने वाले दृष्टिकोणों (Attitudes) का उत्तम परिचय मिलता है जिसके सम्यक् विश्लेषण से रोग के उपचार में उल्लेखनीय मदद मिलती है।

दूसरे रोगी द्वारा तीन खण्डीय सपने का प्रारम्भिक चरण निम्नानुसार है—

"मुझे दूसरे देश में प्रवेश करने हेतु अपने देश की सीमा को पार करना है, किन्तु देश की सीमा कहां है ? इस बावत कोई भी व्यक्ति न तो कोई जानकारी देता है और इसलिए मैं देश की सीमा रेखा को ढूंढ नहीं पाता हूं। इस दुविधाग्रस्त स्थिति से बचने के लिये किये गये जब सभी प्रयत्न विफल हो जाते हैं तब चिकित्सा पद्धति की सभी कड़ियां भी टूट जाती हैं।

इसी प्रसंग के दूसरे स्वप्न में–मुझे सीमा पार करना ही है, काली अंधेरी रात है, अतः मैं कस्टम्स की चौकी ढूंढ नहीं पा रहा हूं। कुछ देर तक लम्बी खोज

वीन करने के बाद मुझे सुदूर एक छोटा सा प्रकाश टिमटिमाता नजर आता है और मैं सोचने लगता हूं कि वहीं पर शायद सीमा चौकी है। किन्तु उस विन्दु तक पहुंचने के बीच मुझे एक घाटी (Valley) को पार करना पड़ता है तथा वही घाटी एक घनघोर जंगल में है जिसका रास्ता भी मैं नहीं जानता, अतः मैं दिशा भूल जाता हूं। उस समय मुझे ऐसा अनुभव होता है कि कोई अन्य व्यक्ति भी मेरे साथ है। वह व्यक्ति पागल की तरह मुझसे चिपट जाता है, अतः मैं डर के कारण जाग उठता हूं।" इसके पश्चात् इस रोगी की चित्त चिकित्सा कुछ सप्ताह चल सकी और बाद में स्थगित कर देनी पड़ी क्योंकि यहां रोगी द्वारा सपने में देखे जाने वाला उसके साथ किसी अन्य व्यक्ति के चिपट जाने का अर्थ चिकित्सा का रोगी की भावनाओं के साथ तादात्य किया जाना है अतः जब रोगी के साथ चिकित्सक भी भटकन ग्रस्त होना पाया गया तब चिकित्सा पद्धति को स्वतः स्थगित किये जाने के अलावा अन्य कोई रास्ता ही नहीं रहता था। इस प्रसंग से यूंग ने प्रत्येक चिकित्सक को चेतावनी का यह संकेत दिया है कि प्रत्येक चिकित्सक को रोगी से अपने व्यक्तित्व को जुदा रखना चाहिये, तभी चित्त चिकित्सा उपयोगी हो सकती है। यदि चिकित्सक इसके विपरीत किसी रोगी की भावना के साथ तादात्य कर लेगा, तो वह भी रोगी के साथ दिशा-शून्य होकर भटक जायगा, अतः ऐसी विषम परिस्थिति में विश्लेषक द्वारा चित्त चिकित्सा को स्थगित किया जाना ही जरूरी एवं उपादेय है।

इस शृंखला का तीसरा स्वप्न इस प्रकार है—

"मुझे सीमा पार करना ही है अथवा मैं सीमा पार कर चुका हूं, और मैं स्वीस कस्टम की चौकी पर हूं। मेरे पास केवल एक हाथ थैला (Hand bag) है और मेरा विश्वास है कि मुझे कस्टम चुकाने के लिये कोई घोषणा नहीं करनी है। किन्तु सीमा पर नियुक्त कस्टम अधिकारी मेरा हाथ थैला छीनकर इसके अन्दर की तलाशी लेता है और उसमें से दो पूरे नाप की चटाइयां (Full size mattresses) निकलती हैं, जिससे मुझे आश्चर्य होता है।" यह महिला रोगी चिकित्सा के दौरान में बड़े तनाव एवं विरोध के बावजूद भी विवाह कर लेती है। उसके मनस्तापी रोग का प्रकोप विवाह के कुछ महीनों बाद जाहिर हुआ, जिसका इन स्वप्नों में कोई संकेत ही नहीं मिलता। उपरोक्त सपने भविष्य सूचक थे जिनके द्वारा विश्लेषक के पास चिकित्सा हेतु उपस्थित होने वाली महिला रोगी की कठिनाइयों का दिग्दर्शन किया गया है। इसी श्रेणी के अन्य कतिपय सपनों का विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है जिससे यही नतीजा निकलता है कि कुछ सपने भविष्य सूचक होते हैं, जिनके कारणों की यदि खोज की जाय तो उनका कोई अर्थ ही नहीं निकल सकता। उपर्युक्त तीन स्वप्नों की शृंखला में विश्लेषणात्मक स्थितियों की पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होती है, अतः इस प्रकार के सपनों का चिकित्सा की दृष्टि से बड़ा महत्व है, और इसलिये

स्वप्न विश्लेषण के माध्यम से उनका अर्थ ठीक-ठीक ढंग से समझा जाना जरूरी है। इस श्रृंखला के प्रथम सपने में विश्लेषक ने परिस्थिति को समझने के बाद रोगी को दूसरे विश्लेषक के पास भेजा था। इस श्रृंखला के दूसरे सपने के अन्तर्गत महिला रोगी अपने सपने का अर्थ समझते हुए यह निष्कर्ष निकालती है कि अब चिकित्सा को स्थगित किया जाना चाहिये। यूंग द्वारा श्रृंखला के तीसरे सपने के विश्लेषण द्वारा रोगी महिला को बड़ी निराशा हुई, किन्तु बाद में यह अनुभव करके उसका हौंसला बढ़ा कि अनेक बाधाओं के बावजूद भी उसने सीमा प्राप्त करने के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है और वह अब दूसरे देश में पहुंच गई है।*

यूंग सपनों को विशेष क्रियाओं की अभिव्यक्ति मानते हैं अतः स्वप्नों में घटित घटना को वह अब महत्व देते हैं। तथा सपनों को हमारे चेतनस्तरीय दृष्टिकोण की बनावट की समझ के लिये मददगार मानते हैं। अतः यूंग की मान्यता है कि स्वप्नों की अवहेलना किये जाने पर हमारी चेतना का एक सम्भाग (अवचेतन) उपेक्षणीय रह जायगा। अतः हमें अपने आप को ठीक ढंग से पूर्ण प्रकार से समझने के लिये स्वप्न विश्लेषण जरूरी साधन है। यदि हम देखे गये सपने पर गंभीरता से ध्यान देंगे तो हमें हमारे चित्त की कतिपय संभावनाओं का ठीक से एक अन्दाज मिल सकेगा।** इसलिये सपना हमारे अवचेतन का सहज तथा अनायास (Involuntary) प्रतिफल (Product) है जिसको हम हमारे स्वभाव-वाणी (The voice of nature) कह सकते हैं। यद्यपि वह प्रायः अस्पष्ट (Obscure) तथा दुरूह रहता है जिसको हमारे लिये ठीक से समझ पाना कठिन है क्योंकि स्वप्नों की अभिव्यक्ति यदाकदा प्रतीकात्मक रूप से होती है, मानो हम किसी पुरातन लिपि को पढ़ रहे हैं। जिस प्रकार एक भाषा विज्ञान शास्त्री (Philologist) किसी शिलालेख की प्राचीन एवं विस्तृत लिपि को पढ़ने के लिये किसी वैज्ञानिक उपकरणों की मदद लेता है। उसी तरह स्वप्नों की दुरुह एवं अटपटी भाषा को समझने के लिए यूंग ने विस्तारण विधि (A method of amplification) की मदद ली है।

स्वप्न को ठीक प्रकार से समझने के लिए स्वप्नद्रष्टा के सन्दर्भ को पूरी जानकारी प्राप्त किया जाना बड़ा जरूरी है। अतः स्वप्न को समझने के लिये हमें स्वप्न द्रष्टा के जीवन तथा उसके दृष्टिकोण को पहले ही समझ लेना चाहिये। उदाहरणार्थ जैसे एक व्यक्ति स्वप्न में अपनी माता को देखता है। माता का सामान्य अर्थ तो सभी को विदित है किन्तु एक व्यक्ति माता को प्रेम, श्रद्धा तथा अपने रक्षण का प्रतीक

---

* Modern man in search of a soul, page 8-9.

** Ibid, page 71. Adims of psychotheraphy Collecte. Works, Vol. 16.

मानता है। किन्तु कोई दूसरा व्यक्ति माता को अनुशासन, क्रोध और नियंत्रण अधिकार की प्रतीक मान बैठता है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपनी माता की एक विशेष पहिचान भी अपने-अपने अनुभवों के प्रकाश में अलग-अलग प्रकार से कर पाता है इसलिए माता को स्वप्न में देखने का अर्थ उक्त स्वप्न द्रष्टा के द्रष्टिकोण के आधार पर ही निकाला जाना योग्य है अन्यथा स्वप्न विश्लेषण का अर्थ ही गड़बड़ा जाएगा। यूंग ने स्वप्न विश्लेषण की कोई निर्धारित प्रणाली को स्थापित नहीं किया है। यूंग प्रत्येक स्वप्न को स्वप्नद्रष्टा के अवचेतन की अभिव्यक्ति मानते हैं और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के सन्दर्भ में ही उसके स्वप्न की अलग-अलग व्याख्या प्रस्तुत किया जाना यूंग की मान्यतानुसार विज्ञान संगत है ।

स्वप्नों की व्याख्या करते हुए यूंग ने अन्य मनोविश्लेषकों द्वारा प्रस्तावित सह-विचार प्रणाली (Free Association method) का समर्थन नहीं किया। यूंग की मान्यता है कि सह-विचार प्रणाली से निःसंदेह मनोग्रन्थियों की तो खोज की जा सकती है किन्तु इस प्रणाली से स्वप्न का अर्थ नहीं समझा जा सकता—क्योंकि स्वप्न तथा मनोग्रन्थी के जुदा-जुदा कारण एवं भिन्न-भिन्न स्थितियाँ हो सकती हैं।

एकांकी अथवा किसी इक्के-दुक्के स्वप्न के विश्लेपण से अवचेतन का एक आंशिक हिस्सा ही उजागर होता है, अतः एक स्वप्न के विश्लेपण से कोई निश्चित सन्तोषजनक अर्थ नहीं निकाला जा सकता। इसलिये स्वप्नों की पूरी एक शृंखला का विश्लेपण किया जाना चाहिये ताकि व्यक्ति विशेष के स्वप्नों की शृंखला के विश्लेपण से उक्त व्यक्तित्व को योग्य प्रकार से समझने में मदद मिल सके तथा उसका अवचेतन अधिक स्पष्टता के साथ समझा जा सके। यदि किसी स्वप्न की बार-बार पुनरावृत्ति होती है तो निश्चयपूर्वक बार-बार देखे गये दृश्य के विश्लेपण से उसके अवचेतन की गहराई की भी सुस्पष्ट जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। इस प्रकार एक बार दीखे स्वप्न के विश्लेपण में यदि कोई त्रुटि है तो दुबारा उसे दीखे उसी स्वप्न की व्याख्या से इस त्रुटि को सुधारा भी जा सकता है। यूंग ने बार-बार देखे जाने वाले सपने के विश्लेपण को निःसन्देह अधिक महत्व दिया है 'जिससे स्वप्नद्रष्टा के जीवन का कोई विशिष्ट पहलू उजागर होता है, जिसकी सम्यक् समझ से चित्त चिकित्सा में बड़ी मदद मिलती है।

स्वप्न विश्लेपण वस्तुपरक (Objective) तथा आत्मपरक (Subjective) दोनों प्रकार से किया जा सकता है। वस्तुपरक स्वप्न का सम्बन्ध स्वप्नद्रष्टा के वातावरण (Environment) से पाया जाता है तथा उक्त वातावरण का स्वप्न द्रष्टा पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसकी जानकारी उपलब्ध होती है, किन्तु आत्मपरक स्तरीय स्वप्नों की आकृतियों (Dream-figures) से उसके व्यक्तित्व के विशेप पहलुओं का ही परिचय मिलता है। यदि एक महिला को सपने में उसका पिता नजर आता है तो इसका यह अर्थ है कि उस महिला की कोई समस्या उसके पिता

के जीवन से जुड़ी हुई है अथवा वह पिता के माध्यम से किसी पुरुष सिद्धान्त (Male-principle) का सामना कर रही है। व्यक्ति के जीवन का प्राथमिक काल उसके द्वारा बाह्य जगत् की समस्याओं को समझने तथा उनके साथ सामन्जस स्थापित करने में व्यतीत होता है इसलिये इन दिनों में उसके स्वप्न प्रायः वस्तुपरक पाये जाते हैं किन्तु अधेड़ावस्था में व्यक्ति को प्रायः अपनी खुद की आन्तरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है अतः उसके उत्तरकालीन जीवन में उसके स्वप्न प्रायः आत्मपरक पाये जाते हैं। अतः जीवन के प्रारंभिक काल में वस्तुपरक एवं उत्तर-कालीन जीवन में आत्मपरक सपनों का विशेष महत्व है। कतिपय ऐसे भी स्वप्न नजर आते हैं जिनका प्रभाव व्यक्तिगत महत्व को लांघ जाता है। इस श्रेणी के स्वप्न प्रायः बड़े सजीव तथा वेगवान् होते हैं तथा जिनकी अभिव्यक्ति प्रतीकों (Symbols) के रूप में होती है। अतः इस प्रकार के प्रतीकात्मक स्वप्नों का संबंध स्वप्न द्रष्टा से जोड़ा जाना कठिन हो जाता है। इनको सामूहिक स्वप्न (Collective dreams) कहा है, तथा इनको समझने के लिये यूंग ने ऐतिहासिक एवं पुराण संगत सादृश्यता एवं मिथकों के अध्ययन की मदद लेना जरूरी माना है। इतिहास तथा पुराणों के अध्ययन से ही हमें यह जानकारी उपलब्ध हो सकती है कि फलां-फलां प्रतीक (Symbol) का किस-किस काल में तथा किस-किस मानव समाज में इसको किस अर्थ में स्वीकारा गया है तथा स्वप्न द्रष्टा द्वारा दिखे इस प्रतीक का अब यहां क्या प्रयोजन है? प्राचीन प्रतीकों के अर्थ को आधुनिक समाज के लिये स्वीकार किया जाना निःसन्देह बड़ा अटपटा प्रतीत होता है किन्तु आज का मानव समाज अपने प्राचीन बुजुर्गों के अवचेतन स्तर से समान रूप से जुड़ा है, अर्थात् हमारे प्राचीन पुरखों के अवचेतन तथा आधुनिक मानव के अवचेतन में बड़ी समानता पाई जाती है। अतः हमें शाश्वत कालीन अनुभवों के प्रकाश में प्रतीकों का अर्थ समझने का प्रयत्न करना चाहिये ताकि हमारी जानकारी अधिक विश्वसनीय स्थायी तथा गहरी हो सके।

व्यक्तिगत अवचेतन एवं सामूहिक अवचेतन स्तरीय स्वप्नों में भेद किया जाना बहुत कठिन है, क्योंकि इन दोनों के बीच कोई सुस्पष्ट तथा अनिवार्य विभाजन रेखा को ढूंढ़ा जाना संभव नहीं। है फिर भी व्यक्तिगत स्तरीय स्वप्नों का सम्बन्ध स्वप्न द्रष्टा के इस जीवन से ढूंढ़ा जा सकता है और व्यक्तिगत की इस परिभाषा में उसके परिवार के सदस्यों, मित्रों के अनुभवों को भी शामिल किया जा सकता है। अतः रोजमर्रा में घटित तथा व्यक्ति एवं उसके परिजनों द्वारा देखे गये स्वप्नों की गणना व्यक्तिगत अवचेतन स्तरीय स्वप्नों के अन्तर्गत की गई है जिनके माध्यम से व्यक्ति के जीवन के किसी पहलू की अभिव्यक्ति होती है।

सामूहिक अवचेतन स्तर से उभरते हुए मूल प्रारूपीय (आर्कीटाइपल) अभिव्यक्ति किये जाने वाले सामूहिक स्वप्नों का महत्व स्वप्न द्रष्टा के अलावा उसके

समाज के सभी लोगों के लिये बड़ा महत्वपूर्ण होता है, ऐसी कार्ल गुस्ताव यूंग की मान्यता है। सामूहिक अवचेतन स्तरीय प्रारूप (आर्कीटाइपल) स्वप्नों का प्रभाव निःसन्देह व्यक्ति के अलावा समूचे मानव समूह पर पड़ता है। प्रायः आदिम मानव समूह अपनी सहजवृत्ति (Instincts) के आधार पर वर्तन करता है, अतः समूह संबंधित स्वप्नों को महत् स्वप्न (Big-dreams) तथा व्यक्ति संबंधित स्वप्नों को लघु स्वप्न (Little dreams) कहा गया है जिसमें महत्-स्वप्न का महत्व एवं प्रभाव अधिक पाया गया है। क्योंकि महत् स्वप्न के माध्यम से सामूहिक ज्ञान तथा तद्-विषयक आवश्यकताओं के स्रोत (Sources) की जानकारी उपलब्ध होती है। श्री रासमुस्सेन ने उत्तरी ध्रुव निवासी पोलर ऐसकीमों (Polar Eskemos) जाति के संबंध में एक पुस्तक लिखी है जिसमें इस जाति के एक व्यक्ति द्वारा देखे गये एक स्वप्न का वर्णन है और एस्कीमो जाति के इस व्यक्ति के स्वप्न के आधार पर वह समूची जाति अपने खाने पीने तथा ठहरने के लिये एक नये क्षेत्र की तलाश करने में सफल हो सकी। मानो व्यक्ति के स्वप्न के द्वारा समूची जाति को भविष्य सूचन (Foretelling prophetic value) किया गया हो। इस भविष्य सूचक स्वप्न के आधार पर इस जाति का पूरा काफिला स्वप्न में निर्देशित नये क्षेत्र या स्थान की ओर चल पड़ा किन्तु इस काफिले के कुछ व्यक्तियों ने जिन्हें इस भविष्य स्वप्न के प्रति अविश्वास था, वापस पुराने स्थान पर लौट आये तो उन्हें स्वप्न में वर्णित भविष्य कथन के अनुसार भुखमरी का शिकार होना पड़ा।

सामूहिक स्वप्नों का पुरातत्व (Antiquity) की दृष्टि से भी बड़ा महत्व है, जहाँ पर स्वप्नों को भविष्य सूचन अथवा चेतावनी (Warning) के रूप में स्वीकार किया गया है। इस प्रकार का स्वप्न विश्लेषण आज के युग में यद्यपि हास्यास्पद प्रतीत हो सकता है फिर भी इस प्रकार के विश्लेषण से अवश्य कुछ नतीजे आज भी निकाल सकते हैं।

राजा के द्वारा देखे गये स्वप्न का प्रजा के द्वारा बड़ा महत्व दिया जाना पाया गया है क्योंकि प्राचीन विचार परम्परा के अनुसार राजा को देश का अधिपति अथवा उसे भगवान का अंश माना जाता था, तथा राजा को ईश्वर तथा जनता के बीच एक मसीहा माना जाता था। फलतः राजा के स्वप्न को ईश्वर की आवाज (The Voice of God) की तरह सन्मान दिया जाता था। एक दंत कथा के अनुसार मिश्र के सम्राट् फेरो (Pharoh) ने एक स्वप्न देखा और इसकी व्याख्या के लिये उसने तत्कालीन विद्वान संत जोसेफ (St. Joseph) को बुलाया। इसका विवरण निम्नानुसार है :—

सम्राट् फेरो जोसेफ से कहते हैं : मैं स्वप्न में एक नदी के किनारे पर खड़ा हूँ, नदी में से सात हृष्टपुष्ट गायें (Kine) निकलती हैं जिनको चरागाह में खिलाया पिलाया जा रहा है। इसके बाद पुनः सात गायें दीख पड़ती हैं जो बड़ी

दुबली पतली और भूखी नजर आती हैं—मैंने इस तरह की दुबली गायें कभी भी मिश्र देश में अकाल के दिनों में भी नहीं देखीं। इन दुबली पतली निर्बल गायों ने पहिले देखी गई सात हृष्ट-पुष्ट गायों को खा डाला—और जब इन दुर्बल गायों ने उनको चट कर डाला तो ऐसा नहीं प्रतीत होता था कि इन्होंने उन तगड़ी गायों को खा डाला है। और ये दुर्बल गायें पूर्ववत् दुर्बल तथा भूखी ही दिखायी दीं। तब मैं एकाएक जाग उठा। "इसके बाद मैं पुनः स्वप्न देखता हूँ कि" एक ही डंठल में सात भुट्टे (Corns) लगे हुए हैं जिनमें भरपूर अच्छे दाने हैं, किन्तु पुनः मैं देखता हूँ कि ये सात भुट्टे मुरझा जाते हैं और ये पतले भुट्टे पूर्वी हवा में उड़ जाते हैं और ये मुरझाये हुए सूखे भुट्टे पहिले दीखे सात उत्तम भुट्टों को डकार(Devoured) कर जाते हैं।" यह सपना मैं केवल तुम जादूगर को ही बतला रहा हूँ क्योंकि कोई भी अन्य व्यक्ति मुझे इसका अर्थ समझा नहीं सकता।"

मिश्र देश के निवासियों के लिये अन्न (Corns) तथा गायों (Kine) का अत्यधिक महत्व है और इनका उल्लेख मिश्र की दंत कथाओं (Myths) तथा उनकी धार्मिक क्रियाओं के संबंध में पाया जाता है। अन्न तथा गाय को जीवन के प्रतीक के अर्थ में माना गया है जो जन्म-मरण अधीन है—जिसका पुनर्जन्म भी होता है, नवसृजन भी होता है, इत्यादि। अतः अन्न एवं गाय को मानव जीवन का (आर्कीटाइपल) प्रतीक माना गया है।* जब सम्राट् फेरों ने इस स्वप्न का अर्थ पूछा तो जोसेफ ने अपनी अंतः प्रज्ञा (Intuition) के आधार पर जवाब दिया कि भगवान ने ही सम्राट् को इस स्वप्न का अर्थ स्वतः स्पष्ट कर दिया है, अर्थात् यहाँ पर सात गायों तथा सात भुट्टों का अर्थ सात वर्ष की अवधि से है जैसा कि सात का अंक स्वप्न में दर्शाया गया है। अर्थात् इस देश में प्रथम सात वर्षों तक तो खुशहाली रहेगी किन्तु बाद के सात वर्षों में यहाँ भयंकर अकाल की स्थिति रहेगी। मिश्र के इतिहास एवं बाइबल से भी इस विश्लेषण का समर्थन पाया गया है। स्वप्न की व्याख्या के अनुसार सचमुच प्रथम सात वर्ष मिश्र में खुशहाली के तथा बाद में सात वर्ष अकाल की भयावह स्थिति रही जैसा कि इसी अध्याय में पहिले विवेचन किया जा चुका है कि किसी इक्के-दुक्के स्वप्न के विश्लेषण से योग्य अर्थ निकाला जाना कठिन है, किन्तु स्वप्नों की शृंखला के विश्लेषण से स्वप्नों का अर्थ पूर्णतया स्पष्ट और बोधगम्य हो सकता है। किसी महत्वपूर्ण स्वप्न के किसी दृश्य का पुनरावृत्ति का यही प्रयोजन है कि स्वप्नद्रष्टा उक्त महत्वपूर्ण सपने के अर्थ को ठीक प्रकार से समझ सके तथा उसकी ओर अधिक गहराई के साथ ध्यान दे।

---

* मिश्र में अन्न (Corn) का देवता ओसीरसि (Osiris) को माना गया है जिन्हें मोटे ताजे बैलों (Bulls) का बाल दी जाती है। (Frezer कृत The Golden Bough).

प्राचीन आदिम मानव (Ancient man) की दृष्टि में स्वप्न को भगवान द्वारा भेजा गया सन्देश कहा गया है, जिसका यदाकदा समर्थन चर्च द्वारा भी किया जाना पाया गया है। किन्तु आज की स्थिति में तो स्वप्न को अवचेतन स्तरीय चित्त की अभिव्यक्ति ही माना जाता है, अतः यहाँ अब उक्त प्राचीन विश्वास का समर्थन नहीं किया जा सकता। आजकल कतिपय मनोवैज्ञानिकों का यह मत है कि स्वप्नों के भौतिक कारण भी होते हैं जैसे अनिद्रा अथवा सोने के पूर्व अधिक गरिष्ठ भोजन किया जाना अथवा असुखकर स्थिति में शयन किया जाना इत्यादि। कभी-कभी निद्रावस्था में स्वप्नद्रष्टा के कपड़ों के इधर-उधर अस्त-व्यस्त हो जाने के कारण भी कुछ सपने नजर आ सकते हैं, किन्तु इस प्रकार के उत्तेजकों (Stimulus) के साथ स्वप्न का संबंध जोड़े जाने से स्वप्न विश्लेषण को ठीक ढंग से कोई सटीक व्याख्या नहीं की जा सकती है। साधारणतः यह आम धारणा है कि दिन में जो घटनायें घटित होती रहती हैं, उसका दिग्दर्शन रात को स्वप्नावस्था में होता है। किन्तु सावधानी-पूर्वक रखे जाने वाले रेकार्ड के आधार पर दैनिक घटनाओं की पुनरावृत्ति स्वप्न में होना प्रायः नहीं पाया जाता। जो घटना दिन में घटित हो चुकी है, उसकी ज्यों का त्यों पुनरावृत्ति स्वप्न में नहीं पायी जाती, अपितु जो अनुभव जाग्रतावस्था में किया गया है उसके कुछ अंशों की जोड़ वाकी स्वप्न में होती हुई देखी गई है। जो चेतन मन के द्वारा घटित घटना के योग्य स्वतः प्रतिपूर्ति है, अतः जाग्रतावस्था के अनुभव तथा निद्रावस्था के स्वप्न दर्शन में निःसन्देह कुछ अन्तर पाया जाता है। यूंग ने इस संदर्भ में एक नवयुवक के स्वप्न का वर्णन किया है जो स्वप्न में अपने पिता को शराव पीकर उधम मचाते हुए देखता है जबकि वास्तविक स्थिति में उसके बाप ने न तो कभी शराव पी और न कभी कोई उधम ही किया था, और इस नवयुवक की नजर में उसका पिता एक आदर्श पिता था तथा उसके तथा उसके पिता के बीच बड़े उत्तम संबंध रहे। वस्तुतः यह नवयुवक अपने पिता में गहरी श्रद्धा रखता था और उनमें पूरा विश्वास था। फिर भी वास्तविक स्थिति के विपरीत वह स्वप्न में अपने पिता को भिन्न अभद्र स्थिति में देखता है।* इस प्रकार पिता की वास्तविक स्थिति तथा उसके द्वारा स्वप्न में देखी स्थिति में विरोधाभास का यही कारण है कि यद्यपि वह नवयुवक अपने चेतनमन से उन्हें एक आदर्श पिता के रूप में अनुभव करता था किन्तु उसे अवचेतन स्तर पर उपद्रवी तथा अनियंत्रित व्यक्ति स्वप्न के माध्यम से नजर आ सकता है। चेतन (Consciousness) तथा अवचेतन (Unconsciousness) चित्त के दो परस्पर विरोधी धर्मी सम्भाग है, अतः जाग्रतावस्था अथवा चेतन-स्तरीय आदर्श एवं उत्तम पिता को स्वप्नावस्था

---

* Modern Man in Search of a Soul, pages 22–24. "Dream Analyses in its practical Applications." Collected Works of C. G. Jung, Vol 16.

में अर्थात् अवचेतन स्तर पर अनियंत्रित एवं उपद्रवी बाप देखा जाना विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की मौलिक अवधारणा का सत्यापन है। अवचेतन सम्भाग यूंग के मतानुसार चेतन सम्भाग का कोई अनुवर्ती हिस्सा नहीं है, अपितु अवचेतन तथा चेतन सम्भाग परस्पर विरोधी एवं चित्त के प्रतिपूरक हिस्से हैं। अतः एक सम्भाग (चेतन सम्भाग) में यहाँ पिता को आदर्श गुणों से सम्पन्न अनुभव किया जाता है, वहीं दूसरे सम्भाग (अवचेतन सम्भाग) में उसी को स्वप्न के माध्यम से दोषपूर्ण देखा जाना आश्चर्यजनक नहीं है। यह स्वप्न जिसके दो परस्पर विरोध धार्मिकता की महत्वपूर्ण विशेषता (Important Characteristic) को ही प्रगट करता है। प्रत्येक स्वप्न में व्यक्ति के चेतन स्तरीय अभिवृत्ति (Conscious Attitude) की प्रतिपूर्ति (Compensation) विरोधधर्मी अवचेतन-स्तरीय अन्तर्वस्तु के होने का रुझान पाया जाता है, अतः क्योंकि चेतन स्तर पर स्वप्न-द्रष्टा नवयुवक की निगाह में पिता जो एक आदर्श व्यक्ति रहा है वही उसके अवचेतन स्तर से उभरते हुए इस स्वप्न को चेतन की प्रतिपूर्ति माने जाने के इस मनोवैज्ञानिक रुझान के फलस्वरूप उसको स्वप्न में वह दोषपूर्ण एवं अनियंत्रित दिखाई देना सहजतापूर्ण है। मानो यह स्वप्न उसे सावचेत कर रहा है कि एक अति भद्र पिता भी यदाकदा सर्वथा विपरीत आचरण कर सकता है। इसके अलावा यह स्वप्न कदाचित् स्वप्नद्रष्टा के गहरे अवचेतन में कदाचित् स्थित इस भय को भी उजागर कर रहा है कि पिता की अतिशय भद्रता के कारण उसका (पुत्र का) सहज विकास नहीं हो सका है। अतः उपरोक्त सभी विकल्पों के प्रकाश में स्वप्नद्रष्टा से गहन विचारविमर्श के पश्चात् ही स्वप्न विश्लेषण के द्वारा स्वप्न का सही अर्थ निकाला जाना योग्य है।

स्वप्न कार्य एक सीधी रेखा के क्रम में आगे नहीं बढ़ता अपितु स्वप्न विश्लेषण का मार्ग कभी-कभी वृत्ताकार (Cricular) पाया जाता है। यदि हम अपनी आदत के वशीभूत होकर किसी सपने का अवमूल्यन (Under Value) करते हैं तो हम कभी-कभी उसकी ऊँची खुशामद भी कर जाते हैं और उसको एक सामान्य व्यक्ति से कहीं अधिक महत्व दे जाते हैं तथा किसी काम को यदि हम अदक्षतापूर्ण अथवा भद्दा समझते हैं तो उसका निष्पादन हम कभी-कभी बहुत योग्यता (Skill) तथा सहजता के साथ कर पाते हैं।

स्वप्न बहुधा हमारे अन्तर में छिपे हुए गुप्त संघर्षों (Hidden Conflicts) को उजागर कर देते हैं तथा हमारे व्यक्तित्व के अज्ञात पहलू (Unknown sides of the character) का दिग्दर्शन करा देते हैं जैसे एक शान्त एवं अहिंसक स्वभाव का व्यक्ति भी स्वप्न में हिंसक, उपद्रवी और बलात्कार करता हुआ भी दिखाई दिया जा सकता है और इस प्रकार स्वप्न की भाषा प्रायः उल्टी भी प्रतीत हो सकती है। इसी तरह कभी-कभी स्वप्नों में दंत कथाओं की तरह अनेक प्रकार के लैंगिक

प्रतीकों (Sexual Symbols) का दिखाई पड़ना स्वाभाविक है।*

कभी-कभी स्वप्नों के माध्यम से हमारी गोपनीय इच्छायें (Hidden desires) भी प्रगट हो जाती हैं और इस शीर्षक के नीचे सभी प्रकार की इच्छाओं की गणना की जा सकती है। इच्छा स्वप्न (Wish-dreams) का विश्लेपण किया जाना बड़ा सरल है—क्योंकि इसकी स्पष्ट व्याख्या की जा सकती है जैसे एक भूखा व्यक्ति स्वप्न में पकवान खाता हुआ नजर आ सकता है और एक प्यासे को स्वप्न में बहता तथा उछलता हुआ पानी नजर आ सकता है।

कतिपय सपने पुरोलक्षी अर्थात् अग्रोन्मुखी (Prospective or Forward looking) भी होते हैं। काल और स्थान (Time and Space) हमारे चेतन मन की मर्यादायें हैं जो सापेक्ष (Relative) हैं, किन्तु हमारे अवचेतन चित्त में काल स्थान की कोई मर्यादा या विचार ही नहीं है। इसलिये अवचेतन में घटित घटना को काल तथा स्थान से परे माना गया है।

पुरोलक्षी स्वप्न का एक सामान्य उदाहरण स्वप्नद्रष्टा के जाग उठना तथा कपड़े पहिन कर तैयार होते देखा जाना है जबकि वस्तुतः व्यक्ति सचमुच बिस्तर में सोया हुआ है तथा घड़ी का अलार्म भी बजकर रुक गया है। किन्तु कुछ पुरोलक्षी सपने अधिक प्रभावकारी भी देखे गये हैं। जैसे एक महिला कहीं दूर यात्रा पर जाने की तैयारी कर रही है और वह स्वप्न में उस अनजान जिले में उस घर पर पहुँच जाती है और वह उस घर के प्रत्येक ठौर ठिकाने तथा पड़ौस तथा उसमें रखे सभी अनदेखे फर्नीचर को भी देख लेती है। जहाँ वह कुछ दिनों के बाद पहुँचने पर पूर्व में देखे गये सपने का ज्यों का त्यों सत्यापन करती है। उसको सपने में यह भी जानकारी हो जाती है कि इस घर को उसके पूर्व निवासियों ने क्यों तथा कैसे छोड़ा। ओसबर्ट सीटवेल (Osbert Sitwell) ने अपनी आत्मकथा जीवनी में इस प्रकार के अनेक उदाहरणों का उल्लेख किया है, किन्तु हम इस प्रकार की स्वप्न घटनाओं को आकस्मिक संयोग (Coincidence) कहकर टाल सकते हैं, तथा इस प्रकार की चित्तीय कार्यकलापों (Psychic activities) पर अविश्वास भी जाहिर कर सकते हैं।

कुछ प्रसंगों पर हमें सावधान किये जाने के सपने भी दृष्टिगोचर होते हैं। जैसे एक पर्वतारोही ने यह सपना देखा कि वह पहाड़ पर ऊँचा चढ़ते-चढ़ते स्पेस (Space) में गिर पड़ा है। उसने इस सपने को अंध विश्वास मानकर इस पर अविश्वास प्रगट किया, किन्तु कुछ दिनों के बाद वह पर्वतारोहण के दौरान गिर पड़ने से मर गया तथा उसके एक सहयोगी साथी के द्वारा उसको वायु (Space) में गिरते

---

* Modern man in search of a soul, page 26. Collected Works of C. G. Jung, Vol 16.

हुए देखे जाने का भी उल्लेख है।* इस प्रकार के सावचेत किये जाने के सपने का वर्णन यूंग ने निम्नानुसार प्रस्तुत किया है—

मैंने एक सपना देखा—मैं एक ऊँचे बर्फीले पहाड़ पर चढ़ रहा हूँ—मैं ऊपर और ऊपर चढ़ रहा हूँ। मौसम बड़ा सुहावना है जैसे-जैसे मैं पहाड़ की ऊँचाई पर पहुँचता हूँ मेरा आनन्द उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। जब मैं पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाता हूँ तब मेरी खुशी की सीमा ही नहीं रहती और मुझे ऐसा महसूस होने लगता है कि मैं एकदम वायु (Air) में पहुँच गया हूँ, और मैं खाली वायु (Space) पर चल रहा हूँ। इसने मुझे भावातिरेक (Ecstasy) हो जाती है और तब यकायक मैं जाग पड़ता हूँ।"

जब पर्वतारोही ने उपरोक्त सपने का वर्णन किया तो मैंने उसे कहा "प्यारे भाई मैं जानता हूँ कि तुम पर्वतारोहण का शौक छोड़ नहीं सकते किन्तु मैं तुम्हें आगाह कर देना चाहता हूँ कि अब भविष्य में कभी तुम अकेले पर्वतारोहण नहीं करोगे और यदि पर्वत पर चढ़ना जरूरी है तो अपने साथ दो गाइड जरूर रखना" मेरी इस सावचेती पर वह हंस पड़ा और वह चला गया, इसके बाद मेरी भेंट उससे नहीं हो सकी।

दो महीनों के बाद एक घटना घटी। जब वह स्वप्नद्रष्टा अकेला पर्वतारोहण कर रहा था तब एक बर्फ की चट्टान सरक आयी और वह इसके नीचे दब गया, किन्तु उसी समय एक सैनिक दस्ता भी वहाँ पहुँच गया जिन्होंने उसको चट्टान के नीचे से निकाल कर बचा लिया।

इस प्रथम घटना के तीन महीने बाद वह सचमुच मौत के गले लग गया, इस बार भी वह बगैर किसी गाइड के एक नवयुवक मित्र के साथ पर्वतारोहण कर रहा था—उसका मित्र उसके पीछे-पीछे चढ़ता गया था। वहाँ एक अन्य पर्वतारोही भी खड़ा था जिसने साफ देखा कि वह ऊपर हवा में यकायक ऊपर उठ रहा है और उसके पीछे चढ़ने वाले नवयुवक मित्र के माथे पर वह गिर पड़ा है और दोनों मित्र पहाड़ से नीचे गिर कर टुकड़े-टुकड़े हो गये थे। मौत को स्वप्न में देखने का अर्थ अनिवार्यतः मर जाना अथवा दुर्घटनाग्रस्त होना नहीं है। मृत्यु का केवल यहाँ प्रतीकात्मक अर्थ ही स्वीकारा जाना चाहिए। मृत्यु हानि (Loss) का प्रतीक है, अतः स्वप्न में मृत्यु दर्शन का अर्थ वस्तुतः जीवन-हानि के बजाय किसी अन्य प्रकार की हानि होने की चेतावनी भी समझी जानी चाहिये, जैसे धन हानि, यश हानि, पद हानि, प्रतिष्ठा हानि अथवा स्वास्थ्य हानि आदि आदि।

यदाकदा सपनों के माध्यम से बरसों पूर्व देखी गई, सुनी गई अथवा पढ़ी गई

---

* Ibid page 17-18, Dream Analysis in its Practical Application. Collected Works, Vol 16.

वस्तुओं का पुनः प्रगटीकरण होता है जो वाद में भूली जा चुकी हैं अथवा पुरानी स्मृतियों की सपनों में पुनरावृत्ति हो जाती है, जिनके सम्बन्ध में यह पता लगाना भी कठिन हो जाता है कि उक्त अनुभव पूर्व में सचमुच घटित हो चुका है अथवा नहीं, किन्तु इस तथ्य का पता लगाना महत्वपूर्ण नहीं है। इस प्रसंग के अन्तर्गत यह निश्चयपूर्वक प्रश्न है कि स्वप्नद्रष्टा को उस विशिष्ट क्षण में यह स्वप्न क्यों दीखा ? और उक्त विशिष्ट अनुभव से स्वप्नद्रष्टा को क्या अनुभूति हुई ?

सपनों के संबंध में एक विचित्र विशेष बात (Curious feature) यह भी है कि कभी-कभी एक ही परिवार के व्यक्तियों की विशेषतः पति-पत्नी को अथवा माता तथा उसके बच्चों को ऐसे ही सपने दीखते हैं जबकि इसके पहिले उन्हें इस बावत कोई जानकारी ही नहीं थी। इससे भी अधिक विचित्र बात यह देखी गई है कि बच्चों को सपनों में उनके माता-पिता की समस्याओं की यथावत् जानकारी मिल जाती है, जबकि माता-पिता ने अपनी समस्याओं को अपने बच्चों से सर्वथा गोपनीय रखा था। इस प्रकार के स्वप्न प्रतीक रूप में प्रगट होते है तथा बड़े सजीव होते हैं। उदाहरणार्थ तीन लड़कियों द्वारा एक सपने का विवरण निम्नानुसार है। यहाँ पर इन तीनों लड़कियों को अपनी स्नेहमयी माता की समस्याओं का परिचय निम्नानुसार हुआ जैसे :—

"जब यह तीन लड़कियाँ युवावस्था (Puberty) के सन्निकट पहुँच गईं तो उन्होंने शर्माते हुए यह स्वीकार (Confessed Shame facedly) किया कि बरसों पूर्व उन्होंने अलग-अलग प्रकार से अपनी माता के बाबत एकसा डरावना (Horrible Dream) सपना देखा था। उनको स्वप्न के दौरान में उनकी माता की आकृति दैत्याकार जादूगरनी (Witch दिखी तथा वह किसी भयावह पशु की तरह गुर्राती हुई नजर आई, जो उनकी समझ से परे है। वस्तुतः वह माता अपनी लड़कियों के प्रति बड़ी संवेदनशील स्नेहमयी तथा सुन्दर थी और इन लड़कियों एवं उनकी इस माता के बीच में बड़े प्रेममय मधुर सम्बन्ध थे। किन्तु कुछ बरसों के बाद सचमुच वह माता यकायक पागल हो गई और वह अपने पागलपन के दौरान में अपनी पुत्रियों की ओर सुअर की तरह घुरघुराने (Grunting) कुत्तों की तरह भौंकने (Barking) तथा रीछ की तरह गुर्राने (Growling) लगी।"* एक ही माता की तीन बेटियों द्वारा अलग-अलग समय पर अपनी स्नेहमयी सुन्दर माता को इस प्रकार से एक भयावह शक्ल में प्रत्येक लड़की के द्वारा सपने के दौरान में देखा जाना तथा कुछ अर्से बाद इन तीनों बेटियों द्वारा जिस प्रकार भयावह दिखी थी उसी तरह उक्त माता का कुछ समय के बाद भयानक पागल हो जाना निःसन्देह एक बहुत आश्चर्यजनक घटना है। क्योंकि अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा अलग-अलग समय पर देखा गया एक सा दृश्य पर्याप्त समय के बाद यहाँ एक सच्ची हकीकत बन गया था। यूंग

* The development of Personality. Collected Works, Vol 17.

ने इस घटना का सजीव वर्णन प्रस्तुत किया है, किन्तु इस प्रकार के स्वप्न के कारणों पर उसने कोई प्रकाश नहीं डाला।

सबसे अद्भुत तो वे सपने हैं जो स्वतः अवचेतन स्तर से उभरते हुए प्रतीत होते हैं और इनके द्वारा किसी अभूतपूर्व दृश्य (Completely Strangeness) का प्रकटीकरण या प्रतीति इतनी सजीवता (Vividness) के साथ होती है कि हमको अपना ध्यान उस पर केन्द्रित करने के लिए बाध्य हो जाना पड़ता है। कभी-कभी इस अलौकिक दृश्य के द्वारा हमारे अवचेतन को उस ज्ञान का संकेत प्राप्त होता है जो हमारी चेतन स्तरीय अभिवृत्तियों को समूचे रूप में यकायक बदल देती है। इस प्रकार स्वप्न में प्रदर्शित इस अभूतपूर्व दृश्य का इतना अधिक प्रभाव देखा गया है कि स्वप्नद्रष्टा का समूचा व्यक्तित्व बगैर किसी विश्लेषण के पूर्णतः बदल जाता है। इस प्रकार एक मध्यमवय प्राप्त बुद्धिजीवी महिला द्वारा देखे गये एक स्वप्न का वर्णन निम्नानुसार है— यथा,

"मैं एक विशाल खाली मन्दिर में खड़ी हूँ। इस मन्दिर के एक सिरे पर भगवान की एक विशाल मूर्ति स्थापित है। मेरे साथ एक लम्बा पुजारी अपनी परम्परागत वेशभूषा में खड़ा है। सम्पूर्ण वातावरण मिश्री अथवा चीनी देशीय है; हम एक सिरे पर प्रतिस्थापित विशाल मूर्ति की ओर विस्तृत खाली जगह में अग्रसर हो रहे हैं—हम उस ओर चल (Walk over) रहे हैं। कुछ कदम चलने के बाद मैं मुंह के बल गिर पड़ती हूँ, तब वह पुजारी भगवान को पुकारते हुए कहता है कि यह महिला रोगग्रस्त है और वह पुजारी जोर से मेरी ओर से पाप स्वीकृति (Confession) करता है। हमारी बढ़ने की गति बहुत ही धीमी और शान्त है किन्तु मैं यह अनुभव कर रही हूँ कि मुझे इस बाबत सन्देह सा हो रहा है और वह धार्मिक कृत्य मुझे बड़ा विचित्र प्रतीत होता है और मन्दिर में वह भगवान मूर्ति केवल एक पत्थर मात्र है। अन्ततोगत्वा हम वहाँ अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। मूर्ति के चारों तरफ पत्थरों की सीढ़ियां बनी हुई हैं जिन पर चढ़ कर हम मूर्ति के पृष्ठ भाग में पहुँच जाते हैं। वहां पर एक बार मैं मन्दिर से जाने के पूर्व जब मूर्ति की ओर देखती हूँ तो मुझे मूर्ति घूमती हुई नजर आती है और वह मूर्ति जब मेरी ओर देखती है तब मैं श्रद्धा तथा डर से अभिभूत होकर अन्त में अपने मुंह के बल गिर पड़ती हूँ और तब वहां मुझे श्री भगवान के दर्शन होते हैं; जिनकी मुझ पर कृपा वर्षा होने लगती है। उक्त वक्त कोई फुस-फुसाते हुए कहता है कि यह सब केवल एक चालबाजी मात्र है क्योंकि मूर्ति के चारों तरफ एक मशीन लगी हुई है जिसके कारण मूर्ति का मुंह इधर-उधर घूम-फिर जाता है। किन्तु इसी दौरान में मुझे यह अनुभूति होने लगती है कि चाहे मूर्ति में मशीन लगी हुई हो तथा इस प्रकार कोई चालाकी भी की गई हो, फिर भी इस मूर्ति में निःसन्देह भगवान का अस्तित्व है और मुझे श्री भगवान के सानिध्य सुख का अनुभव हो रहा है। उस समय मुझे अजीब दिव्यानुभूति होने लगती है और मैं श्री भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा प्रगट करते हुए

गदगद हो उठती हूं और इस श्रद्धा तथा उसके प्रति विनय की भावना के साथ मैं वह स्थान छोड़ देती हूं ।"

विश्लेपणात्मक चित्त चिकित्सा के दौरान में स्वप्न दर्शन का बड़ा महत्व है । क्योंकि स्वप्न के माध्यम से ही स्वप्नद्रष्टा को सभी आन्तरिक एवं अधिकांशतः वाह्य परिस्थितियों का परिचय प्राप्त होता है जिनसे अब तक स्वप्न-द्रष्टा सर्वथा वेखबर (Unaware) था । विश्लेपण के दौरान में प्रथम स्वप्न दर्शन से रोगी को उसकी तत्कालीन समस्या का पता चलता है, तथा उक्त स्वप्न में उसके समाधान का भी संकेत प्रायः प्राप्त होता है । सपनों के पुरोलक्षी (Forward looking) लक्षणों के साथ रोग के कारणों की भी स्वप्नद्रष्टा की जानकारी हो सकती है इसलिये यूंग का यह आग्रह रहा है कि उक्त जानकारी के प्रकाश में न केवल स्वप्न के प्रयोजन की खोज की जाय अपितु व्यक्ति द्वारा विस्मृत स्मृतियों (Forgotten memories) तथा उसकी तात्कालीन समस्याओं का भी पता लगाया जाना चाहिये तथा विशेषतः व्यक्तिकरण प्रक्रम के अन्तर्गत लक्षित स्वप्नों (Individuation dreams) के माध्यम से ही व्यक्तित्व विकास के लक्ष्य (Goal) की ओर भी अग्रसर होना चाहिये ।

विश्लेपण कार्य के दौरान में प्रारम्भिक सपना अपेक्षाकृत सरल तथा सुस्पष्ट होता है, तथा उसका तत्कालीन प्रभाव भी अधिक पाया जाता है; किन्तु जैसे-जैसे स्वप्न विश्लेपण का कार्य आगे बढ़ता है तब सपने प्रायः सुस्पष्ट, जटिल तथा दुरूह नजर आते हैं, जिनका अर्थ समझना प्रायः कठिन हो जाता है ।

अतः इस स्तर पर स्वप्न विश्लेपण के लिये पुराण विद्या की विषय-वस्तु (Mythological themes) की योग्य जानकारी का उपयोग किया जाना लाभप्रद है । इस प्रकार विश्लेपण का क्षेत्र, स्वप्नद्रष्टा के अनुभवों तक ही सीमित नहीं रहकर इसमें पुराण विद्या की जानकारी का समावेश कर दिये जाने के फलस्वरूप निःसन्देह अधिक विस्तृत हो जाता है । कभी-कभी स्वप्न विश्लेपण कार्य एवं पुराण विद्या के अध्ययन के बीच किसी प्रकार का जब कोई संबंध नहीं जुट पाता तो पुराण विद्या का उपयोग स्वप्न विश्लेपण के लिए प्रभावकारी ढंग से किया जाना संभव नहीं हो पाता फिर भी स्वप्नद्रष्टा के वैयक्तिक अनुभवों का सादृश्य जब पुराण विद्या अथवा दंत कथाओं की किसी घटना से जब मिलान पाया जाता है तो इनसे मानव-समाज में परम्परा से चलते आ रहे मानव-व्यवहार एवं उसके अर्थ की जानकारी होने लगती है, जिनके सम्यक् उपयोग से स्वप्नद्रष्टा अपनी जटिल एवं क्लिष्ट सपनों का भी अर्थ समझने में मदद ले सकता है ।

यूंग ने रोगी पर किसी भी व्याख्या (Interpretation) को लादे जाने का सदैव विरोध किया है । यूंग की सलाह है कि स्वप्न विश्लेपण के दौरान में विश्लेपक चिकित्सक को केवल तटस्थ भाव से स्वप्नद्रष्टा को अपने ही स्वप्नों के

सपनों को निकालने तथा इन्हें समझने का स्वतंत्रता-पूर्वक अवसर देना चाहिये और उसको केवल यह देखते रहना चाहिये कि किस प्रकार स्वप्नद्रष्टा अपनी समस्याओं का आज खुद समाधान ढूंढ़ रहा है। विश्लेषक चिकित्सक को तो एक तटस्थ द्रष्टा की तरह रोगी की यथा आवश्यकतानुसार निःसन्देह मदद करनी चाहिये तथा रोगी को सावधानी के साथ उसके द्वारा देखे गये सपने एवं घटना अनुभवों का यथा-विधि रेकार्ड रखने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। विश्लेषक एवं रोगी के बीच योग्य सहकार को यदि ईमानदारी के साथ निर्वाह किया जायगा तथा उनको आपस में विचार-विमर्श किया जायगा तो निःसन्देह योग्य समझ अथवा उसके निष्कर्षों या नतीजों को निकाला जा सकेगा। अतः विश्लेषक का यह कर्त्तव्य है कि वह रोगी को उसके अवचेतन स्तरीय सामग्री का उपयोग करने में मदद देवे और यह इस बाबत रोगी का योग्य मार्गदर्शन करता रहे। विश्लेषक को एक कलागुरू की तरह रोगी को केवल एक रूपरेखा अथवा मोडल ही बतलाना है ताकि रोगी चित्रकारी में अपनी समझ के अनुसार उनमें योग्य रंग भर सके। अवचेतन की यथावत् अभिव्यक्ति प्रायः आदिम (Primitive) रूप में पायी जाती है, अतः यदि इसमें आवश्यक हेरफेर, सुधार संशोधन किये जायेंगे तो समूची तस्वीर की शक्ल ही बदल जाने की आशंका हो जायगी। इसलिये विश्लेषक को पूर्णतया तटस्थ रहते हुए रोगी को स्वतंत्रतापूर्वक अपने ही अनुभवों से सीखने, समझने तथा कुछ अंशों में अपने व्यक्तित्व का विकास करने की स्वतन्त्रता प्रदान की जानी चाहिये ताकि रोगी अपने जीवन का अर्थ समझते हुए अपने व्यक्तित्व का योग्य विस्तार तथा विकास कर सके। रोगी ही अपनी समस्याओं को गहराई से किसी अन्य की अपेक्षा अधिक गहराई तथा सच्चाई के साथ समझ सकता है और इस समझ का उपयोग करते हुए वह स्वतः इन समस्याओं का हल अथवा समाधान निकाल सकता है। विश्लेषक के सक्रिय सहयोग से ही रोगी स्वयं की स्वैरकल्पना (Fantasy) की दिशाहीन भटकनों से स्वयं को बचा सकता है तथा अपनी समस्याओं के तनावों से भी राहत प्राप्त कर सकता है क्योंकि स्वप्न न केवल अवचेतन स्तरीय सूचनाओं का ही आधार है, अपितु स्वप्न उसकी रचनात्मक भूमिका (Creative power) का भी आधार एवं मुख्य स्रोत (Source) है।

———

अध्याय 17

स्वप्न विश्लेषण एवं सक्रिय कल्पना
(Dream Analysis and Active Imagination)

नि:सन्देह विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सामूहिक अवचेतन का सविशेष महत्व है। यूंग की मान्यता है कि सामूहिक अवचेतन में आदिम मानव की सनातनकालीन चित्त वृत्तियां एवं अनुभवों का भण्डार अव्यक्त बीज रूप में मौजूद रहता है, जिनका अनुभव व्यक्ति अपने चेतन स्तर पर नहीं कर पाता किन्तु इनकी हलचलों का अनुभव यदाकदा वह अपने स्वप्नों के माध्यम से कर पाता है। जिसको मूल प्ररूपीय या आर्कीटाइपल अनुभूति कहा जा सकता है। 'आर्कीटाइप' सामूहिक अवचेतन स्तरीय का अव्यक्त अनुभव बीज है जिसका खुलासा या व्याख्या व्यक्तिगत अवचेतन के संदर्भ में भी नहीं की जा सकती। क्योंकि इसका प्रभाव कार्य-कारण के सिद्धान्त से परे माना गया है। सामूहिक अवचेतन स्तरीय इन आर्कीटाइपों को अत्यन्त शक्ति सम्पन्न एवं प्रभावशील माना गया है जिसका व्यक्तित्व पर होने वाले गहरे असर का केवल अनुभव ही किया जा सकता है किन्तु इसकी योग्य व्याख्या किया जाना उसके लिए भी कठिन है जब तक कि वह पुराण विद्या (Mythology) तथा दंतकथाओं की गहरी जानकारी से योग्य मदद न ले। क्योंकि पुराण विद्या के ज्ञान के आधार पर ही स्वप्न में दीखे प्रतीकों की योग्य व्याख्या की जा सकती है। स्वप्नों की भाषा प्राय: बड़ी दुरुह, अस्पष्ट एवं प्रतीकात्मक रहती है जिनकी योग्य समझ के लिए संबंधित पुराण विद्या की सम्यक् जानकारी होना बहुत जरूरी है क्योंकि स्वप्न के प्रतीकों को केवल पुराण विद्या में वर्णित प्रसंगों के प्रकाश में ही समझा जा सकता है। अतः विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सदियों से व्यवहृत पुराण विद्या तथा दंत कथाओं की पूर्ण जानकारी के साथ ही स्वप्न विश्लेषण किया जाना योग्य माना गया है।

यूंग ने स्वप्न विश्लेषण और सक्रिय कल्पना प्रणाली (Active Imagination Method) को सुस्पष्ट करने की दृष्टि से एक तीस वर्षीय बुद्धिजीवी एडवोकेट का निम्न उदाहरण प्रस्तुत किया है—

एक तीस वर्षीय बुद्धिजीवी एडवोकेट यूंग के पास अपने रोग के इलाज के लिए उपस्थित हुआ। वह मुख्यतः चिन्तन वर्ग (Thinking type) का व्यक्ति था और अन्तःप्रज्ञा (Intution) उसकी सहकारी अभिवृत्ति (Attitude) थी। जब वह 18 वर्ष का था तो एक नाचघर में उसे एक लड़की के सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त हुआ और वह उस पर आसक्त हो गया। किन्तु वह लड़की उसके साथ बातचीत करने के लिए भी राजी नहीं हुई। अतः वह रात दिन उसके बाबत स्वैर कल्पनायें करने लगा और बरसों तक उसे सर्वत्र वह लड़की ही दिखाई देने लगी और वह बड़ा निराश, दुःखी और चिड़चिड़ा हो गया तथा अन्ततोगत्वा वह छिन्न मस्तकता रोग (Schizophrenia) का शिकार हो गया। यूंग ने उसकी चित्त चिकित्सा के दौरान में यह पता लगाया कि वह 12 वर्ष पूर्व उक्त लड़की की भेंट मात्र से मजनू नहीं बना है, अपितु वस्तुतः वह असामान्य प्रकार से अपनी माता के प्रति अत्यधिक आसक्त भावना (Mother fixation) से ग्रस्त था और जब वह अपनी माता के प्रति अपनी आन्तरिक घनिष्ट भावनाओं का निर्वाह नहीं कर पाया तो वह अपनी अनियन्त्रित भावनाओं का प्रक्षेपण (Projection) उस लड़की पर कर बैठा और रातदिन उसके ही चिन्तन एवं स्वैर कल्पनाओं (Phantasies) के ताने बाने बुनता रहा और इस दौरान में किसी भी महिला के साथ वह काम सम्बन्धी (Sexual relations) सम्पर्क नहीं कर पाने से परेशान और छिन्न मस्तकता का शिकार हो गया। यूंग ने तीन महीनों तक उसके रोग की खोज करते हुए उसको दिखाई पड़ने वाले सभी स्वप्नों का अध्ययन किया। चित्त चिकित्सा के दौरान में इस व्यक्ति द्वारा देखे गये स्वप्नों का विवरण निम्नानुसार है—

"मैं एक बड़े भोज में सम्मिलित हूं किन्तु यहां का वातावरण मेरे लिए बहुत उबाने वाला (Boring) है, अतः मैं पास के एक कमरे में चला जाता हूँ। इस कमरे के एक कोने में दो खिलौने हैं जिनमें मैं खेलने लग जाता हूं। इनमें से एक खिलौना (Toy) सामान्य कदकाठी की एक मादा रीछ का है तथा दूसरा खिलौना एक भेड़िया है। जिसकी कदकाठी मादा रीछ की अपेक्षा लगभग एक चौथाई है। भेड़िया खिलौने के तीखे पंजे (Sharp claws) हैं। जो मुझे बड़े सजीव एवं खतरनाक प्रतीत होते हैं और इन पंजों के बाबत मैं सोचता हूं कि वह भेड़िया इन पंजों से रीछ की गर्दन को कहीं खरोंच न दे। इसलिए मैं इन पंजों से मादा रीछ को बचाये रखने की कोशिश करता हूं। किन्तु बाद में खिलौना भेड़िया इन पंजों को रीछ की खाल तक पहुंचने देता है तो मैं भेड़िये से यह कहता हूं कि मादा रीछ को कोई नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए। इस पर एकायक वह भेड़िया मेरे हाथों से खिसक जाता है और वह पहिले उस कमरे से तथा बाद में उक्त मकान से बाहर निकल जाता है, और तब उक्त भेड़िये की कदकाठी तत्काल बढ़ जाती है और भेड़िया बढ़ते-बढ़ते एक आदिम कीड़ा (Premodial worm) बन जाता है और बाद में एक विराट विकराल सर्वाकार

दैत्य बनकर सम्पूर्ण दुनियां को अपनी लपेट में ले लेता है। यह सर्पाकार विकराल दैत्य मानव का शत्रु है।

रोगी उपरोक्त स्वप्न से अत्यन्त प्रभावित हुआ था यद्यपि वह इसके सन्दर्भ को ढूंढ पाने में असमर्थ रहा। जब यूंग ने उसको स्वप्न में दिखे दैत्याकार सर्प जो दुनियां को अपनी लपेटे में ले रहा है, इस आशय को प्रदर्शित करने बाबत कोई चित्र बनाने का परामर्श दिया तो वह इस प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिये तत्काल राजी हो गया और दो दिन बाद इस रोगी ने एक चित्र के बजाय पांच चित्र सहजता से बना डाले जिन्हें उसने यूंग के सन्मुख प्रस्तुत किये। उसने यूंग को यह भी बतलाया कि यह सब चित्र स्वतः उसने बिना किसी की मदद के सहजता के साथ बनाये हैं। उसे पांचवें चित्र के निर्माण के बाद अत्यन्त कार्य संतोष एवं मानसिक तनाव मुक्ति का सुखद अनुभव हो रहा है। उपर्युक्त उदाहरण के अन्तर्गत रोगी को स्वप्न के माध्यम से उसकी अवचेतन स्तरीय समस्या की झलक मिली तथा स्वप्न में अभिव्यक्त समस्या के प्रतीक के स्वतः चित्रांकन से उसकी जटिलतम समस्या के स्वतः समाधान का रास्ता भी निकल गया। जिसके कारण रोगी को अपने अवचेतन स्तरीय तनाव में उल्लेखनीय कमी होने का सुखद अनुभव हुआ। उपरोक्त दृष्टान्त (उदाहरण) द्वारा सक्रिय कल्पना (Active Imagination) की प्रक्रिया पर योग्य प्रकाश पड़ता है। जब व्यक्ति के गहनतम सामूहिक अवचेतन स्तर में ही उसकी जटिलतम समस्याओं की स्थिति तथा उसके विश्लेषण के दौरान में स्वप्न के माध्यम से उसे चेतन स्तर पर उसको समाधान की सहज स्वतः अभिव्यक्ति होती है तथा स्वप्न के प्रदर्शित प्रतीकात्मक आकृति को जब वह बार-बार चित्रांकन द्वारा व्यक्त करता है तब उसके सामूहिक अवचेतन में दबा हुआ भावावेश चित्र के माध्यम से व्यक्ति के चेतन स्तर पर बाहर उभर कर उसको उसके अवचेतन की अन्तर्वस्तु की योग्य जानकारी प्राप्त हो जाती है। अतः सामूहिक अवचेतन स्तरीय आर्कीटाइप का चित्र के रूप में चेतन स्तर की पहिचान हो जाने से निःसन्देह उस रोगी को तनाव के कष्ट से उल्लेखनीय अंशों में मुक्ति मिल जाती है। यूंग ने स्वप्न विश्लेषण तथा सक्रिय कल्पना अभ्यास को ही चित्तीय चिकित्सा का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी साधन माना है।

उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से यूंग ने सक्रिय कल्पना (Active Imagination) की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है। इन प्रतीकात्मक स्वप्न दर्शन से यही निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्ति के गहनतम सामूहिक अवचेतन में युगों से संचित अनुभव बीज जो अव्यक्त रूप से पड़े रहते हैं जिनका कोई आभास या संकेत व्यक्ति को अपने चेतन स्तर पर नहीं हो पाता, अतः वह इनके स्वरूप की गैर जानकारी के कारण एक प्रकार की आन्तरिक घुटन तथा तनाव का अनुभव करता है। एक योग्य निष्णात मनोचिकित्सक के सानिध्य से जब रोगी, विश्लेषक के साथ अपनी अनुभूति के

सम्बन्ध में परस्पर सहयोग की भावना से विचारविमर्श करता है और अवचेतन स्तरीय गोपनीयता का जब स्वप्न के माध्यम से रोगी स्वप्नद्रष्टा के चेतन स्तर पर उभार होता है तथा निष्णात विश्लेषक द्वारा उसके द्वारा दिखे स्वप्न के वैज्ञानिक व्याख्या से अवचेतन स्तरीय भावावेश के प्रतीक का अर्थ समझ लिया जाता है तो वह विश्लेषक के परामर्श से जब रोगी स्वप्न में अभिव्यक्त उक्त प्रतीक को आत्मसात् करते हुए, सहज प्रकार से उसका चित्रांकन करता है तथा उसकी जब वह बार-बार पुनरावृत्ति करता है तो उसके अन्दर का तनाव चेतन स्तर पर फैल कर उसको कार्य सन्तुष्टि तथा तनाव मुक्ति का सुखद अनुभव प्रदान करा देता है। जैसे चिकित्सक शरीर के अन्दर एक फोड़े को पहले पका कर उसे ऊपरी सतह पर लाता है तथा बाद में उस फोड़े को चीर कर उसका अन्दरुनी मवाद निकाल कर रोगी को पीड़ा से मुक्त कराता है। अवचेतन स्तरीय आर्कीटाइप अन्दरुनी फोड़े की तरह है जिसको ऊपरी स्तर पर लाकर ही शल्य क्रिया द्वारा उसका मवाद निकाले जाने से ही रोगी को कष्ट से मुक्ति का अनुभव हो सकता है।

इसी प्रसंग में तीस वर्षीय बुद्धिजीवी एडवोकेट के द्वारा देखे गये स्वप्न का विश्लेषण विवरण यहां प्रस्तुत किया जाना भी उपयोगी है। यूंग ने प्रवर्धन (विस्तार-वादी) प्रणाली (Amplification method) का उपयोग करते हुए उपरोक्त स्वप्न का निम्नानुसार विश्लेपण प्रस्तुत किया है—

इस स्वप्न को तीन मुख्य प्रसंगों (Episodes) में बांटा जा सकता है। (1) वह भोज जहां पर स्वप्न द्रष्टा ऊब गया था। (2) स्वप्नद्रष्टा का पास वाले कमरे में जाना जहां वह पशुआकृति के दो खिलौनों के साथ खेलने में प्रवृत्त हो जाता है, तथा (3) एक भेड़िया आकृति का खिलौना उसके हाथ से सरक कर कमरे के बाहर निकल जाता है तथा उक्त खिलौने भेड़िया का पहले आदिम कीड़े में बदल जाना तथा बाद में उस कीड़े का पुनः सर्पाकार राक्षस (Serpent-dragon) के रूप में परिवर्तित हो जाना।

स्वप्न निःसन्देह स्वप्नद्रष्टा की वास्तविक तत्कालीन स्थिति को प्रतीक के रूप में स्वतः (प्रगट) करता है। अतः सर्वप्रथम विश्लेपक को यह पता लगाना चाहिए कि स्वप्नद्रष्टा के चेतन स्तर पर उसकी क्या अभिवृत्ति (Attitude) है ताकि इसकी प्रतिपूर्ति (Compensation) के रूप में अवचेतन से भाव उभार की अपेक्षा की जा सके। क्योंकि यूंग की यह मान्यता है कि चेतन स्तरीय कमी की प्रतिपूर्ति अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु के उभराव से हो सकती है। इस सपने में स्वप्न-द्रष्टा भोज से ऊबा हुआ (Bored) अनुभव करता है जिसका अर्थ यही है कि स्वप्न-द्रष्टा अपने रसहीन सामाजिक जीवन की क्षति पूर्ति के लिए अपने अवचेतन की मदद चाहता है। 'भोज पार्टी' उत्तम सामाजिक जीवन निर्वाह की प्रतीक है। भोज पार्टी उसके दिन प्रतिदिन के जीवन व्यवहार की प्रतीक है जिससे यह स्वप्नद्रष्टा

संतुष्ट नहीं है अर्थात् उसका अहम् अपूर्ण या अधूरा रह गया है। अहम् का विस्तार तथा उसकी सन्तुष्टि किया जाना व्यक्तित्व विकास की प्रमुख अनिवार्यता है, किन्तु क्या व्यक्ति को अपने अहम् के विस्तार तथा सन्तुष्टि के लिए अपने भावपक्ष एवं स्वाभाविकता को बलि पर चढ़ा देना चाहिये? यही प्रमुख समस्या है अहम् का क्षेत्र व्यक्तित्व का ऊपरी स्तरीय चेतन संभाग मात्र है जिसके धरातल में अनेक शक्तिशाली अनभोगी सहज वृत्तियों एवं इच्छाओं का संग्रह है जो कि उक्त व्यक्ति का अवचेतन स्तर है। इस तीस वर्षीय बुद्धिजीवी एडवोकेट में केवल एक तरफा उसके चिन्तन क्षेत्र का पर्याप्त विकास हुआ है, और उसका भावपक्ष सर्वदा उपेक्षित या अधूरा रह गया है, अतः उसके व्यक्तित्व का केवल एक तरफा खण्डीय विकास ही हुआ है और उसका व्यक्तित्व समग्रता की ओर नहीं बढ़ सकता है। कोई भी जीवन पूर्ण अथवा समग्र नहीं समझा जा सकता यदि उसके किसी भी पक्ष को विस्तृत या दबा दिया जावे अथवा उसे लम्बे समय तक उपेक्षित रखा जावे। तथा इस अपूर्ण अथवा खण्डित जीवन का समाज के साथ भी योग्य प्रकार से समयोजन नहीं हो सकता है इसलिये उक्त बुद्धिजीवी एडवोकेट सामाजिक भोज पार्टी से दमघोटू परेशानी (Boring) का अनुभव करता है—जिसके फलस्वरूप वह सन्निकट एक कमरे में खिसक जाता है जहां वह खिलौने से मन बहलाव करने की कोशिश करता है, किन्तु इस खेल में उसे किसी भी प्रकार की वास्तविकता या नवीनता अथवा आत्म सन्तुष्टि का कोई अनुभव नहीं हो पाता तो वह अपने समूचे दैनिक जीवन को ही बदल देना चाहता है। कसौटी के इस क्षण में खिलौना भेड़िया भी उसके हाथ से सरक कर बाहर भाग निकलता है और भेड़िया पहिले आदिम कीड़े का और बाद में विकराल सर्प में तथा अन्त में जाकर एक भयानक राक्षस (Dragon) के रूप में बदल जाता है और अन्ततोगत्वा वह अनुभव करने लगता है कि इस राक्षस ने सम्पूर्ण मानवता को दबोच लिया है।

इस स्वप्न के तीन हिस्से हैं (1) भोज पार्टी (2) खिलौना का कमरा, तथा (3) कमरे के बाहर रूप परिवर्तन। जो यूंग के विश्लेषण के अनुसार रोगी के भूतकालीन, वर्तमान कालीन तथा भविष्यकालीन इन तीनों स्थितियों के परिचायक हैं। भोज पार्टी उसकी प्रारम्भिक समस्या है कि वह जीवन से ऊब गया है, अतः मनस्ताप (Neurosis) उसका भूतकालीन जीवन है। इससे परित्राण पाने वह पास के कमरे में जाता है जो उसकी वर्तमान स्थिति को बतलाता है कि रोगी अपनी समस्या के समाधान के लिए पशु आकृति के खिलौनों से मन बहला रहा है। बाद में जब वह बाहर निकल कर नई दृष्टि की कामना करते हुए अपनी समस्या से छुटकारा पाना चाहता है तो उसका भेड़िया कीड़े में तथा कीड़ा बाद में सर्प और राक्षस में बदलता हुआ नजर आता है जो उसके भविष्य का सूचक है।

यूंग ने इसी प्रसंग में यह स्पष्ट किया है कि सपने में देखे जाने वाला पशु

(Animal) व्यक्ति की सहज प्रवृत्ति (Instinct) का प्रतीक है। पशु का स्तर मानव से नीचा (Sub-human) है, अतः पशु का अर्थ हमारी सहज प्रवृत्तियाँ तथा हमारे स्वभाव में निहित पशुवृत्ति है। पशु प्रतीक के माध्यम से ही मानव की सहज जीवन शक्ति (Instinctual libido) के सहज प्रवाह का बोध होता है। अर्थात् हमारा सम्पूर्ण अवचेतन पशु के प्रतीक के रूप में ही हमें स्वप्न में दृष्टिगोचर होता है।* इस प्रसंग के अन्तर्गत उक्त बुद्धिजीवी एडवोकेट को स्वप्न में (अ) मादा रीछ, (ब) भेड़िया (स) सर्प दिखाई दिये हैं जो क्रमशः मातृत्व, विनाशकारी लालच तथा पुनर्जन्म एवं अमरत्व के प्रतीक हैं।** जो मादा भालू, भेड़िया तथा सर्प दर्शन का सही अर्थ है। जिसका निश्चयन बगैर स्वप्नद्रष्टा के सहयोग के कठिन है। प्रस्तुत स्वप्न विश्लेषण के दौरान में स्वप्न द्रष्टा द्वारा उसके द्वारा देखे गये जानवरों के प्रतीक निर्धारण के बाबत कोई जानकारी प्रस्तुत नहीं की गई थी। अतः उपरोक्त प्रतीक निर्धारण के लिए यूंग ने प्राचीनकालीन धार्मिक क्रियाओं एवं पुराण विद्या (Mythology) के अध्ययन से मदद ली। यूंग ने कथनानुसार प्राचीन ग्रीक पुराण एवं पुरातत्व में मादा रीछ द्वारा पशु पालन किये जाने के अनेक उदाहरण पाये जाते हैं। पुराने जमाने में एथेन्स नगर की पांच से दस की आयु की बालिकाओं को रीछ की खाल के कपड़े पहनाकर प्रति वर्ष पूजा की जाती थी तथा इन बालिकाओं को अरकटोई (Arkotoi) अथवा "मादाभालू" कहा जाता था। इसी प्रकार केल्टिक (Celtic) संस्कृति में भालू देवी आरटीओ (BearGoddess Artio) का उल्लेख है जो अपने बच्चों का बड़े दुलार के साथ पालन करती है तथा इस सत्य का वर्णन प्राचीनकालीन लेखक प्लीनी तथा प्लूटार्क (Pliny & Plutarch) ने बड़ी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है। इस प्रकार मादा रीछ को मातृत्व का प्रतीक कहा जाना कोई सनक नहीं है, अपितु यह यूंग द्वारा इतिहास एवं पुराणों के गहन अध्ययन के आधार पर निकाला गया निष्कर्ष है।

भेड़िये प्रतीक का निर्धारण भालू माता के निष्कर्ष की अपेक्षा कुछ जटिल है। मादा भेड़िये के भी मातृत्व पक्ष का प्रतिपादन प्राचीन ग्रन्थों में पाया जाता है किन्तु मादा भालू को जहां दयालू माता ही बखाना गया है, वहां मादा भेड़िया को खूंखार माता बताया गया है। रोमन माइथोलॉजी में यद्यपि माता भेड़िया को उस शाश्वत नगर के संस्थापकों को दूध पिलाते हुए पोषणकर्त्री के रूप में बतलाया गया

---

* "As an animal it represents the non human psyche, the sub-human animal side and therefore, Unconscious. Modern Man in search of a soul, at page 29.

** Gerhard Adler ; Studies in Analytical Psychology at page 79-85.

है किन्तु अन्य पुराण विद्याओं (Mythologics) में इसके क्रूर कर्मों का भी वर्णन है। रोम में भी लूपा (Lupa) नामक मादा भेड़ियों को डकैत (Harlor) दर्शाया गया है, तथा महान् कलाकार दांते (Dante) ने भेड़िये को ईर्ष्या और लालच का प्रतीक बतलाया है। ग्रीक पुराण कथाओं में भी भेड़ियों को खूंखार विनाशकारी तथा अंधेरे ठण्डे जंगलों में भटकने वाला एक क्रूर जंगली जानवर बतलाया गया है तथा भेड़िये को प्रकाश देने वाले देवतास्वरूप अपोलो (Appollo) का प्रतिद्वन्द्वी बतलाया गया है। नारडीक (Nordic) पुराणों में भेड़िये को जंगल में भटकने वाला एक डाकू या तस्कर कहा गया है। इसलिये विश्लेषण अधीन रोगी द्वारा स्वप्न में भेड़िया दिग्दर्शन का यहां पर अर्थ विनाशकारी लालच के प्रतीक के रूप में ही किया गया है।

प्रस्तुत स्वप्न विश्लेषण के प्रसंग में तीस वर्षीय एडवोकेट द्वारा देखा गया भेड़िया पहिले एक आदिम कीड़े में तथा बाद में जाकर एक सर्प की शक्ल में बदल गया है। सर्प मूलतः सामूहिक अवचेतनावस्था का प्रतीक है। माता भालू की विशेषता उसके द्वारा उसके बच्चों का प्यार के साथ किया गया पालन पोषण है। तथा भेड़िये की विशेषता उसका खूंखारपूर्ण क्रूर स्वभाव है तथा इसी प्रकार सर्प या नाग पृथ्वी की गुफाओं में रहने वाला एक रेंगने वाला जानवर है, उसको पृथ्वी के नीचे स्थित लोक का अधिपति या देवता माना गया है। सर्प या नाग देवता निरन्तर अपनी केंचुली (Castes its skin) बदलता रहता है जिसको पुनर्जन्म का प्रतीक मानते हुए सर्प को अमरता का प्रतीक अथवा पर्यायवाची कहा गया है। निःसन्देह सामूहिक अवचेतन अविनाशी, अजर तथा अमर स्थिति का द्योतक है। समूचा अवचेतन अंधकार में रहता है तथा वह अपरिमित शक्तिशाली है जो यदाकदा चेतन स्तर पर आक्रमण करते हुए या उभर कर चेतनावस्था को प्रभावित अथवा उसको ढक कर अपने वश में कर लेता है। सर्प या नाग विषधारक है किन्तु कभी-कभी इस विष का कल्याणकारी उपयोग किया जाना भी बतलाया गया है। सर्प या नाग पाताल लोक का देवता है (God), अतः उसको पृथ्वी का प्रतीक (Symbol) भी कहा जा सकता है। किन्तु ग्रीक दंतकथानुसार पाताल के अधिपति पाइथोन दैत्य (Giant Python) का वध ग्रीक देवता अपोलो (जो प्रकाश का देवता है) द्वारा किये जाने का विशद वर्णन है, अतः ग्रीक साहित्य में सर्प एवं नाग की दुःखद तस्वीर प्रस्तुत की गई है। बेबीलोयोन (Babylonian) साहित्य में सर्प को बाढ़ का प्रतीक भी बतलाया गया है तथा नाग या सर्प देव को छिपे खजानों का रक्षक माना गया है। जिनका निवास स्थल भूमि के नीचे है। अतः सर्प को भूमिगत (Underground) क्षेत्र का अधिपति मानते हुए उसको अवचेतन स्तरीय सहज प्रवृत्तियों की शक्ति (Instinctual power) का भंडार माना जाने योग्य है। इस दृष्टि से सर्प को सविशेष ज्ञान का केन्द्र या खजाना भी कहा गया है। सांप को ठण्डेपन तथा अमानवीय सहज

वृत्तियों (Inhuman instincts) का प्रतिनिधि माना जा सकता है।* मानव साज सांप से डरता है और वह आदमी को डस कर उसे मौत की गोद में भी सुला देता है, इसलिये कतिपय धार्मिक क्रियाओं में सर्प को पूजे जाने का विधान है ताकि नाग देवता अपने भक्तों के कल्याणार्थ अपनी हिंसक वृत्ति का परित्याग करें। प्राचीन इसाई धार्मिक क्रियाओं में भी नाग पूजन तथा सर्प मुख चुम्बन का उल्लेख मिलता है, ताकि सर्प देवता उनकी रक्षा करे। इस प्रसंग में सबसे प्राचीन यह भी विवरण प्राप्त है कि सन् 293 ईसा पूर्व वर्ष में जब रोम में भयावह प्लेग का प्रकोप हुआ तो रोम के रक्षार्थ नाग देवता को वहां लाने के लिये एक दल भेजा गया ताकि नाग भगवान के आगमन से प्लेगग्रसित नगरवासियों के जीवन की रक्षा हो सके। इस प्रकार प्राचीन काल में भी सर्प को चिकित्सा की दृष्टि से उपयोगी माना गया है।

सर्प या नाग प्रतिवर्ष अपनी ऊपरी खोल या केंचुली को बदलता रहता है, अतः उसको पुनर्जन्म का प्रतीक स्वीकार करते हुए उसे अमर (Immortal) माना गया है, इस प्रकार सर्प को सामान्यतः आत्मा (Self) का प्रतीक माना जाता रहा है। अफ्रीका में भी मृतक का पुनर्जन्म सर्प के रूप में होने का विश्वास प्रचलित है तथा ग्रीक दंत कथाओं में नेता (Hero) की आत्मा का सर्प के रूप में पुनर्जन्म होने का उल्लेख है। ग्रीक पुराणों के अनुसार सर्प को भौतिक आत्मा (Earth Soul) तथा पक्षी को देव आत्मा (Spiritual Soul) माना गया है। अतएव ऐथेन्स नगर में सर्प तथा पक्षी को पवित्र माना गया है। सर्प को भौतिक आत्मा माने जाने से उनसे मानव द्वारा जादू की शक्ति (Magic power) प्राप्त होना कहा गया है। इस प्रकार अनेक दृष्टान्त इजिप्ट तथा भारतीय दंत कथाओं से भी उद्धरित किये जा सकते हैं। भारतीय पुराणों में सर्प अथवा नाग द्वारा अनेक उल्लेखनीय भूमिकाओं का निर्वाह किया जाना बतलाया गया है। भारतीय योग के अन्तर्गत कुंडलिनी नाग का विशद वर्णन है, जिसको आत्मा की केन्द्रीय शक्ति कहा गया है। इसके अलावा भारतीय परम्परा के अन्तर्गत भगवान विष्णु शेषनाग पर सोते हुए वर्णित किये गये हैं और द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण यमुना नदी में नाग को नाथते हुए दिखाये गये हैं। तथा वहां शेष नाग द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी को उठाया हुआ माना गया है। अर्थात् शेषनाग को पृथ्वी का आधार कहा गया है।

उपरोक्त उद्धरणों के प्रकाश में निःसन्देह सर्प एवं नाग का सभी देशों में बड़ा महत्व है, अतः रोगी द्वारा स्वप्न में सर्प दर्शन का अर्थ निश्चय करने में कठिनाइयां उपस्थित हो सकती हैं, इसके अलावा सर्प के साथ निहित गोपनीयता, मंत्र शक्ति, जादू, चिकित्सा शक्ति, भय तथा आदर, श्रद्धा आदि का सम्बन्ध जुड़ा

---

* Jung : Psychology of the unconscious, Kegan Paul, London 1921 Edition, page 266.

हुआ है, तथा सर्प में रक्षात्मक एवं संहारात्मक दोनों शक्तियों का सम्मिलन पाया जाता है, अतः उसको अवचेतन स्तरीय अमरता के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जाना योग्य प्रतीत होता है। निःसन्देह सर्प को गीरनीय, ज्ञान दाता, तथा अभौतिक पुनर्जन्मदाता माना जाना चाहिये।

तीस वर्षीय एडवोकेट द्वारा स्वप्न में दिखे तीनों पशुओं (Animals) की उपरोक्त प्रकार से विशद व्याख्या के पश्चात् उक्त स्वप्न का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है :—

स्वप्न का प्रथम चरण स्वप्न द्रष्टा का भूतकालीन जीवन है कि वह भोज पार्टी से ऊब गया है, जिसके द्वारा उसका चेतन स्तरीय दैनिक जीवन व्यवहार का दिग्दर्शन किया गया है। इस प्रथम चरण में रोगी का अहम् (Ego) ही उसकी चेतनावस्था का केन्द्र है।*

स्वप्न के द्वितीय चरण में वह पास वाले कमरे में चला जाता है—जो उसके वर्तमानकालीन जीवन का दिग्दर्शन है। जीवन के प्रथम चरण में वह समाज के साथ योग्य समायोजन नहीं कर पाने के कारण वह कमरे का एकान्त अपनाता है और वह अपने अहम् को दो खिलौनों के साथ संतुष्ट तथा परिपूर्ण करना चाहता है, जहाँ पर वह माता भालू तथा खूंखार लालची भेड़िये के सम्पर्क में आता है। इस प्रकार इस चरण (Stage) में स्वप्नद्रष्टा अपने अहम् स्तर (Ego level) से अपनी सहज-वृत्तियों के स्तर (Instinct level) पर पहुँचना चाहता है। मादा भालू मातृ भावना का प्रतीक है। वर्तमान काल के उस दौरान में स्वप्नद्रष्टा अपने समूचे व्यक्तित्व का प्रक्षेपण (Projection) अपनी माता पर करना चाहता है, अतः वह मातृ स्थिरण (Mother Fixation) से ग्रस्त हो जाता है, तथा स्वप्न द्रष्टा की माता के प्रति उसकी सहज वृत्ति का विकास अवरुद्ध हो जाता है, और वह एक लाड़प्यार से बिगड़े बालक के स्तर से आगे नहीं बढ़ पाता है, इसलिये वह किसी अन्य नारी से योग्य समायोजन स्थापित करने में असफल रह गया है। सहज वृत्तियों (Instincts) के इस क्षेत्र में मादा भालू के साथ भेड़िया खिलौने से भी उसकी भेंट होती है। मादा भालू की तरह वह यहाँ पर मादा भेड़िये को भी वात्सल्यमयी समझने की भूल कर बैठता है। यद्यपि मादा भेड़िया ने रोमुलस तथा रेमुस का ग्रीक दंतकथा के अनुसार पालन-पोषण अवश्य किया था, किन्तु वस्तुतः भेड़िये का जंगली खूंखार स्वार्थी स्वभाव जग जाहिर है, अतः भेड़िया जंगलीपन, खूंखार वृत्ति, अदमनीय लालच का प्रतीक है। इस प्रकार स्वप्न द्रष्टा अपने जीवन के द्वितीय चरण याने वर्तमान काल में मादा भालू की मंगलमयी सहज मातृत्व भावना तथा उसके विपरीत विरोधी भेड़िये की खूंखार विनाशकारी सहजवृत्ति के द्वन्द्व में बुरी

* Jung : Psychological Types, page 540.

तरह उलझ जाता है, और वह मादा भालू की सहज मातृत्व प्रधान तथा खूंखार भेड़िये की सहज विनाशक प्रवृत्ति का तालमेल किस प्रकार करे, इस विषम समस्या में उलझने लगता है। इस परस्पर विरोध की कसौटी पूर्ण स्थिति में वह मादा भालू को आश्वस्त करता है कि वह खूंखार भेड़िये द्वारा उसके मंगलमयी मातृत्व को कोई क्षति नहीं पहुँचाने देगा। माता भालू सामान्य कदकाठी की है जो मातृत्व का सामान्य स्वरूप है, किन्तु खूंखार भेड़िये की कदकाठी केवल एक चौथाई के करीब है, फिर भी उसके पंजे नुकीले तथा खूंखार हैं और स्वप्न में छोटा खूंखार भेड़िया माता भालू की खाल को कुछ अंशों में नोचता हुआ नजर आता है जो मातृ स्थरीकरण (Mother Fixation) रोगी के लिये बड़ी चिन्तनीय स्थिति है। तब वह छोटा सा खिलौना भेड़िया स्वप्नद्रष्टा के हाथों से फिसल कर कमरे के बाहर भाग निकलता स्वप्न में दिखाई पड़ता है तथा वह छोटी कदकाठी का भेड़िया पूरी कदकाठी का भेड़िया होकर आदिमकालीन एक कीड़ा तथा बाद में एक विशाल नाग दैत्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है। जिसने मानव की चारों तरफ से अपनी लपेट में जकड़ सा लिया है। स्वप्न का यह तृतीय चरण स्वप्नद्रष्टा के भविष्य जीवन का सूचक है। विकराल सर्प दैत्य उसके सम्पूर्ण अवचेतनावस्था का प्रतीक है जो उसके चेतनस्तर पर अनायास अचानक छा गया है। यूंग ने इस सर्प दर्शन के दृश्य को अनेक धार्मिक क्रियाओं एवं विश्वस्तर की पौराणिक दंत कथाओं के आधार इस सर्प को सनातन आत्मा तथा अविनाशी सामूहिक अवचेतन का प्रतीक माना है। सर्प जो प्रारंभ में भय का प्रतीक था आगे जाकर वही ज्ञान (Wisdom) तथा सृजनात्मक शक्ति (Creative power) का भी प्रतीक बन जाता है। स्वप्न में सर्प दर्शन की इस प्रक्रिया से उसको "भूमि-माता" (Mother material) का प्रतीक होने का भी गौरव प्रदान किया गया है।*

सभी क्रियाओं का उद्गम स्थल मानव चित्त है। स्वप्न दर्शन भी एक विशेष क्रिया है जिसका उद्भव चित्त से होता है। प्रत्येक क्रिया का आरंभ, मध्य और अन्त होता है। इसी तरह विचाराधीन स्वप्न का प्रारम्भिक स्तर चेतन सम्भाग है जिसका सम्बन्ध स्वप्न द्रष्टा के दैनिक जीवन से है जो भोज पार्टी के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित हुआ है। स्वप्न द्रष्टा एक चिन्तन प्रधान अन्तःप्रज्ञा सम्पन्न व्यक्ति है, अतः उसका भाव एवं संवेदन पक्ष निःसन्देह अल्प विकसित है। फलतः ऐसा व्यक्ति समाज के साथ उपयुक्त प्रकार से समयोजन नहीं हो पाने से खिन्न एवं परेशान है। तथा वह भोज पार्टी के समाज से ऊब कर एकान्त कमरे में जाकर अपनी सहज वृत्तियों में मन अथवा चित्त को लगाना चाहता है। यह स्वप्न का मध्य अर्थात् वर्तमान काल है। यहाँ उसके व्यक्तिगत अवचेतन से मादा भालू तथा खूंखार भेड़िये के रूप में

* Gerhard Adler : Studies in Analytical Psychology, page 93.

वह अपनी सहज प्रवृत्तियों से साक्षात्कार करता है जो क्रमशः मातृत्व एवं विनाशकारी लालची वृत्ति के प्रतीक हैं। किन्तु यहाँ पर मातृत्व एवं विनाशकारी लालच के बीच संघर्ष हो जाने की भी आशंका उत्पन्न हो जाती है तथा स्वप्न द्रष्टा का व्यक्तित्व इस द्वन्द्व में उलझने लगता है, अतः वह दिग्मूढ़ सा हो जाता है। व्यक्तिगत अवचेतन स्तरीय इस विरोधाभासी द्वन्द्व पर स्वप्नद्रष्टा के लिये किसी भी प्रकार का समयोजन या नियंत्रण कायम किया जाना संभव नहीं है, अतः वह कुछ क्षणों के लिए शून्यावस्था में रहकर ज्योंही अवचेतन के क्षेत्र में प्रवेश करता है तब उसके हाथ में पकड़ा हुआ छोटा सा भेड़िया खिलौना कमरे से बाहर निकल कर अपनी वास्तविक कदकाठी को प्राप्त कर लेता है, तथा भेड़िया आदिम जन्तु से एक विकराल सर्प बन जाता है जो उसके सम्पूर्ण सामूहिक अवचेतन का द्योतक है। यहीं पर स्वप्न का अन्त है, जो समग्रता का सूचक है। इस प्रकार स्वप्न में प्रारम्भ, मध्य तथा अन्त के तीन चरणों में चेतनावस्था, व्यक्तिगत अवचेतनावस्था तथा सामूहिक अवचेतनावस्था की तीनों मंजिलें उजागर हो गयी हैं।

चित्त चिकित्सा के प्रसंग में यूंग ने आग्रह किया है कि जब स्वप्न-द्रष्टा को चेतन स्तर पर दो परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों की टकराहट घटित होने की आशंका हो तथा वह इन दोनों परस्पर विरोधी सहज वृत्तियों के बीच सामञ्जस्य स्थापित करने में स्वयं को पूर्णतः असफल होने का अनुभव करे तो उसको कुछ देर के लिये शून्यवत् मौन धारण कर लेना चाहिए। ताकि चेतन स्तरीय रिक्तता की सहज क्षतिपूर्ति के लिये अवचेतन स्तर से स्वतः प्रवाह आकर शून्यवत् चेतन को प्लावित कर सके। क्योंकि चेतन तथा अवचेतन चित्त के यद्यपि दो परस्पर विरोधी सम्भाग हैं तथापि वे परस्पर एक दूसरे के प्रति पूरक सम्भाग हैं और चेतन एवं अवचेतन के बीच निरन्तर जीवन-शक्ति प्रवाह के कारण दोनों सम्भाग परस्पर सदैव जुड़े हुए हैं, तथा इनके बीच कोई रुकावटी विभाजन रेखा नहीं है। जीवन-शक्ति का चेतन से अवचेतन की ओर तथा अवचेतन से चेतन की ओर निरन्तर प्रवाह स्वतः होता ही रहता है, अतः चेतन की शून्यवत् स्थिति में निःसन्देह सामूहिक अवचेतन का प्रवाह चेतन स्तर पर स्वतः फैल जायगा तथा चेतन स्तरीय रिक्तता या खालीपन की योग्य प्रतिपूर्ति अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु से सहज प्रकार से स्वतः हो जायगी। विश्लेषणाधीन उक्त एडवोकेट रोगी में भावपक्ष तथा संवेदन पक्ष की कमी थी, अतः उसकी योग्य प्रतिपूर्ति स्वप्न के अन्तिम तृतीय चरण में सामूहिक अवचेतन की अन्तर्वस्तु के उभराव से सहज हो जाना स्वाभाविक था और इस प्रकार इस रोगी का सहज विकास जो अब तक रुका हुआ था, वह इस अवचेतन स्तरीय उभराव के परिणाम स्वरूप पुनः चालू हो गया और उसका व्यक्तित्व सहजता के साथ योग्य प्रकार से स्वतः विकसित होने लगा।

अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की जानकारी हेतु यूंग ने स्वप्न विश्लेषण के

ध्यान सक्रिय कल्पना प्रणाली (Active Imagination method) को उपयोगी माना है। सक्रिय कल्पना प्रणाली से भी व्यक्ति की अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु चित्रांकन, साहित्य एवं कला के माध्यम से उसके चेतन पर मुखरित होने लगती है, अतः स्वतः एवं सहज रूप में चित्र बनाना, रेखाचित्र बनाना तथा किसी नक्शे में स्वतः प्रेरित रंगसाजी करने से व्यक्ति की अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु कागज पर सहज रूप से उभर कर तत्कालीन अवचेतन स्थिति का दिग्दर्शन करा देती है, ताकि उक्त अवचेतन स्थिति को चेतन से व्याख्यायित किया जाय, तथा इस प्रकार रोगी अपने अवचेतन स्थित तनाव के अनुभव को योग्य प्रकार से समझते हुए अपनी आन्तरिक कष्टों एवं तनावों से मुक्त होने का अपनी ही समझ से तथा विश्लेषक के मार्गदर्शन एवं मदद से रास्ता निकालने में सफल हो सके। यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में सक्रिय कल्पना प्रणाली को मनःचिकित्सा के लिये अत्यन्त उपयोगी साधन माना गया है। इसको यूंग ने सक्रिय स्वीकृति (Active passivity) भी कहा है। जिसके अन्तर्गत रोगी को यह समझाया जाता है कि वह उसके अवचेतन में जो कुछ घटित हो रहा है, उसे पूर्ण तटस्थतापूर्वक याने उसके कोई निजी भावनात्मक रंग दिये बगैर उसे प्रेक्षण (Observe) करता रहे। अवचेतन निःसंन्देह सहम् की पकड़ से परे है, फिर भी व्यक्ति अपने अंतर में होने वाली घटनाओं का आभास या आंशिक अनुभव कर सकता है, जिसको सूक्ष्म अनुभूति होना कहा जा सकता है। यदि रोगी अपने अन्दर होने वाली अनुभूति एहसासों को केवल वस्तुनिष्ठ प्रकार से (Objectively) चुपचाप देखने का अभ्यास करे तो निश्चित रूप से उसको स्वयं के अन्दर होने वाली घटनाओं की सूक्ष्म एवं अस्पष्ट अल्प जानकारी उपलब्ध हो सकेगी—जिसको यदि वह स्वतः प्रेरित चित्रकाव्य अथवा कला में बगैर आत्मपरक रंग लगाये शुद्ध प्रकार से अभिव्यक्त करेगा तो निःसन्देह उक्त चित्रकाव्य अथवा कलाकृति उसकी अवचेतन स्थिति की परिचयात्मक तस्वीर होगी, जिसको बाद में जाकर वह अपने चेतन के आलोक में समझ अथवा उसका योग्य मूल्यांकन कर सकता है। अवचेतन स्तरीय हलचलों को इस प्रकार तटस्थ भाव से राग द्वेषहीन नजर से प्रेक्षण (Observe) किया जाना ही सक्रिय कल्पना तकनीक (Active Imagination Technique) है। भारतीय चिन्तन में भी "सहज योग" तथा "ध्यान योग" का विस्तार के साथ विवेचन प्रस्तुत किया गया है। भारतीय योग के अन्तर्गत साधक को शून्य अथवा एक गोलाकार बिन्दु पर बाहरी आँखों को स्थिरतापूर्वक एकाग्रता का केन्द्र बनाते हुए अपने आन्तरिक चक्षुओं से साधक के अन्दर होने वाली हलचलों को तटस्थ भाव से देखने या प्रेक्षण (Observe) किये जाने की साधना प्रणाली का यूंगीय सक्रिय कल्पना विधि से जो अद्भुत समानता है वह निश्चयपूर्वक एक विचारणीय प्रश्न है।

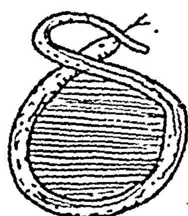
यह सहज मानवीय अनुभव है कि चित्त के अवचेतन स्तर से निरन्तर नाना प्रकार की कल्पनायें स्वतः बनती बिगड़ती रहती है और बार-बार हमें इनका आंशिक

आभास भी होता रहता है। अवचेतन स्तरीय इस प्रक्रिया पर व्यक्ति का न तो कोई वस है और न कोई अपनी स्वैर कल्पनाओं को नियंत्रण कर सकता है। इन स्वैर कल्पनाओं के योग्य विश्लेषण से ही मानव इनके स्वरूप, प्रयोजन तथा अर्थ को पकड़ सकता है। जब कभी यूंग ने इन स्वतः कल्पनाओं के स्वरूप को समझने का प्रयत्न किया तब उसके सम्मुख अवचेतन स्तरीय आर्कीटाइपों का स्वतः प्रतीकात्मक रूप में दर्शन हुआ, अर्थात् अवचेतन की विषय वस्तु प्रतीकों अथवा प्ररूपों (Archetype) के रूप में अभिव्यक्त होने लगी हैं। जिस प्रकार स्वप्न अवचेतन की सहज एवं स्वतः उपज है उसी प्रकार सक्रिय कल्पना अभ्यास से अवचेतनावस्था के आर्कीटाइपों का बाह्यः विस्फोट होना पाया जाता है जिनकी कुछ अंशों तक ही व्याख्या प्रस्तुत किया जाना संभव है। उपरोक्त उदाहरण के प्रसंग में जब स्वप्न द्रष्टा को उसके स्वप्न में देखे गये सर्प को चित्र के माध्यम से अभिव्यक्त किये जाने बाबत विश्लेषक द्वारा आदेश दिया गया तो चटपट स्वप्न द्रष्टा में उक्त सुझाव को सहर्ष एवं ईमानदारी से जो देखा था, उसकी कई तस्वीरें बना डालीं जिनका स्वप्न में दीखी आकृतियों से आश्चर्यजनक रूप से सादृश्य पाया गया। और स्वप्न द्रष्टा रोगी द्वारा स्वप्नदर्शित आकृतियों के सतत चित्रांकन किये जाने से स्वप्न द्रष्टा रोगी के तनावों में उल्लेखनीय कमी होना भी पाया गया। रोगी स्वप्न द्रष्टा द्वारा निर्मित इन चित्रों से प्रथम दर्शित स्वप्न के विकास का भी परिचय मिलता है, मानों चित्रांकन किया जाना भी स्वप्न दर्शन की अनुवृत्ति (Continuity) है। स्वप्न के माध्दम से रोगी अपनी अवचेतन स्तरीय समस्या की एक झलक प्रगट कर सकता है, किन्तु इसी झलक को बार-बार चित्र द्वारा दोहराये जाने से रोगी को व्यथित करने वाली समस्या की विधिवत् पकड़ाई भी हो जाती है, अर्थात् तब अवचेतन स्तरीय समस्या का भान चेतन स्तर पर हो जाता है और जब किसी समस्या को समूचे प्रकार से पकड़ लिया जाता है तब उसका समाधान तलाश करने में भी अधिक देर नहीं लगती। अतः स्वप्न द्वारा जिस समस्या का आभास प्राप्त किया जाता है, उसका योग्य समाधान सक्रिय कल्पना अभ्यास द्वारा निश्चयपूर्वक निकाला जा सकता है। इसलिये रोगी साधक को अपना ध्यान दर्शित समस्या पर यत्नपूर्वक केन्द्रित करते हुए तटस्थ भाव से यह देखते रहना चाहिये कि उक्त समस्या से अन्दर क्या-क्या खेल हो रहे हैं और किस प्रकार क्रमिक विकास करती हुई वह समस्या किस प्रकार तथा कैसे बदल रही है। समस्या, उसके कारण तथा उसके विकास को ध्यानपूर्वक देखने मात्र से समस्या के भूत, बर्तमान एवं उसके भविष्य की जब यथावत् जानकारी हो जाती है, तब समस्या समस्या नहीं रह कर समस्या का समाधान रोगी के लिये बोध गम्य हो जाता है, तथा व्यक्ति को जिस समस्या के कारण जिस परेशानी का अनुभव हो रहा था उसमें धीरे-धीरे कमी होने का उसे सुखद अनुभव होने लगता है, और अन्ततोगत्वा इसी

प्रक्रिया को लागू रखे जाने पर रोगी उक्त समस्या का योग्यतम हल भी निकाल पाता है तथा रोगी पूर्णतः उक्त समस्या तथा उसके तनावों से मुक्त हो जाता है, और वह अपने स्वभावजन्य व्यक्तित्व से युक्त (जुड़) जाता है। तीस वर्षीय चिन्तन एवं अन्तःप्रज्ञा सम्पन्न उक्त एडवोकेट द्वारा योग्य समयोजन के अभाव के फलस्वरूप वह दूसरे मानव-समाज से परेशान था तथा उसके इस अधूरे एवं अपूर्ण व्यक्तित्व का योग्य प्रकार से विकास नहीं हो पाना ही उसकी सबसे बड़ी परेशानी अथवा समस्या थी, जिसके परिणाम-स्वरूप वह मनस्ताप ग्रस्त एवं रोगी बन गया था। ऐसे एकाकी एवं समाज से असंयुक्त व्यक्ति को अन्त में जाकर जब विराट् सर्प दर्शन होता है मानो उसे इस स्वप्न के माध्यम से यह संकेत मिलता है कि उसको अपनी एकाकी मातृ-स्थिरता (Mother fixation) की भाव ग्रन्थी (Complex) को छोड़ कर समग्र पृथ्वी-माता की गोद को स्वीकार करते हुए गुह्य गोपनीय (आत्मज्ञान) की साधना में लग जाना चाहिये। क्योंकि स्वप्न में सर्प-दर्शन विश्लेषण द्वारा अन्ततोगत्वा समग्र पृथ्वी-माता एवं अविनाशी ज्ञान का प्रतीक ही स्थिर किया गया है। स्वप्न द्वारा प्राप्त इस संकेत या सन्देश मात्र से रोगी स्वप्न द्रष्टा को यह ऐहसास हो गया कि उसका शैशव-कालीन मातृ-स्थिरण भाव ग्रन्थी एवं यौवन-कालीन कामुकता के पीछे-पीछे भाग-दौड़ की वृत्ति का कोई उल्लेखनीय महत्व ही नहीं है, अतः उसे भूतकालीन इस भूतों से स्वतंत्र होकर तथा वर्तमानकालीन गलत वृत्ति की निस्सारता को समझकर अपने व्यक्तित्व का योग्य विकास करते हुए विस्तृत भूमि-माता एवं दिव्य ज्ञान-पुरुष के नजदीक पहुँचने का सतत प्रयत्न किया जाना ही उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए एकमात्र योग्य मार्ग है। यदि रोगी पूरी ईमानदारी के साथ इस सन्देश या सत्य को समझ लेता है तो निःसन्देह उसकी सभी क्षतियों, अपूर्णताओं, भ्रान्तियों तथा गलतफहमियों का जड़मूल से विनाश हो जायगा और वह अपने समग्र-ज्ञान के प्रकाश में अपने निजी व्यक्तित्व का योग्य प्रकार से विकास कर सकेगा और वह विशाल पृथ्वी-माता तथा परम कल्याणप्रद ज्ञान पिता का एक अंश बन जायगा तथा वह सर्वसाधारण मानव-समाज का एक बहुत उपयोगी सदस्य बन जाएगा। यूंग की मान्यतानुसार प्रतीकात्मक दिग्दर्शन के चित्रों पर ध्यान केन्द्रित किये जाने का दर्शक पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः अनेक धर्म ग्रन्थों में चित्रों एवं मूर्तियों को बड़ा महत्व दिया गया है। निम्नांकित चित्रों एवं रेखा-चित्रों का रोगी की मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाधान कार्य के लिये बहुधा उपयोग किया जाता है। जिसे सक्रिय कल्पना (Active Imagination) की एक प्रणाली माना जा सकता है। विवेचनाधीन रोगी द्वारा अन्त में एक विकराल सर्प द्वारा विश्व को अपने घेरे में लिये जाने वाले स्वप्न दृश्य को रेखाचित्र के द्वारा निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है : यथा

विश्व सर्प का रेखाचित्र संख्या 13 (क) स्वप्न में रोगी द्वारा देखे गये दृश्य के अनुकूल है कि एक दैत्याकार सर्प ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी पकड़ में बाँध लिया

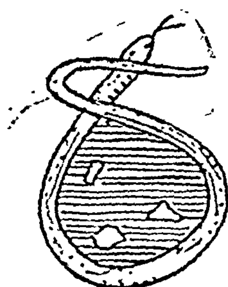
है । यहाँ सर्प का डरावना स्वरूप दर्शाया गया है । यह सक्रिय कल्पना प्रणाली की



रेखा-चित्र 13 (क)

प्रारम्भिक स्थिति है । सक्रिय कल्पना प्रणाली द्वारा सामूहिक अवचेतन सम्भाग में प्रवेश किया जा रहा है, उस स्तर पर द्रष्टा भयाक्रान्त प्रतीत होता है ।

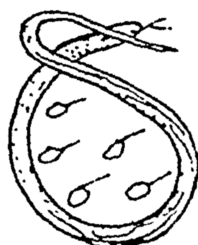
विश्व सर्प रेखा-चित्र 13 (ख) के द्वारा सर्प द्वारा सृष्टि सृजन किया जाना



रेखा-चित्र 13 (ख)

दर्शित किया जा रहा है । विकराल सर्प डरावना नहीं होकर सृजनकर्त्ता भी है जो खण्ड-खण्ड होकर एक से अनन्त में बंट जाता है ।

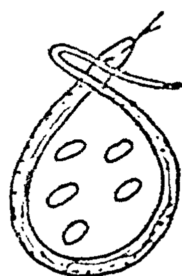
विश्व सर्प रेखा-चित्र 13 (ग) के द्वारा भेद तथा खण्ड क्रिया का विस्तार



रेखा-चित्र 13 (ग)

होना बतलाया गया है । एक सर्प द्वारा अनेक विश्व खण्डों की निर्माण क्रिया यहाँ प्रदर्शित की गई है । यही विश्व सर्प का पूर्णाव है । सर्प पृथ्वी तत्व के निर्माण क्रिया में रत है ।

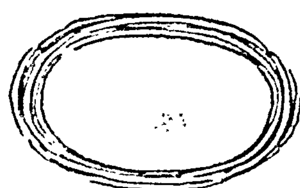
विश्व सर्प रेखा-चित्र 13 (घ) में सर्प का स्वरूप पृथ्वी के रूप में रूपान्तरित



रेखा-चित्र 13 (घ)

हो गया है। सर्पाकृति गायब हो गई है तथा इसके बजाय पृथ्वी एवं जल का दृश्य दीख रहा है।

विश्व सर्प रेखा-चित्र (ङ) में सर्प द्वारा रूपान्तरण प्रणाली का समाप्त



रेखा-चित्र 13 (ङ)

होना दिखलाया गया है। मूल विश्व सर्प गायब हो, चुका है। अब यहाँ सर्प पृथ्वी बन गया है, और परिवर्तित पृथ्वी से नव-शिशु सर्प का उद्भव हो रहा है।

इस प्रकार उपरोक्त रेखाचित्रों के माध्यम से रोगी के सामूहिक अवचेतन का विलय तथा उसका चेतनस्तर पर उदय क्रिया को दर्शाया गया है।

तीस वर्षीय प्रोटेस्टेंट रोगी लगभग छिन्न मस्तकीय रोग (Schizophrenic boarderline personality) का शिकार बन गया था, अतः इसकी देखभाल किये जाने का दायित्व मनोविश्लेषक के लिये हो गया था। ऐसी स्थिति में इस प्रकार के रोगी के अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु के सम्बन्ध में मनोविश्लेपक द्वारा की जाने वाली छोटी सी भूल का भी रोगी के लिए विनाशकारी परिणाम निकलने की सहज सम्भावना हो सकती है, अतः चित्त विश्लेषक को रोगी के द्वारा उसके चेतन स्तर पर होने वाली अनुभूति की जानकारी को समन्वित (Integrate) करते हुए उसके

---

* विश्व सर्प (The world serpent) का यह रेखा-चित्र गेरहार्ड एडलरकृत पुस्तक 'स्टडीज इन एनेलेटिक साइकोलोजी' पृष्ठ 120 के चित्र की प्रतिकृति है।

अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का रचनात्मक निर्णय प्रकट किया जाना चाहिये ताकि रोगी का टूटा-फूटा जर्जर व्यक्तित्व पुनः समन्वित किया जा सके।

विश्वसर्प रेखा-चित्र में सर्प विश्व के चारों तरफ कुंडली लपेट कर बैठा है। यह सर्प कुंडली वस्तुतः एक जादू की अंगूठी (Magic ring) के समान है। रेखा-चित्र संख्या 13 (ग) से एक विश्व-सर्प अनेक नन्हें-नन्हें सपोलों में बदलता हुआ दर्शाया गया है, यद्यपि स्वप्न के द्वितीय चरण में खिलौना भेड़िया अन्त में जाकर विश्व-सर्प बन गया है, अतः यहाँ पर आशंका हो सकती थी कि सर्प में विनाशकारी खूंखार तत्वों का कहीं उद्भव न हो जाय? किन्तु साँप ने खूंखार भेड़िया-वृत्ति में बदलने के बजाय उसका निर्दोष नन्हें-नन्हें सपोलों में विभाजित हो जाने से रोगी के जर्जर व्यक्तित्व के छिन्न-भिन्न हो जाने का खतरा टल गया। तथा सर्पनुमा-ज्ञान (Snake like wisdom) के प्रतीक द्वारा उसमें पायी जाने वाली सहज वृत्तियों का आपसी संघर्ष (मातृ-भालू तथा खूंखार भेड़िये की लड़ाई) के बीच समयोजन स्थापित किया जा सका और इन दो परस्पर विरोधी (मातृत्व प्रधान भालू की एवं भेड़िये की लोभवृत्ति) सहज-वृत्तियों (Instincts) के बीच योग्य सामजन्स स्थापित होने के परिणामस्वरूप रोगी एडवोकेट का व्यक्तित्व नष्ट हो जाने से बच गया।

यहाँ पर यह उल्लेख किया जाना भी उचित है कि जिस प्रकार स्वप्न विश्लेषण के दौरान प्रतीकवाद का असर पाया जाता है उसी तरह अलकेमी (Alchemy) को समझने के लिये समान प्रतीकों की मदद लेना उपयोगी पाया जाता है। यूंग ने अपनी (Psychology & Religion) शीर्षक पुस्तक में अनेक उदाहरणों का विवेचनप्रस्तुत करते हुए इस तथ्य का समर्थन किया है। अवचेतन स्तरीय उपद्रवी तत्वों का पुनःआसवन (Redistillation) से जड़ (Matter) में निहित दैवत्व (Devine Spirit) की उपलब्धि किया जाना संभव है। इस प्रक्रिया के लिये अलकीमिया में प्रायः पारा (Murcury) का उपयोग किया जाता है, इसी तरह विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत अवचेतन स्तरीय अव्यक्त शक्ति को जाग्रत करने के लिये विश्व-सर्प प्रतीक का अर्थबोध उपयोगी है। क्योंकि विश्व-सर्प ही अवचेतन शक्ति का प्रतिनिधि प्रतीक है। इसको सृजनात्मक ज्ञान भी कहा जा सकता है जो जन्म-मृत्यु के चक्करों में गुजरने के बावजूद भी अमरता की निशानी है। विश्व-सर्प रेखा-चित्र के क्रमिक विकास चित्र के द्वारा इस सत्य का अप्रत्यक्ष प्रकार से उद्घाटन किया जा सकता है। विश्व-सर्प समग्र सामूहिक अवचेतन का प्रतीक है, जिसका यदाकदा अनुभव व्यक्तित्व अपने व्यक्तिगत अवचेतन स्तर पर कर पाता है, और जब कसौटी के क्षणों में इसका अनुभव अपने चेतन-स्तर पर भी कर लेने की वह क्षमता हासिल कर लेता है तो उसके व्यक्तित्व का अद्भुत कायाकल्प हो जाता है और वह अपनी सभी समस्याओं से मुक्त होकर सम्पूर्ण समष्टि के साथ एकाकार कर लेता है। यही सक्रिय कल्पना प्रणाली का अन्तिम लक्ष्य है।

यूंग ने व्यक्ति के अवचेतन को समझने के लिये स्वप्न विश्लेषण के साथ ही सक्रिय कल्पना प्रणाली का उपयोग किया जाना भी जरूरी माना है। निःसन्देह यूंग ने ही सर्वप्रथम सक्रिय कल्पना प्रणाली की अवधारणा को स्थापित किया है। स्वप्न

विश्लेषण एवं सक्रिय कल्पना प्रणाली एक दूसरे से जुड़ी हुई "जुड़वा" पद्धतियां हैं। सर्वप्रथम रोगी की चिकित्सा के दौरान में विश्लेषक द्वारा रोगी के सपनों की रोगी के सहयोग से व्याख्या की जाती है और स्वप्न विश्लेषण के इस कार्य में विश्लेषक की प्रमुख भूमिका रहती है, किन्तु स्वप्न विश्लेषण के बाद अपनायी जाने वाली सक्रिय कल्पना प्रक्रिया के दौरान में रोगी को ही प्रधान भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। सक्रिय कल्पना प्रणाली के अन्तर्गत रोगी स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए स्वयं के अवचेतन में घटित घटनाओं को एक तटस्थ द्रष्टा की तरह देखने, प्रेक्षण करने तथा उन्हें समझने की चेष्टा करते हुए अवचेतन के प्रभावों का स्वयं मूल्यांकन करता है तथा इसको विश्लेषक की मदद से अपने अनुभवों के आधार पर विश्लेषक द्वारा प्रस्तुत व्याख्या को उन्हें जब सत्य की तरह स्वीकार करता है तभी वह अपने आन्तरिक तनावों से मुक्त हो सकता है। सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत रोगी स्वयं को विश्लेषक के मार्ग-दर्शन में स्वप्न में प्रदर्शित दृश्यों के संबंधों की खोज करता है तथा विश्लेषक के साथ बैठकर अपने द्वारा देखे गये स्वप्नों तथा उससे होने वाले प्रभावों का विवेचन आपसी विचार-विमर्श के आधार पर करते हुए उसके द्वारा देखे गये दृश्यों का अर्थबोध स्वीकार करता है।

"सक्रिय कल्पना" (Active Imagination) के साथ तकनीक (Technique) शब्द जोड़ा जाना उपयुक्त नहीं है, क्योंकि सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत केवल मात्र रोगी को अपने चेतन पर उठती मिटती कल्पनाओं को ध्यानपूर्वक देखते रहने (Observe) का आग्रह किया जाता है। स्वप्न के दौरान में जिस प्रकार घटित घटनाओं का स्वतः दर्शन होता है, उसी प्रकार सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत स्वतः प्रसूत कल्पनाओं की आकृतियों एवं प्रतिमाओं (Images) को प्रेक्षण (Observe) मात्र करते रहना है। सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत हम निःसन्देह अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तुओं का प्रेक्षण (Observe) करते हैं और इसमें सजीवता का अनुभव करते हैं, यद्यपि उक्त कल्पनाओं का जीवन से कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं पाया जाता। कभी-कभी व्यक्ति बड़ी ऊलूल जुलूल कल्पनाओं का भी प्रेक्षण करता है। जिसका उसे कोई सार्थक प्रयोजन ही नहीं होता, फिर भी विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत इन सारी कल्पनाओं का बड़ा महत्व है। सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत स्वतः घटित घटनाओं का तटस्थ भाव से देखा जाना ही उचित है, और इसलिये द्रष्टा को पूर्णरूपेण प्रयत्नहीन (Passive) दृष्टिकोण स्वीकार करते हुए इनका प्रेक्षण करने योग्य है, अन्यथा द्रष्टा के राग द्वेष से ग्रस्त होने पर दर्शित दृश्यावली की सच्चाई तक पहुंचने में आगे जाकर विकट कठिनाई का अनुभव होगा। अतः सक्रिय कल्पना के द्रष्टा को पूर्ण तटस्थता के साथ घटित आने जाने वाली सभी कल्पनाओं को ध्यानपूर्वक देखते रहने से ही वह अपनी अवचेतन स्तरीय हलचलों की कुछ झलक या आभास प्राप्त कर सकेगा, जिसकी यदि वह स्वयं सम्यक् व्याख्या विश्लेषक के

मार्ग दर्शन में भलीभांति कर सकेगा तो निःसन्देह वह अपनी आन्तरिक समस्याओं को समझकर उनका योग्य निदान कर सकेगा और वाद में उसका उपचार किये जाने में भी सफल हो सकेगा। सक्रिय कल्पना सिनेमा के पर्दे पर फिल्म देखने के सदृश्य है। फिल्म के हीरो हिरोइन नाना प्रकार के करतब दिखाते हैं। वे जीते मरते प्यार करते या परस्पर लड़ते भिड़ते दीखते हैं जिनसे दर्शक यदि अप्रभावित रहकर देखता रहे तो वह फिल्म के कथानक को योग्य प्रकार से समझ सकेगा किन्तु यदि किसी हीरो हिरोइन की आकस्मिक मृत्यु पर दर्शक भी भावावेश ग्रस्त हो जायेगा तो वह फिल्म देखने का आनन्द लेने के वजाय स्वयं मानसिक रूप से रोगग्रस्त हो जायेगा। किन्तु फिल्म दर्शन तथा सक्रिय कल्पना दर्शन में एक भेद भी है जिसका सदैव ध्यान रखना चाहिये। फिल्म के पर्दे पर उभरते हुए हीरो हिरोइन सिनेमा दर्शक से जुदा अलग व्यक्ति हैं जिनका अलग तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व है किन्तु स्वैर कल्पना एवं सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत द्रष्टा जो कुछ देखता है वह उसके ही अव-चेतन स्तरीय व्यापार का दिग्दर्शन है, अतः सक्रिय कल्पना के दर्शन में द्रष्टा को भी घटित दृश्यावली से अछूता तथा तटस्थता का निर्वाह किया जाना जरूरी एवं योग्य है।

प्रायः किसी स्वप्न की समाप्ति या अन्त के वाद ही सक्रिय कल्पना प्रणाली के क्षेत्र का प्रारम्भ होता है। उदाहरणार्थ रोगी स्वप्नद्रष्टा समुद्र में एक जहाज को दुर्घटनाग्रस्त होते हुए देखता है, तथा वह इससे भय एवं दुःख का अनुभव करता है, तथा आगे जाकर वह स्वयं को उसे समुद्र में अकेला तैरते हुए देखता है। इसी तरह एक फैन्टेसी (Phantasy) के अन्तर्गत स्वप्न द्रष्टा किसी अन्य को काली नकाव ओढ़े आक्रमणकारी मुद्रा में हाथ में छुरा लेकर उस पर होते आक्रमण को देखने मात्र से भयभीत हो जाता है। जहाज दुर्घटना के स्वप्न में यदि स्वप्नद्रष्टा आगे जाकर किसी टापू को देखता है तो इसका यही विश्लेषण किया जायगा कि उसका खतरा टल गया है–और इस प्रकार स्वप्नद्रष्टा के दुःखद अनुभव की स्वतः समाप्ति हो गई है। किन्तु नकावधारी द्वारा हिंसक आक्रमण की फैंटेन्सी से द्रष्टा के मानस में तत्-सम्वन्धी घटनाओं की परेशानी वनी रहती है और तव स्वप्नद्रष्टा के लिये इस आक्रमणकारी के चेहरे की खोज किया जाना जरूरी हो जाता है किन्तु नकावधारी हत्यारे के आक्रमण की फैन्टेसी सक्रिय कल्पना का नतीजा है, जिसके दर्शन के बाद द्रष्टा द्वारा दृश्य के कारण की खोज तथा उसके प्रतिकार का रास्ता ढूंढना जरूरी हो जाता है। अतः सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत अवचेतन के अन्तर्वस्तु की खोज स्वप्न द्रष्टा की सक्रियता से प्रारम्भ होती है, तथा फैन्टेसी का द्रष्टा इसको सजीव एवं सक्रिय अनुभव करता है, यद्यपि उसको यह फैन्टेसी अनायास (Passively) दीख पड़ती है। जवकि स्वप्न विश्लेषण के दौरान घटित घटना की व्याख्या के दौरान में किसी भावी घटना की प्रतीक्षा अथवा छानवीन किये जाने की जरूरत महसूस नहीं

की जाती अपितु फैंटेसी का अर्थ निकाले जाने का प्रयास किया जाना जरूरी हो जाता है। इस प्रकार स्वप्न विश्लेषण में दृश्य दर्शन में द्रष्टा की निष्क्रियता का अन्त है जबकि सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत फैन्टेसी या स्वैर कल्पना के बाद द्रष्टा द्वारा उसके बाद उसके कारणों तथा भविष्य में आपेक्षित घटना की सक्रियतापूर्वक छानबीन या खोज का प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार स्वप्न विश्लेषण भूतकाल की तटस्थता पूर्ण जांच पड़ताल है, जबकि सक्रिय कल्पना में भावी की सक्रिय खोज खबर की सतत चेष्टा किया जाना जरूरी माना जाता है।

सन् 1935 में इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइकोलोजी, लंदन ने श्री सी. जी. यूंग को पांच भाषण देने के लिये आमन्त्रित किया था, यूंग ने टावीस्टोक क्लिनिक, लंदन में लगभग 200 चिकित्सकों एवं मनोविज्ञान वेत्ताओं के समक्ष पांच भाषण दिये थे जिनकी रिपोर्ट लंदन सेमीनार अथवा The Tavistock Lectures के शीर्षक से प्रकाशित हुई है जिसे राउटलेज एण्ड केगनपाल लिमिटेड लंदन द्वारा इनका प्रकाशन Analytical Psychology its theory & Practice शीर्षक से सन् 1968 में किया गया है। इस प्रकाशित पुस्तक के पांचवें भाषण के अन्त में तत्-सम्बन्धी विचारविमर्श खण्ड के अन्तर्गत डा. जे. के. हेडफिल्ड के प्रश्न के उत्तर में यूंग ने सक्रिय कल्पना की टेकनीक के बाबत जो संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है, उसका सारांश निम्नानुसार है; यथा

"सक्रिय कल्पना" (Active Imagination) सम्बन्धी इन्द्रियानुभविक सामग्री (Empirical material) का प्रस्तुतीकरण किया जाना शक्य नहीं है, इस-लिये मैं केवल मात्र सक्रिय कल्पना प्रणाली (Method) बाबत कुछ विचार प्रस्तुत करने का प्रयत्न करूंगा क्योंकि किसी रोगी को सक्रिय कल्पना की यह प्रणाली (Method) सिखाया जाना बहुत कठिन है। इस तथ्य का प्रतिपादन निम्नलिखित रोगी परिचय पत्र (Patients case-History) से हो सकता है।

"मैं एक नवयुवक कलाकार की चिकित्सा कर रहा था। चिकित्सा के दौरान में मेरे लिये सबसे बड़ी समस्या यह थी कि उस कलाकार को मैं "सक्रिय कल्पना" का अर्थ नहीं समझा पा रहा था। उसने समझने की भी कोशिश की किन्तु उसके साथ मुख्य कठिनाई यह थी कि वह चिन्तन अथवा सोचने की अल्पक्षमता रखता था। क्योंकि प्रायः कलाकारों, संगीतज्ञों, चित्रकारों आदि में चिन्तन शक्ति की कमी या अभाव पाया जाता है, क्योंकि इस वर्ग में प्रयास करते हुए अपने दिमाग से काम लेने की कम प्रवृत्ति पायी जाती है। इनका मन या चित्त प्रायः स्वतः प्रेरित होता है, तथा ये अनियन्त्रित भावावेशों को सहज रूप से बगैर काट-छाट के उन्हें ज्यों का त्यों अभिव्यक्त किये जाने के अभ्यासी होते हैं। मैंने इस कलाकार को कल्पना करने का आग्रह किया किन्तु वह न तो सोच सकता था और न कल्पना के हवाई किले ही

बना पाता था। अन्ततोगत्वा मेरे दीर्घकालीन प्रयासों के फलस्वरूप उसने कल्पना किया जाना सीख लिया जिसका सन्दर्भ-विवरण निम्नानुसार है :—

मैं कस्बे के बाहर रहता हूं और वह कलाकार कस्बे के सन्निकट एक गांव में रहता था। उसको मेरे स्थान तक पहुंचने के लिए रेल यात्रा करनी पड़ती है, उसके गांव का रेलवे स्टेशन छोटा सा है। उक्त रेलवे स्टेशन की दीवार पर एक पोस्टर चिपका हुआ है। जब कभी वह कलाकार यात्रा के लिये रेलगाड़ी का इन्तजार करता था तब वह उस पोस्टर को अक्सर देखता रहता था। पोस्टर आल्प पर्वत की यात्रा व्यवस्था करने वाली एक कम्पनी का था। उक्त पोस्टर में रंग बिरंगी चित्रकारी से गिरते हुए झरने, दूर-दूर तक फैले हरियाले मैदान तथा पोस्टर के मध्य में एक छोटी सी पहाड़ी तथा इस पहाड़ी पर स्थित कुछ घास चरती हुई गायें चित्रित की गई थीं। उक्त कलाकार उस पोस्टर के सामने बैठकर इसको ध्यानपूर्वक देखने लगा और विचार करने लगा कि सक्रिय कल्पना का क्या अर्थ है? किन्तु वह अर्थ नहीं समझ सका। उसने एक दिन यह भी सन्देह किया कि वह पोस्टर के बाबत कोई कपोल कल्पना (फैन्टेसी) तो नहीं कर रहा है? जैसे वह यह भी कल्पना कर सकता है कि वह पोस्टर के एक स्थान में खड़ा है और पोस्टर में चित्रित पहाड़ी झरने, खेत, सड़क-पगडण्डियां सचमुच वास्तविक हैं और वह सड़क-पगडण्डियों के रास्ते पहाड़ी की चोटी पर पहुंच कर गायों के बीच पहुंच गया है। अतः वह इस प्रयोजन के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचा और उसने यह कल्पना बांधी कि वह स्वयं पोस्टर में चित्रित एक स्थान पर खड़ा है और उसने झरने, खेत, सड़कें, पगडंडियों पहाड़ी इत्यादि को देखा तथा एक पगडंडियों पर चलते हुए पहाड़ी की चोटी पर पहुंचा जहां गायें थीं। वहां से उसे एक गिर्जाघर नजर आया और वह वहां भी पहुंचा तो देखा कि इसका दरवाजा खुला पड़ा है तब वह दरवाजा खोलकर गिर्जाघर में घुसा जहां पर उसको माता मरीयम की लकड़ी की एक मूर्ति ताजे फलों से सजी हुई दिखाई देती है। कलाकार जैसे ही उस मूर्ति की आंखों में झांकता है तब इस मूर्ति की वेदी के पीछे नुकीले कान उसी क्षण में अदृश्य होते नजर आये। उसने ज्यों ही सोचा कि यह सब क्या वाहियात बेवकूफी है? तब तो तत्काल वह समझ सका कि यह स्वैर कल्पना मात्र है। इसके बाद वह वहां से दूर चला जाता है और कहने लगता है कि अब भी यह नहीं समझ पाया है कि सक्रिय कल्पना का क्या अर्थ है, तब एकाएक उसमें यह विचार उठा कि कदाचित् वहां सचमुच गिर्जाघर भी है या नहीं? तथा वहां पर वस्तुतः माता मरियम की मूर्ति भी मौजूद है या नहीं है। अतएव इस बाबत उसे पुनः जांच करनी चाहिये। इस नये विचार के उदय होने पर वह पुनः उन खेतों को पगडन्डी से पार करते हुए पोस्टर में दर्शित पहाड़ी की चोटी पर पहुंचा और वहां से उसने सुदूर स्थित गिर्जाघर को भी देखा। तब उसने अपने मन को समझाया कि अब यहां कोई भ्रम (Illusion) या भ्रान्ति नहीं है। तब

उसने दरवाजा खोला और वहां माता मरीयम के दर्शन भी किये तथा इस बार भी सीढ़ी के पीछे पूर्ववत् दो नुकीले कान गायब होते देखे। इस प्रकार इस बार भी पूर्व स्वप्न की जब उसी प्रकार पुनरावृत्ति होते हुए उसने देखी तो वह समझ गया कि सक्रिय कल्पना का क्या अर्थ है। तब से वह सक्रिय कल्पना की वास्तविकता को समझने तथा उन पर भरोसा करते हुए उनका किस प्रकार से उपयोग किया जाना चाहिये, यह भी सीख गया।

यहां पर प्रतिमाओं (Images) के विकास के बावत प्रकाश डालने का वक्त नहीं है तथा सक्रिय कल्पना के सम्बन्ध में किसी प्रणाली का भी जिक्र किया जाना संभव नहीं है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने चित्त की मांग के अनुसार सक्रिय कल्पना के लिये अलग-अलग प्रकार की प्रणाली का उपयोग करता है। यूंग ने सक्रिय कल्पना के प्रसंग में शब्द कल्पना (Imagination) तथा शब्द फैंटेन्सी (हवाई कल्पना मौज तरंग) के बीच के भेद का खुलासा करते हुए इनमें से शब्द कल्पना (Imagination) का चुनाव किया है। मानसिकता की दृष्टि से शब्द कल्पना (Imagination) में सिचाई का कुछ अंश है जबकि शब्द फैंटेन्सी (हवाई कल्पना मौज तरंग) में वास्तविकता के पूर्ण अभाव के होने का ही अर्थ निकलता है। इस प्रकार फैंटेन्सी (हवाई कल्पना) का अर्थ केवल बकवास या अर्थहीनता (Mere non-sense) है। जिसको हम दृश्यानुभव (Affecting impression) मात्र कह सकते हैं। जबकि (Imagination) (कल्पना) में सक्रियता (Activity) तथा अर्थपूर्ण सृजन (Purposeful Creativity) के दर्शन होते हैं। शब्द फैंटेन्सी का अर्थ कम ज्यादा मात्रा में मन की एक क्षणिक कारगुजारी ही है, किन्तु शब्द (Imagination) (कल्पना) में दृश्य की सजीवता तथा निरन्तरता का अर्थ बोध पाया जाता है और कल्पना का आधार मानवीय तर्क (Logic) है। यूंग ने इस अवधारणा को अपने एक जीवन अनुभव के विवरण से स्पष्ट किया है जो निम्नानुसार है :—

"जब मैं एक छोटा सा बालक था, तब मेरी मासी एक पुराने बंगले में रहती थी जिनमें प्राचीन रंगीन खुदाई की चित्रकारी की गई थी और इनके बीच मेरे बड़े नाना की एक मूर्ति स्थापित की गई थी। मेरे बड़े नाना पादरी थे और उनकी वह मूर्ति चर्च की ओर जाने वाली एक सड़क के किनारे एक ऊंचे चबूतरे पर स्थापित की गई थी और इस चबूतरे के चारों तरफ लोहे का एक जंगला बना हुआ था तथा मूर्ति के चबूतरे से चर्च की सड़क तक सीढ़ियां बनी हुई थीं। प्रत्येक रविवार को सुबह में मुझे अपनी मासी के घर पहुंचने का आदेश था और प्रति रविवार को मुझे अपने नानाजी की मूर्ति के सन्मुख घुटनों पर बैठकर उनका अभिनन्दन कराया जाता था, उस समय मेरी मौसी वहां उपस्थित रहती थीं। और वह मुझे समझाती थी कि मूर्ति स्थिर है, और यह मूर्ति चबूतरे से सीढ़ियां उतर कर

चर्च की सड़क की ओर चल नहीं सकती, किन्तु उन क्षणों में मुझे ऐसा एहसास होने लगता था कि मूर्ति सीढ़ियों से नीचे उतर कर चल रही है और नानाजी की मूर्ति चल रही है। यह सक्रिय कल्पना मेरे चेतन मन की करतूत थी। इस प्रसंग में यह स्मरणीय है कि यदि किसी काल्पनिक चित्र पर ध्यान केन्द्रित किया जाय तो उस चित्र में कुछ हलचल होने की प्रतीति हो सकती है मानो वह ध्यान केन्द्रित कल्पना चित्र चल रहा है तब द्रष्टा स्वभावतः यह सन्देह करने लगता है कि उसे जो प्रतीति हो रही है वह क्या उसका भ्रम है या इसमें सच्चाई है ? फलतः वह इस अनुभव को पुनः परीक्षण करने हेतु इस प्रतीति के अनुभव को बार-बार पुनरावृत्ति करने के लिए प्रेरित होता है तथा यदि पुनरावृत्ति से उसके पूर्व आभास का सत्यापन नहीं होता है तो वह निश्चयपूर्वक इस नतीजे पर पहुंचेगा कि जो कुछ उसे प्रतीति या आभास हुआ था वह केवल उसके मन का आविष्कार (Invention) या करतूत है और यह मन तरंग एक भ्रम मात्र है, जिसमें सच्चाई की कोई गुंजाइश ही नहीं है। चेतन चित्त के इस भ्रम के खुलासे के लिये निश्चयपूर्वक अवचेतन की अन्तर्वस्तु प्रवाह से योग्य एवं कल्याणकारी मदद मिल जाती है। इस प्रकार चेतन का भूल या त्रुटि का परिमार्जन या सुधार अवचेतन के स्वतः प्रवाह से योग्य प्रकार से स्वतः निष्पादित हो सकता है।

जब कभी हम बरसों के बाद अपने किसी पुराने मित्र से अकस्मात् मिल जाते हैं तो हम उसको तत्काल पहिचान लेते हैं कि यह हमारा पुराना मित्र है, किन्तु उस समय प्रायः हमें उसका नाम ठाम इत्यादि सन्दर्भ की स्मृति उजागर नहीं हो पाती और हमें इस विस्मृति के अनुभव से अजीब सी आन्तरिक परेशानी सी होती है। किन्तु इस परेशानी के बावजूद भी यदि हम उसके साथ अपनी बातचीत को जारी रखते हैं तो इस बातचीत के दौरान में भूले हुए उसके नाम एवं सन्दर्भों की स्वतः स्मृति उभर आती है और हमें उसका नाम ठाम तथा उसके सही सन्दर्भों की स्मृति जागरूक हो जाती है। चेतन स्तर पर मित्र की याद कायम रहना किन्तु अवचेतन स्तर पर उसका नाम ठाँव एवं सन्दर्भ को भूल जाना रोजमर्रा के मानव जीवन का एक अनुभव है। यदि चेतन सम्भाग से अपने मित्र को पहिचान कर उससे अपनी बातचीत जारी रखे जाने से चेतन स्तर से भूली हुई अन्तर्वस्तु की प्रतिपूर्ति अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु से स्वतः होने की युंगीय अवधारणा की प्रामाणिकता का उदाहरण है। नाम ठाम तथा सन्दर्भ के बिना पुराने मित्र को पहिचाना जाना चेतन सम्भाग की अधूरी कार्यवाही, जो केवल अवचेतन के सहयोग से ही पूर्णरूपेण निष्पादित की जा सकती है। अतः नाम ठाम का गैर जानकारी के अनुभव से अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु को इस बाबत टटोला जाता है तो अवचेतन स्तर की अन्तर्वस्तु का चेतन क्षेत्र पर स्वतः उभराव हो जाना पाया जाता है और इस बाबत रोगी मानव यदि कुछ समय के लिए तटस्थता का रुख स्वीकार कर ले तो निश्चयपूर्वक ज्ञाता को तत्सम्बन्धी मदद उसके अवचेतन स्तर से अवश्य मिलेगी

और वह अपने बिछड़े मित्र का नाम धाम इत्यादि सन्दर्भों को स्वतः पुनः याद कर सकेगा। अतः चेतन द्वारा अपेक्षित कमियों अभाव की स्वतः प्रतिपूर्ति उसके ही अवचेतन में हो जाती है।

यहां पर स्वप्न विश्लेषण (Dream Analysis) तथा सक्रिय कल्पना (Active Imagination) के अन्तर को समझना भी उपयोगी है। दोनों का उद्गम स्थल निःसंदेह मानवीय चित्त है किन्तु स्वप्न का उद्गम स्थल चित्त का अवचेतन स्तर है जबकि सक्रिय कल्पना की सम्पूर्ण सामग्री चेतन स्तर से जुटायी जाती है। अतः परस्पर विरोधी सम्भागों के उद्गम स्थलों की उपज होने के बावजूद भी इनकी प्रति परस्पर पूरक स्थिति के कारण इनको चित्त का परिणाम माना गया है। स्वप्न की उपज अवचेतन स्तर है। व्यक्तिगत अवचेतन की अभिव्यक्ति प्रायः सरल सपनों के माध्यम से सहज रूप में होना पाया जाता है, जिस पर व्यक्ति या अहम् का कोई बस या नियन्त्रण नहीं रहता है किन्तु इन सरल सपनों का अर्थ आसानी से व्यक्ति अपने चेतन पर उजागर तथा बोधगम्य हो जाता है किन्तु जो स्वप्न सामूहिक अवचेतन की स्थिति को अभिव्यक्त करते हैं वे प्रायः दुरूह, जटिल तथा हलचल भरे होते हैं और उनका प्रकटीकरण प्रायः आर्कीटाइपल प्रतीकों के रूप में ही होता है। अतः इनके विश्लेषण हेतु आदिम-धार्मिक कृत्यों, दंत कथाओं एवं प्राचीन पुराण-कथाओं के विवरणों की मदद किया जाना जरूरी हो जाता है, तथा इन सामूहिक अवचेतन के गहनतम आर्कीटाइपल सपनों की योग्य समझ के लिए कभी-कभी सक्रिय कल्पना प्रणाली के उपयोग की मदद लिए जाने की भी आवश्यकता महसूस की जाती है। सक्रिय कल्पना के अन्तर्गत चेतन स्तर पर एकाग्र ध्यान केन्द्रित किया जाना तथा निरन्तर चित्र, काव्य, कला सृजन आदि के माध्यम की इसकी पुनरावृत्ति अभ्यास से जब यकायक गहनतम अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का स्वतः स्फुरण चेतन स्तर पर प्रतिपूर्ति की तरह होता है तब व्यक्ति अपने स्वप्न के क्लिष्ट एवं दुरूह प्रतीत होने वाले प्रतीकों का भी सही अर्थ समझने में सक्षम हो जाता है। अतः गहनतम प्रतीकों के अर्थ बोध हेतु स्वप्न विश्लेषण के अलावा सक्रिय कल्पना अभ्यास का उपयोग किया जाना बहुत जरूरी है। जिस प्रकार स्थिति की दृष्टि से चित्त के दो संभाग (चेतन एवं अवचेतन) हैं जो परस्पर विरोधी स्वभाव के होने के बावजूद भी एक दूसरे के प्रतिपूरक की तरह सहयोगी स्थितियां हैं तथा इन दोनों संभागों के बीच स्वतः मानवीय जीवन शक्ति (Libido) के सहज प्रवाह में यह दोनों संभाग परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं उसी तरह क्रिया की दृष्टि से स्वप्न विश्लेषण तथा सक्रिय कल्पना अभ्यास के बीच भी एक गहरा सम्बन्ध है, जिनके सम्यक् उपयोग से ही प्रतिभासित दृश्य या प्रसंग की सच्चाई प्रयोजन तथा अर्थ व्यक्ति द्वारा समझा जा सकता है तथा इस समझ के प्रकाश में ही मानव अपने सहज विकास के लक्ष्य की ओर अग्रसर होता हुआ पूर्णत्व एवं समग्रता की मंजिल तक पहुंच सकता है।

स्वप्न दर्शन के दौरान व्यक्ति का चेतन संभाग एक तटस्थ निष्क्रिय द्रष्टा की हैसियत से जो कुछ अवचेतन अभिव्यक्त कर रहा है, या दिखा रहा है, उसे वह तटस्थ एवं सहज रूप से अंगीकार करता है, अतः स्वप्न देखना व्यक्ति की कृति नहीं अपितु वह उसकी नियति है। स्वप्न देखना या नहीं देखना मानवीय स्वेच्छा के परे है। स्वप्न दर्शन के दौरान व्यक्ति निष्क्रिय (Passive) द्रष्टा (On looker) मात्र रहता है, किन्तु सक्रिय कल्पना (Active Imagination) के अन्तर्गत व्यक्ति की जागरूकता तथा उसकी सतत सक्रियता (Activity) बनी रहती है, तथा अपने चेतना स्तर से उसे तटस्थता बनाये रखने हेतु सतत जागरूक एवं क्रियाशील बना रहना पड़ता है। किसी भी स्थितियां प्रसंग तथा उसकी क्रिया की गहराई में जाकर ही सच्चाई की खोज किया जाना तथा उसको समझकर व्यवहार में लाने योग्य पूर्ण क्षमता प्राप्त करने हेतु व्यक्ति को तटस्थतावृत्ति एवं सक्रिय कार्यशीलता इन दोनों वृत्तियों का निर्वाह किया जाना तथा इसमें निष्णात होना जरूरी है। अतः इस दृष्टि से स्वप्न विश्लेषण एवं सक्रिय कल्पना तकनीक का उपयोग सही ज्ञान सम्पादन द्वारा मानवता की समृद्धि (गहराई एवं विस्तार में) के लिये बहुत जरूरी है, और यही आज के विकासोन्मुखी युग की सर्वोपरि मांग है। यूंग ने इस दिशा में लगभग चालीस वर्षों तक निरन्तर अपने अनुभवों एवं अध्ययनों के आधार पर चितचिकित्सा के क्षेत्र में मानवता की जो उल्लेखनीय सेवायें अर्पित की हैं वह निःसंदेह समग्र मानव जाति के लिये प्रयोजनीय, उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है।

अध्याय 18

मनोचिकित्सा
(Psycho-therapy)

मनोचिकित्सा (Psycho-therapy) का अर्थ मन अथवा विशेषत: चित्त का मनोवैज्ञानिक विधि से इलाज करना है। सामान्यत: जन-मानस में मनोचिकित्सा को फ्रायड द्वारा प्रतिपादित 'मनोविश्लेषण शास्त्र' (Psycho-analysis) का पर्यायवाची माना जाता है। फ्रायड ने शैशवकालीन काम वृत्ति के दमन के फलस्वरूप उत्पन्न लक्षणों का अध्ययन करते हुए मनोविश्लेषण शास्त्र की नींव डाली तथा व्यक्ति में दिखाई पड़ने वाले रोगों के लक्षणों का मूल सम्बन्ध उसके शैशवकालीन लैंगिक दमन के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया है। अत: 'मनोविश्लेषण' पद का उपयोग अब फ्रायड द्वारा प्रतिपादित चिकित्सा पद्धति से ही माना जाता है। इसी तरह फ्रायड के एक अन्य सहयोगी अलफ्रेड एडलर (Alfred Adler) द्वारा व्यक्तिवादी मनोविज्ञान (Individual psychology) की नींव डाली गई है, जिसमें रोग के लक्षणों का कारण व्यक्ति द्वारा शक्ति सम्पन्न होने की इच्छा की असफलता के फलस्वरूप होने वाली हीनभावना (Interiority Complex) की क्षतिपूर्ति हेतु किए गए प्रयत्नों को माना गया है।

यूंग द्वारा प्रतिपादित चिकित्सा पद्धति को 'विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान' (Analytical Psychology) की संज्ञा से परिभाषित किया जाता है। यह पद्धति केवल रोग का उपचार ही नहीं है अपितु इस प्रणाली के अन्तर्गत व्यक्तिकरण प्रक्रिया (Individulation process) के द्वारा व्यक्तित्व के विकास की ओर भी ध्यान दिया जाता है। सभी रोगी जो अपने उपचार के लिए विश्लेषणात्मक-मनोविज्ञान पद्धति को स्वीकार करते हैं—उनका लक्ष्य व्यक्तिकरण प्रक्रिया नहीं होता क्योंकि बहुत कम व्यक्ति ही अपने व्यक्तित्व विकास के लिए प्रयत्नशील पाए जाते हैं, अत: सामान्यत: रोगी अपनी आयु, स्वभाव एवं विकास के विभिन्न स्तरों पर पाए जाने वाली अपनी समस्याओं एवं कठिनाइयों के योग्य समाधान के लिए विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान पद्धति को अपनाता है। यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की इस पद्धति के अन्तर्गत कामुक इच्छा के दमन अथवा शक्ति प्राप्त करने के लिए आतुरता

की विफलता के परिणामस्वरूप रोगग्रस्त मनस्तापी (Neurosis) के इलाज की ओर भी ध्यान दिया जाता है।*

यूंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का आधार व्यक्ति में पायी जाने वाली अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी अभिवृत्तियां हैं। यूंग ने अभिवृत्ति की दृष्टि से फ्रायड के 'मनोविश्लेषण शास्त्र' को बहिर्मुखी प्रधान माना है क्योंकि फ्रायड की मान्यतानुसार मनस्ताप का प्रधान कारण व्यक्ति की शैशवकालीन कामजनित वृत्तियों का दमन है। फ्रायड के विपरीत एडलर ने युवावस्था के शक्ति (Power) उपलब्धि हेतु आन्तरिक मांग की विफलता को मनस्ताप रोग का मुख्य कारण बतलाया है, अतः इस दृष्टि से फ्रायड में बहिर्मुखी तथा एडलर में अन्तर्मुखी अभिवृत्ति का बाहुल्य होना यूंग ने माना है। यूंग फ्रायड तथा एडलर के सहयोगी रहे हैं किन्तु उन्हें अपने अनुभवों के आधार पर फ्रायड एवं एडलर की विचारधाराओं से अलग होकर 'विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान' की नई चिकित्सा पद्धति की स्थापना करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। यूंग न तो फ्रायड की विचार पद्धति से अलग होना चाहते थे और न वे एडलर की मान्यताओं की अवहेलना करना चाहते थे, अतः उन्हें जब अपने मनस्तापी रोगियों की चिकित्सा के दौरान में कतिपय ऐसे कुछ अनुभव हुए जिनका समर्थन न तो फ्रायड की मान्यता से मेल खाता था और न जिनका समर्थन एडलर की विचार-धारा से हो पाता था। यूंग को अपनी नवीन विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की पद्धति की स्थापना करनी पड़ी, फिर भी यूंग ने फ्रायड तथा एडलर की विचार पद्धतियों के प्रति सदैव सम्मान एवं आदर भाव व्यक्त किया है। यूंग न तो कामुक इच्छा को और न शक्ति संचय की इच्छा को अनदेखा करते हैं और इन इच्छाओं की अस-फलताओं का होना भी मनस्तापी रोगी का कारण होना स्वीकार करते हैं। यूंग की यह भी धारणा है कि कामेच्छाएं तथा शक्ति-इच्छाएं युवावस्था की प्रबलतम स्वा-भाविक मांगें हैं, जिनकी यदि कोई योग्य प्रकार से प्रतिपूर्ति नहीं हो पाती है तो निःसन्देह वह व्यक्ति मनस्तापी रोगी बन जाता है। प्रत्येक व्यक्ति मानव समूह का एक अंग मात्र है, और मानव समाज व्यक्ति की प्रत्येक कामैषणा अथवा यशैषणा पर प्रायः रोक अथवा बंधन लगाता है, अतः प्रत्येक व्यक्ति की कामजन्य तथा

* कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा प्रस्तावित 'विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान' (Analytical psychology) को मनोग्रन्थि मनोविज्ञान (Complex Psychology) अथवा गहन मनोविज्ञान (Depth Psychology) भी कहा जाता है। इस प्रणाली का विकास यूंग द्वारा ज्यूरीच में अवचेतन सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य के दौरान में हुआ, अतः यूंगीय चित्त चिकित्सा को ज्यूरीच स्कूल चिकित्सा प्रणाली कहा जाता है, तथा फ्रायड की मन चिकित्सा को वियना स्कूल प्रणाली कहा जाता है।

परिणामस्वरूप सभी इच्छाओं की पूर्ण प्रतिपूर्ति नहीं हो पाती तथा व्यक्ति को अपनी सहज इच्छाओं एवं वृत्तियों को समाज के सामूहिक दबाव से रोकना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप उनका समूचा व्यक्तित्व यदाकदा असन्तुलित होकर वह मनस्तापी या रोगग्रस्त हो जाता है। मानव मात्र, चाहे वह पुरुष हो अथवा महिला हो, समाज द्वारा समर्थित इच्छाओं की केवल आंशिक प्रतिपूर्ति कर पाता है और उसकी इच्छाओं की केवल आंशिक प्रतिपूर्ति मात्र से ही मानव को प्रायः धैर्य तथा सन्तोष करना पड़ता है। किन्तु यदि वह केवल आंशिक प्रतिपूर्ति से संतोष नहीं कर पाता तो वह प्रायः दुःखी तथा रोगग्रस्त हो जाएगा। कामेच्छा शरीर की तथा शक्ति अथवा यश इच्छा मानव के मन की सहज स्वाभाविक मांग है, जिसकी योग्य प्रतिपूर्ति की असफलता से मानव का असन्तुलित तथा रोगग्रस्त हो जाना एक सहज स्वाभाविक परिणाम है।

युवावस्था के दौरान फ्रायड द्वारा प्रतिपादित कामेच्छा तथा एडलर द्वारा समर्थित शक्ति ऐषणा अथवा स्वयं को शक्ति केन्द्र बनाने की आन्तरिक मांग को विशेष महत्व दिया जाता है जिनके कारण व्यक्तित्व के विकास के क्रम में प्रायः बाधा उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति का सहज बौद्धिक विकास अवरुद्ध हो जाता है क्योंकि मानव में निहित अधिकांशतः शक्ति का उपयोग कामेच्छा की प्रतिपूर्ति में लग जाता है और वह रोग ग्रस्त हो जाता है। अतः इस रोग के कारण की खोज में उसके शैशवकालीन कामेच्छा की परिस्थितियों की जानकारी किया जाना जरूरी हो जाता है। इसी तरह शक्ति संचय ऐषणा के तनाव से मुक्त होने के लिए तत्सम्बन्धी मांगों के खोखलेपन से परिचय किया जाना जरूरी है। यूंग ने मनस्तापी के कारणों की खोज के साथ ही साथ उसके रचनात्मक (Constructive side) पहलू पर भी ध्यान देने का आग्रह किया है। यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि रोग के कारण की जानकारी से रोग तनाव अथवा पीड़ा में तो निःसन्देह कमी हो जाती है किन्तु रोग के कारण की जानकारी मात्र से वह रोग से मुक्ति नहीं पा सकता। रोग के उपचार की दृष्टि से रोग के कारण के साथ ही साथ रोग के स्वरूप को भी जानना जरूरी है। रोग एक ओर भूतकालीन घटित गलतियों का सहज परिणाम है तथा दूसरी ओर रोग भविष्य में होने वाले व्यक्तित्व विकास का पूर्वाभास भी है। रोग के कारण के साथ ही साथ रोग की स्थिति की सूचना स्वयं रोग में ही उसके योग्य समाधान की एक झलक से मिल सकती है तथा रोग में से ही चिकित्सा की नई संभावना दृष्टिगोचर हो सकती है बशर्ते रोग की योग्य पहिचान कर ली गई हो। इस अवधारणा को यूंग ने एक मनस्तापी युवक के उदाहरण से स्पष्ट किया है। यूंग के पास एक नवयुवक उपस्थित हुआ जो समलैंगिकता (Homo-Sexuality) का शिकार था। यूंग ने इस समलिंगी युवक के रोग का स्वप्न विश्लेषण करते हुए उसके रोग का मूल कारण उसकी माता के साथ तीव्रतम रागात्मक सम्बन्ध होने का

कारण का पता लगाया। विश्लेपण के दौरान में इस युवक को एक के बाद दूसरा इस प्रकार दो स्वप्न दीखे, उसका विवरण निम्नानुसार है—

(1) मैं स्वयं को एक गिरजाघर में पाता हूं जहाँ दिव्य रहस्यमय प्रकाश जगमगा रहा है जिसको लाउरर्डन का गिरजाघर (Cothedral of Lourdan) कहा जाता है। इस कैथेड्रल के केन्द्र में एक गहरा अंधकारपूर्ण कुंआ (Well) है, जिसके नीचे मैं उतर रहा हूं।

(2) दूसरे स्वप्न के अन्तर्गत मैं गौथीक के एक बड़े कैथेड्रल में हूं—तथा मेरे सम्मुख मंच पर एक पादरी खड़ा है। मैं पादरी के समक्ष अपने एक मित्र के साथ खड़ा हूं, मित्र के हाथ में हाथीदांत की एक छोटी सी मूर्ति है जिसके बाबत मेरी भावना है कि इसको भी इसाई धर्म में दीक्षित किया जाए। यकायक तभी एक आयु प्राप्त अधेड़ महिला उपस्थित होती है जो मेरे मित्र की अंगुठी को अपनी उंगली में पहन लेती है जिसके कारण मेरा मित्र भयभीत हो जाता है कि उसका सम्बन्ध उक्त महिला से हो गया है। तब वहाँ यकायक एक बाजा बज उठता है।

इन सपनों से रोगी की तत्कालीन स्थितियों पर प्रकाश पड़ता है तथा सपने में देखे गए दिव्य प्रकाश, गिरजाघर, पादरी की उपस्थिति, इत्यादि प्रतीकों के द्वारा रोगग्रस्त युवक को बचपने की कुटेवों को छोड़कर सामान्य प्रौढ़ जीवन में धर्म की ओर प्रवृत्त होने का संकेत दिया गया है ताकि वह रोग मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व का सहज प्रकार से योग्य-विकास कर सके।* यूंग ने अपनी पुस्तक में उपरोक्त सपनों की विशद् व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट किया है कि स्वयं स्वप्न-द्रष्टा भी अपने सपने के वातावरण का अध्ययन करते हुए उस सपने का अर्थ निकाल सकता है। प्रथम स्वप्न में उल्लेखित लाडरेड का गिरजाघर रोगोपचार के लिए प्रसिद्ध माना हुआ स्थल है जिसका यही अर्थ है कि रोगी अपना इलाज कराने के लिए स्वतः उत्सुक है और वह अपने समलैंगिक संबंधों में सुधार करना चाहता है। दूसरे सपने में हाथीदांत की मूर्ति को धर्म द्वारा अभिमंत्रित किए जाने की इच्छा का यही तात्पर्य है कि रोगग्रस्त युवक ईसाई धार्मिक संप्रदाय के अन्तर्गत व्यवस्थित होना चाहता है ताकि उसका जीवन प्रयोजनीय बन सके। सपने में प्रकट पुजारी की मौजूदगी का अर्थ धार्मिक क्रियाओं को संपादन कराए जाने की उसकी आवश्यकता को दर्शाया गया है तथा द्वितीय सपने में रोगग्रस्त युवक के समलिंगी साथी की अंगूठी को एक महिला द्वारा स्वीकार किए जाने का तात्पर्य यही है कि रोगग्रस्त युवक के समलिंगी सम्बन्ध वाले अन्य युवक को इस घृणित कुटेव को छोड़कर सामान्य विवाहित जीवन

---

* Two Essays on Analytical Psychology at page 114. Collected Works of C. G. Jung, Volume 7 para 182.

व्यतीत करना चाहिए। सपने में दीखी वयप्राप्त महिला का अर्थ उसके मातृसम्बन्धों की पुनरावृत्ति से भी लगाया जा सकता है किन्तु सपने के अंत में वाद्य यन्त्रों का सराहनीय धन उठना, प्रकार से रोगी के मित्र का उक्त महिला के विवाह सम्बन्ध की घोषणा से अर्थ उनका विवाह संपन्न होने से लगाया जाना अधिक युक्ति-संगत है। अतः इन दोनों सपनों का अर्थ विकृत समलिंगी बुरी आदत से निकल कर स्त्री-पुरुष के सामान्य व्यवहार की ओर अग्रसर होने का सूचक है।*

जब वयप्राप्त व्यक्ति (चालीस वर्ष से अधिक आयु का) मनस्ताप (Neurosis) से ग्रस्त होता है तब उसके उपचार के लिए अलग मार्ग ढूंढना जरूरी हो जाता है। यदि किसी व्यक्ति की युवावस्था सामान्य प्रकार से व्यतीत हुई और यह व्यक्ति प्रौढ़ावस्था में मनस्तापी बन जाता है तो इसका यही अर्थ निकलता है कि वह वर्तमानकालीन जीवन को खाली (Empty) तथा उद्देश्यहीन (Meaningless) मान बैठा है। इस प्रकार की अवस्था को मनस्तापी रोग कहने के बजाए 'आधुनिककालीन अर्थहीन नैराश्य जीवन' कहना अधिक उपयुक्त है। यूंग के सन्निकट जितने रोगी उपचार हेतु उपस्थित हुए उनमें से लगभग एक तृतीयांश व्यक्ति प्रौढ़ावस्था के इस खालीपन के शिकार पाए गए। इस प्रकार के व्यक्तियों के लिए यूंग ने चित्त-चिकित्सा की विशेष पद्धति को अपनाया जाना योग्य माना है।

यूंग की यह मान्यता है कि प्रत्येक मनस्ताप (Neurosis) का एक लक्ष्य (Aim) होता है—और वह लक्ष्य यही है कि वह अपने जीवन के किसी एक क्षेत्र में उपलब्ध असफलता की क्षतिपूर्ति (Compensation) कर सके तथा उसके द्वारा पूर्व में उपेक्षित क्रियाओं की ओर अब योग्य ध्यान दे सके। मानव-जीवन सफलताओं तथा असफलताओं का मिला-जुला एक लम्बा अटूट सिलसिला है। व्यक्ति को केवल शैशवकालीन कामुकता तथा यौवनकालीन शक्ति लिप्सा की असफलताओं को ही बर्दाश्त नहीं करना पड़ता अपितु जीवन के कई क्षेत्रों में उसको नाना प्रकार की असफलताओं की भीषण पीड़ाओं का भी सामना करना पड़ता है जिनका उसके जीवन के लिए बड़ा महत्व (Significance) तथा अर्थ (Meaning) रहता है। अतः जब किसी भी क्षेत्र में मानव को जीवन की दौड़ में पिछड़ कर किसी असफलता की पीड़ा को स्वीकार करना पड़ता है तब वह प्रायः दुःखी, निराश तथा कुछ अंशों में अस्तव्यस्त सा हो जाता है, किन्तु इस निराशा, दुःख तथा असन्तुलित जीवन के बावजूद भी प्रत्येक व्यक्ति अपने विकास की ओर स्वतः अग्रसर होता रहता है और इसलिए वह नये-नये कामों में जुट जाता है। जीवन के प्रारंभिक काल में निःसन्देह उसकी बहिर्मुखी अभिवृत्ति के फलस्वरूप व्यक्ति बाह्य विश्व की वस्तुओं

* Ibid at page 106–15 and paras 166–182.

के संपर्क से सुख को बटोरने लगता है चाहे वह काम सुख हो अथवा अधिकार एवं शक्ति लिप्सा का सुख हो किन्तु वही व्यक्ति जब अपने उत्तरकालीन जीवन में अपने आप को अन्दर की ओर मोड़ने की कोशिश करते हुए अन्तर्वृत्ति को ही अधिक महत्व देने लगता है तब वह अपनी उत्तरकालीन अवस्था में सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यों में अपनी शक्ति का समुचित उपयोग करने के लिए तैयार हो जाता है। इस प्रकार मानव-जीवन का पूर्वकाल तथा उसके उत्तरकालीन जीवन की सहज रुचियों में बड़ा अन्तर देखा गया है। इसी तरह बाल्यावस्था तथा यौवनावस्था की विफलताओं एवं उत्तरकालीन जीवन की असफलताओं के बीच के अन्तर को भी भली-भांति समझा जाना भी बहुत जरूरी है। प्रारंभकालीन असफलताओं के कारण मनस्ताप के उपचार हेतु जिस प्रकार उसकी भूतकालीन घटनाओं की खोज किया जाना उपयोगी रहा है उसी प्रकार उत्तरकालीन असफलताओं से उत्पन्न खालीपने तथा अर्थ-हीनता की पीड़ा को भरने के लिए व्यक्ति का अपने जीवन को उद्देश्य एवं अर्थ की खोज में लगाये रहना भी जरूरी हो जाता है। उत्तरकालीन अवस्था में व्यक्ति को अपने जीवन का अर्थ समझने की एक आंतरिक मांग का जब अनुभव होता है तब वह अवचेतन के गहन रहस्यमय भंडारों से उसकी तलाश करना शुरू कर देता है। व्यक्ति द्वारा की गई इस तलाश को ही यूंग ने 'व्यक्तिकरण प्रक्रिया' संज्ञा से व्याख्यायित किया है। यह तलाश एक लम्बी एवं कठिन साधना अथवा जीवन यात्रा है और कोई विरला भाग्यवान ही इस मंजिल को पार कर अपने लक्ष्य तक पहुंच पाता है और अपनी आत्मा को मोत बटोर कर सफल हो पाता है। किन्तु इस महान् यात्रा पथ पर हजारों, लाखों, करोड़ों व्यक्ति निरन्तर चलते रहते हैं और इस यात्रा के दौरान कतिपय उन्नत यात्रियों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियां मानव समाज के विकास एवं समृद्धि हेतु धरोहर के रूप में सौंपी जाती रही हैं।

मनस्ताप (Neurosis) एक अर्थ में वह चित्तीय गड़बड़ी (Psychic disturbance) है जिसके कारण जीवन-निर्वाह में कठिनता एवं व्यवधान (Interfere) होता है, तथा इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के स्वास्थ्य में भी हानि पहुंचती है तथा वह अन्त में जाकर रोगग्रस्त हो जाता है। यूंग की मान्यतानुसार मनस्ताप के कारण व्यक्ति की सहज प्रवृत्तियों के बीच परस्पर टकराव होने लगता है और उसका व्यक्तित्व दो भागों में बट कर अलग-अलग दिशाओं में अनियंत्रित होकर बहने लगता है और व्यक्ति अपनी चेतना शक्ति से अपने जीवन को निर्धारित मार्ग पर नहीं चला पाता तथा इस प्रकार अवचेतन के प्रभाव से उसकी मानवीय प्रवृत्तियां अनियंत्रित हो जाती हैं। यही मनस्ताप ग्रस्तता के उल्लेखनीय लक्षण हैं। मनस्तापी व्यक्ति मनोग्रंथियों (Complexes) का शिकार बन कर चेतन द्वारा निर्धारित मार्ग से प्रायः भटक जाता है तथा मनस्तापी रोगी को यह भान ही नहीं रहता कि वह

किस दिशा की ओर जा रहा है और किन बाधाओं के कारण वह पथभ्रष्ट हो रहा है। इस प्रकार मनस्तापी रोगी चेतन तथा अवचेतन की परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के द्वन्द्व में फंस कर परेशानी का अनुभव करता है।

द्वन्द्वग्रस्त मनस्तापी रोगी में पहिले छोटी-छोटी मामूली त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं जैसे वह स्मृति सम्बन्धी साधारण गलतियाँ करता है अथवा किसी परिस्थिति को समझने में कुछ गलतफहमी पाल बैठता है अथवा वह विभ्रम (Hallucination) या गलत धारणा (Mistaken beliefs) का शिकार बन जाता है। उपरोक्त प्रकार के लक्षणों के अध्ययन से यह जाना जा सकता है कि व्यक्ति मनस्तापी रोग की पकड़ में आ रहा है—अतः इन लक्षणों की ओर समुचित ध्यान देकर अविलम्ब इनका सोपचार किसी निष्णात चित्त विश्लेषक द्वारा कराया जाना जरूरी है अन्यथा इस रोग के बढ़ जाने की स्थिति में रोगग्रस्त व्यक्ति अंधा, बहरा, लूला अथवा विक्षिप्त हो जाएगा। ऐसे मनस्तापी रोगियों में पाये जाने वाले सरदर्द, बुखार तथा तरह-तरह की अन्य बीमारियों के भौतिक कारणों का पता लगाया जाना कठिन हो जाता है। इसके अलावा कतिपय मनस्तापी रोगी आधारहीन चिंताओं (baseless anxieties), भय (Fears, phobias) तथा मनोग्रन्थियों (Obsessions) के शिकार हो जाता है और कोशिशों के बावजूद भी वह इनसे स्वतंत्र नहीं हो पाता। उदाहरणार्थ यूंग ने एक ऐसे रोगी का वर्णन प्रस्तुत किया है जो तेज बुखार से धधक रहा था किन्तु इस रोगी ने ज्योंही अपने गोपनीय रहस्यों की पाप स्वीकृति (Confession) को अपने चित्त चिकित्सक के समक्ष पूर्ण प्रकार से प्रकट किया तो उसका ऊंचा तापक्रम स्वतः एकदम घट गया और उसका तापमान सामान्य हो गया।* अतः रोगी द्वारा सच्चाई के साथ पाप-स्वीकृति किया जाना भी चित्त चिकित्सा की दृष्टि से एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन माना जाता है।

यूंग की मान्यता है कि व्यक्ति द्वारा अपने गहन-गोपनीय पापों की स्वीकृति किया जाना ही विश्लेषणात्मक चित्त चिकित्सक का प्रारम्भ है। यद्यपि पाप-स्वीकृति भावना तथा व्यक्ति के धार्मिक मान्यता के बीच कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है फिर भी धार्मिक वृत्ति संपन्न व्यक्ति अपने गहन चित्त में दबाये या दफनाए हुए पापों का यदि पाप स्वीकृति के माध्यम से चेतन स्तर उजागर करता है तो उसके अवचेतन का बोझ स्वतः कम हो जाता है और इस सप्रयास प्रयत्न के परिणामस्वरूप उसके मानसिक तनाव में भी उल्लेखनीय कमी हो जाती है और वह गहन गोपनीय पाप को छुपाए रखने की पीड़ा से आंशिक रूप से मुक्त हो जाता है और इस प्रकार चित्तीय चिकित्सा

---

* Two Essays on Analytical Psychology (Collected Works, Vol. 7.)

का श्रीगणेश करते हुए वह पर्याप्त अंशों में अपने रोग से छुटकारा भी पा जाता है।*

ज्योंही व्यक्ति अपने छिपाए गए पापों को पाप–स्वीकृति के माध्यम से उद्घाटन करने का विचार करता है तभी स्वतः गहन अवचेतन में दमित भावनाएं चेतन स्तर पर उभरने लगती हैं जिनकी योग्य विवेचना करते हुए रोग के प्रकोप को निःसन्देह कम किया जा सकता है।**

जब व्यक्ति किसी वस्तु को छिपाता है तो वह उसको समाज से दूर कर देता है। जो छिपाया जाता है वह अस्पष्ट, अंधकारमय, भद्दा तथा अविवेकपूर्ण होता है तथा जिसे गोपनीय अथवा गुप्त रखा जाता है उसके साथ बुराई तथा पाप भावना भी जुड़ जाती है और वह वस्तु साधारण नैतिकता की दृष्टि से प्रायः अनुपयुक्त अथवा गलत मानी जाती है अतः छिपाने की प्रक्रिया का प्रायः हानिकारक नतीजा निकलता है, किन्तु यदा-कदा इसका व्यवहार एक खूबी अथवा चतुराई (Cleverness) की तरह भी किया जाता है। कुछ गोपनीयता तो व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से उपयोगी हो सकती है ताकि उसे सामाजिक जीवन के अवचेतन में घुलमिल जाने से बचाया जा सके तथा इसको सही प्रकार से नियन्त्रण में रखते हुए उसका आवश्यकतानुसार उपयोग किया या सुधारा जा सके। आत्मसंयम (Self-restrain) केवल व्यक्तिगत गुण है किन्तु इसकी परिणति कभी-कभी भद्दी सनकों (Ugly moods) चिड़चिड़ापने (Irritability) अथवा खोखले व्यर्थ प्रदर्शनों (Empty Exhibition) में होती है।*** आत्म प्रतिबन्ध से भी कभी-कभी आपसी व्यक्तिगत रिश्तों में टकराहट होने की आशंका पायी जाती है तथा जहां पर रिश्तों में परस्पर भावना की गर्मी अपेक्षित है वहां पर यदि आपसी सम्बन्धों में रूखापन तथा ठंडापन आ जाता है तो निःसन्देह आपसी रिश्तों का बिगाड़ हो जाएगा और इस आत्म अहम्मन्यता (False sense of superiority) के फलस्वरूप वातावरण में व्यर्थ में आपसी तनाव बढ़ जाएगा तथा इसके बीच परस्पर आपसी समझ का सामंजस्य भाव ही नष्ट हो जाएगा। निःसन्देह आत्म प्रतिबन्ध का उपयोग सामाजिक अथवा धार्मिक लक्ष्य के लिए किया जाना चाहिए किन्तु यदि इसका उपयोग व्यक्तिगत छीना झपटी अथवा भय की दृष्टि से किया जाएगा तो यह गुण भी निःसन्देह एक दुर्गुण बन जाएगा।

पूर्ण पाप स्वीकृति जो केवल मौखिक एवं औपचारिकता के लिए पूर्ण घटित तथ्यों के समर्थन मात्र तक ही सीमित न होकर पूरी ईमानदारी के साथ घटित घटना

---

* Modern man in search of a soul, p. 35 and problems of modern Psychotherapy in Collected Works, Vol. 16 p. 35.

** Ibid page, 35.

*** Ibid page, 38.

के प्रति हार्दिक पश्चाताप के साथ यदि व्यक्त की जाए तो इस पश्चातापपूर्ण पाप स्वीकृति के दबाये गये भावावेग (Emotions) चेतन स्तर पर सहज में उभर जाएंगे,* तथा जिसके कारण इस क्षतिपूरक प्रभाव (Compensatory) का अच्छा असर अनुभव किया जा सकेगा। पूर्ण ईमानदारी के साथ यदि हार्दिक पाप स्वीकृति को अपने मनोचिकित्सक के समक्ष प्रकट कर दिया जाए तो इसमें मनस्तापी रोगी के लक्षण धीरे-धीरे कम होते नजर आते हैं तथा रोगी आगे चल कर पूर्णतः रोगमुक्त हो सकता है। तथापि पाप स्वीकृति की अभिव्यक्ति के बाद भी चित्तीय चिकित्सा को जारी रखा जाना जरूरी है ताकि रोगी अपने रोग के कारणों तथा उसके अर्थ को स्वतः भलीभांति समझ सके इसलिए चिकित्सा के दौरान में उसी चित्त चिकित्सक की मौजूदगी को यथावत् बनाए रखना योग्य है। क्योंकि उसी के सम्मुख रोगी ने अपनी पाप स्वीकृति के समय हार्दिक पश्चाताप किया है। इसलिए मनस्तापी रोगी के पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए चिकित्सा के दौरान मे उसी चित्त चिकित्सक का निरन्तर सानिध्य बना रहना जरूरी है।

फ्रायड ने सर्वप्रथम यह सावचेत किया था कि यदाकदा मनस्तापी रोगी अपने विश्लेषक के साथ दुराग्रही सम्बन्ध (Obstenate attachment) बना सकता है। यूंग ने भी इस अवधारणा का समर्थन किया है। इस स्थिति के अन्तर्गत रोगी अपने पिता अथवा माता के प्रति जो रागात्मक भावना रखता था उसका अन्यारोपण (Transference) वह अपने विश्लेषक-चिकित्सक पर कर बैठता है, मानो रोगी चिकित्सक का ही बेटा अथवा बेटी हो और रोगी अपने चिकित्सक के साथ बचपने की हरकतें भी करने लगता है। अधिकांशतः चिकित्सक पुरुष रोगी को उसकी माँ की तरह तथा महिला रोगी को उसके बाप के सदृश्य दीखता है तथा यदाकदा रोगी एवं चिकित्सक के बीच भाई-बहिन, पिता-पुत्र अथवा माता-बेटी के सम्बन्ध भी स्थापित हो जाते हैं। इस दौरान में रोगी द्वारा दमित अनेक भावनाएं चेतनस्तरीय प्रकाश में स्वतः उभरने लगती हैं और अनेक सुषुप्त अथवा दबाई गई कल्पनाएं जाग्रत होने लगती हैं जो अब तक रोगी के अवचेतन चित्त में विस्मृत सी पड़ी हुई थी। इस प्रकार अनेक अज्ञान, अज्ञेय तथा अनजानी अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु जब रोगी के चेतनस्तर पर उजागर होने लगती है तो इस प्रकार रोगी का मानसिक तनाव बढ़ जाता है। इस दौरान में मुख्यतः कामजनित भावनाओं का प्राचुर्य बढ़ जाता है अथवा एडलर की मान्यतानुसार शक्ति सम्पन्न होने की मांग (The will to power) अधिक सक्रिय हो जाती है। ऐसी स्थिति में रोगी बचपने की सुरक्षित गोद की तलाश करते हुए स्वयं को ही सर्वोपरि महत्व दिए जाने की आकांक्षा पाल लेता है और वह अन्यारोपण किए जाने का अर्थ समझने लगता है। विश्लेपक को

---

* Ibid page 41.

भी इन स्थितियों में उसके तथा रोगी के बीच होने वाले भावकौतुक को सही प्रकार से समझना चाहिए तथा रोगी को निरन्तर यथार्थता का बोध कराते रहना चाहिए ताकि आगे जाकर अन्यारोपण का असर स्वाभाविक रिश्ते में बदल सके तथा विश्लेषक एवं रोगी अपनी-अपनी मर्यादाओं का ध्यान रखते हुए अपने-अपने व्यक्तित्व का सहज प्रकार से विकास कर सके।

अन्यारोपण के फलस्वरूप यदाकदा रोगी एवं चिकित्सक के बीच गहरे रागात्मक सम्बन्ध भी बन जाते हैं जिनको केवल व्याख्या से स्पष्ट नहीं किया जा सकता अतः रोगी एवं चिकित्सक को परस्पर स्नेह और सम्मान का निर्वाह करते हुए परस्पर भाईचारा अथवा मित्रतापूर्ण व्यवहार मर्यादित रखना चाहिए तथा एक दूसरे के सुख-दुःख को समझते हुए परस्पर बराबरी का आचरण करना चाहिए। यूंग का यह निरन्तर आग्रह रहा है कि चिकित्सक एवं रोगी का आपसी सम्बन्ध मर्यादित भाईचारे तथा सहृदय मित्र का ही रहना योग्य है ताकि रोगी विश्लेषक के समक्ष निःसंकोच होकर उसके अन्दर होने वाले अनुभवों को ज्यों का त्यों वर्णन कर सके तथा चिकित्सक रोगी के अटपटे अनुभवों पर भी सहानुभूति तथा सहृदयता के साथ योग्य विचार कर सके तथा रोगी का पूर्ण विश्वास संपादित करते हुए उसको जो कुछ घटित हो रहा है उसकी सम्यक् समीक्षा करते हुए उसकी समस्याओं का स्वयं रोगी के द्वारा ही समाधान ढूंढे जाने की उसे प्रेरणा दे सके तथा वह उसकी इस क्रिया में मदद कर सके। चिकित्सक एवं रोगी के बीच गहरे मानवीय एवं आत्मीयतापूर्ण सम्बन्धों की स्थापना तथा परस्पर खुलेपन से विचार-विमर्श किया जाना यूंगीय चित्तीय चिकित्सा पद्धति की एक विशेषता है।

निःसन्देह रोगी चिकित्सक के ऊंचे व्यक्तित्व के महत्व को स्वीकार करता ही है तभी तो वह उसके समक्ष अपने अन्तर मन में छिपाए गए समस्त पापों तथा गलतियों को सहज रूप से प्रकट कर देता है। मानो वह विश्लेषक के सम्मुख अपना आत्म-निवेदन प्रस्तुत कर रहा है और इस प्रकार स्वतः सहजता के साथ अभिव्यक्त पाप स्वीकृति से रोगी को काफी राहत होने का अनुभव होने लगता है, जिसके फलस्वरूप उसके मनस्तापी लक्षणों की कमी होते-होते वह पूर्णतः रोगमुक्त हो जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मनस्ताप के प्रकोप के बढ़ जाने से रोगी का एकांकी व्यक्तित्व दो अथवा दो से अधिक भागों में बिखरने लगता है और व्यक्तित्व के इस बिखराव का भान जब रोगी को हो जाता है तब उसके लिए इस प्रकार बिखरे व्यक्तित्वों को समेट कर उनको एक जूट किया जाना उसके लिए एक असंभव कार्य हो जाता। है ऐसी भीषण विषम स्थितियों में रोगी द्वारा प्रकट की गई पाप-स्वीकृति की अभिव्यक्ति फलदायी नहीं हो पाती तथा रोगी अपने बिखरे व्यक्तित्व के खण्डित व्यक्तित्वों की आपसी टकराहटों में बुरी तरह से उलझ जाता है। इस प्रकार की गम्भीर तथा विषमतर परिस्थिति में एक जागरूक चिकित्सक का उत्तरदायित्व अनेक

पुनः बढ़ जाता है और उनको अपनी गहरी समझ के साथ बड़े धैर्य से कार्य करना पड़ता है। केवल एक योग्य चिकित्सक के माध्यम से ही छिन्न मस्तिष्क ग्रस्त रोगी अपने चेतन मन के साथ टूटे हुए अवचेतन स्तरीय चित्त खण्डों को एक जूट करने के कठिनतम प्रयत्न में सफल हो सकता है। उपरोक्त गंभीरतम स्थितियों में रोगी को एकाकी (Stand alone) स्थिति में छोड़ा जाना कदापि योग्य नहीं है अपितु इस चिकित्सा के दौरान में सहृदय, आत्मीय तथा निष्णात मनोविश्लेषक द्वारा गहरी लगन के साथ दीर्घकालीन निकटस्थ सानिध्य रखा जाना नितान्त जरूरी हो जाता है ताकि चिकित्सक के मनोयोगपूर्वक सहयोग एवं योग्य मार्गदर्शन में रोगी अपने छिन्न-भिन्न व्यक्तित्वों को एकजूट बांधने के प्रयत्न में सफल हो सके और यह अत्यन्त कठिन कार्य चिकित्सक के प्रति अटूट विश्वास तथा उसकी योग्यता में निरन्तर रखी जाने वाली अटल आस्था से ही संभव है। रोगी अपने चिकित्सक के बलबूते पर ही अपने अनियन्त्रित भावावेशों पर काबू पा सकता है।* उपरोक्त प्रकार से रोगी एवं चिकित्सक के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होने की आवश्यकता के सन्दर्भ में चित्त विश्लेषक की योग्यता और क्षमता की ओर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाना जरूरी है। यूंग की मान्यता है कि केवल विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में प्रशिक्षित चिकित्सक ही उपरोक्त कठिन एवं गम्भीर स्थिति में उपयोगी सिद्ध हो सकता है, अतः सर्वप्रथम चिकित्सक का यूंगीय पद्धति के अनुसार प्रशिक्षण प्राप्त किया जाना जरूरी है। यदि चिकित्सक निर्धारित प्रणाली के अनुसार विश्लेषित (Analysed) नहीं है, तो उसकी चिकित्सा का कोई उल्लेखनीय सुखद परिणाम कैसे निकल सकेगा ? अतः रोगी की चिकित्सा प्रारम्भ किए जाने के पूर्व चिकित्सक का योग्य प्रकार से निष्णात विद्वान द्वारा पूर्व विश्लेषण (Analysis) किया जाना जरूरी है ताकि चिकित्सक उसके अवचेतन स्तरीय स्थित छाया (Shadow) तथा अन्य आर्कीटाइपल अन्तर्वस्तुओं से भलीभांति परिचित हो जाए।** अन्यथा चिकित्सक की अवचेतन स्तरीय प्रकोपों के दोष से न केवल चिकित्सा प्रणाली में ही गड़बड़ी आ जाएगी अपितु चिकित्सक के अनियन्त्रित भावावेशों के अकल्याणकारी असर से रोगी की बीमारी घटने के बजाए बढ़ जाएगी। अतः यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सर्वप्रथम चिकित्सक का विश्लेषण किया जाना तथा उसके द्वारा उसकी स्वयं की छाया (Shadow) से सम्यक् प्रकार से परिचित कर लिया जाना जरूरी है अर्थात् चिकित्सक को उसके अवचेतन स्तरीय शक्ति केन्द्रों की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लिया जाना आवश्यक है

---

* Contribution to Analytical Psychology, page 286 and The practice of Psycho-therapy in Collected Works, Vol. 16.

** यूंग ने सर्वप्रथम चिकित्सक का पूर्व विश्लेषण किये जाने की आवश्यकता को महसूस किया था, जिसका बाद में जाकर फ्रायड ने भी समर्थन किया.

और तभी चिकित्सक अपने रोगी की मदद एवं देखभाल करने में सक्षम हो सकेगा। एक अपूर्ण एवं अप्रशिक्षित चिकित्सक किस प्रकार एक मनस्तापी रोगी के इलाज में सफल होगा ? यदि चिकित्सक योग्य विश्लेषण एवं प्रशिक्षण के अभाव में अनजाना एवं रोगमुक्त नहीं है तो वह किस प्रकार अपने रोगी को भयावह रोगों के चंगुल से आजाद कर सकेगा ? इसलिए रोग का उपचार करने वाले चिकित्सक द्वारा निर्धारित ढंग से पूर्व में विश्लेषण एवं सम्यक् प्रशिक्षण प्राप्त किया जाना बहुत ही जरूरी है और तभी चिकित्सक रोगी का उपचार करने की क्षमता रख सकेगा तथा तभी उसके द्वारा किए गए सुधारों में स्थायित्व रह सकेगा।

यूंग की मान्यतानुसार चित्त चिकित्सा विश्लेषक एवं रोगी के बीच परस्पर योग्य भावना पर निर्भर है, इसलिए यूंग ने इसके बीच रहने वाले मानवीय सम्बन्धों को ही सर्वोपरि महत्व दिया है तथा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के सिद्धान्तों एवं प्रणालियों की जानकारी को गौण माना है। विश्लेषक एवं रोगी के बीच न केवल परस्पर विश्वास एवं स्नेह का निरंतर सम्बन्ध बनाना चाहिए अपितु चित्त चिकित्सक के दौरान में पूरी समझ और निष्ठा के साथ विश्लेषक और रोगी को एक दूसरे को भरपूर सहयोग प्राप्त होना जरूरी है। निःसन्देह विश्लेषक अपने विवेक के अधीन किसी भी विधि का उपयोग कर सकता है और रोगी को विश्लेषक द्वारा निर्देशित सभी सुझावों की अपनी सामर्थ्य के अनुसार योग्य पालना करनी चाहिए। किन्तु चिकित्सक को अपना कोई विचार किसी भी रोगी पर लादने या थोपने का अधिकार नहीं है। विश्लेषक का तो एक मात्र कार्य रोगी की रोगमुक्ति के लिए योग्य सतत मदद करना है और रोगी का सभी स्थितियों पर सहृदयतापूर्वक योग्य विश्लेषण करते हुए उसकी समस्याओं का उसी के द्वारा हल निकालने के लिए मदद देना मात्र है। रोगी को भी अपनी सभी कठिनाइयों की सही-सही जानकारी बगैर किसी डर, संकोच अथवा बनावट के विश्लेषक के सामने प्रस्तुत करना चाहिए ताकि विश्लेषक तत्संबंधी सभी स्थितियों पर वैज्ञानिक प्रकार से विवेचना करते हुए रोगी की उन सभी समस्याओं का हल ढूंढने में मदद कर सके।

निम्न स्थितियों में प्रायः चित्त चिकित्सा समाप्त मानी जा सकती है जैसे :—

(1) त्रासदायक एवं अवांछनीय लक्षणों का लोप हो जाना

(2) रोगी में बचकानी हरकतों का सन्तोषजनक विकास हो जाना

(3) रोगी द्वारा जीवन से नये तथा श्रेष्ठतर प्रकार की समायोजना किया जाना, अथवा

(4) किसी महत्वपूर्ण अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की उपलब्धि के फलस्वरूप रोगी को जीवन का नया अर्थ बोध हो जाना, इत्यादि।

किन्तु कतिपय व्यक्तियों को उपरोक्त उपलब्धियों से स्थायी सन्तोष प्राप्त नहीं होता, अतएव ऐसे व्यक्ति विश्लेषक को चिकित्सा कार्य को जारी रखने का आग्रह करते हैं ताकि उनके समुचित विकास का क्रम चलता रहे। अनेक सामान्य श्रेणी के व्यक्ति जो अपने उत्तरकालीन जीवन के दौरान में निराशा, नीरसता अथवा असन्तोष का दुखद अनुभव करते हैं वे अपनी समस्याओं के हल के लिए अवश्लेपकों के योग्य सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हैं ताकि उन्हें उनकी कठिनाइयों से छुटकारा मिल सके तथा मानसिक तनावों से शान्ति प्राप्त हो सके। इसके अलावा कुछ ऐसे व्यक्ति भी पाए जाते हैं जो योग्य विश्लेषक की मदद से अपने समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए इच्छुक होते हैं तथा जो व्यक्तिकरण प्रक्रिया की आवश्यकता का अनुभव करते हैं, यद्यपि सामान्य रोगी व्यक्तिकरण प्रक्रिया को अपनाने की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं कर पाता। यूंग की मान्यता है कि व्यक्तिकरण प्रक्रिया की स्थिति के अन्तर्गत चेतन मन (Conscious mind) एवं अवचेतन चित्त (Unconscious Psyche) के बीच द्वन्द्वात्मक विचार मंथन (Dialectical discussion) होता है और इस प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति अपने समग्र एवं पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए सचेष्ट रहता है तथा अपने जीवन के लिए निर्धारित सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति की आकांक्षा करता है। यूंग ने इस श्रेणी के व्यक्तियों के साथ बरसों गुजारे हैं।*

चित्त चिकित्सा प्रणाली से बहुसंख्यक रोगियों को बड़ा लाभ पहुंचा है, और वे अपने जीवन से उत्तम प्रकार का समायोजन (Well-adjustment) कर सके हैं तथा वे उच्चकोटि का व्यवस्थित जीवन यापन कर रहे हैं, कुछ व्यक्ति चित्तीय चिकित्सा से आंशिक लाभान्वित हुए हैं तथा कुछ लोगों के लिए चित्त-चिकित्सा बेअसर भी सिद्ध हुई है।** अनेक व्यक्ति रात-दिन यह शिकायत करते हुए पाए जाते हैं कि उन्हें जीवन में भयावह रिक्तता अनुभव होती है तथा उन्हें जीवन का कोई अर्थ ही समझ में नहीं आता या उनको अपने जीवन के किसी लक्ष्य की कोई जानकारी ही नहीं है और इस प्रकार उनका जीवन अवरुद्ध (Struck) हो गया है तथा उनको पता ही नहीं चलता कि वे किधर जाएं अथवा क्या करें? कतिपय ऐसे प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति भी पाए जाते हैं जिनकी दृष्टि में 'सामान्यता (Normality) का कोई मूल्य नहीं है तथा जिनको मनस्तापग्रस्तता (Neurosis) में भी किसी परेशानी का अनुभव नहीं होता। इस प्रकार के व्यक्ति किस प्रकार असामान्य जीवन (Abnormal life) को जिया जा सके इसी असामान्य उधेड़ बुन में रात दिन लगे

---

* Psychology and Alchemy Collected Works. Vol. 12, page 5.

** Modern man in search of a soul, page 70, Collected Works Vol. 16.

रहते हैं। यूंग ने इस वर्ग को सविशेष असामान्य 'अति महत्वाकांक्षी वर्ग' कहा है।

निःसंदेह सामान्य व्यक्तित्व (Normal Personality) से अधिक उपयोगी और योग्यतर कोई अन्य की स्थिति नहीं है, किन्तु विशेषण 'सामान्य' के जोड़ से यह प्रतीत होता है कि इस पद को औसत के साथ मेल बैठाने को बंदिश (Restrictions) लगाई जा रही है। सामान्य बनना एक असफल व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण आदर्श (Significant Ideal) हो सकता है, क्योंकि सभी व्यक्तियों में सामान्य बने रहने की क्षमता नहीं पाई जाती। किन्तु जो लोग औसत से अधिक योग्य हैं तथा जिनके लिए सफलता अर्जित करने के लिए कोई कठिनता ही नहीं है तो ऐसे प्रतिभाशाली वर्ग को सामान्य के चौखटे में बैठाने की चेष्टा उन्हें नीरस, प्राणहीन तथा भार रूप (Boredom) बना देती है और तब वह व्यक्ति निष्प्राण एवं निराश हो जाता है।*

उपरोक्त श्रेणी के व्यक्ति तथा वे लोग जो अपने जीवन काल की संध्या के सन्निकट पहुंच जाने की कठिनाई में पड़ गए हैं, तथा जिनका गहन अध्ययन एवं गहरा मनन है तथा जिन्होंने दर्शन एवं धर्म द्वारा निर्देशित सभी संभावनाओं की खोज करली है, वे अपने चेतन मन से उठने वाले सभी प्रश्नों का जवाब प्रस्तुत करने के लिए सक्षम हैं। इस प्रसंग में यूंग का निम्न उद्धरण चित्त चिकित्सा के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिसको चित्त चिकित्सा विज्ञान की एक विशेष देन (Significant contribution) कहा गया है। यथा—

"जब एक रोगी मुझसे पूछता है कि उसके बाबत मेरी सलाह क्या है? तथा उसे क्या करना योग्य है? तो मेरा उत्तर यही है कि मेरे पास उसके प्रश्नों के बाबत कोई सुस्पष्ट बना बनाया दार्शनिक फार्मूला या फतवा या जवाब नहीं है जो मैं रोगी के हाथों में टिका सकूं। क्योंकि इस बात को रोगी स्वयं अपने बारे में मुझसे कहीं अधिक जानकारी रखता है।" अतः विश्लेषक इस प्रकार के रोगी को उसके रोग के सम्बन्ध में कुछ भी सलाह नहीं दे सकता। इसी संदर्भ में यूंग ने अपने जीवन में घटित अनुभवों के प्रकाश में निम्नानुसार एक तथ्य उजागर किया है जिसको विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की उल्लेखनीय उपलब्धि कहा जा सकता है यथा—

"मैं केवल एक बात जानता हूँ कि जब मैं मेरे चेतन स्तर से आगे बढ़ने का कोई संभावित रास्ता नहीं खोज पाता जब मैं स्थिर निश्चल (Stuck) हो जाता हूं

* Modern man in Search of a Soul, page 55.

तब मेरा अवचेतन स्वतः प्रतिक्रिया स्वरूप मेरी असहनीय स्थिरता को (The unbearable stand still) को स्वतः गति दे देता है।*

'निश्चल मौन' अथवा 'स्थिर खामोशी (Stand still) धारण किया जाना एक चित्तीय घटना (A psychic occurence) है जिसकी मानवीय विकास के दौरान में बहुधा पुनरावृत्ति होती रहती है और अनेक दन्त कथाओं एवं पुराणों में इसका उल्लेख किया गया है। एक दंत कथा में 'सिम सिम खुल' कह देने मात्र से एक खजाने के दरवाजे खुल जाने का जिक्र है, अथवा किसी सहयोगी पशु द्वारा अज्ञात रास्तों की खोज किया जाना वर्णित किया गया है। इसी प्रकार व्यक्ति द्वारा जटिलतम समस्याओं के लिए रास्ता निकालने की सभी कोशिशों के बावजूद जब कोई रास्ता ही नहीं सूझता तब घोर निराशा के फलस्वरूप वह यकायक स्तब्ध हो जाता है और उसका चलना-फिरना, बोलना, सोचना सभी रुक जाता है—जिसको हम 'निश्चल स्थिति' की संज्ञा दे सकते हैं। यह भी एक सामान्य चित्तीय घटना है जिसकी सहज स्वतः प्रतिपूरक प्रतिक्रिया हो जाती है। जिस प्रकार कम दबाव के क्षेत्र की प्रतिपूर्ति अधिक दबाव के क्षेत्र की हवाओं द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए स्वतः की जाती है उसी तरह चेतन स्तरीय 'निश्चल मौन' के क्षेत्र की स्वतः प्रतिपूर्ति अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु से हो जाती है और चेतन स्तर पर रास्ता खोजने वाले व्यक्ति को अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु के सहयोग से स्वतः एक कल्याणकारी रास्ता दीख जाता है।** इसी तरह आज के मानवीय जीवन में स्वप्नों के माध्यम से व्यक्ति को अपनी अवचेतन स्तरीय हलचलों से आगे बढ़ने में निःसन्देह बड़ी मदद मिलती है।

यूंग ने यह उल्लेख किया है कि जब कभी वह रास्ते की तलाश में अन्तिम सीमा तक परेशान हो गए तथा जब उनके लिए मदद के लिए किसी भी रास्ते का अता पता ही नहीं चला, तब घोर बैचेनी के क्षणों में जब उन्होंने अपने सपनों की

---

* I have no ready made philosophy to hand out (Jung says) when a patient asks me, "What do you advise ? what shall I do ?? " I don't know any better than he I know only one thing that when to my conscious outlook there is no possible way of going ahead, and I am therefore, stuck, my Unconscious will react to the Unbearable 'stand-still. Modern man in Search of Soul, Kegal Paul, 1944 Edition at page 70-71 (Collected Works, Vol. 16).

** Ibid page 71.

धारण ली तो स्वप्न के माध्यम से उन्हें अग्रिम कदम उठाने की दिशा का संकेत प्राप्त हुआ। इस घटना का यह अर्थ नहीं है कि वास्तविकता की प्रतिपूर्ति स्वप्नों के द्वारा होती है। यूंग ने स्वप्नों के बावत न तो किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है और न उन्होंने स्वप्नों के कारणों के सम्बन्ध में कोई व्याख्या ही प्रस्तुत की है।* यूंग की यह मान्यता रही है कि सपने प्राय: अनिश्चित (Uucertain) तथा बेतुके (Arbitrary) पाये जाते हैं किन्तु यदि दीर्घकाल तक गहराई से सपनों का अध्ययन किया जाए तो सपने का कोई एक प्रसंग बार-बार अनेक सपनों में दीखने लगता है और यूंग की धारणा में बार-बार आवृत्त होने वाले सपनों का नि:सन्देह एक विशेष अर्थ होता है—क्योंकि वह दृश्य हमारे अवचेतन का विशेष सन्देश है।** स्वप्न विश्लेषण के सम्बन्ध में यूंग का विवेचन विस्तार के साथ पिछले अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है।

रोगी की दृष्टि से चित्त चिकित्सा का प्रयोजन (Purpose) रोगी द्वारा स्वयं में निहित अव्यक्त संभावना (Latent possibilities) की खोज (Exploration) किया जाना है तथा उसको अपने ही सही स्वरूप को पहिचान कर तदनुसार किस प्रकार जीवन जीना है, यह सीखना है। इसलिए विश्लेपक को अपने पूर्वाग्रहों को दूर रखते हुए ऐसे मार्ग का निर्धारण करना चाहिए :जिस पर चल कर रोगी अपने व्यक्तित्व का योग्य विकास कर सके। अतः विश्लेपक को चिकित्सा पद्धति पर जोर देने के बजाए रोगी के साथ अपने सम्यक् सम्बन्धों के योग्य निर्वाह को अधिक महत्व देना चाहिए। ताकि रोगी अपनी चेतन तथा अवचेतन स्तरीय क्षमताओं का योग्य उपयोग कर सके और यह कार्य किसी पद्धति मात्र से नहीं कराया जा सकता। तभी विश्लेपक तथा रोगी के बीच परस्पर सहयोग भावना से संपादित जीवन व्यवहार से चिकित्सक तथा रोगी, दोनों का जीवन अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार विकसित हो सकता है तथा इस महान् उद्देश्य की पूर्ति कोरी औपचारिक चिकित्सा (Formal therapy) से नहीं की जा सकती। नि:सन्देह औपचारिक चिकित्सा के दौरान भी विश्लेपक तथा रोगी व्यक्तिगत स्तर से परस्पर एक दूसरे के सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त करते हैं और इस विषय के प्रसंग में उनके बीच विचारों एवं भावनाओं का आदान-प्रदान भी होता है तथा परस्पर एक दूसरे के सानिध्य एवं सहकार से उनके व्यक्तित्व का योग्य विकास होता है तथा इस प्रक्रिया से विश्लेपक एवं रोगी दोनों लाभान्वित भी होते हैं। किन्तु औपचारिक चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत रोगी केवल अपने रोग से छुटकारा तो प्राप्त कर सकता है किन्तु इस चिकित्सा

---

* Ibid page 72.

** Ibid page 57.

प्रणाली से विश्लेषक के व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से किसी भी सीमा तक समृद्ध नहीं हो सकता।

विश्लेषक एवं रोगी के दीर्घकालीन सानिध्य एवं इनके बीच पारस्परिक वैचारिक एवं भावात्मक लेन-देन से इनके व्यक्तित्वों का पारस्परिक रूपान्तरण (Mutual Transference) तक होना संभावित है। निःसन्देह शक्तिशाली तथा दृढ़ व्यक्तित्व का उल्लेखनीय प्रभाव सामान्य व्यक्ति में देखा जा सकता है। यूंग ने कुछ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जहां पर रोगी के सशक्त व्यक्तित्व का असर विश्लेषक पर भी परिलक्षित किया गया है। जिस प्रकार दो रासायनिक पदार्थों के मिलाने पर एक नई रासायनिक इकाई निर्मित हो जाती है उसी प्रकार विश्लेषक एवं रोगी के व्यक्तित्वों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा जा सकता है।* विश्लेषक एवं रोगी के परस्पर घनिष्ठ सम्बन्धों एवं उनके बीच परस्पर सहकारी आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप इन दोनों के व्यक्तित्वों का रूपान्तरण कोई सनक अथवा खयाल खयाली नहीं है अपितु यूंग द्वारा अलकीमियां के अनुसंधान कार्य से इसकी अवधारणा का सत्यापन एक नये व्यक्तित्व के निर्माण की संभावना में माना गया है।** परस्पर रूपान्तरण (Mutual Transference) की इस प्रक्रिया के कारण विश्लेषक तथा रोगी दोनों के लिए यह जरूरी है कि वे समान अंशों में ईमानदारी, धैर्य तथा बर्दाश्त करने की क्षमता संपादित करें तथा होने वाले परिवर्तनों के लिए तत्पर रहें ताकि किसी भी परिवर्तन के घटित हो जाने के प्रसंग पर उनके व्यक्तित्व की अलग-अलग इकाइयों को सुरक्षित रखा जा सके। चित्त चिकित्सा का अन्तिम लक्ष्य किसी विशिष्ट प्रणाली अथवा तकनीक के योग्य निर्वाह की अपेक्षा रोगी तथा चिकित्सक के व्यक्तित्व का यथावत् बना रहना तथा उसकी विकास क्रिया जारी रखना अधिक महत्वपूर्ण है।

यदि कोई रोगी किसी धार्मिक समस्या से ग्रस्त पाया जाए तो विश्लेषक से यह सहज अपेक्षा की जाती है कि वह उक्त धार्मिक समस्या के विषय से सुविज्ञ हो ताकि वह आत्म विश्वास के साथ उक्त सम्बन्ध में योग्यतापूर्वक रोगी के साथ विचार विमर्श कर सके। इसी प्रकार कोई समस्याग्रस्त रोगी उच्चस्तरीय सांस्कृतिक विकास के लिए उत्सुक है तो विश्लेषक को भी स्वयं उच्चस्तरीय सांस्कृतिक ज्ञान संपादन करने की ओर सचेष्ट रहना चाहिए। ताकि विचाराधीन समस्या के समाधान के लिए विश्लेषक एवं रोगी के बीच परस्पर विचार विमर्श के लिए उपयुक्त बौद्धिक

---

* Modern man in Search of a Soul, page 56.

** Ibid page 57 (Collected Works, Vol. 16.)

स्तर बना रह सके और इनके बीच योग्य समझ से रोगी तथा विश्लेषक के व्यक्तित्व का योग्य विकास हो सके।

यूंग ने यह घोषणा की है कि वर्तमानकालीन चित्त चिकित्सा सैद्धांतिक छानबीन की झंझटों से मुक्त होकर केवल रोगी के उपचार हेतु केवल एक प्रणाली मात्र ही नहीं रह गई है, अपितु आज चित्त चिकित्सा के क्षेत्र का उल्लेखनीय विस्तार हो चुका है और आधुनिक चित चिकित्सा के अन्तर्गत न केवल रोगियों का उपचार ही किया जाता है अपितु इसका उपयोग तन्दुरुस्त तथा स्वस्थ व्यक्तियों के सहज विकास के लिए भी किया जाना योग्य माना गया है तथा चित्त चिकित्सा का लाभ उन सभी लोगों के लिए उपलब्ध किया जाता है जिन्हें मानसिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ बने रहने का अधिकार है तथा जिनकी मानसिक बीमारी से समाज में संकट उपस्थित होने की आशंका हो सकती है। इस प्रकार अब चित्त चिकित्सा का प्रयोजन एक रोगी का इलाज करना मात्र तक ही सीमित नहीं है अपितु इसका उपयोग समाज के सम्भावित खतरों के निराकरण के लिए भी किया जाने लगा है। अब चित्त चिकित्सा का क्षेत्र चिकित्सक अथवा विश्लेषक के क्लीनिक अथवा किसी चिकित्सालय अथवा आतुरालय तक ही सीमित नहीं है तथा चित्तीय चिकित्सा के लिए केवल मात्र मेडिकल डिप्लोमा की ही जरूरत नहीं है अपितु अब चित्त चिकित्सा का क्षेत्र समाजोपयोगी अन्य संस्थानों में जैसे स्कूल, कालेज, प्रशिक्षणालयों आदि विभिन्न क्षेत्रों में भी फैल गया है तथा चित्तीय चिकित्सा प्रणाली का भरपूर उपयोग आत्म शिक्षण (Self-Education) तथा आत्म-समग्रता (Self perfection) के लिए किया जा रहा है। चित्त चिकित्सा जो पहिले रोगी मुक्ति हेतु केवल चिकित्सा प्रणाली मात्र थी वह अब आत्म विकास (Self-Development) का एक प्रभावशाली साधन बन गई है, अतः इस अभूतपूर्व क्षेत्रीय विस्तार के फलस्वरूप डाक्टरी डिप्लोमाधारियों के बजाए अब मानवीय गुण सम्पन्न विकसित व्यक्तित्व के प्रति अधिक आदर व्यक्त किया जा रहा है तथा केवल रोग उपचार के बजाए रोगी के व्यक्तित्व के विकास की ओर गहराई से ध्यान दिया जा रहा है और इस प्रकार विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का उपयोग मनोविकृतिवाद की संकीर्ण सीमा से निकलकर विस्तृत जन समाज के बौद्धिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास और कल्याण के लिए किया जा रहा है।*

चित्त चिकित्सा के प्रथम चरण में व्यक्ति की समस्या पर प्रायः ध्यान दिया जाता था। अतः अब तक इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत अवचेतन सम्बन्धी विवेचन प्रस्तुत

---

* Modern man in Search of Soul at page 62 and the problems of modern Psycho-therapy in Collected Works of C.G. Jung, Volune 16.

किया गया है किन्तु चित्त चिकित्सा के द्वितीय चरण में व्यक्ति का मानव समूह में क्या स्थान है तथा व्यक्ति का समाज के साथ किस प्रकार कल्याणकारी सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है, इत्यादि अधिक विस्तृत पक्षों पर गंभीरता से विचार किया जाता है जो निःसन्देह यूंगीय मान्यतानुसार सामूहिक अवचेतन का क्षेत्र है। अतः अब चित्तीय चिकित्सा की विषय वस्तु व्यक्तिपरक होने के बजाय समष्टि परक हो गई है तथा अब यूंगीय अनुसंधान कार्य के केन्द्र बिन्दु रोगी अथवा व्यक्ति नहीं रह कर सम्पूर्ण मानव समाज बन गया है।

अध्याय 19

यूंगीय चिकित्सा पद्धति की विशेषताएं : तुलनात्मक अध्ययन

(The Speciality of the Jungian Therapy)

चित्त चिकित्सा के सामान्य विवेचन के पश्चात् यूंगीय चिकित्सा पद्धति की विशेषताओं का खुलासा प्रस्तुत किया जाना उपयोगी है। "विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान" मानवीय अनुभवों के वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है, अतः इसका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं गहन है और इसलिये समूचे अध्ययन को किसी मर्यादित रूप रेखा में भी प्रस्तुत किया जाना कठिन है। मानवीय अनुभव किसी विशेष व्यक्ति, समुदाय, किसी विशिष्ट भूखण्ड अथवा किसी निर्धारित काल से बाधित नहीं है। एक ही व्यक्ति का अनुभव स्थान और समय के परिवर्तन के साथ बदल भी सकता है, तथा एक ही स्थान और समय पर एक व्यक्ति के अनुभव का स्वरूप अन्य व्यक्ति के अनुभव से भिन्न भी हो सकता है, अथवा तदनुरूप भी पाया जा सकता है, अतः मानव अनुभव पर आधारित किसी अध्ययन को किसी निश्चित सीमा में व्याख्यायित किया जाना तथा उसका अन्तिम नतीजा या निष्कर्ष निकाले जाने के दावे का कोई अर्थ ही नहीं है। अतः यूंग द्वारा प्रस्तावित विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की पद्धति किसी भी रूढ़िवाद की हठधर्मिता (dogmatism) से सर्वथा मुक्त है। यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत चित्त चिकित्सालय के लिये जो रोगी आता है, वह अपनी अपनी अलग अलग वैयक्तिक समस्या का यूंगीय चित्त चिकित्सक से योग्य समाधान प्राप्त करने की आकांक्षा या अपेक्षा करता है और उसकी चिकित्सा के दौरान में यूंगीय चिकित्सक आगन्तुक रोगी के कथन, वर्णन और लक्षणों पर उचित ध्यान देकर उसको उसके कष्ट को कम करने तथा उसको मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से केवल स्वस्थ्य और रोग रहित करने के दायित्व को अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं मानता अपितु एक योग्य निष्णात यूंगीय चित्त चिकित्सक की यह आन्तरिक कामना रहती है कि रोगी अपने रोग और सभी क्लेशों-तनावों से सर्वथा मुक्त होकर अपना सहज स्वाभाविक जीवन जीने की क्षमता सम्पादन करते हुए अपने तन, मन, चित्त और समूचे व्यक्तित्व का स्वतः सहज विकास कर सके। इस दृष्टि से यूंगीय चिकित्सा पद्धति किसी रोगी के केवल रोग मात्र के उपचार तक

सीमित नहीं है अपितु यूंगीय चिकित्सा का लक्ष्य आगन्तुक रोगी को उसकी स्वतः स्वाभाविक विकास के पथ का प्रदर्शन करना है तथा रोगी को अपने व्यक्तित्व का सहज स्वतः विकास के लिये उसकी समझ की अभिवृत्ति करते हुए उसमें स्वतः विकास की क्षमता पैदा करना है। अतः यूंगीय चिकित्सा पद्धति का यह उच्चतम लक्ष्य एवं आदर्श अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तुलना में अधिक कल्याणकारी एवं उच्चतम प्रकार से प्रयोजनीय है। जबकि अन्य चिकित्सा प्रणालियों में या तो रोग को ऊपरी उपचार से दबा दिया जाता है, अथवा रोग के अवरोधक तत्व के उपयोग से रोग को प्रभावहीन कर दिया जाता है, अथवा अधिक से अधिक रोगी को रोग की तकलीफ से राहत दिलाकर रोगी को ज्यों का त्यों छोड़ दिया जाता है। किन्तु यूंगीय चिकित्सा पद्धति में रोग ही नहीं अपितु रोग ग्रस्त मानव के समूचे व्यक्तित्व पर निष्णात चिकित्सक द्वारा योग्य ध्यान दिया जाता है और उसके समूचे व्यक्तित्व में, गड़बड़ी मचाने वाले सभी दोषों की योग्य जांच पड़ताल करते हुए उसको रोग रहित निरोग एवं पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कराकर उसके समूचे व्यक्तितत्व की योग्य साज संवार किये जाने का ईमानदारी के साथ प्रयत्न किया जाता है ताकि आगन्तुक व्यक्ति रोग, शोक एवं कष्ट तथा सभी प्रकार की कमियों-कमजोरियों से मुक्त होकर न केवल अपना सामान्य जीवन सुखपूर्वक जी सके अपितु वह रोग मुक्ति के साथ अपने व्यक्तित्व को सहज स्वतः विकास की दिशा में स्वाभाविक प्रकार से आगे बढ़ाता हुआ अपने स्वास्थ्य जीवन व्यवहार और शारीरिक मानसिक एवं चारित्रिक स्थिति को सहजता के साथ विकास कर सके। मानवीय व्यक्तित्व का विकास ही यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का मंगलमय जयघोष, मुख्य लक्ष्य एवं कल्याणकारी प्रयोजन है—अतः इस दृष्टि से यूंगीय चिकित्सा पद्धति की यह श्रेष्ठ प्रयोजनीयता ही सर्वोपरि प्रथम विशेषता है जो अन्य प्रणालियों की तुलना में निसन्देह इसको अलग से उजागर एवं प्रतिष्ठित करती है।

ज्यूरीच निवासी यूंग के जीवन का अधिकांश समय उसके द्वारा चित्तीय पीड़ा से क्षत विक्षत एवं मानसिक परेशानियों से ग्रस्त हजारों लाखों रोगियों की परिचर्या एवं उपचार में ही व्यतीत हुआ। यद्यपि यूंग ने चिकित्साशास्त्र में नैपुण्य प्राप्त किया था और वह औषधि विज्ञान के भी उत्तम जानकार थे, किन्तु उन्होंने अपने रोगियों की चित्त चिकित्सा की ओर विशेष एवं अधिक ध्यान दिया क्योंकि उनके पास तन की अपेक्षा अधिकांशतः मन अर्थात् चित्त के रोगियों का सतत आवागमन बना रहता था और वह मन और चित्त के रोगियों की कष्टकथा को सर्व प्रथम बड़े ध्यान से पूर्णतया आत्मीयता के वातावरण में सुनने, समझने का पूरे धैर्य एवं स्नेहमय तरीकों के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते थे। यूंग के समक्ष जो रोगी आते हैं वे प्रायः अपनी-अपनी समस्याओं से ग्रस्त एवं परेशान थे, और वे बड़े विस्तार के साथ अपने दुःख दर्द और समस्याओं की चर्चा यूंग के साथ खुलकर

करते थे और यूंग भी अपने रोगियों को अपने समान बराबरी और भाई-चारे एवं मित्रवत् व्यवहार का आचरण करते हुए उन्हें अपने कष्टों, भूलों एवं परेशानियों का निसंकोच भाव से उनको प्रकाशन किये जाने का मौका तथा प्रोत्साहन देते थे। यूंगीय चिकित्सा पद्धति में रोगी और चिकित्सक को आमने-सामने बैठ कर, आपसी बराबरी के स्तर पर रहकर, परस्पर निसंकोच भाव से परस्पर विचार-विमर्श किये जाने का आग्रह किया गया है, जबकि फ्रायडीयन चिकित्सक रोगी की नजरों के दूर पीछे खड़ा रहकर या बैठकर रोगी से प्रश्नोत्तर के द्वारा उसके रोग और उनके लक्षणों की सामग्री इकट्ठा करता है तथा वह रोगी को समय-समय पर निर्देश, पूछताछ तथा आदेश, उपदेश दिया जाना अपनी चिकित्सा पद्धति के लिये जरूरी मानता है, किन्तु यूंग केवल रोगी को अपने आमने-सामने बैठ कर उसको पूरी आजादी और खुलेपन के साथ पूरी आत्मीयता के साथ आपसी परस्पर विचार-विमर्श किये जाने के योग्य वातावरण का निर्माण करता है, तथा प्रायः रोगी द्वारा ही उसका पक्ष बगैर किसी प्रश्नोत्तर, आदेश, निर्देश की मदद के पेश किये जाने को प्रोत्साहित करता है। अतः रोगी यूंगीय चिकित्सक के समक्ष अपनी समझ के मुताबिक अपने अनुभव, अपना दर्द तथा अपनी समस्याओं का बगैर किसी संकोच या डर के स्वतः स्वतन्त्रता के साथ इजहार करता है, और चिकित्सक द्वारा प्रायः रोगी को ही उसके कथन के प्रकाश में उनके कारणों का खुलासा प्रस्तुत करने के लिये प्रोत्साहन दिया जाता है। अतः यूंगीय चिकित्सक प्रायः रोगी से पहले पूरी सावधानी से उसकी कहानी सुनता है और उसके द्वारा उसकी कहानी के कारणों का खुलासा सुनता है, और फिर आगे जाकर वह रोगी के साथ खुली बातचीत के माध्यम से रोगी के रोग तथा उसकी समस्या तथा उसके बाबत खुलासा के बाबत आपसी पूर्ण विश्वास के वातावरण में विचार-विमर्श में कुछ समय लगाता है और इस प्रकार यूंगीय चित्त चिकित्सक रोगी को पहिले सुनकर उसकी स्थिति का एक अन्दाजा बनाता है और वह रोगी से ही उसकी समस्या या उसके कारणों की तलाश कराता है तथा जहां तक बन सके तब तक वह स्वयं रोगी से ही उसके द्वारा वर्णित कष्टों एवं समस्याओं का क्या हल हो सकता है, इसकी संभावनाओं की खोज स्वयं रोगी को करने के लिये प्रोत्साहित करता है एवं उसे तत्सम्बन्धी आवश्यकतानुसार योग्य मार्गदर्शन देता है। फलतः यूंगीय चिकित्सा प्रणाली में रोगी को रोग के लक्षण, रोग के कारण तथा रोग के उपचार के साधनों की खोज किये जाने की मुख्य भूमिका स्वयं रोगी द्वारा ही निर्वाह किये जाने का आग्रह किया जाता है तथा यूंगीय चित्त चिकित्सक का रोल केवल मात्र एक सहृदयता पूर्ण जागरूक एवं तटस्थ सहयोगीकर्त्ता का निर्वाह किया जाना माना गया है जो केवल अनिवार्य आवश्यकता होने पर ही रोगी को कोई सुझाव संकेत या मार्गदर्शन देता है। जबकि अन्य चिकित्सा पद्धतियों में चिकित्सक स्वयं को रोगी से अधिक योग्य निष्णात जानकार तथा अधिक सक्रिय बने रहने का दावा करता है।

यूंगीय चिकित्सक रोगी को "समझना" चाहता है जब कि अन्य पद्धति के चिकित्सक रोगी को "समझाने" की हेकड़ी में रहकर यूंगीय चिकित्सक की अपेक्षा रोग एवं रोगी को वस्तुतः कम समझ पाते हैं। फलतः रोगी तथा रोग तथा उसके कारणों की कम समझ से सम्पन्न अन्य चिकित्सक वर्ग के लिये रोगी के रोग की जब ठीक प्रकार से पूरी तरह से समझ ही नहीं की जायगी तब उसका पूरा और सही उपयोग इलाज में कैसे तथा किस प्रकार हो सकेगा? यह प्रश्न विचारणीय है। फ्रायड आदि अन्य प्रणालियों के चिकित्सकों द्वारा रोगी के रोग के कारणों की तलाश एवं जांच रोगी के बाल्यकालीन जीवन घटनाओं के साथ प्रायः जोड़े जाने का आग्रह पाया जाता है, जो यदाकदा निष्फल सिद्ध होता है। तथा यदि अधेड़ावस्था के रोग के कारण को उस व्यक्ति के बाल्यकालीन कामवृत्ति की दमन क्रिया के साथ जोड़ जुगाड़ कर बिठा भी दिया जाय तब भी फ्रायडीयन चिकित्सक के लिये यह खुलासा किया जाना कठिन है कि बाल्यावस्था में घटित उक्त रोग बीज इतने वर्षों बाद क्यों और कैसे प्रौढ़ावस्था में उभर आया? तथा इसके क्या कारण हो सकते हैं? इतना ही नहीं यूंग प्रणाली के अलावा अन्य पद्धतियों के विश्लेषक रोग के कारणों का पता लगाने पर भी रोगी को रोग से मुक्त किये जाने में भी प्रायः असफल पाये जाते हैं। अतः यूंगीय चिकित्सकों के अलावा अन्य चिकित्सक पद्धतियों द्वारा रोग के कारणों की खोज की लम्बी कठिन एवं दीर्घकालीन दौड़ धूप भी रोगी को रोग मुक्ति की दृष्टि से प्रायः बेकार प्रमाणित होती हुई पायी जाती है। जबकि यूंग की मान्यतानुसार प्रत्येक चित्त रोगी के रोग की स्थिति रोगी को जानकारी भुक्तभोगी व्यक्ति को जब करा दी जाती है तो निसन्देह निष्णात चित्त चिकित्सक की मदद से उसके कारणों की भी योग्य एवं सही जानकारी भुक्तभोगी रोगी को भी स्वतः हो जाती है और यदि उसकी समझाइश रोगी को स्वयं को करा दी जावे तो फिर रोगी को अपने जाने गये रोग से मुक्ति प्राप्त करने में निसन्देह अधिक देर नहीं लगेगी। यूंग की मान्यता है कि रोग का मुख्य कारण प्रायः रोगी स्वयं द्वारा किसी घटना या स्थिति की अपने चित्त में गैर समझी हो जाना अथवा गलत फहमी बन जाना पाया जा सकता है। चाहे वह भ्रान्ति या गलत फहमी रोगी के चेतन सम्भाग की बनावट से हो अथवा वह उसके अवचेतन की कारगुजारी हो। ज्यों ही व्यक्ति को अपनी गलती का सही अंदाज या जानकारी करा दी जायगी, तथा चिकित्सक के द्वारा उसको समझ करा दी जायगी तथा रोगी को उसके रोग के कारणों (किसी भ्रान्ति, उसकी गैर समझी, गलत फहमी) से उसका भान कराया जायगा तो वह रोगी स्वयं अपने आन्तरिक तनाओं में कमी और बाद में जाकर वह रोग, रोग के कारणों की सही समझ से तथा तदनुसार जीवन व्यवहार में योग्य परिवर्तन से निसन्देह प्रत्येक चित्त रोगी अपने रोग, उसके लक्षणों एवं उसके प्रभावों से मुक्त हो जायगा।

यह है यूंगीय चिकित्सा पद्धति की सरलतम व्यापक प्रभावशीलता का गुण, जो यूंगीय चिकित्सा प्रणाली की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है।

इसके अलावा यूंगीय चित्त चिकित्सा पद्धति के दौरान में रोगी स्वयं को अपने रोग के कारणों की खोज तथा उसके इलाज का रास्ता निकाला जाने में उसी को सक्रिय बने रहने का आग्रह किया जाता है और समय-समय पर आवश्यकतानुसार चिकित्सक केवल मात्र एक मददगार होने मात्र की भूमिका का निर्वाह करता है और स्वयं के रोग का स्थायी इलाज करते हुए अपने व्यक्तित्व के स्वतः विकास की यात्रा में प्रायः सफल रहता है। प्रत्येक मानवीय चित्त की बनावट निःसन्देह जुदा-जुदा किस्म की है, और इसलिये प्रत्येक व्यक्ति की समस्या अलग-अलग जुदा किस्म की पाया जाना भी संभव है, अतः सभी समस्याओं के हल के लिये किसी एक रामबाण उपचार का निर्धारण किया जाना यूंग की मान्यता में संभव एवं उपयोगी ही नहीं है, फलतः यूंगीय चिकित्सा पद्धति में रोग के इलाज एवं प्रत्येक समस्या के समाधान हेतु किसी एक राजमार्ग का निर्धारण किया जाना यूंग ने उचित नहीं समझा है और इसलिये यूंगीय चित्त चिकित्सा पद्धति में रोगी के निजी स्वभाव, उसके अनुभव एवं उसकी वैयक्तिक स्थिति के प्रकाश में ही समुचित इलाज या समाधान निर्धारित किया जाता है, अतः यूंगीय चित्त चिकित्सा पद्धति में इलाज एवं समाधान का यह लचीलापन (Elasticity) यूंगीय पद्धति की एक उल्लेखनीय विशेषता है। जिसकी योग्य कार्यान्विति रोगी एवं चिकित्सक की आपसी समझ एवं परस्पर एक दूसरे की सहकारी रजावन्दी (Cooperative Consent) पर आधारित है। यूंगीय चिकित्सा के दौरान यदि चिकित्सक रोगी द्वारा अभिव्यक्त उसकी अनुभूतियों का विश्वास कर उन्हें समझते हुए वह जो सुझाव रोगी का समय समय पर देता है तथा रोगी ईमानदारी से व्यक्त अपनी समस्याओं को आपसी विचार-विमर्श के बाद चिकित्सक के सुझावों को निष्कपटता के साथ पालन करे तो निःसन्देह न केवल वह रोग से सर्वदा तथा हमेशा के लिये रोग मुक्त हो सकता है बल्कि वह रोगी अपने मानवीय जीवन के स्वतः विकसित होने वाले रास्ते पर भी अग्रसर होते हुए अपूर्ण से पूर्ण तथा अपने खण्डीय व्यक्तित्व को समग्रता सम्पन्न बना सकेगा। इस प्रकार केवल मात्र यूंगीय चिकित्सा पद्धति में ही स्वतः व्यक्तित्व विकास की आशावादी दृष्टिकोण पाया जाना इसी पद्धति की सविशेष देन है। जिसकी योग्य कार्यान्विति से व्यक्ति अपनी बाहरी दुनियां एवं अपने आन्तरिक जगत् के साथ योग्य समायोजन (adjustment) स्थापित कर सकता है।

उपरोक्त प्रकार से यूंगीय चित्त चिकित्सा पद्धति की विशेषताओं के विवेचन के पश्चात् यूंगीय चिकित्सा पद्धति का सामान्यतः निम्न प्रकार से कार्यक्रम (programme) निश्चयन किया जाना योग्य माना गया है, यथा :—

जब कोई रोगी अपनी रोग मुक्ति या अपनी समस्या के समाधान हेतु यूंगीय

चिकित्सक के पास पहुंचता है तो सर्वप्रथम चिकित्सक को अनुस्मरण प्रणाली का उपयोग करते हुए रोगी को अपने रोग के लक्षणों का विशद वर्णन प्रस्तुत किये जाने का मौका या प्रोत्साहन दिया जाता है ताकि रोगी अपने दमित रोगों का विस्तार के साथ चिकित्सक के समक्ष यथावत् इजहार करते हुए अपने दबाव से आंशिक छुटकारा प्राप्त कर सके तथा चिकित्सक द्वारा उसके लम्बे दास्तान को आत्मीयतापूर्ण वातावरण मे धैर्यपूर्वक सुने जाने मात्र से वह रोगी अपने चिकित्सक के प्रति अपनी निजी घनिष्टता स्थापित करने में संतोष का अनुभव कर सके कि उसको कम से कम एक सहृदय एवं योग्य सहायक तो मिल गया है जो उसके कुशल योग क्षेम के सम्पादन में उसकी योग्य मदद कर सकेगा। इस प्रकार आपसी प्रारंभिक चर्चा के बाद ही जब कि रोगी एवं चिकित्सक के बीच परस्पर मित्रता और भाईचारे की स्थापना के लिये यूंगीय चिकित्सक को आपसी खुली बातचीत एवं विचार-विमर्श के बाद (अ) चिकित्सा अवधि का निश्चयन करना चाहिये जो सामान्यतः चार सप्ताह से छः महीनो की आवश्यकतानुसार हो सकती है। तथा (ब) इस अवधि के दौरान चिकित्सक द्वारा चिकित्साचर्या आवृत्तियां (frequencies of the treatment) का निश्चयन किया जाना योग्य है। जो प्रायः प्रति सप्ताह आरम्भ में लगभग दो घण्टों की होनी चाहिये जिसको सुविधा एवं आवश्यकतानुसार आपसी परामर्श से बढ़ाया या घटाया जा सकता है। इसके अलावा (स) चित्त चिकित्सा शुल्क का निर्धारण भी दोनो की आपसी बातचीत क अनुसार निश्चय किया जाना चाहिये, और इसका निर्धारण चिकित्सक की योग्यता एवं रोगी की आर्थिक क्षमता के आधार पर किया जाना योग्य है। इस प्रकार चिकित्सा अवधि चिकित्सा आवृत्ति एवं चिकित्सा शुल्क क निर्धारण के पश्चात् पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार रोगी और चित्त चिकित्सक को प्रायः पूर्ण आत्मीयतापूर्ण एवं भाईचारे के वातावरण में चिकित्सक के निवास स्थान या कार्यालय मे मिलकर आपसी विचार-विमर्श किया जाना प्रभावकारी हो सकता है और इस चिकित्सा के दौरान में चित्त चिकित्सक के सुझावों की यथावत् पालना करते हुए रोगी को अपनी सभी स्थितियों, तथा तत्कालीन घटनाओं एवं स्वयं द्वारा होने वाले सभी अनुभवों का यथावत् प्रकाशन चित्त चिकित्सक के समक्ष बगैर किसी संकोच भय अथवा रंगसाजी के प्रस्तुत करना चाहिये तथा इन सभी जानकारियों के संग्रह एवं सम्पादन के दौरान रोगी द्वारा देखे गये सपनो की जानकारी यदि चिकित्सक द्वारा चाही जाय तो उसे अपने द्वारा देखे गये स्वप्नों का मौखिक या लिखित विवरण प्रस्तुत किया जाना चाहिये ताकि चित्त चिकित्सक रोगी के स्वप्न विश्लेषण के माध्यम से रोगी के चित्त की सभी स्थितियों की योग्य जानकारी के प्रकाश में उसकी चिकित्सा पर ध्यान देते हुए रोगी के चित्त की सभी गड़बड़ियों की सम्यक् खोज करके तथा अपनी खोज के नतीजों को रोगी को समझा कर उसको रोग मुक्त किया जा सके।

कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा हजारों मनस्ताप ग्रस्त रोगियों की चिकित्सा करते हुए उनकी यह धारणा बनी कि प्रायः मनस्ताप का कारण व्यक्ति द्वारा किसी घटना अथवा अपने किसी अनुभव की गलत समझी होना पाया जाता है। अतः चित्त चिकित्सक द्वारा रोगी की गलतफहमी की खोज कर यदि रोगी को उसकी गलत समझी का योग्य प्रकार से भान कराया जाय तो निःसन्देह रोगी अपनी गलत समझी का योग्य संशोधन या सुधार करते हुए अपने रोग के सभी लक्षणों से राहत प्राप्त कर सकता है। रोगी द्वारा अपनायी गयी गलत समझी की योग्य समझ तथा गलत फहमी में सुधार किये जाने मात्र से रोगी द्वारा मनस्ताप का इलाज होने बाबत यूंग की वर्णित निम्नांकित उदाहरण ध्यान दिये जाने योग्य है :—

कार्ल गुस्ताव यूंग जब स्वीस आर्मी मेडीकल कोर में कार्यरत थे, तब उनके पास चिकित्सा हेतु एक उन्नीस वर्षीय रंगरूट भेजा गया जिसने अपनी पीठ में असह्य पीड़ा होना बतलाया। इस रंगरूट के अंग का गहराई से परीक्षण किया गया तो उसके किसी शारीरिक कारण का कोई पता नहीं चला। तब यूंग ने रोगी से इस प्रकार के लक्षणों का उसकी समझ में क्या कारण हो सकता है, यह दरियाफ्त किया जो रोगी ने जवाब दिया कि उसकी पीठ की पीड़ा का कारण शायद उसके गुर्दों की खराबी होना हो सकता है। जब रोगी के गुर्दों की मेडीकल जांच की गई तो रोगी के गुर्दों में भी कोई रोग नहीं पाया गया। अतः चिकित्सक के लिये रोग की चित्तीय स्थिति की जांच किये जाने का फैसला किया गया। चित्त चिकित्सक द्वारा इस जांच के सिलसिले में उसको पता चला कि रोगी रंगरूट के माता-पिता की मृत्यु उसके बचपन में ही हो चुकी थी और रोगी रंगरूट अपने एकमात्र चाचा के संरक्षण में ही अपना सम्पूर्ण जीवन यापन कर रहा था। इस रोगी रंगरूट के चाचा को भी पीठ में पीड़ा होने की पुरानी शिकायत थी। रोगी रंगरूट के अपने इस चाचा के साथ घनिष्ठतम रागात्मक संबंध थे और वह अपने इस चाचा को ही अपने जीवन का एकमात्र आधार मान बैठा था। इस रंगरूट को एक दिन अपने चाचा का जब यह पत्र मिला कि चाचा इस पीठ की पीड़ा से मरणासन्न है तो वह यह खबर पढ़ते ही स्वयं उसको अपनी पीठ में असह्य पीड़ा का अनुभव होना प्रारंभ हो गया और तब से वह इस रोग से परेशानी का अनुभव करता रहा है। चित्त चिकित्सा के दौरान यूंग ने इस रोगी से जब खुली बातचीत और विचार-विमर्श किया जो यूंग को यह जानकारी हुई कि इस रोग का कारण रोगी द्वारा अपने चाचा के साथ तादात्म्य (Identification) स्थापन करना तथा चाचा की मौत पर अपने स्वयं के जीवन का निर्वाह किस प्रकार वह कर सकेगा यह चिन्ता (Anxiety) हो जाना है। इस रंगरूट ने यह गलत फहमी पाल ली थी कि उसका चाचा इस पीठ के दर्द से यदि मर जायगा तो उसकी भी चाचा के अभाव में कदाचित् मृत्यु हो जायगी, अतः उसने अपने चाचा की वस्तुतः शारीरिक पीड़ा को अपनी गलत समझी से अपने चित्त

में अपनी मनमानी पीड़ा बना लिया। जो निःसन्देह यह रंगरूट के चित्त की एक गड़-बड़ी तथा गलत फहमी मात्र थी। जब यूंग ने इस रोगी को उसके द्वारा अपनाई जाने वाली गलती या गलत फहमी का योग्य प्रकार से भान कराया तथा जब उसे यह ठीक प्रकार से समझाया कि उसका स्वयं का एक अलग व्यक्तित्व है जो उसकी नाना की मौत के बाद की कठिनाइयाँ बढ़ जाने के बावजूद भी अक्षु रह सकता है, तथा उसका अपने नाना के साथ तादात्म्य किया जाना उसकी भूल है। तो इस समझ मात्र से बगैर किसी औषधि सेवन के वह रंगरूट शनैः शनैः अपने मानसिक तनावों में राहत का अनुभव करने लगा और कुछ अर्से बाद वह अपनी पीठ में पीड़ा अनुभव करने के मनस्तापी रोग से सर्वथा मुक्त हो गया।

यूंगीय चित्त चिकित्सा पद्धति बाल मनस्तापी रोगियों के इलाज के लिये भी विशेषतः फलदायी सिद्ध हुई है क्योंकि अनुस्मरण विश्लेपण पद्धति के माध्यम से बच्चों को उनकी अवचेतन स्तरीय स्थिति से परिचय कराते हुए उसकी गलत फहमियों को सुधारते हुए उन्हें आसानी से रोग मुक्त किया जा सकता है। प्रायः बच्चे सरलतापूर्वक अपने विश्वास चिकित्सकों के नतीजों पर विश्वास कर अविलम्ब उनकी गलतियों का सुधार करने में प्रवृत्त पाये जाते हैं जबकि आयु प्राप्त रोगी यदा-कदा निष्णात चिकित्सक की सही सलाह को भी तुरन्त अंगीकार करने में हिचकिचाहट अथवा अतर प्रतिरोध जाहिर कर बैठता है।

चित्त चिकित्सा के लिये रोगी द्वारा देखे जाने वाले स्वप्न विश्लेपण पद्धति द्वारा भी योग्य मदद विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत प्रायः ली जाती है। यूंग की तरह फ्रायड ने भी मानसोपचार हेतु स्वप्न विश्लेपण को बड़ा उपयोगी साधन स्वीकारा है। पिछले तीन अध्यायों में विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत (1) स्वप्न विश्लेपण (2) सक्रिय कल्पना प्रणाली, तथा (3) चित्त चिकित्सा संबंधी विवेचन विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है तथा स्वप्न विश्लेपण के संबंध में फ्रायड एवं यूंग की मान्यताओं के फर्क को भी प्रसंगाधीन सुस्पष्ट किया गया है। अतः यहां उनकी पुनरावृत्ति प्रस्तुत किया जाना "पिष्ट पेशण" होगा। अतः यहाँ पर केवल यह उल्लेख किया जाना पर्याप्त है कि यूंग की मान्यतानुसार रोगी के स्वप्न विश्लेपण से रोगी की अवचेतन स्तरीय स्थिति का सही परिचय प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि स्वप्नों में उस व्यक्ति की अवचेतन स्थिति की अभिव्यक्ति होती है और यूंग की यह भी मान्यता है कि रोगी का रोग और स्वप्नों के उद्भव का प्रयोजन यदा-कदा व्यक्ति के स्वतः सहज विकास के लिये उसका मार्ग-दर्शन कराया जाना भी है। अतः एक निष्णात विद्वान चित्त चिकित्सक की योग्य व्याख्या से प्रत्येक रोगी अपने स्वतः विकास के मार्ग को समझ कर आत्म-विकास कर सकता है और वह रोगी से निरोग, अपूर्ण से पूर्ण तथा खण्ड से समग्र व्यक्तित्व के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकता है। अतः चित्तरोग तथा स्वप्न दर्शन को व्यक्ति के लिये चेतावनियाँ,

पूर्वाभास अथवा मार्ग दर्शन का उपयुक्त साधन माना जा सकता है। जबकि फ्रायड प्रायः स्वप्नों को मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति अथवा अल्प तुष्टिकरण किये जाने का साधन कह कर उनको अनुपयोगी माना गया है। क्योंकि सपनों की सृजन भूमि अवचेतन को फ्रायड ने दमित, उपेक्षित एवं तिरस्कृत भावना ग्रन्थियों का बेतरतीब "गोदाम" माना है, जबकि यूंग की मान्यता में स्वप्नों की जननी अवचेतन स्तरीय परत को मानवीय अनुभवों पुंजों का रत्न भंडार एवं सृजनात्मक शक्तियों का उपयोगी संग्रहालय मानते हुए अवचेतन को चेतन चित्त की अपेक्षा मानवीय विकास की रंग भूमि या प्रेरणा-स्थली माना गया है। इसके अलावा यूंग की मान्यतानुसार स्वप्नें एवं सक्रिय कल्पना विधि से मानव चित्त के चेतन और अवचेतन सम्भागों के बीच योग्य समायोजन एवं तालमेल बनाये रखने में बड़ी मदद मिलती है, अतः यूंग ने सपनों का प्रच्छन्न आशीर्वाद (Blessning in disguise) माना है। ताकि स्वप्न की योग्य समझ से पाये जाने वाले संकेत का अनुसरण करते हुए मानवीय व्यक्तित्व अपने स्वतः विकास के पथ पर सहजता के साथ अग्रसर हो सके।

चित्त चिकित्सा संबंधी यूंगीय पद्धति की सार्थक उपादेयता तथा फ्रायडीयन प्रणाली की निरर्थक सारहीनता को प्रमाणित किये जाने की दृष्टि से निम्नानुसार एक व्यक्तिवृत्त (केस हिस्ट्री) का विवरण प्रस्तुत किया जाना योग्य है।

यूंग के पास एक एक्कावन वर्षीय मनस्ताप (Neurosis) ग्रस्त उद्योगपति ने भेंट कर यह शिकायत की कि जब कभी वह ट्रेन अथवा प्लेन से यात्रा करता है तो उसे तेज चक्कर आने लगते हैं और वह अकारण घर बैठे भी बड़ी बैचेनी, चिन्ता एवं परेशानियों का अनुभव करता है। वह व्यक्ति पिछले पचास वर्षों तक सामान्य एवं सफल पारिवारिक एवं व्यावसायिक जीवन यापन करते हुए समाज में अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहा है किन्तु इस इक्यावनवें वर्ष में उसे अजीबसी बेचैनी, चिन्ता और परेशानियों का अनुभव होने लगा है। अतः उसने अपने व्यवसाय संबंधी यात्राओं की दिक्कतों की दृष्टि से अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भेजने का निश्चय किया है। यूंग ने इस उद्योगपति के साथ खुली बातचीत एवं विचार-विमर्श कर यात्रा संबंधी कठिनाइयों की बढ़ोत्तरी का कारण उसकी बढ़ती हुई उम्र तथा इसलिये वृद्ध एवं थके शरीर की सहज घटती क्षमता का जब उसे भान कराया तथा उसकी यात्रा समस्या का उसके द्वारा उसके अधीनस्थ कर्मचारियों को भेजे जाने के निर्णय का समर्थन किया, तो उसको इस विचार-विमर्श मात्र से इसकी बैचेनी, चिन्ता और परेशानियों की चित्तीय पीड़ाओं से राहत मिल गई, जबकि ऐसे मामलों में फ्रायडीयन क्लिनिक यात्रा के दौरान चक्कर आने तथा घर बैठे बैचेन एवं चिन्ता-ग्रस्त होने की खोज उसके प्रथम बाल्यकालीन अनुभव के साथ जोड़ने के निरर्थक प्रयास में उसको उलझाने लगेगा, और इस खोज का कोई सूत्र नहीं मिलने पर वह इसका विश्लेषण करने में अपनी असमर्थता का इजहार करते हुए रोगी की चिकित्सा

छोड़ बैठेगा अथवा यदि माथा के चक्कर आने का कोई सूत्र उक्त व्यक्ति के बचपन के किसी अनुभव से जोड़ भी लेगा तो वह यह खुलासा नहीं प्रस्तुत कर सकेगा कि बचपन के उक्त अनुभव की अब इक्कावनवें वर्ष में पुनरावृत्ति का क्या कारण है? यूंग द्वारा रोगी की परेशानियों के उपरोक्त कारणों की व्याख्या रोगी को समझाने मात्र से रोगी का मनस्ताप ग्रस्त रोग से छुटकारा हो गया। अतः यूंगीय पद्धति के अन्तर्गत रोगी को उसके रोग के कारणों का भान कराये जाने मात्र से उसको रोग-मुक्त किये जाने की अद्भुत विशेषता है जो किसी अन्य चिकित्सा पद्धति में नहीं पायी जाती। इसी तरह फ्रायडीयन स्वप्न विश्लेषण के प्रसंग में रोगी द्वारा दिखे सपनों के सूत्रों का रोगी के भूतकालीन बाल्यावस्था के अनुभवों के साथ सूत्र ढूँढ़े जाने की निरर्थक दौड़-धूप की जाती है जो स्वप्न के सही अर्थ या कारण का पता लगाने में प्रायः निरर्थक सिद्ध होती है। जबकि यूंगीय पद्धति में स्वप्न विश्लेषण के माध्यम से स्वप्नद्रष्टा की तात्कालिक अवनेतन स्तरीय स्थिति का पता लगाया जाकर सरलता के साथ रोगी की चित्तीय गड़बड़ियों का प्रभावकारी उपचार किया जा सकता है। इसी प्रसंग में यूंग की यह भी मान्यता है कि मनस्तापी रोगी द्वारा दिये गये स्वप्न के विश्लेषण के दौरान एक निष्णात चिकित्सक के हाथ कभी-कभी ऐसा सूत्र अनायास ही मिल सकता है जिसकी योग्य समझ से रोग तथा रोगी को परेशान करने वाली तत्कालीन समस्या का स्वतः हल भी निकल आता है। रोग के लक्षण तथा स्वप्न के सही विश्लेषण से समस्या का सरलता के साथ समाधान निकाला जाना निःसंदेह यूंगीय चिकित्सा प्रणाली की अद्भुत क्षमता या विशेषता है।

यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत चित्त चिकित्सा का आरम्भ विश्लेषणात्मक संक्षिप्तकरण व्याख्या (Analytical reductive Interpretation) द्वारा किया जाता है तथा बाद में संश्लेषण-सर्जनात्मक विधि (Synthetic Construcive method) का उपयोग किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि चित्त चिकित्सा के प्रथम चरण में चिकित्सक की मुख्य भूमिका रहती है, किन्तु चित्त चिकित्सा के बाद के द्वितीय चरण में चिकित्सक द्वारा रोगी स्वयं को अपने रोग के कारणों की खोज तथा इसका योग्य समाधान ढूंढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। और इन दोनों चरणों की कार्यवाही द्वारा रोगी को अपनी समस्याओं के समाधान का भान या समझने का आग्रह किया जाता है ताकि रोगी अपनी निजी समझ के आधार पर रोग के लक्षणों से राहत प्राप्त कर सके।

यूंगीय चित्त चिकित्सा प्रणाली में यदाकदा चिकित्सक द्वारा रोगी को सक्रिय कल्पना विधि (Active Imagination Method) की मदद लेने का परामर्श भी दिया जाता है, जिसके द्वारा रोगी की अवचेतन स्थिति का परिचय एवं अनुभव रोगी को अपने चेतन स्तर पर करने का मौका मिल जाता है, और इस प्रकार रोगी की चेतन स्तरीय परेशानियों पर उसकी अवचेतनस्तरीय अन्तर्वस्तु के उभराव से तथा

इन दोनों स्तरों की अन्तर्वस्तु की अदला-बदली तथा घुलनशीलता से व्यक्ति अपने चेतनस्तरीय उलझनों एवं अवचेतन स्तरीय घुटन से राहत पाने लगता है और इस प्रकार रोगी अपने रोग से मुक्त हो पाता है। सामान्यतः चित्त चिकित्सा हेतु रोगी एवं चिकित्सक द्वारा प्रति सप्ताह प्रारम्भ में तीन दफे तथा बाद में प्रति सप्ताह दो दफे तथा चिकित्सा के अन्तिम चरण में प्रति सप्ताह एक बार परस्पर साक्षात्कार एवं आपसी विचार-विमर्श किया जाना पर्याप्त माना गया है। किन्तु इस आवृत्ति को परस्पर विचार-विमर्श के अनुसार घटाया-बढ़ाया भी जा सकता है जो चिकित्सक की सुविधा एवं रोगी की आवश्यकता के आधार पर आपसी सलाह परामर्श से निश्चयन किया जाना योग्य है।

यूंगीय चिकित्सा के अन्तर्गत सक्रिय कल्पना विधि (Active Imagination Method) का उपयोग किया जाना निश्चयपूर्वक यूंगीय पद्धति की उल्लेखनीय विशेषता मानी जा सकती है। यह विधि कार्लगुस्ताव यूंग की मौलिक खोज है जिसके माध्यम से रोगी के अवचेतन की स्थिति को सुस्पष्टता के साथ जाना जा सकता है और अवचेतन की सही पहिचान कराये जाने से ही मनस्तापी रोगी का मूल से स्थायी उपचार किया जाना संभव है। सक्रिय कल्पना क्या है तथा किस प्रकार चित्त चिकित्सा के लिये इसका योग्य उपयोग किया जाता है इस बाबत विस्तृत विवेचन इस पुस्तक के पिछले एक अध्याय में विस्तार के साथ प्रस्तुत किया जा चुका है। अतः यहाँ पर केवल यही कहा जाना पर्याप्त है कि सक्रिय कल्पना विधि से रोगी की समस्या पर सीधा आक्रमण किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप रोगी की अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु का उभार तत्काल चेतन स्तर पर हो जाता है। और अवचेतन स्तरीय दमघुटने वाली स्थितियों की चेतन स्तर पर योग्य पहिचान रोगी द्वारा किये जाने पर तत्काल रोगी को रोग के लक्षणों से मुक्त किया जा सकता है। सक्रिय कल्पना विधि का उपयोग यूंगीय पद्धति के अलावा किसी अन्य चिकित्सा पद्धति में नहीं किया जाता, अतः इसको यूंगीय पद्धति की उल्लेखनीय विशेषता माना जाना योग्य है।

मानव जीवन की सार्थकता पूरी समझ के साथ जीने में ही है और पूरी समझ चित्त के चेतन तथा अवचेतन दोनों की अर्न्तवस्तुओं की खरी पहिचान ही है। मानव प्रायः स्वयं के चेतन सम्भाग में स्वतः घटित स्थितियों से तो परिचित रहता है किन्तु वह स्वयं के अवचेतन स्तरीय घटनाओं को ठीक प्रकार से न तो समझ पाता है और न स्वयं की अवचेतन स्तरीय क्रियाओं, घटनाओं एवं प्रवृत्तियों का योग्य मूल्यांकन करते हुए अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये इनका कोई अर्थपूर्ण उपयोग कर पाता है। अतः वर्षों से मानवीय व्यक्तित्व के अवचेतन सम्भाग को अधिक से अधिक समझने तथा उनका मानवीय व्यक्तित्व के लिए योग्य उपयोग किये जाने की निरन्तर आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। इस दौरान में फ्रायड आदि मनो-

चिन्तनवेत्ताओं के द्वारा स्वप्न विश्लेपण प्रक्रिया को व्यक्ति के अवचेतन की जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयुक्त साधन होना स्वीकार किया क्योंकि यह सर्वसम्मत मान्यता है कि स्वप्न दर्शन के माध्यम से अवचेतन स्थितियों की सहज अभिव्यक्ति होती है अतः इन विद्वानों ने स्वप्न विश्लेपण सम्बन्धी व्याख्यायें (Interpretation) प्रस्तुत की। कार्ल गुस्ताव यूंग ने भी स्वप्नों को अवचेतन स्तरीय स्थितियों वृत्तियों एवं घटनाओं की जानकारी के लिये उपयोगी साधन माना है और यूंग ने स्वप्न विश्लेपण संबंधी मान्यताओं की मानवीय अनुभवों के आधार पर कुछ नतीजे निकाले जाने का आग्रह या संकेत दिया है। निःसन्देह स्वप्न दर्शन से अवचेतन स्वतः सहज रूप से अभिव्यक्त होता है और स्वप्न रचना अवचेतन स्तरीय सामग्री का प्रतिफल है। अतः स्वप्न दर्शन के योग्य विश्लेपण से व्यक्ति के अवचेतन को समझने में पर्याप्त मात्रा में मदद मिल सकती है। यूंग ने स्वप्न विश्लेपण के अलावा सक्रिय कल्पना विधि (Active Imagination Method) का सर्वथा मौलिक नयी अवधारणाओं को व्याख्यायित करने का प्रयत्न किया है, जिसके माध्यम से स्वप्न से भी अधिक स्पष्टता के साथ व्यक्ति के सन्मुख उसका अवचेतन उजागर हो सकता है। यूंग ने अवचेतन को चेतन का आधार एवं अधिक सृजनशील माना है। यूंग की यह मान्यता है कि सक्रिय कल्पना की भूमिका का स्वप्न विश्लेपण की अपेक्षा अधिक स्थायी और अधिक प्रभावशाली महत्व है। अतः सक्रिय कल्पना विधि का उपयोग किये जाने की अवधारणा से निःसन्देह यूंगीय पद्धति की उपादेयता में उल्लेखनीय सार्थकता बढ़ गई है और इन सभी विशेषताओं की मौजूदगी से यूंगीय चित्त चिकित्सा पद्धति को अन्य चिकित्सा प्रणालियों की अपेक्षा सम्पूर्ण विश्व में अधिक महत्व दिया जा रहा है और इस प्रकार यूंगीय विश्लेपण के कार्यक्षेत्र में उल्लेखनीय विस्तार स्पष्टतया दृष्टिगोचर हो रहा है।

अध्याय 20

मनोविज्ञान एवं मनोरसायन
(Psychology and Alchemy)

सामान्य धारणानुसार कीमियागिरि उर्फ अलकीमिया (Alchemy) को मूर्खतापूर्ण अन्धविश्वास (Superstitution Nonsense) माना जाता है। इसको अधिक से अधिक रसायन विज्ञान (Chemistry) का प्रारम्भिक चरण कहा जा सकता है, किन्तु बहुत कम लोग इस तथ्य से अवगत हैं कि थोमस एक्वीनस, ईसाक न्यूटन तथा रोबर्ट बॉयल आदि प्रसिद्ध वैज्ञानिकों द्वारा भी अलकीमिया का गहन अध्ययन किया गया था तथा अलकीमिया का मध्यकालीन दर्शन एवं धर्म के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। सामान्यतः अलकेमिस्ट का अर्थ सोना बनाने वाले कारीगर से है क्योंकि प्रायः अलकेमिस्ट सुवर्ण बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं। पाये जाते हैं किन्तु इनमें एक कतिपय प्रतिभासम्पन्न वैज्ञानिकों ने सुवर्ण निर्माण को केवल प्रतीकात्मक (Symbolic) रूप में ही स्वीकार किया है अतः इस विशिष्ट वर्ग के प्रतिभासम्पन्न वैज्ञानिक के खोज सुवर्ण बनाना न होकर एक ऐसे पदार्थ या शक्ति की खोज किया जाना है जो सभी पदार्थों एवं वस्तुओं का मूलाधार हो, अथवा उस परम शक्तिमान शक्ति का पता लगाना है जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व की सभी हलचलों का संचालन होता है। मूल तत्व की इस खोज का दार्शनिक पत्थर (Philosopher's stone) की तलाश की संज्ञा से भी व्याख्यायित किया गया है। अलकीमियाँ के माध्यम से इस मूल तत्व की प्रतिभासम्पन्न वैज्ञानिकों द्वारा वरसों से गहन खोज या छानबीन की गई है और इस दीर्घकालीन साधना तथा छानबीन के फलस्वरूप इन्होंने सभी पदार्थों में व्याप्त "आत्मा" (The self) का पता लगाया है। अतः इस अर्थ में अलकीमिया का प्रयोजन पदार्थों में निहित "आत्म तत्व" को पदार्थ से अलग कर उनका सम्यक् ज्ञान प्राप्त करना रहा है। इस महत् उद्देश्य के फलस्वरूप (विशेषतः अवचेतन) तथा आध्यात्म (चर्च) के बीच सामञ्जस्यकारी सम्बन्धों को स्थापित करने में भी उल्लेखनीय सफलता मिली है, क्योंकि सामान्यतः चर्च की दृष्टि में अवचेतन चित्त को पापग्रस्त (Sinful) माना जाता था किन्तु प्रतिभासम्पन्न अलकेमिस्टों की दीर्घकालीन खोजों से अवचेतन में आत्मा की खोज से

धर्म व्यवस्था (चर्च) तथा चित्त विज्ञान के बीच अब पारस्परिक उत्तम सम्बन्ध निर्मित होने की सम्भावनायें भी बढ़ गई हैं।

निःसन्देह अलकेमिस्ट अपने वर्ग को उत्तम श्रेणी का ईसाई धर्मावलम्बी घोषित करते हैं, किन्तु वे अपने ज्ञान को किसी धर्म पुस्तक के आधार पर प्रतिस्थापना करने के बजाय आधुनिककालीन वैज्ञानिकों की तरह अपने अनुभवों को ही अपने निष्कर्षों का आधार मानते हैं। इस प्रकार आधुनिक अलकीमिया शोधक परम्परागत लकीर का फकीर होने के बजाय अपने अनुभव को ही सत्य तथा अपने ज्ञान का आधार मानते हैं। और इस प्रकार के अनुसन्धान कार्य के हेतु वे अलकीमिया द्वारा समर्पित रसायनिक क्रियाओं (Chemical processes) की मदद लेते हैं। आधुनिक अलकेमिस्टों द्वारा रासायनिक प्रक्रिया की मदद से उपलब्ध नतीजे प्रायः अनुभवजन्य प्रतीकों (Symbolic experience) के रूप में उपलब्ध होते हैं, जिनमें तथा रोगियों के स्वप्नों मे प्रकट होने वाले प्रतीकों के बीच आश्चर्यजनक समानता अथवा सादृश्यता पायी गई है।* अर्थात् अलकेमिस्ट की खोज से प्राप्त प्रतीकों एवं रोगी के द्वारा स्वप्न विश्लेषण के दौरान अनुभव किये गये प्रतीकों में अद्भुत सादृश्यता पायी जाती है जो सचमुच एक महत्वपूर्ण खोज है। निःसन्देह रोगी के स्वप्न विश्लेषण के दौरान में किसी वैज्ञानिक उपकरण की मदद नहीं ली जाती—फिर भी यदि स्वप्न में आग पर तपाये जाते किसी पात्र (Pot) को देखा जाय तो उसका यही अर्थ निकाला जायेगा कि यहाँ कुछ न कुछ आसन्न परिवर्तन की खोज की जा रही है।**

उल्लेखनीय स्वप्नों (Significant dreams) का देखा जाना तथा विचित्र अनुभवों (Strange experiences) का घटित होना कोई विशेष आश्चर्यजनक सूचना नहीं है। क्योंकि कतिपय ऐसे व्यक्ति भी हैं जो प्रायः काल्पनिक दुनिया में रहने के अभ्यासी हो गये हैं, और इस प्रकार के ऐसे लोगों के लिये असामान्य स्वप्न दर्शन तथा अद्भुत अनुभवों का घटित होना कोई खास अर्थ नहीं है तथा इनका उन पर कोई विशेष प्रभाव होना भी नहीं पाया जाता। किन्तु कुछ लोगों पर निःसन्देह अनोखे स्वप्नों तथा विचित्र अनुभवों का बड़ा गहरा असर होना पाया जाता है। प्रायः व्यक्ति अपने स्वप्नों में से अथवा अपने अनुभव के माध्यम से अपने ही प्ररूप (Archytype) से प्रभावित होता है तथा अपने प्रारूप (आर्कीटाइप) से ही वह अपनी ही आत्मा से साक्षात्कार कर पाता है, फिर भी यदा-कदा उसके व्यक्तित्व के

---

* यूंग ने अपनी Psychology and Alchemy शीर्षक पुस्तक में लगभग 400 स्वप्नों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए इस 'सादृश्यता' का प्रतिपादन किया है।

** Collected Works, Vol. 9. page 94.

विकास में इससे कोई उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता और स्वप्न में दिखा सपना अथवा जीवन में भुगता कोई विचित्र अनुभव केवल क्षणिक प्रभाव डालकर पुनः नष्ट हो जाता है। मानों रात में खिला फूल सुबह में मुरझा गया हो और जिसका कोई असर या चिन्ह ही नहीं रहता। उपरोक्त प्रकार की स्थिति में स्वप्न दर्शन अथवा किसी विचित्र जीवन अनुभव का कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता तथा जीवन का पूर्ववत् अपरिवर्तनशील चलता रहना प्रायः परिलक्षित किया जाता है चाहे वह स्वप्न या अनुभव में स्वप्न द्रष्टा या अनुभवकर्ता द्वारा उन्हें स्वेच्छाधीन अपनाया गया हो अथवा अनिच्छापूर्वक उसके द्वारा अंगीकृत किया गया हो।

इस प्रसंग में कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह संकेत दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति को यह हमेशा याद रखना चाहिये कि वह जो जीवन जी रहा है वही उसके लिये श्रेयस्कर है, भले उसे वह कितना ही अरुचिकर क्यों न लगे। मानव के लिये उसे अपने जीवन को बनाया रखना ही उसकी निश्चित नियति है अतः उसको अपने जीवन का यथावत् निर्वाह किया जाना ही उसके लिए श्रेयस्कर है। मानव जीवन व्यक्ति के स्वभाव (Nature) तथा उसके स्वधर्म पर ही प्रारम्भ से अन्त तक निर्भर एवं स्वतः संचालित है–अतः उसके लिये अपने स्वभाव एवं स्वधर्म के अनुसार प्रत्येक परिस्थिति के अनुरूप प्रवृत्तियों में लगे रहना या बने रहने में ही उनके जीवन की सार्थकता और आवश्यकता है और तदनुरूप आचरण व्यवहार करने पर ही वह न केवल अपने जीवन का योग्य निर्वाह कर पाता है अपितु अपने स्वभाव एवं स्वधर्म के काम में लगे रहने से ही वह अपने व्यक्तित्व का सहज विकास करसकने में सक्षम हो सकता है।

अलकीमिया के प्रसंग में यूंग द्वारा प्रतिस्थापित विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में पूर्वीय विचारधारा (मुख्यतः चीनी विचार परम्परा) का भरपूर उपयोग किया गया है। अपने जीवन के उत्तरार्द्ध काल में यूंग श्री रिचर्ड (Richard) विल्हेम (Wilhelm) के घनिष्ठ सम्पर्क में आये और उन्होंने व्यक्तिकरण प्रणाली (Individuation process) के प्रश्न पर विचार करते हुए श्री रिचार्ड विल्हेम के सहयोग से (The secret of the Golden Flower) शीर्षक पुस्तक का प्रणयन किया। इस पुस्तक में चीनी रहस्यवादियों की प्रणाली (Methods of chinese meditation) तथा व्यक्तिकरण प्रणाली (Individuation process) की साधना का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। (The Golden Flower) पुस्तक में चीनी दर्शन विशेषतः चीनी ध्यान योग प्रणाली (Methods of chinese meditation) का विशद वर्णन प्रस्तुत किया गया है। चीनी विचार परम्परा के अनुसार सम्पूर्णविश्व (Cosmos) तथा मानव (Man) के बीच एक घनिष्ठ सम्बन्ध माना गया है क्योंकि विश्व और मानव दोनों समान सामान्य नियमों से बाधित माने गये हैं, अतः

मानव को विश्व का संक्षिप्त संस्करण कहा गया है। इसी प्रकार विश्व तथा चित्त (Cosmos and psyche) के बीच भी अटूट सम्बन्ध है जो परस्पर एक दूसरे के पूरक सम्भाग माने गये हैं। अतः सम्पूर्ण सृष्टि के घटनाक्रम से मानव की भागीदारी मानी गयी है और वह बाह्य एवं आन्तरिक रूप से सृष्टि का एक अंश (हिस्सा) मात्र है। चीनी शब्दावली के अन्तर्गत ताओ (Tao) का अर्थ सृष्टि या संसार (World) है। सृष्टि का मानव पर उसी तरह गहरा प्रभाव रहता है जैसाकि अदृश्य स्वर्ग (Invisible Heaven) का दृश्य पृथ्वी (The Visible Earth) पर प्रभाव है।*

चीनी विचारधारा के अनुसार ताओ (Tao) ही एक मात्र अविभक्त महान् इकाई (Undivided Great one) है, जहां से दो परस्पर विरोधी तत्व निकलते हैं जिनको अंधकार तथा प्रकाश की संज्ञा से जाना गया है। चीनी शब्दावली में इन्हें यीन (Yin) तथा यांग (Yang) कहा गया है, तथा इन दोनों परस्पर विरोधी तत्वों के सामञ्जस के लिए ध्यान प्रणाली का The secret of the Golden Flower में विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है।**



* The Secrets of the Golden Flower by Richard Wilhelm and C.G. Jung, page 73 (Collected Works, Vol 13.)

** The Integration of Personality (Collected Works, Vol. 17, page 302)

अध्याय 21

मनोविज्ञान एवं काव्य, कला तथा साहित्य

(Psychology and Poetry, Art and Literature)

कार्ल गुस्ताव यूंग की मान्यतानुसार विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान एवं काव्य, कला तथा साहित्य का संबंध विवादास्पद होने के बावजूद भी अत्यन्त गहन एवं घनिष्ठ है, अतः मनोविज्ञान तथा काव्य, कला एवं साहित्य के बीच तुलना किया जाना योग्य नही है, किन्तु इसके बीच के संबंधों की व्याख्या किया जाना संभव है। काव्य, कला और साहित्य की रचनायें निःसन्देह चित्तीय क्रियाएं हैं। अतः इनकी विवेचना मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जाना संभव है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से मनोविज्ञान एवं काव्य, कला और साहित्य इत्यादि के क्षेत्र सर्वथा एक दूसरे से पृथक्-पृथक् हैं, अतएव काव्य, कला एवं साहित्य की उपलब्धियों का मूल्यांकन या नाप-तोल विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के आधार पर प्रस्तुत किया जाना न तो योग्य है और न उपयोगी ही है। मनोविज्ञान और काव्य, कला साहित्य इत्यादि की मूल प्रकृति ही भिन्न-भिन्न है। मनोविज्ञान के अपने नियम और उसकी मर्यादायें हैं, मनोविज्ञान एक शुद्ध विज्ञान है जो कार्य-कारण के संबंधों से मर्यादित है। कला, काव्य और साहित्य का क्षेत्र विस्तृत, व्यापक, मुक्त और रसमय है। जिसकी उपलब्धि आनन्द रसानुभूति है, जबकि मनोविज्ञान का विषय सम्यक् समझ मात्र का मर्यादित क्षेत्र है। अतः काव्य, कला और साहित्य के अन्तर्गत उठने वाले प्रश्नों का उत्तर मनोविज्ञान के माध्यम से दिया जाना निरर्थक प्रयास सिद्ध हो सकता है।

काव्य, कला एवं साहित्य का क्षेत्र निःसन्देह विज्ञान से जुड़ा है, यद्यपि मन और चित्त से कला, काव्य, साहित्य तथा विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र परस्पर जुड़े हुए हैं, अतः कला, काव्य और साहित्य की व्याख्या विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान के द्वारा प्रस्तुत किया जाना योग्य नहीं है। अतः कला, काव्य और साहित्य के क्षेत्र की विषय वस्तु का अतिक्रमण किये बगैर इसका मनोविज्ञान के साथ क्या है, इसका विवेचन प्रस्तुत किया जाना भी अर्थपूर्ण नहीं हो सकता जिस प्रकार बुद्धि के आधार पर भावना की प्रकृति का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, इसी तरह मनोविज्ञान की तराजू पर किसी कला, काव्य या साहित्य की कृति की अच्छाई, बुराई, गुन-दोष, सार्थकता या अर्थहीनता का नापतोल नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रत्येक

क्षेत्र की जुदा-जुदा मर्यादायें, सीमाएं एवं नियमादि हैं, जिनकी कसौटियों पर इनका अलग-अलग मूल्यांकन किया जा सकता है। और इसलिये कला, काव्य एवं साहित्य विषयक किसी प्रकार मनोविज्ञान से कोई नतीजा निकाला जाना योग्य नहीं है। विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से हम कलाकार, काव्यकार या साहित्यकार का उसका कला, काव्य एवं साहित्य से कितना लगाव है, तथा इसके बाबत उसका क्या दृष्टिकोण है, इसका तो पता लगा सकते हैं, किन्तु मनोविज्ञान की जानकारी से हमें उसकी रचना या कृति के गुण-दोषों का कोई ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता और इसलिये किसी भी कृति या रचना को विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान की शब्दावली में परिभाषित किया जाना कठिन है। कला, काव्य और साहित्य निःसन्देह उसके रचनाकार के चित्त की अन्तर्वस्तु की अभिव्यक्ति है, किन्तु उसकी रचना एवं कृति का कौनसा अंश उसके रचनाकार के चेतन चित्त का परिणाम है तथा कौनसा अंश उसके अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु की अभिव्यक्ति है? इस प्रकार का कोई विवेचन खुलासा प्रस्तुत किया जाना किसी भी निष्णात मनोविज्ञानी की क्षमता से परे है।

निःसन्देह प्रत्येक कलाकृति के निर्माण एवं काव्य, साहित्य की रचना हेतु सृजक मानव को जटिल चित्तीय क्रियाकलापों के बीच गुजरना पड़ता है, और प्रत्येक कला एवं साहित्य की रचना में रचनाकार के चेतन तथा अवचेतन सम्भागों का स्वतः उपयोग भी किया जाता है. फिर भी स्वयं किसी रचनाकार के लिये उसकी कृति का क्या हिस्सा चेतना संगत तथा क्या हिस्सा अवचेतन स्तरीय प्रेरणा का परिणाम है, इसका निश्चयन नहीं किया जा सकता। अतः कला और साहित्य की कृति में कितना योगदान वैयक्तिक है तथा कौनसा अंश सामूहिक अवचेतन स्तरीय है, इस बाबत कोई निष्कर्ष या विवेचन प्रस्तुत किया जाना संभव ही नहीं है। क्योंकि प्रत्येक रचना रचनाकार के चेतन तथा अवचेतन संभाग की मिश्रित अनुभूति की ही अभिव्यक्ति है, जिसको खण्डीय विश्लेपण से कभी भी हृदयंगम नहीं किया जा सकता। सभी कलाकृतियां एवं साहित्यिक रचनाओं में रचनाकार अपनी बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी दोनों अभिवृत्तियों की एवं चिन्तन, भावना, संवेदन तथा अन्तःप्रज्ञा की चारों क्रियाओं का भरपूर उपयोग करता है, जिसके परिणामस्वरूप कृति में विस्तार और गहराई, विचार और भावना, सामान्यता एवं विलक्षणता का आभास अवश्य अनुभव किया जाता है, किन्तु इन रचना एवं कृतियों के सभी कारणों का पता लगना संभव ही नहीं है। इसलिये उनके संबंध में किसी मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष या नतीजा निकाले जाने की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

डाक्टर सिगमन्ड फ्रायड द्वारा कतिपय कलाकृतियों एवं साहित्यिक रचनाओं के संबंध में मनोविश्लेषण के आधार पर कुछ नतीजे निकाले जाने की चेष्टा किया जाना पाया गया है, किन्तु फ्रायड के मनोविश्लेषण के आधार पर किसी विशुद्ध साहित्यिक रचना का विश्लेषण प्रस्तुत किये जाने के प्रयत्न को कार्ल गुस्ताव यूंग

द्वारा सराहा नहीं गया है। नि:सन्देह कलाकृतियों के निर्माण एवं साहित्यिक रचनाओं में रचनाकार के अवचेतन सम्भाग का गहरा असर परिलक्षित किया जा सकता है, फिर भी इसका योग्य मूल्यांकन इसी आधार पर किया जाना उपयुक्त नहीं है, क्योंकि मौलिक कला-कृति या रचना केवल मात्र अवचेतन की ही अभिव्यक्ति नहीं है अपितु इसकी रचना में रचनाकार के अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु के साथ तत्कालीन व्यक्तिगत स्थितियों तथा तत्सबंधी पर्यावरण की संयुक्त मिली-जुली भूमिकायें मौजूद रहती हैं, जिनको अलग-अलग किया जाना तथा इस प्रकार खण्डीय जानकारी के आधारों पर किसी एक निष्कर्ष एवं नतीजे पर पहुंचना न तो संभव है, और न यह प्रयोजनीय है। मानवीय चित्ताकाश में समय-समय पर चेतन और अवचेतन की अन्तर्वस्तुओं का इस प्रकार मेलजोल, आना जाना या अदलना बदलना स्वतः होता रहता है कि इसका अलग-अलग ब्योरा प्रस्तुत किया जाना संभव ही नहीं है, और इसलिये कलाकृतियों एवं विशिष्ट साहित्यिक रचनाओं के मूल्यांकन का दायित्व किसी मनोविज्ञान वेत्ता के बजाय किसी सौंदर्यशील विशेषज्ञ या सहित्य आलोचक के लिये छोड़ा जाना ही कार्ल गुस्ताव यूंग ने योग्य माना है।

यूंग ने यह भी संकेत दिया है कि कला, काव्य और साहित्य का क्षेत्र मनोविज्ञान की अपेक्षा अधिक प्राचीन, पुरातन, विस्तृत और गहरा है, और सृष्टि रचना से लेकर आज तक अनेक प्रतिभासम्पन्न मनीषियों द्वारा इनकी भावभूमि को सिंचित एवं काल्पनिक रंगीनियों द्वारा निरन्तर संवारा गया है, अतः कला, काव्य और साहित्य बहुमुखी, तथा बहुरंगी क्षेत्र का मूल्यांकन इसी क्षेत्र के साधकों के द्वारा लंबी परम्परा एवं विरासत के आधार पर किया जाना ही योग्य एवं उपयुक्त है।

समय और स्थान की दृष्टि से कला और साहित्य किसी भी मनोविज्ञान की अपेक्षा अधिक प्राचीन एवं व्यापक हैं, जिसमें सदियों के मानवीय अनुभवों का सावधानी-पूर्वक सार संग्रह किया गया है, तथा जिनसे लाखों करोड़ों व्यक्तियों के जीवन-स्पर्श की ऊष्मा, चमक और साजसंवार का सहयोग प्राप्त हुआ है, अतः आज के विद्वान् मनोविज्ञानी के द्वारा इनके प्रति श्रद्धा एवं स्वीकृति प्रकाशन किया जाना ही यूंग की दृष्टि में उचित एवं योग्य है। यूंग ने कला और साहित्य को अवचेतन स्तरीय सृजनात्मक क्रियाशीलता की अभिव्यक्ति कहा है, अतः इस सृजनात्मक कला, कृति एवं रचना के प्रति आदर व्यक्त किया जाने का एक मात्र मार्ग, इस क्षेत्र को सर्वोपरि महत्व देना ही माना जाना योग्य है। अतः कला एवं क्षेत्र के सर्वोपरि महत्व के क्षेत्र में किसी भी मनोविज्ञानी का खण्डीय दृष्टि से मूल्यांकन किया जाना उसके निर्धारित क्षेत्र का अतिक्रमण किया जाना कदापि योग्य नहीं है, और इसीलिये अपने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत कला और साहित्य के क्षेत्र की सार्वभौमिकता का आदर करते हुए उनके क्षेत्र में किसी भी मनोविज्ञान के पंडित की दस्तनदाजी या छेड़छाड़ नहीं किये जाने बाबत यूंग ने समय-समय पर निरन्तर सावधानियों का प्रकाशन किया है।

कला और साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं प्रभावशाली रहा है। सृष्टि के आदिकाल से आज तक मानव-जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में जो विकास हुआ है, उसका बहुतांश श्रेय कलाकार एवं साहित्य निर्माता को दिया जाना योग्य है। मानव-जीवन में उपयोगी सभी साधनों, अविष्कारों, अनुसंधानों एवं उसकी योग्य साज-संवार कलाकारों के श्रम का ही परिणाम है, और साहित्य के अन्तर्गत न केवल काव्य इतिहास, पुराणविद्या को गिनाया जा सकता है, अपितु सभी प्रकार का चिन्तन, मनन, दर्शन, धर्मशास्त्र को भी साहित्य में सम्मिलित किया जा सकता है और इस प्रकार स्थापत्य, अभियांत्रिकी तथा विज्ञान की सभी उपलब्धियों के विस्तार, या उपयोग में कला और साहित्य की बड़ी उल्लेखनीय साझेदारी पायी जाती है। कलाकार ने अपनी तूलिका या अन्य साधनों से तथा साहित्यकार ने अपनी कलम और समझ से लाखों वर्षों की ज्ञान-सम्पदा की धरोहर मानव को सौंपते हुए उसके मानवीय जीवन एवं चरित्र के विकास में जो उल्लेखनीय योगदान दिया है, जिसका परिचय कतिपय ध्वंसावशेषों तथा प्राचीनतम चट्टानों में खुदे प्रकारों एवं चित्रों से आज भी सत्यापित किया जा सकता है। यूंग ने प्रस्तर युग कालीन रोडेशिया की चट्टानों के चित्रों में पशुओं की आकृतियों के साथ ईसा से लाखों वर्ष पूर्व क्रास ✕ प्रतीक की मौजूदगी का उल्लेख कर यह प्रतिपादित किया है कि क्रास का प्रतीक ईसा के जन्म से हजारों वर्ष पूर्व विश्व के अनेक भागों में व्यवहार में लाया जाता रहा है। ईसा के जन्म के बाद जहां-जहां ईसाई धर्म के प्रचार हेतु गिर्जाघरों का निर्माण किया गया है, उसको क्रास ✕ के प्रतीक के साथ मंडित किया जाना इनकी ईसाई मतावलम्बी होने की पहिचान मानी गई है। किन्तु तिब्बत के मठों और विहारों में भी क्रास चिन्ह का पाया जाना क्रास को ईसाईयत के बजाय किसी अन्य धर्म का चिन्ह माने जाने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। आदिम जातियों में सूर्य के प्रति सनातन काल से चली आ रही श्रद्धा का परिचय क्रास के प्रतीक के रूप में सूर्यरथ के पहिये का द्योतक है, अतः वस्तुतः क्रास को सूर्यरथ चक्र का प्रतीक माना जाना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। सूर्यरथ के पहिये का प्रतीक यांत्रिक पहिये के निर्माण से भी पूर्व प्रचलित होना भिन्न-भिन्न पुराण-कथाओं के वर्णन से प्रमाणित माना जा सकता है। प्राचीन काल से प्रतिभासम्पन्न कलाकार और साहित्यकारों के चिन्तन की अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न देशों एवं आदिम-जातियों के मिथकों में इस प्रकार के अनेकों प्रतीकों के माध्यम से एक धरोहर के रूप में समस्त मानव-जातियों में आदिकाल से अब तक चली आ रही है। मानों आत्मा की अभिव्यक्ति मानव मात्र में तथा उसके द्वारा निर्मित प्रत्येक कला कृति एवं साहित्य रचना में समान रूप से चली आ रही है जो कि सामूहिक अवचेतन स्तरीय मानवीय अनुभव पुंजों की यादगार है। यूंग ने इसी को सृजनशीलता की प्रक्रिया कह कर इसको परिभाषित कर यह प्रतिपादित किया है कि सृजनशीलता ही मानवीय प्रकृति का वह गुण है,

जिसके द्वारा मानव और अमानव के भेद को स्पष्ट किया गया है। यह निःसन्देह एक अलौकिक विलक्षण तत्व है, जिसको फ्रायड के मतानुसार मनस्ताप का लक्षण माना जाना यूंग की दृष्टि में उपयुक्त नहीं है। सृजनशीलता का गुण मानवीय उच्च स्तरीय विकास की सही पहिचान है, इसलिये यूंग की मान्यता में कलाकार और साहित्य प्रणेता को इस सृजन धर्मिता के आधार पर उच्चतर विकसित व्यक्तित्व का धनी होना माना गया है और उसको अल्प-विकसित खण्डीय व्यक्तित्व के मनस्तापी रोगी की श्रेणी में गणना किया जाना एक गलती माना गया है। एक कलाकार तथा साहित्य प्रणेता न केवल एक वैयक्तिक व्यक्ति मात्र है, अपितु वह सदियों के मानवीय अनुभवों से समृद्ध एक सामूहिक व्यक्तित्व है, और इसीलिये एक सच्चे कलाकार की कृति अथवा रचना को वहु समाज द्वारा सराहा और स्वीकारा गया है, और इनकी योग्य एवं सम्यक् समझ के आधार पर ही क्रमशः मानवीय विकास होना दृष्टि गोचर होता है। यूंग ने मानव के अवचेतन सम्भाग को सृजन-शीलता की कृति कहा है, जिसके माध्यम से समूची मानव-जाति के श्री, सौंदर्य एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हुआ है और इसीलिये यूंग ने इस सृजनात्मक शक्ति के मूलाधार अवचेतन सम्भाग को वैयक्तिक चेतन की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी एवं महत्वपूर्ण माना है।

———————

अध्याय 22

मनोविज्ञान एवं शिक्षा
(Psychology and Education)

शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association Test) के माध्यम से यूंग ने बाल-विकास को समझने तथा उसके विकास का पता लगाने का उल्लेखनीय कार्य किया है, और तत्सम्बन्धी प्रयोगों से यह स्पष्ट किया है कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से माता-पिता के जीवन व्यवहार, आचरण तथा उनकी मनोस्थिति का उनके बच्चों पर बड़ा गहरा प्रभाव पाया जाता है तथा समूचा परिवार, यानि माता-पिता, भाई-बहिन तथा बेटा-बेटियाँ प्राय: सभी परिस्थितियों में समान प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हैं। बच्चे भी सपने देखते हैं जिनमें यदाकदा उनके माता-पिता की समस्याओं की झांकी मिलती है। इसी तरह मनस्तापी बच्चों के रोग के कारणों का पता उसके माता-पिता की समस्याओं की खोज से किया जा सकता है। पिछले अध्यायों में स्वप्न विश्लेषण की व्याख्या के प्रसंग में कतिपय उदाहरणों के प्रस्तुतीकरण से यह प्रतिपादित किया गया है कि बच्चे अपने स्वप्नों के माध्यम से अपने माता-पिता की गहन तथा गूढ़तम समस्याओं को जान लेते हैं, चाहे माता-पिता द्वारा उक्त समस्याओं को बच्चों से छिपाए रखने की पूरी सतर्कता क्यों नहीं बर्ती गई हो। इसी प्रकार यदि माता-पिता द्वारा बच्चों से छिपायी गई उनकी निजी (माता-पिता की) समस्याओं का समाधान कर लिया गया है, अथवा उनकी उक्त गोपनीय समस्याओं की बच्चों को यथार्थ जानकारी करा दी जाती है तो माता-पिता के समस्या के कारण ग्रस्त मनस्तापी बालक का रोग भी तत्काल जादू की तरह गायब हो जाता है। यूंग ने इस प्रसंग में निम्न उदाहरण प्रस्तुत किया है। यथा :—

एक नौ वर्षीया लड़की है जो महीनों से जीर्ण ज्वर से पीड़ित है, अत: वह स्कूल भी नहीं जा सकती। उसके रोग के कारणों की जब खोज की गई तो उसमें किसी भौतिक कारण का कोई पता ही नहीं लगा। इस बालिका के माता-पिता मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रस्त थे, वे तलाक के द्वारा अपने पारिवारिक जीवन को समाप्त करना चाहते थे, किन्तु इस दिशा में उन्होंने कोई कदम नहीं उठाया था। उन्होंने इस बावत कोई जानकारी उस लड़की को नहीं दी थी तथा उस लड़की को

भी न तो इस बाबत कोई भनक मिली थी और न वह स्वयं किसी अन्य समस्या से परेशान थी। वह लड़की यह स्वप्न देखती है कि उसके पिता यात्रा पर कहीं दूर गए हैं और वह यह भी सपने में सोचती है कि इस यात्रा से उसके पिता वापस नहीं लौट पाएंगे (यद्यपि इस लड़की के पिता सामान्यतः प्रायः अपने व्यवसाय के सिलसिले में बहुधा यात्रा पर आते रहते थे।) अपने स्वप्न में उसने यह भी देखा कि पिता के यात्रा पर चले जाने के बाद उसकी माता अधिक प्रसन्न नजर आती है। जब इस लड़की के मां-बाप को यह बताया कि उनके बीच सम्बन्ध विच्छेद की समस्या बनी रहने से लड़की बीमार हो गई है तो उन्होंने इस समस्या का हल निकालने का निश्चय कर लिया तथा उन्होंने अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया तथा उन्होंने लड़की को इस बाबत सूचना देते हुए यह विश्वास दिलाया कि यद्यपि उन्होंने परस्पर सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) कर लिया है फिर भी इस निर्णय का कोई असर उस पर नहीं पड़ेगा—तथा लड़की के साथ इन दोनों के सम्बन्ध यथावत् बने रहेंगे—अर्थात् वह लड़की इन दोनों (पूर्व के माता-पिता) की पहिले जैसी बनी रहेगी। विवाह-विच्छेद से तो लड़की के अब दो घर हो गए हैं, अतः वह कभी अपने पिता के साथ तथा कभी वह अपनीमाता के साथ उसके घर में रह सकेगी। माता-पिता द्वारा उपरोक्त नया रास्ता बताए जाने पर उक्त लड़की को मनस्तापी रोग से तत्काल छुटकारा मिल गया और वह लड़की पूर्ण स्वस्थ बन कर स्कूल में नियमित रूप से उपस्थित रहने लगी।*

शब्द साहचर्य परीक्षणों तथा स्वप्न विश्लेषणों से यह प्रतिपादित किया जा चुका है कि एक ही परिवार के सभी व्यक्तियों में समान रुचि अथवा अरुचि पाई जाती है और परिवार के सभी सदस्यों पर सभी परिस्थितियों का समान असर होता है तथा परिवार के सभी सदस्य उसके प्रति समान रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। माता-पिता के चेतन का प्रभाव तो निश्चित रूप से बच्चों पर पड़ता है तथा माता-पिता की अवचेतन स्तरीय समस्याओं से भी प्रायः बच्चों के सहज स्वाभाविक विकास में बाधा पड़ती है। यदि पिता अपनी पत्नी से असन्तुष्ट है तो उस बाप का बुरा असर उसकी बेटी पर पड़ेगा और माता के असन्तोष के फलस्वरूप उसके बेटे के भावपक्ष पर विषय प्रभाव होना देखा गया है। ऐसी स्थिति में बेटा अपने बाप के प्रति भी उत्तम भावनाओं का निर्वाह करने में कठिनाइयों का अनुभव करेगा तथा बेटी भी अपनी माता के साथ योग्य प्रकार से भाव-संयोजन नहीं कर पायेगी। विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अध्ययन के दौरान में ऐसे नवयुवक नवयुवतियों के अनेक उदाहरण पाये गये हैं कि जहां पुत्र अपनी माता से तथा पुत्री का

* The inner world of childhood by Frances G. wicks at pages 46–47.

अपने पिता से अत्यधिक अनुरागात्मक सम्बन्ध से मुक्ति प्राप्त नहीं किए जाने के परिणामस्वरूप उन युवक युवतियों का बाद में होने वाला दाम्पत्य जीवन भी प्रायः गड़बड़ा सा जाता है और उनका आचरण व्यवहार सामान्य दम्पति की तरह व्यवस्थित एवं समयोजित नहीं हो पाता।

माता पिता के व्यक्तित्व का उनके बच्चों के अवचेतन पर निःसन्देह गहरा प्रभाव पड़ता है। माता-पिता के विचारों एवं जीवन व्यवहार के अनुरूप ही बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। माता-पिता जो कहते हैं या सिखाते हैं उससे भी कहीं ज्यादा माता-पिता कैसे रहते हैं, क्या सोचते हैं, किस प्रकार का जीवन-यापन करते हैं, इनका बच्चों के जीवन पर अधिक गहरा असर पड़ता है क्योंकि बच्चे माता-पिता के शब्दों के बजाए उनके क्रियाकलापों का प्रायः अनुकरण करते हैं। यदि बाप अपने बच्चों को झूठ नहीं बोलने की बात समझाता है किन्तु वह स्वयं झूठ बोलने का आदी है तो बाप की शिक्षा का कोई असर बालक पर नहीं पड़ेगा अपितु वह झूठे बाप का सवाई झूठा बेटा बन जायगा। माता-पिता अपने चरित्र के द्वारा ही बच्चों के जीवन का मार्गदर्शन कर सकते हैं और तदनुसार ही बच्चों के व्यक्तित्व का सहज विकास होता है। यह कोई नई मनोवैज्ञानिक खोज नहीं है, अपितु यह तो प्राचीन काल से स्वीकृत मानव-जीवन व्यवहार का सनातन बोध (Ancient wisdom) है, जिसका समर्थन आज के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से भी होता है। अतः तथाकथित असमन्वित बालक (Maladjused child) के रोग का कारण बच्चों में नहीं अपितु उसके माता-पिता के असामान्य जीवन व्यवहार में ढूंढा जाना चाहिए। यदि माता का जीवन व्यवहार बेतुका है तथा माता-पिता का अवचेतन अव्यवस्थित है तो निश्चयपूर्वक उनके बच्चों में भी अव्यवस्था का दोष पाया जाएगा। बच्चों के जीवन पर माता-पिता के अवचेतन स्तरीय अवस्था का असर चेतन स्तरीय व्यवहार से भी अधिक पड़ता है क्योंकि अनजाने अवचेतन की शक्ति ज्ञान चेतन की अपेक्षा कई गुनी अधिक है।

बहुधा बच्चे उनके माता-पिता द्वारा दमित (Repressed) वृत्तियों का प्रदर्शन अपने जीवन व्यवहार में भी किए जाते पाए गए हैं अथवा यदि परिस्थितिवश यदि माता-पिता की कोई इच्छा अपूर्ण रह जाती है तो उनके बच्चों के जीवन व्यवहार में उक्त अतृप्त इच्छा की घुटन नजर आती है। उदाहरणार्थ जैसे एक एक व्यक्ति इन्जिनीयर बनना चाहता था किन्तु उसको जीवन में इन्जिनीयर बनने का कोई अवसर नहीं मिल सका और वह निरा अध्यापक ही बनकर जीवन-यापन करने के लिए मजबूर हुआ तो ऐसे व्यक्ति का बेटा आगे जाकर इन्जिनीयर बनने का आकांक्षी हो सकता है। इसी तरह बाप द्वारा दमित कामुक वृत्तियों का विस्फोट यदाकदा उसकी बेटी के चरित्र में देखा जा सकता है। व्यक्ति द्वारा दबाई जाने वाली अवचेतन स्तरीय वृत्तियों का अनेक प्रकार से उसके बच्चों में प्रादुर्भाव होना

कतिपय प्रसंगों में लक्षित किया गया है। अतः जिन तथ्यों से पिता अत्यन्त भयभीत रहता है अथवा जिन भाव के प्रति पिता की अत्यधिक अभिरुचि होती है, उनकी मौजूदगी उसके बच्चों के चरित्र में पाई जाती है।

टी. एस. इलीयट की पुस्तक (The family reunion) में अवचेतन स्तरीय प्रभावों की कारगुजारियों का बड़ा विशद वर्णन है। यह प्रभाव व्यक्तिगत अवचेतन का नहीं होकर प्रायः सामूहिक अवचेतन स्तर पर देखा जाता है जिसको 'भाग्य' (Fate) की संज्ञा दी जाती है। लार्ड मोन्चेन्सी (Lord Manchensy) अपनी पत्नी की हत्या करना चाहता था किन्तु अपनी अन्दरूनी कमजोरी के कारण वह अपनी पत्नी की हत्या नहीं कर सका किन्तु उसके बेटे हैरी (Harry) ने चलती ट्रेन में अपनी पत्नी को धक्का देकर उसकी हत्या कर दी। हैरी को जब तंग करते हुए इसके कारण को पूछा गया तो उसने स्वीकार किया कि उसका जीवन एक सपने की तरह रहा है, अतः उसने उसकी पत्नी की हत्या कर दी है, यद्यपि यह कृत्य उसके मन की नहीं होकर किसी अन्य के दिमाग की करतूत होना प्रतीत होता था।*

अतः यूंग की मान्यता है कि यदि माता-पिता (Parents) द्वारा सामान्य प्रकार से जीवन जीया जाता है तथा इसके दौरान जो कुछ घटित हो रहा है उसके प्रति उनके हृदय से स्वीकृति की भावना विद्यमान है तो ऐसे माता-पिता की सन्तान भी सन्तोषजनक रीति से जीवन-निर्वाह करते हुए अपना सहज विकास कर सकेगी। अतः इस तथ्य को सभी शिक्षकों एवं शिक्षा शास्त्रियों को सदैव स्मरण रखना चाहिए। जब बच्चे घर से स्कूल जाते हैं तब विद्यालय का शिक्षक बच्चों के माता-पिता का स्थान ग्रहण कर लेता है और बच्चे भी अपने शिक्षक वर्ग को अपने माता-पिता की बराबरी का दर्जा दे देते हैं। अतः जिस प्रकार माता-पिता के विचारों एवं आचरण का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है उसी तरह शिक्षकों की भावनाओं एवं जीवन-व्यवहार का भी असर छात्रों के जीवन-निर्माण पर पड़ता है। अतः शिक्षक तथा छात्रों के बीच परस्पर भावनाओं का असर किसी भी शिक्षण प्रणाली (Teaching Method) की अपेक्षा अधिक रहता है। इसलिए यदि शिक्षक वर्ग अपने छात्रों को सचमुच शिक्षित करना चाहता है तथा अपने छात्रों के जीवन का सम्यक् प्रकार से विकास करना चाहता है तो उस शिक्षक को स्वयं अपने विचारों एवं आचरण को पवित्र तथा सच्चाईयुक्त रखना चाहिए। शिक्षक द्वारा गोपनीयता

---

* "Perhaps my life has been a dream—it dreamt through me by the minds of other".

—As quoted by Frida Fordhem in her book entitled. 'An Introduction to the psychology of C.G. Jung', at page 110.

रखे जाने तथा बनावटीपन रखे जाने का कुप्रभाव छात्रों के जीवन पर निःसन्देह पड़ता है और केवल शाब्दिक उपदेश वाणी का कोई कल्याणकारी प्रभाव छात्रवर्ग पर नहीं पड़ सकता। शिक्षक के सच्चरित्र आचरण तथा निश्छल ईमानदारी जीवन व्यवहार का प्रभाव अति विकसित शिक्षा-सहायक तकनीक एवं शिक्षण यंत्र (Education aids) की अपेक्षा अत्यधिक प्रभावशाली रहता है, अतः शिक्षक वर्ग को अपनी स्वभावजन्य प्रवृत्तियों के अनुसार पूर्ण एवं समन्वित (Integrated Life) सच्चाई के साथ जीना चाहिए। ताकि उसके छात्र समुदाय पर उसके जीवन का तदनुकूल उत्तम प्रभाव पड़ सके। मनोग्रन्थी ग्रस्त शिक्षक का छात्रवर्ग पर निःसन्देह निम्न प्रभाव पड़ेगा और ऐसी स्थिति में न तो शिक्षक अपना सहज जीवन विकास कर सकेगा और उसके मनस्तापी बन जाने से उसका छात्रवर्ग के स्वतः जीवन विकास में भी बाधा पड़ने की आशंका बन जाएगी।

यदि माता-पिता अथवा शिक्षक के द्वारा किसी विशेष प्रवृत्ति के विकास अथवा अवरोध के लिए अत्यधिक आग्रह किया जाएगा तो उसकी प्रतिक्रिया का असर बालक या छात्र के जीवन पर पड़ेगा। जैसे यदि एक अविवाहित अध्यापिका अपनी छात्रा को संयम से रहने की शिक्षा पर अत्यधिक जोर देती है तो उसकी छात्रा के द्वारा संयम के मार्ग से डगमगा जाने की आशंका उपस्थित हो सकती है। बशर्ते कि उक्त छात्रा की माता का दाम्पत्य जीवन भी असन्तोषजनक हो। इसी तरह अत्यन्त कठोर अनुशासन पालन के लिए अत्यधिक जोर दिए जाने पर बालक छात्र में प्रतिरोध अथवा विद्रोह किए जाने की वृत्ति को निःसन्देह बढ़ावा मिलेगा। इसलिए माता पिता तथा शिक्षक वर्ग को अतिवाद के खतरे का सदैव बचने का ध्यान रखते हुए बालक एवं छात्र की त्रुटियों के प्रति उदारता, धैर्य एवं क्षमा का दृष्टिकोण रखना चाहिए तभी बालक छात्र अपनी भूलों एवं गलतियों का योग्य परिमार्जन करना सीख सकेगा और अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकेगा। माता पिता तथा शिक्षक वर्ग की तरह समाज में प्रतिष्ठित राजनैतिक नेताओं को भी अपने उच्च एवं रचनात्मक जीवन दृष्टिकोण के निर्वाह के प्रति सावचेत रहना चाहिए क्योंकि जनता के समक्ष यदि किसी नेता की कथनी तथा करनी का अन्तर प्रकट होगा तो निश्चयपूर्वक जनता में उसके प्रति घोर अश्रद्धा के भाव का उदय होगा और जनता द्वारा विद्रोहात्मक असहकार वृत्ति से जनसमाज का भी निर्धारित विकास मार्ग से पथभ्रष्ट होने का खतरा पैदा हो जाएगा। इसलिए यूंग की यह दृढ़ मान्यता है कि अपरिपक्व बच्चों, छात्रों तथा अनुगमन करने वाली जनता को उपदेश देने तथा उन पर जबरदस्ती अपने विचारों को थोपने के बजाए समाज के प्रबुद्ध वर्ग को अपने सद्आचरण एवं सद्व्यवहार से ही उन्हें प्रभावित करना चाहिए। यूंग ने बच्चों एवं छात्रों के शिक्षक के साथ ही साथ योग्य प्रौढ़ शिक्षण को भी महत्व दिया है।

यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि प्रायः हम जनता को केवल मात्र जीवन निर्वाह के लिए कमाने तथा विवाह करने की सलाह देकर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री समझ लेते हैं और हम व्यक्ति को उसके जीवनकाल में आने वाली परिस्थितियों का किस प्रकार सामना किया जाना चाहिए, इस बावत प्रायः मौन रहते हैं-तथा व्यक्ति को अपनी समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रायः अकेला ही छोड़ दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप कभी-कभी तो कोई व्यक्ति अपनी समस्या का अपनी आन्तरिक क्षमता से रास्ता निकाल लेता है। किन्तु अधिकांश व्यक्ति उन अनजान समस्याओं के योग्य हल निकालने में जब असफल हो जाते हैं तब उन्हें मनस्ताप का शिकार बनने के लिए मजबूर होना पड़ता है। असफल दाम्पत्य जीवन तथा असन्तोषजनक पारिवारिक जीवन यापन के अनेक उदाहरण हमें आम जनता के सामान्य जीवन में दिखाई पड़ते हैं। जो समाज में उपर्युक्त प्रौढ़ शिक्षण के अभाव के कारण यदाकदा जन साधारण के जीवन में अव्यवस्था, पिछड़ापन, असन्तोष एवं तनाव की पीड़ा का दिग्दर्शन होता है, अतः इनकी ओर समाज के बुजुर्गों, शिक्षाविदों, समाज सुधारकों तथा प्रतिष्ठित जन नेताओं को गहराई से ध्यान देना चाहिए।*

हमें यह भी ज्ञात है कि अन्तर्मुखी एवं वाह्यमुखी व्यक्तित्व के बीच प्रायः योग्य तालमेल नहीं बैठ पाता तथा वे प्रायः एक दूसरे को गलत समझ बैठते हैं क्योंकि उनके जीवन के प्रति दृष्टिकोणों में परस्पर विरोध पाया जाता है। अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तियों के परस्पर विरोधाभासी दृष्टिकोणों के बावजूद भी इन दोनों प्रकार के व्यक्तित्वों में मूलभूत जो समानता है, उसकी यदि हमें योग्य जानकारी होगी तो इन दोनों परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के व्यक्तियों में भी योग्य समायोजन या तालमेल बिठाया जाना कठिन नहीं होगा। जब एक अन्तर्मुखी व्यक्ति किसी बहिर्मुखी व्यक्ति के सामाजिक जीवन की प्रतिष्ठा पर विचार करने लगता है तब वह अपने स्वयं को सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से हीनभाव ग्रस्त पाएगा और वह अपने आपको समाज से कटा हुआ, एकाकी, दुःखी मान बैठेगा। इसलिए अन्तर्मुखी स्वभाव के व्यक्ति को ऐसा धन्धा सम्हालना चाहिए जिसको वह अकेला ही संभाल सके और जिसमें जनसम्पर्क की अधिक जरूरत ही नहीं पड़े। इसी तरह बहिर्मुखी स्वभाव के व्यक्ति को ऐसे किसी काम का चुनाव नहीं करना चाहिए जो केवल उसके ही द्वारा अकेलेपन में संपादित किया जा सके। काम अथवा धंधे के चुनाव के समय यदि व्यक्ति को अपने अन्तर्मुखी या बहिर्मुखी स्वभाव की जानकारी नहीं है तो उसके द्वारा चुना गया धंधा या काम प्रायः असफल रह जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति

---

* Contribution on Analytical Psychology at Page 321. Also Analytical Psychology and Education, Collected Works of C. G. Jung, Vol. 17.

को व्यक्तिगत अपने स्वभाव को पहिचान कर तदनुकूल ही धंधा या काम का चुनाव करना योग्य है। इसी तरह यदि पति एवं पत्नी के बीच स्वभावजन्य अभिवृत्तियों में अन्तर है तो योग्य दाम्पत्य जीवन निर्वाह के लिए उनको एक दूसरे के प्रति अधिक उदारतापूर्वक धैर्य रखा जाना जरूरी है ताकि उनकी भिन्न-भिन्न अभिवृत्तियों के फलस्वरूप आपसी तनाव एवं संघर्ष की कम से कम गुंजाइश रहे और वे परस्पर एक दूसरे के पूरक बनकर आपसी मतभेदों को कम महत्व देने की आदत डालना सीख सकें।

व्यक्ति (पुरुष अथवा महिला) द्वारा यौवनकाल के दौरान में अनीमा एवं एनीमुस के प्रभाव की भी योग्य जानकारी संपादित किया जाना योग्य व्यक्तिगत जीवन निर्वाह एवं जीवन विकास के लिए जरूरी है। जैसे एक पुरुष किसी महिला के बाबत कभी-कभी बड़ी विचित्र धारणा बना बैठता है क्योंकि उस पुरुष ने उस महिला पर अपने अवचेतन स्तरीय नारी मूर्ति का प्रक्षेपण (Projection) कर रखा है। पुरुष द्वारा इस प्रकार उक्त नारी के सम्बन्ध में बनाई गई धारणा का प्रायः समाज द्वारा समर्थन नहीं हो पाता तथा उस पुरुष का मित्र वर्ग प्रायः आश्चर्यचकित रह जाता है कि उक्त पुरुष ने उक्त महिला में 'ऐसी क्या विशेषता देख ली है।' एनीमा और एनीमुस के प्रक्षेपण के परिणामस्वरूप प्रायः दम्पत्तियों के बीच भी निरर्थक क्लेश, झगड़े फिसादों तथा गलत फहमियों का ढेर लग जाता है और इस कारण कभी-कभी पति-पत्नी के आपसी रिश्तों में निरन्तर तनाव बढ़ जाने से सम्बन्ध-विच्छेद की भी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं।

यदि कोई पुरुष अपने अवचेतन स्तरीय नारी मूर्ति से अपरिचित रहता है तो वह उसका प्रक्षेपण किसी भी सन्निकट आने वाली महिला पर कर बैठने की भूल कर बैठेगा और वह इस अनजानपने के परिणामस्वरूप उसके प्रति आकर्षित तो हो जाएगा किन्तु वह अधिक समय तक इस प्रकार आकर्षित महिला के साथ अपने आकर्षण का निर्वाह नहीं कर सकेगा और वह निश्चित रूप से इस प्रेम प्रसंग में असफल सिद्ध होगा—और ऐसी स्थिति में उक्त प्रेमी का जीवन चौपट हो जाएगा और वह मनस्तापग्रस्त रोगी हो जाएगा। अनेक चलचित्रों एवं उपन्यासों में इस प्रकार की घटनाओं का चित्रण पाया जाता है—जो प्रायः अस्वाभाविक एवं वास्तविकता से परे प्रतीत होता है। जब कभी कोई पुरुष के अपने अवचेतन स्तरीय नारी मूर्ति के प्रक्षेपण को पुनः वापस लौटा पाना प्रायः अत्यन्त कठिन हो जाता है और इस दौरान में उक्त प्रेमी पुरुष का जीवन अस्त व्यस्त अथवा चौपट हो जाता है। इसलिए किसी पुरुष द्वारा किसी महिला के प्रति आकर्षण अनुभव करने के दौरान में उक्त व्यक्ति को स्वयं की क्षमता एवं स्वयं के स्वभाव की जानकारी का मिलान उक्त आकर्षित महिला की योग्यता एवं जीवन व्यवहार से कर लेना जरूरी है, अन्यथा स्थिति, क्षमता एवं स्वभाव की भिन्नता अथवा विषमता के फलस्वरूप भविष्य में

परस्पर आकर्षित द्वय के बीच तोड़ एवं सम्बन्ध विच्छेद की सहज आशंका यथार्थ में होने की पर्याप्त मात्रा में गुंजाइश बनी रहेगी। इसलिए आकर्षित होने वाले प्रेमी को सर्वप्रथम यह जांच लेना चाहिए कि वह उक्त महिला के किस गुण पर रीझ रहा है तथा क्या वह अपनी उक्त प्रेमिका के उस पक्ष को आगे जाकर विकास करने का अवसर दे सकने की क्षमता रख सकेगा या नहीं। समय के साथ प्रत्येक व्यक्ति के गुण–दोषों का विकास एवं विस्तार स्वतः होता ही रहता है और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को इस अवधारणा के प्रकाश में तात्कालिक वास्तविकता को भविष्य के दर्पण में उसके विकास के साथ समझने की कोशिश करना चाहिए और इस कसौटी पर योग्य प्रकार से विचार करने के पश्चात् ही प्रथम आकर्षण पर बढ़ने अथवा पीछे हटने का कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिए ताकि परस्पर या तो भावों की गहराई के साथ वे आपस में योग्य प्रकार से समायोजित हो सकें अर्थात् अधिक प्रगाढ़ता के साथ जुड़ सकें, अथवा परस्पर भिन्नता या विषमता के ज्ञान से यह अपने सहज आकर्षण से उभर कर केवल मर्यादित सामाजिक कर्त्तव्यों का अनुपालन कर सकें तथा आपसी संघर्ष, तनाव तथा अन्त में सम्बन्ध विच्छेद की तोड़फोड़ की भयावह स्थितियों से बच सकें।

प्रायः पुरुषवर्ग नारी जन्य कमजोरियों को आसानी के साथ नजरअन्दाज नहीं कर पाता, अतः जब वह किसी नारी में अपनी अवचेतन स्तरीय नारी मूर्ति (एनीमा) से अन्तर देखता है तो वह उसके साथ अपने आकर्षण सम्बन्धों का निर्वाह नहीं कर पाता और ऐसी परिस्थितियों में वह उसके साथ स्थापित सम्बन्धों को प्रायः तोड़ बैठता है। इसके विपरीत महिलावर्ग अपने अवचेतन स्तरीय पुरुष मूरत के अनुरूप पुरुष को अत्यधिक महत्व दे बैठती है और अपनी नारी सुलभ वृत्ति के कारण उसकी आज्ञावर्ती, अनुचरी अथवा दासी तक बन जाती है किन्तु आकर्षित नारी में यदि उसका अवचेतन स्तरीय पुरुष तत्व (एनीमुस) का प्राबल्य हो जाता है तो अनुचरी, दासी, प्रेमिका भी यदाकदा अपने पूर्व प्रेमी के विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा कर देती है और प्रेम के नाम पर मर मिटने की इच्छुक भावना प्रधान नारी अपने प्रेम पात्र पुरुष के लिए रणचण्डी का रूप धारण कर बैठती है और इस प्रकार अपने प्रेमी का अकल्याण करने के लिए भी नहीं हिचकती। इसलिए प्रेम में पढ़ने वाले पुरुष तथा नारी दोनों के लिए पारस्परिक अवचेतन स्तरीय रुझानों की पहिले से ही योग्य जानकारी एवं नाप-तोल किया जाना बहुत जरूरी है।

अवचेतन स्तरीय नारी मूर्ति (एनीमस) तथा पुरुष मूरत (एनीमुस) का चेतन स्तरीय व्यक्तित्व के साथ एकीकरण (Integration) होना संभव है। यदि व्यक्ति के चेतन तथा अवचेतन स्तरीय प्ररूपों (आर्कीटाइप्स) का एकीकरण हो जाता है तो उस व्यक्ति का जीवन स्तर उल्लेखनीय प्रकार से उन्नत एवं कल्याणकारी बन जाएगा,

तथा उसके अवचेतन एवं चेतन के बीच परस्पर सहयोगी पूरक से उसकी प्रभावशाली उच्चतम भूमिका का निर्माण एवं निर्वाह हो सकेगा, और इस प्रकार अवचेतन तथा चेतन स्तरीय सामंजस्य से सम्पन्न व्यक्ति का किसी अन्य विरोधी लिंगी व्यक्ति के साथ का सम्बन्ध भी बड़ा स्थाई, उपयोगी एवं कल्याणकारी बन सकता है। और इस प्रकार सामंजस्यपूर्ण एवं उच्चस्तरीय उभय व्यक्ति एक दूसरे के अर्थपूर्ण साथी सहयोगी बन सकेंगे तथा एक दूसरे के दोषों की अवगणना करना सीख लेंगे तथा इनके बीच आपसी योग्य समझ चेतन स्तर पर गहरी एवं चिरस्थाई बन जाएगी। इस श्रेणी के दम्पति के बीच आपसी समझ की गहराई तथा विस्तार से दोनों व्यक्तियों का सम्बन्ध प्रगाढ़ स्थायी एवं उच्चस्तरीय दिव्य बन जाएगा और इनके बीच अवचेतन स्तरीय झंझावातों का सूक्ष्मतम असर पड़ेगा। इस आपसी गहरी समझ से दोनों के व्यक्तित्व में एक कल्याणमय निखार या चमक दिखाई देगी और इस प्रकार उच्चस्तरीय यह जोड़ा केवल शारीरिक यौन सम्बन्धों के अलावा मानसिक दृष्टि से भी परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए प्रतीत होंगे। जिनको आत्मा से जुड़े हुए 'एक दम्पति' की सही संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार उन्नत दम्पत्ति की सन्तान भी मेधावी एवं प्रतिभासम्पन्न होने की सहज संभावना की जा सकेगी। इस प्रकार के उच्चस्तरीय जोड़े न केवल घर की परिधि में ही सफल एवं यशस्वी जीवन यापन कर सकेंगे अपितु ये लोग घर की सीमा से परे भी मानव समाज एवं राष्ट्र में श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र बन जायेंगे। आज के समुन्नत सामाजिक जीवन में पुरुष घर के अन्दर अपनी पत्नी के महिला योग्य घरेलू कार्य में भी अपनी गहरी समझ से हाथ बंटाते हैं तथा समुन्नत एवं जागरूक महिला भी पुरुषोचित सामाजिक कार्यों में योग्यतापूर्वक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने लगी हैं। इसी प्रकार उन्नत मानव समाज में पुरुष महिला के यहच्छ (Arbitrary) कार्य विभाजन में यूंग की मांग के कारण निःसन्देह अन्तर पड़ा है तथा पुरुष और महिला दोनों के सामाजिक कार्यों में बराबरी का तथा परस्पर सहयोग का रास्ता निकालने की ओर प्रवृत्त दिखाई पड़ते हैं। आज के युग में महिलाएं भी कठोर सैनिक कार्यों में उत्साह के साथ भर्ती हो रही हैं और कतिपय पुरुष भी शिशुपालन, घरेलू कला कौशल आदि कोमल एवं नाजुक माने जाने वाले कार्यों में दक्षता प्राप्त करते देखे जाते हैं। इस प्रकार पुरुष एवं महिला के बीच कार्य विभाजन की दीवारें शनैः शनैः टूट रही हैं जिसको यदाकदा समाज के द्वारा प्रायः ठीक प्रकार से नहीं समझा गया है।

पुरुष एवं महिला के बीच स्वभाव-जन्य अन्तर के कारण परस्पर कार्य विभाजन किया जाना योग्य है अथवा नहीं ? इस प्रश्न का कोई निश्चित सर्वसम्मत हल दुर्भाग्यवश अब तक नहीं निकाला जा सका है। यह एक गहन मनोवैज्ञानिक प्रश्न है जिसका योग्य समाधान मनोविज्ञान सम्बन्धी कुछ पुस्तकों के अध्ययन से नहीं निकाला जा सकता। मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकीय ज्ञान से कभी-कभी इस प्रश्न

के हल की खोज में बाधाएं भी उपस्थित हो जाने की आशंकाएं नजर आती हैं। मनोविज्ञान सम्बन्धी अल्प ज्ञान व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से कभी-कभी खतरनाक भी बन जाता है, कुछ लोग अपनी वैयक्तिक असफलता के लिए अपने बचपन के जीवन को कोसने लगते हैं जबकि उनका शैशवकालीन जीवन वस्तुतः उनको वर्तमान कालीन असफलताओं का वस्तुतः कोई कारण नहीं बता पाता, फिर भी अकारण अपनी असफलता को अपने अभिभावकों पर थोपना तथा अपनी वैयक्तिक कमजोरियों पर गलत पर्दा डालने की कोशिशें करना निःसन्देह उसकी गलती अथवा मिथ्या आचरण है। इस प्रकार मनगढ़न्त बहाना बनाने वाले यदि सचमुच अपनी कमजोरियों को पहिचानने की कोशिश करें तो निःसन्देह उनके व्यक्तित्व के योग्य-विकास का रास्ता निकल सकता है किन्तु मनोविज्ञान सम्बन्धी अपने अधूरे एवं दोषपूर्ण ज्ञान के फलस्वरूप जब स्वयं की अयोग्यता को स्वीकार नहीं करते हुए अपनी असफलता को अपने अभिभावकों के माथे थोपने की कोशिश करने से न तो वह अपनी असफलताओं का सही कारण ढूंढ सकेगा और न अपने व्यक्तित्व का सहज प्रकार से विकास कर सकेगा। अतः केवल पुस्तकीय ज्ञान संपादन करने के बजाय प्रत्येक तथाकथित मनोविज्ञान वेत्ता को किसी निष्णात मनोवैज्ञानिक की मदद से सर्वप्रथम उसके स्वयं का विश्लेषण कराया जाना चाहिए ताकि वह सर्वप्रथम अपनी स्वयं की क्षमता का योग्य निर्धारण के आधार पर ही अपना तथा दूसरे व्यक्तियों का मनोविश्लेषण कार्य प्रारंभ कर सके। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं के द्वारा ही निकाला जाना यूंग का सिद्धान्त है। अनेक ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं जहाँ पर प्रसिद्धि प्राप्त पुरुषों एवं महिलाओं ने अपने शैशवकालीन विषम परिस्थितियों को भी स्वयं की सूझबूझ और परिश्रम से अपने अनुकूल बनाते हुए अपना उल्लेखनीय जीवन विकास किया है। व्यक्ति स्वयं अपनी इच्छा-शक्ति से अपने आपको महान् बना सकता है और इसलिए उसको अपनी विषम स्थितियों को दृढतापूर्वक सर्वप्रथम ठीक ढंग से समझने तथा तदनुसार अपने जीवन में उसकी कार्यान्विति किए जाने के लिए जूझने तथा अपनी कठिनाइयों पर सतत प्रयत्न के द्वारा विजय प्राप्त करने के लिए अपनी निजी गहरी सूझ-बूझ से रास्ता निकालने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

यूंग ने मनोविज्ञान सम्बन्धी केवल पुस्तकीय ज्ञान संपादन करने वाले एक मनस्तापी युवक का निम्नानुसार उदाहरण प्रस्तुत किया है। वह मनस्तापी युवक यूंग के पास चिकित्सा हेतु उपस्थित हुआ और वह आते ही 'यूंग से यह प्रश्न करता है कि यदि वह अपने को सही प्रकार से समझ ले तब क्या उसके रोग के लक्षण बने रहेंगे ? उसका यह प्रश्न था कि उसके द्वारा स्वयं को जान लिए जाने के बावजूद भी वह क्यों स्वस्थ नहीं है ?

यूंग ने इस रोगी का मनोविश्लेषण करने के दौरान में यह जानकारी प्राप्त

की कि यह रोगी अपनी आर्थिक स्थिति से अत्यन्त मामूली होने पर भी प्रतिवर्ष सुदूर पहाड़ों पर खर्चीला जीवन व्यतीत करने का आदी था। यूंग ने जब उससे पूछा कि उसकी मामूली आर्थिक स्थिति होने पर वह क्यों इस प्रकार का खर्चीला जीवन-यापन करता है तो उसने प्रकट किया कि उसका पहाड़ों पर रहने का खर्च उसकी एक महिला मित्र जो उसकी एक शिक्षक है, वह उठाती है। यद्यपि उसकी उस महिला मित्र की भी आर्थिक स्थिति उसकी तरह साधारण थी। यूंग ने जब उसको यह समझाया कि उसके द्वारा उसकी निर्धन महिला मित्र के द्वारा खर्चा कराया जाना योग्य नहीं है तथा इस प्रकार उसके महिला शिक्षक मित्र के पैसे पर उसका पर्वतीय खर्चीला जीवन व्यतीत करना उक्त महिला मित्र के प्रेम का शोषण है तो इस पर उस युवक का जवाब था कि उक्त महिला ने उसके साथ सभी स्थितियों पर आपसी विचार-विमर्श के पश्चात् ही उसका खर्चा उठाने का निर्णय किया है अतएव इसमें उसका क्या दोष है ? इस पर यूंग ने उसको पुनः समझाया कि इस प्रकार महिला मित्र के धन के उपयोग किए जाने से उसका अहम्भाव उसके इस बचकाने आपसी आकर्षणभाव से टकरा रहा है जिसके परिणामस्वरूप वह इस प्रकार मनस्तापी रोग से ग्रस्त है। कुछ लोग अपनी गलतियों को मंजूर तो कर लेते हैं किन्तु उनको कभी-कभी कोई अवास्तविक मनोवैज्ञानिक रंग दे बैठते हैं जिसके फलस्वरूप अपने द्वारा स्वीकृत गलतियों का हल निकालने में अक्सर असफल सिद्ध होते हैं। अतः रोगी को अपना दोष बगैर किसी बनावटी रंग के सर्वप्रथम स्वीकार करना चाहिए तभी वह अपने दोष का परिमार्जन करने के लिए सतत प्रयत्नशील रह सकेगा और अंत में जाकर वह अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं सतत प्रयत्न से अपने दोष एवं गलत उलझनों से छुटकारा पा सकेगा। यह कार्य किसी निष्णात मनोविज्ञानी की मदद से ही संपादित किया जाना योग्य है। निष्णात मनोविश्लेषण ही रोगी के व्यक्तित्व को यथावत् कायम रखते हुए भी उसके अन्य लोगों के सम्बन्धों में बनी भ्रान्त धारणाओं का सुधार कर सकता है और इस प्रकार उसके व्यक्तित्व को सहज प्रकार से विकसित किए जाने का रास्ता बतला सकता है। जिस पर चल कर अन्त में रोगी अपने रोग से मुक्त होकर अपने सहज सामाजिक जीवन का योग्य निर्वाह करने की क्षमता अर्जित कर सकता है।

सामान्य व्यक्तियों के लिए यूंगीय विश्लेपण (Analysis) का उपयोग शिक्षा की एक पद्धति की तरह किया जा सकता है। ताकि इसका व्यक्ति के जीवन में होने वाला प्रभाव परिलक्षित किया जा सके। चिकित्सक की तरह यूंग ने अनेक व्यक्तियों के जीवन विश्लेपण के माध्यम से होने वाले प्रभावों एवं परिवर्तनों का पता लगाया है।

निःसन्देह प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना एवं परिवर्तन का प्रारंभ नगण्य समझी जाने वाली छोटी घटना से होता है इसलिए प्रत्येक घटना एवं क्रिया परसयास

विवेकपूर्ण ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। छोटी एवं नगण्य सी घटनाओं एवं क्रियाओं के द्वारा व्यक्ति अपने अदृश्य लक्ष्य की ओर अनजाने में ही स्वतः अग्रसर होता है। यद्यपि प्रारंभिक कार्य के दौरान में उसे किसी निर्धारित लक्ष्य की प्रायः कोई पूर्व जानकारी नहीं रहती, किन्तु जब कार्य विकास के द्वारा उसको किसी लक्ष्य का भान होने लगता है तब वह उस लक्ष्य प्राप्ति को अपने व्यक्तित्व का एक अंश इस ओर लगा देता है और इस प्रकार वह उस लक्ष्य की ओर स्वतः अग्रसर होने की चेष्टा करते हुए अपने व्यक्तित्व को पूर्ण एवं परिपक्व (Matured) प्रकार से विकसित कर लेता है।*

मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकीय एवं बौद्धिक ज्ञान को निरर्थक समझ कर उसकी उपेक्षा किया जाना भी उचित नहीं है, क्योंकि इस बौद्धिक अध्ययन से स्वयं एवं अन्य व्यक्तियों के मानसिक उत्थान-पतन की क्रियाओं की योग्य जानकारी में रुचि बढ़ती है तथा इस प्रकार के सतत अध्ययन से व्यक्ति की अपनी चेतन एवं अवचेतन स्तरीय परिस्थितियों का कुछ-कुछ पता लगता है जिनकी सम्यक् समझ से ही व्यक्ति द्वारा अनुभव किए जाने वाले कष्टों एवं तनावों में कमी की जा सकती है। बौद्धिक ज्ञान के प्रकाश में बगैर परीक्षण की गई मान्य धारणाओं में भी अपेक्षित सुधार किया जा सकता है तथा चित्त स्तरीय होने वाले सभी अनुभवों का योग्य मूल्यांकन भी किया जा सकता है। मनोविज्ञान सम्बन्धी बौद्धिक अध्ययन से यह जानकारी मिलती है कि कल्पनात्मक सृजन शक्ति केवल कलाकारों, कवियों एवं लेखकों तक ही सीमित नहीं है, अपितु प्रत्येक व्यक्ति की क्रियाशील शक्ति (Libido) का प्रकटीकरण सृजनात्मक रचना के रूप में होना संभावित है तथा प्रत्येक धार्मिक प्रवृत्ति के मूल में उक्त शक्ति (Libido) की मौजूदगी ढूंढी जा सकती है।

हमारे आज के युग में होने वाले उल्लेखनीय परिवर्तनों की सम्यक् समझ के लिए हमारे सामूहिक अवचेतन (Collective Unconscious) स्तरीय अन्तर्वस्तुओं का ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त किया जाना बहुत जरूरी है। सामूहिक अवचेतन स्तरीय परिस्थितियों की हलचलों से ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय युग परिवर्तनकारी घटनाओं को योग्य प्रकार से समझा जा सकता है तथा इसमें स्वयं के योगदान का निर्णय किया जा सकता है। सामूहिक अवचेतन स्तरीय हलचलों एवं परिवर्तनों के फलस्वरूप समूचा राष्ट्र या विश्व बनता अथवा बिगड़ता है, सामूहिक अवचेतन का प्रभाव राष्ट्र के समूचे मानव-समाज पर पड़ता है तथा इसके परिणामस्वरूप हजारों एवं लाखों व्यक्ति पूर्वस्थापित परम्पराओं से हट कर यदाकदा बड़े पैमाने पर

---

* Essays on Contemporary events at page 3. Collected Works of C. G. Jung, Vol 10.

विध्वंसकारी रद्दोबदलियाँ भी कर बैठते हैं तथा समूचे राष्ट्र में हिंसक मारकाट तथा आमूलचूल परिवर्तन का भयावह दौर चल निकलता है जो किसी एक व्यक्ति के द्वारा नियंत्रित किया जाना असंभव हो जाता है। राष्ट्र का निर्माण अलग-अलग व्यक्तियों की क्रियाओं एवं उनके विचारों के कारण होता है, राष्ट्र की शक्ति एवं क्रिया का आधार महत्वपूर्ण व्यक्तियों का जीवन आचरण एवं उनकी वैचारिक क्षमता है। अतः राष्ट्रीय विकास एवं ह्रास की जानकारी के लिए राष्ट्र का संचालन करने वाले व्यक्तियों की सम्यक् जांच किया जाना भी जरूरी है। जिस प्रकार किसी द्रव्य का परीक्षण करने के लिए उस द्रव्य को एक टेस्टट्यूब में लेकर उसकी जांच किया जाना जरूरी है उसी प्रकार समूचे राष्ट्र के गुण-दोषों का पता लगाने के लिए उक्त राष्ट्र के नायकों के जीवन-व्यवहार का परीक्षण किया जाना उपयोगी सिद्ध हो सकता है।* द्वितीय महायुद्धकालीन जर्मनी एवं भारत की स्थितियों की योग्य समझ के लिए हिटलर तथा महात्मा गांधी के क्रियाकलापों एवं विचारों की जानकारियों से निःसन्देह मदद मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति तात्कालिक मानव-समाज की एक इकाई मात्र है। अतः उस पर तत्कालीन समाज का गहरा असर पाया जाना युक्तिसंगत है। यदि कोई चिकित्सक उसके पास आने वाले रोगी के विश्लेषण के दौरान में उस पर होने वाले सामाजिक एवं राजनैतिक प्रभावों से आंख मूंद लेगा, तो वह अपने निदान तथा उपचार में सफल नहीं हो सकेगा, अतः एक जागरूक मनोवैज्ञानिक चिकित्सक को चिकित्सा के लिए विचाराधीन व्यक्ति के इर्द-गिर्द रहने वाले मानव-समाज के परिप्रेक्ष्य में ही रोगी के व्यक्तित्व की जांच किया जाना जरूरी है। तभी वह रोगी के कारणों का सही प्रकार से पता लगा सकेगा, तथा तदनुरूप ही वह उपचार के द्वारा उसके मानसिक द्वन्द्वों एवं तनावों में सामंजस्यपूर्ण समझ एवं तालमेल स्थापित करने में सफल हो सकेगा वरना व्यक्ति के सामाजिक पृष्ठभूमि के अध्ययन में विचाराधीन रोगी के सही कारणों का न तो कोई अर्थपूर्ण पता लगा सकेगा और न कोई उसका योग्य निदान अथवा उपचार ही प्रस्तुत कर सकेगा और इस प्रकार वह मनोचिकित्सक अपने दायित्वों का योग्य निर्वाह करने में असफल सिद्ध होगा।

राष्ट्रस्तरीय अथवा विश्वस्तरीय क्रान्तिकारी परिवर्तन में किसी उल्लेखनीय नेता की भूमिका का केवल मात्र आंशिक महत्व रहता है किन्तु सामूहिक आमूलचूल परिवर्तन का कारण सामूहिक अवचेतन (Collected Unconscious) में खोजा जाना योग्य है। सामूहिक अवचेतन के अन्तर्गत पाए जाने वाले प्ररूपों (आर्कीटाइप) के प्रभाव से विशाल मानव-समाज में एक समानधर्मी प्रवृत्ति की लहर सी सर्वत्र

---

* Essays on Contemporary events (Introdiation at page 9) Collected Works, Vol 10.

व्याप्त हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप सभी व्यक्ति सामूहिक रूप से एक जुट हो जाते हैं तथा एकसा वर्तन, व्यवहार में सहज प्रकार से प्रवृत्त हो जाते हैं और समूचे पूर्व व्यवस्थित ढांचे में आमूल-चूल परिवर्तन किए जाने के लिए बेचैन हो जाते हैं। इस प्रकार सामूहिक परिवर्तन की यह सामूहिक इच्छा यदाकदा असंगत व्यवहार में भी अभिव्यक्त हो उठती है जिसका नतीजा कभी-कभी हिंसा, मारकाट तथा विध्वंसकारी प्रवृत्तियों में भी परिलक्षित किया जा सकता है। सामूहिक अवचेतन के प्रभाव से समूचा मानव-समाज आपस में चुम्बकीय प्रभाव से एक जुट हो जाता है तथा संपूर्ण समाज समानधर्मी क्रियाओं में सहज प्रकार से अपनी अवचेतन स्तरीय भूमिकाओं का निर्वाह करने में प्रवृत्त हो जाता है जो भविष्य की दृष्टि से उक्त मानव-समाज के लिए कल्याणकारी अथवा अकल्याणकारी सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार की सामूहिक प्रवृत्ति में जितना विराट् मानव-समूह भाग लेता है वह उसी मात्रा में सहजता की दृष्टि से अधिक तर्कविहीन होगा, क्योंकि मूर्खों के समूह में एकाध बुद्धिशाली व्यक्तित्व का कोई खास प्रभावकारी असर नहीं हो पाता। इसलिए यूंग ने एक बार गहरे दुःख के साथ घोषित किया था कि सामूहिक भीड़ मनोविज्ञान (Mob-Psychology) के अन्तर्गत एक बुद्धिजीवी भी एक भावुक लहर में अर्थात् एक उन्मादग्रस्त कल्पना (Hydro cephalus) में डूब जाता है।

यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि चेतन स्तरीय जमा हुई दीर्घकालीन सामाजिक परम्पराएं भी कभी-कभी अवचेतन स्तरीय-हलचलों से पूर्णत: छिन्न-भिन्न हो जाती हैं तथा समाज में अब तक जिनको श्लाघ्य एवं उपयोगी माना जाता रहा है, उसको भी अवचेतन की प्रलयंकारी आंधी से निरर्थक, अनुपयोगी एवं त्याज्य करार दिया जा सकता है।*

पिछले 100 वर्षों में दुनिया में विज्ञान एवं विज्ञान संगत टेकनोलोजी का व्यवहार क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ है। फलत: मानव-समाज की सुख-समृद्धि में आश्चर्यजनक सुधार हो गया है, किन्तु इस भौतिक सुख-समृद्धि के विकास एवं विस्तार के साथ मानव प्रकृति की नींव भी यदाकदा कहीं-कहीं पर डगमगाती नजर आती है। जो दरखत जितना ही ऊंचा जाता है वह तभी खड़ा रह सकता है जबकि उसकी जड़ें उतनी ही गहराई में जा सकें। निःसन्देह भौतिक सुख-समृद्धि की दृष्टि से आज का मानव-समाज काफी ऊंचाई पर पहुंच गया है किन्तु उसके मुकाबले उसकी जड़ें मानवीय स्वभाव के विकास की दृष्टि से उपयुक्त गहराई तक नहीं पहुंच सकी हैं अतः हमारे सामाजिक जीवन का यह भव्य मन्दिर अपेक्षित कम गहरी नींव पर खड़े रहने के कारण कभी-कभी लड़खड़ाता हुआ प्रतीत होता है और पता नहीं कब समय

---

* Two essays on Analytical Psychology, page 159 also Collected Works, Vol. 7 para 240.

का एक झटका इस भव्य मानवीय सफलता के मन्दिर को विध्वस्त कर दे क्योंकि भौतिक समृद्धि के साथ प्रकृतः नैतिक संस्कृति की जड़ें वांछनीय एवं आवश्यक गहराई तक नहीं पहुंच पाई हैं। अतः अनेक बुद्धिजीवी भविष्य चिन्तकों के चित्त में समूची मानवता के भविष्य के बाबत की दुःखदायी आशंकाएं घर कर गई हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है।

इसके अलावा हमारी सामाजिक व्यवस्था का गठन प्रायः विधिसंगत लिखित अथवा अलिखित नियमों के अनुसार होता है। आजकल हमारी शैक्षणिक पद्धतियों की स्थापना हमारी ही अवचेतन स्तरीय सहज वृत्तियों (Unconscious instincts) के दमन (Repression) पर आधारित हैं। अतः हमें अपनी आन्तरिक सहज वृत्तियों की योग्य समझ के अनुरूप इनमें योग्य परिष्कार किए जाने की जरूरत है क्योंकि हमने केवल ऊपरी स्तर पर ही उनके सभ्यताजन्य बाहरी रूप का तो शृंगार कर लिया है लेकिन आन्तरिक उद्दाम-वृत्तियों को अनसमझे ही अब तक खुला छोड़ दिया है अथवा इनको बाह्य संस्कारों से दबा रखा है, अतः हमें यह जानकारी ही नहीं है कि इस दमित वृत्तियों का विस्फोट किस प्रकार भयावह हो सकता है ? यदि कहीं भी दमन का दबाव ढीला होगा तो निःसन्देह विस्फोट की घटना कभी भी भयावह सिद्ध हो सकती है—जिसको नियंत्रित किए जाने की कोई चेतन स्तरीय व्यवस्था अब तक हमारे द्वारा नहीं जुटाई जा सकेगी। अतः हमारी स्थापित सामाजिक व्यवस्था की यथावत् सुरक्षा के लिए हमें सावधान रहना चाहिए।

जब चेतन स्तरीय मानवीय जीवन व्यवस्थित एवं नियंत्रित (Orderly and disciplined) रहता है तब निश्चय ही उसके प्रतिपूरक दृष्टि से अवचेतन अनियंत्रित एवं बिखर सा जाता है, किन्तु इसके विपरीत जब युद्धकालीन परिस्थितियों में चेतन-स्तर पर अव्यवस्था एवं गड़बड़ी का वातावरण बन जाता है उस समय अवचेतन स्तर से प्रतिपूरक की हैसियत से व्यवस्था एवं सामंजस्य स्थापन की एक सहज वातावरण की स्थिति भी बन जाती है और इस आन्तरिक मांग की पूर्ति के लिए मानवीय समाज सक्रिय एवं सचेष्ट हो उठता है जिसकी अभिव्यक्ति नए शासन की व्यवस्था स्थापना में परिलक्षित की जा सकती है। आमूल चूल परिवर्तन के इस दौर में सामूहिक अवचेतन के प्ररूपों (आर्कीटाइप्स) के प्रभाव से मानव-समूह एक छोर से दूसरे छोर के बीच झूलता (Swing), बदलता सा नजर आता है। जिसका राजनैतिक शब्दावली में क्रान्ति एवं प्रतिक्रान्ति की संज्ञा से पहिचाने जाने का प्रयत्न किया गया है।

जब कभी किसी व्यक्ति के जीवन के दौरान में उसका अवचेतन उसके चेतन-स्तरीय जीवन से एकीकृत (Integrate) नहीं हो पाता तो वह व्यक्ति मनस्तापी (Neurotic) रोगी बन जाता है, जो आगे जाकर उसको पागल भी बना सकता है। व्यक्ति की तरह यह नियम मानवीय समाज-समूह पर भी लागू किया जा सकता

है। अवचेतन तथा चेतन चित्त के परस्पर विरोधी पूरक संभाग हैं जिनके बीच समुचित तालमेल एवं संयोग से ही चित्त की इकाई बनी रहती है। अत: सामान्यत: अवचेतन का चेतन के साथ एकाकार हो जाना सहजतापूर्ण स्वाभाविकता ही है किन्तु यदि अवचेतन का व्यक्ति के चेतन के साथ योग्य तालमेल या सामंजस्य नहीं होना पाया जाएगा तो इसका अर्थ यही निकाला जाना योग्य है कि उस व्यक्ति के चेतन में कहीं कुछ दोष या त्रुटि है। इस दृष्टि से यूंगीय विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सर्वप्रथम व्यक्ति की चेतन स्तरीय उस त्रुटि या दोष की खोज की जाती है जिसके परिणामस्वरूप उसका अवचेतन उसके चेतन के साथ मेल नहीं कर पाया था। संतुलित मानव-जीवन के निर्वाह के लिए चेतन तथा अवचेतन दोनों स्तरों को समान महत्व दिया जाना जरूरी है किन्तु प्राय: गहरी समझ के अभाव के कारण व्यक्ति कभी तो चेतन को तथा कभी अपने अवचेतन को आवश्यकता से अधिक महत्व दे बैठता है जिसके परिणामस्वरूप एक पक्ष तो उपेक्षित रह जाता है तथा दूसरा स्तर प्राय: विस्फरित (फूल सा) हो जाता है तथा इस कारण वह मनस्तापी रोगी बन जाता है। इसलिए चेतन एवं अवचेतन इन दोनों के मूल्यांकन में सावधानी रखे जाने की बड़ी जरूरत है तभी मानव मनस्ताप के खतरे से बचा रह सकेगा। चेतन स्तरीय चित्त मान्यताओं, विचारों एवं धारणाओं का भंडार है और उक्त मान्यताएं, धारणाएं एवं विचार अच्छे एवं उपयोगी भी हो सकते हैं, तथा बुरे एवं अकल्याणकारी भी हो सकते हैं। अत: कौन विचार उत्तम एवं उपयोगी है तथा कौनसी धारणा गलत एवं दु:खदायी है, उसका निर्वाचन किया जाना हमारे लिए कठिन हो जाता है। इसलिए हमें तटस्थ भाव से सभी विचारों एवं धारणाओं की कार्यान्विति को देखते रहना चाहिए तथा विचारों एवं धारणाओं से घटित परिणाम का योग्य मूल्यांकन से ही किसी विचार या धारणा को उत्तम अथवा अधम घोषित करने की धैयपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि किसी विचार की कार्यान्विति का नतीजा उत्तम एवं हमारे जीवन के लिए उपयोगी निकलता है तभी हमें उसको उत्तम विचार मान कर उसको स्वीकार करना चाहिए तथा इसके विपरीत त्रासदायी, अकल्याणकारी विचार यदि इसका नतीजा हमारे व्यक्तित्व के विकास के खिलाफ नजर आता है तो हमें उस विचार, धारणा से अलग या तटस्थ हो जाना चाहिए।*

इस बीसवीं शताब्दी में विश्व को दो महायुद्धों में जूझना पड़ता है, अत: चेतन स्तर पर विश्व में व्यवस्था स्थापित करने के लिए अनेक राष्ट्रों को भीषण तनावों के बीच गुजरना पड़ा है तथा अनेक राष्ट्रों को अधिनायक तत्वों (Totalitarianism) की शरण लेने के लिए बाध्य होना पड़ा है जिसके कारण व्यक्ति का

* Essays on Contemporary Events Introduction p. 10, Collected Works of C. G. Jung, Vol 10.

स्वतंत्र चिन्तन आज खतरे में पड़ गया नजर आता है और आदमी एक मशीन का पुर्जा सा बन गया है। और इस प्रकार लोकतांत्रिक शक्तियां कमजोर पड़ गई प्रतीत होती हैं। यूंग की मान्यतानुसार लोकतंत्र की सही अर्थों में स्थापना मानवीय स्वभाव की पूर्ण एवं समग्र जानकारी के बाद ही संभव है किन्तु आज की स्थिति में व्यक्तियों तथा राष्ट्रों की शासन-व्यवस्था के बीच भी यदाकदा संघर्ष का वातावरण दिखाई पड़ता है, अतः आज-कल राष्ट्र के अस्तित्व की रक्षा के लिए व्यक्ति के स्वातंत्र्य का महत्व गौण माना जा रहा है।

आजकल विश्व-स्तर पर न तो पूर्ण अव्यवस्था (Anarchy) है और न पूर्ण व्यवस्था का वातावरण है और मानवीय स्वभाव प्रायः ठीक से यथावत् जैसा ही है। केवल इतना ही लाभ हुआ है कि राष्ट्रों के बीच व्यवस्था सम्बन्धी मतभेदों के बावजूद सभी राष्ट्र उनके स्वतंत्र अस्तित्व के रक्षण के लिए सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का आदर करना तथा इसकी पालना करने बाबत सीख रहे हैं। इस प्रकार राष्ट्रों के समूहों के बीच तनावों के बावजूद भी विस्फोट की आशंका को काफी अंशों में नियंत्रण में रखे जाने का विश्वस्तरीय प्रयत्न भी किया जा रहा है।

व्यक्ति के चेतन स्तरीय संभाग के विकास के साथ ही साथ उसके अवचेतन के साथ एकीकरण (Integration) किए जाने पर ही प्ररूपों (आर्कीटाइप्स) के अनियंत्रित झंझावात से मानवता को बचाया जा सकता है। प्ररूपों (आर्कीटाइपल) की आंधी से चेतन-स्तरीय सभी व्यवस्थाओं के छिन्न-भिन्न हो जाने का बराबर खतरा बना रहता है, इसलिए सामूहिक अवचेतन को यथाविधि समझते हुए उसके प्रलयंकारी नतीजों से बचने के लिए मानवीय समझ को अधिक गहराई एवं अधिक विस्तार से विकसित किया जाना आज के जमाने की सर्वोपरि मांग है। अवचेतन-स्तरीय प्ररूपों (आर्कीटाइप्स) के इस द्वयमुखी (Two faced) प्रभाव के फलस्वरूप किसको अच्छा या बुरा अथवा निर्माणकारी या विध्वंसकारी कहा जाय—यह निःसन्देह कठिन है। अवचेतन स्तरीय प्ररूपों (आर्कीटाइप) का प्रभाव निःसन्देह चेतन-स्तरीय सूझबूझ पर निर्भर है अतएव विश्व-स्तर पर हमें व्यक्ति की गहरी समझ की प्रतिभा का विकास करने का मौका देना चाहिए और मानवीय सहज वृत्तियों को दमन करने के बजाय इनका नैतिकतापूर्ण मूल्यांकन (Moral Evaluation) के आधार पर सामंजस्य करते हुए इनको नियंत्रित किया जाना योग्य है।

इसलिए अब व्यक्ति की चेतन-स्तरीय अन्तर्वस्तु (Contents) को अवचेतन की अन्तर्वस्तु के साथ एकीकृत करते हुए चेतन एवं अवचेतन इन दोनों संभागों के बीच गहरी समझ-बूझ के साथ इनके बीच परस्पर एक दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करने की ओर ध्यान दिया जाना जरूरी है। यह कार्य यद्यपि बड़ा कठिन है फिर भी नैतिकता की दृष्टि से चेतन एवं अवचेतन-स्तरीय अन्तर्वस्तुओं के बीच सामंजस्य स्थापित किया जाना समग्र मानवता के विकास के

लिए बहुत जरूरी है। अतः हमें राजनीति की अपेक्षा नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व देना चाहिए ताकि समग्र मानवता की सुरक्षा संकीर्ण राजनैतिक स्वार्थों के बजाय विस्तृत सर्वजातीय नैतिक कल्याण भावना पर निर्भर रह सके। इस दृष्टि से मानवता के विकास के लिए राजनैतिक नेताओं के थोथे नारों के बजाय हमें इनके योग्य-चरित्र की जरूरत है।* जिनकी कार्यान्विति को निःसन्देह अधिक महत्व देना चाहिए ताकि इनके माध्यम से सभ्यता का विकास एवं समूचे मानव-समाज का योग्य प्रकार से अभ्युदय एवं कल्याण संभव हो सके।

किन्तु इस उच्चतम लक्ष्य प्राप्ति हेतु बहुत कम व्यक्ति ही समर्थ हो सकते हैं जिनका सामान्यतः वृहद् मानव-समाज द्वारा योग्य अनुसरण करने का प्रयत्न किया जा सके। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए अपने चेतन के साथ ही साथ अपने अवचेतन को भी समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

---

* Essays on Contemporary Events (Introduction) at page 12. Collected Works of C.G. Jung, Vol. 10.

अध्याय 23

मनोविज्ञान एवं धर्म

(Psychology and Religion)

धर्म एवं मनोविज्ञान के बीच सन्निकटता स्थापित करने के प्रश्न पर धर्म एवं मनोविज्ञान दोनों के ही क्षेत्रों से गंभीर संशय एवं गलतफहमियों का प्रादुर्भाव होता देखा गया है। धार्मिक चिन्तक और मनोविज्ञान वेत्ता दोनों धर्म और मनोविज्ञान को सर्वथा विरोधी तथा इनको एकदम बेमेल (Incompatible) मानते हैं और इसके लिए सर्वथा परस्पर विरोधी तर्क प्रस्तुत करते हैं। एक धार्मिक चिन्तक की दृष्टि में 'ईश्वर' धर्म का केन्द्रीय विषय है, जिसका मनोविज्ञान द्वारा विश्लेषण किया जाना उसकी चीरा-फाड़ी के सदृश्य एक निंदनीय प्रयास है, अतः उसकी नजर में 'ईश्वर' का मनोविज्ञान के अन्तर्गत विचार किया जाना मर्यादा भंग, पापाचार अथवा कुफ्र (Sacriledge) माना जाना योग्य है। इस प्रकार का नजरीया रखने वालों को यूंग ने यह स्मरण दिलाने का प्रयत्न किया है कि धर्म भी निःसन्देह एक मानवीय चित्त की घटनामात्र (A phenomena of human Psyche) है, इसके लिए धर्म का क्षेत्र भी मनोवैज्ञानिक खोज (Psychological Enquiry) के अन्तर्गत चिन्तन योग्य समझा जाना चाहिए। किन्तु इस मनोवैज्ञानिक खोज के अन्तर्गत ईश्वर के अस्तित्व की स्वीकृति अथवा अस्वीकृत सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक द्वारा किसी भी प्रकार की घोषणा किया जाना निःसन्देह असंगत एवं मर्यादा विरुद्ध कार्य माना जाना चाहिए क्योंकि मनोविज्ञान प्रेक्षण (Observation) विज्ञान संगत तर्क पर आधारित है तथा धर्म का आधार केवल आस्था (Faith) है। अतः मनोविज्ञान द्वारा धर्म बावत किसी भी निष्कर्ष या निर्णय का प्रकाशन किया जाना निःसन्देह अमर्यादित एवं क्षेत्राधिकार से परे कार्य है, ईश्वर है या नहीं, ईश्वर एक है या अनेक इत्यादि आस्था मूलक इन प्रश्नों का कोई जवाब यदि किसी मनोविज्ञान वेत्ता द्वारा दिए जाने की कोशिश की जाती है तो निःसन्देह उसका यह कार्य मनोविज्ञान के मर्यादित क्षेत्र का अतिक्रमण किया माना जाना चाहिए और इसलिए इस प्रवृत्ति का दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध किया जाना सर्वथा उपयुक्त है। निःसन्देह धर्म का विषय मनोविज्ञान से सर्वथा पृथक् है और आस्था आश्रित धर्म तथा धार्मिक प्रश्नों का प्रत्युत्तर मनोविज्ञान के द्वारा प्रस्तुत किया जाना असंगत, गलत एवं अनुपयुक्त प्रयास है, फिर भी

धार्मिक अनुभूति अन्ततोगत्वा मानवीय चित्त की घटना ही तो है, अतः इस दृष्टि से धार्मिक अनुभवों की विवेचना प्रस्तुत किया जाना मनोविज्ञान के अन्तर्गत योग्य माना जाना चाहिए। क्योंकि धार्मिक अनुभव भी तो मानवीय चित्त की अभिव्यक्ति मात्र है। धार्मिक अनुभवों से मानवीय चित्त की आन्तरिक प्रक्रमों (Inner process) की अभिव्यक्ति होना पाया जाता है और इस दृष्टि से इन आन्तरिक अनुभवों की व्याख्या मनोविज्ञान के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जाना तो योग्य है किन्तु धर्म के केन्द्रीय विषयवस्तु ईश्वर के स्वरूप का कोई विवेचन मनोविज्ञान के वजाए धर्म द्वारा ही किया जाना अधिक उपयुक्त है। निःसन्देह धर्म एवं मनोविज्ञान के बीच सन्निकटता की स्थापना किया जाना एक अर्थपूर्ण प्रयास है किन्तु धर्म और मनोविज्ञान के जुदा-जुदा क्षेत्र हैं, इस तथ्य को निरन्तर प्रत्येक धार्मिक चिन्तन एवं मनोविज्ञान वेत्ता को याद रखा जाना भी जरूरी है तथा इसके साथ ही साथ प्रत्येक क्षेत्रीय विचारक एवं अनुसंधानकर्त्ता को यह भी याद रखना चाहिए कि धर्म का मूलाधार आस्था (Faith) है तथा मनोविज्ञान विशुद्ध वैज्ञानिक तर्कों (Scientific reasons) एवं प्रेक्षणों (Observations) पर आश्रित है। जबकि ईश्वर तत्व का विचार व्यक्ति की आन्तरिक आस्था (Faith) पर आधारित है। अतः इस तत्व का विवेचन मनोविज्ञान की भूमिका पर किया जाना निःसन्देह अमर्यादित क्षेत्राधिकार परे प्रयास घोषित किया जाना चाहिए। निःसन्देह धार्मिक सत्य (Religious Reality) की अनुभूति मानवीय मन (Human mind या चित्त के द्वारा अभिव्यक्त होती है, अतः धार्मिक अनुभव और विचार को मानव चित्त (Human Psyche) की अभिव्यक्ति (Manifestation) कहा जा सकता है। किन्तु इस अनुभव को धर्म के वजाए मनोविज्ञान कहा जाना भी एक गलतफहमी (Mis-understanding) ही माना जाना चाहिए क्योंकि ईश्वर सम्बन्धी विवेचन को मनोविज्ञान के मर्यादित क्षेत्र से परे माना गया है। अतः मनोविज्ञान के क्षेत्र में ईश्वर के वजाय ईश्वर सम्बन्धी विचार (Ideas about God) तक का तो विवेचन किया जा सकता है, किन्तु इसके परे इस सम्बन्धी किसी निष्कर्ष या निर्णय का प्रकाशन किया जाना मनोविज्ञान के निर्धारित मर्यादा एवं क्षेत्र का अतिक्रमण ही समझा जायगा। अतः यूंग ने बार-बार प्रत्येक मनोविज्ञान-वेत्ता को उसके लिए निर्धारित मर्यादा क्षेत्र को ही ध्यान में रखने का आग्रह किया है। एक सामान्य मानव के मन या चित्त में विचारों का उद्भव, स्थिति और विलय होते रहना एक सहज मानसिक घटनाक्रम है, अतः मानव मन में ईश्वर सम्बन्धी विचारों का होना अथवा इनका मिट जाने का सहज प्रक्रम विचारणीय है किन्तु सहज प्रक्रम के अन्तर्गत विचाराधीन किसी विचार का निष्कर्ष या अंतिम निर्णय की घोषणा किया जाना निःसन्देह उसकी ज्यादती है तथा इसे उसके क्षमता से परे का कार्य ही माना जाना योग्य है। इसलिए एक मनोविज्ञान वेत्ता के लिए ईश्वर सम्बन्धी अथवा आन्तरिक धर्म सम्बन्धी निरपेक्ष एवं विशुद्ध तटस्थता के दृष्टिकोण का निर्वाह किया जाना चाहिए तथा इस बावत किसी भी

निष्कर्ष की घोषणा किये जाने का कोई प्रयत्न नहीं किया जाना चाहिए। मनोविज्ञान के अंतर्गत मन की स्थिति का प्रकाशन करने की तो सक्षमता है किन्तु उसके निरपेक्ष दृष्टिकोण के अन्तर्गत ईश्वर सम्बन्धी किसी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति बावत कोई नतीजा निकाला जाना योग्य नहीं है। अतः ईश्वर है अथवा नहीं है, एक है अथवा अनेक है, आदि इन सभी निर्णायक प्रश्नों का समाधान किया जाना मनोविज्ञान के मर्यादित क्षेत्र से परे है क्योंकि इनका प्रत्युत्तर निःसन्देह केवल मात्र धर्म वेत्ता द्वारा ही प्रस्तुत किया जाना योग्य है।

जिस प्रकार एक फिल्म कैमरे द्वारा क्षण प्रतिक्षण के बनने बिगड़ने वाले चित्रों के क्रमबद्ध एकीकरण को चित्र के एक दृश्य का सार्थक अर्थ अभिव्यक्त किया जाना माना जा सकता है, किन्तु इस चित्र के निरपेक्ष रूप के बावत कोई अंतिम निर्णय की अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, उसी प्रकार मन के द्वारा मन के समक्ष घटित घटनावलियों के एकीकरण से चित्र के बहिर्पहलू का अर्थबोध तो किया जा सकता है किन्तु उसके आन्तरिक मूल्यांकन के निरपेक्ष सच्चाई बावत कोई निश्चयात्मक घोषणा किया जाना कठिन है, उसी प्रकार मनोविज्ञान द्वारा घटित दृश्यावली की व्याख्या तो की जा सकती है किन्तु चंचल मन के द्वारा उद्घाटित इस सनातन सत्य का मूल्यांकन मनोविज्ञान के बजाय आस्था-आश्रित धर्म द्वारा ही किया जाना एवं घोषित किया जाना योग्य है। यूंग ने इस प्रकार धर्म एवं मनोविज्ञान के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की सीमाओं का निर्धारण एवं इनके बीच निहित कार्य क्षमता का योग्य विभाजन प्रस्तुत किए जाने बावत उल्लेखनीय खोज की है, जिसके परिणामस्वरूप भिन्न-भिन्न क्षेत्रीय मनोविज्ञान एवं धर्म के बीच अटूट सन्निकटता के सेतुबन्ध (Bridge) की स्थापना हुई है तथा इनके बीच योग्य-क्षमतापूर्ण कार्य विभाजन से इनके बीच गलतफहमियों के आधारों पर उत्पन्न परस्पर विरोधाभास एवं संघर्ष की स्थितियाँ भी टल गई हैं, और इन दोनों क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रतिपूरक कार्य क्षमता से धर्म को मनोविज्ञान से तथा मनोविज्ञान को धर्म की गहराई की जानकारी से एक उपयोगी भूमिका की स्थिति का निर्माण हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप मानवीय ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में परस्पर एक दूसरे क्षेत्र में परस्पर सहयोग का एक मंगलमय मार्ग प्रशस्त हो सका है। जिस पर भविष्य में चल कर विश्व-स्तरीय मानवता का निश्चित प्रकार से विकास होने की संभावना बढ़ गई है।

कतिपय मनोवैज्ञानिक धर्म को मनोवैज्ञानिक खोज की दृष्टि से महत्वहीन (Worthless) मानने की गलती कर बैठे हैं जिनकी धारणा के अनुसार आस्था पर आधारित धार्मिक क्षेत्र अंधविश्वास ग्रस्त एक अंधियारा कुंआ सरीखा है जिसमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की रोशनी से कुछ भी सारगर्भित रहस्य खोजा ही नहीं जा सकता। इस वर्ग के मनोवैज्ञानिक वेत्ताओं की दृष्टि में 'धर्म' केवल मात्र किसी जैविक (Biological) सहजवृत्ति (Instincts) का उदात्तीकरण अथवा मांगलिक

(Sublimation) संस्करण मात्र है, अतः धर्म की मनोवैज्ञानिक व्याख्या से किसी कारगर एवं उपयोगी नतीजे पर पहुँचने का कोई योग्य महत्व ही नहीं है। डाक्टर सिगमंड फ्रायड एवं अल्फ्रेड एडलर की मान्यतानुसार धर्म जैविक सहज वृत्तियों (Biological instincts) का केवल मात्र उदात्त (Sublimated) रूप है। फ्रायड धर्म को काम की सहज प्रवृत्ति (Sex-instincts) का तथा एडलर ने धर्म को मानव में निहित उच्चतम होने की मानव ग्रन्थि (Superiority Complex) की अभिव्यक्ति मानकर धर्म की कायेषणा या अधिकार ऐषणा के उदात्त रूप की तरह स्वीकार किए जाने का आग्रह किया है। अतः फ्रायड एवं एडलर की विचारधारा के अनुयायी धर्म को केवल मात्र एक सहजवृत्ति की कला से अधिक कोई विशेष महत्व देने के लिए तैयार नहीं है। फ्रायड एवं एडलर का समर्थक वर्ग धर्म की कोई निश्चित भूमिका होना स्वीकार नहीं करते, अतः वे धर्म को मूल्यांकन (Valuation) अथवा अवमूल्यांकन (Devaluation) किया जाना योग्य नहीं मानते। किन्तु यूंग ने फ्रायड एवं एडलर की उपरोक्त अवधारणा का प्रतिरोध करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि धर्म न तो शैशवकालीन कामजन्य वृत्तियों के दमन का परिणाम है और न यह उच्चतर ग्रन्थि की अभिव्यक्ति का उजागर स्वरूप है। अतः धर्म को किसी शैशवकालीन दमित वृत्तियों का परिणाम माना जाना एक गलत-फहमी एवं आधारहीन भ्रान्त अवधारणा मात्र है। यूंग की मान्यतानुसार धर्म तो मानवीय अवचेतन स्तरीय क्रियात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति (Creative Energy) का एक उभार (Manifestation) है। व्यक्ति का अवचेतन निःसन्देह एक सजीव शक्ति सम्पन्नता का आगार है, जिसका उभार (Overflow) निःसन्देह धर्म के रूप में मानवीय चेतन क्षेत्र पर यकायक समय परिस्थितियों के अनुसार सहज प्रकार से स्वतः छा जाता है, अतः धर्म की योग्य समझ से निःसन्देह मानव के आन्तरिक स्तर का अर्थात् मानव के समूचे व्यक्तित्व की यथार्थ एवं योग्य जानकारी उपलब्ध की जा सकती है, इसलिए धर्म की योग्य समझ के लिए इसे किसी जैविक वृत्ति (Biological function) के दमन (Repression) का कोई प्रतिफल माना जाना योग्य नहीं है क्योंकि आध्यात्मवाद (Spiritualism) किसी जैविक वृत्ति (Biological process) का रूपान्तरण नहीं है अपितु आध्यात्म एवं धर्म मानव के स्वभाव में निहित उसकी सृजनात्मक शक्ति का एक स्वतः उभराव (Over flow) है। इस प्रकार धर्म एवं अध्यात्म वृत्ति व्यक्ति की सर्वोच्च सृजनात्मक क्षमता की ही अभिव्यक्ति कहा जाना चाहिए। जिसका अनुभव एवं अर्थबोध प्रत्येक मानव को अपने सहज विकास के क्रम में स्वतः होना योग्य एवं मंगलमय है। अतः यूंग की मान्यतानुसार धर्म एवं धार्मिक अनुभव न तो किसी दमित भाव का परिणाम है और न इसको किसी प्रकार की बचाव वृत्ति (Escape tendency) का परिचायक माना जाना चाहिए, अपितु धर्म और आध्यात्म वृत्ति को मानवीय चित्त की सर्वोत्कृष्ट सृजनात्मक प्रतिभावृत्ति का सहज उभार (Natural flow) मान कर निश्चयपूर्वक

योग्य उपयोग करते हुए मानव को अपने सहज व्यक्तित्व विकास के पथ पर अग्रसर होने हेतु इसकी योग्य मदद लेना चाहिए, ताकि इसकी सम्यक् जानकारी से व्यक्ति समग्रता, सम्पन्नता एवं पूर्णत्व की ओर सहज रूप से स्वतः अग्रसर हो सके। यूंग की यह मान्यता निश्चयपूर्वक मानवीय विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं मंगलपूर्ण है। यदि व्यक्ति में अनुभूत इन आध्यात्मिक अनुभवों का अर्थ समझने में बेखबर रहेगा, तो निश्चयपूर्वक उसके व्यक्तित्व के विकास का क्रम अवरुद्ध रह सकता है और वह अपने समग्र व्यक्तित्व की जानकारी से मेहरूम रह जाएगा तथा उसके व्यक्तित्व की समग्रता की जानकारी के अभाव में उसका व्यक्तित्व खण्डीय, अधूरा एवं अस्पष्ट ही रह जाएगा। अतः यूंग ने धर्म एवं आध्यात्मिक आन्तरिक अनुभव के अर्थ को समझने तथा उसका सम्यक् उपयोग अपने व्यक्तित्व के सहज विकास के प्रसंग में किए जाने का निरन्तर आग्रह व्यक्त किया है। यूंग की मान्यता है कि धार्मिक अनुभवों (Religious Experience) का बड़ा महत्व है क्योंकि यह अनुभव मानवीय चित्त की सृजनात्मक शक्ति की क्रियान्विति का सहज परिणाम है। जिसके अध्ययन, अनुशीलन एवं उपयोग से मानव व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास होना संभव है। अतः धर्म और मनोविज्ञान के मर्यादित क्षेत्रों की अपनी-अपनी मर्यादाओं को बनाए रखते हुए इनके बीच योग्य सन्निकटता बनाये रखना आज के जागरूक मनोविज्ञान वेत्ता के लिए भी उपयोगी है, ताकि मनोविज्ञान से धर्म को तथा धर्म को मनोवैज्ञानिक खोजों की मदद से व्यक्ति के संपूर्ण चित्त की अधिक विस्तृत, अधिक उजागर तथा अधिक उपयोगी एवं कल्याणकारी जानकारी मिल सके।

यूंग द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया है कि धार्मिक अनुभव अर्थात् आध्यात्मिक घटनाक्रम के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से व्यक्ति का चेतन संभाग अधिक विस्तृत एवं अर्थपूर्ण हो सकता है जिसके मनन एवं विवेचन से ही मानव अपनी सहज पशुवत् प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर इनसे मुक्त हो सकता है। चेतन की सम्यक् जानकारी से ही मानव पशु से ऊंचा बन सका है, अतः चेतन स्तर पर उजागर अनुभूति के सम्यक् विवेचन से ही मानव व्यक्तित्व विकास के सहज विकास क्रम में बड़ी मदद मिली है। एक धार्मिक चिन्तक की दृष्टि में तो आध्यात्मिक अनुभवों को विश्व एवं मानव के कल्याण हेतु ईश्वर का वरदान कहा जा सकता है, यद्यपि इनके कारणों की खोज किया जाना कठिन है। एक मनोविज्ञान वेत्ता भी इन घटित धार्मिक अनुभवों को यथावत् स्वीकार करते हुए इनको चित्त की सम्पूर्ण स्थिति की जानकारी प्राप्त करने का साधन मान सकता है।

मानवीय जीवन में चेतन स्तर पर संपूर्ण चित्त की स्थिति का ज्ञान ही प्राप्त करना उसकी सहज उपलब्धि है, जो निरन्तर सहज रूप से स्वतः विकसित होती हुई नजर आती है तथा जिसके उल्लेखनीय प्रभाव को जागरूक व्यक्तित्व स्वतः अनुभव कर सकता है। चेतन (Consciousness) के विस्तार एवं अवचेतन की गहराई

से आगे जाकर विवेक-सज्ञान (Discriminatory knowledge) का संपादन किया जाना निःसन्देह श्रेयस्कर एवं अर्थपूर्ण है जिसके आगे जाकर व्यक्ति सार और असार, ज्ञान और अज्ञान, सनातन और क्षणिक तथा सत्य और असत्य का भेद किए जाने की क्षमता को सहज रूप से संपादित कर सकता है।

व्यक्ति के चेतन स्तरीय संभाग के स्वतः विकास क्रम के प्रसंग में व्यक्ति का उसके इर्द-गिर्द पर्यावरण (Environment) के साथ अनुकूलशीलता (Adaptability) को स्थापित किए जाने के बावत भी यूंग ने यह स्पष्ट किया है कि प्राणिमात्र चाहे वह वनस्पति हो, जानवर हो अथवा मानव हो, उसके जीवन का निर्वाह तभी संभव है जबकि वह अपने इर्द-गिर्द के पर्यावरण-वातावरण के साथ योग्य सामंजस्य तथा अनुकूलशीलता स्थापित कर सके। व्यक्ति एवं पर्यावरण के बीच यदि योग्य ताल-मेल अथवा सामंजस्य स्थापित किए जाने में असफलता रहेगी तो निःसन्देह उक्त प्राणधारी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। अतः यूंग ने व्यक्ति मात्र के अपने पर्यावरण के साथ अनुकूलशीलता का निर्वाह किए जाने का आग्रह किया है।

यद्यपि यूंग ने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मन के दो संभाग चेतन एवं अवचेतन की स्थिति को यथावत् स्वीकार कर लिया है—जबकि यूंग ने फ्रायड द्वारा प्रयुक्त शब्द 'मन' (Mind) की बजाय नया शब्द Psyche (चित्त) का उपयोग किया है। किन्तु फ्रायड तथा यूंग के अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु (Contents) के किस्म Nature के बावत बड़ा गहरा मतभेद है। फ्रायड की धारणानुसार अवचेतन संभाग का समाज द्वारा अस्वीकृत कामजन्य वृत्तियों तथा भावनाओं का अनियन्त्रित 'गोदाम' है जिसमें चेतन स्तर से समाज विरोधी वृत्तियों को अस्वीकृतीय होने के परिणामस्वरूप दमित अथवा उपेक्षित करके दफनाया जा चुका है, अतः फ्रायड का अवचेतन संभाग समाज द्वारा असंगत अकल्याणकारी वृत्तियों की कब्र है, जहां पर चेतन मन द्वारा मान्य कूड़ा-कचरा दबा दिया गया है, किन्तु यूंग ने अवचेतन चित्त में व्यक्ति की सृजनात्मक प्रवृत्तियों का बीज रूप से विद्यमान होने की अवधारणा को स्थापित किया है। सन् 1912 में यूंग ने The Psychology of the Unconscious शीर्षक पुस्तक प्रकाशित की जिससे समूचे मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में एक हलचल सी मच गई और इस पुस्तक के प्रकाशन से फ्रायड तथा यूंग के बीच अवचेतन स्तरीय Contents (अन्तर्वस्तु) के बावत यह मौलिक मतभेद उभर कर जनता के समक्ष आ गया। फ्रायड की मान्यतानुसार तो संपूर्ण अवचेतन मन दमित, उपेक्षित, समाज द्वारा असंगत, अवकल्याणकारी वृत्तियों का गोदाम माना गया था, किन्तु यूंग ने चित्त के अवचेतन संभाग को मानव जाति के सृजनात्मक कल्याणकारी तत्वों का भंडार या खजाना माना है, जिसमें मानव जाति द्वारा सनातन काल से संपादित अनुभवों को बीज रूप में इकट्ठा रखा जाना माना गया है, जिसको समय एवं परिस्थिति के अनुसार न केवल व्यक्ति के चेतन स्तर को अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के सहज एवं स्वतः विकास को

उल्लेखनीय प्रकार से प्रभावित किया जाना माना गया है। अवचेतन स्तरीय चित्त के इस संभाग में न केवल मानव की प्राण शक्ति के बीजों का अस्तित्व होना माना गया है, अपितु यूंग की अवधारणा के अनुसार व्यक्ति के अवचेतन चित्त संभाग में समूची मानव जाति की शक्ति, श्री एवं समृद्धता के बीज अव्यक्त रूप से विद्यमान होने की घोषणा की गई है। धर्म, धार्मिक अनुभव एवं आध्यात्मिक संस्कार (Spiritual impressions) के इस रूप में संग्रह होने बावत यूंग की इस स्वीकृति से मानव जाति के सनातन कालीन ज्ञान की विरासत अवचेतन संभाग में होना माना गया है। अतः यूंग ने अवचेतन चित्त को धर्म (Religion) से ओत-प्रोत होना माना है, जिनकी व्यक्तित्व के विकास क्रम में धार्मिक वृत्ति के रूप में अथवा धार्मिक प्रतीकों के रूप में व्यक्ति के चेतन स्तर पर स्वतः उभरते हुए अनुभव किए जाने की संभावना है। निःसन्देह धर्म अवचेतन चित्त में मूलावस्था में स्थित वह प्राणशक्ति है जिससे मानव स्वतः विकास के पथ पर अग्रसर हो पाता है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि धार्मिक वृत्ति अथवा धार्मिक प्रतीक का रूप केवल आदिमकालीन (Primitive) समाज तक ही मर्यादित है, अतः धर्म को पुरातन अथवा पुराना कहकर इसकी उपेक्षा किया जाना योग्य नहीं है। व्यक्ति के अवचेतन चित्त संभाग में धर्म का जो रूप विद्यमान है वह सनातनकालीन होने पर भी सदियों से स्वतः विकसित रूप में निरन्तर स्वतः रूपान्तरित होता रहा है। अतः व्यक्ति के अवचेतन चित्त स्तर से जो धार्मिक वृत्ति अथवा कार्मिक व आध्यात्मिक प्रतीक व्यक्ति के चैतन्य स्तर पर यदाकदा उभरता है, अथवा उजागर हो जाता है, उसका स्वरूप सनातनकालीन मूलरूप होने पर भी उसको युगों से स्वतः परिष्कृत स्वरूप का ही रूपान्तरण होना माना गया है। अवचेतन चित्त के अनेक स्तर हैं और अलग-अलग स्तर या सतह पर प्राचीन अथवा परिष्कृत अर्वाचीन धार्मिक वृत्तियों एवं आध्यात्मिक प्रतीकों की मौजूदगी पाई जाना और परिस्थितियों के अनुसार इन मूल स्वरूप से लेकर तत्कालीन संशोधित एवं परिष्कृत स्वरूप में से कोई भी रूप व्यक्ति के चेतन चित्त पर मुखरित होने से समूची मानव-जाति का श्री एवं कल्याणयुक्त भूमिका पर मानवीय व्यक्तित्व विकास का जो एक अर्थपूर्ण परिचय प्राप्त होता है वह निःसन्देह उल्लेखनीय है। सच्ची धार्मिक वृत्ति एवं मौलिक कलाकृति चित्त के अवचेतन स्तर की गहरी परत से ही उभर कर चित्त के चेतन स्तर पर आकर व्यक्ति के द्वारा अनुभव गम्य हो सकती है और चेतन स्तर पर इस धार्मिक वृत्ति के अनुभव अथवा दर्शन से सम्पूर्ण चित्त प्रकाशमय उजागर एवं बोधगम्य हो पाता है। जब अवचेतन के निचले स्तर से उभरती हुई वृत्तियां एवं प्रतीकों का परिचय व्यक्ति अपने चेतन स्तर पर करता है, तब उसी की व्याख्या को ही दर्शन, काव्य, कला अथवा सृजनशील साहित्य कहा जाता है, और इस स्तर पर उक्त मूलतः धार्मिक वृत्ति की व्याख्या करने वाले दर्शन को व्यक्ति द्वारा भलीभांति समझते हुए उसके अनुरूप जीवन को ढालने का जो कार्य

प्रारम्भ होता है, जिसको हम नैतिकता, धर्म या चरित्र निर्माण या जीवन-साधना की संज्ञा देते हैं। धर्म दर्शन साहित्य एवं कला के माध्यम से अन्य अल्प विकसित मानव समूह को भी अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए योग्य मार्गदर्शन एवं कल्याण-कारी मार्ग पर प्रगति करने की प्रेरणा या मदद मिलती है, और इस प्रकार मानव धीरे-धीरे स्वतः स्वयं का विकास करते हुए, अपनी उच्चस्तरीय सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण कर पाता है।

धर्म का मूल आधार व्यक्ति की स्वभावजन्य आस्था (Faith) है जो तर्क (Logic) से अधिक तर्क संगत, सामान्य समझ से अधिक गहरा जीवन अनुभव तथा विचार से अधिक एक सशक्त प्राणवान् विश्वास है जो मानव चित्त में अधिक गहराई के साथ बना रहता है तथा जो निरन्तर उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करता रहता है। धर्म के प्रति आस्था की व्यापकता आदिम कालीन जातियों की सहज वृत्तियों (Instincts) से लेकर ज्ञान-विज्ञान मण्डित संस्कृत सभी उन्नत एवं विकसित जातियों में पाई जाती है। धर्म के प्रति आस्था अथवा अनास्था (Non-faith) होना न केवल चेतन स्तरीय विचार मात्र है अपितु धर्म के प्रति आस्था होना अथवा नहीं होना प्रत्येक व्यक्ति की अवचेतन स्तरीय अन्तर्वस्तु (Contents) की बनावट पर निर्भर है जो अवचेतन से प्रेरित होकर उसके चेतन स्तर पर स्वतः मुखरित एवं उजागर होती हुई अनुभव की जा सकती है। कतिपय श्रद्धालु आस्थावान् व्यक्तियों की दृष्टि में धर्म को ही जीवन में सर्वोच्च महत्व दिया जाता रहा है और प्रायः व्यक्ति जिस भावना को धर्म की संज्ञा दे देता है, वह उसके लिए अपना सर्वस्व दांव पर लगा देता है। यद्यपि जुदा-जुदा व्यक्ति जुदा-जुदा विचार को धर्म की संज्ञा दे देते हैं। महात्मा गांधी ने ईश्वर में विश्वास होना ही धर्म माना था तो सरदार भगतसिंह ने देश की आजादी की प्राप्ति हेतु प्रयत्न को ही धर्म कहकर उस पर अपने संपूर्ण जीवन का दांव लगा दिया था। इस प्रकार भिन्न-भिन्न परिस्थितियों की मांग के अनुसार अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा जीवन के किसी आदर्श के प्रति सतत लगे रहना ही उसका धर्म बन जाता है। जिस विचार या भावना को व्यक्ति अपना धर्म समझ बैठता है उसी को वह अपने जीवन में सर्वोच्च महत्व देने लगता है और उसी की कार्यान्विति के लिए आजीवन लगा रहता है। इस प्रकार धर्म मानव के जीवन यापन का एक आग्रहपूर्ण रास्ता बन जाता है जो उक्त व्यक्ति के लिए सर्वोच्च महत्व-पूर्ण एवं अधिक उपयोगी दृष्टिकोण बन जाता है। यूंग द्वारा प्रतिपादित व्यक्ति के स्वतः धर्म के सहज विकसित होते रहने की यह अवधारणा भी निःसन्देह एक महान् आशावादी दृष्टिकोण है जिससे संघर्ष एवं संकटग्रस्त समूची मानवता को अद्भुत शक्ति, धैर्य एवं आत्म विश्वास के आधार पर प्राप्त हो सकता है। फलतः प्रत्येक मानव विपरीतर स्थितियों में स्वधर्म युक्त जीवन बनाए रखने के लिए सचेष्ट एवं जागरूक पाया जाता है।

जीवन बनाए रखने की इस सहज मानवीय आकांक्षा के सन्दर्भ में सृजनधर्मी मानव ने दर्शन, साहित्य, कला एवं अन्य समाजोपयोगी कार्यों में संलग्न रहने की सहज प्रवृत्ति में धर्म की उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह होना माना गया है। सभी क्षेत्रों एवं सभी कालों में धर्म को ही मानव समाज में सर्वोच्च महत्व दिया गया है अर्थात् धर्म पालन को ही मानवता ने अपने कर्त्तव्यों का लक्ष्य तथा अपने विकास का एक मात्र मानदण्ड अनादिकाल से आज तक स्वीकार कर लिया है। अतः धर्म पालना मानव की एक आन्तरिक मांग बन गई है, जिसको मनोविज्ञान के झरोखे से देखा और समझा जाना मानवीय विकास की दृष्टि से बहुत जरूरी एवं कल्याणकारी है ताकि मनोविज्ञान के विज्ञान संगत नजरीये से धर्म का योग्य मूल्यांकन किया जा सके तथा धर्म के आस्थाजन्य अलौकिक प्रकाश से मनोविज्ञान के बियावान जंगल में भी योग्य संकेत या रास्ता ढूंढा जा सके। अतः यूंग का यह आग्रह रहा है कि धर्म एवं मनोविज्ञान के स्वतन्त्र एवं अलग-अलग क्षेत्रों के बीच परस्पर सन्निकटता स्थापित किए जाने का प्रयास किया जाना उचित एवं योग्य है ताकि धर्म मनोविज्ञान से और मनोविज्ञान धर्म द्वारा उपलब्ध अनुभव पूंजी से सहज रूप से परस्पर लाभान्वित हो सके और मानव जीवन सहज विकास के पथ पर आगे बढ़ सके और अपूर्ण व्यक्तित्व पूर्ण एवं समग्र बन सके।

यूंग ने चेतन और अवचेतन ध्रुवों के बीच चित्तीय ऊर्जा प्रवाह के प्रसंग में यह भी प्रतिपादित किया है कि जीवन शक्ति के इस सतत प्रवाह के फलस्वरूप अव-चेतन का चेतन में तथा चेतन से अवचेतन में चित्तीय अन्तर्वस्तु की अदला-बदली अर्थात् परिवर्तन-रूपान्तरण से मानव समय के साथ स्वतः विकसित हो रहा है।

जैसा कि पहले विवेचित किया जा चुका है कि मनोविज्ञान के द्वारा ईश्वर सम्बन्धी वस्तुपरक (Objective) स्थिति सम्बन्धी कोई निर्णय दिया जाना योग्य नहीं है, क्योंकि ईश्वर सम्बन्धी विचारों एवं प्रतिमाओं का आविर्भाव अवचेतन स्तर से होता है और चेतन निःसन्देह न तो अवचेतन का जनक है और न चेतन अवचेतन से अधिक प्रभावशाली है क्योंकि यूंग की अवधारणा के अनुसार अवचेतन ही वस्तुतः चेतन का आधार एव जनक है, तथा अवचेतन ही चेतन को निरन्तर प्रभावित करता है। चित्त का चेतन संभाग ही मनोविज्ञान वेत्ता की रंगभूमि है, अतः उसके द्वारा अवचेतन से ओतप्रोत धर्म के बावत निर्णयात्मक फतवा दिया जाना योग्य नहीं है, इसलिए यूंग ने अपने सहधर्मी मनोविज्ञान वेत्ताओं को सावधान किया है कि उन्हें धर्म सम्बन्धी प्रश्नों का निर्णय देने के बजाय अवचेतन स्तर से घटित धार्मिक अनुभवों को खुलेपन से अध्ययन करते हुए तथा उन्हें स्वीकार करते हुए उनके गूढ़ अर्थ को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। क्योंकि सृजन के मानदण्ड से निःसन्देह धार्मिक चिन्तक की भूमिका मनोवैज्ञानिक विश्लेपक की अपेक्षा कहीं अधिक गहन एवं महत्व-

पूर्ण है। इसलिए मनोविज्ञान वेत्ता को दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रश्नों के जवाब प्रस्तुत करने की आत्मघाती प्रवृत्ति से बचने का यूंग ने सतत आग्रह किया है।

यह भी एक तथ्य है कि मानव समाज अपने विकास के प्रत्येक चरण में भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के अनुरूप सदैव सृजनात्मक शक्ति (Creative power) की प्रतिमाओं (Images) के निर्माण में संलग्न रहा है जिसको ईश्वर अथवा ब्रह्मा की संज्ञा से परिभाषित करने की चेष्टा की है तथा जिनकी सादृश्यता सृजनात्मक वृत्ति से स्पष्टतया दृष्टिगोचर की जा सकती है। जैसे आद्य मातृशक्ति (The Great mother) आदि। इस प्रकार सृजनात्मक शक्ति की प्रतिभा का निर्माण सीमित मानव मस्तिष्क का परिणाम होना नहीं माना जा सकता, अपितु इसको मानव चित्त (Human Psyche) के सामूहिक संरचना (Collective Structure) का परिणाम ही माना जाना अधिक योग्य एवं उपयुक्त है। यूंग ने मानव चित्त की सामान्य (Common) संरचना या आधार को सामूहिक अवचेतन में स्थित आर्कीटाइप (Archetype) से प्रभावित होना माना है। जिस पर चेतन स्तरीय स्थिति का कोई सविशेष प्रभाव ही नहीं पड़ पाता। मानव के चेतन की क्षमता से परे इस आदि अथवा मूल प्ररूप (Archetype) की बनावट, स्थिति एवं विनाश किया जाना मानवीय चेतन क्षमता से परे है, अतः यूंग की सलाह है कि अवचेतन के मूलाधार में स्थित इस मूल प्ररूप (आर्कीटाइप) को चेतन द्वारा यथावत् स्वीकार करते हुए उसके स्वरूप को समझने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि आर्कीटाइप सम्बन्धी सम्यक् जानकारी से ही व्यक्ति अपने सहज विकास की दिशा को समझते हुए अपने समूचे व्यक्तित्व विकास की कल्याण साधना में प्रवृत्त हो सके। आर्कीटाइप को ही यूंग ने अवचेतन का मूल आधार माना है।* आर्कीटाइप की स्थिति अवचेतन की गहनतम स्तर में मानी गई है जिस पर चेतन स्तरीय संभाग का कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता। वस्तुतः आर्कीटाइप ही चित्तीय वास्तविकता (Psychic Reality) की सही पहिचान है।** और यूंग ने इसी को आत्मा (Self) कहा है।

यूंग ने 'आर्कीटाइप' को मानवीय चित्त की आन्तरिक आवश्यकता (Internal neccessity of the Psyche) स्वीकार करते हुए इसको मूल सहज वृत्ति (Main Instinct) माना है तथा आर्कीटाइप को सामूहिक अवचेतन (Collective Unconscious) का कारण कहते हुए इसकी स्थिति को शाश्वत एवं सनातन माना है, भले व्यक्ति इसका अनुभव कर सकें अथवा नहीं कर सकें।

कोई विरला मानव ही देवत्व (Deity) के रूप में इस परम शक्तिशाली आर्कीटाइप का अनुभव कर सकता है। वस्तुतः मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत

---

* Jung : Integration of the Personality at page 23.

** Ibid, Page 54.

उपरोक्त वक्तव्य को उलट फेर कर यह कहा जा सकता है कि मानव आर्कीटाइपल अनुभव को ही ईश्वर (God) कहता है जो एक सामान्य व्यक्ति का अनुभव नहीं होकर केवल उच्चस्तरीय विकसित व्यक्तित्व की क्षमता का परिचायक है। इस परम शक्ति सम्पन्न ईश्वर को ही मानव स्रष्टा, पालक एवं संहारकर्त्ता की तरह स्वीकार करता है। भारतीय परम्परा में इसको ही ब्रह्मा, (स्रष्टा) विष्णु (रक्षक) एवं शिव (संहारकर्ता) कहा गया है। ईश्वर के रूप में आर्कीटाइपल अनुभव के दौरान में चेतन एवं अवचेतन के बीच का भेद ही मिट जाता है तथा यह चेतन अवचेतन का द्वैत-अद्वैत (Self) बन जाता है। चेतन तथा अवचेतन का भेद मिट जाने से चित्त के सभी क्लेश और तनाव नष्ट हो जाते हैं और चित्त के सभी खण्ड मिलकर एक अखण्ड बन जाते हैं। किसी भी व्यक्ति द्वारा यह स्थिति बनाई नहीं जा सकती, अपितु व्यक्तित्व की समग्र सम्पन्नता से सहज रूप से यह स्थिति बन जाती है। इस गहनतम स्वतः निर्मित चित्तीय स्थिति को ही परम तत्व या 'सत्य कहा गया है जिसकी चित्तीय वास्तविकता को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता।

यूंग ने इस चित्तीय तथ्य (Psychic fact) को Self (आत्मा) कहा है, जो सभी संकीर्ण मतवादों (Dogmatism) से परे तथा हठाग्रहों से मुक्त है। असीम एवं अमर्यादित के इस अनुभव को ही परमात्मा कहा गया है जिसे एक यहूदी 'जुहवा', ईसाई इसको 'क्राइस्ट' बौद्ध इसको 'बुद्ध' तथा हिन्दू इसको ईश्वर (राम, कृष्ण शिव आदि) कहते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आत्मानुभव (Expression of the self) को ही सम्पूर्ण चित्त या चित्तीय पूर्णता (Psychic totality) कहा गया है जो विरोधाभासी तत्वों की इकाई या इनकी एकरसता है। इसको विरोधों का एकत्व भाव अथवा रहस्यमयी साझेदारी (Participation mystique) कहा गया है।

यूंग ने आर्कीटाइप पद के प्रयोग से यह स्पष्ट किया है कि आर्कीटाइप का तात्पर्य उस चित्तीय प्रकार (Psychic type) से है जो केवल एक छाप अथवा संस्कार मात्र है। मनोविज्ञान के अन्तर्गत आर्कीटाइप के उद्भव तथा विलय के बाबत कोई विचार किया जाना योग्य नहीं है, यद्यपि धार्मिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत इसके उद्भव एवं विलय की व्याख्या किए जाने का आग्रह पाया जा सकता है। किन्तु यूंग ने चित्तीय संस्कारों के उद्भव एवं विलय सम्बन्धी विवेचन या विवाद में खामोश रहना योग्य माना है क्योंकि चित्तीय संस्कारों के उदय एवं विलय की खोज किया जाना सामान्य मानवीय क्षमता के परे एक कठिन कार्य है। अतः यूंग द्वारा परिभाषित Self (आत्मा) का मनोविज्ञान की दृष्टि से तात्पर्य हमारे अन्दर ईश्वर (God within us) होने का अनुभव है, जबकि धर्म की दृष्टि में ईश्वर या ईश्वरी सत्ता को ही एक मात्र स्थिति मानी गयी है। जो शाश्वत, अनादि, अनन्त, अखण्ड, अविनाशी, नित्य एवं सर्वव्यापक कही गयी है।

चित्त स्तरीय आर्कीटाइप की स्थिति को ही ईश्वर कहा गया है जिसको चेतन चित्त द्वारा पहिचाना तथा धार्मिक क्रिया द्वारा उसको कार्यान्वित किया जा

सकता है। धर्म ही मानवी मस्तिष्क को मौलिक सक्रियशीलता (Fundamental activity) है जिसकी अवचेतन के गहनतम स्तर पर आर्कीटाइप के रूप में मौजूदगी होना माना गया है। इसी को देव, देवी, देवता, ईश्वर या परमेश्वर की संज्ञा से परिभाषित किया जाता है। इसी को आत्मा, Self अथवा स्वयं भू कहा गया है और आत्मा में ही मनोविज्ञान एवं धर्म इन दोनों का एकात्म, तादात्म्य अथवा एक रूप हो जाना माना गया है। अतः हमारे में स्थित ईश्वर (God within us) को ही हम स्वयं Self आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म, अद्वैत, एक आदि विभिन्न संज्ञाओं से परिभाषित करते हैं।

सन् 1937 में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग को चिकित्सा-मनोवैज्ञानिक की हैसियत से येल (Yale) विश्व विद्यालय द्वारा टेरीलेक्चर्स (Teiry Lectures of 1937) के अन्तर्गत धर्म (Religion) विषय पर भाषण देने हेतु आमन्त्रित किया गया। धर्म (Religion) को निःसन्देह सबसे प्राचीन तथा प्रायः सर्वदेशीय मानवीय मन (All human mind) की अभिव्यक्ति माना गया है, अतः इसका न केवल सामाजिक एवं ऐतिहासिक महत्व ही है, अपितु धर्म ने सम्पूर्ण मानव जाति के जीवन को बड़ी गहराई से प्रभावित किया है।

कतिपय विद्वानों ने यूंग को एक दार्शनिक माना है। यद्यपि यूंग ने स्वयं को केवल मात्र इन्द्रियानुभववादी (Empiricist) होने का दावा किया है और यूंग ने केवल इसी भूमिका का निर्वाह करने का प्रयत्न किया है। यूंग ने केवल मानवीय अनुभव को ही 'सत्य' माना है। यूंग की मान्यता है कि अनुभव में चिन्तन (Reflection) का भी समावेश हो जाता है क्योंकि अनुभव एक अर्थग्राही प्रक्रिया (Process of assimilations) है, जो बगैर चिन्तन एवं विचार के समझा ही नहीं जा सकता।* अतः यूंग ने मनोवैज्ञानिक प्रश्नों का विचार दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने के बजाय इसको वैज्ञानिक नजरीये से ही समझाए जाने का आग्रह किया है। धर्म सम्बन्धी विवेचन के प्रस्तुतीकरण के लिए भी यूंग ने केवल उसके मनोवैज्ञानिक पहलू (Psychological aspect) पर ही विशेष महत्व दिया है।

कार्ल गुस्ताव यूंग टेरीलेक्चर्स में चिकित्सा मनोविज्ञान के प्रतिनिधि की हैसियत से आमन्त्रित किए गए थे, अतः उन्होंने धर्म विषयक चर्चा का आरम्भ विशुद्ध घटनात्मक (Exclusive phenomenological) दृष्टिकोण से करते हुए यह बतलाया कि घटित घटना को एक तथ्य (Fact) ही माना जाना योग्य है, किन्तु उक्त घटना को एक निर्णय (Judgment) कहा जाना उचित नहीं है। अतः घटना को एक तथ्य (Fact) मानकर यह घटना सच है या नहीं, इस विवाद से दूर रहना श्रेयस्कर है। क्योंकि घटित घटना का अनुभव आत्मपरक (Subjective) मात्र है

* Collected works, Vol. 11 at Page 5.

और केवल वस्तुपरक तथ्यों (Objective facts) की सच्चाई या झूंठ का निर्णय किया जा सकता है। अतः एक मनोविज्ञानी को केवल आत्मपरक अनुभव को वस्तुपरक सच्चाई या झूंठ की कसौटी पर निर्णय देने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।*

अतः यूंग ने केवल तथ्यात्मक दृष्टिकोण से ही धर्म और धार्मिक क्रियाओं का विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है तथा इसके आत्मपरक मूल्यांकन की प्रवृत्ति से अपने आपको दूर या तटस्थ रखने की सावधानी वर्ती है।

कार्ल गुस्ताव यूंग ने 'धर्म' (Religion) की परिभाषा किसी संकीर्ण अर्थ में नहीं कर उसके व्यापक अर्थ को ही स्वीकार किया है। यूंग की मान्यतानुसार पद Religion (धर्म) लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'दिव्य तत्त्व' का सावधानीपूर्वक सूक्ष्म निरीक्षण अथवा विवेचन है। यूंग की यह परिभाषा रूडोल्फ ओटो (Rudof Otto) द्वारा प्रस्तुत The Ideas of the Holy शीर्षक पुस्तक में पद Numinosum (दिव्यत्व) की परिभाषा के अनुरूप है। यूंग ने रूडोल्फ ओटो की परिभाषा को ज्यों का त्यों स्वीकार करते हुए धर्म (Religion) को दिव्यत्व का सावधानीपूर्वक सूक्ष्म विवेचन माना है।** अर्थात् दिव्यत्व यानि धर्म न तो मानवीय संकल्प (Will) के आधीन कोई यदृश्यकार्य (Arbitrary act) है और न धर्म इसका कोई परिणाम (Effect) है। इस प्रकार धर्म एक सहज-स्वतः अनुभव है जो कि अनुभवकर्त्ता की इच्छा (Will) से सर्वथा परे एवं स्वतन्त्र है। 'देवत्व' की यह स्वतः अनुभूति किसी व्यक्ति, स्थान अथवा काल से बाधित नहीं है, अपितु देवत्व या धर्म का प्रभाव सर्वकालीन एवं सार्वभौमिक माना गया है। धर्म ही संपूर्ण सृष्टि का मुख्य कारण है और धर्म के प्रभाव से ही सम्पूर्ण मानव जाति का उद्भव, विकास एवं परिवर्तन होना माना गया है।

यूंग ने धर्म (यानि देवत्व) एवं धार्मिक क्रियाएं (Rituals) का भेद भी सुस्पष्ट किया है। धर्म अनादि, सर्वव्यापक एवं अपरिवर्तनशील एवं नित्य है, जबकि धार्मिक क्रियाएं (Rituals) में समाज, काल और स्थान के सन्दर्भ में आवश्यकतानुसार स्वतः परिवर्तन होते रहते हैं तथा धार्मिक क्रियाओं के स्वरूप एवं प्रभावों में इस परिवर्तन के फलस्वरूप घटा बढ़ा होना पाया जाता है। चर्च का प्रयोजन उसके अनुयायियों का कल्याण हित साधना किया जाना है, किन्तु इसी चर्च की धार्मिक

---

* Ibid at page 6.

** I mean the term 'Religion' is a careful and scruplous observation of what Rudolf Otto ably termed the Numinosum, that is a dynamic agency or effect not caused by any arbitrary act or will by any human being.

— Gollected Works of C.G. Jung Vol. 11 at page 7.

परम्पराओं का पालन करने वाला वर्ग जब स्थिर और रूढ़ बन जाता है तो एक ही धर्म अनेक सम्प्रदायों में बंट जाता है और तब दिव्यत्व रूढ़िवादी बनकर अपनी चमक खो बैठता है। यूंग के विचारों के अनुसार सर्वव्यापकता के गुण के कारण निःसन्देह धर्म को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है किन्तु खण्डीय सम्प्रदाय में गतिशीलता (Dynamism) की कमी के कारण उसका महत्व निःसन्देह कम हो जाता है। धर्म का अर्थ, इस दृष्टि से सम्प्रदाय (Creed or sect) माना जाना योग्य नहीं है। सम्प्रदाय तो मौलिक धार्मिक अनुभवों का एक प्राणहीन ढांचा मात्र है, अतः इसकी भूमिका मानवीय विकास की दृष्टि से उल्लेखनीय नहीं पाई जाती और शनैः शनैः जब धर्म एक सम्प्रदाय बन जाता है तो उसमें अनेक बुराइयां आ जाती हैं और यदा कदा सम्प्रदायवाद से मानवीय कल्याण के बजाय इन धर्मावलम्बियों के बीच परस्पर व्यर्थ के विवादों का वातावरण बन जाता है, जो समग्र मानवता के विकास की दृष्टि से घातक सिद्ध होता हुआ पाया जाता है।

कार्ल गुस्ताव यूंग कभी पादरी अथवा धर्माचार्य नहीं रहे, अतः उन्हें किस सम्प्रदाय में क्या गुण या दोष है, उसका अनुभव किए जाने का कोई अवसर ही नहीं मिला और इसलिए उन्होंने कौनसा सम्प्रदाय मानव जीवन विकास की दृष्टि से मददगार है तथा किस सम्प्रदाय के प्रचार से मानवीय जीवन विकसित हो सकेगा, अथवा पिछड़ सकता है इसके बावत कोई विवेचन यूंग के वृहद् साहित्य में नहीं पाया जाता। यूंग आजीवन एक चिकित्सक रहे और वह स्नायवि (Nervous) एवं मानसिक रोगों के निष्णात अध्येता रहे–अतः चित्त चिकित्सा के दृष्टिकोण से धार्मिक जीवनयापन का रोगी के चित्त पर क्या प्रभाव पड़ता है, तथा धर्म के माध्यम से चित्त चिकित्सा में क्या और कितनी मदद मिल सकती है, इस बावत यूंग दीर्घकालीन अनुसंधान करते रहे हैं। उन्होंने उन कतिपय धर्म सम्बन्धी कारकों (Factors) का भी निःसन्देह पता लगाया है जिनसे व्यक्ति के समूचे व्यक्तित्व या उसके जीवन को तथा उसके सहज विकास क्रम को प्रभावित करते हैं * यूंग ने इस सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का पता लगाया है। उनके पास दुनियां भर के अनेक विकसित राष्ट्रों के हजारों व्यक्ति मानसोपचार हेतु करीब पिछले 30 वर्षों से पहुंचते रहे हैं, जिनमें कई रोगी प्रोटेसटेंट थे, कई यहूदी थे और अनेक कथोलीक धर्मावलम्बी भी थे। यूंग का इस सम्बन्ध में यह अध्ययन रहा है कि उनके पास उत्तरकालीन जीवन के जो रोगी पहुंचते थे उनमें से अनेक रोगियों की समस्या धर्म सम्बन्धी समस्या थी और ज्योंही उनकी धर्म सम्बन्धी समस्या का समाधान खोजा गया तो वे सब रोग मुक्त होकर अपना सामान्य जीवन विकास के क्रम में अग्रसर होते पाए गए। धार्मिक

* Collected Works of C.G. Jung Vol. 11 at Page 9.

दृष्टिकोण के अभाव से रोगग्रस्त होना तथा धार्मिक दृष्टिकोण की पुनः स्थापना से उनका रोग मुक्त हो जाना यूंग की एक उल्लेखनीय खोज है।*

कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा रुडोल्फ ओटो के देवत्व को धर्म के पर्यायवाची की तरह स्वीकार कर लिए जाने के फलस्वरूप यूंग द्वारा परिभाषित धर्म का मान्य 'पूर्वीय धर्म' और पाश्चात्य धर्म का अन्तर स्पष्ट हो जाता है। पूर्वीय चिन्तन के अन्तर्गत धर्म का अर्थ दिव्यत्व का सावधानीपूर्वक सूक्ष्म विवेचन है जबकि पाश्चात्य चर्च संगत धर्म व्यक्ति की मानसिकता (Mentality) के उदात्तीकरण (Sublimation) का प्रयत्न माना गया है। पाश्चात्य दृष्टिकोण का मुख्य केन्द्र विन्दु 'व्यक्ति' है और पाश्चात्य चिन्तन के अनुसार 'अवैयक्तिक सर्वव्यापी मन' (Non-Personal universal mind) का विवेचन मनोविज्ञान का विषय नहीं होकर उसे दर्शनशास्त्र (Philosophy) के क्षेत्र के अन्तर्गत विवेचन किए जाने योग्य माना गया है, इसलिए पश्चिम में मनोविज्ञान और धर्म के अलग-अलग क्षेत्र माने गए हैं किन्तु पूर्वीय चिन्तन के अन्तर्गत विश्वस्तरीय मन (Cosmic mind) के अस्तित्व (Existence) एवं स्थिति को स्वीकार किया गया है, अतः पूर्वीय चिन्तन में मनोविज्ञान एवं धर्म के बीच कोई विवाद ही नहीं है क्योंकि पूर्वीय चिन्तन में मनोविज्ञान एवं धर्म दोनों का आधार सर्व व्यापकता (Universality) है।** इसके अलावा यूंग ने पूर्वीय धर्म एवं पाश्चात्य धर्म के बीच पाए जाने वाले एक अन्य फर्क को भी स्पष्ट किया है। पाश्चात्य धार्मिक परम्परा में व्यक्ति को नगण्य (Nothing) या तुच्छ तथा प्रभु की कृपा (The Grace of God) को ही सब कुछ (Everything) तथा सर्वोच्च माना गया है जबकि पूर्वीय धर्म के अन्तर्गत मानव को ही ईश्वर (God) का अंश या समान माना गया है अर्थात् मानव को देवत्व या दिव्यत्व सम्पन्न माना गया है। इस दृष्टि से यूंग की धर्म विषयक व्याख्या पूर्वीय धर्म भावना के सन्निकट प्रतीत होती है।

यूंग ने धार्मिक आचरण (Religious conduct) के सन्दर्भ में पूर्वीय एवं पाश्चात्य धर्मों के बीच पाए जाने वाले विरोधाभास को भी स्पष्ट किया है। पाश्चात्य दृष्टिकोण में प्रभु (Lord) की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकारा गया है जो जमीन पर पड़े हुए इन्सान को ऊंचा उठाता है और प्रभु की सृष्टि का मालिक (Lord of the universe) पड़े हुए इन्सान को ऊंचा उठाकर स्वर्ग में लाकर उसको अपने साथ मिला देता है, किन्तु भारतीय चिन्तन के अन्तर्गत साधक स्वयं को आत्मा का ध्यान (Meditation) करते हुए स्वयं को सर्वव्यापी आत्मा के साथ एक रस हो

* Ibid, at Page 334.

** Collected Works of C.G. Jung, Vol. 11 at Page, 480.

जाना ही धर्म का अन्तिम लक्ष्य माना गया है। पश्चिम का चिन्तक करने (Doing) को महत्व देता है, जबकि भारतीय चिन्तक सहज होने (Being) को अधिक महत्व देता है। पाश्चात्य धार्मिक क्रियाएं मुख्यतः प्रार्थना (Prayer), पूजा (Worship) तथा बाइबल की ऋचाओं (Hymns) का वाचन या पठन पाठन है, जबकि भारतीय धर्म में आत्मानुभूति एवं योग-साधना को अत्यधिक महत्व दिया गया है। यूंग का मत है कि भारतीय योग साधना सचमुच स्वयं का (Self) के अवचेतन में डूबना है जिसको भारतीय चिन्तन में उच्चत्तम चैतन्य (Total awareness) कहकर उसको सर्वोच्च प्रतिष्ठा दी गई है।* यूंग ने 'योग' का अर्थ सहजवृत्तियों को चित्त के जुतना या जोड़ना माना है ताकि व्यक्ति अपने सभी क्लेशों (Kheshas) से छुटकारा पा सके। और अन्ततोगत्वा एक अपूर्ण मानव अपने पूर्णत्व एवं समग्रत्व को स्वतः प्राप्त कर सके।**

———

अध्याय 24

यूंग एवं भारत
(Jung and India)

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग की भारत के संबंध में 6 रचनायें लेखक की नजरों में गुजरी हैं जिनके अध्ययन से भारतीय वातावरण सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, धर्म, परम्परा, तथा भारतीय चिन्तन के प्रति यूंग के दृष्टिकोणों का परिचय प्राप्त होता है तथा जिनमें यूंग द्वारा भारतीय चिन्तन से यूरोपीय राष्ट्रों (अमेरीका सहित) में व्याप्त उलझनों एवं समस्याओं के समाधान की संभावनाएं व्यक्त की गई हैं। यूंग की भारत संबंधी इन रचनाओं का प्रबुद्ध भारतीय चिन्तक के द्वारा प्रारंभ से अंत तक अध्ययन किया जाना अपेक्षित है, किन्तु इन सभी रचनाओं की विवेचना यूंग के इस प्रारम्भिक परिचयात्मक पुस्तक में मेरे द्वारा समावेश किया जाना कठिन है, क्योंकि इस विवेचन समावेश से इस छोटी सी पुस्तक के कलेवर में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाने तथा यूंग के विवेचन की व्याख्या से इस पुस्तक के सामान्य वर्ग के पाठक के लिये कठिनाई एवं दुरुहता तथा उबाऊ (Boring) हो जाने की गंभीर आशंका हो सकती है। अतः इस अध्याय में यूंग की इन रचनाओं की अलग-अलग परिचयात्मक टिप्पणी के साथ प्रत्येक निबन्ध के मुख्य विचार बिन्दुओं का यहाँ सारांश प्रस्तुत किया जाना ही योग्य है, यथा :—

I

'Yoga and the West' (योग एवं पश्चिम) शीर्षक यूंग की भारत सम्बन्धी सर्व प्रथम रचना है जिसका प्रकाशन "प्रबुद्ध भारत" (कलकत्ता) फरवरी 1936 के श्री रामकृष्ण शताब्दि समारोह अंक में किया गया है* । इस लेख में यूंग ने भारत एवं यूरोप के चिन्तन के क्षेत्रों के बीच पारस्परिक परिचय स्थापना के प्रसंग में यह प्रतिपादित किया गया है कि यद्यपि करीब दो हजार वर्षों से पश्चिम के राष्ट्र भारतीय योग के अद्भुत करिश्मों से दंत कथाओं के माध्यम से परिचित रहे हैं, किन्तु भारतीय चिन्तन सम्बन्धी पाश्चात्य चिन्तक की व्यवस्थित जानकारी

* Collected Works of C.G. Jung, Vol. 11 pages 529-537.

सम्पादन करने की क्रिया केवल लगभग सौ वर्ष पुरानी है। फ्रेंच विद्वान् Anquetil duc Person द्वारा प्रकाशित भारतीय उपनिषदों की व्याख्या तथा ऑक्सफोर्ड के विद्वान् मैक्समूलर (Max Muller) द्वारा सम्पादित भारतीय संस्कृत ग्रन्थों का Sacred Books of the East सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशन के वाद से ही पाश्चात्य चिन्तकों ने भारतीय प्रतिमा और चिन्तन की ओर सही अर्थों से रुचि लेना प्रारंभ किया है, और आगे जाकर जव मैडम ब्लावटसी (Madam Blavatsy) ने अपने थियोसोफिकल आन्दोलन को भारतीय आदर्श एवं विचार परम्परा पर आधारित किया तो तब से पाश्चात्य चिन्तकों का भारतीय प्रतिमा को समझने की दिशा में अभूतपूर्व दिलचस्पी बढ़ जाना पाया जाता है, और यह प्रवृत्ति समय और स्थितियों के साथ उत्तरोत्तर विकसित और बढ़ती हुई नजर आती है।

यूंग ने इस्लाम के अभ्युदय से यूरोप पर मुस्लिम धर्मावलम्वियों द्वारा यूरोप को रौंदे जाने, तथा यूरोप में चर्च एवं राज्य के बीच होने वाले संघर्षों तथा ईसाई मतावलम्वियों के कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेंटों के बीच विचारों की हिंसात्मक खींचातानी का विवेचन करते हुए वर्तमानकालीन यूरोपीयन राष्ट्रों में व्याप्त जिन दुविधाजनक संकटों की मौजूदगी है, उसका इस लेख में खुलासा प्रस्तुत किया है। यूंग की मान्यता है कि आज का यूरोपीयन चिन्तन इस दुविधा से परेशान और व्याकुल है कि यहां का समाज किस प्रकार विज्ञान और धर्म की आपसी खींचातानी से उवरे? यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के वाद से विज्ञान एवं टेकनोलाजी के क्षेत्रों में अद्भुत विस्तार एवं फैलाव हो गया है और सम्पूर्ण दुनियां में विज्ञान के विकास के फलस्वरूप भौतिक सुख-सुविधाओं की अभूतपूर्व वृद्धि हो गई है किन्तु भौतिक समृद्धि के साथ ही साथ संसार में विज्ञान की सहायता से अनेक प्रकार के हिंसक उपकरणों का भी विपुल भण्डार इकट्ठा हो गया है। इस भौतिकता की अभिवृद्धि के साथ ही साथ मानव की नैतिकता, आध्यात्मिकता और धर्म के क्षेत्र में सर्वत्र निम्न स्तरीय गिरावट हो जाना भी नजर आता है। यूंग की मान्यता है कि आज पाश्चात्य राष्ट्रों में जिस रफ्तार और परिमाण से भौतिक सुख-साधनों को वढ़ोतरी हुई है उसके फलस्वरूप प्रायः सभी पाश्चात्य राष्ट्रों में आपसी ईर्ष्या और स्वार्थ वृत्ति भी वढ़ी है और इस हिंसक वारूदखाने की वढ़ोतरी का क्या तथा कव गंभीर भीषण परिणाम हो सकता है—यह एक वड़ा चिन्तनीय प्रश्न है, क्योंकि इस शताब्दि में दो-दो विश्व युद्धों की भीषण नर संहार लीला होने के वाद आज हिंसा के तृतीय चरण में सम्पूर्ण विश्व विनाश के अंधेरे वादलों में चारों तरफ से घिरा हुआ नजर आता है, अतः इस संकटों की स्थितियों से दुनियां को किस प्रकार भीषण सर्वनाश से वचाया जाय? यह पाश्चात्य चिन्तक के सन्मुख सबसे बड़ा मूल प्रश्न या गंभीर सवाल है। यूंग ने इस अनिवार्य एवं मौलिक प्रश्न को दृढ़तापूर्वक उठाते हुए इस प्रसंग में यूरोपीयन चिन्तक को भारतीय योग की तरफ इस समस्या के समाधान के

विचार किये जाने का सांकेतिक प्रस्ताव रखा है। यूंग की धारणा है कि समूचा पाश्चात्य चिन्तक वर्ग इस उलझन भरी परेशानी में पड़ गया है कि वह विज्ञान और धर्म तथा भौतिक समृद्धता और आध्यात्मिक गहराई के बीच किसी विकल्प का चुनाव करे तथा किस विकल्प को अधिक महत्व दे ? पिछली शताब्दियों में पाश्चात्य राष्ट्रों के द्वारा निःसन्देह विज्ञान एवं भौतिक सुखों को ही अधिक महत्व दिया गया है। किन्तु विज्ञान की उन्नति से धर्म की आन्तरिक समझ में गिरावट आ जाना भी साफ नजर आता है और लोगों में स्वार्थ और हिंसा की वृत्तियों की अभिवृद्धि होना तथा विनाशकारी हथियारों के अन्धे संग्रह की प्रवृत्तियां और राष्ट्रों के बीच देखी जाने वाली पारस्परिक प्रतिस्पर्धा, द्वेष और शक्ति को हथियाने की चेष्टा में दो-दो महायुद्धों के अलावा भिन्न-भिन्न गुटों के बीच मानव संहारक अनेक छोटी बड़ी झड़पें युद्ध विग्रहों से आज समूची मानवता के नष्ट हो जाने की आशंकाओं का जो बेहिसाब माहोल बन रहा है, उससे सभी राष्ट्रों के प्रबुद्ध चिंतक वर्ग में चिन्ता और परेशानी बढ़ जाना स्वाभाविक है, अतः यूंग ने इस भीषणतम समस्या के योग्य समाधान के लिये भारतीय योग का उपयोग परीक्षण किये जाने की योग्य सलाह दी है, ताकि विज्ञान और धर्म के बीच की प्रतिस्पर्धात्मक खींचातानी को समाप्त किया जा सके तथा योग के माध्यम से मानव अपने बाह्य विकास के लिये जरूरी विज्ञान तथा अपने मानवीय जीवन के आन्दरूनी विकास के लिये जरूरी धर्म, का योग्य उपयोग कर सके और इन दोनों के बीच योग्य समायोजन एवं स्थायी तालमेल (Adjustment) की स्थापना की जा सके, और मानव-विज्ञान और धर्म के बीच योग्य सम्बन्ध एवं समायोजन स्थापना के साथ विज्ञान की हिंसक बुराइयों से दूर रहते हुए अपने तन (Body) तथा मन (Mind) दोनों का समान रूप से योग्य विकास कर सके।

"योग" का भारत में क्या अर्थ है तथा योग का भारत में क्या प्रयोजन रहा है तथा योग क्रियाओं का क्या स्वरूप है, इन प्रश्नों पर यूंग ने मौन रहना ही योग्य माना है, किन्तु यूंग ने योग को आज के विश्व की गंभीरतम समस्या के हल के लिये आवश्यक एवं उपयोगी होना माना है। यूंग ने "योग" में विज्ञान तथा धर्म का संयोग (जुड़ जाना) हो जाना माना है, जो आज की यूरोपीयन मूल समस्या के लिये एक मात्र साधन या मार्ग होना नजर आता है।

भारतवर्ष में शब्द योग का विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया गया है।* इसको भगवत् गीता में क्रिया या प्रणाली (Method) कहा गया है**। विधिवत् प्रयत्न (Methodological effort) मानते हुए इसका प्रयोजन मानव स्वभाव

* S. Radha Krishanan ; Indian Philosophy Vol. II, page 337.

** Ibid and गीता अध्याय 3/3.

(Human nature) की भौतिक (Physical) तथा चित्तीय (Psychological) क्रियाओं का योग नियंत्रण करते हुए मानवीय व्यक्तित्व द्वारा पूर्णत्व तथा समग्रता (Perfection) को सर्वोच्च विकसित अवस्था को प्राप्त किया जाना माना गया है। इस प्रकार यूंग द्वारा प्रतिपादित व्यक्तिकरण प्रक्रिया (Individuation process) तथा पातञ्जली स्थापित योग साधना के लक्षणों में आश्चर्यजनक समानता या सादृश्यता दृष्टिगोचर की जा सकती है। वौद्ध चिन्तन में भी योगाभ्यास को उच्चतम व्यक्तित्व विकास के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपयोगी साधन माना गया है। सभी पूर्वीय चिन्तन में मानवीय क्लेपों से मुक्त होने के लिए "योग" की मदद लेना आवश्यक एवं कल्याणकारी माना गया है।* और यूंग ने भी आधुनिक यूरोप में विज्ञान और धर्म के बीच खींचातानी को दुःखद एवं त्रासदायक समस्या के समाधान के लिये पाश्चात्य चिन्तक की तत्कालीन परेशानियों से वचाने के लिये भारतीय योग की मदद लेने का जो संकेत दिया है वह निःसन्देह एक कल्याणकारी मार्ग-दर्शन है। यूंग का यह विश्वास है कि भारतीय योग की सम्यक् समझ से ही आज के यूरोप में व्याप्त विज्ञान और धर्म में से किस विकल्प को अपनाया जाय? इस गलतफहमी का योग्य समाधान या निराकरण निकाला जा सकता है क्योंकि योग में विज्ञान एवं धर्म इन दोनों के उच्चतम उद्देश्यों का उचित समावेश है। अतः योग को विज्ञान तथा धर्म का संयोग (Union) कहा जाना योग्य है। भारतीय योगाभ्यास में तन (Body) तथा मन (Mind) दोनों ही को समान महत्व देते हुए तन और मन इन दोनों के विकास के लिये रास्ता बतलाया गया है ताकि मानव मात्र अपनी भौतिक (Physical) तथा चित्तीय (Psychological) क्रियाओं का साथ-साथ विकास करते हुए ही अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर सकता है। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय मनोविज्ञान के प्रसंग में कहा है कि सांख्य दर्शन में जो "महत्" (Mahat) है उसी को योग में चित्त (Citta) कहा गया है तथा उसी को वेदान्त में 'बुद्धि' का पर्यायवाची माना गया है।** अतः मानवीय व्यक्तित्व के लिये चित्त का योग्य नियंत्रण किया जाना एक अनिवार्य शर्त है और चित्त के नियंत्रण से ही बुद्धि विकास और इस सही समझ से ही सभी दुःख, क्लेपों और मानसिक तनावों से राहत तथा छुटकारा मिलना संभव हो सकता है।

पातंजली के प्रथम सूत्र में "चित्त वृत्ति निरोध" को योग कहा गया है।***

---

* Ibid, page 338.

** Radha Krishnan ; Indian Philosophy Vol. II, page 345 (George Allen & Ulwin Ltd. London, Indian Edition of 1940.)

*** "योगश्च चित्तवृत्ति निरोध" पातञ्जली योग सूत्र संख्या 1.

यहाँ पर चित्त का अर्थ सम्पूर्ण मन और तन है, अतः योग का एक अर्थ तन (शरीर) (Body) तथा मन (Mind) का जोड़ है तथा इनका दूसरा अर्थ व्यक्ति (Individual) को समष्टि पुरुष (Impersonal Self, या Universal Self) का सम्मिलन है। इस दृष्टि से भारतीय योग में विज्ञान (Science) तथा धर्म (Religion) के सम्पर्क सूत्रों की खोज का यूंग ने जो सामञ्जस किये जाने का संकेत दिया है उसको खोजे जाने की पूर्ण संभावना है। पातंजली योग के आठ अंग माने गये हैं, अतः इसको अष्टांग योगाभ्यास कहा जाता है और यह आठ अंग हैं (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान और (8) समाधि। इस प्रकार योग के आठ चरण हैं जिसमें से प्रथम तीन चरण यम, नियम तथा आसन शारीरिक क्रियाएं (Physical & Body Functions) हैं तथा योग का चौथा चरण प्राणायाम शरीर और मन की मिश्रित क्रिया है। प्राणायाम के अन्तर्गत श्वास प्रश्वास याने (Breath) को नियंत्रित किया जाना यद्यपि शारीरिक क्रिया-कलाप माना गया है। किन्तु मानसिक दृष्टि से इसको doing of an individual का सम्पूर्ण Cosmos के साथ क्रिया संचालन में योग-दान किया जाना माना गया है और इसलिये प्राणायाम के माध्यम से व्यक्ति की क्रिया (Doing of the Individual) का सम्पूर्ण सृष्टि (Cosmos) की व्यापक गति (Universal dynamics) के साथ एक रूप रस हो जाना माना गया है और इस प्रकार योग की प्राणायाम क्रिया को तन और मन दोनों की संयुक्त क्रिया अर्थात् इसको शारीरिक तथा मानसिक सविशेष क्रिया माना है जो व्यक्ति तथा समष्टि दोनों के लिये कल्याणकारी एवं उपयोगी होना माना गया है। योग का पाचवां चरण प्रत्याहार (The abstraction of the senses from their natural functions) तथा छठा चरण ध्यान (Meditation 'या Concentration) तथा सातवां चरण धारणा या एकाग्रता (Point-Concentration) विशेष मानसिक या चित्तीय (Phychic) क्रियायें हैं जिसकी अन्तिम परिणिति पूर्ण समाधि अवस्था (Total absorption) में होना माना गया है जहाँ पर व्यक्ति साधक (जीवात्मा) एवं ध्यान के केन्द्र विन्दु (परमात्मा) के बीच का द्वन्द्व, भेद भाव ही मिल जाता है जो व्यक्ति विकास के पूर्णत्व एवं समग्रता का द्योतक है। इस प्रकार योग साधना में न केवल तन और मन (Body & mind) के जोड़ का विवेचन है, अपितु इसमें व्यक्ति और समष्टि अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा के मिलन की भी क्रिया-विधि है, अतः योग की सही जानकारी से अर्थात् योगाभ्यास से निःसन्देह विज्ञान तथा धर्म की क्रियाओं में कौनसी क्रिया श्रेष्ठ एवं समूची मानव-जाति के लिये क्या कल्याणकारी है, इस निरर्थक एवं गलत समझ से उत्पन्न विवाद का सम्पूर्ण दृष्टियों से समाधान किया जा सकता है। औद्योगिक क्रान्ति के दौरान में विज्ञान से विकसित तन की सुख-सुविधाओं की वृद्धि से यूरोपीयन्स का अब तक भौतिक चकाचौंध से प्रभावित होकर भौतिकवाद के दिखावेपूर्ण रास्ते का चल पड़ना उसकी खण्डिय

प्रतिभा का परिचायक है और इस एकतरफा दौड़ में सतत लगे रहने से पाश्चात्य निवासी मानव केवल बाहरी आकर्षणों में लिप्त रहकर अपनी बहिर्मुखी अभिवृत्ति के विकास में फंसा रहा है और वह स्वयं की अन्तर वृत्तियों अर्थात् अपने ही अवचेतन से सर्वथा बेखबर और असावधान रह गया है, फलतः वह अपनी अन्दरूनी शक्तियों का न तो विकास कर सका और न मानव प्रकृति के सहज दोषों का परिमार्जन कर सका है, फलतः अपने बाहर ऊँची और लुभावनी दुनियां के निर्माण के बावजूद भी वह अपने अन्दर से खोखला और अपूर्ण रह गया है और अपने बाहरी चकाचौंध पूर्ण भौतिक विकास के साथ ही साथ समूची मानवता को विध्वंस करने योग्य हिंसात्मक सामग्रियी की बेहिसाब संचयवृत्ति और लूटखसोट की वृत्तियों के विस्तार अपनी कम गहरी समझ से पहिचान नहीं कर सका है, और आज वह हिंसक अस्त्र राष्ट्र के संचय के खतरों की आशंकाओं से त्रस्त भयभीत एवं दिगमूढ़ सा नजर आता है जिसको यूंग ने भारतीय योग की ओर ध्यान देनें की जो चेतावनी या सलाह दी है, वह निःसन्देह यूंग की समग्र मानव-समाज को प्रदत्त एक विशिष्ट देन है क्योंकि यूंग का विश्वास है कि भारतीय योग की सम्यक् समझ से ही विश्व एवं मानव-जाति के कल्याण का रास्ता निकल सकता है।

यूंग ने विज्ञान को चित्त के चेतन सम्भाग की साज संवार कहा है और धर्म को अवचेतन की मूल क्रिया शक्ति माना है अतः चित्त की समग्रतापूर्ण पहिचान और समझ के लिये वैज्ञानिक को भी धर्म के रहस्यों की जानकारी का सम्पादन करना जरूरी है अन्यथा विज्ञान की एकांगी अंधेरी दौड़-धूप में समग्र मानव-जाति के अस्तित्व के नष्ट होने की आशंका ज्यों की त्यों बनी रहेगी और तन के सुख की बढ़ोतरी के साथ मानव के मन की बेचैनी भी बढ़ती रहेगी। जो मानव के व्यक्तित्व के विकास की सही पहिचान नहीं है, अपितु उसके आशंकित रोग एवं विध्वंस की पूर्व सूचना या चेतावनी है।

यूंग ने इस लेख के उपसंहार में भारतीय योग के महत्व को स्वीकार करते हुए भी अपने सहयोगियों को योगाभ्यास की जटिल क्रियाओं का अन्धानुकरण नहीं किये जाने की भी सलाह दी है। भारतीय परम्परा के अन्तर्गत भी योग साधना को केवल योग्य गुरू के सानिध्य में ही सम्पादित किये जाने का आग्रह है। क्योंकि गुरू के सानिध्य एवं मार्ग-दर्शन के अभाव में यौगिक क्रियाओं से व्यक्तित्व को नुकसान पहुंचने की आशकायें भी व्यक्त की गई हैं। इसलिये यूरोप निवासी मनोविश्लेषकों भारतीय योग साधना अपनाये जाने के बजाय यूंग ने सक्रिय कल्पना प्रणाली (Active Imagination method) का उपयोग किये जाने का सुझाव दिया है। भारतीय योग साधना प्रणाली पूर्वीय हजारों वर्षीय जीवन परम्परा का प्रतिफल है तथा जिसको केवल समर्थ योगी गुरू के ही मार्ग-दर्शन में क्रियान्वित किया जाना उचित माना गया है और पाश्चात्य चिन्तन और सभ्यता को पूर्वीय चिन्तन को

अपेक्षाकृत नवीन विजातीय एवं परम्पराहीन माना गया है, अतः किसी योग्य गुरू के सानिध्य एवं मार्ग-दर्शन के अभाव में पाश्चात्य विश्लेषक द्वारा योग साधना का नतीजा फलदायी तथा कल्याणकारी होने के बजाय दुःखदायी अथवा भयावह हो सकता है क्योंकि पश्चिम और पूर्व की मूल प्रकृति में काफी फर्क है, इसलिए पाश्चात्य चिन्तक के लिये वर्तमान स्थितियों में योगाभ्यास की प्रक्रियाओं से बचे रह कर केवल सक्रिय कल्पना विधि का अनुसरण करने का यूंग ने सुझाव प्रस्तुत किया है।

II

"The Dreamlike World of India" (भारत की स्वप्नवृत्त दुनियां) शीर्षक लेख में कार्ल गुस्ताव यूंग ने सन् 1938 में भारत में आगमन के प्रसंग में उनके द्वारा बम्बई में आने तथा भारत के गांवों में घूम-फिर वहां के पर्यावरण (Environment) के संबंध में उनके चित्त पर होने वाले प्रभावों की एक झांकी प्रस्तुत की गई है। इसका प्रकाशन एशिया (न्यूयार्क) सन् 1938 में किया गया है।*

जब सन् 1938 में कलकत्ता विश्व-विद्यालय की रजत जयन्ती के समारोह में तत्कालीन भारत सरकार के निमंत्रण पर कार्ल गुस्ताव यूंग बम्बई बंदरगाह पर उतर कर बम्बई के भीड़ भरी बस्तियों में पहुंचे तो वह बम्बई नगर की भव्य इमारतों से प्रभावित नहीं हुए और उन्होंने बम्बई नगर को आंग्ल-भारतीय सभ्यता का प्रतीक माना, जिसमें स्वप्नवत् भारत की उन्हें कोई झलक नहीं मिली, अतः वह बम्बई नगर के पड़ोसी भावों में स्वप्नवत् भारत की तलाश में निकल पड़े जहां पर विस्तृत भूखण्ड, हरीभरी पहाड़ियां, पीले धान के खेतों, आदिमकालीन छोटी-छोटी झोंपड़ियों, फैले हुए बरगद के पेड़ों, गहरे हरे रंग के ताड़वृक्षों से बड़े प्रभावित हुए और वहां के दुर्बल पतली टांगों के किसानों तथा रंगीन वस्त्रों में ढकी हुई महिलाओं से बड़े प्रभावित हुए जो यहां सहज एवं सरल स्वाभाविक जीवन यापन करते हुए शान्त, सन्तोषी एवं तनाव मुक्त हैं और निरन्तर बदलती हुई दुनियां में सदियों से पूर्ववत् जीवन-यापन करने के अभ्यासी हैं और इनका जीवन सभी हलचलों से अप्रभावित एवं सहज है। यूंग की मान्यता है कि भारतीय जीवन की सतत चिन्तन-धारा सनातन कालीन यथावत् अपरिवर्तनशील है और यहां जो कुछ दिखाई पड़ता है वह अखण्ड एवं अनिवार्य पुनर्जन्म का क्रम मात्र है, यहां पर जो है वह सदियों पूर्व रहा है और आगे भी इसी तरह बने रहने का विश्वास बना हुआ है। यूंग भगवान बुद्ध के अवतरण को एक उल्लेखनीय घटना मानते हैं किन्तु भारतीय विश्वास है कि भगवान बुद्ध के इस ऐतिहासिक जन्म के पूर्व भी अनेक बुद्धों के अवतार यहां हो चुके हैं और भगवान श्री गौतम बुद्ध के जन्म के बाद भी अनेक बुद्ध

---

* Collected Works of C. G. Jung, Vol. 10 pages 515 to 524.

का जन्म भविष्य में यहाँ होगा, ऐसी धारणा यहाँ के चिन्तकों में बन गई है। भारतीय चिन्तन में काल (Time) तथा स्थान (Space) का अपेक्षाकृत कोई अधिक महत्व नहीं है, और जीवन का क्रम, जन्म और मृत्यु तथा तत्पश्चात् पुनः जीवन का क्रम व्यक्ति के क्रमानुसार निरन्तर बने रहने का विश्वास यहाँ सर्वत्र पाया जाता है। इसलिये भारत में यह विश्वास व्याप्त है कि भारतीय योगी की क्षमताकाल तथा स्थान से परे है और एक योगी अपने सूक्ष्म शरीर से पृथ्वी, जल और अन्तरिक्ष में अपनी इच्छानुसार भ्रमण कर सकता है।

यूंग की मान्यता है कि एक भारतीय ही सच्ची दुनियां का निवासी है और उसका समूचा व्यक्तित्व जीवन्त और प्रयोजनीय है जब कि पाश्चात्य जगत् का प्राणी अभावग्रस्त एक पागलखाने का वन्दी है जो अपने चारों तरफ अभावों की प्रतिपूर्ति हेतु परेशान एवं भटकन में पड़ा हुआ प्रतीत होता है।* जब कि एक भारतीय का जीवन प्रयोजनीय एवं उसके कर्मों का ही सहज परिणाम मात्र है। इसके अलावा यूंग की मान्यता है कि एक भारतीय का जीवन सही, सार्थक एवं वास्तविक है और वह सर्वांग जीवन्त है तथा एक यूरोपवासी की तरह मस्तिष्क के कैपसूल की तरह वन्दी नहीं है।** इसलिये जो कोई भारत का निवासी है उसको सही जीवन-यापन करने के लिये किसी योग की साधना किये जाने की अनिवार्यता है।*** यूंग ने यह भी कहा है कि जो यूरोपीयन भारत में रहता है वह वस्तुतः एक संकीर्ण बोतल का वन्दी है और इस बोतल में यूरोप की हवा भरी हुई है इसीलिए भारत में रहने वाला विदेशी यूरोपीयन कांच की बनावटी दीवारों में रहकर यहाँ की सच्चाई के दर्शन करने के लिए असमर्थ हैं।

भारत यात्रा के दौरान कार्ल गुस्ताव यूंग को भारतीय विद्वानों तथा यहाँ की शिक्षित महिला समाज के साथ रहने एवं विचार-विमर्श किये जाने का अवसर प्राप्त हुआ। यूंग भारतीय नारी की सहज वेष-भूषा तथा उसके सरल व्यवहार एवं उच्च आचरण से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने भारतीय नारी को ऊपरी तड़क-भड़क

---

* "It is quite possible that India is the real world and that the white man lives in a mad house of abstractions. To be born, to die, to be sick, greedy, dirty, childish and ridiculously vain"—Collected Works. Vol. 10, page 518.

** "Life in India has not yet been withdrawn into the Capsule of the head. It is still the whole body that lives." Ibid, same page.

*** One would need some sort of yogi if one tries to live in India—Ibid, same page.

तथा लालसायुक्त जीवन से मुक्त पाया, जबकि यूंग की निगाह में एक आम यूरोपीयन महिला काम-ग्रस्त बनावटी तथा एक लड़के की तरह उछलकूद में संलग्न प्रतीत हुई। यूंग की मान्यता है कि भारतीय नारी अपनी लज्जाशील वेशभूषा, आत्मीयतापूर्ण व्यवहार एवं दृढ़ चारित्रिक शक्ति से विश्व के नारी जगत् को सुसभ्य संस्कृति सम्पन्न एवं एक आदर्श जीवन का रास्ता दिखा सकती है। यूंग ने भारत की संयुक्त परिवार के जीवन प्रणाली को सराहा है और संयुक्त परिवार में 25-30 व्यक्तियों का एक साथ-साथ आनन्द और संतोष के साथ रहना अभिनन्दनीय माना है। इस प्रकार यूंग ने सादगीपूर्ण भारतीय जीवन का इस लेख में स्वस्तीवाचन प्रस्तुत किया है।

III

"What India can teach us" (भारत से हम क्या सीख सकते हैं?) शीर्षक लेख का प्रकाशन फरवरी 1939 की ऐशिया (न्यूयार्क) में किया गया है।*

इस लेख में भारत की विस्तृत भौगोलिक स्थिति का उल्लेख करते हुए कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह प्रतिपादित किया है कि भगवान बुद्ध इस महान् देश के सबसे तेज़ चमकते हुए प्रकाश (Light) थे और बुद्ध द्वारा प्रतिपादित सुनहले मध्यम मार्ग में सम्पूर्ण मानव-जाति के उद्धार (Redemption) हेतु ज्ञान और दर्शन का अद्भुत सामंजस (Synthesis) होने पर भी यह दिव्य प्रकाश किन कारणों से इस विस्तृत देश से सर्वथा लुप्त हो गया? और क्यों बौद्ध मत को भारत से बाहर जाकर अन्य पूर्वीय देशों में अपने अस्तित्व को टिकाये रखने के लिये बाध्य होना पड़ा। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा यह मौलिक प्रश्न उठाया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यह सम्पूर्ण लेख यूंग द्वारा उठाये गये इस प्रश्न का खुलासेवार उत्तर प्रस्तुतीकरण है।

इस प्रसंग में यूंग ने इस अवधारणा का समर्थन किया है कि आध्यात्मिक प्रयत्नों (Spiritual Endeavours) के दौरान कोई भी विचारधारा ज्ञान के सर्वोच्च शिखर पर (On the apex of Illumination) स्थायी प्रकार से टिकी नहीं रह सकती। और यह तथ्य समग्र मानव-जाति के सामान्य अनुभवों से प्रमाणित है। बौद्ध-दर्शन या धर्म क्योंकि मानव-जाति के सर्वोच्च प्रयत्नों एवं आकांक्षाओं की सर्वोच्चता का प्रतिफल था अतः उसके लिये लम्बे समय तक इस उच्चतम स्तर पर टिका रहना निःसन्देह कठिन और असंभव था, फलतः बौद्ध जीवन-दर्शन को अपने जन्म स्थान से हटकर अन्य अल्प विकसित देशों में अपनी जड़ें जमाने के लिये बाध्य होना पड़ा।

यूंग की यह मान्यता है कि भारतीय धर्म एक विमान अथवा शिखर

---

* Collected Works of C. G. Jung, Vol. 10 pages 525-530,

(Podoga) के सदृश्य है जिस पर चीटीं की धीमी चाल से ऊपर पहुँचा जा सकता है और इतिहास के इस धीमे क्रम में ईश्वर (God) को अन्त में जाकर एक दार्शनिक विचार (A philosophical concept) प्रमाणित किया जा सकता है, किन्तु श्री बुद्ध का व्यक्तित्व बड़ा क्रान्तिकारी था और उन्होंने धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में सहज धीमी गति से विकास करने के बजाय यकायक उचित समय के पूर्व एक छलांग लगाकर यह घोषणा कर दी कि जाग्रत (Enlightened Man) मानव की सत्ता ईश्वर से भी ऊँची और महत्वपूर्ण है तथा ज्ञान सम्पन्न जाग्रत (Awakened) व्यक्ति देवताओं (Gods), गुरू (Teacher) तथा उनका उद्धारकर्त्ता (Redeemer) है। कार्ल गुस्ताव यूंग की मान्यता में श्री गोतम बुद्ध की यह घोषणा समय पूर्व तथा अतिवादी थी, जिसको भारत की सामान्य जनता द्वारा स्वीकार किया जाना संभव नहीं था, फलतः भारत में चिरन्तन सहज विकास की अभ्यासी जनता के द्वारा बौद्ध मत के प्रति अस्वीकृत का भाव क्रमशः बढ़ता हुआ पाया गया और यह अस्वीकृति का भाव प्रतिरोध की शक्ल में बदल गया और अन्त में जाकर यहाँ के मानव-समाज के द्वारा सम्पूर्ण बौद्ध-दर्शन, बौद्ध-धर्म और बुद्ध की सर्वोच्च समन्वय-युक्त जीवन-प्रणाली को इस देश की भूमि से बाहर खदेड़ दिया गया।

बौद्ध जीवन-पद्धति को यहाँ से बाहर निकाला जाना यूंग की दृष्टि में बुद्ध द्वारा भारतीय चिन्तन की ऐतिहासिक परम्परा पर बुद्ध द्वारा आघात (Interference) किये जाने का सहज परिणाम है। क्योंकि यहाँ के चिन्तन की धीमी किन्तु निरन्तर विकासोन्मुखी चिरन्तन धारा के अभ्यासी मानव-जाति के लिए ईश्वर को व्यक्ति का विचार मात्र माना जाना अत्यन्त कठिन तथा उसकी ऐतिहासिक परम्परा के सर्वथा विरुद्ध था फलतः बौद्ध मतावलम्बियों को यहाँ से अपना डेरा डण्डा हटाने के लिए बाध्य होना पड़ा।

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग श्री बुद्ध की विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न (Genius) मानते हैं और सचमुच जीनीयस का व्यक्तित्व साधारण आम जनता के व्यक्तित्व से भिन्न प्रकार का पाया जाता है, जो आम व्यक्ति से अधिक समग्रता पूर्ण होने पर भी स्वभावतः उतावला पाया जाता है। विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व (जीनीयस) के लिये धीमे सहज परिवर्तन की प्रतीक्षा में कुछ समय के लिये भी रुकना या निष्क्रिय बना रहना संभव ही नहीं है, क्योंकि क्रान्तिदर्शी व्यक्तित्व अपने सत्य की स्थापना आमूल चूल परिवर्तन किये जाने की क्रिया में अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये भी सावचेती रखने का भी कोई ध्यान नहीं रख सकता और वह जो कुछ सत्य अनुभव करता है, उसकी वह तत्काल प्रकाशन उसकी होने वाली प्रतिक्रिया पर सोच-विचार किये बगैर कर बैठता है। अतः बुद्ध ने जो सत्य का अनुभव किया उसका उन्होंने तत्काल प्रकाशन किया और इसका उन्हें यह नतीजा भी भुगतना पड़ा है और इसलिये बौद्ध विचारधारा को भारत से दूर पूर्वीय एशिया के अन्य अल्प

विकसित देशों में याने तिब्बत, चीन, जापान, ब्रह्मा, इन्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा आदि में जाना पड़ा, जहाँ पर भारतीय चिन्तन या अन्य किसी धार्मिक परम्परा का कम प्रभाव था।

इसके अलावा यूंग की मान्यता है कि भारतीय चिन्तन की अभिव्यक्ति वेदों से प्रारंभ होकर आरण्यकों ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, स्मृतियों तथा षट्दर्शनों तक प्रायः संस्कृत भाषा में की गई थी जो कि उच्चस्तरीय भारतीय समाज में प्रतिष्ठित भाषा मानी गई है। किन्तु बौद्ध-चर्या का माध्यम पाली भाषा या बोली को स्वीकार किये जाने से बौद्ध विचारों की जड़ें भारतीय प्रबुद्ध वर्ग के दिमाग में प्रायः नहीं जम पायीं, अतः बौद्ध परम्परा को यहाँ के प्रबुद्ध वर्ग के सहयोग के अभाव के कारण भी उसे यहाँ से अन्यत्र अन्य देशों में निष्कासित होना पड़ा। विचारों के प्रकाशन एवं आदान-प्रदान के व्यवहार में भाषा का भी निःसन्देह बड़ा महत्व रहता है और भाषा के कारण ही किसी विचार-धारा का फैलाव या संकुचित रह जाना संभव है, अतः भारत की सर्वमान्य प्रतिष्ठित संस्कृत के बजाय बौद्ध साहित्य का पाली में प्रकाशन से भी बौद्ध विचारों के प्रसार-प्रचार और स्थायित्व पर बड़ा विषम असर पड़ा है। इस प्रकार यूंग के द्वारा उठाये गये मौलिक प्रश्न के उत्तर में स्वयं यूंग द्वारा उपरोक्त खुलासा पेश किया गया है कि भारत में भारत श्रेष्ठ बुद्ध की सर्वोच्च परम्परा नहीं जम पाने का प्रधान कारण तो स्वयं बुद्ध की अति महत्वाकांक्षी घोषणा है, तथा दूसरा कारण बौद्ध विचार-धारा को राष्ट्र की स्वीकृत भाषा संस्कृत के बजाय पाली में अभिव्यक्ति किया जाना है।

इस लेख के अन्त में कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपने भारतीय पाठकों से क्षमा मांगते हुए यह प्रतिपादित किया है कि भारतीय चिन्तन से यह तथ्य प्रगट है कि एक सच्चा भारतीय प्रायः विचार नहीं करता अपितु वह विचारों का प्रत्यक्ष करता है अतः इस दृष्टि से एक भारतीय आदिम मानव के समान है। आदिम मानव का चिन्तन मुख्यतः अवचेतन स्तरीय पाया जाता है। और आदिम मानव नतीजों का प्रत्यक्षण (Perception) करता है और यह भारतीय सभ्यता की भी लक्षण या विशेषता है।*

---

* "I am now going to say something which may offend my Indian friends, but actually no offence is intended. I have, so it seems to me, observed the peculiar fact that an Indian, in as much as he is really Indian, does not THINK, at least not what we call 'thinking'. He rather perceives the thought. He resembles the primitive in this respect. I donot say he is primitive but the process of his thinking reminds me of the primitive way of thought-production."

—Collected Works of C.G. Jung, Vol, 10 page, 527.

कार्ल गुस्ताव की मान्यता है कि पाश्चात्य विकास आदिम-कालीन स्तर (Primitive level) से वर्तमान स्थिति तक स्वतः पहुंचा है किन्तु मानव-समाज के सहज विकास के इस दौरान में कतिपय वैज्ञानिकों की अद्भुत प्रतिभा सम्पन्नता के परिणामस्वरूप पाश्चात्य जगत् के विज्ञान एवं टेकनोलोजी के क्षेत्रों में अद्भुत पूर्व अप्रत्याशित उन्नति एवं विकास हो गया है और यहाँ के जन-जीवन की उच्च-स्तरीय बाह्य भौतिक समृद्धि नजर आती है—मानों किसी उच्चतम सभ्यता के सम्पर्क से या किसी अप्रत्याशित सहयोग के फलस्वरूप इसका रूपान्तिकरण (Transformation) हो गया हो। जिस प्रकार एक सभ्य यूरोपवासी ने किसी निग्रो गांव में आ बसने पर वहाँ की पिछड़ी आदिम-जाति में सभ्य यूरोपवासी के सम्पर्क मात्र से उक्त पिछड़े मानव-समाज में बाहरी तड़क-भड़क और वेश-भूषा के अनुकरण-स्वरूप अपना लिया जाता है तथा निग्रो युवक वर्ग भी श्वेत पेंट पटलून का पहिनावा अपना लेता है, किन्तु उक्त पिछड़ी जाति अपने विचारों का योग्य प्रकार से विकास नहीं कर पाती। उसी प्रकार कुछ विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न वैज्ञानिकों की गहन खोजों के परिणामस्वरूप रेल, बिजली, हवाईजहाज आदि का उपयोग पाश्चात्य देशों में घड़ल्ले से चल निकलता है किन्तु समूचे यूरोप का मानस स्वतः विकास की गति से तो विकसित हुआ है किन्तु उसका समूचा सर्वांग विकास अब तक योग्य प्रकार से नहीं हो सकता है—अर्थात् पाश्चात्य जन-समाज का मन (याने चेतन सम्भाग) तो विकसित हुआ है किन्तु उसका अन्दरूनी मन (अवचेतन) का तदनुरूप सच्चे अर्थों में योग्य सुधार या विकास नहीं हो सका है, अतः यूंग ने यह चिन्ता व्यक्त की है कि बाहरी भौतिक तरक्की के साथ आन्तरिक आत्मीय विकास नहीं होने की स्थिति में पता नहीं कब यह अप्रत्याशित बाह्य विकास का रथ कहीं प्रत्यावर्तित (Relapse) होकर विनाश का चक्र बन कर समूची मानवता को कहीं रोंद न दे ?

इसलिये पाश्चात्य मानव-समाज को यूंग ने चेतावनी के रूप में यह सलाह दी है कि पाश्चात्य चिन्तक को अपने आन्तरिक याने अवचेतन के विकास की ओर भी ध्यान देना चाहिए। ताकि विकसित चेतन का योग्य सामंजस विकसित अवचेतन से हो सके, अन्यथा मानव का व्यक्तित्व चेतन और अवचेतन में बंट कर (Split) भयावह परिणामों का कारण बन जायगा। आज के पाश्चात्य जगत् में बाह्य संभाग (चेतन संभाग) की जो दिखावटी उन्नति दीख पड़ती है वह सभ्यता का कल्याणकारी विकास नहीं होकर केवल मात्र आडंबर और दिखावा मात्र है, जो न तो स्थायी बना रह सकता है और न आगे जाकर यथार्थ कल्याणकारी बना रह सकता है। आज के भौतिक विकास के साथ हिंसक अस्त्र-शस्त्रों की बेशुमार संग्रह वृत्ति से भी अप्रत्याशित खतरे और आशंका की पूर्व सूचना मिल रही है। जिस प्रकार बुद्ध की विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित सर्वोच्च स्तरीय सामंजस पूर्ण ज्ञान का आलोक बुद्ध की मृत्यु के बाद अधिक समय तक भारत में नहीं टिक सका और

अन्ततोगत्वा बौद्ध प्रकाश अंधकार ग्रस्त होकर यहाँ से दूर भाग निकलने के लिए मजबूर हुआ—इसी तरह मानव-समाज ने यदि चित्त के चेतन सम्भाग के विकास के अनुसार समाज के अवचेतन सम्भाग की बराबरी के स्तर पर योग्य विकास या सुधार नहीं होगा तो निश्चयपूर्वक इसका परिणाम मानव-जाति के भी, अभ्युदय, विकास एवं अस्तित्व के लिये भविष्य में कभी भी प्रत्यावर्तित होकर समूचे विनाश का कारण बन जायगा। यूंग ने उपरोक्त सत्य को श्री बुद्ध चरित्र के भारतीय उदाहरण से व्याख्यायित किया है—और उसने यही सत्य पाश्चात्य चिन्तक को समझाने का इस लेख में बड़ी दक्षता एवं समझदारी के साथ प्रयत्न किया है। श्री कार्लगुस्ताव यूंग ने बौद्ध जीवन-पद्धति के अप्रत्याशित प्रादुर्भाव तथा कुछ समय बाद बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध समाज में इसको टिकाये रखने की सहज अक्षमता का विवेचन प्रस्तुत करते हुए इस बुद्ध चरित्र के उत्थान और पतन से पाश्चात्य जगत् को योग्य शिक्षा लेने का आग्रह किया है, अतः यह लेख निःसन्देह अत्यन्त तर्कपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक है।

IV

The Holy men of India (भारत के ऋषि) शीर्षक लेख प्रसिद्ध भारतविद् (Indologist) एवं पुराण विद्या विशारद (Mythologist) श्री हेनरीच झीमर (Henierich Zimmer) द्वारा रचित दक्षिण भारत के संतश्रेष्ठ श्री रमण महर्षि सम्बन्धी 167 पृष्ठीय ग्रन्थ की भूमिका के रूप में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा सन् 1944 में रचित एवं प्रकाशित किया गया है।*

श्री हेनरीच झीमर श्री कार्ल गुस्ताव के परम आत्मीय मित्र थे, जिनके असामयिक निधन से यूंग बड़े दुःखी हुए और इसलिए इस भूमिका में उन्होंने स्वर्गीय झीमर के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लिखा है कि श्री झीमर भारत के तत्कालीन ऋषि श्री रमण महर्षि से अत्यधिक प्रभावित थे, अतः जब यूंग 1939 में भारत यात्रा से वापस लौटे तो श्री झीमर ने उन्हें सबसे पहला सवाल यही किया कि क्या उसकी (यूंग की) तिरुवन्नमलाई (Triuvannamalai) के श्री रमण महर्षि से भेंट हुई या नहीं ? और जब यूंग ने इस प्रश्न का नकारात्मक उत्तर दिया तो श्री झीमर ने इसको यूंग द्वारा अक्षम्य त्रुटि किया जाना माना। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने तब यह अनुभव किया कि उन्होंने श्री रमण महर्षि से साक्षात्कार का लाभ नहीं लेकर निःसन्देह एक भूल की है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग की मान्यता रही है कि श्री हेनरीच झीमर ने बड़ी गहराई से भारतीय सत्य को आत्मसात् किया था और उसकी भी यह हार्दिक कामना रही थी कि काश, वह (झीमर) भारतीय आध्यात्मवाद के साक्षात् प्रतिनिधि श्री रमण महर्षि से मिल कर

---

* Collected Works of C. G. Jung, Vol. 11, page 576-586.

भारत की आत्मा को पूर्ण रूप से आत्मसात् कर सकते। किन्तु द्वितीय महायुद्ध प्रारंभ हो जाने के फलस्वरूप श्री झीमर की यह मनोकामना अधूरी रह गई और सन् 1944 में अचानक श्री हैनरीच झीमर की भी असामयिक मृत्यु हो गई।

श्री यूंग ने इस लेख में यह स्वीकार किया है कि यदि उन्हें दुबारा भारत यात्रा का अवसर मिलता तो वह शायद श्री रमण महर्षि से नहीं मिलने की भूल का परिमार्जन करते, किन्तु वह ऐसा नहीं कर सके। इसके अलावा यूंग ने इस भारतीय ऋषि श्री रमण महर्षि के साथ भेंट किए जाने को उस समय अधिक महत्व भी नहीं दिया था, क्योंकि उन्हें श्री रमण महर्षि के दर्शन में किसी अलौकिकत्व (Uniqueness) पाए जाने में भी सन्देह था—तथा उन्होंने श्री रमण महर्षि को भी अन्य भारतीय ऋषियों की तरह एक महान् संत और आराध्य पुरुष तो मान लिया था–किन्तु उन्हें उनमें कोई निरालापन होना नहीं माना था। यूंग की मान्यता है कि भारत में यत्र-तत्र अनेक संत एवं दिव्य पुरुषों से अनायास भेंट हो जाती है तथा यहाँ के अनेक महात्माओं में भारतीय आध्यात्म और आत्मा की झलक या झांकी मिलती ही रहती है क्योंकि भारत की जमीन और यहाँ का दिव्य वातावरण अनादि काल से आज तक अनेक संतों, योगियों, ऋषियों एवं आध्यात्म पुरुषों का स्वतः निर्माण करती रही है, जिनकी वाणी, लेखन और जीवन व्यवहार में भारत की आत्मा तथा यहां का आध्यात्मवाद क्रमशः गुंजित, अभिव्यक्त और जीता हुआ पाया जाता है। तथा यहाँ सर्वत्र भारत के आध्यात्म जीवन (Spiritual life of India) की व्याप्ति है जो यहाँ की सुरुचिपूर्ण सुगंध (Pleasant fragrance) या दिव्य संगीत (Melody) की तरह आनन्द एवं कल्याणकारी है, जिसका अनुभव उपनिषदों के पढ़ने से, अथवा बुद्ध के प्रवचनों के अध्ययन से तथा यहाँ के अनेक महापुरुषों के उपदेशों के श्रवण मात्र से प्राप्त हो सकता है।* अतः श्री यूंग ने अपनी भारत यात्रा के दौरान श्री रमण महर्षि से भेंट किए जाने की अनिवार्यता को उस समय महसूस नहीं किया और उस समय उन्होंने श्री रमण महर्षि के एक शिष्य से अनायास होने वाली भेंट तथा उसके साथ रह कर श्री रमण महर्षि के लेखन को समझ के साथ आत्मसात् करने के प्रयत्न को ही पर्याप्त समझा। श्री रमण महर्षि के जिस शिष्य से श्री यूंग की त्रिवेन्द्रम (Trivendrum) में भेंट हो गई वह एक बहुत सीधा सादा शिक्षक मात्र था, जिसने श्री रमण महर्षि के अगाध ज्ञान को अपने जीवन में अच्छी तरह पचा लिया था और वह महर्षि के प्रति अटूट श्रद्धावान् था। यूंग की मान्यता में यह शिक्षक बड़प्पन, चतुराई और दिव्यत्व (Holiness) से कोसों दूर था और इस दृष्टि से यूंग ने इस भेंट को श्री रमण महर्षि के साथ वांछनीय भेंट से भी स्वयं के लिए अधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण माना** तथा यूंग ने

---

* Ibid page, 577–78.
** Ibid page, 578.

इस शिष्य के साथ रह कर श्री रमण महर्षि के विचारों का बड़ी गहराई से अध्ययन किया तथा इस शिष्य के साथ गंभीर विचार-विमर्श करते हुए श्री रमण महर्षि द्वारा अभिव्यक्त किए गए विचारों को भली-भांति समझने तथा उन्हें आत्मसात् किए जाने का निष्ठापूर्वक प्रयत्न किया।

श्री रमण महर्षि में निःसन्देह यूंग की बड़ी आस्था थी और उनको यूंग ने भारतीय आध्यात्मिक जीवन (Spiritual life of India) का एक श्रेष्ठ प्रतिनिधि मानते हुए उन्हें भारतीय प्रतिभा या ज्ञान का श्रेष्ठ व्याख्याता बतलाते हुए उन्हें भारत भूमि की सही उपज (A Hominum Home—a true son of the Indian Earth) कहा है।*

अतः श्री यूंग ने श्री रमण महर्षि की रचनाओं को बड़ी रुचि और समझ के साथ पढ़ा है। यूंग की मान्यता है कि श्री रमण महर्षि के विचार बड़े सुन्दर हैं तथा उनमें निखालिस भारत की झलक मिलती है, जिसमें सनातन शाश्वतता के श्वास-प्रश्वास (The breadth of the Eternity) तथा युगों का संगीत (The song of the Ages) ही नहीं मिलता अपितु रमण महर्षि के लेखन में समग्र भारतीय आत्मा की सही एवं सच्ची अभिव्यक्ति मिलती है, इसलिए यूंग ने श्री रमण महर्षि को भारतीय आत्मा का नवीनतम संस्करण या अवतार (Youngest Incarnation) माना है, जिन्होंने आत्मा को अहम् का अहम् (Ego) कह कर यानि आत्मा को विषयी का विषयी (Subject of the subject) कहते हुए आत्मा को ही एक मात्र मूलाधार तथा सम्पूर्ण अहम् (Ego) तथा संपूर्ण विश्व का नियंत्रक (Controller) माना है।**

श्री रमण महर्षि ने इस मानव शरीर (The body) को केवल एक मिट्टी का ढेला (This clod) कह कर इसे महत्वहीन माना है।*** क्योंकि यह शरीर परिवर्तनशील एवं नाशवान् है—और यह सत्य सामान्य मानव द्वारा सहजता के साथ अनुभव किया जा सकता है। भारतीय चिन्तन में वस्तु या पदार्थ (Matter) तथा मन (Mind) के झगड़ों का कोई जिक्र ही नहीं है, क्योंकि नाशवान् तथा नित परिवर्तनशील पदार्थ (Matter) को सर्वथा महत्वहीन मान कर चिन्तन की दृष्टि से इसे उपेक्षणीय माना गया है, जबकि पाश्चात्य चिन्तन में वस्तु (Matter) तथा मन के बीच क्या महत्वपूर्ण एवं चिन्तनीय है, इस बाबत प्रायः चर्चा किया जाना पाया जाता है। भारतीय चिन्तन में इसके बजाय आत्मा (Spirit) तथा अहम् (Ego) के बीच सतत होने वाले संघर्ष का विस्तृत विवेचन है, और भारतीय चिन्तन के

---

* Ibid, page, 577.

** Ibid, page, 579–80.

*** Ibid, page, 580.

अन्तर्गत आत्मा (Spirit) को अहम् (Ego) की अपेक्षा अधिक महत्व देकर आत्मा की प्राप्ति हेतु समूचे अहम् को जड़मूल से नष्ट कर संपूर्ण अहम् को आत्मा में डुबा देने या विलय कर देने का संकेत या आग्रह प्रकट किया गया है। यूंग की मान्यता है कि प्राय: एक सामान्य पाश्चात्य विद्वान् के द्वारा भारत में चिन्तनीय आत्मा (Self) तथा अहम् (Ego) के इस संघर्ष को समझ पाना कठिन है, क्योंकि भारतीय चिन्तन अनादि काल से अब तक शरीर (Body) तथा मन (Mind) के विवादास्पद स्तर (Level) से काफी अधिक ऊँचा उठ चुका है, और सदियों से भारतीय संत, ऋषि, योगी या चिन्तक वर्ग के विचार का मूल बिन्दु (Basic Central point of Thinking) केवल आत्मचिन्तन या विवेचन ही रहा है। अनादि काल से यानि वेद, उपनिषद् काल से आज तक प्राय: प्रत्येक भारतीय चिन्तक ने अहम्, (Ego) को मानव-जीवन के समग्र विकास के लिए एक प्रवल रोड़ा—अवरोधक (Obstacle) माना है, तथा इस अहम् (Ego) का आत्मज्ञान प्राप्ति, या प्रभु के साथ सानिध्य स्थापित करने के लिए जड़मूल से इसका मूलोच्छेदन किया जाना जरूरी माना है। श्री रमण महर्षि के वुजुर्ग ऋषि श्रेष्ठ श्री भगवान् श्री रामकृष्ण परमहंस ने भी अहम् (Ego) को प्रभु (ईश्वर) मिलन के लिए सबसे बड़ी बाधा होना माना है, क्योंकि प्राय: सभी भारतीय महात्माओं ने यह स्पष्ट घोषणा की है कि मानव में जब तक अहम् (Ego) रहेगा, तब तक वह न तो आत्मा को समझ पाएगा और न वह आत्मसाक्षात्कार अथवा प्रभु–सानिध्य प्राप्त कर सकेगा। क्योंकि यह अहम् या खुदी (Ego) ही मानव को आत्मा या खुदा से अलग तथा जुदा रखता है, अत: जैसे ही अहम् मिटा मानव आत्मस्थ हो जाता है तथा जैसे ही 'खुदी' मिट्टी मानव स्वयं 'खुदा' वन जाता है। अत: सभी भारतीय चिन्तकों ने मानव-जीवन एवं आत्म-विकास के लिए अहम् (Ego) को नष्ट किए जाने की अनिवार्यता पर जोर दिया है। अहम् (Ego) के समूल नष्ट होने पर ही व्यक्ति आत्मा या परमात्मा के साथ एक और समरस हो सकता है। श्री रामकृष्ण परमहंस ने भी इस अहम् (मैं पन यानि "I-ness") को यद्यपि नष्ट कर उसको आत्मा में विलय किया जाना जरूरी माना है। उन्होंने कहा है कि संपूर्ण अहम् को नाश करना यद्यपि जरूरी है, फिर भी यह मानव के लिए बड़ा कठिन अवश्य है, अत: श्री रामकृष्ण परमहंस ने मार्गदर्शन दिया है कि यदि एक साधारण श्रेणी का मानव इस उच्च लक्ष्य तक नहीं पहुंच सके तो कम से कम उसे अहम् को तुच्छ एवं नगण्य (Insignificant and worthless) मान कर उसे 'प्रभु के विनम्र सेवक' (A Servant of God) की तरह रहने दिया जा सकता है।*

---

* He goes so far as to suggest that the industructibility of the Ego with the words, "It | this sense of I-ness will not leave, then let it stay on as the Servant of God".
—Gospel of Ram Krishna as quoted in the Collected Works of C. G. Jung, Vol. 11 at page 58.

इस लेख में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने यह भी प्रतिपादित किया है कि पूर्वीय धार्मिक क्रियाओं (Eastern religious practice) तथा पाश्चात्य रहस्यवाद (Mysticism) के लक्ष्य में समानता है। भारतीय चिन्तन में अहम् को आत्मा (The self) में तथा मानव (Man), विश्वात्मा (God) में लय किया जाना ही सर्वोपरि लक्ष्य माना गया है—और श्री रमण महर्षि ने भी इसी परम्परा के अन्तर्गत अहम् (Ego) को आत्मा में विलय किये जाने के लक्ष्य का प्रतिपादन किया है ताकि आत्मा (The self) में संपूर्ण चित्तीय क्रियाओं (All the psychic functions) का समावेश होकर मानव व्यक्तित्व पूर्ण, समग्र एवं समन्वित हो सके, और यही धर्म (Religion and Ethics) आचार शास्त्र का सार (Essence) है।*

V

पूर्वीय 'ध्यान-योग' का मनोविज्ञान शीर्षक इस लेख का आधार सन् 1943 में श्री कार्ल गुस्ताव द्वारा दिए गए तीन भाषण हैं, जिन्हें यूंग ने योग्य संशोधन करने के बाद एक लेख के रूप में स्थानीय एक जर्मन भाषी पत्रिका में प्रकाशित किया तथा जिसका अंग्रेजी रूपान्तर श्री करोल बाऊमन (Carol Bowmans) द्वारा किया गया जो बाद में प्रसिद्ध भारतीय विद्या मर्मज्ञ (Indologist) श्री आनन्द के. कुमार स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ 1948 में प्रकाशित किया गया।**

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग अपने मित्र स्वर्गीय श्री हेनरीच झीमर (Henierich) Zimmer) कृत (The myths and Symbols is Indian Art & Civilization*** तथा The Art of Indian ASIA से बड़े प्रभावित हुए थे, जिसमें श्री झीमर ने योग (Yoga) एवं धर्मानुशासित भारतीय स्थापत्य कला (Hiratic Arcitecture) के प्रगाढ़ सम्बन्धों (Profound relationship) पर बड़ी योग्यता एवं निष्पक्षता से विस्तार के साथ प्रकाश डाला है। अतः यूंग, श्री झीमर की असामयिक मृत्यु से बड़े व्यथित हुए और उन्होंने श्री झीमर की मृत्यु को भारतीय विद्या (Indology) के क्षेत्र में एक महान् क्षति बतलाया है, जिसकी क्षतिपूर्ति किया जाना असंभव है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग श्री झीमर को भारतीय चिन्तन का एक श्रेष्ठ व्याख्याता माना है जिसका सत्यापन–समर्थन किसी निष्पक्ष विद्वान् द्वारा

---

* Colletced Works Volume 11 at pages 581-83.

** Collected Works of C. G. Jung Vol. 11 pages, 558 to 575.

*** श्री हेनरीच झीमर कृत इस उल्लेखनीय ग्रन्थ का सम्पादन श्री जोसेफ केम्प बेल द्वारा किया गया है तथा इसका प्रकाशन बोलीनगम सीरीज के अन्तर्गत 1945 में न्यूयार्क (USA) से किया गया है, जिसमें भारतीय स्थापत्य कला सम्बन्धी 70 दुर्लभ चित्र हैं।

भारत स्थित भरहुल (Bharbul) एवं सांची (Sanchi) की भव्य स्थापत्य कला को देख कर तथा तत्सम्बन्धी श्री झीमर के विवेचन का मिलान किए जाने से किया जा सकता है।

प्रस्तुत लेख का विभाजन दो खण्डों में किया जा सकता है। प्रथम खण्ड में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने श्री झीमर द्वारा प्रस्तुत विवेचन के आधार पर भारतीय कला सम्बन्धी भारतीय अन्तर्दृष्टि (Indian Insight) एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण (Western Outlook) के अन्तर को स्पष्ट किया है तथा दूसरे खण्ड में ध्यान-योग के मनोवैज्ञानिक पहलू का विवेचन करते हुए बौद्ध धर्मावलम्बियों में बहुमान्य ध्यान सम्बन्धी प्राचीन ग्रन्थ 'अमिता ध्यान सूत्र' (Amita Dhyan Sutra) का विस्तार के साथ परिचय एवं विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

कार्ल गुस्ताव यूंग ने इस लेख के प्रेक्ष्य में भारतीय कला (विशेषतः स्थापत्य कला) विषयक भारतीय अन्तर्दृष्टि (The Indian Insight) एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण (The Western Out look) का अन्तर स्पष्ट किया है। एक पाश्चात्य समीक्षक अपने चर्म चक्षुओं से भारतीय कलाकृति को केवल मात्र देखता (Looks) है और वह इस कलाकृति की आकृति (Form) तथा उसके बाहरी रूप-रंग एवं संचार को अपनी मन की तराजू से तोल कर उसका मूल्यांकन करता है जबकि एक भारतीय चिन्तक कला का 'दर्शन' करता है अर्थात् वह कला की प्रत्यक्ष अनुभूति (Direct Experience) करता है और कला की बाहरी आकृति, रंग, रूप एवं गुणों की ओर कोई विशेष ध्यान दिए बगैर वह उक्त कलाकृति में निहित सर्वव्यापक आत्मा की झलक की तलाश कर तथा उसे समझ कर उसमें अपने व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से क्या-क्या संभावनाएं हैं, इसका विचार करता है। इस प्रकार पाश्चात्य दर्शक कला को बाहर से देख कर अपने मन से उसकी बाह्य आकृति, रूप, रंग को तौल कर उसका विवेचन प्रस्तुत करता है, जबकि एक भारतीय चिन्तक कला का दर्शन कर, उसमें निहित आत्मा की झलक को समझ कर तथा उसकी अनुभूति करते हुए इस कला को उसके जीवन-विकास की दृष्टि से क्या महत्व एवं उपयोग हो सकता है, इसकी तलाश या विवेचन करता है। भारतीय चिन्तक की मान्यता में कला आत्मा की झलक या आत्म अभिव्यंजना है, जबकि एक पाश्चात्य विश्लेषक की नजर में कला किसी व्यक्ति या समूह विशेष के प्रयत्नों का प्रतिफल मात्र है—जिनको बाहरी पैमाने पर नापा-तोला या परखा या व्याख्यायित किया जाता है।* भारतीय चिन्तक के अन्तर्गत कला आत्मा की अभिव्यक्ति है, अर्थात् कला के माध्यम से आत्मा प्रतिबिम्बित होती है, और इसलिए एक भारतीय चिन्तक की मान्यता में कला के प्रयोजन की जानकारी से स्वतः व्यक्तित्व विकास की संभावनाओं को

---

* Collected Works of C. G. Jung Vol, 11 pages, 558–9.

कार्यान्वित किया जा सकता है। इसलिए पाश्चात्य जगत् में 'कला कला के लिए' का निरर्थक नारा या शोरगुल प्रायः सुनाई देता है जबकि भारतीय चिन्तक के अन्तर्गत 'कला जीवन के लिए' उपयोगी मानी जाकर, कला का योग्य उपयोग मानवीय व्यक्तित्व के विकास हेतु किए जाने का आग्रह पाया जाता है।

कला विषयक पूर्व और पश्चिम के इस नजरिये में भेद या अन्तर के कारणों को भी श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। कार्ल गुस्ताव यूंग ने अभिवृत्ति (Attitude) की दृष्टि से पूर्व एवं पश्चिम के मानव-समाज के देखने, सोचने, समझने और अनुभव किए जाने की प्रक्रिया में फर्क या अन्तर पाया जाना सहज एवं स्वाभाविक माना है। प्रायः पाश्चात्य मानव वर्ग 'बहिर्मुखी' है जो स्वभावतः बाहर की ओर बढ़ता है, बाहर की ओर देखता है और बाहरी आकृति, रूप, रंग की ओर आकर्षित होकर उसका बाहरी मूल्यांकन करता है जबकि स्वभावत; भारतीय समाज प्रायः 'अन्तर्मुखी' है, जो बाहरी जांच पड़ताल के बजाय अपने मन के अन्दर गहराई में स्थित अवचेतन को समझने तथा अपने आत्मानुभव के आधार पर उसकी सृजनात्मक शक्ति का योग्य उपयोग करने तथा अपने व्यक्तित्व विकास की मंजिल पर अपने सही स्वभाव और स्वरूप मे पहिचान करने अर्थात् आत्म-साक्षात्कार किए जाने को ही अपने मानव-जीवन की सार्थकता मानता है, अतः भारतीय चिन्तन में सत्य (Reality) एवं दृश्याभास (Appearance) के भेद को समझने का प्रयत्न पाया गया है। तथा जो कुछ केवल इन्द्रियों के माध्यम से जाना गया है उसी को 'सत्य' नहीं माना जाता। इन्द्रियों से तो सत्य के गुणों की जानकारी होती है जबकि सत्य गुणातीत कहा गया है। अतः भारतीय चिन्तन के अनुसार केवल जो दिखता है उसी को सत्य नहीं माना जाता, अपितु सत्य को केवल प्रत्यक्ष अनुभवगम्य माना गया है। अतः पश्चिम में बाहर से जो कुछ देखने से पाया गया है, उसी को सत्य मान लिया गया है क्योंकि पाश्चात्य धारणा के अनुसार भी जो पहिले इन्द्रियों में नहीं था वह बाद में मन में होना नहीं माना जा सकता।* अतः पश्चिम में बाहर से प्राप्त ज्ञान को ही सत्य मान लिया है किन्तु इसको भारतीय चिन्तन में प्रामाणिक नहीं माना गया है, क्योंकि बाहर से प्राप्त इन्द्रिय जन्य जानकारी सत्य (Truth) नहीं होकर केवल आभास 'Appearance) मात्र है।*

---

* We even derive from outside on the Principle that, nothing is in mind which was not previously in the senses. This principle seems to have not validity in India. Indian Thought and Art merely appear in sense world, but do not derive from it.

—Collected Works of C. G. Jung, Vol. 11 at page, 559.

इसी प्रसंग में यूंग ने इस लेख में यह भी खुलासा पेश किया है कि भारतीय स्थापत्य कला में जहाँ कहीं विलक्षण इन्द्रिय लोलुपता के दृश्य दिखाई पड़ते हैं वह अश्लील नहीं होकर केवल भारतीय आत्मा की सर्वव्यापकता को जन साधारण में प्रचलित क्रियाकलापों के प्रतीकों के माध्यम से समझाने का प्रयत्न है; अतः उन्हें अश्लील कहा जाना योग्य नहीं है क्योंकि भारतीय चिन्तन में शरीर, इन्द्रियों और शारीरिक क्रियाओं को सारहीन एवं महत्वहीन माना है एवं इनको सत्य से परे केवल आभास (Appearance) मात्र कहा गया गया है। अतः यूंग ने पाश्चात्य विद्वानों द्वारा केवल मात्र बाहरी आकृतियों एवं उनकी मुद्राओं को देख कर इन्हें अश्लीलता घोषित करने के जो नतीजे निकाले गए हैं उनको यूंग ने समर्थन योग्य नहीं माना है। यूरोप निवासी क्योंकि केवल मात्र अपने शरीर और इन्द्रियों को महत्व देता है, अतः वह अपनी बहिर्मुखी अभिवृत्ति (Extrovert attitude) के परिणामस्वरूप सर्वत्र शरीरत्व (Corpo-reality)को ही देखने का अभ्यस्त हैं, जबकि भारतीय चिन्तक जो स्थूल रूप में देखता है उसको वह सत्य (Real) की तरह स्वीकार नहीं करता क्योंकि एक भारतीय के लिए सत्य की परिभाषा 'जो दिखाई पड़े' वह सच्चाई नहीं है अपितु क्रियाशक्ति (Activity) को ही यहाँ 'सत्य' कहा गया है।* अतः प्रदर्शित आकृतियों को केवल आभास कहा जा सकता है तथा उन्हें क्रियाशक्ति नहीं माना जा सकता।

इस प्रकार पाश्चात्य प्रेक्षण (Observation) एवं भारतीय आत्मानुभूति के अन्तर को स्पष्ट करते हुए श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने धार्मिक क्रियाओं के अन्तर को स्पष्ट किया है। पाश्चात्य धर्मवेत्ता धर्म को ऊपर उठाने वाली (Up-lifting & Exalting) क्रिया शक्ति मानता है क्योंकि पाश्चात्य धार्मिक के लिए ईश्वर (God) इस विश्व का मालिक (Lord of the universe) है, अतः चर्च संगत धर्म के अन्तर्गत प्रभु मसीह अपने बन्दे को अपने साथ ऊपर उठा कर अपने साथ संयुक्त करने वाला बतलाया गया है जबकि भारतीय धर्म के अन्तर्गत 'ध्यान' के माध्यम से व्यक्तित्व का स्वयं की आत्मा में डूब कर अपनी खुदी (पृथक् अस्तित्व) को आत्मा में विलीन किया जाना ही धर्म का प्रयोजन बतलाया गया है—ताकि

---

* What the European notices at frist in India is the outward CORPO-REALITY, he sees everywhere. But that is not India as the Indian sees it, that is not his reality. Reality is that which WORKS. For us (Europeans) the essence of what works is the world of Appearance, for the Indian it is the SOUL. This world for him is mere show or facade and reality come close to Being what we western call a dream.
—Collected Works Vol, 11 at pages, 559-60.

साधक अपने पृथक् व्यक्तित्व को आत्मा, ईश्वर या विश्वात्मा में डुबो कर एकरस एक हो जाए, अतः पश्चिम में ऊपर उठाया जाना भारतीय धर्म में अनन्त आत्मा या अवचेतन की गहराई में डूबा जाना है ताकि व्यक्ति अपने पृथकत्व में (जिसको अहम् या खुदी या पृथक् व्यक्तित्व कहा जा सकता है) आत्मा, भगवान, विश्वात्मा में सम्पूर्णतः लय कर दिया जा सके और यही भारतीय धर्म का सर्वोच्च लक्ष्य या उद्देश्य है—जो भारतीय अन्तर्मुखी अभिवृत्ति का सहज परिणाम या प्रतिफल है। पश्चिम में किया जाने (Doing) में विश्वास किया जाता है जबकि भारत में प्रभु के साथ एक होने (Being) को ही आदर्श माना गया है। अतः पश्चिम में प्रार्थना, अर्चना तथा बाइबल के सूत्रों का वाचन, पठन-पाठन तथा उनको गुनगुनाना ही धार्मिक क्रिया संपादन है जबकि भारत में आत्मा या प्रभु के विषय के लिए योगाभ्यास किए जाने का आग्रह पाया जाता है ताकि व्यक्ति 'अवचेतन' की गहराई में डूब कर 'मुक्ति' के दिव्य मोती को प्राप्त कर अपने सभी शारीरिक-मानसिक क्लेशों, एवं दुःखों से तथा निरन्तर जन्म-मरण के अनिवार्य चक्कर से आजाद अथवा मुक्त हो जाए। यूरोप के गिर्जाघर, जिन्हें प्रभु का निवास मान कर उनकी आराधना के हेतु निर्मित किया जाता है वे प्रायः जमीन से ऊंची सतह पर निर्मित किए जाते हैं जबकि पूर्वीय आराधना स्थल मन्दिर या योगाभ्यास का स्थान यदाकदा छः से आठ फीट भूमि की सतह से नीचे पाए जाते हैं, जहाँ पर बैठ कर भारतीय साधक संपूर्ण दुनियाँ से अलग हट कर एवं पूरी दुनियाँ भूल कर अपनी ही आत्मा या अपने आराध्य के प्रतीक में ध्यान केन्द्रित कर सकें। भारतीय चिन्तन और धार्मिक क्रिया संपादन में 'योग साधना' तथा योगाभ्यास को प्रायः सर्वोपरि महत्व दिया गया है क्योंकि 'योग' को ही साधक का अपने व्यक्तित्व को आराध्य देव से अपने अहम् को आत्मा से तथा आत्मा का विश्वात्मा के साथ जोड़ने (Add) तथा संयुक्त होकर एक होने का सर्वश्रेष्ठ साधन या क्रिया माना गया है।*

तब 'योग' क्या है ? इस लेख में यह प्रश्न स्वयं में श्री यूंग ने उठाया है और यहीं से इस लेख का उत्तरार्द्ध खण्ड प्रारंभ होता है। यूंग ने 'योग' का अर्थ मानवीय चित्तीय शक्तियों का योग्य नियंत्रण किया जाना माना है।** और यूंग की यह व्याख्या महर्षि पातंजली के योग सूत्र के प्रथम सूत्र के समान है।*** सचमुच चित्त

* Ibid page, 560.

** What then is yoga ? The word literally mean 'Yoking' i.e., the disciplining the instructual forces of Psyche—which in Sankrit are called KLESHAS. The Yoking aims at controlling these forces that fetter human beings to the world.
—Collected Works Vol. 11 at page 560.

*** "योगश्च चित्तवृत्ति निरोधः" पातञ्जली योगसूत्र प्रथम सूत्र।

की सहज वृत्तियों के निरोध से तन-मन से, मन आत्मा से एवं आत्मा का परमात्मा से जोड़ हो जाता है, अतः योग जोड़ का पर्यायवाची है। योग की अनेक शाखाएं-प्रशाखाएं हैं। जैसे मंत्र-योग, तंत्र-योग, कुण्डलिनी-योग, हठयोग आदि। किन्तु पातंजली के योग सूत्र को ही भारत में सबसे अधिक महत्व दिया गया है। जिसके आठ चरण (Stages) हैं अतः इसे 'अष्टांग योग भी कहा गया है। इस योग के प्रथम चार चरण-यम, नियम, आसन एवं प्राणायाम शारीरिक क्रियाओं के नियंत्रण की विधि हैं तथा अष्टांग के इस पांचवें चरण 'ध्यान' को मानसिक अर्थात् चित्तीय क्रियाओं को नियंत्रित किए जाने की विधि का विवेचन है, ताकि इस विधि के प्रयोग से व्यक्ति का अहम् नष्ट होकर आत्मा में विलय हो जाए तथा आगे जाकर मुक्त जीवात्मा व्यापक विश्वात्मा में घुल-मिल कर एक और अद्वैत होकर मानवीय जीवन को सर्वोच्च सिद्धि को प्राप्त कर सके।

इस प्रसंग में कार्ल गुस्ताव यूंग ने 'ध्यान योग' सम्बन्धी 'अमितयूर ध्यान सूत्र' (Amitayur Dhyan Sutra) का सविशेष उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ का बौद्ध धर्मावलम्बियों द्वारा सविशेष महत्व है। मूल ग्रन्थ संस्कृत भाषा में रचित है तथा इसका चीनी भाषा में अनुवाद सन् 424 ईस्वी में किया जाना माना जाता है तथा इस ग्रन्थ का खास-तौर से जापान में बड़ा सम्मान है।*

उपरोक्त ध्यान-सूत्र के सम्बन्ध के बौद्ध 'महायान सूत्र' के एक अन्तर्कथा के अनुसार भगवान श्री बुद्ध के समय एक महारानी ने अत्यन्त विषम परिस्थिति से परित्राण पाने हेतु तथागत भगवान श्री बुद्ध को मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु 'ध्यान' किया अतः श्री बुद्ध ने अपने दो प्रमुख शिष्यों (श्री मुदगलयान एवं श्री आनन्द) को तत्काल इस महारानी के पास भेजा, तथा बाद में शाक्यमुनि बुद्ध स्वयं उसके सामने प्रकट हुए तथा उसे 'ध्यान योग' का प्रशिक्षण देते हुए दस विश्व (Ten Worids) का दिग्दर्शन कराया ताकि वह इनमें से किसी विश्व का अपने पुनर्जन्म के लिए चुनाव कर सके। इस पर उक्त महारानी ने अमिताभ (Amitabha) के पश्चिम क्षेत्र का चुनाव किया। तथा श्री भगवान बुद्ध ने इस क्षेत्र में उसके पुनर्जन्म का यथावत चालू रहने की दृष्टि से उसको नैतिक शिक्षण प्रदान किया। भगवान श्री बुद्ध ने दीक्षा के दौरान श्रीमती महारानी को सर्व प्रथम अस्त होते हुए सूर्य (The setting sun) का ध्यान करने का आदेश दिया—जिसको प्रथम ध्यान अभ्यास (The First meditation) कहा गया है। सूर्य अमरता (Immortality) का प्रतीक माना गया है। तत्पश्चात् उन्होंने उक्त महारानी को निर्मल जल पर ध्यान केन्द्रित किए जाने का सुझाव दिया तथा इसके बाद उन्होंने चमकते हुए बर्फ (Shinning Ice) पर ध्यान केन्द्रित किए जाने का आदेश दिया ताकि वह अपने

---

* Collected Works Vol. 11 pages, 560-63.

बाह्य एवं अन्तरीय चित्त को निर्मल कर सके और इस प्रकार अपूर्व शान्ति का अनुभव कर सके। इस प्रकार ध्यान योग के अभ्यास से अन्त में जाकर वह समाधि अवस्था (Withdraw-ness) में पहुंच कर आत्मा में निमग्न हो गई और सभी सांसारिक बन्धनों (All the Worldly Connections) से मुक्त होकर वह अपने निजी व्यक्तित्व को आत्मा में निमग्न कर सकी। इस प्रकार 'जल ध्यान योग' को द्वितीय तथा बर्फ ध्यान योग को क्रमशः तृतीय ध्यान कहते हुए समाधि अवस्था को ध्यान योग की परिपूर्णता एवं ध्यान योग का अंतिम आठवां (The 8th phase of the Eight-fold meditations) ध्यान कहा गया है।*

इस लेख में आगे जाकर अमिताभ ध्यानसूत्र सम्बन्धी बारीकियों (Other details) का विस्तार के साथ विवेचन प्रस्तुत किया गया है जो सामान्यतः मानव की समझ के लिए दुरूह प्रतीत होता है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने भी 'ध्यान योग' के समानान्तर 'ध्यान' के आधार पर 'सक्रिय कल्पना विधि' (Active Imagination Method) का विवेचन प्रस्तुत किया है। जिसके माध्यम से स्वप्न विश्लेषण (Dream-analysis) एवं चित्त चिकित्सा (Psycho-therapy) की बड़ी मदद मिली है।

इस लेख के अन्त में श्री यूंग ने प्रतीकवाद (Symbolism) के सम्बन्ध में विवेचन प्रस्तुत किया है। ध्यान योग के प्रथम चरण में अस्त होता हुआ सूर्य, प्रकाश एवं ऊष्मा का प्रतीक है और ईसाई मतानुसार इसको भगवान ईसा मसीह (क्राइस्ट) का प्रतीक कहा गया है जिसका चिन्ह 'क्रास' है। इसी तरह पवित्र जल को ईसाई मान्यतानुसार क्रास पर चढ़ाए गए क्राइस्ट के बहते हुए रक्त का प्रतीक माना गया है। इसी प्रकार महासागर को अवचेतन (Unconsciousness) का प्रतीक माना जा सकता है जो दिव्य, व्यापक एवं विस्तृत है।**

जैसा कि पूर्व में विवेचन किया गया है कि प्रकृति (The nature) के सम्बन्ध में भी पूर्वीय एवं पाश्चात्य विचारों में बड़ा फर्क है। पूर्व में आन्तरिक गहराई में डूब कर अवचेतन में विलय होने किन्तु पश्चिम में ऊंचाई पर उठ कर उद्धारकर्त्ता के साथ मिलन को मानव-जीवन का आदर्श लक्ष्य माना गया है, अतः पश्चिम में धरातल के ऊपर उठना किन्तु पूर्व में धरातल के नीचे मूलाधार में विलय होने को ही महत्वपूर्ण माना है और यूंगीय विवेचन में भी चित्त के अवचेतन संभाग को चेतन सम्भाग की अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया है।*** अतः इस प्रकार यूंगीय

---

* Collected Works of C.G. Jung Vol. 11 at page 562.
** Collected Works of C.G. Jung Vol. 11 page 570.
*** Ibid, page 570-71.

एवं पूर्वीय चिन्तन दोनों में अवचेतन को चेतन की अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया है—और यह समानता निःसन्देह उल्लेखनीय है ।

VI

Memories, Dreams, Reflections (यूंग की स्मृतियां, स्वप्न एवं विचार) शीर्षक पुस्तक श्री कार्ल गुस्ताव यूंग की आत्म कथा है जो उन्होंने अपने आत्मीय सहयोगी अनीला जैफी (Aniela Jaffe) के सक्रिय सहयोग एवं दुनियां भर में फैले हुए अपने मित्रों के आग्रह के परिणामस्वरूप सन् 1957 में लेख बद्ध किया जाना प्रारम्भ किया और जून 6, 1961 में मृत्यु होने तक इस पुस्तक में जरूरी संशोधन परिवर्तन कार्य में लगे रहे । मूल ग्रन्थ जर्मन भाषा में यूंग का कलमी है । जिसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद श्री रिचार्ड एवं क्लारा विन्स्टन (Richard & Clara Winston) द्वारा सन् 1961 में किया गया तथा इसका सर्वप्रथम प्रकाशन संयुक्त राज्य अमेरीका के प्रकाशन, गृह रेण्डम हाउस (Random House Inc) न्यूयार्क द्वारा किया गया है तथा (Vintage Book Ed. 1965) के अन्तर्गत जनता के लिये सुलभ है । इस पुस्तक को कार्ल गुस्ताव द्वारा अपनी वैज्ञानिक खोज किया जाना नहीं माना है अतः उन्होंने इस आत्म कथा को (Collected Works of C G Jung) सीरीज में शामिल नहीं किया है तथा इस पुस्तक को उन्होंने अनिला जैफी का प्रोजेक्ट (Aniela Jaffe's Project) कहा है ।*

इस पुस्तक की प्रस्तावना में यूंग ने अवचेतन की आत्म उपलब्धि (Self realization of the unconscious) को ही अपने जीवन की कहानी (Story of my life) कहा गया है । सचमुच जीवन की सभी क्रियायें अवचेतन की अभिव्यक्तियां हैं जिसको मानव समग्रता के साथ स्वयं अनुभव करता है ।**

अतः इस पुस्तक के अध्ययन से एक ओर पाठक श्री कार्ल गुस्ताव यूंग के निराले व्यक्तित्व तथा उसके द्वारा भारतीय चिन्तन की गहरी समझ का परिचय प्राप्त होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि यद्यपि तन (Body) से वह यूरोप निवासी एक वैज्ञानिक है किन्तु उनके द्वारा भारतीय अन्तर्दृष्टि (Indian Insight) की गहरी समझ से वह मन से एक भारतीय विद्यार्थी बन गये हैं । क्योंकि 82

---

* Memories, Dreams, Reflections by C.G. Jung. Recorded and Edited by Aniela Jaffe-Vintage Book, Newyork, Ed. 1965. (Introduction at page IX.)

** My life is a story of self-realization of the unconscious. Everything in unconscious seeks outward manifestation and the Personality too desires to evolve out of its Unconscious conditions and to experierce its self as a whole.

—Ibid, at page 3.

(चयासी) वर्ष की आयु में रचित यूंग की इस अन्तिम कृति में उनका लेखन भारतीयता से ओत-प्रोत हो जाना पाया जाता है क्योंकि यूंग द्वारा उल्लेखित स्वप्नों के नियरण में प्रथम स्वप्न (First dream) भारतीय शिव लिंग के प्रतीक की व्याख्या है। तथा उसके द्वारा विवेचित स्मृतियों के भण्डार में से सर्वप्रथम याददास्त (First Memory) भारतीय त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव) के चित्र दर्शन की घटना का सांगोपांग वर्णन प्रस्तुतीकरण है। जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि यूंग द्वारा देखे गये सपनों तथा घटित स्मृतियों में भारतीय चिन्तन एवं संस्कार ही प्राथमिकता के आधार पर मुखरित हुआ है इसके अलावा अपनी इस आत्मकथा में यूंग ने अपनी सन् 1938-39 में भारत यात्रा के बाद लगभग एक दशाब्दि में भारतीय चिन्तन सम्बन्धी इस अध्याय में विवेचित पांचों लेखों का स्पष्टीकरण अपने जीवन के अन्तिम दिनों में इस पुस्तक के माध्यम से किया है, अतः यह स्वयं प्रमाणित है कि यूंग अपने 3-4 वर्ष की आयु से अपनी मृत्यु तक भारत विषयक चिन्तन से जुड़े रहे, वह भारत सम्बन्धी स्वप्नों, स्मृतियों एवं विचारों में आजीवन संलग्न पाये गये, अतः उन्हें यूरोप निवासी एक भारतीय चिन्तक कहा जाय तो इसको अतिशयोक्ति कहा जाना योग्य नहीं होगा।

अतः यूंग की आत्मकथा में उनकी 3–4 वर्ष की आयु में देखे गये स्वप्न का विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत किया जाना उचित है ताकि एक सामान्य पाठक भी यह तथ्य हृदयगम कर सके कि भारतीय तत्व ने बचपन से मृत्यु तक कितनी गहराई से श्री कार्ल गुस्ताव यूंग के व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित किया है यथा—

"यह मेरा सर्वप्रथम स्वप्न है जो मैंने अपनी 3–4 वर्ष की आयु में देखा तथा जिसकी याद मुझे आजीवन बनी रही, जो इस प्रकार है—*

स्वप्न में मैंने देखा कि मैं एक मैदान में खड़ा हूं जहाँ पर अचानक मुझे एक खड्ड दिखाई देता है, जिसको मैं उत्सुकतापूर्वक झांकता हूं तो मुझे इस खड्डे में पत्थर की बनी सीढ़ियां नजर आती है जिन पर उतर कर जब मैं आगे बढ़ता हूं तो मुझे एक हरा पर्दा पड़ा दिखता है। जिसके उस पार एक मेहराबदार दरवाजा है जिसके परे एक लगभग 30 फीट लम्बा चौकोर कमरा (Chamber) दीख पड़ता है जहाँ मैं डरते हुए पहुंचता हूं तो उस कमरे में एक चतुष्कोणी चबूतरा नजर आता है जिस पर एक सुनहरी सिंहासन (Throne) दिखाई पड़ता है और इस सिंहासन पर लगभग 12 से 15 फीट लम्बा तथा करीब डेढ़ फीट गोलाई का एक खम्बा खड़ा हुआ दिखाई पड़ता है जो पत्थर का नहीं होकर हाडमांस का बना हुआ दृष्टिगोचर होता है। यह खम्बा चर्म और नंगो मांसल (Made of Skin & flesh) है, तथा इस खम्बे के सबसे ऊपरी सिरे पर गोलाई में आँख की आकृति·

* Memories, Dreams, Reflections, page 11 to 13.

नजर आती है, जहां से निकलते हुए प्रकाश से समूचा कमरा जगमगा रहा है, यद्यपि इस कमरे में न तो कोई प्रकाश के लिये खिड़की दरवाजा है और न कोई अन्य उजाले का साधन है। इस गोलाकार ऊपरी हिस्से की कोई स्पष्ट आकृति नहीं है जो ऊपर की ओर आमुख है। यूंग ने इस ऊपरी सिरे को दैदिव्यमान देखा जहां से वृत्ताकार प्रकाश फैलता हुआ दिखाई दिया। इस स्वप्न को देखकर यूंग उस समय भयाक्रान्त होकर ऊंघ में डूब गया और इस अलौकिक दृश्य का कुछ भी अर्थ नहीं समझ सका और बरसों तक वह इस अद्भुत स्वप्न के अर्थ को समझने के प्रयत्न में संलग्न रहा-तो वह अपनी बयासी तैयासी वर्ष की आयु में यह समझ सका कि उक्त दृश्यायमान खंभा शिवलिंग (Phallus of the Lord Shiva) है जो भारतीय धार्मिक क्रियाओं का प्रायः केन्द्रीय विषय वस्तु है। यूंग की माता ने स्वप्न में दर्शित इस खम्भे को नरभक्षी (Man-eater) दानव होने का सृजन किया था किन्तु कार्ल गुस्ताव द्वारा उसकी माता द्वारा प्रस्तुत खुलासे से कोई सन्तोष नहीं हुआ था—जो अन्त में जाकर अपनी आत्म कथा लेखन के समत्व में उसको इस रहस्य की अनुभूति हुई। यूंग की मान्यता है कि मूल रूढ़ की दृष्टि से (Etymologically) लिंग का अर्थ दिव्य प्रकाश अथवा दिव्यत्व है, और भारतीय चिन्तन में शिव लिंग को ज्ञान, कल्याण एवं विनाश का अधिपति माना गया है। यूंग द्वारा इस लिंग को अनाम (Unnamed) पाताल देशीय भगवान (Subterrean god) स्वीकार किया जाना भी कठिन अनुभव हुआ जैसा कि ईसाई धर्मावलम्बियों द्वारा खुलासा दिया जाता रहा है।*

इसी तरह श्री कार्ल गुस्ताव यूंग की सर्व प्रथम स्मृति (First memory) की विषय वस्तु भारतीय त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव) विषयक है। श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने अपनी इस आत्मकथा में विवरण प्रस्तुत किया है कि जब उनकी आयु लगभग 6 वर्ष की थी तो उन्हें उनकी माता द्वारा मंगाये जाने वाली बाल सचित्र पुस्तिका (Orbis-Bictus) में भारतीय त्रिदेवताओं के चित्र को देखने का अवसर मिला जिसके प्रति बालक यूंग की बड़ी रुचि बढ़ी और इस चित्र दर्शन की याददास्त उन्हें बरसों तक बनी रही, यद्यपि उक्त चित्र के प्रथम दर्शन के समय उसकी माता ने उसे यह समझाया था कि यह विदेशी जंगली देशों में प्रचलित मान्यताओं का दिग्दर्शन मात्र है अतः ऐसे बेमेल एवं अर्थहीन चित्र में किसी भी प्रकार की दिलचस्पी लिया जाना पागलपन मात्र है। अपनी माता द्वारा इस चित्र के प्रति उपेक्षा बतलाई जाने के बावजूद भी कार्ल गुस्ताव यूंग की इस चित्र के प्रति गहरी दिलचस्पी उन्हें आजीवन बनी रही और अन्त में जाकर उन्होंने भारतीय चिन्तन के अनुरूप इनको क्रमशः सृष्टि, रक्षा और संहार (Creation, preservation &

Ibid, page 13 & also in collected Works Vol. 5 page 220

Destruction) के देवता (God) होना स्वीकार किया।* यूंग ने इस प्रसंग के संबंध में लिखा है कि बचपन में दिखे इस चित्र से वह बड़े प्रभावित हुए थे तथा इसको वह मौलिक श्रुति (Original revealation) मान बैठे थे, अतः इस बावत उनकी माता द्वारा भर्त्सना किया जाने से उन्होंने इस अनुभव के बावत किसी से भी कोई चर्चा नहीं की। और वह सबसे प्रायः एकाकी रहने लग गये।**

कार्ल गुस्ताव यूंग ने इस पुस्तक की प्रस्तावना में यह स्वीकार किया है कि उन्होंने अपने तियासी वर्ष (83) की आयु में निजी दंतकथाओं (To tell my personal myth) का उद्घाटन किया है, और इन कहानियों का उनके द्वारा वैज्ञानिक खोजों की अपेक्षा अधिक महत्व है। क्योंकि अनुभवजन्य उनकी यह दन्तकथायें उनका सत्य हैं।*** अतः श्री कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा वर्णित उनके स्वप्न एवं स्मृतियों की उपरोक्त उद्धरित कहानियों को निसन्देह महत्वपूर्ण एवं सचाई माना जाना योग्य है। इसी तरह यूंग के विचार (Reflections) के सम्बन्ध में यह कहा जाना पर्याप्त है कि इस अध्याय में विवेचित पांचों लेखों में कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा भारतीय विषय वस्तु (Subject matter) में उनकी गहरी समझ एवं आत्मीय रुचि का समर्थन होता है—जिसका सम्बन्ध भारतीय चिन्तन दर्शन, धर्म, इतिहास, धार्मिक परम्परा, स्थापत्य एवं भारतीय योगाभ्यास एवं ध्यान साधना से है। जिनका यहां पुनः विवेचन प्रस्तुत किया जाना पुनरावृत्ति दोष कहा जा सकता है। इस आत्म कथा में भी प्रसंगानुसार यूंग ने सन् 38 से सन् 1948 के बीच भारत सम्बन्धी उपरोक्त सभी लेखों का समर्थन एवं स्पष्टीकरण इस आत्मकथा ग्रन्थ में भी किया है।**** इसके अलावा अध्याय 11 शीर्षक 'On life after death' (मृत्यु के बाद का जीवन) तथा अध्याय 12 शीर्षक 'Late Thought's (बाद के विचार) में भी कार्ल गुस्ताव यूंग ने भारतीय चिन्तन की दृढ़मान्यताओं का तर्कसंगत विवेचन एवं समर्थन प्रस्तुत किया है जिसमें आत्मा की व्यापकता एवं अमरता, भारतीय कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म एवं प्रेतवाद का भी समर्थन किया जाना पाया जाता है जिसका विवेचन यहां किया जाना जरूरी नहीं है। इसके अलावा यत्र तत्र यूंगीय चिन्तन एवं भारतीय चिन्तन के बीच अद्भुत समानता पाये जाने का विवेचन प्रस्तुत पुस्तक के कतिपय अध्यायों में यथा स्थान प्रस्तुत किया गया है।

कार्ल गुस्ताव यूंग सन् 1938 में कलकत्ता विश्वविद्यालय की रजत जयन्ती के अवसर पर भारत आये थे किन्तु इसके पूर्व वह भारतीय दर्शन एवं भारतीय

---

* Ibid page 17.

** Ibid page 17 at the end.

*** In my 83rd year to tell my personal myth......is true as what I tell is my fable, my truth.........Ibid at page 3.

**** Memories, Dreams, Reflections, pages 274–285.

धार्मिक इतिहास का गहन अध्ययन करते हुए भारती की प्राचीन प्रतिभा (Oriental wisdom) की महत्ता से प्रभावित हो चुके थे और वह यहाँ आकर भारत संबंधी अपनी मान्यताओं का प्रत्यक्ष में समर्थन एवं सत्यापन किया जाना चाहते थे, फलत: यूंग ने यहाँ के जन साधारण तक यहाँ के विद्वानों से भेंट की और बड़ी आत्मीयता के साथ उनके साथ विचार-विमर्श किया। उनको बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय, अलीगढ़ मुस्लीम युनिवर्सिटी तथा कलकत्ता विश्व-विद्यालय में मानद डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत किया गया और वह इन विश्व-विद्यालयों के विद्वान् अध्यापकों से मिलकर हिन्दु मुस्लीम तथा आंग्ल भारतीय (Anglo-Indian) संस्कृतियों को भली-भांति समझने का निष्ठापूर्वक प्रयत्न किया* और वह मैसूर महाराज के धर्म गुरु श्री एस, सुब्रह्मान्य के यहाँ कुछ दिनों तक आतिथ्य स्वीकार कर उनके साथ भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तन की समानता एवं अन्तर को समझने के लिये आपसी विचार-विमर्श किया था** किन्तु इस यात्रा के दौरान कार्ल गुस्ताव यूंग ने भारत के तथाकथित आध्यत्म पुरुषों (Holy men) से साक्षात्कार भेंट नहीं किये की बड़ी सावधानी वर्ती, क्योंकि यूंग की उस समय यह दृढ़ मान्यता रही थी कि सत्य की उपलब्धि किसी भी अन्य महान् व्यक्ति से प्राप्त किया जाना योग्य नहीं है, और व्यक्ति स्वयं अपने निजी अनुभव से ही अपना सत्य ढूंढ सकता है।*** इस संबंध में विस्तार के साथ इसी अध्याय के उप-खण्ड (IV) में विवेचन किया गया है।****

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने भारतीय चिन्तन में बुराई (कमजोरी पाप अशिव खराबी आदि) की स्थिति समस्या या प्रकृति (The nature of the evil) का

---

* India honoured me Doctorates from Benares Allahabad (?) and Calcutta, representing Hinduism, Islam and British Indian mediiene & sciences'—Ibid 280.

नोट :—यूंग को एलाहाबाद के बजाय अलीगढ़ मुस्लीम यूनीवर्सिटी द्वारा मानद डॉक्टर की उपाधि से अलंकृत किया गया था, अत: इलाहाबाद के बजाय अलीगढ़ लिखा जाना योग्य है।

** Ibid, page 280.

*** I studiously avoided all so called 'Holy men'. I did so because I had to make do with my own TRUTH, not accept from others what I could not attain on my own. I would have felt it as a theft had I attempted to learn from 'Holy men' and to accept their truth for myself. Neither in Europe can I make my life out of myself out of what my inner being tell me, or what nature brings to me.

—Memories, Dreams, Reflections at page, 275.

**** प्रस्तुत पुस्तक का अन्तिम अध्याय 24 का उपखण्ड IV।

भारतीय आध्यात्मिक जीवन (Spiritual life) में समन्वित (Integrate) किये जाने को भारतीय चिन्तन की उल्लेखनीय उपलब्धि माना है, अतः वह भारतीय चिन्तन की इस क्षमता से बड़े प्रभावित हुए और इसमें उन्हें एक नई दृष्टि दिखी।* श्री यूंग ने पूर्वीय जन-समाज द्वारा बुराई की इस समस्या को वगैर चमक खोये अपने जीवन में पचा लिये जाने अथवा समन्वित कर लिया जाना पूर्वीय चिन्तन की सबसे बड़ी उल्लेखनीय सफलता माना है जबकि सामान्यतः पाश्चात्य विद्वान् अब तक इस उपलब्धि को प्राप्त किये जाने में विफल पाया गया है।** भारतीय आध्यात्मवाद में बुराई एवं अच्छाई पाप और पुण्य को दोनों को समान भाव से स्वीकार कर लिया गया है, किन्तु पश्चिम में अच्छाई को चाहा गया है तथा बुराई को वर्दाश्त किया गया है।

भारतीय योग की यही विशेषता है कि यहाँ पर अच्छाई-बुराई (Good and evil) में से किसी को भी सत्य नहीं माना गया है, अतः इनमें से किसी को भी कोई महत्व नहीं दिया गया है।*** यूंग की मान्यता है कि भारतीय आध्यात्मवाद (Indian Spirituality) का लक्ष्य (Goal) नैतिक पूर्णता (Moral-perfection) नहीं होकर निर्द्वन्द्वत्व (Nirdandtva) प्राप्त करना है, अतः भारतीय साधक प्रकृति (Nature) से भी स्वतंत्र होकर अपनी ध्यान साधना में अमूर्त (Image or formless) एवं शून्यवत् खालीपन (Emptiness) की स्थिति ध्यान के माध्यम से प्राप्त करना चाहता है, ताकि वह अहम् शून्य होकर आत्मा में निमग्न हो सके और द्वैत भाव को समूचा घुल मिला कर एक अद्वैत परम-आत्मा के साथ एक होकर उसके साथ समरस हो सके—ताकि मानव अपनी खुदी (Myself-ness) प्रकृति (Nature) चित्त (Psyche) तथा सम्पूर्ण जीवन (Life) को समन्वित (Integrate) करते हुए एकत्व दिव्यत्व वरम्त्व के सर्वोच्च लक्ष्य के साथ एक और अखण्ड हो जाय और सभी द्वन्द्वों, भेदों और क्लेषों से हमेशा के लिये मुक्त हो जाय**** किन्तु कार्ल गुस्ताव यूंग उपरोक्त भारतीय विवेचन और लक्ष्य के प्रति अपनी असहमति प्रगट करते हुए यह आग्रह करते हैं कि भारतीय मुक्ति और मोक्ष की कामना किया जाना भी चित्त (Psyche) को वस्तुतः खण्डित (Amputation) किया जाना है—अतः मोक्ष की कामना छोड़ कर मानव-जीवन में जो कुछ परिस्थिति आये, उसका सामना करना

---

* Memories, Dreams, Reflections, page 275.

** Ibid, page 276.

*** Ibid, page 276.

**** Ibid, same page.

या बर्दाश्त किया जाना ही मानवीय जीवन का धर्म या लक्ष्य होना चाहिये।*

कोनार्क (उड़ीसा) में श्री कार्ल गुस्ताव यूंग की अनायास भेंट एक पंडित से हो गयी जो उन्हें वहाँ के प्रसिद्ध एक रथनुमा मन्दिर को दिखाने ले गये। श्री यूंग मन्दिर की बाहरी दिवारों पर सुन्दर कलात्मक नग्न मूर्तियों को देखकर आश्चर्य चकित हो गये तथा इसके बावत उस पंडित से विचार-विमर्श किया। पत्थर में खुदी हुई इन दिव्य मूर्तियों के बावत उस पंडित का खुलासा था कि इस स्थापत्य कला का प्रयोजन आत्मा की सर्वत्र व्यापकता समझाना है। मैथुन रत मुद्राओं में खोदी गई इन मूर्तियों के इस स्पष्टीकरण से आरंभ में श्री यूंग को संतोष नहीं हुआ तब उस पंडित ने उन्हें समझाया कि इन नग्न एवं मैथन रत मूर्तियों का यह सन्देश है कि आध्यात्मवाद (Spirituality) की उपलब्धि हेतु इस दृश्यावली को देखा जाना जरूरी है कि मानव इन क्रियाओं के सम्पादन एवं भोग के बाद ही मोक्ष, अथवा मुक्ति के मार्ग पर आगे अग्रसर हो सकता है—यूंग ने पंडितजी के इस स्पष्टीकरण पर जब आपत्ति की तो उसने मन्दिर के दरवाजे पर आकर्षण मुद्रा में खुदी दो दिव्य अप्सराओं की मूर्तियां श्री यूंग को दिखलाईं और कहा कि जब तक व्यक्ति अपने धर्म एवं कर्म को भली-भांति सम्पादन नहीं कर लेता तब तक वह मोक्ष की उपलब्धि नहीं कर सकेगा, यह चेतावनी दिया जाना ही इन खुदी हुई मूर्तियों का उद्देश्य या सन्देश है, इसके बाद वह पंडित श्री यूंग को निकटस्थ एक गली में ले गया, जहाँ पर कतिपय कलाकार पत्थरों के शिवलिंग घड़ रहे थे, जिसके बावत उक्त पंडित के द्वारा श्री यूंग के कानों में फुस-फुसा कर बतलाया गया कि देखो इस सबकी आकृति शिव लिंग (Phallus) की है। यूंग ने भारत से लौट कर इस अनोखी घटना का जिक्र प्रसिद्ध भारतीय विद्या विशेषज्ञ अपने मित्र हेनरीच झीमर से किया तो झीमर आनन्द मग्न होकर कह उठे कि यही भारत की दिव्य विशेषता है कि बाहर दृष्टि से नग्न और अश्लील नजर आने वाली मूर्तियां भी आन्तरिक दृष्टि (Insight) से दिव्य कलात्मक एवं प्रयोजनीय हैं क्योंकि शिव लिंग सृष्टि की रचना का सही अर्थों में प्रतीक मात्र है।**

जब श्री कार्ल गुस्ताव यूंग ने सांची स्थित स्तूप का दर्शन किया तो वह भाव विह्वल हो उठे क्योंकि यहीं पर भगवान बुद्ध ने अपना अन्तिम प्रवचन दिया था,

---

* I want to be freed neither from human beings, nor from myself, nor from nature for all these appear to me the greatest of miracles. Nature, life, Psyche appear to me like the DIVINITY Unfolded—and what more could I wish for? If I withdraw from participation I am initially amputating the corresponding part of my Psyche—Ibid, page 276.

** Memories Dreams, Reflections, page 278.

तथा महापरिनिवन्न सूत्र (Maha Parinibbana Sutta) के अनुसार इन स्तूपों के तलघरों में महात्मा बुद्ध की पवित्र अस्थियों को दफनाया गया था, उस समय यूंग ने जापानी यात्रियों के एक समूह द्वारा वहां ओम मणी पद्म हुंम का कीर्तन करते हुए भी देखा और यहां श्री यूंग ने अपने समूचे मन (Mind) एवं आत्मा (Spirit) के साथ महान् बुद्ध के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित की। श्री यूंग की मान्यतानुसार बुद्ध ने आत्मा (Self) को सभी देवताओं (Gods) की अपेक्षा अधिक महत्व दिया था अतः यूंग ने भगवान बुद्ध की आत्मा का मूर्त प्रतीक (Embodiment of the self) माना था।* भगवान श्री बुद्ध भी प्रभु ईसामसीह की तरह ऐतिहासिक महापुरुष माने गये हैं और इन दोनों महापुरुषों द्वारा समग्र मानव-जाति के कल्याण के लिये अनेक कष्ट उठाया जाना कहा गया है। महात्मा श्रेष्ठ श्री बुद्ध का लम्बा जीवन मानव-जाति को सभी दुःखों, कष्टों से उबारने में लगा और एक लम्बी आयु के बाद उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ, जबकि महान् आत्मा प्रभु ईसामसीह का दिव्यत्वपूर्ण जीवन लगभग एक वर्ष का रहा किन्तु इन दोनों महापुरूषों की मृत्यु के बाद उनके द्वारा स्थापित बौद्ध-धर्म एवं ईसाई-धर्म में दिव्य चमक में बाद में शनैः शनैः गिरावट होना पाया गया। यूंग की मान्यता है कि इन महापुरुषों का अवतरण उनके तत्कालीन समाज के विकास के लिये हुआ था, अतः पूर्व में भगवान बुद्ध तथा पश्चिम में प्रभु मसीह के प्रति श्रद्धा का भाव है, क्योंकि उनके आदर्श जीवन एवं कल्याणकारी उपदेशों में मानव-समाज को स्वतः विकास किये जाने का मार्ग प्रशस्त किया गया है।**

श्री कार्ल गुस्ताव यूंग केवल थोड़े समय के लिये भारत में रह पाये, इस दौरान उन्हें कलकत्ता के एक होटल में दस दिनों तक रुग्णावस्था में भी रहना पड़ा क्योंकि वह उदर पीड़ा से ग्रस्त हो गये थे, और अन्त में उन्हें एक विचित्र स्वप्न दिखा जिसमें उन्हें सन्देश मिला कि उनको यहां से अपने स्वदेश लौट जाना ही श्रेयस्कर है, अतः वह इस स्वप्न सन्देश की अनुपालना करते हुए स्वीटजर लैण्ड चले गये और भारत यात्रा के अनुभवों के आधार पर उन्होंने इस अध्याय में विवेचित भारत संबंधी पांच लेख लिखे और अन्त में जाकर अपनी आत्मकथा में भी उन लेखों की पृष्ठ भूमि तथा इनकी व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जिससे यह सुस्पष्ट प्रमाणित होता है कि श्री कार्ल गुस्ताव यूंग भारत की संस्कृति, धार्मिक इतिहास, दर्शन, धर्म, स्थापत्य कला तथा भारतीय अन्तर्दृष्टि से अत्यधिक प्रभावित रहे हैं, और उनके द्वारा भारतीय चिन्तन की गहरी समझ एवं पकड़ को आत्मसात् किये जाने की दृष्टि से उन्हें भारतीय चिन्तन का एक श्रेष्ठ व्याख्याकार (Interpretor) तथा समर्थक माना जाना सर्वथा योग्य है। और उनके समग्र लेखन में भारतीयत्व के प्रति उनकी गहन श्रद्धा का परिचय मिलता है। इसके अलावा यूंग की स्मृतियां, स्वप्नों एवं विचारों में भारतीय चिन्तन से अद्भुत समानता नजर आती है, अतः उन्हें भारतीय चिन्तन का सबसे बड़ा समर्थक कहा जाय तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। अस्तु.

———

* Ibid page 279. ** Ibid page 280.

परिशिष्ट 1

'आभार-प्रकाशन'

'कार्ल गुस्ताव यूंग : विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान' शीर्षक इस पुस्तक के आलेखन में लेखक ने निम्नांकित पुस्तकों से मदद ली है, अतः मैं इन पुस्तकों के विद्वान् लेखकों का बड़ा आभारी हूं। मैंने इन पुस्तकों के कुछ अंशों को आवश्यकतानुसार ज्यों का त्यों उद्धरित कर लिया है, तथा इसका उल्लेख यथावत् पाद टिप्पणियों में किया है, फिर भी कुछ ऐसे अंश हैं, जिनका सीधा अनुवाद या भावानुवाद किया गया है किन्तु इनका यथायोग्य उल्लेख किया जाना छूट सा गया है, अतः मैं इन उपयोगी पुस्तकों के लेखकों से अपने प्रमाद के लिये क्षमा-प्रार्थी हूं। प्रस्तुत पुस्तक में चित्त की संरचना, चेतन सम्भाग की अभिवृत्तियों एवं क्रियाओं को स्पष्ट करने मैंने मुख्यतः डॉक्टर यालन्दे याकोवी की प्रसिद्ध पुस्तक The psychology of C. G. Jung का भरपूर उपयोग किया है, और प्रस्तुत पुस्तक के कुछ अध्यायों को श्री याकोवी का उक्त पुस्तक के कतिपय रेखा-चित्रों का यथावत् उपयोग किया है, अतः मैं कार्ल गुस्ताव यूंग के अधिकृत व्याख्याकार डॉक्टर योलन्दे याकोवी एवं इस पुस्तक के प्रकाशक Routledge and Kegan Paul Ltd., London के प्रति विशेष आभारी हूं। प्रस्तुत पुस्तक के आलेखन हेतु निम्नांकित सन्दर्भ ग्रन्थों से यथा-स्थान जो मदद ली गई, अतः निम्नांकित लेखकों के प्रति अपना हार्दिक आभार एवं धन्यवाद अभिव्यक्त करता हूं। सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची निम्नानुसार है :—

1. अरविंद वसावड़ा : विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान (एक संक्षिप्त परिचय) चौखम्भा विध्यायवन वाराणसी (1963)
2. A. U. Vasavada : Tripura Rahasya and a Comparitive Study regarding the Process of Individuation (Choukhamba Publications, 1965.)
3. भवानीशङ्कर उपाध्याय (अनुवाद): त्रिपुरा रहस्य का तंत्र विश्लेपण (स्वसाक्षात्कार पद्धति) चौखम्बा सरस्वती भवन, वाराणसी, 1981.

4. C. G. Jung : Analytical Psychology;its Theory and Practice (The Tavistock Lectures) Routledge and Kegan Paul Ltd., Londan, 1968.

5. C. G. Jung : Contribution to Analytical Psychology Routledge & Kegan Paul Ltd., London, 1948.

6. C. G. Jung : Psychology of the Unconscious with Introduction by Beatrice M. Hinkle Kegan Paul, Trench Truben & Co. Ltd., 1944.

7. C. G. Jung : Modern Man in Search of a Soul. Kegan Paul, Trench, Trubner & Co. Ltd., London, 1944.

8. Gerhard Adler : Studies in Analytical Psychology Routledge & Kegan Paul Ltd., London, 1948.

9. Dr. Jolande Jacobi : The Psychology of C. G. Jung. Routledge & Kegan Paul Ltd., London, 1951.

10. Frieda Fordham : An Introduction to Jung's Psychology Penguin Books London, 1954.

11. C. G. Jung : Essays on Contemporary Events, Kegan Paul, London, 1947.

12. C. G. Jung : The Spirit mercury, Translated by Gladys Phelan and H. Nagal The Analytical Psychology Club, New York, 1953.

13. C. G. Jung : Answer to Job Routledge & Kegan Paul, 1932.

14. C. G. Jung : Psychiatric Studies (Vol. 1 Collected Works) Routledge & Kegan Paul, London, 1957.

15. C. G. Jung : Vol No. 7 of the Collected Works Psychological Types (Bollingen Series.)

16. C. G. Jung : Vol No. 7 Two Essays on Analytical Psychology (Bollingen Series).

17. C. G. Jung : Vol No. 9 Part I. The Archetypes and the Collective Unconscious (Bollingen Series).

18. C. G. Jung : Vol No. 10. Civilization in Transition (Bollingen Series).

19. C. G. Jung : Vol No. 11. Psychology and Religion. West and East (Bollingen Series).

20. C. G. Jung : Vol No. 15. The Spirit in Man, Art and Literature (Bollingen Series).

21. C. G. Jung & C. Kerenji : Introduction to Science of Mythology (Routledge and Kegan Paul, London, 1951).

22. Richard Wilhelm With Commentary by C. G. Jung : The Secret of the Golden Flower, Kegan Paul, London 1945.

23. Erich Neumann : The Great Mother (Bollingen Series).

24. M. Esther Harding : The "I" and not "I" (Bollingen Series).

25. Heinrich Zimmer : Myths & Symbols in Indian Art and Civilization (Bollingen Series).

26. Barbara Hannah : Jung—His life and work (Capricorn Book).

27. C. G. Jung : Memories, Dreams, Reflection as recorded by ANIELA JAFFE (Vintage Books).

———

परिशिष्ट 2

पाद-टिप्पणियाँ--उद्धरण आदि

अध्याय 1. विषय-प्रवेश (Introductory)...............nil.

अध्याय 2. यूंग की जीवन-कथा (The Story of Jung's Life)

No. 1. at page 10 : Memories, Dreams, Reflection at page 12–13.

अध्याय 3. विश्लेपणात्मक मनोविज्ञान की रूपरेखा (The Outline of the Analytical Psychology).

No. 1. at page 26 : श्रीमती महादेव जी वर्मा द्वारा 'अवचेतन' को 'मातृचेतन' की नवीन संज्ञा दिया जाना।

No. 2. at page 28 : लिबीडो (Libido) की परिभाषा।

अध्याय 4. चित्त और उसकी प्रकृति (The Psyche and its nature) nil.

अध्याय 5. चित्त की संरचना (Structure of the Psyche) nil.

अध्याय 6. चेतन की अभिवृत्तियां एवं क्रियाएं (The Attitudes and functions of the Conscious).

No. 1. at page 68 : यूंग द्वारा मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण का आधार उनका 1913 में प्रकाशित Psychological Types शीर्षक पुस्तक है, जो आंग्ल विद्वान् एफ. जार्डन द्वारा प्रकाशित Character as seen in Body and Parentage (1896) द्वारा प्रेरित है।

No. 2. at page 77 : Vide C. G. Jung : Modern Man in Search of a Soul at pages 99–100.

No. 3. at page 78 : Vide as above page 101.

No. 4. at page 84 : Vide as above, page 107 तथा Psychological Types at page 547.

अध्याय 7. मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण (Psychological Types).

No. 1. at page 100 : Vide Psychological Types page 508.

अध्याय 8. मुखौटा एवं छाया (The Persona & Show) nil.

अध्याय 9. अवचेतन और उसका महत्व (The Unconscious and its Significance).

No. 1. at page 120 : Vide The Psychology of the Unconscious at page 1 (Note by its Translator B. M. Hinkle at page 1) Kegan Paul, Edition (1944).

अध्याय 10. अवचेतन स्तरीय नारी मूर्ति (Anima) एवं नरमूरत (Animus).

No. 1. at page 126 : Two Essays on Analytical psychology page 205 and also in Collected Works Vol 7, at page 301.

No. 2. at page 126 : Vide Integration of the Personality and also in the 9th Volume of the Collected Works of C. G. Jung entitled 'Archetypes of the Collective Unconscious at page 80.

No. 3. at page 129 : Refers H. G's Wells novel character in his book entitled Cristina Alberta.

अध्याय 11. सामूहिक अवचेतन स्तरीय आध्य मातृका (The Great Mother (शिवा) एवं सनातन ज्ञान पुरुष (The old wise man) = (शिव)

No. 1. at page 138 : Vide The Archetypes and the Collective Unconscious (Collected Works, Vol IX(1) at page 3).

No. 2. at page 138 : Ibid, page 4.

No. 3. at same page : Ibid, page 5.

No. 4. at same page : Ibid, page 5.

No. 5. at same page : Ibid, page 5. The Archetype is essentially an Unconscious content that is altered by becoming conscious and being perceived and it takes its Colour from the individual consciousness in which it happens to appear-page 5.

No. 6. at page 139 : Vide Enrich Neuman's. The Great Mother at page 3.

No. 7. same page : Ibid, page 3.

No. 8. same page : Vide page 81 and para 156 in the Collected Works Vol IX (1) entitled. "The Archetypes and the Collective Unconscious."

No. 9. Same page : As above, page 75 para 148.
No. 10. Same page : As above, page 75 para 149.
No. 11. at page 140 : As above, pages 75-76, para 149.
No. 12. Same page : As above, page 78 para 153.
No. 13. Same page : As above, page 81 para 156.
No. 14. Same page : As above, page 81 para 156.
No. 15. at page 141 : As above, page 82 para 158.
No. 16. Same page : As above, page 82 para 158.
No. 17. Same page : As above, page 82 para 158.
No. 18. Same page : Vide Enrich Neuman pages 90-92.
No. 19. Same page : Vide Enrich Neuman's The Great Mother, at page 94.

No. 20. at page 147 : Vide Collected Works Volume No. 12 Entiled 'Psychology and Alchemy', para 9.

अध्याय 12. रहस्यमयी सहक्रिया (Participation Mystique).

No. 1. at page 150 : Vide Introduction to the Science of Mythology by Kerenyle and Jung, page 104.

No. 2. at Same page : Vide Collected Works Volume entitld Psychology and Alchemy at para 22.

No. 3. at page 153 : Vide Collected Works Vol. 11 entited Psychology and Religion at page 80.

अध्याय 13. चित्तीय प्रक्रिया के नियम (The laws of Psychic process) nil.

अध्याय 14. मानव जीवन की अवस्थायें (Stages of human life).

No. 1. at page 167 : Vide modern man in Search of a Soul at page 122-130 (Kegan Paul Ltd. London. 1944 Edition).

अध्याय 15. धर्म और समग्रता की ओर व्यक्ति की स्वतः प्रगति (The natural development of the Human personality towards religion and the wholeness).

No. 1. at page 173 : Vide the Listener dated 22-11-1951.
No. 2. at page 175 : Psychology and Religion (Vol. 11 of the Collected Works) at page 5.
No. 3. at page 176 : Psychology and Alchemy (Vol. 12 of the Collected Works) at para 14.
No. 4. at page 177 : Psychology and Alchemy, para 179 and also in the Integration of personality at page 150.
No. 5. at page 180 : Psychology and Religion (11th Volume of Collected Works) page 99.
No. 6. at page 181 : The Integration of the Personality (Vol. 9 of the Collected Works) page 27.

अध्याय 16. स्वप्न-विश्लेषण (Dream-Analysis).

No. 1. at page 186 : Vide Modern man in Search of a Soul page 2 (Kegan Paul, 1944 Edition).
No. 2. at page 192 : Vide As above, page 8-9.
No. 3. at Same page : Vide Aims of Psycho-therapy (Vol. 16 of the Collected Works, page 71.)
No. 4. at page 197 : Regarding मिश्र में ओसीरीस (Osiris) को अन्न का देवता माना जाता है।
No. 5. at page 199 : Vide Modern man in search of Soul at pages 22-24 (Vol. 16 of Collected Works).
No. 6. at page 200 : As above at, page 26.
No. 7. at page 201 : Ibid, page 17-18.
No. 8. at page 204 : Vide The Development of Personality (Vol. 17 of the Collected Works).

अध्याय 17. स्वप्न विश्लेषण एवं सक्रिय कल्पना (Dream Analysis & Active Imagination).

No. 1. at page 214 : "As an animal it represents the non-human Psyche-the Sub-human animal side and therefore unconscious.
—Modern Man in Search of a Soul, para 29.

No. 2. at same page : Vide Gerhard Adler : Studies in Analytical psychology, pages 79–85.

No. 3. at page 216 : Vide Psychology of the unconscious by C. G. Jung, page 266 (Kegan Paul, London, 1921 Edition).

No. 4. at page 218 : Vide Psychological Types page 540 (Vol. 6 of the Collected Works).

No. 5. at page 219 : Vide Gerhard Adler : Studis in Analytical Psychology at page 93.

अध्याय 18. चित्त-चिकित्सा (Psycho-Therapy).

No. 1. at page 238 : "कार्ल गुस्ताव यूंग द्वारा प्रस्तावित 'विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को मनोग्रन्थि मनोविज्ञान (Complex Psychology) अथवा गहन-मनोविज्ञान (Depth psychology) भी कहा जाता है तथा यूंगीय चित्त-चिकित्सा को ज़ूरीच स्कूल चिकित्सा कहा जाता है।

No. 2. at page 241 : Vide Two Essays on Analytical Psychology at page 114 (Also Vol. 7 of Collected Works, page 182).

No. 3. at page 241 : Ibid, pages 106-115 and also Ibid paras 166–182.

No. 4. at page 241 : Two Essays on Analytical Psychology (Vol. 7 of the Collected Works).

No. 5. at page 244 : Modern Man in Search of a Soul at page 35 (Also Vol. 16 of Collected Works at page 35).

No. 6. at page 244 : Ibid, page 35.

No. 7. same page : Ibid, page 38.

No. 8. at page 245 : Ibid, page 41.

No. 9. at page 247 : Contribution to Analytical Psychology (Vol. 16 Collected Works at page 286.)

No. 10. at page 248 : यूंग ने सर्वप्रथम चिकित्सा का पूर्व विश्लेषण किये जाने की आवश्यकता को महसूस किया, जिसका बाद में जाकर फ्रायड ने भी समर्थन किया।

No. 11. at page 249 : Psychology and Alchemy (Vol. 12 of Collected Works, para 5.)

No. 12. same page : Modern Man in Search of a Soul (Vol. 16 of Collected Works, page 70).

No. 13. page 250 : Ibid, page 55.

No. 14. page 251 : "I have no ready made Philosophy to hand out (Jung Says) when a patient asks me "What do you advise ?" What shall I do ?? I do not know better than he.

I know only one thing that when to my conscious outlook there is no possible way of going ahead, and I am therefore STUCK, my unconscious will re-act to the unbearable 'Stand-Stll'.—Modern Man in Search of a Soul, pages 70–71 (Kegan Paul, 1944 Edition).

No. 15. same page : Ibid, page 71.

No. 16. at page 252 : Ibid, page 72.

No. 17. same page : Ibid, page 56.

No. 18. at page 253 : Ibid, page 56.

No. 19. same page : Ibid, page 57 (Vol. 16 of the Collected Works).

No. 20. at page 254 : Ibid at page 62.

अध्याय 19. यूंगीय चिकित्सा पद्धति की विशेषताएं (The Significance of the Jungian Therapy). Nil

अध्याय 20. मनोविज्ञान एवं अलकीमिया (Psychology and Alchemy).

No. 1. at page 272 : यूंग ने अपनी Psychology and Alchemy शीर्षक पुस्तक में लगभग 400 स्वप्नों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए इनकी सादृश्यता का प्रतिपादन किया है।

No. 2. at page 274 : The Secret of Golden Flower by Richard Wilhelm and C. G. Jung. (Vol. 13 of Collected Works, page 73).

No. 3. same page : The Integration of Personality (Vol. 17 the Collected Works page 302).

अध्याय 21. मनोविज्ञान एवं काव्य, कला तथा साहित्य (Psychology and Poetry, Art and Literature). Nil.

अध्याय 22. मनोविज्ञान एवं शिक्षा (Psychology and Education).

No. 1. at page 281 : The inner-world of childhood by Frances G. Wicks at page 46–47.

No. 2. at page 283 : Perhaps my life has been a dream--it dreamt through me by the minds of other—
—As quoted by Frenda Fordham at page 110 (An. Int. to the psychology of C. G. Jung).

No. 3. at page 285 : Vide Contribution on Analytical Psychology at page 331, Also in Analytical psychology and Education in Volume No. 17 of the Collected Works.

No. 4 at page 291 : Vide Essays on Contemporary Events at page 3 (Vol. 10 of the Collected Works).

No. 5. at page 292 : Ibid at page 9 (Introduction portion of Vol. 10 of the Collected Works.)

No. 6. at page 293 : Two Essays on Analytical psychology, page 159 (Also in Vol. 7 of Collected Works, para 240).

No. 7. at page 296 : Essays on [Contemporary Events, p. 10 (Introduction to Vol. 10 of the Collected Works).

No. 8. at page 297 : Ibid, page 12.

अध्याय 23. मनोविज्ञान एवं धर्म (Psychology and Religion).

No. 1. at page 308 : Integration of the Personality at page 23.

No. 2. same page : Ibid, page 54.

No. 3. at page 310 : Vol. 11 of the Collected Works, p. 5).

No. 4. same page : Ibid, page 6.

No. 5. at page 311 : "I mean the term 'RELIGION' is a careful and Scruplous observation of what Rudolf Otto aptly learned the 'NUMINOSUM' that is a dynamic agency or effect not caused by any arbitrary act or will by any human being".

—Vol. 11 of the Collected Works page 7.

No. 6. at page 312 : Ibid, at page 9.

No. 7. same page : Ibid, page 334.

No. 8. at page 313 : Ibid, page 480.

No. 9. at page 314 : Ibid, at page 560.

No. 10. same page : Ibid, at page 560.

अध्याय 24. यूंग एवं भारत (Jung and India).

No. 1. at page 315 : Vol. 11 of the Collected Works, pages 529–537.

No. 2. at page 318 : Radha Krishnan : Indian Phil. Vol. II, page 337.

No. 2. A same page : Ibid, same page and गीता 3/3.

No. 2. B, same page : Ibid, page 338.

No. 3. at page 319 : Ibid, page 345.

No. 4. same page : "योगश्च चित्तःवृत्ति निरोधः"

—पातञ्जली योग सूत्र प्रथम सूत्र

No 5. at page 322 : Vol. 10 of the Collected Works, pages 515 to 524.

No. 6. at page 323 : "It is quite possible that in India—is the real world and the white man lives in a mad house of abstractions—to be born, to die, to be sick, greedy, dirty, childlike, and redicously vein."

—Vol. 10 of the Collected Works, page 518.

No. 7. at page 323	:	"Life in India has not yet been withdrawn into the capsule of the head. It is still the whole body that lives. —Vol. 10 of the Collected Works, page 518.
No. 8. same page	:	"One would need some sort of Yogi if he tries to live in India. —Ibid, same page.
No. 9. at page 324	:	Vol. 10 of the Collected Works, pages 523-530.
No. 10. at page 327	:	"I am now going to say something which may offend my Indian friends, but actually no offence is intended. I have, so it seems to me, observed the peculiar fact, that an Indian, does not THINK, at least not what we call 'Thinking'. He rather PERCEIVES, the thought. He resembles the primitive in this respect. I do not say he is primitive but the process of his thinking reminds me of the primitive way of thought—Vol. 10 of the Collected Works, page 527.
No. 11. at page 330	:	Vide Vol. 11 of Collected Works, pages 576-586.
No. 12. at page 331	:	Ibid, page 577-578.
No. 13. same page	:	Ibid, page 578.
No. 14. same page	:	Ibid, page 577.
No. 15. at page 332	:	Ibid, page 579-80.
No. 16. same page	:	Ibid, page 580.
No. 17. at page 333	:	He goes as to suggest that the industructibility of the Ego with the words, "If this sense of "I" will not leave, then let it stay as on the Servant of God".—Gospel of Ram krishan, as quoted in 11th Vol. of the Collected Works, at page 581.

No. 18. at page 334 : Vol. 11 of the Collected Works, pages 581–583.

No. 19. same page : Ibid, page 558 to 575.

No. 20. same page : श्री हेनरीच झीमर कृत उल्लेखनीय ग्रन्थ का सम्पादन श्री युसुफ केम्पबेल द्वारा किया गया है, तथा इसका प्रकाशन बोलीगेन के अन्तर्गत अमेरीका से सन् 1945 में किया गया है, जिसमें भारतीय स्थापत्य कला सम्बन्धी 70 दुर्लभ चित्र हैं।

No. 21. at page 335 : Vol. 11 of Collected Works, page 558–9.

No. 22. at page 336 : "We even derive from out side on the principle that 'nothing is in mind. Which was not previously in the senses. This principle seems to have no validity in India. Indian thought and Art merely appear in sense world but do not derive from it.—Vol. 11 of the Collected Works, page 559.

No. 23. at page 337 : What the European notice at first in India is the outward CORPO-REALITY, he sees everywhere. But that is not India as the Indian sees it. That is not his reality. Reality is that which works. For us (Europeans the Essence of that which works is the world of Appearance, for the Indian it is the soul. This world for him is mere SHOW or facade and his reality comes closer to BEING, what we western call a dream—Vol. 11 of the Collected Works, page 559-60.

No. 24. at page 338 : Ibid, page 560.

No. 25. same page : "What then is Yoga ? The word literally means 'YOKING' I.e., the disciplining the instinctual forces of Psyche-which in Sanskrit are called Kleshas. The Yoking aim at controlling these forces that fatter human beings to the world—Ibid page, 560.

No. 26. same page : योगश्च चित्तवृत्तिनिरोध:—पातंजली।

No. 27. same page : Vol. 11 Collected Works, page 560-63.

No. 28. at page 339 : Ibid, page 562.

No. 29. at page 340 : Ibid, page 570.

No. 30. same page : Ibid, page 570-571.

No. 31. at page 341 : Memories, Dreams, Reflections by C. G. Jung, recorded and edited by Aniela, affe, Vintage Book, New York, 1965 Edition.

No. 32. same page : "My Life is a story of self-realization of the unconscious, Everything in unconscious seeks outward manifestation and the personality too desires to evolve out of its unconscious conditions and to experience its self as a whole.

—Ibid, page 3.

No. 33. at page 342 : Ibid, page 11-13.

No. 34. at page 343 : Ibid, page 13 (Vol. 5 page 220.)

No. 35. at page 344 : Ibid, page 17.

No. 36. same page : Ibid, same page.

No. 37. at page 344 : In my 83rd year to tell my personal myth, I can only make true statement, only tell stories, whether are not the stories TRUE is not the problem. The only question is whether I tell is my fable, my Truth—Ibid page 3.

No. 38. at page 345. : Ibid, page 274–285.

No. 39. same page : India honoured me Doctorates from Benares Allahabad (?) and Calcutta representing Hinduism, Islam and British Indian medicine and Science.

—Memories, Dreams, Reflections, p. 280.

नोट :— यहां अलाहाबाद के बजाय अलीगढ़ होना चाहिये ।

No. 40. same page Ibid, page 280.

No. 41. at page 346 : I studiously avoided all so called "HOLY-MEN". I did so because I had to make do with my own Truth, not accept from others, what I could not attain on my own. I would have felt it as a theft had I attempted to learn from Holy men and to accept their truth for myself. Neither in Europe can I make life out of my self—out of what my inner being tell me, or what nature brings to me— Ibid, page 275.

No. 42. same page : Vide Sub part IV of chapter 24.

No. 43. same page : Ibid, page 275.

No. 44. same page : Ibid, page 276.

No. 45. at page 347 : Ibid, page 276.

No. 46. same page : Ibid, page same.

No. 47. same page : I want to be forced neither from human beings, nor from my self, nor from nature. For all these appear to me the greatest of miracles. Nature, Life, Psyche appear to me like the

DIVINITY unfolded, and what more could I wish for ? If I withdraw participation I am virtually amputating the corresponding part of my Psyche.– Ibid, page 277.

No. 48. at page 348 : Vide Ibid, page 278.

No. 49. same page : Ibid, page 279.

No. 50. at page 349 · : Memories, Dreams, Reflections, p. 280,

———